Registered No. B. 288.

श्रीवीतरागाय नमः

जैनमित्र.

अर्थात्

जैनप्रान्तिकसभाबम्बईका मासिकपत्र.

और

गोपालदास बरैया द्वारा सम्पादित.

आर्या छन्दः

अज्ञानतमो हन्तुं विद्याधनयोगविघ्नसिद्ध्यर्थम् ॥
चिरदुःखितजैनानामुद्भूतं जैनमित्रपत्रमिदम् ॥ १ ॥

तृतीय वर्ष } आश्विन, कार्तिक सं. १९५८वि. { अंक १-२रा.

नियमावली.

१. इस पत्रका मुख्य उद्देश्य बम्बई प्रान्तके जैनसमाजकी उन्नति करना है

२. इस पत्रमें राज्यविरुद्ध, धर्मविरुद्ध, व परस्पर विरोध बढानेवाले लेख स्थान न पाकर उत्तमोत्तम लेख, चर्चा उपदेश, रिपोर्ट और समाचार छपा करेंगे.

३. इस पत्रका वार्षिक मूल्य डांकव्यय सहित सर्वत्र १।) रु० है. यह पत्र अग्रिममूल्य पाये विना किसीको भी नहिं भेजा जाता.

४. इस पत्रके अधिक ग्राहक होनेसे लाभ होगा तो वह इसी पत्रकी व विद्याकी उन्नतिमें लगाया जायगा और घाटा होगा तो जैनप्रान्तिकसभामुंबईको होगा

५. जो महाशय जैनप्रान्तिकसभा के सभासद हैं, उनको तथा परोपकारी विद्वानों और पढीहुई श्राविकाओंको यह पत्र विनामूल्य भेजा जाता है.

चिट्ठी व मनीआर्डर आदि भेजनेका पताः—गोपालदास बरैया.

महामंत्री दिगंबर जैनप्रांतिकसभा बंबई.

पो० कालबादेवी (बंबई)

धन्यवाद.

प्रयागनिवासी श्रीमान् **पं० शिवराम पांडे** वैद्यको अन्तःकरणसे धन्याद देता हूं कि जिन्होने अपनी सर्व उत्तम चिकित्सा और बड़ी करुणासे मेरे पुत्रको जो सन्निपात की बीमारीमें फसगया था, जिसका प्राण बचना कठिन मालूम होता था, आरोग्य किया. बुखार ऐसे वेगसे चढ़ता था कि पास बैठनेवालोंको लूहसी लगती थी. वह समय मुझको बहुत ही कठिन मालूम होता था परन्तु उक्त पंडितजीने मुझपर करुणा करके अपने पाससे ऐसी हुकमी और बेशकीमती दवा दी कि जिसकेद्वारा मेरे लड़केको बिलकुल आराम होगया. ३५ दिनउपरान्त उसको पथ्य दिया गया, पंडितजी साहबको जितना धन्यवाद दिया जाय थोडा है. हां उसीके साथ मैं अपने जैनीभाइयोंको इस विज्ञापनद्वारा प्रकाश करता हूं कि जैसे गुण वैद्योंमें होने चाहिये वे सवगुणउक्त पंडितजीमें पाये जाते हैं और ऐसी अपूर्व दवाइयां रखते है जो तत्काल फल दिखलाती हैं. पंडितजीके यहां गरीब अमीर सबको एकसी दवा मिलती हैं और कीमती २ दवा मुफतमें मकानपर आनेवाले रोगियोंको दी जाती है. ज्वरवटी, ज्वरांकुस, हिमतैल जो कीमती दवाइयां हैं बहुत वटती हैं. जैसा नाम पंडितजीका प्रयाग सहरमें हो रहा है. शायद ही किसी दुसरेका हो भाईयो ! आप साहब यह न समझना कि मेरे लड़केको अच्छा किया है इसलिये बढ़ाकर लिखा है. सो नहीं किंतु वास्तवमें यह बात सत्य है. मैं पंडितजीको आज १५ वर्षसे जानता हूं. जैसे सरल सुभावी पंडितजी हैं वैसे मैंने किसीको नहिं देखा.

जैनीभाईयोंको चाहिये कि मुझपर विश्वास लाकर अपने २ रोगोंकी चिकित्सा उक्त पंडितजीसे करावें और इसीभांति अच्छे होनेपर धन्यवाद देंय.

जैनीभाईयोंका शुभचिन्तक दास—

शालिग्राम जैन, ग्वालियरनिवासी

हा. मु. **इलाहाबाद.**

विज्ञापन.

सर्व सज्जन धर्मात्मा भाइयों की सेवामें प्रगट किया जाता है कि रतलामसे भाई हीराचंद गंगवाल तथा और भी दस पांच भाई श्री जैनवद्री, मूलविद्री, मुक्तागिरजी, मांगीतुंगीजी, गजपंथाजी, तथा कुंथलगिरजी आदि सिद्धक्षेत्रों की यात्राको कार्तिक सुदी जाने वाले हैं. इसलिये जिस किसी धर्मात्मा भाईका विचार वहां की यात्रा के लिये हो. वह भाई पत्र द्वारा सूचित करें-मिती तथा साथ होनेके स्थान आदिका निर्णय पत्र द्वारा होजायगा. आशा है कि हमारे सज्जन धर्मोत्साही इस अवसर को न चुकेंगे. यह तीर्थस्थान सर्व पूज्यनीय तथा यहां रत्नोंकी प्रतिमा और धवल, महाधवल, जयधवल आदि महा सिद्धान्तोंके दर्शन हैं इसलिये प्रेरणारूप बिनय सेवामें की गई.

कृपाकांक्षी—दरयावसिंह सोंधियां जैन,

रतलाम.

जाहेर खबर.

आपवामां आवे छे के मुंबईमां तारदेव आगल आवेली **शेठ हिराचंद गुमानजी जैनबोर्डींगस्कूल** तरफ थी सने १९०२ ना साल माटे स्कालरशीप मेळवानी जे जैन विद्यार्थीओनी इच्छा हशे तेमणे नीचे सही करनार तरफ छापेला स्कालरशीप फार्म भरीने ता. २५ मी डीसेंबर सने १९०१ नी पेहेलां पोंचे एवीरीते मोकलवा. पूर्ण सिरनामु लखी मोकलवा थी छापेला स्कालरशीप फार्म मोकलवामां आवशे.

मुंबई, तारदेव,
ता. १५ सप्तंबर १९०१.

पंडित विठ्ठलराव जयशंकर

सुपरींटेंडेंट सेठ हि. गु. जै. बो. स्कूल.

भूलसंशोधन.

इस अंकके दूसरे पृष्ठमें जो उपाधियां छपी हैं. उनमें भूल है. इसकारण उनको रद्द समझकर उनकी जगहँ नीचें लिखी ४ उपाधियें समझना.

२५००) देनेवालोंको **उपकारक.**

५०००) देनेवालोंको **प्रतिष्ठित.**

१००००) देनेवालोंको **विद्योत्तेजक.**

२५०००) देनेवालोंको **विद्योद्धारक.**

सम्पादक.

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

बोधवित्त उन्नतिनिमित, जैनमित्र अवतार ॥
करो ग्रहण आदर सहित, सज्जन चित हितधार ॥ १ ॥

तृतीय वर्ष.} आश्विन, कार्त्तिक सं.१९५८. {अंक १-२रा.

दिगम्बर जैनसंस्कृत विद्यालय बंबई.

प्यारे पाठको! आप इस वातको भूले नहीं होंगे कि गत माघमासमें आकलूजनगरमें गांधी नाथारंगजीने बिंबप्रतिष्ठाका मेला कराया था और उस ही समय जैनप्रांतिकसभा बंबईका अधिवेशन भी बड़ी धूमधामसे हुआ था. वहांपर अनेक उपदेशोंद्वारा जैनी भाइयोंको इस वातपर उत्साहित किया था कि—बंबई नगरमें एक बड़ी जैनपाठशाला खोली जाय, जिसमें कि उच्चश्रेणकी धार्मिक संस्कृत विद्या पढाई जाय. उस समय हमारे भाइयोंका उत्साह इतना बढा चढा था कि तत्काल ही एक वर्षके खर्चके वास्तै अनुमान १८००) रुपयेका चिठा हो गया और वह रुपया भी प्रायः एकत्र होकर आ चुका है आजतक योग्य अध्यापकके न मिलनेसे इस महत्कार्यका प्रारंभ नहीं हुआ था परंतु हर्षका विषय है कि अब योग्यविद्वानकी प्राप्ति होगई है और मितिआश्विन शुक्ला ९. सं. १९५८ मुताबिकतारीख २१—१०—१९०१ को प्रातःकाल शुभलग्नमें इस महत्कार्यका मुहूर्त होगा. इस ही मौकेपर इस बंबई नगरमें मिती आश्विनशुक्ल ७ से ११ तक रथयात्राका मेला तथा मिती आश्विनशुक्ल ८—९—१० को जैनप्रांतिक सभा बंबईका वार्षिकोत्सव बड़े समारोहके साथ होगा. जिसका विज्ञापन इस ही पत्रमें अन्यत्र मुद्रित है. इस विद्यालयमें पढाईका क्रम पंडितपरीक्षाके प्रथमखंडसे प्रारंभ

होगा और जो विद्यार्थी देशविदेशकी पाठशालाओंसे प्रवेशिका परीक्षाके चारों खंडमें उत्तीर्ण हो जांयगे, वे इस विद्यालयमें दाखिल किये जांयगे इस विद्यालयसे यथाशक्ति उन अनाथ विद्यार्थीयोंको वजीफा (स्कालरशिप) भी दिया जायगा जिनके कि पास प्रवेशिका परीक्षाका उत्तीर्णपत्र होगा और कमसे कम ५ वर्षतक निरंतर विद्याभ्यास करनेके सिवाय अभ्यासानंतर किसी जैनपाठशालाकी अध्यापकीका काम स्वीकार करेंगे. इस ही पाठशालासे उन महाशयोंके भी मनोर्थ सिद्ध करनेका उपाय किया जायगा कि जो एक वर्षतक १०) मासिक वजीफा (स्कालरशिप) किसी ब्राह्मण तथा जैनीको जैनसिद्धान्तके स्थूल तत्वोंका ज्ञाता बनवाकर अपनी २ पाठशालओंमें अध्यापक बनानेकी अभिलाषा करेंगे. इसकारण प्रवेशिका परीक्षोत्तीर्णविद्यार्थियोंको तथा जैनपाठशालाओंके प्रबन्धकर्ताओंको इस पत्रद्वारा सूचना दी जाती है कि वे महाशय अपना २ अभिप्राय प्रार्थनापत्रद्वारा दि. जैनप्रांतिकसभा-बंबईके महामंत्रीको सूचित करैं—

यद्यपि इस प्रयत्नसे खद्योतवत् किंचित चमत्कार होगा. परंतु जबतब इस भंडारको अमर नहिं किया जायगा, तबतक विद्यालयकी नीव जमना दुःसाध्य है और इस ही कारण हमारी भाईयोंसे विशेषकर यही प्रार्थना है कि अबके इस वार्षिकोत्सवपर इस भंडारको अमर करनेकेवास्ते अ[illegible] द्वारा [illegible]दिका बुनियाद डालें और हमारी तुच्छ सम्म[illegible] यदि इस भंडारको अमर करनेकेलि[illegible] निम्नलिखित उपाय प्रयोगमें लाये जांय तो आशा है कि हमारे उत्साहरूपी लतामें शीघ्र ही उत्तम फल दृष्टिगोचर होंगे.

१. बंबई प्रान्तके प्रत्येक गृहस्थको प्रतिवर्ष एक रुपया देना.

२. पुत्रके विबाहोत्सवमें ५) रु. देना.

३. कन्याके विवाहमें २ रु. देना.

४. पुत्रोत्पतिकी खुशीमें १)रु. देना

५. बिंबप्रतिष्ठा करानेवालेसे १००० रु. लेना.

६. मंदिरप्रतिष्ठा करानेवालेसे १०० रु. लेना.

७. और जो महाशय इस विद्यालयमें निम्नलिखित प्रकारसे रुपये प्रदान करैं. उनके नामका पाटिया लगा देनेके सिवाय एक मानपत्रद्वारा निम्नलिखित उपाधियें (खिताब) दीं जांय.

(क) एकहजार रुपया देनेवालोंको 'उपकारक' (पेट्रन.)

(ख) दोईहजार रु. देनेवालोंको प्रतिष्ठित (आनरेबिल.)

(ग) पांचहजार देनेवालोंको विद्योद्धारक.

(घ) दशहजार रुपये देनेवालोंको धर्मोद्धारक.

(ङ) २५,००० रुपया देनेवालोंको "धर्मेन्द्र" नामकी पदवी देनी चाहिये.

इत्यादि उपायोंद्वारा यदि कार्य्य किया जायगा तो हमारे उपर्युक्त अभिप्रायानुसार इसकार्यकी सफलता अवश्य हो सक्ती है. हम आशा करते हैं कि हितैषीगण इन प्रस्तावोंपर विचारपूर्वक अपनी सम्मति प्रदानकरकें इनके स्वीकृत करानेकी सभासे प्रेरणा करेंगे.

सम्पादक.

समयानुकूल आवश्यकीय कार्य

पाकठमहाशय यह बात सर्व मनुष्यमात्रको विदित है कि संसारमें जितने कार्य्य नित्यप्रति किये जाते हैं, वे सर्व समयके अनुकूल आवश्यकतानुसार किये जाते हैं अर्थात् जिस समय जिस कार्य्यकी जरूरत होती है या जिससे निर्वाह होना दृष्टि पड़ता है, उसी कार्य्यके करनेमें कटिवद्ध होकर तद्योग्यप्रयत्न करकें उसे पूर्णतः सिद्ध करते हैं और समयानुकूल ही करनेसे पुरुषार्थकी सफलता होकर हरप्रकारके सुखकी प्राप्ति और जगतमें यशकी प्राप्ति होकर आगामी कार्य्यकरनेका उत्साह रहता है, और जो समयसे पृथक रूप करते हैं अर्थात् समयके प्रतिकूल यानी उससमय जिसकार्यकी अवश्यता भी नहीं है उसकार्य्य योग्य समय भी नहीं है और उस कार्य्यसे निर्वाह होनेकी भी असंभवता है तो उसकार्य्यके करनेसे सर्व प्रकारके पुरुषार्थ व्यर्थ कर संसारमें अपकीर्ति और विविध क्लेशोंको प्राप्त होकर आगामीकेलिये हतोत्साह हो जाते हैं. उक्त दोनोंप्रकारके कार्य्य पाठकमहाशयोंको सदृष्टांत बतलाता हूं.

पाठकवृंद ! जो जो कार्य्य अनुभवित हैं प्रथम उन्हीकी तरफ दृष्टि कीजिये. जिस समय शरदी होती है, उस समय गर्मवस्त्र धारणा गर्मवस्तु खाना तथा अग्नि व धूपके सेवन करने आदिकी आवश्यकता होती है. और जिस समय उष्णता (गर्मी) होती है तो बारीक वस्त्र धारणा शीतलपदार्थखाना ठंढीवायुका सेवन करनें, आदिकी आवश्यकता होती है. इसीप्रकार जब क्षुधा लगती है तब भोजन करते हैं जब तृषा लगती है तब पानी पीते हैं. जब निद्रा आती है तब शयन करते हैं और रोगग्रस्त होनेपर जब पित्तकी अधिकता होती है तब पित्तोपशमिक शीतल औषधी सेवन करते हैं और वातोल्वण होने पर वात नाशक उष्णौषधीका उपचार करते हैं. महाशयवर ! विचारणीय समय है कि उपर्य्युक्त कार्य्य समयानुकूल आवश्यकतानुसार हैं या नहीं ? यदि कोई इनके प्रतिकूल करें अर्थात् शीतऋतुमें शीतल पदार्थोंका ग्रीष्मऋतुमें उष्णपदार्थोंका सेवन करे, क्षुधित होनेपर पाखानेको जाय, तृषातुरहोनेपर भोजन करे, निद्रातुर होनेपर औषधी ग्रहण, रोगग्रस्त अवस्थामें शयन करे, अथवा भोजन करे तो कहिये क्या उस मूर्खका पुरुषार्थ सफल होकर निर्वाह हो स-

क्ता है? कदापि नहीं. इसीप्रकार एक वर्षमें दो फसल होती हैं एक वैशाखकी और एक कार्तिककी, वैशाखकी फसलमें गेंहू जव चना, मटर, सरसों इत्यादि अन्न तैयार होते हैं. ये सर्वपदार्थ कार्तिक तथा मार्गशीर्ष महीनोंमें खेतमें बोये जाते हैं. तब चैत्र वैसाखमें तैयार होते हैं. और कार्तिककी फसलमें ज्वारी बाजरा उड़द मूंग, कपास इत्यादि अन्न तैयार होते हैं और ज्येष्ठ अषाड़ महीनामें खेतमें बोये जाते हैं. यदि कोई मूर्ख अच्छी तरहँसे खेतमें हल चलाकर पानी देकर सर्वक्रिया ठीक करें परंतु जव गेंहू वगेरह तो ज्येष्ट आषाड़में बोवे, और ज्वारी बाजरा, कपास वगेरह कार्तिक मासमें बोवे तो कहिये! पाठक महाशय, क्या उसका प्रयत्न श्रम सार्थिक होकर मनोर्थ सिद्धि होगी? कदापि नही. यद्यपि उस मूर्खनें पुरुषार्थ करनेंमें कमी नहीं कीनी परंतु समयके अनुकूल क्रिया न करनेंसे सर्वकृति व्यर्थ हुई. अब किंचित् पारमार्थिक विषयपर झुकिये—कि सामायिक प्रतिमाधारी श्रावक तथा मुनियोंके सामायिकका समय त्रिसंध्य अर्थात् प्रातः मध्याह्न सायंकाल है सो इन समयोंको चूकिकर अन्य समय सामायिक किया जाय तो क्या सामायिक कहा जा सक्ता है? अथवा ध्यान स्वाध्यायके समय आहारको जावें आहारके समय सामायिक करें इत्यादि कार्य्य सराहनीय हो सक्ते हैं? कदापि नहीं. इसीप्रकार शास्त्रमें चार दान अर्थात् औषध, शास्त्र (ज्ञान) अभय आहार वर्णन किये हैं तिसमें व्याधिपीड़ितको औषधि अज्ञानको शास्त्र (ज्ञान) भयभीतको अभय और क्षुधातुरको आहार देना कहा है. यदि कोई दान करनेकी बुद्धिसे अज्ञानता पूर्वक व्याधिपीड़ितको आहार बुभुक्षितको शास्त्र, ज्ञानवृद्धि चाहनेवालेको औषधि और भयभीतको आहार देवे तो कहिये! भ्रातृवर यह उसका दान करना सफल है? नहीं कदापि नहीं. यद्यपि उसके दानकी बुद्धि भी हुई और द्रव्य खर्चकर प्रयत्न भी किया परन्तु समयानुकूल न होनेसे व्यर्थ ही कहा गया है. और भी देखिये कि तीसरे कालके अंतमें जब आदिनाथ स्वामीका जन्म हुआ तो उस समय कल्पवृक्षोंका अभाव होगया था. तब सर्वप्रजागण आजीविकाका उपाय न जानतेसंते अत्यंत दुःखित होकर आदिनाथस्वामीके निकट आकर विनती करते भए कि—हेस्वामिन्! कल्पवृक्ष लुप्त होगये अब हम क्षुधापीड़ासे व्यथित हैं सो आप हमारे दुःखमेटनेका कोई उपाय बताओ. तब स्वामीनें इंद्रको आज्ञा कीनी सो इंद्रने सर्वसृष्टिकी रीति आजीविकोपाय तथा ग्रहस्थोंके षटकर्म इत्यादि सर्वरचना प्रकट कीनी, तो महाशयवर. यदि उस समय क्षुधादिपीड़ित प्रजागणोंको आजीविकादि उपाय न बताकर धर्मोपदेश देते तो क्या प्रजागणोंका निर्वाह होसक्ता था? कदापि नहीं. इसीप्रकार व्यवहारिक तथा पारमार्थिक सर्व-

विषयोंमें समयानुकूल आवश्यकीय कार्य करने ही प्रशंसा योग्य है. अब असली प्रयोजनपर दृष्टि कीजिये—

पाठकगण; यद्यपि धर्मके सर्व ही अंग प्रशंसनीय हैं परंतु इस वर्त्तमान कालमें सबसे ज्यादा किस कार्य्यकी आवश्यकता है और किस कार्य्यके करनेसे निर्वाह हो सक्ता है यह बात किसी भी महाशयको अज्ञात नहीं होगी तथापि आपको स्मरण कराता हूं कि—इस वर्तमान समयमें एक ज्ञानवृद्धिकी ही आवश्यकता है क्योंकि ज्ञानवृद्धिके विना अन्य सर्व धर्मकार्य्य शून्य सदृश दृष्टिगोचर होते हैं. आज सहस्रों धनाढ्य प्रतिष्ठादि अन्यकार्य्योंको मुख्य समझकर लक्षावधि मुद्रा व्यय कर रहे हैं और ज्ञानदान अर्थात् ज्ञानकी तरफ किंचित् भी ख्याल नहीं है. जिन महाशयोंने लक्षों रुपये लगाकर दिग्गज मंदिर बनवाये परंतु मंदिरजीमें पुजारी पूजन कर घरको चला गया और दो चार दश मनुष्य दर्शन कर चले गए. न शास्त्र होता है न कोई स्वाध्याय करता है और प्रतिष्ठापक महाशयको तथा ग्राम निवासी महाशयोंको यही नहीं मालूम कि—हमारा कोनसा मत है किसप्रकार मंदिरमें जाना चाहिये. किसप्रकार बैठना उठना इत्यादि धर्मकार्य करनेकी विधि किसीको भी मालूम नहीं. मैंने देशाटनके समय बहुतसे स्थानोंमें उपर्य्युक्त रीति देखी. जब कभी शास्त्रकी सभा इत्यादिमें जैनीभाईयोंका समुदाय हुआ तो यही प्रश्न किया कि महाशयवर तुम सर्व जैनी हो कहिये जैनी किसे कहते हैं? तब किसी भी महाशयसे जैनीका उत्तर नहीं आता था. पाठकवृंद! क्या यह बात शोकजन्य नहीं है कि प्रतिष्ठादि कार्य्योंमें (कि जिसकी आवश्यकता नहीं) तो लक्षों रुपये लगाते हैं और जिसकी आवश्यकता है ऐसे ज्ञानवृद्धिका कुछ भी विचार नहीं करते? प्रतिष्ठापक महाशयोंने तो जिस समय मंदिर नहीं थे, उस समय बनानेका उपदेश दिया था परंतु वर्तमानमें लाखों मंदिर मोजूद हैं और सैंकड़ों जगहँ पूजन तक नहीं होता तो कहिये साहब मंदिरकी क्या आवश्यकता कुछ भी नहीं? और सहस्रों मंदिर होनेपर भी पूजन शास्त्र स्वाध्याय और मंदिरसंबंधी क्रिया न जानना यह किसका कारण है? अज्ञानताका फिर कहिये! प्रतिष्ठापक महाशय! ज्ञानवृद्धिकी आवश्यकता है या नहीं? अवश्य है. जब यह सिद्ध हुआ कि वर्तमानमें ज्ञानवृद्धिकी आवश्यकता है तो अब यह विचार करना चाहिये कि ज्ञानवृद्धि किसतरहँ होती है. इसका सर्वोत्तम उपाय सोचकर दि० जैनसभा मुम्बईने परीक्षालय स्थापनकर महासभाके हस्तगत कर दिया है जिसके मंत्री बाबू बच्चूलालजी हैं. इस परीक्षालयसे जो ज्ञानवृद्धि हुई किसी भी महाशयको अप्रकट नहीं है. इसके सिवाय निज २ ग्रामोंमें पाठशाला स्थापित करना यह मुख्य कर्तव्य है क्योंकि जब तक

प्रत्येक ग्राम नगर शहरमें पाठशाला नहीं होगी तो परीक्षालय परीक्षा किसकी लेगा? इसकारण प्रथम पाठशाला स्थापित कर परीक्षालयकी सहायता करना चाहिये. यद्यपि उपर्य्युक्त दृष्टांत और आवश्यकीय कार्य्य सर्व महाशयोंको विदित है परंतु एक दृष्टांत सदृश कार्य्य हो रहा है अर्थात् भोगांव-एक कसवा जिला मैंनपुरीमें है. वहांपर एक फारसी पढ़े हुये मौलवी उस कसवेसे एक कोशपर ग्राममें लड़कोंको पढ़ाते थे. इसकारण उनको बहुत दिन होगये और उनके घरपर उनकी औरत और एक नौकर रहता था. वह नौकर कुपढ़ मूर्ख था. सो एक दिन अपनी मालिकनीसे (मौलवीकीऔरतसे) नाराज होकर मौलवीसाहबके पास गया. तब मौलवी साहब बोले-क्यों बे तूं क्यों आया तब नौकर बोला कि आपकी जोडू (औरत) रांड (विधवा) होगई यह खबर देनेको आया हूं. यह सुन मौलवी साहब अपने दिलमें विचार करने लगे कि हमारे जीतें जी हमारी औरत विधवा क्योंकर हो सक्ती है? फिर दिलमें आया शायद होगई हो, ऐसा विचार कर बड़े जोरसे चिल्लाकर रोने लगे, उस समय मौलवीसाहबके पासके बैठनेवाले सबलोग आकर मौलवीसाहबसे पूछनें लगे कि कहिये साहब क्या हुआ जो इतने जोरसे चिल्लाकर रोते हो? तब मियांजी बोले कि क्या कहूं गजब हो गया कि हमारी औरत विधवा होगई. ऐसा शब्द सुनकर सब लोग आश्चर्य्य होकर मौलवी साहबको समझाने लगे कि-आप समझदार और बुजुर्ग होकर ऐसा कहते हो? भला विचारो तो सही कि आपके मौजूद होते आपकी स्त्री विधवा किसतरहँ हो सक्ती है? ऐसा सुनकर मौलवी साहब बोले आप कहते हो सो ठीक है और मैं भी ऐसा ही सोचता हूं कि मेरी मोजूदगीमें मेरी औरत विधवा किसतरहँ हो सक्ती है. लेकिन नौकर पुराना है झूंट नहीं बोलेगा. शायद होगई होवे. यही गति हमारे महाशयोंकी है कि जानते तो हैं कि ज्ञानवृद्धिकी आवश्यकता है क्योंकि ज्ञान विना सर्व क्रिया शून्य है परंतु क्या करें? पुराना ख्याल नहिं छूटता अब सर्व पाठक महाशयोंसे प्रार्थना है कि जिसप्रकार हो सके ज्ञानवृद्धिका उपाय करना परमावश्यक है. अब ज्ञानवृद्धिके फायदे आगामी किसी अंकमें आप साहिवोंकी सेवामें अर्पण करूंगा.

सर्व जैनी सुज्ञ महाशयोंका दास.

धर्मसहाय करहलनिवासी.

तीर्थक्षेत्र.

हमारे बहुतसे पाठक! यह भी नहिं समझे होंगे कि तीर्थक्षेत्र किस चिड़ियाका नाम है और उनमें पूज्यपणा किसप्रकार है. पाठक महाशय! तीर्थक्षेत्र उस स्थानका नाम है जहांसे कि अनेक तीर्थंकर केवली गणधर तथा सामान्यमुनि नानाप्रकारके

उग्र तपश्चरणद्वारा कर्म कलंकका नाश करके मोक्षके अविनाशी सुखको प्राप्त हुए. ये तीर्थंकरादिक हमारे परमपूज्य हैं क्योंकि अभिमत फल जो मोक्ष है उसका प्रधान उपाय सम्यग् ज्ञान है. वह सम्यग् ज्ञान-शास्त्रोंके निमित्तसे होता है. और शास्त्रोंकी उत्पत्तिका मूल कारण येही तीर्थंकरादिक हैं. इसप्रकार हमारे अभीष्ट मोक्षफलके परंपरा मूल कारण होनेके सबबसे यह तीर्थंकरादिक हमारे परमपूज्य हैं अन्यथा कृतोपकारका विस्मरण होनेसे साधुत्वका (सज्जनपनेका) अभाव आवैगा. क्योंकि नीतिका वाक्य है कि " नहि कृतमुपकारं साधवो विस्मरंति " बस जब तीर्थंकरादिकके पूज्यपना निश्चित हुवा तो जिस स्थानसे वे मोक्षको गये हैं उस तीर्थक्षेत्रमें पूज्यपना उपचरितनयसे भले प्रकार सिद्ध होता है. क्योंकि जब तुमारे घर कोई तुमारा प्रियमित्र आता है तो तुम उसके असबाबको भी बडे प्रेमसे उत्तम स्थानपर रखते हो तो उस असबाबमें जो आपको प्रेम है वह क्यों है कि केवल उस मित्रके सम्बन्धसे. अथवा जो तुम किसी मित्रके घरपर गये और उस मित्रके किसी रिश्तेदारको तुमारा जाना अच्छा नहिं लगा तो वह और तो तुमारा कुछ कर नहिं सका किन्तु तुमारी जूतियोंको तुमारे सामने ही पैरसे ठुकराकर रास्तेमें फेंक दिया. यह देखकर तुमको बडा क्रोध आया. और उससे लडनेंको तैयार होगये. अब विचारिये तुमको उन जूतियोंके फेंक देनेसे क्रोध क्यों आया तो तुम यही कहोगे कि उसने हमारी जूतियां नहिं फेंकी. किन्तु हमको ही फेंका. बस इससे सिद्ध हुवा कि जो उन तीर्थक्षेत्रोंकी पूजा करता है, वह मानो उन तीर्थंकरादिककी ही पूजा करता है जो वहांसे मोक्षको पधारे हैं. इसप्रकार तीर्थक्षेत्रोंमे पूज्यपना उपचरितनयसे भलेप्रकार सिद्ध है. ऐसे भारतवर्षमें सम्मेद सिखरजी, गिरनारजी, पावापुरजी, सोनागिरिजी, मांगीतुंगीजी, पावागढजी, तारंगाजी, गजपंथाजी, कुन्थलगिरिजी, आदि अनेक तीर्थक्षेत्र हैं जहां कि प्रतिवर्ष हजारों जैनी भाई जाकर पूजन भजन नृत्य करकर पुन्यके भण्डार भरते हैं. तथा बडे कष्टसे कमाया हुवा अपना द्रव्य उन तीर्थक्षेत्रोंके मंदिरोंकी मरम्मत तथा उपकरण धर्मशाला आदि अनेक धर्मकार्योंके वास्ते वहांके भण्डारमें अर्पण करते हैं परंतु बडे खेदकी बात है कि इन भण्डारोंके लाखों रुपये बिना हिसाब किताब हमारे निर्भय भाई डकार गये. तथा डकारे चले जाते हैं. कोई उनसे हिसाब किताबकी पूछता है तो कुछ भी जवाब नहिं देते. तथा पूछनेवालोंको फटकार देते हैं कि तुमको पूछनेका क्या अधिकार है. हमको क्या गरज जो तुमको बतावें? सो यह भाई जिनके कि जुम्मे तीर्थक्षेत्रोंका रुपया है वे न तो स्वयं हिसाब छपाकर प्रसिद्ध करैं और न तीर्थक्षेत्रोंके मंदिर तथा धर्मशाला वगैरहकी

मरम्मत करावें न उनका कुछ प्रबंध करें और न यात्रियोंके आरामका कुछ बंदोबस्त. बहुत कहनेकर क्या जैसी कुछ तीर्थक्षेत्रोंकी दुर्व्यवस्था हो रही है, वह हमारे किसी भी भाईसे छुपी हुई नही हैं. प्रायः समस्त भाई हमेशह इन तीर्थक्षेत्रोंके प्रबंधकी शिकायतें किया करते हैं. परंतु शोक है कि ऐसी अवस्था होनेपर भी हमारे भाई नया भंडार फिर भी उस ही अंधे गढेमें पटकते जाते हैं कि जिसमें लाखों रुपयेका गरकाव होगया और उनका कुछ भी पता नहीं लगा. यह प्रस्ताव महासभाके अधिवेशनमें भी कई बार पेश हो चुका है. मगर न मालूम क्यों महासभा इसविषयमें कुछ भी हस्तक्षेप नहिं करती और अगर महासभा हस्तक्षेप करे भी तो उसकी सुनता ही कौन है. वहां दीपकके नीचे पहिलेही अंधेरा है क्योंकि जिस तीर्थक्षेत्र जम्बूस्वामी में प्रतिवर्ष महासभाका अधिवेशन होता हैं आजतक उस ही तीर्थक्षेत्रके हिसाब किताबका पता नहीं तो ऐसी अवस्था मैं महासभाके वचनोंका दूसरे पर गौरव किस प्रकार पड़ सक्ता है? अब हमारे भाइयोंको बिचारना चाहिये कि जो ऐसी पोल चली जायगी तो इन तीर्थ क्षेत्रों की सुव्यवस्था स्वप्नमें भी होना दुर्लभ है इसलिये इसका उपाय अवश्य करना चाहिये गत माघ मासमें जैन प्रांतिकसभा बंबईका प्रथम अधिवेशन आकलूजके बिंब प्रतिष्ठाके मेले पर हुवा था जिसमें तीर्थक्षेत्रोंके विषयमैं निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकृत हुवा था. (प्रस्ताव दूसरा) "यह सभा प्रस्ताव करती है कि बंबई प्रांतके तीर्थ क्षेत्रोंके प्रबंधकर्ताओंके पास इस सभाकी तरफ से एक २ पत्र और तीर्थ क्षेत्रोंका फार्म भरकर भेजनेकी प्रेरणा लिखी जाय. यदि इस बीचमें फारम भरकर न आवै तो दोमासमें दो रिमाइंडर भेजे जावें. कदाचित् इसपर भी किसीका फार्म भरकर नहिं आवै तो उस तीर्थ क्षेत्र पर सभाकी तरफसे एक गुमाश्ता नियत किया जाय और आगामी आमदनी उस क्षेत्रकी उसी गुमाश्तेके पास जमा करानेके लिये समस्त भाइयों को मासिक पत्रद्वारा प्रेरणा की जावे. और उस गुमाश्तेका खर्च उस ही तीर्थक्षेत्रकी आमदनीमेंसे दिया जाय." इस प्रकार यह प्रस्ताव स्वीकृत हुवा. उसहीके अनुसार बंबई प्रांतके समस्त तीर्थ क्षेत्रोंके प्रबंध कर्ताओंके पास तीर्थ क्षेत्रका फार्म तथा पत्र भेजे गये. बडे हर्षका विषय है कि कितने ही तीर्थोंसे वह फार्म भरकर आगया और आशा है कि थोड़ ही दिनोंमें वहांका प्रबंध भी ठीकर २ हो जायगा. परन्तु बडे खेदका विषय यह है कि गिरिनारजी आदिक अनेक तीर्थोंके प्रबन्धकर्ताओंनें उन फार्म तथा पत्रोंपर अभीतक कुछ भी ध्यान नहिं दिया. अतएव उन भाइयोंसे पुनः प्रार्थना है कि उस फार्मको भरकर शीघ्र ही भेज दे. नहीं तो आसो

जमुदी १५ के पश्चात् उन क्षेत्रोंपर सभाकी तरफसे एक २ गुमाश्ता रख दिया जायगा और नया भण्डार सब उस ही आदमीकेद्वारा इस सभाके कोषाध्यक्षके पास उस २ क्षेत्रके भण्डार खाते जमा करा दिया जायगा. जिस प्रकार प्रांतिक सभा बंबईने अपने प्रांतका प्रबंध किया है, उस ही प्रकार दूसरी प्रांतिक सभाओंसे भी प्रार्थना है कि वे अपने २ प्रांतके तीर्थ क्षेत्रोंका प्रबंध अवश्य करें. अन्यथा ऐसी ही पोल चली तो तीर्थक्षेत्रोंको और भी अधिक हानि पहुंचनेकी संभावना है.

आज कल तीर्थक्षेत्रोंपर मंदिर तथा धर्मशाला वगैरह बहुत जीर्ण हो रहे हैं. इसलिये उनके जीर्णोद्धारकी बहुत भारी जरूरत है. इस ही विषयमें प्रायः समस्त यात्रियोंकी शिकायतें आती रहतीं हैं. सो हमारी रायमें एक "तीर्थ जीर्णोद्धार भंडार" नियत किया जाय. उस भंडारमें सिर्फ तीर्थक्षेत्रोंके मंदिर तथा धर्मशालाओंका जीर्णोद्धार कराया जायगा. दूसरे कार्यमें नहीं लगाया जायगा. इसलिये समस्त भाइयोंसे प्रार्थना है कि जो आपको तीर्थक्षेत्रोंका जीर्णोद्धार इष्ट है तो तन मन धनसे इस भण्डारके स्थापन करनेका प्रबन्ध शीघ्र ही करें

जैनी भाइयोंका दास—

चुन्नीलाल जवेरचन्द मन्त्री,

जैनप्रांतिकसभा मुम्बई संबंधीय,

तीर्थक्षेत्र.

नोट—मुम्बई प्रान्तके तीर्थ क्षेत्रोंके मंत्री चुन्नीलाल जवरचंदजीका उपर्युक्त प्रस्ताव बहुत ही योग्य है. जबतक ऐसा नहिं होगा तबतक तीर्थक्षेत्रोंकी सुव्यवस्था होना कष्ट साध्य है. आशा है कि "जैनप्रांतिकसभा मुंबई" और "भारतवर्षीय दिगम्बर जैन-महासभा" इस भण्डारके स्थापन करनेका प्रबंध शीघ्र ही करेगी. सम्पादक.

विद्या विभाग.

पाठक महाशय! इस समय यह उल्लेखकरनेकी कोई आवश्यकता नहीं है कि जैनियोंकी धार्मिक व्यवस्था बहुत कुछ अवनतदशाको पहुंच रही है और उस अवस्थाके सुधारका प्रधान उपाय केवल-मात्र एक विद्या ही है. वह विद्या भी कौनसी ? दिगाम्बरजैनधर्मसंबंधी संस्कृत विद्या, क्योंकि धार्मिक विद्याके विना धर्मोन्नतिका होना असंभव है. इस कारण इस धर्मविद्याकी उन्नतिकेलिये ही हमारे उदार भाइयोंने अनेक जगहँ पाठशालायें तथा विद्यालय प्रारंभ कर रक्खे हैं और बहुतसे स्थानोंके अनेक विद्यार्थियोंने कुछ २ विद्याभ्यास भी किया है परन्तु संतोषप्रदायक फल आजतक किसी भी पाठशालाका नहिं निकला. जब इस विषयमें विचार किया जाता है तो इसके ६ कारण दृष्टिगोचर होते हैं. जैसें,—

१. भारतवर्षकी समस्त जैनपाठशालाओंमें पढाईका क्रम एकसा नहीं है.

म २. समस्त पाठशालावोंका कोई एक प्रेक्षक (Director) नहीं है.

३. समस्त पाठशालावोंकी देखरेख करनेकेलिये कोई एक इन्सपेक्टर नहीं हैं.

४. भारतवर्षभरमें कोई भी ऐसी पाठशाला नहीं है कि जिसमें जैनधर्मसंबंधी उच्चश्रेणीकी विद्या पढाई जाती हो.

५. विद्यार्थीगण स्वल्पविद्याभ्यास करके ही आगामी विद्याभ्यासको छोडकर अपने २ रोजगारधंदेमें लग जाते हैं.

६. योग्य अध्यापकोंकी हमेशाह अप्राप्ति है.

इन छह कारणोंसे पाठशालावोंका फल दृष्टिगोचर नहिं होता. यदि इन (उन्नतिके) प्रतिबंधक कारणोंको दूर करनेका उपाय किया जाय तो आशा है कि शीघ्र ही हमारे अभीष्ट फलकी सिद्धि हो सक्ती है.

अब इन कारणोंपर किंचित विचार किया जाता है.

१. प्रथम तो समस्त पाठशालावोंमें पढाईका क्रम एकसा नहीं है. सो ठीक नहीं है क्योंकि जबतक ससरत पाठशालावोंमें पढाईका क्रम एकसा नहिं होगा तबतक परीक्षा आदिकके प्रबंधमें बहुत कुछ गड़बड़ पड़ती है. इसकारण सदृशक्रमकी अत्यंत आवश्यकता है. इस विषयमें अनेक पाठशालावोंके अध्यापक तथा प्रबंधकर्त्ताओंका सबसे बडा उजर यह है कि प्रथम ही प्रथम पढनेवाले बालकोंको व्याकरणका बोध तो है नहीं और उनको रत्नकरंड श्रावकाचारादिक ग्रंथ सान्वयार्थ पढाये जाते हैं. जिससे कि विद्यार्थी तथा अध्यापक इन दोनोंको ही बहुत कुछ कठिनता पड़ती है. इसकारण अबके महासभाके अधिवेशनपर समस्त पाठशालाओंके अध्यापक तथा—प्रबंधकर्त्ताओंसे मेलेपर पधारकर सर्वसहमत तथा अनुकूल क्रम निर्णय करनेकी प्रेरणा की जाती है आशा है कि समस्त महाशय इस आवश्यकीय कार्य्यकी प्रेरणासे गाफिल नहिं रहैंगे.

पाठकमहाशय! इस विषयमें हम भी अपनी टूटी फूटी सम्मति लिखते हैं आशा है कि आप निष्पक्षदृष्टिसे विचार करैंगे.

हमारी रायमें पाठशालावोंके तीन भेद होने चाहिये—अर्थात् एक तो बालबोध पाठशाला दूसरी प्रवेशिका पाठशाला, और तीसरा विद्यालय.

प्रथमकी बालबोधपाठशालामें वर्णमालासे लेकर विद्यार्थियोंको इतना विषय अभ्यास करादिया जाय कि जिससे प्रवेशिका खंडके रत्नकरंडश्रावकाचारादि ग्रंथोंको पढानेमें अध्यापक तथा विद्यार्थियोंको किसीप्रकार भी कठिनता नहिं पड़े. और जबतक विद्यार्थी बालबोध परीक्षाके समस्त विषयोंमें उत्तीर्ण न हो जाय तब तक उस विद्यार्थीको प्रवेशिका पाठशालाकी पढाईमें सामिल न किया जाय. इस पाठशालाकी परीक्षा लिखित प्रश्नोंद्वारा नहिं होनी चाहिये किन्तु परीक्षाल-

यकी तरफसे एक इन्सपेक्टरद्वारा मुखपाठसे होनी चाहिये और प्रवेशिका पाठशाला तथा विद्यालयकी परीक्षा लिखित प्रश्नोंद्वारा होनी चाहिये. इन तीनों ही प्रकारकी पाठशालावोंका पाठक्रम हमारी समझमें निम्नलिखित होना चाहिये.

पढाईका क्रम.

बालबोध परीक्षा.

संख्या.	काल	धर्मशास्त्र	व्याकरण.	गणित.	कैफियत.
१	६ मास	नमोकार मंत्र, दर्शन भाषा, वर्त्तमान चौवीसी.	जैन बालबोधक प्रथम भाग	पट्टी पहाड़े ३० तक	इस क्रमसे धर्मशास्त्रके सब विषय कंठाग्र करना चाहिये.
२	६ मास	इष्ट छत्तीसी और दो मंगल	जैन बालबोधक द्वि भाग	पट्टी पहाड़े पूर्ण	
३	६ मास	भक्तामर और दर्शनाष्टक	जैन बा. बो. तृतीय भाग	साधारण जोड़ बाकी	
४	६ मास	नित्यमह (नित्यनियमपूजा)	हिंदी भाषाका व्याकरण	साधारण गुणा भाग.	
५	१ वर्ष	संस्कृतारोहण	शब्दरूपावली धातुरूपावली और समास कुसुमावली	मिश्रजोड बाकी गुणा भाग और त्रैरासिक	

प्रवेशिका परीक्षा.

संख्या.	काल	धर्मशास्त्र.	व्याकरण.	काव्य.	गणित व न्याय.	कैफियत.
१	१ वर्ष	रत्नकरंड सान्वयार्थ कंठाग्र	कातंत्र या. लघु कौमुदीका षड् लिंग	मुनिसुव्रत काव्य	भिन्न दशमलव	व्याकरण न्याय और धर्मशास्त्र कंठाग्र होने चाहिये.
२	१ वर्ष	द्रव्यसंग्रह तत्वार्थ सूत्र सामान्यार्थ	,, सार्व धातुकांत	क्षत्रचूडामणि	अंकगणित पूर्ण	
३	१ वर्ष	स्वामिकार्तिकेयानुप्रेक्षा लोकभावनांत	,, पूर्ण	चंद्रप्रभचरित सर्ग ७	परिक्षामुखमूलसूत्र सामान्यार्थ	
४	१ वर्ष	स्वा. का. पूर्ण	प्राकृत व्याकरण	चन्द्रप्रभचरित पूर्ण	आलापपद्धति	

पण्डित परीक्षा.

कक्षा	काल	धर्मशास्त्र.	व्याकरण.	साहित्य व काव्य.	न्याय.
१	१ वर्ष	सर्वार्थसिद्धि ५ अध्याय	जैनेंद्रसिद्धांत कौमुदी का षड्लिंग	धर्मशर्माभ्युदय ९ सर्ग, व वाग्भट्टालंकार	न्यायदीपिका
२	१ वर्ष	सर्वार्थसिद्धि पूर्ण व द्रव्य संग्रह ब्रह्मदेव टीका पूर्ण	जै. सि. कौ. पूर्वार्द्ध.	यशस्तिलकचंपू पूर्वार्द्ध अलंकार चिंतामणी पूर्वार्द्ध	प्रमेयरत्नमाला (परीक्षमुखटीका)
३	१ वर्ष	राजवार्त्तिक ४ अध्याय	जै. सि. कौ. तिङंत	उक्तदोनो ग्रंथ पूर्ण	प्रमाणपरीक्षा और आप्तपरीक्षा
४	१ वर्ष	राजवार्त्तिक पूर्ण	जै. सि. कौ. पूर्ण	जयकुमार सुलोचना नाटक व छंदोग्रन्थ	आप्तमीमांसा वसुनंदीकृत टीका नयचक्र प्राकृत
५	१ वर्ष	पंचाध्यायी पूर्ण	जैनेन्द्र महावृत्ति	महापुराण	प्रमेय कमलमार्त्तण्ड

इस प्रकार पाठक्रम होनेसे आशा है कि सबको संतोष होगा. तथा १२ वर्षके परिश्रमसे वह विद्यार्थी जैन सिद्धान्तके गूढ रहस्योंका जानकार होकर एक सुयोग्य विद्वान् हो जायगा.

२. दूसरे समस्त पाठशालावोंको चाहिये कि परीक्षालयके मंत्रीको अपना प्रेक्षक (Director) समझें और पढाईके क्रम तथा परीक्षाके विषयमें उसकी सम्मतिके विना कुछ भी हेर फेर नहिं करें.

३. तीसरे समस्त पाठशालाओंके प्रबन्धकर्तावोंको चाहिये कि प्रत्येक बाल बोध पाठशालाकी तरफसे १०) रु. वार्षिक प्रवेशिका पाठशालाकी तरफसे १५) रु० और विद्यालयकी तरफसे २५) रु. वार्षिक परीक्षालयको दिया जाय, जिससे कि परीक्षालयकी तरफसे समस्त पाठशालाओंकी देख रेख तथा परीक्षा लेनेके लिये एक इन्स्पेक्टर नियत किया जाय जो कि हमेशह भारतवर्षकी समस्त जैन पाठशालावोंकी देख रेख करनेको दौरा किया करें.

४. चौथे भारतवर्षमें जितनी पाठशालायें हैं उनमेंसे एक भी ऐसी पाठशाला नहीं है कि जिसमें पंडित परीक्षाके ग्रंथ पढाये जांय. यद्यपि महाविद्यालयने पंडितकक्षा खोल रक्खी है परन्तु वहांपर कोई ऐसा सुयोग्य विद्वान् नहीं है कि जो पंडितपरीक्षाके ग्रंथोंको भलेप्रकार पढा सके अतएव जो विद्यार्थी प्रवेशिका परीक्षाके चारों खंडोंमें उतीर्ण होकर पंडित कक्षाके पढनेकी इच्छा रखते हैं, वे निराश्रित होकर इधर उधर भटकते फिरते हैं. अर्थात् उनको कहीं भी सन्तोषदायक स्थान नहिं मिला. इसलिये हमारे भाइयोंको चाहिये कि इस अभावके मेटनेका उपाय अवश्य ही करें.

५. पांचवें समस्त पाठशालावोंके प्रबंध कर्तावोंको चाहिये कि जिस किसी उच्चश्रेणीके असमर्थ विद्यार्थीको मासिक पारितोषिक (वजीफा) दें, उससे पहिले कमसे कम छह वर्षतक निरंतर पढनेका इकरारनामा लिखवा लियाकरें और जो वह विद्यार्थी इकरारनामेकी शर्तको पूरा नहिं करे तो उस विद्यार्थीको गृहीत पारितोषिकसे द्विगुण द्रव्य उस पाठशाला भंडारमें देना पड़ेगा. जिससे कि उसने पारितोषिक पाया है. इस प्रयोजनकी सिद्धि दक्षिण देशके जैनी ब्राह्मणोंके बालकों द्वारा होनेकी प्रबल आशा है.

६ छट्ठे जगहँ २ की पाठशालावोंसे यही पुकार आती है कि हमारी पाठशालामें या नवीन पाठशाला खोलनेकेलिये अध्यापक नहीं है सो अध्यापक भेजो. सो भी जैनी अध्यापक भेजो. परन्तु जैनी भाई पढते ही नहीं और पढकर अध्यापक बननेवाले असमर्थ विद्यार्थियोंको भोजनाच्छादनकेलिये ५) रु. महीनेकी भी सहायता देनेमें कृपाणताका आश्रय करते हैं तो जैनी अध्यापक आवे कहांसे? जो दो चार अध्यापक अलिगढ पाठशालाकी कृपासे बने थे, वे एक २ पाठशालाको चला रहे हैं. हां ब्राह्मण पंडित मिल सक्ते हैं परन्तु प्रथम तो वे जैनसिद्धान्तोंको पढाना स्वीकार ही नहिं करते और जो महाशय स्वीकार करते हैं वे जैनग्रंथोंके पढानेकी सामर्थ्य नहिं रखते क्योंकि जिनमतकी आम्नाय समस्त मतों[से] विलक्षण है. इस अभावके दूर करने[का] सुगम उपाय यह है कि जिन २ महाश[यों]को अपनी २ पाठशालाके वास्तै उत्तम अध्यापककी आवश्यकता है उनको चाहिये कि किसी विद्यालयके प्रबंध कर्ताके पास प्रार्थना पत्र भेजै. उस प्रार्थना पत्रमें इसप्रकार निवेदन किया जाय कि "हमको जैनपाठशालाकेवास्तै एक अध्यापककी आवश्यकता है सो आप हमारी पाठशालाकेलिये एक जैनी या ब्राह्मणको एक वर्षमें जैनसिद्धान्तके स्थूल २ तत्वोंसे जानकार करके हमारे पास भेजदें. हम उसको एक वर्षकेलिये वजीफा १०) रु. महीनाके हिसाबसे देंगे. और जब वह पढकर तैयार होजायगा तो उस समय अपनी पाठशालामें बुलालेंगे. और उसको कमसे कम २०) मासिक वेतन देंगे. पारितोषिकके रुपये जिस समय आप मगावेंगे भेज दिये जांयगे."

प्यारे पाठको! यदि इन उपर्युक्त ६ उपायोंको काममें लानेकेलिये तन मन धनसे पूरा २ प्रयत्न किया जायगा तो आशा है कि आपके उन पाठशालारूपी वृक्षोंमें (जिनको कि आप चिरकालसे अपने धनरूपी जलसे सिंचन कर रहे हो) शीघ्र ही उत्तमोत्तम फल दृष्टिगोचर होने लगेंगे.

सम्पादक.

दि. जैनप्रांतिक सभा बंबईका

वार्षिकोत्सव.

—:o:—

प्यारे पाठको! इस प्रांतिकसभाका पहिला वर्ष भादवा सुदी १५ को समाप्त हो गया. इसकारण अब आश्विनशुक्ला ८-९-१०-मुताबिक तारीख २०-२१-२२ अक्टूबर सन १९०१ को इसका वार्षिकोत्सव (सालियाना जलसा) होना निश्चित हुवा है. क्योंकि इस ही मोकेपर आश्विन सुदी ७ से ११ तक बडे समारोहके साथ रथयात्राका उत्सव भी होगा. जिसकी पत्रिका देशदेशान्तरोंमें सर्वत्र भेजी गई है. और बंबई प्रान्तमें प्रायः समस्त ही मुख्य २ नगरोंमें प्रतिनिधि भेजनेकी प्रेरणा तथा रथयात्राकी पत्रिकायें भेजदी गई हैं तथा नियमानुसार सभाके समस्त सभासदोंको भी एक मास पहिले सूचना देदी गई है. गत अंकमें समस्त सभासदोंसे प्रेरणा की गई थी कि आगामी वार्षिकोत्सवपर विचारने योग्य प्रस्ताव अवश्य भेजें परन्तु बडे आश्चर्यकी बात है कि हमारे किसी भी भाईने इस और दृष्टि नहिं दी. लाचार अब हम ही अपनी सम्मतिके अनुसार कुछ प्रस्तावोंका उल्लेख करते हैं. कि इन प्रस्तावोंपर अच्छी तरहँ विचार करें क्योंकि अधिवेशनके समय इनकी योग्यता व अयोग्यताके विषयपर आप लोगोंको सम्मति देनी पड़ैगी.

वे प्रस्ताव इसप्रकार हैं.

(१.) समस्त पाठशालाओंमें पढाईका क्रम एकसा होना चाहिये क्योंकि इसके विना परीक्षा लेनेमें बहुत कुछ गड़बड़ पड़ती है (वह पढाईका क्रम इस ही अंकमें विद्याविभाग" शीर्षकमें दिया गया है.)

(२.) अण्णापा फड्यापा चौगुले बी. ए. के स्थानमें विद्याविभागका मंत्री दूसरा नियत किया जाय.

(३.) तीर्थक्षेत्रोंसे जो हिसाब आये हैं उनपर विचार किया जाय और जहांसे हिसाब नहिं आया है उनके वास्तै दूसरा प्रबंध किया जाय.

(४.) नंदलालजी पाटोदीके स्थानमें कोई दूसरा उपकोषाध्यक्ष नियत किया जाय.

(५.) महामंत्रीकी सहायताकेलिये एक उपमंत्री नियत किया जाय.

(६.) संकृत विद्यालय भंडारको ध्रुव करनेका उपाय किया जाय. (वे उपाय इस ही अंकमें " दि. जैनसंकृत विद्यालय बंबई" इस शीर्षकके लेखमें बताये गये हैं.

(७.) बंबई प्रांतमें शाखासभावोंका योग्यप्रबंध तथा देशविभागपर विचार किया जाय.

(८.) समस्त लोकल सभावोंका वर्ष मिती भादवा सुदी १५ को समाप्त होकर आश्विन सुदी २ से पहिले २ समस्त

शाखासभावोंकी रिपोर्टें इस सभामें आ जाना चाहिये.

(९.) जो विधवाविवाह करनेवाला अथवा विधवाविवाहकी विधिनिरूपण करके प्रेरणा करे, उसको इस सभाका सभासद न बनाया जाय.

(१०) बाल्यविवाह और वृद्धविवाहके तथा कन्याविक्रयके रोकनेका उपाय किया जाय.

(११) जैन जातिमें व्यर्थव्ययके (फिजूलखर्चीके) जो जो रिवाज हैं उनपर विचार करके अनुचित्त हो उनको रोकनेका प्रबंध करना चाहिये.

प्रतिनिधिमहाशयोंको इनपर विचार कर लेना चाहिये. सम्पादक.

इशारेको इशारा.

जैनगजट अंक २१ तारीख १६ सं १९०१ में एक लेख " बुद्धिमानोंको इशारा " इस शीर्षकका छपा है. जिसमें लेखदाताने अपनी ढाई चावलकी खिचड़ी पकानेमें बहुत कुछ परिश्रम किया है और शिक्षाप्रणालीके वादग्रस्त विषयमें उभय पक्षवालोंको असभ्य शब्दोंके प्रयोगपूर्वक आपसमें निष्प्रयोजन मारामार करनेके उपालंभका भागी ठहराया है उनके लेखकी समालोचना ही इस लेखका उद्देश्य है.

प्रथम ही लेखदाताने लिखा है कि— "महाविद्यालयकी शिक्षाप्रणालीमें भूगोल तथा साइन्स बिलकुल नहिं पढाई जाय क्योंकि यह जैनधर्मके करणानुयोग व द्रव्यानुयोगके विरुद्ध है. इसलिये इसक शिक्षाद्वारा नवयुवक जैनसंतानके धर्मच्यु हो जानेका बडा भय है. इस पक्षक जैसा आन्दोलन है वह जानबूझकर विशे षतापूर्वक जैनधर्मकी निंदा तथा उस विशेष दृढतारूप शंका करानेवाला है क्योंकि इससे सबके दिलोंपर यह विश्वा होता है कि करणानुयोग झूटा है जब उसकी असत्यता प्रगट होनेके भय अंग्रेजी भूगोलकी शिक्षा रोकी जाती इत्यादि " लिखा है इसके बांचनेसे विदि होता है कि लेखक महाशयने न त हमारे लेखको ही पूरा २ पढा औ न उसके असली अभिप्रायको ही सूक्ष्म दृष्टिसे विचारा. यदि विचारते तो ऐस लिखनेका अवसर ही नहिं मिलता. इस कारण अब लेखक महाशयसे प्रार्थना कि निम्नलिखित पंक्तियोंको जरा ध्या देकर बांचें.

महाशयवर! जो भूगोल और साइंसके पढनेसे ही धर्मच्युत हो जानेका भय होता तो जैनमित्र प्रथमवर्ष अंक ९ के पृष्ठ ४ द्वितीय कालमकी १८ वी पंक्तिसे २१ वी पंक्तितक यह क्यों लिखते कि " तत्पश्चा किसी कालेजमें भरती होकर वर्तमानशिक्ष प्रणालीकी प्रथाको पूरी करके अभी फलकी प्राप्तिमें तल्लीन होयगा " अथवा ज जिनमतविरुद्ध ग्रंथोंका अभ्यास करने ही धर्मच्युत हो जाते तो बडे २ आचा र्योंने अन्यमत संबंधी ग्रंथोंको क्यों पढ़ा और जो नहि पढ़ा तो उनका खंडन जै नग्रंथोंमें किसप्रकार किया? भाईसाह जिन्होंने जिनधर्मके सारभूत अनेकांत मृतका पान नहिं किया है, उनके चित्तरूप

कि बिंदु स्थितिको प्राप्त नहिं होते. प्रिय
र्त्रो! यहांपर व्युत्पन्न अव्युत्पन्नपक्षरूप
निकान्तका आश्रय लेनेसे ही आपका
भ्रम दूर हो जायगा जो कि गोमट्टसारा-
दिक ग्रंथोंमें नेमिचंद्रादिक आचार्य्योंने
आभीयमासुरक्खा " इत्यादि गाथावों-
रा मिथ्यात्ववर्द्धक ग्रंथोंके अभ्यासकी
दा की है उनका अभिप्राय अव्युत्पन्न
क्षसे है. भावार्थ—जो नवीन बालक हैं
नको बाल्य अवस्थामें अन्यमतसंबंधी
थ पढानेसे धर्मच्युत हो जानेका भय है
योंकि उसके श्रद्धानमें इतनी दृढता
हीं है कि जो अन्यमतके ग्रंथोंका अ-
यास करनेसे धर्मच्युत न हो. जैसें कि
हस्थ युवास्त्रीयोंको परपुरुषसे वार्तालाप
रनेका निषेध करते हैं. क्योंकि उसके
रिणामोंमें अभी इतनी सामर्थ्य नहीं है
के जो परपुरुषसे वार्तालाप करके अपने
ीलरत्नकी रक्षा करसके. परन्तु वही स्त्री
ब कालांतरमें प्रौढा अवस्थाको प्राप्त हो
ाती है तो उसको परपुरुषसे वार्तालाप
रनेका निषेध नहिं किया जाता है.
योंकि अब उसके परिणामोंमें हिताहितका
ान व सामर्थ्य हो गई है कि परपुरुपसे
ार्तालाप करनेसे उसके शीलरत्नके नष्ट
ोनेका बिलकुल भय नहीं है. इस ही
कार अव्युत्पन्न बालकको जो अन्यमतके
ंथोंका अभ्यास कराया जाय तो उसके
श्रद्धानभृष्ट होनेका भय है. परन्तु कालां-
रमें जब वही बालक अपने सिद्धांतके
हस्यका ज्ञाता होकर व्युत्पन्न हो जायगा
तब अन्यमतके ग्रंथोंका अभ्यास करनेसे
उसके श्रद्धानभृष्ट होनेका भय नहिं रहैगा.
कहनेका प्रयोजन यह है कि महाविद्यालः-
यमें जो बाल्यावस्थाके विद्यार्थियोंको
भूगोल और साइंसके पढानेका निषेध
किया है वह इस ही अभिप्रायसे किया
था कि जब उनकी बुद्धि परिपक्व हो
जाय तब उनको भूगोल साइंस वगेरह
पढावें तो कुछ हानि नहीं. यदि चेतावनी
मात्रसे ही करणानुयोग अथवा द्रव्यानुयो-
गकी असत्यता प्रगट होगी तो ऐसी
समझनेवाले महाशयोंकी बुद्धिको धन्यवाद
देनेके सिवाय हम और क्या कह सक्ते
हैं? क्या किसी सत्कुलके पुत्रको बाल्याव-
स्थामें खोटी संगतिसे रोकनेका उपदेश
दिया जाय तो क्या उसका आप ऐसा
अर्थ निकालेंगे कि सत्कुलकी असत्यता
प्रगट होनेके भयसे उस बालकको कुसं-
गतिसे रोका जाता है? इस विषयमें
विशेष लिखनेकी कोई जरूरत नहीं है.
बुद्धिमानोंको इशारा ही काफी होता है.

भूगोल और साइंस वगेरहको पढाना
महाविद्यालयमें बंध करनेका दूसरा अभि-
प्राय जैनमित्र द्वितीयवर्षके अंक ६ पृष्ट
३–४–५–६–७–८ में सविस्तर निरूपण
किया है. लेखक महाशयको चाहिये कि
उक्त अंकको निकालकर सूक्ष्मदृष्टिसे ए-
कबार फिर भी बांचें. आशा है कि उनके
सब संदेह दूर हो जायगे. यदि फिर भी
महाशयको संदेह रहै तो हम फिर भी
लिखनेका निषेध नहिं करते हैं. दावात
कलम मौजूद है.

संपादक.

निर्माल्यद्रव्यसंबंधी चर्चा.

निर्माल्यद्रव्यकी चर्चा केई बरसोसें चर्च रही है. तो भी जैनमित्रने अपने प्रथम वर्षके बारवे अंकमें इसकी चर्चा करनेका प्रारंभ किया है. उस अंकमें जो अभिप्राय प्रगट हुवा है सो जैनमित्रके संपादक पंडित गोपालदासजीका है. जिसके बाद एक लेख जैनमित्रके द्वितीय वर्षके पांचवें अंकमें श्रवणबेळगुळके पंडित दौर्बलिशास्त्रीके हस्ताक्षरका छपा है. जिसके नीचे नोटमें आगरानिवासी पंडित बलदेवदासजीका इस विषयमें अभिप्राय संपादकने प्रसिद्ध किया है. जैनपत्रिका लाहोरने भी एक अंकमें अपना अभिप्राय प्रगट किया था. मार्च १९०१ के अंकमें जैनहितैषीने भी कुछ इस विषयमें लिखा था. इसमुजब इस विषयकी चर्चा सब जगें होने लगी है सो कुछ शुभ चिह्न समझना चाहिये. क्यौंकि जनसमूहका श्रद्धान विद्वान पंडितोंके अभिप्रायऊपर ही अवलंबित रहता है. विद्वान पंडितोंकी ग्रंथाधारसे परस्पर चर्चा होनेसे इस विषयका निर्णय हो सकता है. और निर्णय होनेसें श्रद्धान दृढ होता है.

अब इस विषयकी इतनी चर्चा छेडनेकूं मेरी विज्ञापनपत्रिका थोडीबहोत कारण है. ऐसा मैं भी समझता हूं. सो इससे कुछ भला ही हुवा है. परंतु बारा महिनेके असरेमें फकत पांच छह पंडितोंके ही अभिप्राय प्रगट हुए और बाकी पंडितगण सब मौन पकड रहे हैं सो अफसोस लगता है. "वादे वादे जायते तत्वबोधः" इस वाक्यपर पंडित लोगोंको ध्यान देना चाहिये. और हरएक विषयऊपर ग्रंथाधारसहित अपना अभिप्राय प्रगट करना चाहिये.

आजतक इस विषयकी जो चर्चा हुई जिसमें "निर्माल्यद्रव्य ग्रहण करनेमें बडा दोष है," ऐसा सबहीका अभिप्राय दीखताहै. कौनसा दोष लगता है और दोष मिटानेका उपाय क्या ? इस बाबदमें कुछ भिन्न २ अभिप्राय देखनेमें आते हैं. पंडित गोपालदासजी कहतेहैं कि, "राजवार्तिकजीमै श्रीमान् अकलंक देवने निर्माल्यके ग्रहण करनेमें अंतराय कर्मका आस्रव होता है ऐसा लिखा है. इस कारण निर्माल्यका ग्रहण करना शास्त्रकी आज्ञासें सर्वथा विरुद्ध है." (जैनमित्र प्र० वर्ष अंक १२) इस बातकूं पंडित दौर्बलीशास्त्री मान्य करते नहीं है. और कहते हैं कि श्रीमान् अकलंक स्वामीका वाक्य जो "देवतानिवेद्यानिवेद्यग्रहणं" ऐसा है जिसका अर्थ निर्माल्यद्रव्य नहीं होता है लेकिन भगवानकूं चढाए पहले जो पूजनवास्ते द्रव्यसामग्री रखते हैं उसकूं, अथवा मंदिरके उपकरणकूं ग्रहण करनेसे अंतराय कर्मका आस्रव होताहै. और निर्माल्यद्रव्य ग्रहण करनेसे अदत्तादानका दोष लगता है. अशुभ कर्मका आस्रव होता है. चोरीका दोष आता है तथा दत्तापहार नामक जनापवाद भी लगता है. ऐसा दौर्बलीशास्त्रीका अभिप्राय है.

"देवतानिवेद्यानिवेद्यग्रहणं" इस वाक्यका अर्थ पंडित गोपालदासजी "निर्माल्यद्रव्यग्रहण" ऐसा करते है और मैने भी विज्ञापनपत्रमें इस ही अर्थकूं प्रसिद्ध किया है. दौर्बलीशास्त्री "इसका ऐसा अर्थ होता नहींहै" ऐसा व्याकरणशास्त्र और न्यायशास्त्रके आधारसे प्रतिपादन करते हैं. मैने सर्वार्थसिद्धीकी वचनिका पंडित जयचंदजीकृत देखी जिसमें "देवतानिवेद्यानिवेद्यग्रहणं" इस वाक्यके अर्थकूं निर्माल्यद्रव्य ग्रहण करनेसे अंतराय कर्मके आस्रव होते हैं ऐसा लिखाहै. पंडित सदासुखजीने तत्वार्थसूत्रकी अर्थप्रकाशिका नामकी वचनिका लिखी है उसमें भी इसमुजबही

अर्थ है. राजवार्तिककी वचनिकामें पंडित पन्नालालजी दूनीवाले भी ऐसा ही अर्थ लिखते हैं. पंडित भूधरदासजी भी चर्चासमाधान नामक ग्रंथमें ऐसा ही अर्थ लिखते हैं. इतना ही नहीं, बलके अमृतचंद्राचार्यकृत तत्वार्थसारनामा सूत्रकी वृत्तिमें इसमुजब लिखा है—

तपस्वीगुरुचैत्यानां पूजालोपप्रवर्तनं ॥
अनाथदीनकृपणभिक्षादिप्रतिषेधनं ॥ ५३ ॥
वधबंधनिरोधैश्च नासिकाछेदकर्तनं ॥
प्रमादाद्देवतादत्तं नैवेद्यग्रहणं तथा ॥ ५४ ॥
निरवद्योपकरणं परित्यागो वधोऽगिनां ॥
दानभोगोपभोगादिप्रत्यूहकरणं तथा ॥५५॥
ज्ञानस्य प्रतिषेधश्च धर्मविघ्नकृतिस्तथा ॥
इत्येवमंतरायस्य भवंत्यास्रवहेतवः ॥ ५६ ॥

इसमें "प्रमादाद्देवतादत्तं नैवेद्यग्रहणं तथा" इस वाक्यका अर्थ तो स्पष्ट दीखता है कि, देवताकूं अर्पण किया हुवा जो नैवेद्यपदार्थ ताकूं जो ग्रहण करै उसकूं अंतराय कर्मके आस्रव होते हैं. तो क्या श्रीमत् अमृतचंद्र स्वामीकूं भी देवतानिवेद्यानिवेद्यग्रहणका अर्थ बराबर नहीं भास्या होगा? पंडित जैचंदजी, पंडित भूधरदासजी, पंडित सदासुखजी, पंडित पन्नालालजी और पंडित गोपालदासजी इतने जने सबही इस वाक्यके अर्थ समझनेमें गलती खा गये ? मैं तो व्याकरण न्याय कुछ पढा नहीं हूं परंतु आचार्य अमृतचंद्रसूरि और पंडित जैचंदजी आदिके अर्थकूं ग्रहण करनेमें कुछ हानि समझता नहीं हूं. दौर्बलीशास्त्री लिखते हैं कि—

"देवतानिवेदनयोग्य द्रव्य ग्रहण करनेसे अंतरायकर्मका आस्रव होता है, क्यौं कि ऐसा करनेसे पूजामैं विघ्न होता है, अंतराय कर्मके आस्रवमैं विघ्नकरणत्व हेतु होना चाहिये."

विघ्नकरनेवालेके ही अंतराय कर्मका आस्रव युक्तियुक्त है इत्यादि लिखते हैं किंतु राजवार्तिककारनैं अंतराय कर्मके आस्रवका विस्तार लिखा है, तहां लिखाहै कि "विभवसमृद्धिविस्मयद्रव्यापरित्यागद्रव्यासंप्रयोगसमर्थनाप्रमादावर्णवाददेवतानिवेद्यानिवेद्यग्रहणनिरवद्योपकरणपरित्यागपरवीर्यापहरणधर्मव्यवच्छेदनकुशलाचरणतपस्विगुरुचैत्यपूजाव्याघातः" इत्यादि. इनमेंसे किसी कृत्यमें तो विघ्नकरणत्व हेतु है और किसी कृत्यमैं विघ्नकरणत्व हेतु नहीं भी है. जैसें विभवसमृद्धिविस्मय कहिये परकी वैभवसमृद्धि देखके आश्चर्य करना इसमें विघ्नकरण हेतु कहां है ? और द्रव्यापरित्याग कहिये अपने द्रव्यका लोभतै दानादिक न करना, सामर्थ्य होय तिसमें प्रमाद करना, परकूं झूठा दूषण लगावनां. इत्यादि मैं विघ्नकरणत्व हेतु कुछ भी नहीं है. यदि इसमैं भी कोई व्याकरण न्यायके जोरसे विघ्नकरणत्व ठहरावोगे तो अदत्तादानमैं भी विघ्नकरणत्व हेतु सिद्ध होता है. बिना दिये पराई वस्तु लेनी सो अदत्तादान है जिसमैं परकूं लाभांतराय अथवा भोगोपभोग अंतरायत्व स्पष्ट ही है. और देवतानिवेद्यानिवेद्यग्रहण इससे पूजामैं विघ्न करना ऐसा हेतु होता हो तो फिर "तपस्विगुरुचैत्यपूजाव्याघात" कहिए तपस्वी गुरु और चैत्य पूजामै विघ्न करनां ऐसा दूसरा वाक्य फिर क्यौं लिखते ? एक ही अर्थवाचक दो वाक्य लिखनेका कुछ प्रयोजन नहीं था. ऐसा पुनरुक्त दोष स्वामी अकलंकाचार्यके ग्रंथमें होना असंभवित है. पंडित भूधरदासजीनैं "देवतानिवेद्यं" इसकूं देवताकूं "निवेदित" कहिये 'अर्पण किई वस्तु' ऐसा अर्थ किया है. 'देवतानिवेद्य' यह शब्द तो सामासिक है इसका 'देवतादत्तं निवेद्यं' ऐसा समास जो अमृतचंद्राचार्यने किया है उसमुजब करै तो क्या हरज है? हो सकता है. और अग्नीकूं भी देवता कहते हैं. गुजरातमें तो अग्नी मांगते बखत "देवता

आपशो? देवता सळगाव्यो!" माने देवता देवोगे? देवता सळगाई है? ऐसा कहनेका संप्रदाय है. और इस अर्थसे निवेद्य शब्दकूं दौर्बली शास्त्रीके अभिप्रायमुजब अर्थ ग्रहण करैं तो भी अंतराय कर्मके आस्रव होते हैं. फिर भी दौर्बली शास्त्री लिखते हैं कि, निर्माल्य द्रव्य ग्रहण करनेसें अदत्तादान चोरीका दोष लगता है. तो क्या चोरी करनेसे अंतराय कर्मके आस्रव नहीं होंगे? 'मायातैर्यग्योनस्य' इस सूत्रसे चोरी करनेवालेकूं मायाकषाय होता ही है और मायाकषायसे तिर्यंच योनीके आश्रव होते हैं. तो तिर्यंच योनीके आस्रव अंतराय कर्मसें कुछ कम है? कुछ कम नहीं है. बलके बहोत भारी है. तो फिर दौर्बली शास्त्रीके अभिप्रायसैं तो निर्माल्यग्रहण करनेका दोष बहोत ही भारी होगया. रयणसारमें कुंदकुंदाचार्य लिखते हैं—

जिण्णुद्धारपइच्छी जिणपूजातित्थ वंदणविसेसघणं ॥ जो भुंजइ सो भुंजइ जिणुदिट्ठं णिरय गइ दुक्खं ॥ ३१ ॥ पुत्तकलत्तविदूरो दारिद्दो पंगमूक बहिरंधो ॥ चंडालादिकुजादो पूजादाणाइ दव्वहरो ॥ ३२ ॥ गयह छपायणासिय कण्णउरंगुलविहीणदिट्ठीय ॥ जो तिव्वदुक्खमूलो पूजादाणाइदव्वहरो ॥ ३३ ॥ खयकुट्ठिमूलसुलायिभयंदर जलोयरंक्खसरो ॥ सीदूण बह्मराय पूजादाणं तराय कम्मफलं ॥ ३४ ॥

अर्थ—जीर्णोद्धार प्रवृत्ति, जिनपूजा, तीर्थवंदना विशेष धनकूं जो खावैं सो नरक गतिके दुखकूं भोगे है. ऐसा जिन भगवाननैं कहा है. पूजादानादि द्रव्यकूं जो लेवे है उसकूं पुत्रवियोग स्त्रीवियोग होय है. दारिद्र, पंगुत्व, मूकत्व, बधिरता, अंधता, और चांडालादिक मैं जन्म लेना पडता है. वह हाथ, पांव, नाक, कान, उर, अंगुली और नेत्रसैं हीण होता है. क्षय, कुष्ठ, मूलव्याध, शूळ, भगंदर, जलोदर, श्वास, कास इत्यादि महान् व्याधि पूजादानके अंतरायसैं होती है. फिर भी सकलकीर्ति आचार्य सद्भाषितावलीमें लिखते हैं—

देवशास्त्रगुरूणां भो निर्माल्यं स्वीकरोति यः ॥ वंशच्छेदं परिप्राप्य पश्चात्स दुर्गतिं व्रजेत् ॥ ५१ ॥ रत्नत्रयं समुच्चार्य गुरुपादौ प्रपूजितौ ॥ पूजायां च यो गृण्हन् प्राघूर्णो दुर्गतौ स ना ॥ ५२ ॥ जिनेश्वरं मुखोत्पन्नं शास्त्रं केनापि चर्चितं ॥ अर्चायातं हि यो गृण्हन् मूकादिकुजनो भवेत् ॥ ५३ ॥ देवद्रव्येषु यावत्कं गुरुद्रव्येषु यत्सुखं ॥ तत्सुखं कुलनाशाय मृतोऽपि नरकं व्रजेत् ॥५५॥

अर्थ—हे भव्य, देव, गुरु, और शास्त्रका निर्माल्य जो कोई ग्रहण करे है, उसका निर्वंश होता है और फिर वह दुर्गतिकूं जाता है. रत्नत्रयको उच्चारण करके गुरुपादुकाका पूजन किया हुवा निर्माल्यद्रव्य जो ग्रहण करता है सो निरंतर दुर्गतिमें घूमता है. जिनेश्वरमुखोत्पन्न जो शास्त्र हैं उसकी पूजा करे हुये द्रव्यकूं जो ग्रहण करता है सो गूंगा बहिरा ऐसा कुजन होता है. देवद्रव्यविषै और गुरुद्रव्यविषै जो कुछ सुख होय तो वह कुलनाशके अर्थि है और वह मृत्युके पीछे नरक जायगा.

इसमुजब श्रीमत् कुंदकुंदाचार्यसे लगाय अकलंक स्वामी अमृतचंद्राचार्य, सकलकीर्ति आचार्य, पंडित जैचंदजी, पंडित भूधरदासजी, पंडित सदासुखजी, पंडित पन्नालालजी, पंडित गोपालदासजी इतने सभी निर्माल्यद्रव्य ग्रहण करनेमें अंतरायकर्मके आस्रव और नरकगतिका बंध और गूंगा, बहिरापना, और वंशछेद दुर्गति इत्यादि पाप बतलाते हैं. और पंडित दौर्बली शास्त्री अदत्तादान, चोरी, दत्तापहारका दोष और

अशुभकर्मका आस्रव होता है ऐसा लिखते हैं. सो सब एकका एक ही है.

अब निर्माल्यद्रव्य आप न खावै लेकिन् और पूजारी माली सेवक इत्यादिकूं देवैं तो पापका अधिकारी होता है या नहीं? इस मुद्देऊपर पंडित गोपालदासजी उसही अंकमें लिखते हैं कि, "इस दोषके भागी वे पंच लोग हैं कि, जो उस निर्माल्यको विनामूल्य ग्रहण करके मालीको बेच डालते हैं और उसकी एवजमैं मालीकी नौकरीरूप मूल्यको ग्रहण करते हैं." मैने अपने विज्ञापनपत्रिकामैं इस ही अभिप्रायकूं स्वामिकार्तिकेयानुप्रेक्षाके आधारसैं पुष्टीकरण किया है. पंडित दौर्बलीशास्त्रीने इस मुद्देपर कुछ स्पष्ट अभिप्राय दिया नहीं है परंतु उनोनैं निर्माल्यद्रव्य लेवैं उसकूं चोरीका दोष बतलाया है तो वोही दोष इस कृत्यकूं लगाया जायगा. इस मुद्देपर पंडित बलदेवदासजी आगरानिवासीका अभिप्राय कुछ और है. वे कहते हैं कि, "जैसें प्रजा राजाकेलिये भेट लेजातीहै और उस भेटको राजाके नौकर चाकर स्वयं लेलेते हैं, ऐसा रिवाज हमेशासे चला आ रहा है. उसमें राजाके आज्ञाकी विशेष आवश्यकता नहीं है. इस ही प्रकार अस्मदादि भगवतकेलिये फल पुष्पादिक पूजामैं भेट करते हैं उसकूं भगवानके मंदिरके सेवक माली व्यास वगैरा स्वयं लेलेते हैं" इत्यादि. इस अभिप्रायमैं बडी शंका ऊठती है. राजाकूं दिईहुई भेट राजाकी आज्ञाबिगर राजाके नौकर चाकर लेजाते हैं यह कहना असंभवित है. राजाकूं दिईहुई चीजमेंसे राजाके आज्ञाबिगर चाकर नौकर लेशमात्र भी ले सकते नहीं हैं. कदापि सभामैं राजानैं नौकरोंकूं भेट उठानेकी आज्ञा न दिई होय तो भी अपने अंतःपुरमें पहिलेसे ही आज्ञा दिईहुई रहती है. और छोटीसी फलपुष्पोंकी भेट होय तो चाकरकूं लेजानेकी राजाकी परवानगी रहती है परंतु कोई किमतवान बडी भेट दोहजार पांचहजारकी होवे सो तो चाकरलोक अपनेघर लेजाते नहीं है लेकिन राजाके जामदारखानेमें जमा कराते हैं. सो सब राजाके हुकमसें ही होता है. फिर भी एक भारी शंका पंडितजीके अभिप्रायसे ऊठती है कि, भगवानके चाकर हमलोग हैं या माली व्यास हैं? माली व्यासको नौकर भगवानने रखे हैं या हम लोगोंने रखे हैं? भगवानकी सेवा पूजा तो हम लोग करते हैं, माली व्यास तो भगवानकूं स्पर्श भी नहीं करते हैं. वह तो हमारे हुकममुजब मंदिरके बाहर बैठे रहते हैं. और हम कहैं सो काम करते हैं. पंडितजीके अभिप्रायमुजब तो हम लोग भगवानकी सेवापूजा करनेवाले हैं सो माली व्यास निर्माल्यद्रव्य ग्रहण करनेके पातककूं जानते नहीं होगें तो उन्हें जैनी श्रावकोंको समझाना चाहिये और कुगतिके पातकसे बचाना चाहिये. जैसा अपना अज्ञान पांचबरसका बच्चा निर्माल्य लेता होय तो उसके हाथमेंसे लेकर फेंक देतेहैं वैसा ही माली व्यासकूं पापसे बचाना चाहिये. भगवानके सामने धरी जो भेट सो भगवानके बिना आज्ञासैं हमलोग लेलेवैं तो कुछ हरज नहीं हैं इसमें तो पूजा सेवा करनेवाले श्रावक लोककूं निर्माल्य खानेकेवास्ते पंडितजीकी सम्मति दीखती है. सो बडा आश्चर्य है. पंडित बलदेवदासजीके अभिप्रायमैं और पंडित गोपालदासजीके अभिप्रायमें बडा विरोध दीखता है.

खैर, अब इस निर्माल्य विषयका तीसरा मुद्दा यहहै कि इस निर्माल्यद्रव्यकूं क्या करैं? पंडित गोपालदासजी कहतेहैं कि, "पद्मपुराणजीमैं निर्माल्यकूटोंका वर्णन स्पष्टरीतिसैं कियाहै. उससैं यही सिद्ध होताहै कि, मंदिरोंके बाहर निर्जंतु भूमिमैं निर्माल्य निक्षेपण करनेके कूट (स्थान) बनाने चाहिये. जिनमें पूजा करनेके बाद निर्माल्य रख दिया जाय और फिर उसकूं कोई

ग्रहण करो अथवा मत करो, हमको उससे कुछ प्रयोजन नहीं इत्यादि सो पद्मपुराणजीमें निर्माल्यकूटका वर्णन है और तो कहीं नहींहै परंतु पर्व ९७ में जहां कृतांतवक्र सेनापति सीताजीकूं रथमें बैठायके वनमें छोडनेकूं गया, उस समय उसकूं अपने पराधीन नौकरीका पश्चात्ताप हुवा वहांपर ऐसा वर्णन है—

चित्रचापसमानस्य निःकृत्य गुणधारिणः॥ नित्यनम्रशरीरस्य निंद्यं भृत्यस्य जीवितं ॥ १४३ ॥ संस्कारकूटकस्यैव पश्चान्निवृत्ततेजसः ॥ निर्माल्यवाहिनो धिग्धिग् भृत्यनाम्नोसुधारणं ॥ १४४ ॥ पश्चात्कृतगुरुत्वस्य तोयार्थमपि नामिनः ॥ तुलायंत्रसमानस्य धिक्धिक्भृत्यस्य धारणं ॥ १४५ ॥

अर्थ—जैसें चित्रामका धनुष्य निःप्रयोजन गुण कहिए फिडचकूं धरे है. सदा नम्रीभूत है तैसें यह किंकर निःप्रयोजन गुणकूं धरे है. सदानम्रीभूत है. धिक्कार किंकरका जीवना. पराई सेवा करनी संस्कारकूटवत तेजरहित होता है. जैसें निर्माल्यकूं चाहनेवाले निंद्य है तैसें परकिंकरता निंद्य है. धिक् धिक् पराधीनके प्राणधारणकूं. यह पराधीन पराया किंकर टीकलीसमानहै. जैसें टीकली परतंत्र होय कूपका जीव कहिये जल हरै, तैसें यह परतंत्र होय पराए प्राण हरैहै. कबहू चाकरका जन्म मति होहू. पराया चाकर काठकी पुतलीसमानहै ज्यौं पेला नचावे त्यौं नाचैं.

इसमुजब पद्मपुराणजीमें वर्णन है. इसमैं फलानी रीतसैं निर्माल्यकूट फलानी जगामैं बनाना अथवा उसमैं फलानीबखत निर्माल्य डालना इत्यादि कुछ भी नहींहै. फकत दृष्टांतकेवास्ते उनोंने संस्कारकूटका नाम दिया है. सो कुछ कार्यकारी नहीं है. यदि पंडित गोपालदासजी कहते हैं उसमुजब मंदिरजीके बाहर एक निर्माल्यकूट बनायाजाय और उसमें निर्माल्य डालते जांय तो भी वह कुछ निर्दोष बंदोबस्त होता नहीं है. सबब यह कि, हररोज रुपिया दो रुपियाकी सामग्री उसमें डाली जायगी; सो लेनेके वास्ते दीन दरिद्री वहांपर भेले होवेंगे. उनमैं खैंचाखैंच मारामारी होती रहेगी. जिसके बंदोबस्तवास्ते कोई आदमी रखकर बांटते रहोगे तो भी निर्माल्य खानेकूं देनेका दोष फिर आया. यदि रोजके रोज नहिं देवोगे बरस छैमहिनेतक उसमें भरा रखोगे तो चावल, खोपरा, बदाम, श्रीफल, इत्यादि पदार्थमें हजारों जीव पैदा होवेंगे. सो जीवका भरया हुवा निर्माल्य बांटदेनेमें तो बहोतभारी दोषके भागीदार होना पडेगा. सो यह निर्माल्यकूटका बंदोबस्त कोई तरहंसे निर्दोष दीखता नहीं है. जिससे तो रोजकेरोज अग्नीमैं फूंकदेना हजार हिस्से बेहतर है.

लाहोरके जैनपत्रिकाकार लिखते हैं कि, "निर्माल्यकूं नदीमैं फेंकदेना" सो यहभी उपाय निर्दोष नहीं है. नदी हरएक गांवके समीप होती नहींहै. नदीमें डालनेसे दीन दरिद्री दौडते पीछैं आवेंगे नदीमेसे निकालके खावेंगे. कदाचित नदीमें पडा रहेगा तो बडा ढेर बन जायगा उसमें जीवोंकी उत्पत्ति बढेगी. पानी बिगड जायगा, पीनेलायक नहीं रहेगा. सो यह भी उपाय निर्दोष नहीं है. इससैं तो अग्नीमैं भस्म करदेना ही ठीक है.

अग्नीमैं भस्म करदेनेके उपायमैं भी कुछ दोष दीखता होय तो बात और है. परंतु अग्नीमें भस्म करनेमें किसी भी पंडितने फलाना दोष है ऐसा अभीतक बताया नहीं है. फकत शास्त्रकी आज्ञा कहीं मिलती नहीं है इतना ही कहते हैं. परंतु जो उपाय और सब उपायोंसें निर्दोष दीखता होय और अग्नीमें डालनेसे कुछ नुकसान न होता होय, जिसकूं शास्त्रकी आज्ञा नहींभी मिलैं तो भी कुछ हरज नहीं है. और कदा-

वेत् थोडीसी भी आज्ञा मिलै तो वह बहोत ही हितरहै.

मैनें अपनी विज्ञापनपत्रिकामें अग्निकुंडमें पूजन करनेसे निर्माल्यका दोष टलता है ऐसा खरोलेख देकर महापुराणके श्लोक आधारमें बताए हैं. सो महापुराणमें भरतचक्रवर्तीनें व्रती- श्रावककूं ईज्या, वार्ताआदि षट्कर्म बताये हैं वहांपर प्रथम ईज्या नाम पूजाके चार भेद बताये हैं. १ नित्यमह, २ चतुर्मुख, ३ कल्पवृक्ष, ४ अष्टाह्निक. इनचारों भेदशिवाय पूजनका पांचवां भेद हैही नहीं. इनचारों भेदोंमेसें श्रावककूं प्रथमका भेद नित्यमह सो ही बन सकता है, दूसरा भेद मुकुटबंध राजाका है, तीसरा चक्रवर्तीका है और चौथा स्वर्गके देवोंका है. अब प्रथमभेद नित्यमह इस मुजब है.

तत्र नित्यमहो नाम शश्वज्जिनगृहं प्रति ॥ स्वगृहान्नीयमानार्चागंधपुष्पादिकाक्षताः ॥ २७ ॥ चैत्यचैत्यालयादीनां भक्त्या निर्मापणं च यत् ॥ शाश्वतीकृत्य दानं च ग्रामादीनां सदार्चनं ॥ २८ ॥ या च पूजा मुनींद्राणां नित्यदानानुरंगिणी ॥ स च नित्यमहो ज्ञेयो यथाशक्त्या प्रकल्पितं ॥ २९ ॥

अर्थ—जो निरंतर अपनैं घरतैं गंधपुष्प अक्षतादि पूजासामग्री लेकरि जिनमंदिर जाय सदा विधिपूर्वक पूजा करैं सो नित्यमह कहिये. ॥ २७ ॥ भक्तिकरि जिनमंदिर जिनप्रतिमादिकका निर्मापन ग्रामादिकके मध्य कराय अर दानकी मुख्यता करि जो सदा भगवानका पूजन करना ताका नाम भी सदार्चन कहिये नित्यमह कहा है. ॥२८॥ अर जो मुनींद्रनिकी पूजा अर सदा विधिपूर्वक मुनीनकूं आहार देना सो हू नित्यमह है. दान अपनी शक्तिप्रमाण करनां योग्य है ॥ २९ ॥

इसमुजब श्रावक और सम्यग्दृष्टी जो कुछ पूजन, प्रतिष्ठा, दान करता है सो सब नित्यमहमैं गर्भित है. नित्यमहशिवाय श्रावककूं दूसरा पूजन नहीं है.

अब सम्यग्दृष्टी श्रावककूं गर्भान्वयादि त्रेपन क्रिया करनेकी आज्ञा है. जहां प्रथम ही आधान- क्रियाविषैं अग्निकुंडका स्थापन और उसमें पूजन हवन करना लिखते हैं.

तत्रार्चनविधौ चक्रत्रयं छत्रत्रयान्वितं ॥ जिनार्चामभितः स्थाप्यं समं पुण्याग्निभिस्त्रिभिः ॥६९॥ त्रयोग्नयोऽर्हद्गणभृच्छेषकेवलिनिर्वृतौ ॥ ये हुतास्ते प्रणेतव्याः सिद्धार्चावेद्युपाश्रयाः ॥ ७० ॥ तेष्वर्हदिज्याशेषांशैराहुतिर्मन्त्रपूर्विका ॥ विधेयाशुचिभिर्द्रव्यैः पुंस्पुत्रोत्पत्तिकाम्यया ॥ ७१ ॥

अर्थ—तहां पूजाविधिविखैं तीन तीन चक्र छत्र प्रतिमाके दाहिनी बाई तरफ स्थापित करि पवित्र तीन अग्निके कुंड स्थापै ॥ ६९ ॥ ते तीन प्रणीताग्नि तीर्थंकर, गणधर, अर सामान्यकेवलीनिके निर्वाण कल्याणककी कही. सो भगवानकी प्रतिमा विराजवेकी वेदीके समीप ये अगनि स्थापैं ॥ ७० ॥ तिन तीनों अग्निके कुंडविखैं भगवानकी पूजा करि चूक पीछैं ज्यो सामग्री बाकी रहैं सो पवित्र द्रव्य ताकरि मंत्रपूर्वक होम करै. महाविवेकी पुत्रकी है अभिलाषा जिनके ॥ ७१ ॥

इसमुजब श्रावककी त्रेपन क्रियामेंकी प्रथमकी जो आधान क्रिया है जिसमैं पूजनकेवास्ते तीन अग्नीके कुंड स्थापन करनेका और उसमें मंत्रपूर्वक आहुति देनेका हुकूम है. शेषद्रव्य पवित्र द्रव्यकरि होम करनेकी आज्ञा है. सो निर्माल्य द्रव्यका पवित्र द्रव्य ऐसा अर्थ गोपाळदासजी और दौर्बली शास्त्री करै हैं तैसा भी हो सकता है. शेषद्रव्यकूं निर्माल्य द्रव्य समझैं तो भी चहता है. कदाचित दोनों अर्थकूं भी छोडद्यो तो भी अग्नीमें आहुति देनेका तो स्पष्ट हुकम है. ऐसा तो

कहीं भी नहीं है कि "जोअग्नीमें पूजनकी सामग्री डालनेसै कोई महान पाप लगेगा.

इसके सिवाय महिनेकी पाचवें महिनेकी क्रिया करते समय पूर्वोक्त विधिकरि पूजन करना ऐसा ही कहा है. विवाहक्रिया जो सतरहवीं कही है वहांभी विवाहके समय अग्नीके कुंडमें पूजन करके विवाह करना ऐसा लिखा है.

सिद्धार्चनविधिं सम्यग् निर्वर्त्य द्विजसत्तमाः ॥ कृताग्नित्रयसंपूजाः कुर्युस्तत्साक्षिकां क्रियां ॥ २४ ॥

अर्थ—सो भगवानकी भली भांति पूजा करि प्रणीताग्निविखै आहुतिक्रिया करिके विवाह करैं फिर चालीसवें पर्वमें इन क्रियाकी उत्तरचूलिका कहीहै यहां सब पूजनके मंत्र और विधि बताई है तहां भी तीन अग्नीके कुंड स्थापन करनेकूं लिखते हैं. और आगें लिखते हैं कि "सम्यग्दृष्टी निकट संसारी निर्वाण कल्याणककी पूजा करिवेयोग्य ऐसा अगनिकुमारनिका इंद्र ताकी प्रसन्नताके अर्थि स्वाहा-कहिये पवित्र द्रव्यनिकरि होम करे है." फिर आगैं लिखते हैं कि तीनूं संध्या देवपूजाविखै तथा नित्यकर्मविखैं तीनूं अग्नीविषैं आहुतिके मंत्र हैं." फिर अग्नीस्थापनविखैं लिखते हैं.

त्रयोऽग्नयो प्रणेयाः स्युः कर्मारंभे द्विजोत्तमैः ॥ रत्नत्रितयसंकल्पादग्नींद्रमुकुटोद्भवाः ॥ ८० ॥ तीर्थकृद्गणभृच्छेषकेवल्यंतमहोत्सवे ॥ पूजांगत्वं समासाद्य पवित्रत्वमुपागताः ॥ ८१ ॥ कुंडत्रये प्रणेतव्यास्त्रय एते महाग्नयः ॥ अस्मिन्नग्नित्रये पूजां मंत्रैः कुर्वन् द्विजोत्तमः ॥ ८२ ॥ आहिताग्निरिति ज्ञेयो नित्येज्या यस्य सद्मनि ॥ हविष्पाके च धूपे च दीपोद्बोधनसंविधौ ॥८३॥ वन्हीनां विनियोगः स्यादमीषां नित्यपूजने॥ प्रयत्नेनाभिरक्षंस्यादिदमग्नित्रयं गृहे ॥८४॥ नैव दातव्यमन्येभ्यस्तेभ्यो ये स्युरसंस्कृताः न स्वतोऽग्नेः पवित्रत्वं देवतारूपमेव ॥ ८५ ॥ किं त्वर्हद्दिव्यमूर्तित्वं [illegible]त्पावनोनलः ॥ ततः पूजांगतामस्य मत्वा चेति द्विजोत्तमाः ॥ ८६ ॥ निर्वाणक्षेत्रपूजावत् ते पूजातो न दुष्यति ॥ व्यवहारनयापेक्षा तस्येष्टी पूजिता द्विजैः ॥ ८७ ॥

अर्थ—क्रियानिके आरंभविखैं उत्तम द्विजनिकूं तीनूं अगनि अगनिकुमारनिके इंद्रके मुकुटतैं उपजी सो रत्नत्रयका स्वरूप जानि अंगीकार करनी. इनिमैं एक तीर्थंकरके निर्वाणकी अगनि, दूजी गणधरदेवके निर्वाणकी अगनि, तीजी और केवलीनिके निर्वाणकी अगनि. ए तीनूं अगनि निर्वाण कल्याणककी पूजाका कारण पाय पवित्रताकूं प्राप्त भई है. तीनूं कुंडनिविखैं ए तीनूं महा अगनि थापनी. गार्हपत्य, आहवनीय, दक्षिणाग्नि ए तीनूं प्रसिद्ध अगनि हैं. इनविखैं उत्तम द्विज मंत्रनिकरि होमरूप पूजाकरतामंता अगनिहोत्री कहिए. नित्य है पूजा जाके घरविखै. इनि तीनूं अगनीनिका हव्य पवनविखैं अर धूपखेयवेविखैं अर दीपोद्योतविखैं नियोग है. इन अगनीनिके नित्यपूजनविखैं पवित्रद्रव्यनिकरि होम करना. ए तीनूं अगनी घरविखै यत्नसूं राखनी. बुझिबा न देनी अर जे क्रियाके संस्कारतैं रहित हैं तिनकूं न देनी. अगनिकूं आपतैं पवित्रपना नाहीं. अर देवपनां नाहीं अरहंत देवकी दिव्यमूर्ति ताके निर्वाण पूजाके संबंधतैं ए अगनि पवित्र हैं. जैसे निर्वाणक्षेत्र भगवानके निर्वाणके योगतैं पूज्य भया. तैसें ए अगनि निर्वाण कल्याणककी पूजाके योगतैं पवित्र भई. तातैं निर्वाणक्षेत्रकी पूजाकी नांई तीनूं अगनिकी पूजा दूषित नहीं. ऐसा जानि वे द्विजोत्तम तीनूं संध्याविखैं अगनिका अर्चन करैं. पवित्र द्रव्यनिकरि होम करैं. विवहार नयकी अपेक्षा नि-

वर्णा क्षेत्रकूं अर इनि अगनीकूं विवेकी द्विज पूजै. निश्चयनयकरि परपदार्थका पूजन नहीं. आत्माहीका पूजन है. जिनधर्मीनिकूं प्रथम अवस्थाविखैं व्यवहारनयका आदर योग्य है. ये पीठिकादि सप्त मंत्र सर्व ही क्रियानिकी विधिविखैं साधारण हैं.

इसमुजब अग्नीमैं पूजन करनेकी विधि बताई है. इस रीतसैं अग्नीमैं पूजन करनेमैं निर्माल्य द्रव्य सहज ही भस्म हो जायगा.

अब पंडित गोपालदासजी लिखते हैं कि, "गृहस्थके घरमें अग्निकुंडोंका विधान पांचवी प्रतिमाधारी अग्निहोत्रीकेवास्ते है." यह बात महापुराणमैं. पूजन विधिमैं तो कही नहीं है. फकत इतना है कि-

अस्मिन्नग्नित्रये पूजां मंत्रैः कुर्वन्द्विजोत्तमः। आहिताग्निरिति ज्ञेयो नित्येज्या यस्य सद्मनि ॥

अर्थ—इस अग्नित्रयमें जो द्विजवर मंत्रसहित पूजन करैं और जिसके घरमें नित्य पूजन होता है उसकूं अग्निहोत्री समझनां, इसमें पांचवीं प्रतिमाधारीही अग्नीमैं पूजन करै ऐसा कुछ लिखा नहीं है. कदाचित् द्विजोत्तम कहनेसे ब्राह्मणकूं ही यह अधिकार है ऐसा कोई कहेगा तो इसके वास्ते महापुराणजीमैं लिखा है कि, "इह जातकर्मकी विधिपूर्व आचार्यनि कही सो अब हू यथायोग्य उत्तम द्विजनकू कर्तव्य है॥ २१॥ जहां द्विजशब्द आवैं तहां ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य तीनूं जानने. इत्यादि महापुराणमैं आधार है. इतना आधार बस्स है. नौकर माली व्यासकूं निर्माल्य देनेमें कोई आधार नहीं है. और वह उपाय निर्दोष नहींहै. वैसा नदीमैं फेंकदेनेकेवास्ते भी आधार नहीं है और निर्माल्यकूट रखनेमें भी बराबर आधार नहीं है. बलके फ़िर उसमै दोष बहोत हैं. सो इन तीनों उपायोंसे भी अग्नीमैं पूजन करनेका उपाय निर्दोष है और इसकूं महापुराणका आधारभी है.

दौर्बलीशास्त्रीनै 'जुहोमि' शब्द और 'स्वाहा' शब्दका अर्थ अर्पणक्रियामैं होता है ऐसा लिखा है सो इन शब्दोंके दोनो ही अर्थ होते हैं. जुहोमि शब्दका अर्थ हवन करताहूं ऐसा भी होता है. और जहां जहां अग्नीमैं आहुतिदेनेका मंत्र आता है वहां 'स्वाहा' शब्द रखा हुवा देखनेमैं आताहै. और जुहोमि जुहुयात् ये शब्द अग्नीमें क्षेपण करते समयमें उच्चारण किये हैं. "इंद्रस्तु मंत्रोच्चारणांतेग्नौ जुहुयात्" ऐसा अकलंक प्रतिष्ठापाठमें लिखा है. और अग्निमैं पूजन करनेवास्ते महापुराणमैं आज्ञा है तो इन शब्दोंका अर्थ हवन करताहूं ऐसा करनेमैं क्या हरजहै? जब अग्नीमैं पूजन होम करनेकी बिलकुल मनाई होवै तब तो हवन ऐसा अर्थ लेनेमैं बाधा उपजैगी, परंतु अग्नीमैं पूजन करनेकी आज्ञा होय तो उस आज्ञाके अनुकूल ही इन शब्दोंका अर्थ करना योग्य होगा. और इसमे बडाभारी फायदा यह है कि, निर्माल्यद्रव्यके भारी दोषसे सब कोई बचसकते हैं. अपने घरमैं नित्यशः हवन होनेसे हवा शुद्ध रहैगी." यहभी एक सहजमें फायदा होता है. इसमैं नुकसान क्या है?

यह विषय पूजनका है. पूजनका विषय कुछ बडे महत्वका नहीं है. जैसें तत्वनिर्णयका विषय होय तब तो बहोत बारीकी देखना ही जरूर है. परंतु पूजनके विषयमैं बहोत बारीकी देखनेकी जरूरत नहीं हैं. जो पूजनका विषय इतने महत्वका रहता तो समंतभद्र स्वामी अपने रत्नकरंडक उपासकाध्ययनमैं इसकूं बहोत कुछ लिखते. लेकिन इस विषयमैं कुछ भी नहीं लिखा है. फकत "अर्हच्चरणसपर्यामहानुभावं महात्मनामवदत् ॥ भेकः प्रमोदमत्तः कुसुमेनैकेन राजगृहे" इसमैं अर्हंतकी सेवा लिखी है. और "अतिथीनां प्रतिपूजा रुधिरमलं धावते वारी" इससैं भी अतिथि कहिये मुनीकी पूजा ऐसी लिखी

है. प्रतिमाकी पूजाका बाबदमैं कुछ लिखा ही नहीं. है. जो प्रतिमापूजाके विषयमें कुछ महत्व होता तो उन्होनें स्थापना कैसी करनां, प्रक्षाल्य अभिषेक कैसा करना, अष्टद्रव्य कौनसैं लेनां, इत्यादि सब विस्तारसैं लिखते. जैसा उन्होनें सम्यग्दर्शन के विषयमैं, अनर्थ दंडके विषयमैं सामाइक, भोगोपभोगपरिमाण, सल्लेखना वैयावृत्य इत्यादि विषयमैं लिखा है. ऐसा इस पूजनकूं भी लिखते परंतु कुछ भी लिखा नहीं है. जिससैं सिद्ध होता है कि, पूजनका विषय गौण है.

दक्षणदेशमें और कर्नाटकदेशमैं बहोतसे जैनी लोक निर्माल्य खाते हैं. कर्नाटकमे तो भात पकाके प्रतिमाकूं नैवेद्य अर्पण करते हैं और उसकूं अपने घर लाकर खा जाते हैं. केई जगहैं मंदिरजीके और तीर्थक्षेत्रके भंडारके रुपये बहोतसे लोग खा गये हैं. हिसाब बताते नहीं हैं. ऐसे लोगोंकूं पंडित बलदेवदासजीका अभिप्राय और पंडित दौर्बलीशास्त्रीका अभिप्राय जो कि "भगवानके नौकरको निर्माल्यके खानेमें दोष नहीं हैं. अथवा निर्माल्य निर्मल पदार्थ है, अभक्ष नहीं हैं, इसकूं खानेसैं अंतराय कर्मके आस्रव होते नहीहै" इत्यादि अभिप्राय मिलजानेसे उनकूं तो बडाभारी आधार मिल गया. और जो कुछ थोड़ा बहोत उनकूं डर है सो वह भी उड जायगा. और तीर्थक्षेत्रके और मंदिरजीके हजारों रुपये खा जावेंगे. सो उनकूं पापका डर आधारपूर्वक बतानेका पंडितोंका काम है. और कोई रीतसै भी निर्माल्यद्रव्य कोईके भी खानेमें नहीं आवै, ऐसा उपाय बताना उनका ही कामहै. मेरेको कोई बातका पक्ष नहीं है, परंतु मैं निर्माल्यके पापसे बडा डरता हूं. अपनेसे पुण्य न हुवा तो बेहेतर है लेकिन पापके भागीदार न होना. जैनियोंकी उन्नति करनेमें निर्माल्यद्रव्य बडी हरकत करता है. जिसकेवास्ते इतना लेख लिखना पडा है. इस सिवाय और कुछ हेतु नहींहै

विद्वान् पंडितोंके अभिप्रायमैं भूल निकालनेकी मेरी ताकत नहीं है. लेकिन पंडितोंसे यही प्रार्थना है कि—इस विषयपर अच्छीतरहँसे विचार करैं और आधारसहित अपने अभिप्राय प्रगट करैं. मेरे तरफसे प्रमादके कारण कुछ हीनाधिक लिखा गया होय तो मुझै क्षमा करैं.

जैनी भाइयोंका हितैषी—

दोशी हिराचंद नेमीचंद सोलापुर.

नोट—वास्तवमें निर्माल्य द्रव्यसंबंधी चर्चाका निर्णय होजाना अत्यावश्यकीय विषय है. अतःपाठकमहाशयोंसे और खासकरकें पंडितवर्य्य बलदेवदासजी व न्यायदिवाकर पं० पन्नालालजी-दिल्ली निवसी पं० शिव चरणजी जयपुर निवासी पंडित चिमन लालजी आदि विद्वानोंसे प्रार्थना है कि इस विषयमें भलेप्रकार पूजा प्रकरणके ग्रंथोंकी छान बीन करकें प्रमाण सहित लेख भेजैं, वे सब लेख हर्षके साथ इस जैनमित्रमें छापे जांयगे. हम भी इस विषयमें यथाशक्ति समयानुसार लिखैं गे.

संपादक.

प्राप्त पत्र व लेख.

सोलापूर ता. १६-९-१९०१.

वि. वि. खालील चार ओळींस आपल्या मित्रांत येत्या अंकीं स्थळ मिळेल अशी आशा आहे.

हल्लीं आमच्या हुंबड ज्ञातीमध्यें लग्नांत जो खर्च अतिशय वाढला आहे, तो कमी व्हावा, अशी पुष्कळांची इच्छा आहे; पण तो कसा व कोणत्या बाबतींत कमी करावा, ह्याबद्दल बराच मतभेद आहे; तरी ह्या खर्चाच्या ज्या पुष्कळ बाबी आहेत त्यांमध्येंच पंचाच्या हक्कांचीं जेवणें ही एक होय.

वधूकडे सकाळची सात व सायंकाळची तीन तसेंच वराकडे सकाळची (वधूवरें एकाच गांवीं असल्यास) सात (नसल्यास) एक व सायंका-

ळचीं पांच अशी जेवणें पंचांच्या हक्काचीं आहेत. ही गोष्ट समाजाला फारच असह्य आहे, असें जाणून येथील कांहीं मंडळींनीं ह्या गोष्टीबद्दल वाटाघाट चालवून ज्यांना ह्या जेवणांची संख्या बरीच कमी व्हावी असे वाटलें त्यांच्या सह्या घेतल्या. नंतर येथील पंचांनीं अशा बाबतींत इतर गांवच्या लोकांचीं मतें समजल्याशिवाय कांहींचं ठरवितां येत नाहीं असे सांगितल्यावरून सदरहु बाबतींत अनुकूल असणाऱ्या परगांवच्या लोकांचीं मतें खालीं प्रसिद्ध केलीं आहेत.—

आळंद—आमीचंद मोतीचंद
तांबे—सखाराम मोतीचंद
कलबुर्गा—मोतीचंद आमोलीक
मेंदरगी—आमिचंद विरचंद
" मोतीचंद विरचंद
अक्कलकोट—गुलाबचंद हिराचंद
" मोतीचंद हिराचंद
" रामचंद हरिचंद
" हिराचंद बापूचंद
वडाळें—गुलाबचंद लालचंद
धाराशिव—रामचंद बालचंद
मोहोळ—जिवराज देवचंद
खंडाळी—रावजी मलुकचंद
चडचण—रावजी मियाचंद
सोनारी—मोतीचंद फुलचंद
दुधनी—जोतीचंद भीमजी
निंबगाव—फुलचंद रामचंद
" दाजी वालचंद

ह्या सह्या पाहून तरी आमचे सोलापूरस्थ लोक पुढाकार घेऊन जेवणासंबंधीं बराच खर्च कमी करण्याचें श्रेय आपल्याकडे घेतील तर लग्नांतील एक फाजील खर्च कमी होऊन समाजाचें एकप्रकारें हित केल्यासारखें होईल; तरी आमचे सोलापूरकर इकडे लक्ष देतील अशी आशा आहे.

सोलापूर मंगळवार पेठ. भाद्रपद शुद्ध ३ संवत १९५७. वि. } आपला पानाचंद रामचंद दोशी.

इंडी—जिल्हा सोलापुर.

इंडीके किसी भाईने पंचोंके नामसे १ चिठ्ठी भेजी है. उसमें लिखा है कि अक्कलकोटके किसी महाशयसे हीराचंद अमोलककृत पद्मपुराणजी स्वाध्यायार्थ मांगे थे परन्तु उन्होंने दिये नहीं. हमको यह खबर झूंट मालूम होती है. क्योंकि चिठ्ठीमें किसीके नामकी सही नहीं है.

इंदोरकी छावनीसे.

भाई मुन्नालालजी छावडा लिखते हैं कि "यहांपर मुद्दतसे वेकमूर कुत्ते मारे जाते थे. परन्तु यहांके दयावान व्यापारियोंसे यह निर्दय काम देखा नहीं गया, अतएव यहांके व्यापारियोंने -) सैंकडा माल खरीदीपर लगाकर उस खर्चसे कुत्ते २ पकडा पकडा कर दूरदूरके गावोंमें छोड आनेका हुमक सरकारसे लिया था, और तामील भी बराबर होती रही. परन्तु अग्रवाल विरादरीके परस्परके विरोधसे प्रबंधमें सिथिलता होगई. इस कारण फिर यह काम सरकारके हाथमें चलागया और पूर्ववत् सबके सामने विचारे कुत्ते मारे जाने लगे. परन्तु हर्ष है कि अब फिर भी समस्त पंचोंने इकट्ठे होकर सरकारसे अर्ज करके प्रबंध करनेका काम श्रीमान् सेठ अमोलकचंदजी साहबके जुम्मे कर दिया है. आशा है कि इस जीवदयाके उत्तम कार्यकी तामील शीघ्र ही होगी.

दूसरी चिठ्ठीमें आपने भूगोल भ्रमणके विरुद्ध एक लेख भेजा है. उसके बांचनेसे उसका सारांस यह मालूम हुवा कि "आपने सरद पूनमकी

रात्रिको सन्ध्यासे १२ बजे तक तथा १ मुहूर्त प्रभातसे पहिले आकाशमें ग्रहनक्षत्र ताराओंको बड़े ध्यानसे अवलोकन किया. सो ठीक उत्तरके ध्रुव तारेके पूर्वमें जो जो तारे संध्याके समय देखे थे, वे क्रमसे हटते २ ध्रुवकी पश्चिम तरफ अस्त होगये. और इसी प्रकार जो तारे १२ बजे ध्रुवसे पूर्वकी तरफ देखे थे, वे प्रभातके समय पश्चिमकी तरफ अस्त होते देखे गये. इससे सिद्ध होता है कि ज्योतिषचक्र फिरता है पृथिवी स्थिर है. यदि पृथिवी फिरती होती तो ध्रुवसे पूर्वमें रहनेवाले तारे पश्चिममें जाते हुये नहिं दीखते. यदि कोई महाशय इस बातको झूंट समझते हों तो वे प्रत्यक्ष दिखादेनेकी प्रतिज्ञा करते हैं." सुना है कि आप ज्योतिषशास्त्रमें भी कुछ दखल रखते हैं.

सम्मेद शिखरजीकी पैडियोंका मुकदमा तो—

हम जीत गये और जजमेंट भी बहुत अच्छा है. परन्तु सुना है कि हमारे स्वेताम्बरी भाइयोंको अभीतक सन्तोष नहिं हुवा है. वे फिर भी अपील करके दोनों तरफके धर्मके हजारों रुपये बारिष्टरोंको देना वा दिलवाना चाहते हैं.

पाठक महाशय! इस तनकसे मुकदमेमें दोनों तरफके इतने रुपये खर्च होगये कि जिनसे ४ हजार पैडियें (सीतानालेसे कुंथुनाथ भगवानकी टोंकतक) बन जातीं और आज दोनों ओरके यात्री सुखसे यात्रा करते हुये दीखते परन्तु न मालूम हमारे स्वेताम्बरी भाइयोंके प्रतिनिधियोंकी बुद्धिमें क्या समाया है जो वृथा ही धर्मका पैसा बरबाद करते व हमसे कराते हैं.

हाय! हाय! क्या कभी वह दिन भी आवैगा कि परस्परका विरोध मिटकर स्वेताम्बरी और दिगम्बरी भाई एकता की सीढीसे उन्नतिके शिखरपर चढैंगे?

श्रीमज्जैनधर्मप्रकाशिनी सभा आकलूजका तृतीयाधिवेशन.

आजमिती प्रथम श्रावणकृष्णा १४ की रात्रिको ८ बजेसे १० बजेतक श्रीमज्जैनधर्मप्रकाशिनी सभा आकलूजका तृतीयाधिवेशन महान्समारोहके साथ हुआ. जिसमें प्रथम ही ओहरा सेठ रामचंद रावजीमंत्री. जै. स. आ. ने मंगलाचरणपूर्वक सभा प्रारंभ कीनी. पश्चात् ओहरा सेठ वालचंद मियाचंद उपमंत्री. जै. स. आ. ने निजमधुरध्वनिसे सम्यग्दर्शनके विषयमें अत्यंत मनोग्य व्याख्यान दिया. तिसमें व्यवहार और निश्चय सम्यग्दर्शन शास्त्रोक्त प्रमाणपूर्वक उत्तम रीतिसे दर्शाकर सम्यक्त्वके अष्टअंग पृथक् २ वर्णन किये और सम्यग्दर्शनके २५ दोषोंमें ३ मूढता ६ अनायतन ८ मद ८ शंकादिकदोष शास्त्रीयप्रमाण तथा वैवहारिक रीतिसे प्रकटकर व्याख्यान पूर्ण किया. तत्पश्चात् मंत्रीसभा तथा सेठ गांधी वेणीचंद वालचंदने धन्यवाद दिया. इस सभामें सभापतिका आसन श्रीमान् सेठ गांधी हरीचंदनाथुरामने सुशोभित किया था. इस समय सर्व स्वदेशी तथा विदेशी स्त्रीपुरुषोंकी संख्या अनुमान १०० के थी. पश्चात् सेठ गांधी वेणीचंद वालचंदने विदेशी महाशयोंसे इस सभाके सभासद होनेकी प्रार्थना की. पुनः निम्नलिखित महाशयोंने सहर्ष सभासद होना स्वीकार किया. आगामी सभामें सेठ ओहरा रामचंद रावजी मंत्री सभाने सम्यग्ज्ञानके विषयमें व्याख्यान देना स्वीकार किया. तत्पश्चात् जयकारेकी ध्वनिसे सभा विसर्जन हुई इति.

नवे सभासदोंके नाम.

१ दोशी खुशालचंद भवानचंद नातेपूतेकर.
२ गांधी बालचंद केवलचंद दहिगांवकर.
३ दोभाडा रावजी वेणीचंद नातेपूतेकर.

चतुर्थ अधिवेशन.

आज मिती प्रथम श्रावणशुक्ला १४ की रात्रिके ९ बजेसे १० बजेतक श्रीमज्जैनधर्मप्रकाशिनीसभा आकलूजका चतुर्थ अधिवेशन हुआ तिसमें प्रथम ही सेठ ओहरा रामचंदरावजी. मंत्री. जै. स. आ. नें मंगलाचरणपूर्वक सभा का प्रारंभ किया. सभापतिका आसन श्रीमान् सेठ. गांधी हरीचंद नाथुरामजीने सुशोभित किया. पश्चात् सेठ ओहरा रामचंद रावजी मंत्री सभानें सम्यग्ज्ञानके विषयमें अत्युत्तम व्याख्यान दिया- तिसमें चारों अनुयोगोंका स्वरूप पृथक् २ शास्त्रोक्तरीतिसे प्रकटकर व्याख्यान समाप्त किया. तत्पश्चात् श्रीमान् पं. धर्मसहायजीने उक्त व्याख्यानको सुललितवाक्योंसे पुष्टकिया. तिसमें सम्यग्ज्ञान तथा मिथ्याज्ञानका स्वरूप प्रश्नोत्तरपूर्वक (आपही प्रश्नकर आप ही उत्तर देते थे.) सदृष्टांत वर्णनकर सभास्थित मंडलीके हृदयको सुकोमलकर सम्यग्ज्ञान धारण करनेकी प्रेरणाकर व्याख्यान पूर्ण किया. पुनः सेठ ओहरा वालचंद मयाचंद उपमंत्रीनें पुष्ट किया. आगामी सभामें सेठ गांधी वेणीचंद वालचंद श्रावककी ग्यारह प्रतिमाके विषयपर व्याख्यान देना स्वीकार किया. इस समय सर्व स्त्रीपुरुष अनुमान १२५ के थे. पश्चात् जयकारकी ध्वनिपूर्वक सभा विसर्जन हुई.

पांचवां अधिवेशन.

आज मिति द्वि. श्रावणकृष्णा १४ की रात्रिके ८ बजेसे १० बजेतक जैनधर्मप्रकाशिनी सभा आकलूजका पांचवां अधिवेशन महान् आनंदके साथ हुआ. जिसमें प्रथम ही सेठ वोहरा रामचंदरावजी मंत्री सभानें मंगलाचरणपूर्वक सभाका प्रारंभ किया. सभापतिका आशन श्रीमान् सेठ हरीचंद नाथूरामजी गांधीसे सुशोभित किया. पुनः सेठ वेणीचंद वालचंद गांधीनें एकादशप्रतिमाके विषयमें अति मनोग्य व्याख्यान दिया जिसमें दर्शनप्रतिमादि सर्वप्रतिमावोंका पृथक् २ स्वरूप शास्त्रीयप्रमाणपूर्वक अत्युत्तम रीतिसे वर्णनकरि सर्व सभाजनोंका हृदय प्रफुल्लित करि व्याख्यान समाप्त किया. तत्पश्चात् मंत्रीसभानें उक्त व्याख्यानदाताको स्पष्टशब्दोंमें धन्यवाद दिया. इस समय सर्व स्त्रीपुरुष अनुमान १०० के थे. आगामी सभामें सेठ रूपचंद मोतीचंदने विद्याके विषयमें व्याख्यान देना स्वीकार किया. तत्पश्चात् जयकारेकी ध्वनिपूर्वक सभा विसर्जन हुई.

छट्ठाअधिवेशन.

आज मिती द्वि० श्रावणशुक्ला १४की रात्रिके ८ बजेसे १० बजेतक श्रीमज्जैनधर्मप्रकाशिनी सभाका छट्ठाअधिवेशन अत्यंतसमारोहके साथ हुआ. जिसमें प्रथम ही सेठ वोहरा वालचंद मियाचंद उपमंत्री सभाने मंगलाचरणपूर्वक सभाका प्रारंभ किया. सभापतिका आशन श्रीमान् सेठ हरीचंद नाथूरामगांधीने सुशोभित किया. तत्पश्चात् श्रीमान् पंडितधर्मसहायजीने श्रीयुत जगद्विख्यात वीरचंद राघवजीगांधीकी मृत्युका शोक प्रकट करि उक्त महाशयका कर्त्तव्य अर्थात् तीनबार आमेरिका जाकर अनेकमतानुयायियोंके मध्य श्रीमज्जैनधर्मकी गौरवता प्रकाशकर २२००० अन्यमतावलंबियों (जोकि अपेन २ मतके दृढ श्रद्धानी और विद्वान थे) को मद्यमांस छुडाकर णमोकारमंत्रका धारण कराया इत्यादि अनेकगुणवर्णनकरि सभासे प्रार्थना की. उक्तमहाशयका उपकार स्मरणार्थ स्मारकके

तौरपर सर्व मंडलीकी एकदिन दुकान बंदकर श्रीमंदिरजीमें आकर कोई भी प्रकारका धर्मकार्यको करना चाहिये और शोकप्रकाशक एक पत्र स्वेतांबर जैन मांगरोल सभा मुंबईको भेजा जावे. पुनः सर्वसभाने सहर्ष स्वीकार कर एकपत्र उसी समय उक्त सभाको भेजा गया. तत्पश्चात् पूर्वसभाके नियमानुसार रा० रा० सेठरूपचंद मोतीचंदने विद्याके विषयमें अत्युत्तम व्याख्यान दिया. तिसमें सर्वप्रकारकी लौकिक तथा पार्मार्थिक विद्याका स्वरूप दिखाकर व्याख्यान पूर्ण किया. तत्पश्चात् लालचंद विद्यार्थी जैनपाठशाला आकलूजने (जिसकी अवस्था १२ वर्षकी है) उक्त विषयमें निज सुहावनी मधुरध्वनिसे अत्युत्तम व्याख्यान दिया. तिसमे संस्कृत अंगरेजी गान साइन्स इत्यादि अनेकप्रकारकी विद्यावोंका स्वरूप दिखाकर सर्व विद्याओंमें संस्कृतविद्याका गौरव प्रगटकर संस्कृतविद्याके पढनेकी प्रेरणा करि व्याख्यानको पूर्ण किया. उस समय इस अल्पवयस्क विद्यार्थीका मिष्टध्वनि व शब्दोंकी स्पष्टतापूर्वक व्याख्यान श्रवण करकें सभास्थ सर्वस्त्रीपुरुषोंके हृदय कमलवत् प्रफुल्लित होकर वाहवाहकी ध्वनि सर्वऔरसे विस्तर रही थी. इस समयका आनंद प्रशंसनीय था. तत्पश्चात् श्रीमान् पंडित धर्मसहायजीनें उपर्युक्त व्याख्यानको निज वक्तृत्वशक्तिसे शास्त्रीय तथा लौकिक प्रमाणपूर्वक सदृष्टांत पुष्ट किया. जिसमे यह वार्त्ता उत्तमरीतिसें दर्शाई कि अन्य मस्त विद्याओंसे लौकिक प्रयोजन ही सिद्धि होता है और संस्कृतविद्यासे लौकिक तथा पारमार्थिक दोनो प्रयोजन सिद्धि होते हैं और संस्कृतविद्या विना शास्त्रीय ज्ञान व धर्मको न जानकर धर्मभ्रष्ट होकर अनेकानेक असद् व्यवहार व कुरीतिका प्रचारकरि इसभव निंदादि तथा परभवमें कुगतिके पात्र बनकर अनेक दुःख सहनकरनें पडतेहैं. इत्यादि अनेक दृष्टांतोंद्वारा सिद्ध किया. तत्पश्चात् सेठ वेणीचंद वालचंद गांधीनें सभास्थ मंडलीसे प्रार्थना कीं कि इस परमपवित्र आद्रव मासमें सूद्रके हातका पानी नहीं पिना चाहिये इस बातको पं. धर्मसहायजीने सूद्रके हाथके पानी पीनेके अनेकप्रकारके दोष दिखाकर श्रावक तथा अन्य जाति (जोकि मद्यमांसादि भक्षण नहीं करता हो) के हाथका पानी पीनेकी प्रेरणा कर १ मास ब्रह्मचर्य्यव्रत धारणकरनेकी प्रेरणा की. इस समय हर्षपूर्वक ४० महाशयोनें ब्रह्मचर्य तथा ३५ महाशयोंने सूद्रके पानीकी प्रतिज्ञा ग्रहण की. तिसमें किसी २ ने सूद्रके हाथका पानी आजन्म त्यजन किया. किसीने अष्टमी चतुर्दशीको ब्रह्मचर्य आजन्म धारण किया. किसीने दर्शनकरने आदि अनेक प्रतिज्ञा यमनियमरूप ग्रहण कीनी. आजकी सभामें अपूर्व आनंद रहा. इस समय सर्वस्त्री पुरुष अनुमान १२५ के थे. पुनः पं. धर्मसहायने सर्वमहाशयोंको अनेकानेक धन्यवाद देकर जयकारकी ध्वनिपूर्वक सभा विसर्जन कीनी.

शोकके कार्यमें धर्मोत्सव.

आज मिति श्रावणशुक्ला १५ को चतुर्दशीकी सभाकी प्रतिज्ञानुसार सर्वश्रावकमंडलीने निजनिज दूकानदारीका कार्य्य वंदकरकें मध्यान्ह १२ बजे श्रीमज्जैनमंदिरमें पधारे. आज ही श्रीमानस्थंभ स्थापन करनेका भी मुहूर्त था सो बडे समारोहके साथ हुआ. अर्थात् प्रथम सर्वस्त्रीपुरुष वाजेगाजे सहित उत्तम वस्त्राभूषण धारणकर नदीपर जाकर वहांसे मंत्रविधानपूर्वकजलकलश भरकर श्रीमंदिरजीमें आकर मंत्रादिविधानपूर्वक शुभमुहूर्तमें मानस्थंभका मुहूर्त किया. तत्पश्चात् श्रीमान् पंडित धर्मसहायजीने श्रीविष्णुकुमारस्वामीकी वात्सल्यांगवर्द्धक संस्कृत कथा निजमिष्टध्वनिसे सर्वमंडलीको श्रवणकराकर सर्वस्त्रीपुरुषोंके मन रंजायमान किये. पश्चात् दुडाप्पा उपाध्याय पुजारीनें सर्वश्रा

कल्पतरुलीके रक्षाबंधन किये. पुनः जयकारेकी ध्वनिपूर्वक सर्वसहाशय निजनिज गृहको पधारे. इस समय सर्वस्त्रीपुरुष अनुमान २०० के थे और इसके अन्यमतावलम्बी भी बहुत थे. इसप्रकार लोकके कार्यमें धर्मोत्सव हुआ.

गांधी हरीचंदनाथा सभापति.
श्रीमज्जैन प्रकाशिनीसभा आकलूज.

नोट—पाठक महाशय! जिसप्रकार सभाकी महदानंददायक सविस्तर रिपोर्ट आई है, उसीप्रकार आकलूजकी पाठशालाकी भी सविस्तर रिपोर्ट आई है. परन्तु स्थानाभावके कारण यहां न छापकर आकलूजके भाइयोंको और खासकर पं० धर्मसहायजी व गांधीनाथारंगजीको सहर्ष धन्यवाद देते हैं. क्यों कि ये सब आनंद प्राय. इन्ही महाशयोंके परिश्रमसे प्राप्त होते हैं. आशा है कि ये सब कार्य्य प्रातःकालकी छायांके सदृश न होकर दुपहरके पश्चातकी छायांके सदृश होंगे.

संपादक.

श्री सिद्धवरकूटकी लाग.

विदित हो कि मि. आषाढ सुदी ३ बुधवार संवत् १९५८ के दिन इंदोर नगरमें कलसारोहण महोत्सवके समय श्री सिद्धवरकूट तीर्थक्षेत्रकेलिये समस्त जिलोंके पंचोंनें मिलकर नीचें लिखे माफिक लागान लगाया है. यद्यपि यह लगान पहिले भी लगाहुवा था परंतु उसकी तामील नहिं होती थी. इसकारण इसमहोत्सवपर इसको हमेशाह काममें लानेकेलिये प्रबंध किया गया.

१ जिस किसीके विवाह तथा मोसर वगेरहमें जो शक्कर गाळी जाय उसपर ‒) मनके हिसाबसे परवानगी देनेके बखत ले लिया जाय.

२ पुत्र तथा कन्याके जन्मोत्सवकी ढूंढके समय ।) पंचायतीमें लेलेना.

३ जो कोई लडका गोदलेवे उससे १) रु० लेना.

४ जिसकिसीकी लडकी वा लडकेकी सगाई होवे. उससे (प्रत्येकसे) १) रु० लेना.

५ जिसकिसीके लडके था लडकीका विवाह हो तो दोनो तरफसे २) रु० लेना.

६ भादवा सुदी १४ के दिन प्रतिवर्ष घर पीछे ।) लेना.

ये सब लागें पंचलोग बखतकी बखत लेलेवैं और सिद्धवरकूटके भंडारमें भेज देवैं.

इसप्रकार ठहराव होकर नीचे लिखे भाइयोंके हस्ताक्षर होगये हैं.

पंचोंके हस्ताक्षर.

इंदोरके पंच.

१ फतेचंद कुशलाजी.
२ भूरजी सूरजमल मोदी.
३ हरीसेठ मथुरालालजी.
४ धनजी सेवारामजी.

५ उज्जैनके समस्त पंच.
६ धारके समस्त पंच.
७ मऊके समस्त पंच.
८ सोनकछके समस्त पंच.
९ पीपल्याके समस्त पंच.
१० बडवायके समस्त पंच.
११ खंडवाके समस्त पंच.
१२ सनावदके समस्त पंच.
१३ धर्मपुरीके समस्त पंच.
१४ बडवाणीके समस्त पंच.

आपका कृपाकांक्षी,
भूरजी सूरजमल मोदी इन्दोर.

विविधसमाचार.

आहारदान—दश लक्षिणीपर्वके दश दिनोंमें खंडवाके जैनी पंचोंने ७ मन पूरियें अनुमान १००० कंगलोंको बांटी. जिसकेलिये हम खंडवाके भाइयोंको धन्यवाद देते हैं.

नवी जैनसभा—सनावद प्रांत नीमाडमें ता० ५-९-१ ईस्वीको धर्मवर्द्धिनी दिगम्बरजैनसभा स्थापन हुई है. जिसमें सभापति शेठ लक्ष्मणजी चंपालालजी, उपसभापति सेठ फूलचंदजी सिवासा. मंत्री अमोलकचंद सिवासा नियत हुये है.

कुंथलगिरिमें बिंबप्रतिष्ठा—मिती मंगसर सुदी १० से कुंथलगिरि तीर्थपर बार्सी आदिके तीन धर्मात्मा सेठोंकी तरफसे बिम्बप्रतिष्ठाका मेला होगा. यह तीर्थस्थान जी. आई. पी. रेलवेके बार्सी ष्टेसनसे ९ कोश पूर्वकी तरफ है. इस क्षेत्रसे कुलभूषण देशभूषण आदि अनेक मुनि मोक्षको पधारे है. यहांपर छोटे बडे अति मनोज्ञ ५ या ६ मंदिर तो पहिलेके है. और हालमें तीन नये मंदिरजी बने है, जिनकेलिये यह बिम्बप्रतिष्ठाका मेला होगा. और धर्मकी बडी प्रभावना होगी.

वर्धामें बिम्बप्रतिष्ठा—वर्धामें कई वर्षोंसे पंचायती मंदिर बन रहा. था. हर्ष है कि वह अब तैयार होगया और उसीमें जिनबिम्ब विराजमान करनेकेलिये यह बिम्बप्रतिष्ठाका मेला होगा. सुना है कि इस उत्सवमें २५०० रु० तो आर्वीके रा. रा. शेठ रामचंद्रजी किशोरीलालजी परवारने और २५०० रु० नागपुरके रा. रा. शेठ बापूजी विश्वनाथ गांधी पद्मावतीपल्लीवारने और बाकी जो कुछ पांच सातहजार रुपये खर्च पडैगे, वे सब नागपुरके प्रभावनांगपरायण रा. रा. प्रसिद्ध श्रेष्ठिवर्य गुलाबसावजी रखबसावजी संगही बघेरवाल साहबने व्यय करना स्वीकृत किया है. जिसकेलिये आप नवीन रथ भी बनवा रहे है. धन्य है इन महाशयोंकी उदारताकी जो अपनेको परिश्रम और कष्टसे उपार्जन किये हुये द्रव्यको ऐसे उत्तम कार्य्यमें व्यय कर रहे हैं. इस मंदिरजीमें भी प्राय: दो तीन हजार रुपयोंकी आपने सहायता की है. यदि उक्त तीनों महाशय इस उत्सवपर आहारदान अथवा वर्धोंकी विद्यादान पाठशालाको चिरस्थायी करदें तो सोनेमें सुगंध हो सक्ता है.

हर्ष! हर्ष!! महाहर्ष!!!

दांता—जिल्हा जयपूरसे साहित्यशास्त्री पं० गोपीनाथजी शर्म्मा अध्यापक **दिगम्बरजैनपाठशालादांताने**—दांता, बाय, पचार और मावण्डा ग्रामकी पाठशालावोंकी संक्षिप्त रिपोर्ट और चारों पाठशालावोंमें पढनेवाले विद्यार्थियोंके नाम पढाई कक्षावगेरहके सविस्तर नकसे, ४ भेजे हैं. जिनको ध्यानसे देखनेपर हमको जो कुछ हर्ष हुवा है, वह वचन अगोचर व लेखनीशक्तिसे अतीत है. ऐसे हर्ष होनेके मुख्य कारण ५ हैं. अर्थात् **प्रथम** तो यही बडा आश्चर्य है कि जिस ढूढाहड देशमें चिरकालसे विद्याका नाम निशानतक नहीं था. जहांके निवासी बहुधा खेती पाती वा खेतीकरनेवालोंसे लेन देन करने और दोबख्त उदर भरनेके सिवाय काले अक्षरको भैंसबराबर समझते थे, उस देशमें एकदम चार पाठशालाका होना और उसमें सबजने अपने अपने बालबच्चोंको विद्वान बनानेवाली संस्कृत और धार्मिक विद्यापढानेमे तत्पर होगये. यह कितने आश्चर्य और आनंदकी वार्त्ता है?

दूसरा कारण—यह है की इन चारों पाठशालाओंमे जो कुछ मासिक द्रव्यव्यय होता है वह प्राय: दातानिवासी श्रीमान् सेठ रिखबचंदजी केसरीमलजी सेठीका ही होता है. आपनेही अग्रगण्य होकर पं० जोधराजजीकी प्रेरणासे ये ४ पाठशालायें स्थापन करकें जैनसमाजमें एक अभूतपूर्व आश्चर्य्ययुक्त कार्य्य व उदारता व सच्चीधर्मप्रभावना प्रगट करी है. आप बडे धर्मात्मा और विवेकी है. क्योंकि अन्यान्य धर्मात्मा तो अनावश्यकीय मंदिरप्रतिष्ठा व बिम्बप्रतिष्ठा रथयात्रोत्सवादिक करने व रथ बनवानेवगेरहमें ही प्रभावना व महानधर्म समझकर लाखों रुपये खर्च कर डालते हैं, परन्तु आपने इन सबकार्य्योंकी जड पकडी है. अर्थात् जबतक हम व हमारे बालबच्चे विद्याध्ययन करके हमारे प्राचीन

संस्कृत जैनग्रंथोंके रहस्यको व धर्मके उत्तमोत्तम कार्योंको भलीभांति न जानलें. तबतक इन मंदिरादिक धर्मायतनोंका बनाना कदापि विशेष लाभदायक नहिं हो सका. जब हम पूजन स्वाध्याय संध्योपासन (सामायिक) दान संयम तप आदिक गृहस्थके धर्मसंबंधी षट्कर्म जाने ही नहीं तो इन मंदिरोंमें कौन तो पूजा करेगा और कौन स्वाध्याय सामायिकादि करैंगा? इसी कारण उक्त सेठ साहबने समस्त धर्मकार्योंकी जड़ विद्योन्नति करनेको ही अपना एक प्रधान धर्म कर्तव्य समझकर आपने अपने द्रव्यको विद्यादानमें ही सफल करना चाहा है. हम ऐसे विचारवालोको ही प्रकृत धर्मात्मा कहते और समझते है. और कोटिशः धन्यवाद देते है.

तीसरा कारण—यह है कि इन चारों ही पाठशालामें पढाईका क्रम जैपुरनगरकी महापाठशालाके अनुसार और देखरेख पंडित भोलीलालजी प्रबन्ध कर्त्ता महापाठशाला जैपुरके हाथमें है.

चौथा कारण—यह है कि इन पाठशालावोंमे पढानेवाले अध्यापक साहित्यशास्त्री आदि उपाधिके धारक योग्य विद्वान् हैं कि जो विद्योन्नतिकेलिये बडा भारी परिश्रम कर रहे है.

पांचवां कारण—यह है कि इन चारों पाठशालावोंमें अनुमान १२५ के जैनी व अन्यमती लडके पढरहे हैं, जिनकी पढाईका नकशा देखनेसे विद्यार्थी और पाठक महाशयोंका परिश्रम सराहने योग्य भासता है. हम आशा करते हैं कि इन पाठशालावोंके प्रबंधकर्त्ता पं० जोधराजजी व निर्माणकर्त्ता धर्ममूर्ति धर्मकी जड़ सींचनेवाले **सेठ बिरधीचंद केसरीमलजी** कमसे कम ५ वर्षतक लगातार इसी प्रकार कडी देखरेखके साथ काम चलाकर इसके फलको चख लें. हम जिनधर्मके प्रभावसे आप महाशयोकी चिर नीरोगता और दीर्घायुकी वांछा करते हैं. धन्य है वह दिन कि जिस दिन हम इन चारों पाठशालावोंको हरी भरी और उत्तम फलविशिष्ट देखैंगे. अन्यान्य धनाढ्य महाशयोंको इनकी उदारताका विचार करना चाहिये.

शोलापुरमें दो सभा—हालमें शोलापुरके भाइयोंके आग्रहसे सेठ माणिकचंद पानाचंदजी व गांधी रामचंद नाथाजी व मिष्टर लल्लूभाई प्रेमानंद सहित दो दिनकेलिये हम गये थे. दो सभाहुई. शोलापुरके भाइयोंने हमलोगोंका जो कुछ आगत स्वागत किया वह वचनातीत है. हमारे सभापति सेठ माणिकचदपानाचंदजीको एक मानपत्र भी दिया है. जिसको स्थानभावके कारण अगले अंकमें छापैंगे.

संपादक.

लोकलसमाचार.

मुम्बईमें दशलाक्षणी पर्व—बडे आनंदके साथ बीता. प्रातःकालसे १० बजे तक पूजन पाठ. दश बजेसे २ बजेतक शास्त्रजीके सिवाय एक २ धर्मका तथा तत्वार्थसूत्रकी सर्वार्थसिद्धि टीकाका एक २ अध्याय सविस्तर गूढार्थसहित होता था. जिसको समस्त जैनीभाई बडे ध्यानसे सुनते थे. रात्रिको शास्त्रजीकी सभा तथा नृत्यभजन संगीत होते थे. अबकी साल शेठ माणिकचद पानाचंदजीके रत्नाकर पेलेसके चैत्यालयमें नृत्यसंगीतका बहुत ही उत्तम समारोह था. इस महोत्सवमें अन्य मती भी सामल हुये थे. इसके सिवाय अबकी साल कंगालोंको गतवर्षकी तरहें दश दिनतक पूरी चने बांटे गये. अब अनेक उत्साही भाई रथयात्राके प्रबंध करनेमें लगे है.

मुंम्बईमें प्लेग—अबकी बार प्लेगका अबतक कुछ भी जोर नहीं हैं. इसकारण सरकारी प्रबंधकी भी सिथलता है. किसी प्रकारकी तकलीफ नहीं है सर्वत्र शांति है. इसी कारण इस रथयात्राके उत्सवपर समस्त देशोंके हजारो जैनी भाइयोंके आनेकी खबरें आ रही है.

सम्पादक.

विद्यार्थियोंको सूचना.

हमारे यहां मुम्बईमें आसौज सुदी ९ सोमवारको संस्कृत जैन विद्यालयका प्रारंभ होगा जिसमें जैनाचार्यकृत न्याय व्याकरण साहित्यालंकार और धर्मशास्त्रमें पंडित परीक्षाकी शिक्षा देनेकेलिय योग्य विद्वान्का प्रबंध किया है और दिगम्बर जैनपरीक्षालयकी प्रवेशिका परीक्षाके तीन या चारों खंडोमें उत्तीर्ण विद्यार्थी आवेंगे उनको योग्य समझेंगे तो रास्ताखर्च व मासिक पारितोषिक भी दिया जायगा. इसकारण जिनको इस विद्यालयमें भरती होकर जिन धर्मसंबंधी उच्चशिक्षा यानि पंडित परीक्षाकी पढाई पढकर पंडित बनना हो, वे तुरंत ही हमारे पास अपनी पढाईके पूर्ण परिचयसहित अर्जी भेजैं. यहांसे मंजूर होकर चिठ्ठी या तारद्वारा खबर पहुंचते ही आसोज सुदी ८ से पहिले २ मुंबई हाजिर होना पडेगा.

दूसरे—जो ब्राह्मण विद्वान् २०) २५) रु० महीनेकी जैनपाठशालामें अध्यापकी करना चाहें, वे भी एक वर्षतक इस विद्यालयमें जिन मतके मुख्य २ तत्वों और जैनसिद्धांतकी सैलीमें जानकर होनेकेलिये भरती होनेकी दरखास्त भेजैं. ऐसे महाशयोंको कई सर्तें स्वीकार करनेपर एक वर्षतकका पढनेतकका खर्च दिया जायगा. एक वर्ष पढलेनेसे कमसे कम २०) रु०की जगहँ किसी भी जैनपाठशालामें अवश्य दीजायगी.

महामंत्री जैनप्रांतिकसभा,
पा० कालबादेवी मुंबई.

बंबईमें रथयात्रोत्सव.

पाठक महाशय ! जैनप्रांतिकसभा बंबईका प्रथम वार्षिकोत्सव मिती आसोजसुदी ८–९–१० का नियत होनेसे यहांके समस्त भाइयोंके ऐसा विचार हुवा कि इस मोकेपर श्रीजीकी रथयात्राका महोत्सव भी किया जाय सो तुरंत ही चिठ्ठा होकर अजमेर अथवा खुर्जासे कलका रथ मंगानेका प्रबंध किया गया और आसोज सुदी ७ को प्रथमयात्राका और सुदी ११ को अंतकी यात्राका दिन निश्चय होगया कि जिसकी पंचायतीकी तरफसे पत्रिकायें भी सर्वत्र भेज दी गई. आशा है कि अब समस्त जगहँके धर्मात्मा धनाढ्य विद्वान् पधारकर इस धर्मोत्सवकी शोभा बढाकर

बंबई निवासियोंमें सनातन पवित्र जैनधर्मकी प्रभाव नाबढावेंगे. यह धर्मकार्य किसी एक पंचायतीसे होना कष्टसाध्य है. इसकारण समस्त जगहँके धर्मात्मा और धनाढ्योंको पधारकर हरप्रकारसे इस धर्मोत्सवकी शोभा बढाना फर्ज है. हमको पूर्णतया आशा है कि इस धर्मोत्सवपर सब जगहँके और खासकर बंबई प्रांतके समस्त धर्मात्मा भाई अवश्य २ पधारेंगे.

धर्मात्माभाइयोंका दर्शनाभिलाषी.

गोपालदास बरैया सम्पादक जैनमित्र.

इस पत्रका नियम बदलना पड़ा.

पाठक महाशय! हमारी प्रांतिकसभाका वर्ष भादवा सुदी १५ को पूरा हो जाता है और जैनमित्रका वर्ष दिसंवरके अंतमें पूरा होता है इसकारण जैनमित्रका आयव्ययका वार्षिक हिसाब व रिपोर्ट प्रांतिकसभाकी रिपोर्टके साथ तयार होके इस सभाके वार्षिकोत्सवमें तथा महासभामें दाखिल नहिं हो सक्ती. इसकारण अबकी साल इस पत्रका अंक आठतक ही वर्ष खतम कर दिया गया है. किंतु ऐसा नहीं समझ लेना कि जिनका मूल्य अंक १२ तकका आगया है उनको ४ अंक न मिले और तीसरे वर्षका मूल्य अभीसे भेजना पडे किन्तु ४ अंक भेजकर उसके बाद तृतीय वर्षका मूल्य मांगा जायगा.

दूसरे—हमारे अनेक पाठक महाशय पत्र तो बराबर लियेजाते हैं परन्तु जब मूल्य देनेकी नौबत आती हैं तब अखवार अथवा बी. पी. लौटा देते हैं. जिससे सभाको बहुत घाटा उठाना पडता है. इसकारण **अबसे यह पक्का नियम कर दिया गया कि**— अग्रिम मूल्य पाये विना किसीका भी नाम ग्राहकश्रेणीमें दाखिल नहिं किया जायगा. यह अंक तो हम सूचना कर देनेकेलिये सबको भेज दिया है परन्तु अगला अंक जिनका मूल्य १२ अंक तकका जमा है उनहीके पास भेजा जायगा. इसकारण जिन भाइयोंने मूल्य अभीतक नहिं भेजा है उनको चाहिये कि पिछाड़ीके मूल्यके साथ २ अगली सालका मूल्य भी भेजनेकी कृपा करके सभाको घाटेसे बचावें.

आपका कृपाकांक्षी—

गोपालदास बरैया सम्पादक. जैनमित्र बंबई.

Registered No. B. 288.

श्रीवीतरागाय नमः

जैनमित्र.

अर्थात्

जैनप्रान्तिकसभाबम्बईका मासिकपत्र.

और

गोपालदास बरैयाद्वारा सम्पादित.

आर्याछन्दः

अज्ञानतमो हन्तुं विद्याधनयोरविघ्नसिद्धयर्थम् ॥
चिरदुःखितजैनानांमुद्भूतं जैनमित्रपत्रमिदम् ॥ १ ॥

तृतीय वर्ष } मार्गशीर्ष सं. १९५८ वि. { अंक ३ रा.

नियमावली.

१. इस पत्रका मुख्य उद्देश्य बम्बई प्रान्तके जैनसमाजकी उन्नति करना है

२. इस पत्रमें राज्यविरुद्ध, धर्मविरुद्ध, व परस्पर विरोध बढानेवाले लेख स्थान न पाकर उत्तमोत्तम लेख, चर्चा उपदेश, रिपोर्ट और समाचार छपा करेंगे.

३. इस पत्रका वार्षिक मूल्य डांकव्यय सहित सर्वत्र १।) रु० है. यह पत्र अग्रिममूल्य पाये विना किसीको भी नहिं भेजा जाता.

४. इस पत्रके अधिक ग्राहक होनेसे लाभ होगा तो वह इसी पत्रकी व विद्याकी उन्नतिमें लगाया जायगा और घाटा होगा तो जैनप्रान्तिकसभामुंबईको होगा

५. जो महाशय जैनप्रान्तिकसभा के सभासद हैं, उनको तथा परोपकारी विद्वानों और पढीहुई श्राविकाओंको यह पत्र विनामूल्य भेजा जाता है.

चिट्ठी व मनीआर्डर आदि भेजनेका पता:—गोपालदास बरैया.

महामंत्री दिगंबरजैनप्रांतिकसभा बंबई.

पो० कालबादेवी (बंबई)

जैनमित्रका मूल्यप्राप्ति स्वीकार.

(आसोज बदि १ से मंगसर बदि १४ तक)

।) आलमचंद हर्षचंद–सुजालपुर.
।) बिहारीलालजी–कामठी.
।) किसनचंद खूबचंद–कोलारस.
।) अमरचंद खूबचंद अंकलेसर.
।) मारोती बापूजी मखे केलेद.
।) बशवंत शांत्तापा हलकरणी.
॥) चिमनलालजी बडजात्या कानपुर.
≈) लक्ष्मीदास किसनदास डबोय पुर.
।) नरसगौडा अदगौडा पाटील कोथली.
।) सुरजमल मेघराज सुसारी.
॥≈) हर्षकीर्ति मेषी.
।) गजाधर तामिया सागर.
॥) सखाराम प्रेमचंद इंडी.
।) बाबु जमनालालजी अजमेर.
।) कुंदनलालजी मोहार्रिर छीपावरोड.
।) बुलाकीदास बुधसेन हरदा.
।॥) पन्नालालजी गोधा शेरगढ़.
२॥) भीमराज चंपालाल बुर्हानपुर.
१।) दीपासा पूनासा खंडवा.
१।) हीरासा बोदरूसा सनावद.
१॥) वृजेलाल चन्द्रमान ललितपुर.
१।) जोधराजजी श्रावगी अमरावती.
१।) फूलचंदजी कानपुर.
२॥) अमोलकचंदजी परमेष्ठीदासजी फिरोजाबाद.
१≈) मुनी गणपतराय नसीराबाद.
१।) तात्या सखाराम पाटील.
१।) रिखबचंद केशरीमल गया.
१।) नवलचंद धर्मचंदजी बंबई.
१।) रतनलालजी पल्लीवार अलीगढ़.
२॥) शालिगरामजी जवाहिरलाल जयनगर.
१।) पोमडूसा मंत्री खंडवा.
२॥) मौरीदत छाबडा मुकुंदगढ़.
१।) रायसाहब द्वारकाप्रसाद शाहजहांपुर.
१।) नंदलालजी राणीखेत.
१। शा. शाकलचंद अनूपचंद मेथापुर.
१। संघी बिहारीलाल रघुनाथदास बाह.
१।) चुन्नीलालजी गुड्स क्लर्क रेवाड़ी.
२॥) सेठ हरमुखराय अमोलकचंदजी भीलवाड़ा.
१।) चूरामनजी चुन्नीलाल अकलतरा.
१॥) बाबू रिखबदासजी इलाहाबाद.
१।) मौजीलाल मगोलेलाल बिलहरी.
१।) सुरजमल बालचंद बीर.
१।) अमरसिंहजी जैनी शिवहारा.
१।) लाला गुलजारीमलजी ,,
१।) लाला रतनलालजी ,,
१।) गांधी रूपचंदजी रख्याल.
१।) लाला लक्ष्मीचंद पन्नालाल देहली.
२–) ४ शीतलप्रसादजी लखनऊ.
२–) ४ जवाहिरलाल गोविंदप्रसाद ,,
२) ४ नेमदासजी सलमेवाले ,,
१।) डाह्याभाई रिखबदास सूरत.
१।) मंगतराय गंगाराम सहारनपुर.
१।) सेठ मथुरादासजी हडैया ललितपुर.

ग्राहक महाशय! सुनो सुनो अबसे हम मूल्य प्राप्तिस्वीकार नहिं छापैंगे.

कारण यह है कि इम पत्रमें मूल्य प्राप्तिस्वीकार (रसीद) छापनेमें कई प्रकारकी हानियें समझकर अबसे मूल्यप्राप्ति नहिं छापैंगे. किन्तु जिसदिन हमारे पास मूल्य पहुंचैगा, उसी दिन १ कार्डद्वारा रसीद भेजी जायगी. यदि सरकारी मनीआर्डरकी रसीद पहुंचनेके दूसरे या तीसरे दिन कार्डद्वारा रसीद नहिं पहुंचै तो उसी दिन एक कार्डद्वारा अवश्य ही मनीआर्डरकी रवानगी व रसीद पहुंचनेकी तारीख लिखकर सूचना दें. यदि कोई भाई सूचना नहिं देंगे तो उनके मूल्यके हम जुम्मेवार नहीं हैं.

सम्पादक.

सूचना देनेका पता—

पन्नालाल काशलीवाल

चंदावाड़ी पो० गिरगांव–बंबई.

नाम सुनाये और पूना निवासी दयाचंदजी ताराचंदजी-ने अनुमोदन किया. तब सबजेक्टकमेटी नियत होगई और उसने रात्रिके समय एकांतमें बैठकर १९ प्रस्तावोंके प्रवेश करनेका एक प्रोग्राम बनाया सो रात्रिमें ही छपाकर दूसरे दिनको दो बजेकी बैठकमें समस्त सभासदों और प्रतिनिधियोंको विचारार्थ वितरण कर दिया गया.

दूसरी बैठक

मिती आसोज सुदी ९ सोमवारके दिनको दो बजे प्रारंभ हुई. जिसमें बाहरके आये हुए डेलीगेट (प्रतिनिधि) सहित सभासदोंकी संख्या अनुमान ५०० के थी. सभापतिका आसन ग्रहण करके श्रीमान् राजा धर्मचंदजी साहिबने प्रगट किया कि—श्रीमान् राजाधिराज सप्तम एडवर्ड महाराजके प्रतापसे आज हमको अनेक प्रकारके नवीन सुखोंकी प्राप्ति होती है. हर एक धर्मकार्य्योंमें सरकारकी तरफसे सहायता मिलती है. जिसप्रकार श्रीमती राज राजेश्वरी महाराणीने हिन्दुस्थानकी प्रजाको पुत्रवत् पालन किया, उसी प्रकार हमारे वर्तमान महाराजसे भी पूर्णतया आशा है. इस कारण उपर्युक्त गुणोंका वर्णन पूर्वक राज्याभिषेकके समय श्रीमान् सप्तम एडवर्ड महाराजको एक मानपत्र भेजना चाहिये. इस प्रस्तावपर समस्त सभासदोंने करतलध्वनिसे हर्ष प्रगट किया. तत्पश्चात् श्रीमान् सेठ हीराचंद नेमीचंदजीने इस प्रस्तावका अनुमोदन करते समय प्रगट किया कि इस दीन हीन जैन जातिको तो वृटिश सरकारकी हुकूमत ही बहुत खुश होनेयोग्य विषय है क्योंकि हम लोगोंको स्वतंत्रता पूर्वक धर्मकार्य्योंके साधनकी छूट जितनी वृटिश राज्यमें मिलती है, उतनी छूट अन्यान्य राज्य रजवाड़ोंमें न तो पूर्वकालमें मिली और न वर्तमान कालमें ही मिलती है. इसकारण अपना फर्ज है कि अंगरेज सरकारका उपकार मानकर हमारे महाराज सप्तम एडवर्डकी सेवामें एक मानपत्र अवश्य ही भेजा जाय. तत्पश्चात् कई सभासदोंके अनुमोदनके बाद सबकी सम्मतिसे नीचें लिखा प्रस्ताव पास हुआ.

१. प्रथम प्रस्ताव—श्रीमान् महाराजाधिराज भारतेश्वर सप्तम यडवर्डकी सेवामें राज्याभिषेक पर इस सभाकी तरफसे एक मानपत्र भेजा जाय. मानपत्र बनाकर भेजनेकेलिये श्रीमान् राजा धर्मचंदजी, हीराचंद नेमचंदजी, माणिकचन्द पानाचन्दजी और रावजी नानचंदजी इन ४ महाशयों की कमेटी नियत की गई. तत्पश्चात् श्रीमान् सेठ हीराचंद नेमचंदजीने प्रस्ताव किया कि जैन जातिमें स्त्री और बालक जो लिख पढ़ सक्ते हैं, उनकी संख्या अन्यान्य जातियोंकी अपेक्षा बहुत ही न्यून है. इस कारण स्त्रियों और बालकोंको शिक्षित करनेका उपाय करना चाहिये. इस प्रस्ताव को पेश करते समय प्रगट किया कि यद्यपि हम लोग द्रव्य और नीति सम्बन्धी अवस्थामें समस्त जातियोंकी अपेक्षा चढ़तेहुए हैं परन्तु विद्या सम्बन्धी अवस्थामें समस्त कौमोंसे हम लोग पीछे पड़े हुए हैं. सन् १८९१ की सालमें जो मनुष्य संख्या हुई थी, उससे प्रगट होता है कि जैनी लोग जितने कम कैदमें जाते हैं, उतने कम किसी भी जातिवाले नहीं जाते. इससे जैनियोंकी नीति समस्त जातियोंकी अपेक्षा श्रेष्ठ है. इसका मूलकारण हमारे प्राचीन आचार्योंके बनाये हुये ग्रन्थोंका उपदेश मात्र है. हमको दर्शन पूजा सा-

सामयिक प्रतिक्रमण आदि समस्त क्रियाओंमें नीतिकी शिक्षा मिलती रहती है परन्तु विद्याशिक्षामें न्यून हैं. यद्यपि मुसलमान और हिन्दुओंकी अपेक्षा हमारी अवस्था अच्छी है परन्तु पारसियोंकी अपेक्षा हमारी अवस्था बहुत ही खराब है क्योंकि पारसी लोगोंमें जब १०० में से ७७ पुरुष और ५१ स्त्रियें पढी हुई हैं किन्तु हमारी जैन जातिमें १०० में ९२ पुरुष और १०० मेंसे १।। स्त्री पढी हुई है.

जिस प्रकार हम लोग विद्यामें कमती हैं उसी प्रकार स्वास्थ्यरक्षामें भी हमारी जाति सब से पीछे है. क्योंकि इस समय समस्त जातियोंकी अपेक्षा सैंकडेमें सबसे अधिक जैन जातिके स्त्री पुरुष मृत्युको प्राप्त होते हैं. इसका कारण स्त्रियोंकी व हम लोगोंकी अज्ञानता है और अज्ञानता विद्याके प्रचार किये विना नष्ट नहिं होगी, इस कारण स्त्रियोंमें और बालकोंमें लौकिक व पारमार्थिक विद्याके प्रचार करने की अत्यावश्यक्त है. जो कोई असमर्थ भाई द्रव्याभावके कारण अपने बालबच्चोंको योग्य विद्या न पढा सकें, उनको सहायता देनी चाहिये. जगहँ २ स्त्रीशिक्षा व बालशिक्षार्थ पाठशालायें खोलना स्कालर्शिप (मासिकपारितोषिक) देना इत्यादि प्रकारसे उपाय करनेसे ही हमारी उन्नति हो सक्ती है.

तत्पश्चात् मिस्टर पायप्पा आदप्पा बुगटेने और नाना रामचंद्र नागने अनुमोदन किया और सबकी सम्मतिसे नीचें लिखा प्रस्ताव स्वीकृत हुआ.

२. दूसरा प्रस्ताव— यह सभा प्रस्ताव करती है कि जैन जातिमें स्त्रियें और बालक लिखने, पढने और धार्मिकशिक्षावाले अन्यान्य जातियोंकी अपेक्षा बहुत ही न्यून हैं. सो इनके बढानेका प्रयत्न किया जाय.

तत्पश्चात् लाला धन्नालालजी काशलीवालने हेतुप्रकाशपूर्वक नीचें लिखा प्रस्ताव पेश किया और फलटण निवासी बापूचंद पानाचंद तथा सेठ रामचंद नाथाजी गांधीने अनुमोदन किया और समस्त सभासद और डेलिगेटोंकी सम्मतिसे पास हुआ.

३. तीसरा प्रस्ताव— जिन २ भाइयोंने जैन विवाहपद्धतिके अनुसार अपने लडके लडकियोंका विवाह किया है, उनको धन्यवाद दिया जाय और जिन्होंने इस सनातन रीतिको प्रचालित नहिं किया, उनको प्रेरणा की जाय.

तत्पश्चात् सेठ जीवराज गौतमचन्द शोलापुर निवासीने अनेक प्रकारकी हानियें बताकर प्रस्ताव किया कि हम लोगोंके विवाह और मृत्यु सम्बन्धी कार्योंमें फिजूल खर्च बहुत होता है. उस के दूर करनेका प्रयत्न किया जाय. इस प्रस्तावका नाना रामचन्द्रजी नागने अनुमोदन किया फिर सबकी सम्मतिसे पास हुआ.

४. चौथा प्रस्ताव-- हमारी जैन जातिके विवाह और मृत्युसबंधी कार्योंमें बहुत ही फिजूल खर्च होता है, सो इसको दूर करनेका प्रयत्न किया जाय.

तत्पश्चात् मिस्टर शंकरलाल [illegible]दानने प्रस्ताव किया कि अनेक जगहँ मृत्युके पीछें स्त्रियोंद्वारा छाती कूटनेका रिवाज चल रहा है सो इस रिवाज के रहनेसे किसी प्रकारका लाभ न होनेके सिवाय स्त्रियोंकी निर्लज्जता आदि प्रगट होती है. इस कारण इस रिवाजको हमारी पवित्र जैन जातिमेंसे

शीघ्र ही निकाल देनेकी बडी आवश्यक्ता है. इस प्रस्तावका सेट चुन्नीलाल प्रेमानंदने अनुमोदन किया और सबकी सम्मतिसे नीचें लिखा प्रस्ताव स्वीकृत हुआ.

५. पांचवाँ प्रस्ताव— मृत्युके पीछें जिस जगहँ छाती कूटनेका रिवाज है, उस २ जगहँ पर इस रिवाजके बंद करनेका उपाय करना चाहिये.

तत्पश्चात् प० गोपालदासजीने हेतुपूर्वक प्रस्ताव किया कि मनुष्यभवकी सफलता विद्यासे है और पाठशालाओंको ध्रुव किये बिना विद्याकी वृद्धि होना असंभव है इस कारण इस बंबई शहरमें प्रान. काच ही जो एक संस्कृत विद्यालय खोला गया है. उसको ध्रुव बनानेकेवास्ते सभाकी तरफसे १ खाता खोला जाय जिसमें कि किसी भाईको कुछ भी द्रव्य देनेका उत्साह हो तो उसके स्वीकार करनेका इस सभाको अख्तियार है इस प्रस्तावको नीमगांवकर गौतम जयचंदने अनुमोदन किया और सबकी सम्मतिसे नीचें लिखा प्रस्ताव पास होनेके पश्चात् गोपालदासजीके उपदेशसे अनुमान १२००० का चिट्ठा उसी वक्त हो गया. जिसकी फेहरिस्त अन्यत्र छापी है.

६. छट्ठा प्रस्ताव — बम्बईशहरमें जो एक 'संस्कृत जैन विद्यालयका प्रारंभ होगया है, उसको ध्रुव बनानेकेलिये सभाकी तरफसे १ "ध्रुव विद्यालय भंडार, नामका खाता खोला जाय जिसमें जिस भाईको कुछ भी द्रव्य देनेकी इच्छा होय तो वह सहर्ष स्वीकार किया जाय. इस भंडारका मूलद्रव्य खर्च न होकर उसका व्याज मात्र खर्च किया जायगा.

तत्पश्चात् सभापति वगैरहका उपकार मानकर चन्द्रप्रभ भगवानकी जय बोलकर ४॥ बजे सभा विसर्जन की.

स्थापन संस्कृतजैनविद्यालय.

इसी दिन आश्विन सुदी ९ वार सोमवारके प्रातः ७॥ बजे हीराचंद गुमानजी जैन बोर्डिङ्ग स्कूलके मकानमें संस्कृत जैन विद्यालयका शुभ मुहूर्त हुआ था. जिसमें प्रथम ही बोर्डिंग स्कूलके सामनेके मैदानमें जो एक मनोहर मंडप बना था. उसमें एक सभा हुई जिसमें मुम्बई तथा बाहिरके दिगम्बरी तथा स्वेताम्बरीभाई अनुमान ५०० के थे. सबके प्रथम ही सेठ हिराचन्दजी नेमचन्दजीकी दरख्वास्तसे राजा धर्मचन्दजी साहिबने सभापतिका आसन ग्रहण करके कहा कि आज आप लोगोंको जो यहां पधारनेकी तकलीफ दी है सो इस सामनेके मकानमें दिगम्बर जैन प्रान्तिक सभाकी तरफसे एक संस्कृत विद्यालय खोलनेकेलिये दी है. धार्मिक भाव व धार्मिक शिक्षामें हमारी जैनजाति पीछें पड़ी हुई है. इस कारण ऐसी एक बड़ी पाठशालाकी अत्यंत आवश्यक्ता थी, सो आज इस जैनप्रान्तिकसभाकी कृपासे यह आवश्यक्ता दूर होती है, सो बडे हर्षका समय है.

तत्पश्चात् पं. गोपालदासजीने भी सभापतिके कथनानुसार हम लोगोंमें विद्याकी न्यूनता बहुत ही है. हम लोग भले प्रकार जानते हैं कि विद्याकी उन्नतिके बिना

किसी भी जातिकी उन्नति नहिं हुई, इस कारण ज्ञानकी प्राप्ति करना हमारा प्रथम कर्त्तव्य है. आहारदान, औषधदान, अभयदान, और ज्ञानदान ये ४ दान सर्वोत्कृष्ट मुख्य दान हैं परन्तु इनमें भी

" ज्ञानदान सबसे श्रेष्ठ है. "

क्योंकि आहार दानसे तो फक्त एक ही समय क्षुधा मिटती है. औषधि दानसे एक समयका रोग मिटता है. अभयदानसे एक बारका कोई दुःख मिटता है और ज्ञानदानसे तो यह आत्मा रत्नत्रयकी प्राप्ति करके आत्यंतिक मोक्षसुख प्राप्त कर सक्ता है. अपनी जैनजातिमें धार्मिक शिक्षा कितनी आवश्यक्ता है. उससे कोई भी भाई अजान नहीं है. आज जो पाठशाला खोली जायगी, उससे कितने लाभ होंगे सो आप भले प्रकार विचार सक्ते हैं धार्मिक शिक्षाकेलिये अनेक जगह पाठशालायें खुली हैं जिनके तीन भेद हो सक्ते हैं एक बालबोध पाठशाला, दूसरी प्रवेशिका पाठशाला, तीसरी पंडित पाठशाला, इसी प्रकार तीनों ही तरहकी पाठशालायें, यथाक्रम ग्राम, कस्बे, और शहरोंमें खोली जावें और उनमें एक ही क्रमसे शिक्षा दी जावे तो थोड़े दिन बाद एक ऐसा समय आवेगा कि जिधर देखो उधर उन्नति ही उन्नति दृष्टिगोचर होगी. इसी प्रकार दक्षिण देशके सैकड़ों भंडारोंमे हजारों जैनग्रन्थ पड़े २ गल सड़ रहे हैं. उनके जीर्णोद्धारकी प्रेरणा करके व्याख्यान पूर्ण किया.

तत्पश्चात् सेठ हीराचंद नेमचंदजी[illegible] प्रार्थना से मुख्य २ सद्गृहस्थ और शास्त्र[illegible] गण बोर्डिंगके मकानपर गये और श्रीम[illegible] राजा दीनदयालजीके हाथसे पाठशा[illegible] का पड़दा खोला गया. सरस्वती पूजना[illegible] क्रिया तो पहिले हो चुकी थी. सिर्फ विद्या[illegible] र्थियोंको न्याय, धर्मशास्त्र और व्याकर[illegible] का पाठ तीन विद्वानोंकेद्वारा दिया गय[illegible] तत्पश्चात् सब जैन नीचे सभा मंडप[illegible] पधारे. सभापति साहिबके आसनारू[illegible] हुए पीछे सेठ हीराचन्द नेमचन्दजी[illegible] बोर्डिंग स्कूलके कर्ता सेठ माणिकचन्[illegible] पानाचंदजीको धन्यवाद पूर्वक बोर्डिंग[illegible] सुव्यवस्था सुनाई. तत्पश्चात मिस्टर फकी[illegible] रचन्द प्रेमचन्दजीने जैन बोर्डिंग स्कू[illegible] की सव्यवस्थाकी प्रशंसा की और यह[illegible] भी कहा कि हमारी जैन समाजमें सवे[illegible] वहे श्वेताम्बरी और दिगम्बरी दो त[illegible] हैं और उनमें भी तड़ उपतड़ बहुतसे[illegible] जिनसे हमारी समाजको बड़ी भारी हा[illegible] पहुंची. परन्तु सेठ माणिकचन्द पानाचन्[illegible] भाईने जो यह बोर्डिंग खोला है सो इस[illegible] श्वेताम्बरी दिगम्बरी का भेदभाव न रख[illegible] कर सबको समान लाभ प्राप्ति करके पर[illegible] स्पर एकता बढ़ानेका यह एक महान धर्म[illegible] कार्य स्थापन किया है. इसकारण हमको[illegible] इनका आभार मानना चाहिये. आशा है[illegible] कि इस बोर्डिंगमें हरएक भाई यथाशक्ति[illegible] मदद देकर इसधर्म्मकार्यमें फल प्राप्त करेंगे[illegible]

तत्पश्चात श्रीमान् पंडित जीवराम लल्लू[illegible]

—जी शास्त्रीने विद्योन्नति व पाठशाला की
ीघ्र ह्यन्त आवश्यक्ता बताकर अपना हर्ष
म प्रगट किया तत्पश्चात् बोर्डिंगस्कूलके एक
न विद्यार्थीने बोर्डिंगके समस्त विद्यार्थियों
स्ताव तरफसे सेठ माणिकचन्द पानाचन्द
८का उपकार मानकर धन्यवाद दिया.
जगह तत्पश्चात् सभापति साहिबने उप
पर इयत सभासदोंको धन्यवाद देकर कहा
हिये.ा, देखिये एक ही महाशयने विद्योन्नति
ा मुख्य कर्तव्य समझा तो कितना म-
स्तावका कार्य किया है? यदि हमारे समस्त
ह ाढच धर्म्मात्मा जैनी भाई इसी प्रकार
की पनी उदारता ऐसे २ विद्योन्नतिकारक
शाय्यों में दिखावें तो क्या नहिं होय?
ग्वो तत्पश्चात् उपस्थित सद्गृहस्थों और
कीद्वानोंका हार तुर्रा तथा ब्रह्मण विद्वानों
्या दक्षिणा से सत्कार करके जयध्वनिके
ाथ सभाका विसर्जन किया.

तीसरी बैठक.

मिती आसोज सुदी १० के दिन को १
जे दिगम्बरजैनप्रान्तिक सभा की तीसरी
ठक हुई. जिसमें समस्त सभासद और
लीगेटोंके हाजिर होने पर राजा धर्म
न्दजीने सभापतिका आसन ग्रहण करके
क सारगर्भित लिखित व्याख्यान अने-
क दृष्टान्तों सहित दिया. जिसमें प्रगट
किया कि मनुष्यको जन्मके पश्चात् एक
सी चीज मिलती है कि जिसमें प्रभाव प्र-
तिष्ठा (आबरू) बढती है. नानाप्रकारके
ेश आगमकी चीजें प्राप्त होती हैं, वह चीज
पैसा (द्रव्य है, परन्तु जिसके पास पैसा है
उसको उस पैसेसे सन्तोष नहीं होता. जि-
सके पास हजारों रुपया हैं, वह लाखोंके
जोड़नेका प्रयास करता है. और जिसके
पास लाखोंका है, वह करोड़ों रुपया जोड़ने
की फिकरमें पड़ा रहता है. सो ठीक नहीं.
किन्तु हम जिस स्थितिमें हैं, उसीमें सन्तो-
ष करना चाहिये और बढ़ते हुए धनको स-
दुपयोग में लगाकर यश और परलोक के
वास्ते पुण्योपार्जन करना चाहिये इत्यादि.

तत्पश्चात् मथुरा निवासी श्रीमान् राजा
लक्ष्मण दासजी. सी. आई. ई, अजमेर नि
वासी रायबहादुर सेठ मूलचन्दजी साहिब,
लश्कर निवासी सेठ अमरचन्दजी, सेकन्ड
जज, राज्य ग्वालियर तथा सज्जनोत्तम वि-
द्वद्वर्य पं० मोहनलालजी. व रा० रा० मि-
स्टर वीरचन्द राघवजी गांधी. बी.ए. बेरि-
स्टर एट ला. इन पांचो महाशयों के गुण
वर्णनपूर्वक इन की मृत्युका शोक प्रकाश
किया और सभाकी तरफ से शोक प्रकाश
पत्र उपर्युक्त महाशयों के वारिसों के
पास भेजा जाय. तत्पश्चात् सेठ हीराचन्द-
जी नेमीचन्दजीने भी उक्त पांचों महाश-
योंके गुण वर्णन करके सभापति साहिब
के उक्त प्रस्तावका अनुमोदन किया तब
सबकी सम्मति से नीचे लिखा प्रस्ताव
स्वीकृत हुआ.

७ वां प्रस्ताव—यह सभा प्रस्ताव
करती है कि श्रीमान् राजा लक्ष्मण-
दासजी, सी. आई. ई., रायबहादुर सेठ

मूलचन्दजी सेठ अमरचन्दजी साहिब, सेकन्ड जज, सज्जनोत्तम पंडित मोहनलालजी और मिस्टर वीरचन्द राघवजी गांधी, बी. ए., इन पांचों महाशयों की मृत्यु-का पत्र भेजकर शोकप्रकाश किया जाय.

तत्पश्चात् सेठ माणिकचन्द पानाचन्द-जीने बालविवाह और वृद्ध विवाह तथा कन्याविक्रय की हानियें प्रगट कर निम्नलिखित प्रस्ताव पेश किया और सेठ रामचन्दजीके अनुमोदन होनेपर सबकी सम्मतिसे पास हुआ.

८ वां प्रस्ताव—बाल्यविवाह वृद्ध-विवाह और कन्याविक्रयका रिवाज महा हानिकारक है. सो इसको जहां तक बने कम करने का प्रयत्न किया जाय.

तत्पश्चात् भाई पदमचन्द बैनड़ाने प्रगट किया कि विवाह आदि शुभ कार्य्योंमें वेश्या नृत्य कराने से बडी अनीति और अनाचार का प्रचार होता है. क्योंकि वेश्या के नृत्यसे मनुष्यके मगज ऊपर बहुत खराब असर पड़ता है. तथा ऐसे नृत्योंमें खर्च भी बहुत पड़ता है सो बड़ी निन्दा का स्थान है. इस कारण यह वेश्या नृत्य कराने का महा हानिकारक रिवाज अपनी पवित्र जैन जातिमेंसे सर्वथा दूर कर देना चाहिये. तत्पश्चात् शोलापुर निवासी मिस्टर पानाचन्द रामचन्दजीने अनेक हानियें दिखाकर इस प्रस्ताव का अनुमोदन किया. तब सब की सम्मतिसे यह प्रस्ताव पास हुआ.

९ वां प्रस्ताव— विवाहादि शु[भ] कार्य्योंमें वेश्यानृत्यके बंद करनेकी [प्रे]रणा की जाय क्योंकि इसके कारण [ब]हुत ही अनीति और अनाचार का प्रच[ार] हो रहा है.

तत्पश्चात् सेठ चुन्नीलाल जवेरचन्द[,] मंत्री तीर्थक्षेत्रने नीचे लिखा १० वां [प्र]स्ताव पेश किया और सेठ रावजी ना[...] चन्दने अनुमोदन किया तथा सेठ माणि[क]कचन्द पानाचन्दजीने तीर्थक्षेत्रोंकी [दे]खरेखके लिये सभाकी तरफसे दो च[ार] आदमी नियत करने की प्रेरणा की. [फि]र सेठ रामचन्द नाथाजीने दहीगांव [की] व्यवस्था सुनाई. तत्पश्चात् सभापति सा[हि]बने भी तीर्थक्षेत्रोंके हिसाबमें गड़ब[ड़] अधिक है इत्यादि प्रगट करके सब[की] सम्मतिसे नीचे लिखा प्रस्ताव पास किय[ा].

१० वां प्रस्ताव— जिन २ तीर्थ-क्षेत्रोंसे हिसाब आया है, उन के व्यवस्थापकोंको धन्यवाद दिया जाय और उन[में] जो कुछ त्रुटि हो उसकी सूचना की जा[य] तथा जिस २ क्षेत्रसे हिसाब नहीं आय[ा] है. वहांसे हिसाब मंगानेका फिरसे प्रयत्न किया जाय.

तत्पश्चात् शोलापुर निवासी पं० पा[र्श्व]-गोपाल शास्त्रीने नीचे लिखा ११ व[ां] प्रस्ताव पेश किया. जिसमें हिंसादि पां[च] पाप और मद्य मांस मधुके सेवनमें अ-नेक प्रकार की हानियां प्रगट करके स-मस्त जैनी भाइयों को अष्टमूल गुण धा

करने की आवश्यक्ता बताई. जिसको जी शाला धन्नालालजीने युक्तिपूर्वक अनुमोदन किया. तत्पश्चात् नाना रामचन्द्र नाग किरंग ने कहा कि, जो अन्यमती होय विद्यार्थीयों को तो हिंसादि आठों पापोंका त्याग करना और जैनीभाइयों के लड़कों को इन के त्याग करानेकी शिक्षा तत्पश्चात् देना काफी है. क्योंकि जैनियोंमें मद्य मांसादि का स्वयं ही ग्रहण नहीं है. तत्पश्चात् सब की सम्मतिसे नीचे लिखा प्रस्ताव पास हुआ.

११ वां प्रस्ताव जिन २ जैनी भाइयोंने श्रावकके अष्टमूल गुणका धारण नहीं किया है, उन को धारण करने की प्रेरणा की जाय.

तत्पश्चात् पं० गोपालदासजीने नीचे लिखा १२ वां प्रस्ताव पेश करते समय कहा कि प्रथम तो वर्तमान समयमें जैसे पंडित चाहिये वैसे हैं ही नहीं. जो कुछ देखने सुननेमें आते हैं, वे बीजभूत मात्र हैं. उनमें भी अनेक तो ऐसे हैं कि अपने उदर पूर्णार्थ आजीविका करने में ही अपना अहोरात्र का अमूल्य समय खोते रहते हैं. कुछ ऐसे हैं कि उनको अवकाश (समय) मिलने पर भी वे प्रमादके वशीभूत हो कुछ भी स्वपरहित नहीं कर सक्ते. गूढ़ शङ्काओं का समीचीन उत्तर न मिलनेसे हमारे भोलेभाले भाइयोंने धर्म की पद्धति सर्वथा बिगाड़ दी है. जिन द्रव्य क्षेत्र काल भाव के प्रयोग करने की आज्ञा लौकिक कार्य्योंकेलिये है, उन का धर्म सम्बन्धी कार्य्योंमें प्रयोग करने लगे. धर्म सम्बन्धी कार्य्यों की मनोक्त प्रवृत्ति ऐसी विस्तृत रूप पड़ गई है कि जिसका शास्त्रानुसार सुधार करना अतिशय कष्टसाध्य भासता है. इस के सिवाय अभिषेकादिक ही पूजनविधि व संस्कारविधि सर्वथा नष्ट हो गई है. हम लोगोंका शास्त्रोक्त संस्कार न होनेसे ही धर्म धारण करने की शक्ति नष्ट हो गई है इत्यादि धर्म सम्बन्धी कार्य्योंमें अनेक प्रकार की गड़बड़ हो गई है. इस कारण समस्त देशके विद्वानोंकी एक सभा होनी चाहिये. जिससे कि समस्त प्रकारकी शंकाओंका समीचीन समाधान होकर हरएक धर्म्मकार्य्यका निर्णय व प्रचार होता रहे. आशा है कि सभा अपनी मातहतीमें ऐसी एक पंडित सभा बनाने की आज्ञा देगी.

तत्पश्चात् पूनेवाले सेठ दयाराम ताराचन्दजीने अनुमोदन किया. फिर सभापति साहिबने किन २ पंडितोंकी सभा होनी चाहिये सो नामावली पेश करो. ऐसी आज्ञा दी. तब पं. गोपालदासजीने १३ पंडितोंकी नामावली सुनाई और सबकी सम्मतिसे नीचे लिखा प्रस्ताव पास हुआ.

१२ वां प्रस्ताव—धार्मिक विषयोंका विचार करके निश्चय करने आदि कार्य्योंकेलिये एक "दिगम्बरजैनविद्वज्जनसभा" नियत की जाय.

तत्पश्चात् श्रीमान् सेठ हीराचन्द नेमचन्दजीने नीचे लिखा १३ वां प्रस्ताव पेश किया और युक्तिपूर्वक इसका समर्थन किया और चंदूलालजीके अनुमोदन करनेपर सबकी सम्मतिसे पास हुआ.

१३ वां प्रस्ताव—दशहरे पर जीवहिंसा रोकनेकी प्रार्थना की जाय. तथा अपने सनातन दश लक्षण धर्मके १० दिनोंमें जो कुत्ते मारे जाते हैं उनके बंद करनेकी सरकारसे प्रार्थना की जाय.

तत्पश्चात् फिर गौतम जयचन्दने कहा कि महासभामें इस सभाकी तरफसे डेलीगेट भेजे जांय. तब इसका अनुमोदन और सम्मति होनेपर नीचे लिखा प्रस्ताव पास हुआ.

१४ वां प्रस्तावः—महा सभाके अधिवेशनपर इस सभाकी तरफसे पं. गोपालदासजी बरैया. पानाचन्द रामचन्द और पदमचन्द बैनाड़ा ये महाशय प्रतिनिधि (डेलीगेट) भेजे जांय.

तत्पश्चात् शोलापुर निवासी सेठ रावजी कस्तुरचन्दजीने सभाके कार्य्योंकी प्रशंशा की.

तत्पश्चात् श्रीमान् श्रेष्ठिवर्य्य हीराचन्दजीने सभाके समस्त कार्य्य निर्विघ्नताके साथ पूर्ण हो जानेके कारण अत्यन्त सुलालत शब्दोंमें इस धर्म कार्य्यके अध्यक्ष (सभापति) श्रीमान् राजा धर्मचन्दजी साहिबको धन्यवाद दिया और—

"मंगलं भगवान्वीरो मंगलं गौतमो गणी मंगलं कुन्दकुन्दाद्यो जैनधर्मोस्तु मंगलं॥"

यह श्लोक कहकर अन्त मंगलाचरण किया और जयध्वनि हुई. फिर सभापति साहिब वगैरहका हार तुर्रादिसे सत्कार करके जयध्वनिके साथ सभा विसर्जन की.

इस अधिवेशनपर इस बम्बई प्रान्तके बम्बई, शोलापूर, इंडी, पूना, पंढरपूर, बीजापूर, वर्धा, पुलगांव, दहीगांव, सवगांव, सूरत, भंडारा, नागपूर, मैंदरगी, आकलूज, आमोद, पंथापुर, बोरसद, करमसद, वागधरी, बीड, कोपरगांव, हीमगांव, फलटण, लाखवाड़ी, लासुरना, मड़द, वड़गांव, माढ़ा, नांनपूंत, शेटफल, अक्कलकोट, आदिके अनुमान १२८ प्रतिनिधियोंके नाम आये थे. जिनमेंसे कई एक महाशय हाजिर भी नहीं हो सके थे. सभासद ४०. हाजिर थे सो तीनों बैठकोंमें समस्त सभासद व प्रतिनिधि उपस्थित रहते थे. जिनका आदर सत्कार करनेके लिये तथा रेलवेस्टेशनपर बाहरसे पधारनेवाले जैनी भाइयोंकी अगवानी करके योग्य स्थानपर लाकर ठहरानेकेलिये ४७ भाइयोंकी एक "स्वागत कमेटी" नियत की गई थी. जिस के सभापति (चेअरमन) सेठ माणिकचन्द पानाचन्दजी जौहरी. मंत्री—बोरसद निवासी मिस्टर लल्लूभाई प्रेमानंद व उप मंत्री—कानपूर निवासी भाई प्रभुदयालजी नमीचन्दजी शोभाचन्द और प्रेमचन्द मोतीचन्द जौहरी, जीवराज गौतमचन्द दोसी, पानाचन्द रामचन्द. प-

दमचन्द बैनेड़ा सूरचन्द गांधी, सूरजमल पाटणी केदारमलजी अगरवाला, छज्जूमल पांड्या, धन्नालालजी काशलीवाल, जोरावमलजी दिल्लीवाले, मोहनलालजी पाटोदी और रामलालजी बागसी ये सब भाई सभासद थे. इस कमेटी के सब ही भाइयोंने अहोरात्र तनमनसे पूर्ण परिश्रम करके अपना २ कर्तव्य बडी योग्यता के साथ सम्पादन किया. जिस के लिये यह सभा इन महाशयों को आभार सहित कोटिशः धन्यवाद देती है.

इस वार्षिकोत्सव पर नीचे लिखे सभासद हाजिर थे.

१ सेठ माणिकचन्द पानाचन्दजी जोंहरी, सभापति.
२ राजा बहादुर दीनदयालजी, उपसभापति.
३ सेठ नाथारंगजी गांधी, उपसभापति.
४ सेठ गुरमुखरायजी सुखानंद, कोषाध्यक्ष.
५ गोपालदास बरैया, महामंत्री.
६ सेठ प्रेमचन्द मोतीचन्द जोंहरी, मंत्री सरस्वती भंडार
७ धन्नालालजी काशलीवाल, मंत्री, उपदेशक-भंडार.
८ सेठ हीराचन्द नेमीचन्दजी बम्बई
९ गांधी बालचन्द रामचन्दजी शोलापुर
१० सेठ रावजी नानचन्द (शोलापुर)
११ रावजी कस्तूरचन्दजी (शोलापुर)
१२ दोशी लक्ष्मीचन्द केवलचन्दजी फलटण
१३ सेठ हरसुखराय अमोलकचन्दजी बम्बई
१४ परीख प्रेमानन्द नारायण दासजी ,,
१५ पदमचन्दजी बैनेड़ा ,,
१६ नन्दलालजी पाटोदी बम्बई.
१७ महावचंदजी छावड़ा ,,
१८ रायमलजी छावड़ा ,,
१९ तिलकचन्द सखारामजी ,,
२० रामचन्दजी सेठी ,,
२१ छज्जूमलजी पांड्या ,,
२२ पन्नालाल बाकलीवाल दि० जैन ,,
२३ देवचन्द बीरचन्द शेटफल
२४ गांधी हरीचन्द नाथाजी पंढरपुर
२५ सेठ नाथारंगजी गांधी आकलूज
२६ सेठ नाथारंगजी गांधी बीजापूर
२७ फूलचन्द नेमचन्दजी फलटण
२८ देवचन्द मोतीचन्दजी लोनंद
२९ बकाराम पैकाजी गैंडे वर्धा
३० नेमचन्द नारायणजी चौंडे वर्धा
३१ गांधी नाथूराम गंगाराम आकलूज
३२ भगवानदास कोदरजी बम्बई
३३ पानाचन्द रामचन्दजी शोलापूर
३४ दोसी जीवराज गोतमचन्दजी शोलापूर
३५ पंडित पासु गोपालजी शास्त्री ,,
३६ सेठ हीराचन्दजी, आनरेरी मजिस्ट्रेट (शोलापुर)
३७ गांधी गौतम जयचन्दजी लीमगाव
३८ संघई गुलाबसाव रिखबसावजी नागपूर
३९ सेठ चुन्नीलाल जवेरचन्दजी बम्बई
४० गुलाबचन्द ताराचन्द आकलूज
४१ सेठ लल्लूभाई लक्ष्मीचन्द चौकसी बम्बई
४२ गांधी बीरचन्द कोदरजी फलटण
४३ दोशी मोतीचन्द बीजापूर
४४ रावजी वेणीचन्द नातेपूते
४५ जीवनभाई गंगारामजी मेड़दे

४६ माणिकचन्द मोतीचन्दजी टिम्बोरनी
४७ सखाराम मोतीचन्दजी तांबा
४८ मोतीचन्द गुलाबचन्दजी शोलापुर
४९ मोतीचन्द पानाचन्दजी शोलापूर

एक सौ बीस सभासदों के सिवाय नीचे लिखे महाशय नवीन सभासद हुए हैं.

१ फूलचन्द माणिकचन्दजी बम्बई
२ लाला जयन्ती प्रशादजी सहारनपुर
३ शा. खुशालचन्द माणिकचन्द बीजापूर
४ दयाराम ताराचन्द पूना
५ जयसींगभाई गुलाबचन्द आमोद
६ शकरलाल तापीदास आमोद
७ सेवकलाल केवलदास आमोद
८ बाबूउमरावसिंहजी ठेकेदार आबूरोड
९ लालाप्रभुदयालजी अग्रवाल बंबई

"संस्कृतजैनविद्यालयके ध्रुव भंडारका चंदा."

यह चन्दा संस्कृत जैन विद्यालय बम्बईके ध्रुव भंडारकेवास्ते किया जाता है. इसका मूलद्रव्य खर्च नहिं किया जायगा: किन्तु केवल व्याजसे काम लिया जायगा. इस विद्यालयमें दिगम्बरजैनधर्मसम्बन्धी संस्कृत विद्या पढ़ाई जायगी और इसका प्रबन्ध दिगम्बर-जैन-प्रान्तिकसभा बम्बईकी प्रबन्धकारिणी सभाके आधीन रहेगा. इस चन्देमें जिन महाशयोंकी हर्षपूर्वक भरनेकी इच्छा होय वे भरें. किसीसे जबरन् नही भरवाते. अश्विन सु.९सं. १९५८

रु० नाम द्रव्यदाताओंके.

५००१) सेठ माणिकचन्द लाभचन्द बंबई. हस्ते माणिकबाई तथा भगवानदास कोदरजी, माणेकचन्द पानाचंदजी, लल्लूभाई लक्ष्मीचंदजी और हीराचंद नेमचंदजी इन ट्रष्टियोंने इस५००१) की रकमका व्याजमात्र इस शर्तमें दिया है कि उसके बदले में विद्यालयमेंसे १ विद्यार्थी माणकचंद लाभचंदके नामकी पाठशाला खोली जाय तो वहांपर पढ़ानेको जावे.
१००१) जोंहरी माणिकचंद पानाचंदजी मुंबई.
१००१) राजादीनदयालजी धर्मचंदजी "
१००१) सेठ बालचंदजी उगरचंदजी "
१००१ गांधी गवजी शाकलचंदजी "
५०१) संवई गुलाबसावजी रूपचसावजी. नागपुर.
२५१) शेठ नाथारंगजी गांधी मुंबई.
२०४) सेठ गुरुमुखरायजी सुखानंदजी"
२०१) सेठ दयाराम ताराचंदजी. पूना.
२०१) दोशी हीराचंद नेमचंद. बंबई.
१०१) गौतम जयचंदजी. नीमगांव.
१०१) लाला पदमचंद भूरामल, बंबई.
१०१) लाला जयंतीप्रसादजी सहारनपुर.
१०१) देवचंद धनजी, शोलापुर.
१०१) रामचंद शाकलचंदजी शोलापुर.
१०१) श्रीपंचान् बीसाहुमड़, फलटण.

१०१) सेठ लक्ष्मीचंद केवळचंद, फलटण.
५१) मेहता सखाराम मोतीचंदजी, अक्कलकोट
५१) शाह फूलचंद खेमचंद, भोंवार.
५१) रावजी पानाचंद, इंडी.
५१) पानाचंद रावकरण, कुंभारी
५१) जादवजी धनजी, इंडी.
५१) चंपालालजी झाजरी, इंदोर.
५१) गुलाबचंद खुशालचंद, इंडी.
५१) नाना बिण भीमणा, ,,
५१) रायापा पद्मापा. ,,
५१) दोशी कस्तूरचंद हेमचंद, आकलूज.
३१) लाला प्रभुदयालजी, मुंबई.
३१) प्रेमानंद नारायणदासजी, ,,
३१) छगन धनजी, भावनगर.
२५) हजारीलालजी सोनी, कानपुर.
२५) चुन्नीलाल जवेरचंदजी. मुंबई.
२५) पंचमहाजन मेड़द-हः गांधी जीवणराम गंगाराम
२५) तलकचंद मोतीचंदजी, ईडर.
२५) हरलाल चुन्नीलाल, काकमठाण.
२५) निहालचंद गिरधरलाल प्रतापगढ.
२५) शा. अमरचंद कपूरचंद, मेंदरगी.
२५) बाबू उमरावसिंहजी, आबूरोड.
२५) सखाराम जयराम सैतवाल, सीवर.
२५) श्रीपंच महाजन, दहीगाव.
२५) श्रीपंचमहाजन, वर्धा.
२५) गांधी कस्तूरचंद आणंदलाल, प्रतापगढ.

११७२०)

दिगम्बर जैनपारितोषिक भंडार-का चंदा.

१२०) शेठ हरमुखराय अमोलकचंदजी.
१२०) शेठ हरीभाई देवकरण, शोलापुर.
१२०) शेठ मोतीचंद प्रेमचंदजी
१२०) बस्ता खुशाल?
६०) फूलचंद हरीचंद, इंडी.
५) रामापा विठापा पांढर, इंडी.
११) भाई गोविंदलालजी, नयानगर.
१०) भाई गिरधरलालसूरजमल, कसार.

५६६)

इसके अतिरिक्त शेटफलके पंचोंकी तरफसे शा० देवचंद नानचंदजीने ५१) रु० दिगम्बर जैन उपदेशक भंडार बंबईमें देना कबूल किया.

उपदेशक सभा

पाठक महाशय! इस वार्षिकोत्सव पर ३ उपदेशक सभा भी बडी धूमधाम के साथ हुई. उन की भी संक्षिप्त व्यवस्था प्रगट की जाती है.

प्रथम उपदेशक सभा—

मिती आसोज सुदी ७ शनिवार की रात्रिको हुई जिसमें पं० गोपालदासजी की प्रार्थना और सेठ हीराचन्दजी नेमचन्दजीके अनुमोदनसे श्रीमान् राजा बहादुर श्री दीनदयालजी साहिबने सभापतिका आसन सुशोभित किया था. जिस में प्रथम ही श्रीमान् पंडित बलदेवदासजी कलकत्ता निवासीने मिथ्यात्व, अन्याय

और अभक्ष का त्याग करना ही सुधर्म है इत्यादि युक्तिपूर्वक प्रतिपादन करके मिथ्यात्व और विशेष करके अभक्ष्य त्यागके विषयमें सुविस्तृत व्याख्यान दिया. अभक्ष्य पदार्थोंका स्वरूप बहुत विस्तारसे कहा.

तत्पश्चात् भाई गोपालदासजीने इसी विषय को पुष्ट करके देश देशान्तर के आयेहुए भाइयोंको धन्यवाद दिया और रविवार के दिन की कार्रवाइयोंका ब्योरा सुनाया. तत्पश्चात् धन्नालालजी काशलीवालने व्याख्यान दाता को धन्यवाद दिया. तत्पश्चात् सभापति साहिबने व्याख्यानदाता को व समस्त सभासदोंको धन्यवाद देकर जयध्वनिके साथ सभा विसर्जन की.

दूसरी उपदेशक सभा—

मिती आसोज सुदी १० की रात्रिको ८ बजेसे प्रारंभ होकर १० बजे तक हुई. जिसमें प्रथम ही पं० गोपालदासजी को सभापति के आसन ग्रहण करने की प्रार्थना की गई. तो उन्होंने स्वीकृत करके "यो विश्ववेद्यवेद्यं" इत्यादि श्लोकसे मंगलाचरण करके सभाका प्रारंभ किया. तत्पश्चात् वर्धानिवासी नेमचंद्र नारायणजी चौड़े ने सुख के विषयमें व्याख्यान देना प्रारंभ किया. जिसमें प्रथम ही अपनी लघुता प्रगट करके सुखका उपाय रागद्वेषका छोड़ना, समस्त परिग्रहका त्याग करना संयम पालना, पंच परमेष्ठीका स्मरण आदिको सुखका कारण उदाहरण देकर बताया.

तत्पश्चात् नयेनगर निवासी भाई गोविंदलालजीने प्रभावनांगके विषयमें कहकर इस रथोत्सव और वार्षिकोत्सवसे इस मुम्बई शहरमें एक महा प्रभावना प्रगट कर दी. जिसकेलिये रथ भेजनेवाले सभा और मेलेमें पधारनेवाले भाइयोंको धन्यवाद देकर इसी प्रकार प्रतिवर्ष प्रभावनांग के प्रगट करते रहने की प्रेरणा की.

तत्पश्चात् गांधी रामचंद्र नाथाजीने प्रभावनांग के विषयमें कहकर विद्या की उन्नति करनेको ही मुख्य प्रभावना कहकर विद्योन्नति करनेकी प्रार्थना की. फिर संस्कृत जैन विद्यालय और पारितोषिकका चिट्ठा सुनाया जिससे अनेक भाइयोंने अपने नामसे द्रव्य संख्यायें लिखवाई.

तत्पश्चात् बम्बई निवासी भाई फूलचंद माणिकचंद चौकसीने (जो कि १४ वर्षकी उमरका है) प्रान्तिक सभाके मेम्बर बनने की इच्छा प्रगट की. परंतु मिस्टर पानाचन्द रामचन्द व गांधी रामचन्द नाथाजीने सभा की नियमावलीके नियम नं. ६ के विरुद्ध बताकर सभासद न बनानेकी सम्मति प्रगट की. जिससे उक्त भाईकी प्रार्थना ना मंजूर हुई.

तत्पश्चात् सेठ हीराचन्द नेमचन्दजीने सेठ हीराचन्द गुमानजी जैन बोर्डिंग स्कूलकी प्रशंसा करके पं० टोडरमलजी आदि विद्वानोंके प्रभावसे ही धर्म की प्रभावना इस भारतवर्षमें हुई, इत्यादि

युक्तिपूर्वक कहकर संस्कृत विद्यालयका पाठशाला बढ़ाने की प्रार्थना करी.

तत्पश्चात् श्रीमान् राजा बहादुर श्री जैनदयालजी साहिबने उक्त भाई फूलचंद माणिकचन्द को सभासद करने की प्रार्थना की और सेठ हीराचंद नेमचंदजीने अनुमोदन किया तथा पं० बल्देवदासजी कलकत्तावालोंने हमारे जैनधर्ममें ८ वर्ष के लड़केको केवलज्ञानकी प्राप्ति होना कहा है. तो इस १४ वर्षके लडकेको नाबालिग समझना शास्त्रविरुद्ध है, इत्यादि कहकर अनुमोदन किया तो फिर समस्त सभासदोंकी राय पलटनेसे उस लड़के को सभासद बनाना मंजूर किया गया.

तत्पश्चात् पं० बलदेवदासजीने जैनग्रन्थोंके पढे बिना सम्यग्दर्शनादि प्राप्त नहिं होते, अतः इन ग्रन्थोंके पढानेका प्रयत्न किया जाय. इनके पढानेका कारण विद्यालय ही है. जैपुरनिवासी अमरचंदजी दीवान की उदारता की प्रशंशा कर के अनेक युक्तियोंसे पारमर्थिक उदारता में खर्च कम करते हैं उन की भूल बताई और अनेक प्रकारसे विद्योन्नतिमें द्रव्य लगानेकी प्रेरणा की. फिर भूधर विलासके कवित्तोंसे सात विशनका स्वरूप समझाया, जिसमें मदिराके विषयमें तंबाखू हुक्का और अफीमकी खूब ही निंदा की. जिसपरसे रामचंद्र नाथाजी आदि ने तंबाखू खानेका त्याग किया.

तत्पश्चात् सभापति साहिबने निश्चय और व्यवहार प्रभावनाका लक्षण शास्त्रीय प्रमाणसे कहकर विद्योन्नतिको ही मुख्य प्रभावना बता करके शास्त्रस्वाध्यायकी प्रतिज्ञा करनेकेलिये प्रार्थना करी. जिसपरसे अनेक भाइयोंने शास्त्रस्वाध्यायकी प्रतिज्ञा करी. फिर जयकारेकी ध्वनिके साथ १० ॥ बजे सभा विसर्जन हुई.

तीसरी उपदेशक सभा.

मिती आसाज सुदी ११ रात्रिको ८॥ बजेसे तीसरी उपदेशक सभा प्रारंभ हुई जिसमें सभापतिका आसन श्रीमान् पं० बलदेव दासजीने सुशोभित किया तत्पश्चात् इंडी निवासी भाई सखाराम विद्यार्थीने (जोकि १२ वर्षकी उमरका है) बहुत ही योग्यताके साथ संस्कृतादि प्राचीन विद्याओंकी आवश्यक्ता बताकर संस्कृत जैन विद्यालयके स्थापकोंको धन्यवाद दिया. इस लड़केकी कहन शक्ति बहुत अच्छी है यदि इसको कई आवश्यकीय जैन ग्रन्थ पढाकर व्याख्यान देनेकी विद्या पढाई जाय तो कालांतरमें यह एक उत्तम उपदेशक हो सक्ता है.

तत्पश्चात् पंडित धर्म सहायजी अध्यापक जैनपाठशाला आकलूजने अनेक प्रकारकी युक्तियें और दृष्टान्तोंसे सिद्ध किया कि वर्तमानमें जिनधर्मसम्बन्धी जितने कार्य हैं, उनमें सर्वोत्तम और सबमें पहिले ज्ञानोन्नति करना है. ज्ञानके बिना मनुष्य पशुसे अधिक या बड़ा नहीं है. इस कारण प्रत्येक जैनी मात्रको सबसे पहिले ज्ञानोन्नति करनेका उपाय करना चाहिये.

तत्पश्चात् पं. गोपालदासजीने लार्ड नार्थकोटकी कृपासे हमारे समस्त धर्म-कार्य निर्विघ्नतया सिद्ध हुए, इसकारण हर्ष-प्रकाशक एक तार कल दिन उनकी सेवामें भेजा जाय ऐसा प्रस्ताव पेश किया. समस्त सभासदोंकी करतल ध्वनिरूपी सम्मतिसे यह प्रस्ताव पास हुआ.

तत्पश्चात् सेठ प्रेमचन्द मोतीचन्द मंत्री सरस्वती भंडारने पतितोद्धारिणी श्रीमती जिनवाणीके जीर्णोद्धार करनेकी प्रार्थ-ना करी. जिसमें कहा कि जैन ग्रन्थोंका इंगलेंड जर्मनवाले महान आदर सत्कार करके पढ़ते पढ़ाते और अपनी २ भाषा-ओंमें अनुवाद करके प्रचार करते हैं. उन-महा कल्याणकारक जैन ग्रन्थोंका जगहँ २ के भंडारोंमें जो कुछ कीड़ोंके द्वारा हाल हो रहा है. सो वचन अगोचर है उनकी तरफ हमारे जैनी भाई दृष्टि तक भी नहीं देते, सो यह कितनी अविनय और हमारी भूल है. देखो, ईडरके भंडार में उन महान ग्रन्थोंकी क्या दुर्दशा हो रही है इत्यादि कहकर जिनवाणीके जीर्णोद्धार करने की सबसे अधिक आवश्यक्ता प्रगट करी.

तत्पश्चात् जैनी बालकोंको जिन ग्र-न्थोंकी शिक्षा देनेकी आवश्यक्ता प्रगट करके सूरतकी पाठशाला की उत्तमता व लड़कियोंके पढानेकी प्रशंसा करके उनको धर्मसम्बन्धी पूर्ण शिक्षा देनेकी आवश्यक्ता प्रगट की.

तत्पश्चात् यह कहा कि यदि कहीं कै धर्म्मात्मा जैनीभाई कमसे कम ५००) रु की सहायता देवें तो ईडरके श्रुतभंडा[र] का जीर्णोद्धार हो सक्ता है. अर्थात् पां[च] सात आलमारियें खरीद कर गत्ते वेष्ट[न] लगाकर उनमें यत्न से रक्खे जा सक्ते [हैं] फिर कोई भाई किसी ग्रन्थकी प्रति उ[त]रवाना चाहेंगे तो प्रति भी उतरवा क[र] भेजी जाया करेगी. यह बात ईडरके पंच भाई कबूल करते हैं इत्यादि कहकर जिन[-]वाणी जीर्णोद्धारकी प्रेरणा करके अपन[ा] व्याख्यान पूर्ण किया.

तत्पश्चात् शोलापुर निवासी सेठ बालचन्द रामचन्दजीने अपनी लघुता प्रकाश पूर्वक मराठी भाषाकेद्वारा स[-]त्यव्रतके विषयमें प्रमाण और दृष्टान्तों से बहुत अच्छा व्याख्यान दिया.

तत्पश्चात् सभापति साहिबने दूसरे दि[-]नका प्रोग्राम (कार्यक्रम) सुनाकर मंग[-]लाचरण पूर्वक ११ बजे सभाका विसर[्]जन किया.

रथयात्रा महोत्सव.

पाठक महाशय! जिसप्रकार स[-]भा का काम धूमधामके साथ हुवा, उस प्रकार रथयात्राका महोत्सव भी अपूर्व हो गया. बंबईमें कोई यह नहिं जानता था कि यहांपर दिगम्बरी जैनी भी रहते हैं सो इस रथयात्रा और सभा पाठशाला के महोत्सव होनसे गली २ का मनुष्य जानने लग गया कि दिगम्बरी जैनी
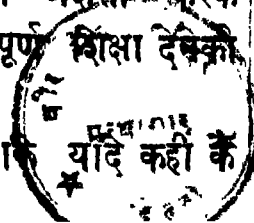
क्तिराई भी बडे उदार व धर्मोत्साही हैं. चहांबई का ऐसा कोई भी अखवार नहिं तागा कि उन पांच दिनोंमें प्रतिदिन इन दीनवहोत्सवोंकी प्रशंसामें कालमके कालमे वेद र छपे हों. मेरठके व खुर्जेके कलका गर्थनोडोंके रथको देखनेकेलिये सवेरेसे रा- त्रीने त्रको १२ बजेतक झुंडके झुंड स्त्रीपुरुष रासमाधवबागमें आते थे. जलेबके समय ८ वणी बाजारमें और मकानोंपर हजारों से हेनुष्य इकठे हुए थे. अडाई द्वीपका वि केकोराओंन गीत नृत्य व संगीत, बडी धूम- धामके साथ हुवा. बाहरके भाइयोंके प- धारनेकी उम्मेद बहुत कुछ थी परंतु अ- नुमान ५०० से अधिक नहिं आये. इनमें भी तीन हिस्से दक्षिणी व गुजराती भाई थे जिनकी मिजमानी वगेरहका प्रवंध श्रीमा- न् सेठ राजाबहादूर दीनदयालजी सेठ मा- णकचंद पानाचंदजी सेठ हीराचंद नेमचं- द व गांधी नाथारंगजी आदिने किया था.

सारांश यह कि दिगंबर जैनप्रांतिकसभा- का वार्षिकोत्सव, संस्कृत जैनविद्यालयका जन्मोत्सव, उपदेशक सभा और रथयात्रा महोत्सव ये सब ही उत्सव जैसे होने चा- हिये वैसे हो गये और दिगम्बर जैन धर्मकी प्रभावना भी बहुत कुछ हुई. स्वेता- म्बरी भाइयोंके कई मुखिया भाइयोंने मुम्बई समाचारमें दिगंबरी भाइयोंके का- र्योंकी प्रशंसा छापी.

हमारे राजाबहादुर साहबने दो तो दोनों रथोंके और दो दो फोटो दोनों जलेबोंके लिये. तथा रास्तेमें अनेक फोटोग्राफरोंने तथा चलते फिरते स- जीव चित्र बतानेवालोंने भी चलते हुये रथ का फोटो लिया जो कि दो दो पैसे में साक्षात् दिखाया जाता है.

इन सब उत्सवोंके अपूर्व होनेका प्र- थम कारण तो मेरठ व खुर्जे का रथ है जिसकी देशी कारीगरी और कलका चलना तथा लकडीके बने सफेद घोड़ोंका सजीवसदृश दीखना मनुष्यके मनको अत्यन्त आकर्षण करता था.

दूसरा कारण— सिकन्दराबाद (है- दराबाद) के रईस श्रीमान् राजाबहादुर दीनदयालजी साहिब हैं ये महाशय इस मेलेके प्रायःकुल कामों में बडी सहायता करते थे. खास करके सप्तमी की जगहँ अष्ट- मीको और एकादशी की जगहँ द्वादशीको पुलिसका सरकारी हुक्म बदलवाने आदि इनहींके परिश्रमका फल है.

तीसरा कारण— उक्त महाशयके सुपुत्र राजा धर्मचन्दजी साहिब हैं. कारण इस बम्बई सरीखे शहरमें बम्बई प्रान्तकी महासभाके सभापति होनेलायक महाशय सिवाय आपके और कोई भी नहीं दीखे. सभाका तार जाते ही समस्त गृहकार्य छोड़ तुरन्त ही आकर अनाथ सभा और जै- नमंडलीको सनाथ किया और सभापतिके स्थानपर विराजकर जो कुछ सभा और दि- गम्बर जैनसमाजको सुशोभित व प्रभावयुक्त किया है, वह देखनेसे ही बन आता है. यद्य

कि यहांके बडे २ रईसोंको इनसे परिचय था. परन्तु यह नहिं जानते थे कि ये महाशय दिगम्बरी जैनसमाजके ही सिरताज हैं और धर्म्मकार्योंके चलाने और व्याख्यान देनेमें ऐसे बढे चढे हैं. इस कारण बम्बईके जैनी भाई इनके बडे ही कृतज्ञ हैं.

चौथे—शोलापुरके श्रीमान् श्रेष्ठिवर्य्य रावजी नानचन्द रावजी कस्तूरचन्द, हरी भाई देवकरण, हीराचन्द नेमचन्द तथा नागपुरके संघई गुलाब साव रिखबसावजी, एलचपुरके श्रीमान् सेठ लालासा मोतीसा के भाणेज नाना सावजी तथा वर्धाके रा. रा. चकाराम पेकाजी रांडे, नेमचन्द नारायणजी चांडे, सहारनपुर निवासी लाला जयंतीप्रसादजी, कलकत्ता निवासी पं० बल्देव दासजी तथा सूरत आमोद बोरसद नयानगर अजमेर इन्दौर दिल्ली खानदेश आदिके बड़े २ सद्गृहस्थोंका पधारना और हरएक धर्मकार्यमें अग्रगण्य होकर सहायता करना है.

पांचवाँ कारण—माधवबाग धर्मशालाके विशाल हॉलके मालिक शेठ हरकिशुनदास नरोत्तमदास, त्रिभोवनदास वर जीवनदास, भगवानदास नरोत्तमदास, जगमोहनदासवरजीवनदास, साहिब हैं कि जिन्होंने इस धर्मोत्सवके अर्थ अपना कुल मकान बडे हर्षके साथ बिना भाड़के अर्पण किया. जिसकेलिये यहांकी दिगम्बर जैनसमाज बहुत ही आभारी है.

छट्ठा कारण— यहांके पुलिस कमिश्नर साहिब हैं कि जिनकी कृपादृष्टिसे सप्तमीका अष्टमी और एकादशीका द्वादशी दिनका प्रबन्ध हुआ और जिस २ सड़कपर किसीकी भी रथयात्रा नहिं होती थी, उन सड़कोंपर रथ ले जानेकी आज्ञा तथा जिस बड़ीसड़कपर किसीको भी बाजाबजानेका हुक्म नहीं है, उसपर बाजा बजानेका हुक्म दिया तथा जलेबका ऐसा उत्तम प्रबन्ध किया था कि जिसकी प्रशंसा करना वचनातीत है. इसलिये हम बम्बईके पुलिस कमिश्नर साहिबको हृदयसे कोटिशः धन्यवाद देकर चिरकृतज्ञ बनते हैं.

सातवां कारण—यहांकी रथयात्रा महोत्सव प्रबंधकारिणी सभा और उसकी मातहत स्वागत कमेटी है. कि जिनका काम बड़ी योग्यताके साथ हुआ और विशेषकर स्वागत कमेटीके मंत्री लल्लूभाई प्रेमानन्द, पानाचन्द रामचन्द, जीवराज गौतमचन्द, प्रभुदयालजी कानपूरवाले, मिश्रीलालजी नयेनगरवाले आदि भाईयोंने बहुत ही परिश्रम किया अहोरात्र प्रबन्ध करनेमें खाने पीने तककी भी सुधि न रही. जिसके लिये इन महाशयोंको विशेषतया धन्यवाद है.

आठवां कारण.— रथ हांकनेवाले और रथमें श्रीजी तथा जिनवाणीका आश्रय लेकर खवासीमें बैठनेवाले भाइयोंका साहस है. क्योंकि प्रथम रथयात्रा में २५१ रु० देकर हरसुखराय अमोलकचन्दजी वालोंकी तरफसे राय बहादुर

सेठ चंपालालजी नयेनगरवालोंके सुपुत्र रामस्वरूपजी साहिब श्रीजीके रथके सारथी बने थे और ५५ रु. देकर लाला बैजनाथजी साहिब हाथरसवाले श्रीजीके पीछे खवासीमें बैठे थे और २५ रु. देकर लाला प्रभुदयालजी, इक्कीस २ रुपये देकर सेठ माणिकचन्द पानाचन्दजी व हरमुखराय सुखान्दजी व ११ रु. देकर लाला जोरावरमलजी हाथरसवालोंने श्रीजी पर चँवर ढोरा था. इसी प्रकार मेरके रथपर श्रीमती तीन लोकके जीवोंका हित करनेवाली जिनवाणी (सरस्वती माता विराजती थीं. उसकी खवासी तथा चँवर ढुलाने तथा हरमुखराय अमोलकचन्दजी व जुहारमल मूलचन्दजी की दुकान के सन्मुख श्रीजीके रथके आनेसे टंक ग्यारह २ रुपया आये थे. इत्यादि खैरीज आमदनी अनुमान १२५) के हुई. किन्तु दूसरी जलेबके समय १००१.) रुपये देकर एलिचपुर निवासी श्रेष्ठिवर्य्य लालासा मोतीसाकी तरफसे ताना सावजी तो श्रीजीकी खवासीमें बैठे थे और ३०१) रु० देकर नागपुर के संघी गुलाबरावजी रिखबसावजीकी तरफसे उनके जंवाई नमासावजी सारथी बने थे. और ४०१ रु० देकर तो सेठ बालचन्द उगरचन्द शोलापुरवालोंने और ३०१ रु. बैजनाथजी हाथरसवालोंने श्रीजीपर सनतकुमार माहेन्द्रकी जगह चँवर ढोला था. इनके सिवाय १०१) रु. देकर सेठ माणिकचन्द पानाचन्दजी १२५ दे कर सेठ गुरुमुराय सुखानन्दजी, व ४१ रु. देकर बालचन्द उगरचन्दजी २५रु. देकर पदमचन्द बैनाड़ाने श्रीजीपर तथा जिन वाणी पर चँवर ढोरा था. और १५०) खैरीजमें चँवर ढुलाई के और ६२ रु. सेठ हरमुखराय अमोलकचन्द व हरमुखराय गोविन्द रामजीकी तरफसे रथकी भेटके आये थे. इस प्रकार ३०५१।)। रु. इन दोनों जलेबोंमें इन महाशयोंने दिये जिससे जैनसमाजकी उदारता की बहुत ही प्रशंसा हुई.

नवमां कारण.—यह है कि दिल्लीके भाइयोंने चंदोये ध्वजा छत्र चँवर आदि अनेक प्रकारके सुवर्णरूपामयी उपकरणोंसे सहायता करके वचनातीत अपूर्व वात्सल्य दिखाया. इस कारण हम इन्हें हृदय से जितने धन्यवाद दें थोड़े हैं.

दशवां कारण.—मेरठके समस्त पंच व खास करके लाला पारस प्रसादजी हैं कि जिन्होंने तारके पहुचते ही रथको रवाने कर इस प्रभावनांगके रक्षक हुए.

ग्यारहवां कारण.—यहां पर संस्कृत जैन विद्यालयको चिरस्थाई करनेकेलिय धर्मात्मा भाइयोंकी उदारता है कि जिससे बातकी बातमें हजारोंका चिट्ठा होगया. जिसकेलिये द्रव्यदाता महाशयोंकी जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है. इन २ कारणोंके प्रत्यक्ष देखनेसे सोलह स्वप्नोंमें से एक स्वप्नका फल जो " दक्षिण दिशामें

ही धर्म रहेगा, " ऐसा वचन है, वह वास्तवमें ठीक जंचता है और हमको पूर्णतया आशा है कि जो कुछ विशेष उन्नति करेंगे और उदारताका परिचय देंगे तो उनमें बम्बई प्रान्तके धर्मात्मा भाई ही अग्रगण्य रहेंगे.

अब मैं इस रिपोर्टको समाप्त करते समय जो एक बात रहगई है उसे और लिखे देता हूं कि इस दिगंबर जैन प्रान्तिकसभा बम्बईका अगला अधिवेशन यदि किसीने आमंत्रण किया तो वहांपर, नहीं तो सं १९५९ माहवदी ३० मारूको स्तवनिधि सिद्धक्षेत्रके मेलेपर होगा ऐसा सभाका हुकुम है. परन्तु हमने सुना है कि शोलापूरके सेठ रावजी नानचन्दजी वगैरह खुर्जेके सदृश रथ बनाकर अगली सालमें एक रथोत्सव करेंगे. और उसी रथोत्सवके समय इस सभाका वार्षिकोत्सव भी करावेंगे. यदि यह बात सत्य है तो अबका उत्सव इससे भी कई गुणा बढकर होना संभव है. आशा है कि यह महोत्सव शोलापूरमें अवश्य ही होगा.

जैनी भाइयोंका दास—

पन्नालालजैन बंबई.

महासभाके दिगंबरजैनपरीक्षालयकी पढाईका क्रम.

समस्त पाठशालाओंके प्रबंधकर्त्ता और पाठक महाशयोंसे प्रार्थना है कि अबकी साल महासभाके अधिवेशनपर पढाईके क्रममें कुछ रदबदल होकर नीचे लिखा क्रम पास हुवा है सो अब समस्त जगहकी जैनपाठशालाओंमें इसी क्रमानुसार पुस्तकें पढानी चाहिये.

बालबोध परीक्षाका पाठक्रम.

कक्षा.	धर्मशास्त्र.	व्याकरण.	गणित.
प्रथमखंड ६ माह.	नमस्कारमंत्र दर्शन भाषा वर्तमान चौवीसी.	जैन बालबोध प्र. भाग पूर्वार्द्ध.	३० तक पहाड़े.
द्वितीयखंड ६ माह.	इष्ट छत्तीसी और दो मंगल	जैन बालबोधक प्रथम भाग पूर्ण.	पहाड़े पूर्ण.
तृतीयखंड ६ माह.	भक्तामर व दर्शनाष्टक.	हिन्दीकी द्वितीय पुस्तक.	जोड़ बाकी.
चतुर्थखंड ६ माह.	नित्य पूजा.	हिन्दी भाषाका व्याकरण (सुभाकरकृत.)	गुणा भागसाधारण.
पंचमखंड १ वर्ष.	संस्कृत प्रवेशिका.	उपक्रमणिका अथवा शब्दरूपावली, धातुरूपावली, समासचक्र, संधिज्ञान.	मिश्र चारों रीति.

प्रवेशिका परीक्षाका पाठक्रम.

कक्षा.	धर्मशास्त्र.	व्याकरण.	काव्य.	न्याय.	गणित.
प्रथम खंड- १ वर्ष.	रत्नकरड श्रा. सान्वयार्थ	कातंत्र अथवा लघुकौमुदी अजंत नपुंसकलिंग.	अमरकोष प्र. कांड मूल.	...	गणित प्रभाकर दूसरा भाग.
द्वितीय खंड- १ वर्ष.	द्रव्यसंग्रह तत्वार्थ सूत्र-सार्थ.	कातन्त्र पूर्वार्द्ध व लघु-कौमुदी अदादिगण.	तृतीय कांड मूल.	...	गणित प्रभाकर तीसरा भाग.
तृतीय खंड- १ वर्ष.	स्वामी कार्तिकेयानु प्रेक्षा अर्द्ध २२४ गाथा द्रव्य का कथन समाप्ति.	कातन्त्र १० विभक्ति व लघुकौमुदी १० गण.	३ सर्गचन्द्रप्रभ काव्य.	परीक्षा मुख मूलसाथ.	महावीरी वि-षय अर्द्ध.
चतुर्थ खंड- १ वर्ष.	स्वामिकार्तिकेयानुप्रेक्षा पूर्ण.	कातन्त्र पूर्ण, लघुकौमुदी पूर्ण.	९ सर्गचन्द्रप्रभ काव्य.	आलापपद्धति	महावीरी पूर्ण.

पंडित परीक्षाका पाठक्रम.

कक्षा.	धर्मशास्त्र.	व्याकरण.	काव्य.	न्याय.	कैफियत
प्रथम खंड १ वर्ष	सर्वार्थसिद्धि ५ अध्याय.	सिद्धान्त कौमुदी स्त्री प्रत्यान्त.	९ सर्ग धर्मशर्माभ्यु-दय, वाग्भटालंकार.	न्यायदीपिका.	पंडित परीक्षाके विषयमें विद्यार्थीको अधिकार है कि धर्मशास्त्र के सिवाय एक विषय न्याय व्याकरण साहित्य में कोई सा ले सकता है.
द्वितीयखंड १ वर्ष.	सर्वार्थसिद्धि पूर्ण, द्रव्य-संग्रह, संस्कृत टीका पूर्ण.	सिद्धान्त कौमुदी कृदन्तान्त.	धर्मशर्माभ्युदय पूर्ण. जयकुमार सुलोचना नाटक पूर्ण.	प्रमेयरत्नमा-ला पूर्ण.	
तृतीय खंड १ वर्ष.	राजवार्तिकजी ४ अध्याय.	सिद्धान्त कौमुदी १० गण पर्यन्त.	छन्दो ग्रन्थ वृत्तरत्ना-कर नेमिनिर्वाणकाव्य	प्रमाण परीक्षा, आप्त परीक्षा.	
चतुर्थ खंड १ वर्ष.	राजवार्तिकजी पूर्ण.	,, पूर्ण.	अलङ्कारचिन्तामणि यशस्तिलकचम्पू २ आश्वास.	आप्तमीमांसा नयचक्र प्राकृत	वसुनन्दिकृत. देवसेनकृत.
पंचम खंड १ वर्ष.	पंचाध्यायी.	मनोरमाकारकान्त परिभाषेन्दुशेखर.	अलंकारचिन्तामणी पूर्ण, यशस्तिलक चम्पू पूर्ण.	प्रमेय कमल मार्तंड पूर्ण.	

कहिये !

"विद्यालयमें पढ़ावें किसको ?"

हमारी पवित्र उदार जैन जातिके धर्मात्मा धनाढ्य और दानी महाशय ! बाद जय जिनेन्द्र के प्रार्थना है कि इस मुम्बई शहरमें मुम्बई शोलापुर प्रान्तके धर्मात्मा भाइयोंकी कृपासे संस्कृत जैन विद्यालय खुल गया. जिसमें कि पंडित कक्षाके व्याकरण साहित्य न्याय और धर्मशास्त्रकी पढ़ाईका पूरा २ प्रबन्ध किया गया है. जिसमें जैनी विद्यार्थियोंको ३ वर्षमें, और काव्य व्याकरणके पढ़े हुए अन्यमती ब्राह्मणोंको १ वर्ष पढ़ाकर संस्कृतजैनपाठशालाओंमें धर्मशास्त्रादि पढ़ाने योग्य विद्वान् (अध्यापक) तय्यार किये जांयगे पाठक महाशय ! पश्चिमोत्तर प्रदेश गवर्नमेन्ट की कृपासे विद्वच्छिरोमणि श्रीमान् पंडित ठाकुर प्रशादजी शर्मा वैय्याकरणाचार्य व बम्बई निवासी साहित्याचार्य पं० जीवराम लल्लूरामजी शास्त्री सरीखे योग्य विद्वानोंका प्राप्त होना, विद्यालयकेलिये चिरस्थायी भंडारका स्थापन होना, सेठ हीराचन्द गुमानजी जैन बोर्डिंग स्कूलके मकान में विद्यालय व विद्यार्थियोंको रहनेका स्वच्छ हवादार मनोहर मकानका मिलना आदि समस्त प्रकारकी सामग्रीका एकत्र हो जाना, जैन समाज और जैनी विद्यार्थियोंकेलिये अहो भाग्य है. परंतु ऐसे विद्यालयमें **बिना विद्यार्थियोंके पढावें किसको** ? कोई महाश[य] यह कहें कि जब विद्यार्थी ही नही थे [तो] फिर विद्यालय किसलिये खोला ? [तो] इसके उत्तरमें हम कह सक्ते हैं कि, हम[ा]री जातिमें विद्यार्थियों का घाटा बि[ल]कुल नहीं है. किन्तु घाटा है तो यही कि जितने विद्यार्थी पढनेवाले हैं, वे स[ब] इतने असमर्थ हैं कि, मुंबईमें रहक[र] ८) या १०) महीना खर्च कर पढना त[ो] दूरही रहा बल्कि उनके पास— **मुंबईतक आनेका राहखर्च भी नहीं** है. हमारे यहां हालमें सिर्फ ४ विद्यार्थियों[के] भोजन वस्त्रके खर्च लायक १ वर्षके लि[ये] ४–५ आपसरीखे उदार महाशयोंने पारितोषक भंडारमें सहायता दी है. सो ही गणेशीलाल वगैरहको बुला लिये. अ[ब] यदि आप लोग एक वर्षकेलिये दश [२] रुपये महीने की सहायता करें तो हम इ[स]ी वक्त २०,२५ विद्यार्थियोंको व जैन पाठशालाओंमें अध्यापकी करनेवाले ब्राह्मण विद्वानोंको बुलाकर एक ही वर्षमें दश बीस जगह प्रवेशिका परीक्षाके समस्त जैनग्रंथ पढाने लायक पंडित तय्यार करके जगहँ २ की जैनपाठशालाओंमें अध्यापक भेज सक्ते हैं. जिससे कि बहुत थोडे खर्चमें हर एक कस्बे व शहरमें प्रवेशिका पाठशाला होनेसे हर एक जैनीका लडका सहजमें ही प्रवेशिकाके ग्रंथ पढकर महासभाके परीक्षालयमें परीक्षा देकर पास (जैनी) हो सक्ते हैं.

अय! जैन जातिके उदार धर्मात्मा ढ्य महाशयो! यदि आप इस दीन र पवित्र जैनजातिके सच्चे सहायक हैं, र इसको अविद्यारूपी अंधकारसे कालकर ज्ञानोन्नतिरूपी प्रकाशमें ला-र निजपरका कल्याण करना चाहते हैं, र हमारे जोडहुए उपायसे ही जैन र्म संबंधी विद्याकी वास्तवमें उन्नति मझते हैं तो इस प्रार्थनाको पढते ही मसे कम एक या दो विद्यार्थियोंकेलिये तक १०) रु० महीनेकी सहायता ना स्वीकृत कीजिये.

महाशय! आपके प्रतिवर्ष हजारों रुपये नेक व्यर्थ खर्चोंमें चले जाते हैं तो क्या सवासौ रुपये एक जैनी पंडित तय्यार रनेकेलिये खर्च करना आप सरीखे दार धर्मात्मा महाशयोंको कुछ कठिन ? नहीं २, कदापि नहीं.

आशा है कि इस प्रार्थनाके पढते ही पनी २ इच्छाओंसे शीघ्र ही सूचित रेंगे. क्योंकि विना विद्यार्थियोंके अ-ध्यापकोंके वेतनमें द्रव्य व्यर्थ ही खर्च आ जाता है.

जैनी भाइयोंका दास,

धन्नालाल काशलीवाल मंत्री.

विद्याविभाग दि. जै. प्रां. स. बंबई.

"विद्यार्थियोंको सुभीता."

हमारे यहां मुम्बईके संस्कृत जैन विद्यालयमें पढ़नेकेलिये जो असमर्थ विद्यार्थी पंडित परीक्षाकी पढ़ाई पढ़नेकेलिये आवेंगे उनको भोजन वस्त्रकेलिये प्रतिमास योग्यतानुसार ८-१०) तथा १२) रु० तकका स्कालरशिप (मासिक पारितोषिक) देनेके सिवाय बाकीके समर्थ असमर्थ समस्त विद्यार्थियोंका रहनेकेलिये सेठ हीराचंद गुमानजी जैन बोर्डिंग स्कूलके स्वच्छ हवादार कमरे, बेंच, कुरसी, टेबिल, पलंग लेम्प, दवात, कलम और रसोई करनेका स्थान दिया जाता है व इसके सिवाय इस बोर्डिंगमें एक स्टूडेन्ट लाइब्रेरी व एक जैन लाइब्रेरी है जिसमें अनेक प्रकारके पढनेयोग्य अंगरेजी, गुजराती, हिन्दी मराठीके पुस्तक अखबार मासिक पत्र रहते हैं तथा व्यायाम करनेकेलिये कसरतशालाका भी प्रबन्ध है. दर्शन स्वाध्याय करनेकेलिये चैत्यालय भी है. इसके सिवाय और २ भी आरामके व विद्याभ्यास बढानेके सामान बढाये जानेका प्रबन्ध होता ही रहता है. इस बोर्डिंगमें रहनेवाले विद्यार्थियोंको जो अंगरेजी पढते हैं उनको १ घंटे प्रति दिन धर्मशास्त्र और जो संस्कृत पढते हैं उनको १ घंटे अंगरेजी विद्या भी पढाई जायगी.

यह विद्यालय व बोर्डिंगका स्थान ऐसी खुली और हवादार जगहपर बना है कि जहांपर प्लेग वगैरह रोग होनेका भय कुछ भी नहीं है. अतएव समस्त जगहके जैनी विद्यार्थी (जो कि प्रवेशिका परीक्षाके तीसरे व चौथे खंडमें पास हो

गये हैं) इस जगहपर पढनेकेलिये आवेंगे तो बहुत ही सुभीता होगा और शीघ्र ही उच्च शिक्षा ग्रहणकर विद्वान् हो जांयगे.

परन्तु:—

जो विद्यार्थी मासिक पारितोषिक (स्कालरशिप) लेकर इस विद्यालयमें पढेंगे उनको नीचे लिखी शर्तें स्वीकार करना होंगी.

१ प्रत्येक विद्यार्थीको कमसे कम तीन वर्षतक विद्याभ्यास अवश्य ही करना होगा.

२ विद्याभ्यास करनेके पश्चात् विद्या विभागके मंत्रीकी आज्ञानुसार कमसेकम १५) रु. मासिक वेतनपर तीन वर्षतक उपदेशकी अथवा किसी भी पाठशालाकी अध्यापकीका कार्य्य करना पड़ेगा और पढनेकी अवस्थामें वा नौकरीकी अवस्थामें मंत्रीकी आज्ञाके बिना अन्य किसी भी प्रकारका धंधा करनेका अधिकार नहिं होगा.

३ यदि कोई विद्यार्थी तीन वर्षतक नौकरी न करना चाहे अथवा वर्ष दो वर्ष नौकरी करके इस शर्तसे छूटना चाहे तो पठनावस्थाके समय पारितोपिकमें जितने रुपये ग्रहण किये हैं उतने रुपये वापिस दे देनेसे नौकरी करनेकी शर्तसे छूट सक्ता है.

४ विद्यार्थी जैनी व भिन्नमती जो उच्च वर्णका होगा वही ग्रहण किया जायगा.

५ जो विद्यार्थी प्रवेशिका परीक्षाके तृतीय खंडके पढे हुए होंगे. अथवा तृतीय खंडके पढे हुए विद्यार्थियोंके स[...] श योग्यता रखनेवाले होंगे वे ही ग्र[...] किये जांयगे.

६ यदि विद्याविभाग व उपदे[...] विभागमें कोई जगहँ खाली न होगी [...] विद्याविभागके मंत्री किसीको नौकरी[...] शर्तसे छुट्टी देगा और वर्ष ६ महीने ब[...] फिर कहींपर आवश्यक्ता होगी तो मं[...] विद्याविभागकी आज्ञानुसार नौकरी कर[...] ही पड़ेगी.

इनके अतिरिक्त **विशेष नियम य[...]** है कि जो कोई अन्यमती ब्राह्मण व जैन[...] व्याकरण और काव्यके पढे हुए हैं औ[...] प्रवेशिका खंडके जैन धर्मसम्बन्धी को[...] भी ग्रन्थ पठित न हों. और जैन पाठशा[...] लाकी अध्यापकी करना चाहें तो उनको[...] भी उपर्युक्त शर्तोंके स्वीकृत करनेप[...] योग्य स्कालरशिप देकर ग्रहण कर सक्ते हैं. ऐसे विद्यार्थी तीन वर्षकी जगह एक वर्षमें ही मुख्य २ जैनग्रन्थ और सिद्धा[...] न्तोंका रहस्य बताकर प्रवेशिका जैन पाठशालाकी अध्यापकी करने योग्य बना दिये जांयगे.

विद्यार्थियोंका हितैषी,
पन्नालाल काशलीवाल,
मंत्री विद्याविभाग.

चिट्ठीपत्री.

बाहरकी आई हुई चिट्ठियोंके हम जुम्मेवार नहीं हैं.

जैन मित्रना अधिपती जोग,

जत लखवानी अरज एछे जे, नीचे लखेलो लेख अपना पत्रमां दाखल करशो.

अय! हमो ज्यारे गीरनार गया हता त्यारे जे धरमशाळामां उतर्या हता ते धर्मशाळामां हमो ज्यारे रसोई पाणी करीने तना सुइ गया त्यार पछी त्यांना चोकीदार के जेनुं नाम धरमसी हतुं ते रातना दश वागे अमारी पासे फानस लईने आव्यो. हमें तने पूछ्युं के तुं कोण छे? त्यारे तेणे कहुंके हुं चोकीदार छुं. पछी पाछो रातना दोढ वागे फानस वगर आव्यो, त्यारे हमे जरा खुंखारो कीधो, त्यारे पाछो चाली गयो. आ पछी हमे ज्यारे भर उंघमां पडया त्यारे गुपचुप आवीने सर्व वासण लइ गयो आ वावतनी ज्यारे हमारांमांथी एक खीमचंद नामनो माणस जाग्यो त्यारे खबर पडी. पछी अमोए धरमसीने बोलावीने पूछयुं तेणे कहुं के मने खबर नथी. पछी अमे कहुं के अमे पोलीसने खबर आपीए छीए. त्यारे एने कहुं के मुनीमने कहीने खबर आपो. ज्यारे मुनीम आव्या त्यारे मुनीमे कहुंके अमे घणी चोकासी राखीए छीए. पण अमे शुं करीये अमे कहुं के आ चोरी तमारा माणसोमांथी थई छे. त्यार पछी केतलीक तकरार थई अने मुनीम कहेवा लाग्याके तमारे जोइएतो तमारा वासणना पैसा अमारी पासेथी लो. पछी ज्यारे बे त्रण दहाडा पछी अमोए पैसा मांग्या. त्यारे कहुंके हुं पैसा भंडारमांथी आपीश. तमारे जोइएतो लो, नहीं तो पोलीसने खबर आपो. आवीरीते पहेला ज्यारे अमे पोलीसने खबर आपवा कहुं त्यारे ना कही. अने पाछळथी ज्यारे मुदत थइ गई त्यारे कहेवा लाग्यां के हवे पोलीसने खबर आपो. आ उपली बीनाथी मालम पडशे के कारखानाना आदमीओ बिलकुल भरोसो राखवा लायक नथी वळी ज्यारे अमे देरामां दर्शन करवा गया त्यारे कांइ पूजानी बीलकुल व्यवस्था हती नही. आ उपरथी सर्व जैनी भाइओने मालम पडशे के कारखानना वहीवाट करनाराओ कारखानांना बाबत केटली संभाळ राखेछे अने केवा विश्वासु माणस कारखानामां राखे छे.

फुलचंद वेणीचंद फलटण ठाकर
तथा शा. खीमचंद जयचंद,
हालकलंगडी.

विविध समाचार.

महासभाका छट्ठा अधिवेशन—मिती कार्तिक वदी ५–६–७ को चौरासी (मथराके) में बड़ा धूमधामके साथ होगया. जिसमें बहुत ही उत्तमोत्तम ११ प्रस्ताव पास हुये हैं. रिपोर्ट देरसे आनेके कारण इस अंकमें नहिं छाप सके, अबकी बार नयी कार्रवाई यह हुई कि जैनधर्मका इतिहास इतिहासकारोंने सर्वथा कुछका कुछ लिख मारा है और वह बहुधा सरकारी इस्कूलोंमें पढ़ाया जाता है जिससे जैनधर्मके विषयमें समस्त जनोंको कुछका कुछ श्रद्धान हो गया है. इस कारण सच्चा प्रमाणीक इतिहास बना कर प्रचार करनेके लिये एक **जैन इतिहास सोसायटी** बनी है. सो यह कार्य्य बहुत ही उत्तम हुवा है.

जैनधर्म वेदोंसे पहिलेका है या पीछेका—इस विषयमें मुम्बईके स्वेताम्बरी विद्वानों और वैष्णव विद्वानोंमें मुंबईसमाचार नामक दैनिकपत्रद्वारा बड़ा भारी खंडन मंडन हो रहा है. आशा है कि इसका फल जैनधर्मके लिये अच्छा होगा.

विधवा विवाहका विरोधः—अबकी मद्रास भाके अधिवेशन पर जैन यंग मैन्स एसोसियेशन का जल्सा भी धूमधामके साथ हो गया. उसमें बड़े वादानुवादके पश्चात् यह प्रस्ताव पास हुआ कि कोई भी जैनी विधवाविवाह न करे और न इससे हम दर्दी करे, बल्कि विवाह करनेवाले तो दरकिनार किन्तु इससे जो कोई हम दर्दी भी करेगे वे एसोसियेशनके मेम्बर नहिं हो सके. इसी प्रकार महासभाने भी प्रस्ताव नम्बर ३ में स्वीकृत करनेके सिवाय प्रस्ताव नं० ४ में लाहौरकी **जैन पत्रिका** इस घृणित विधवाविवाहको करनेवाली है और जिन धर्मके विरुद्ध लेखोंको प्रकाश करती है इस कारण इसके कोई भी जैनी ग्राहक न होवें" ऐसा भी स्वीकृत किया है.

उपदेशकका दौराः—दिगंबर जैन प्रान्तिक सभा मुम्बई की तरफ से वासी निवासी **पं. अनंतराज संघवे** उपदेशक होकर शोलापुर अहमदनगर जिलेमे ता. ३१ नवम्बरसे दौरा करने लगे. प्रथम सभा पूना शहरमें की जिसमें ब्रह्मचर्य्य और स्वाध्यायका उपदेश दिया. जिससे अनेक भाइयोंने स्वाध्यायादि करनेका नियम धारण किया कई भाइयोंने पाठशाला स्थापन की जाय तो सहायता देनेकी इच्छा प्रगट की. सभासद ५० थे. सभासद सेठ दयाराम तारा चन्दजी काशलीवाल हूए थे. तीन महाशय प्रान्तिकसभाके सभासद बने. दूसरी सभा श्रीगोंदा जिला अहमदनगरमें ता. ३-१२ को की, सभासद २५ और सभापति सेठ भागचन्द मोहनलालजी हुए थे. व्याख्यान सत्यधर्मका किया. सब भाइयोंने अष्टमूल गुण व स्वाध्याय करनेका नियम धारण किया. तीसरीसभा अहमदनगरके सैतवाल जिनमन्दिरमें ता० ५ दिसम्बरको की. जिसमें समासद ५० और सभापतिका आसन महादेव शंकरगडकरने स्वीकार किया. व्याख्यान शौचधर्म व स्वाध्यायका दिया. अनेक भाइयोंने अष्टमूल गुण व स्वाध्यायका नियम धारण किया.

निर्माल्यसंबंधी चर्चा—जैनमित्र नं. १-२ में जो चर्चा छपी थी, उसपरसे दिल्ली निवासी विद्वद्वर्य्य पंडित शिवचरणजीने तथा सूरत निवासी हरगोविंददास देवचंदजीने अपना २ विचार लिखकर भेजा है.

सम्मेदशिखरजीके मुकदमेकी अपील अभीतक दायर नहिं हुई है. परन्तु सुननेमें आया है कि स्वेताम्बरी भाइयोंकी तरफसे अपील होनेका प्रबंध हो रहा है.

बडनगर ज्ञानप्रकाशिनी जैनसभा—लिखती है कि हमको श्रीमान् पं० टोडरमलजीकृत श्रावकाचार मानकचंदजी कृत उपासिका श्रावकाचार और जयपुर निवासी पं. पन्नालालजी कृत विद्वज्जनबोधक बचनिका नय निर्णय सहित, इन तीन ग्रंथोंकी बडी आवश्यकता है. यदि कोई महाशय इन तीन ग्रंथोंको लिखवा कर भेजना स्वीकार करे तो हम सब खर्च भेज देंगे. उन भाईयोंको बडा पुण्याश्रव होगा.

सिवनीमें बिंबप्रतिष्ठा—सुना है कि सिवनीके सेठ पुरणसावजीकी तरफसे फागन बदि १२ को बिंबप्रतिष्ठा होगी और समस्त जैनी पंडितोंको बुलाकर एक बडी भारी सभा की जायगी. बहुत ठीक है.

ध्रुवविद्यालयभंडारखातेके द्रव्यकी प्राप्ति स्वीकार.

(मंगसर बदि १४ तक.)

१००१) शेठ माणिकचन्द पानाचन्दजी जौंहरी.
२०१) शेठ दयाराम ताराचंदजी—पूना.
५१) फूलचंद खेमचंदजी—भौंयार.
२५) हरलालजी चुन्नीलालजी कोकमठाण.
२५१) संगही गुलाबसावजी रिखबसावजी नागपुर.
२५) बाबू उमरावसिंहजी आबूरोड.
१०१) पं०महाजन बालाहमद फलटण.
२५१) शेठ नाथारंगजी गांधी बंबई.
२०१) शेठ गुरुमुखरायजी सुखानंद बंबई.
२५) श्रीपंचान् मेडद जि० शोलापुर.
१०१) लाला पदमचंद भूरामल बंबई.
३१) छगनधनजी भावनगर.
२५) तलकचन्द मोतीचन्द ईडर.
२५) चुन्नीलाल जवेरचन्द बम्बई.
१०१) लालाजयन्ती प्रशादजी सहारणपुर.

२४१५)

प्रार्थना.

हमने **दिगम्बरजैनविद्वज्जनसमाज**के सभासद बनानेके लिये अनुमान १०० पंडित महाशयोंकी सेवामें नियमावली व सभासदी का फर्म भेजा था. परन्तु अभी-

तक बहुत कम महाशयोंने फार्म भर कर भेजे हैं. इस कारण मैं उन महाशयोंसे प्रार्थना करता हूं कि कृपाकर अब शीघ्र ही अपना २ नाम भरकर भेजें क्योंकि हमारे पास कई जगहोंसे निर्णयार्थ प्रश्नपत्र आ गये हैं. आप लोग के सभासद बनें विना उनका विचारकर निर्णय कौन करेगा?

विद्वानोंका दास,

गोपालदास बरैया.

मंत्री दि. जै. विद्वज्जन सभा बंबई.

दूसरी प्रार्थना.

जिन २ महाशयोंने इस भंडारमें द्रव्यसहायता देना स्वीकार किया है और अभीतक रुपये भेजे नहीं उनसे प्रार्थना है कि कृपाकरके शीघ्र ही श्रीमान् सेठ माणेकचन्द पानाचंदजी जौहरी ठि. जौहरी बाजार नं० ३४० पो० कालबादेवी बंबईके पतेसे भेज देवें. क्योंकि विद्यालय खुल गया है. खर्च जारी हो गया है.

कोषाध्यक्ष.

तीसरी प्रार्थना.

इस सभाके अनेक सभासद महाशयोंने पहिले वर्षकी सभासदीकी वार्षिक फीसके रुपये अबतक नहिं भेजे हैं. और दूसरे वर्षके भी तीन महीने बीत चले. अभीतक किसी महाशयने रुपये नहीं भेजे, अतः उन महाशयोंसे (जिनोंने कि सभासदीकी फीस नहिं भेजी है) प्रार्थना है कि अपनी २ फीसके रुपये शीघ्र ही भेजनेकी कृपा करें. कारण यह सभा जो कुछ धर्मकार्य्य करती है वह सभासदोंकी फीसके सहारे ही कर रही है. सो [illegible] देवें.

प्रार्थी—

क्लर्क, दिगम्बरजैनप्रान्तिकसभा बंबई.

श्रीसिद्धवरकूटका मेला.

विदित हो कि यह सिद्धक्षेत्र (जो कि इन्दौर जिलेमें खेडीघाट स्टेशनसे पांच मीलपर रेवानदीके पश्चिम तटस्थ है और चक्रवर्त्यादि साढे तीन कोटि मुनि जहांसे मुक्ति पधारे है) का मेला बडे समारोहके साथ हरसालके माफिक मिती माह सुदी ५ से प्रारंभ हो, माह सुदी १५ पर्यंत वृहत मंडल पूजनविधान नृत्य गान सहित बडी धूमधामसे होगा. धर्मात्मा भाइयोंको ऐसे अवसरपर सर्वगृहकार्य्य त्याग अपनी मित्र मंडलीसहित पधारकर पुण्यका भंडार भरना चाहिये. आप सज्जनोंके पधारनेसे विशेष शोभा होगी. विशेषु किमधिकम्.

दर्शनाभिलाषी,

भूरजी सूरजमल मोदी,

इन्दोर.

एक पंथ दो काज.

प्रियबन्धुवर्गो! शीघ्रता कीजिये. ऐसा अवसर बारंबार हाथ नहिं आ सक्ता. दिन बहुतही थोडे रहे है अर्थात् मिती मर्गशिर सुदी ५ से १० मी तक श्रीसिद्धक्षेत्र कुंथलगिरि (जिसके अवलोकनमात्रसे अनेक जन्मोंके संचित किये हुए पापपुंज भस्म हो जाते हैं) पर एकही साथ दो जिन बिम्बप्रतिष्ठा होगी, और श्रीमतीदिगम्बरजैनप्रान्तिकसभाबम्बई भी मय उपदेशक महाशयोंके इस समारोह पर पधारेगी और विद्योन्नति, धर्मोन्नति, जाति उन्नति आदि अनेक प्रकारके धर्म कार्य होंगे. इसके अतिरिक्त यहां पधारनेवाले भाईयोंको बडाभारी सुभीता यह होगा कि मार्गमें "गज पंथाजी" सोनागिरजी पालीताना (शत्रुंजय) आदि क्षेत्रोंके दर्शन भी विनाप्रयास प्राप्त हो सक्ते हैं. अब कहिये महाशयो! एक पंथ दो काज हुए कि नहीं? वल्कि हमारी समझसे तो तीन काज सधते हैं.

यह स्थान शोलापुर जिलेके बारसी रोड स्टेशनसे १० कोसपर है. यहांपर गाडी वगैरहके प्रबन्धके सिवाय कितनेक भाई अगवानीकेलिये रहेंगे. जिससे यात्रियोंको किसी भी प्रकारकी तकलीफ नहिं होगी. आशा है कि हमारे जैनी भाई संघसहित इस महोत्सवपर अवश्य २ पधारेंगे.

सम्पादक.

Registered No. B. 288.

श्रीवीतरागाय नमः

जैनमित्र.

जिसको

सर्व साधारण जनोंके हितार्थ,

दिगम्बर जैनप्रान्तिकसभा बंबईने

श्रीमान पंडित गोपालदास बरैयासे सम्पादन कराकर

प्रकाशित किया.

जगत जननहित करन कँह, जैनमित्र वरपत्र ॥
प्रगट भयहु—प्रिय! गुहहु किन? परचारहु सरवत्र ! ॥

तृतीय वर्ष } पौष सम्वत् १९५८ विक्रम { अंक ४ था.

नियमावली.

१ इस पत्रका उद्देश भारतवर्षीय सर्वसाधारण, जनोंमें सनातन, नीति, विद्याकी, उन्नति करना है!

२ इस पत्रमें राजविरुद्ध, धर्मविरुद्ध, व परस्पर विरोध बढानेवाले लेख स्थान न पाकर, उत्तमोत्तम लेख, चर्चा उपदेश, राजनीति, धर्मनीति, सामयिक रिपोर्ट, व नये २ समाचार छपा करेंगे.

३ पत्रका अग्रिमवार्षिक मूल्य सर्वत्र डांकव्यय सहित केवल १) रु०

४ …म मूल्य पाये बिना यह पत्र किसीको भी नहीं भेजा जायगा.

५ नमूना चाहनेवाले)॥ आध आनाका टिकट भेजकर मंगा सक्ते हैं.

चिट्ठी व मनीआर्डर भेजनेका पता:—

गोपालदास बरैया सम्पादक.

जैनमित्र, पो० कालबादेवी बम्बई.

'कर्नाटक' प्रिंटिंग प्रेस, कांदेवाडी, मुंबई.

विविधसमाचार.

बंबईमें वेदमतावलंबियोंकी पंडित सभा—स्थान माधवबागपर वेद धर्मवालोंकी महासभा हुई. जिसमें दूर २ के पदवीधर पंडितगण २६ प्रश्नोंके निर्णयार्थ पधारे थे, फल तो कुछ भी नहीं निकला. परन्तु पंडितगणोंके सन्मान और दान दक्षिणामें त्रुटि न होने पाई.

गुरु विनय—बम्बईमें स्वेताम्बरोंके श्री पूज्य यति श्रीमान मोहनलालजी पधारे जिनके केवल स्वागतहीमें स्वेताम्बरी भाइयोंने हजारों रुपये फेंक दिये. स्वधर्मप्रीति इसहीको कहते हैं!

सरस्वतीभंडार ईडर—इस स्थानपर अनुमान एक हजार प्राचीन ग्रन्थ मौजूद हैं. जिनकी सम्हालकेलिये इस सभाकी ओरसे भाई पन्नालालजी बाकलीवाल भेजे गये हैं. यहांके भाई सुस्वभावी तथा भोले हैं. आशा है कि वे इस कार्य्यमें पूरी सहायता देंगे!

उपदेशकका दौरा—भाई रामलालजी उपदेशक इस सभाकी तरफसे गुजरात प्रान्तमें दौरा करने लगे. उन्होंने अभी ३ जगह, करमसद, सोजित्रा, बोरसदमें सभा की हैं. जिसकी रिपोर्ट हमारे पास आई है. उक्त भाई सा० का कार्य्य संतोषजनक है. रिपोर्ट संकीर्णता के कारण प्रकाश न हो सकी. आगामी अंकमें सविस्तर लिखी जावेगी.

हर्ष और धन्यवाद—श्रीसिद्धक्षेत्र बड़वानी जी (बावन गजा पहाड़) जहांसे इन्द्रजीत कुंभकरण आदि मुनीश मोक्षको पधारे हैं, निमाड़ जिलेमें है; यहांपर वैष्णव स्वेताम्बरीयोंसे इस बातपर अनुमान २० वर्षसे मुकद्दमा चल रहा था, कि यह क्षेत्र दिगम्बरियोंका नहीं. आखिरकार सत्यही की विजय हुई; श्रीमान महा राणीजी साहिब धनकुवरजी व पोलिटिकल एजंट व बड़े साहिब बेली सा० की असीम कृपासे इस सिद्धक्षेत्रपर अब हमारा पूर्ण अधिकार हो गया. इसके अतिरिक्त उपरोक्त न्यायाधीशोंने जो यहांपर प्रतिवर्ष मेला लगता था उसको फिरसे होनेकेलिये कहा! हम ऐसे सज्जन न्यायाधीशोंको बारंबार धन्यवाद देते २ भी तृप्त नहीं होते हैं. द्वितीय धन्यवादके पात्र बड़वानीजी क्षेत्रके प्रबंधकर्त्ता महाशय हैं. जिन्होंने इस कार्य्यमें तन, मन, धनसे सहायता कर विजय पाई.

"महावज्रपात."

शोक! शोक! महाशोक.

ऐसा कौन जैनी होगा जो सेठ दौलतरामजी डिपुटी कलेक्टरके यशस्वी नामको न जानता हो. भाइयों! आज वही जैनियोंके एक मात्र अवलम्बरूप राजा प्रजासे सन्मानित, निर्म्मल बुद्धिके धारक इस असार संसारमें नहीं है, पौष कृष्णा ८ बृहस्पतिवारके प्रातःकालही ८॥ बजे समाधि मरण कर गये हाय! हाय! हाय!

सनावदमें उत्सव यहांके सेठ लक्ष्मणजी चंपालालजीकी पत्नीने रत्नत्रय व्रत किया था. उसके पूर्ण होनेके उत्सवमें श्रीजीकी वेदी निकाली. अढ़ाई द्वीप पूजन दश दिन पर्यंत होकर कार्तिक वदी १० को कलशाभिषेक हुआ व इस समय १०००) रुपया धर्मार्थ देनेका संकल्प किया. इस उत्सवमें इन्दौरवाले श्रीमान सेठ हुकमचन्दजी भी पधारे थे. जिन्होंने धर्मके महत्वपर उत्तम व्याख्यान दिया तथा आतिशबाजी आदि कुरीतियां बन्द कराई. यदि इस अवसरपर कुछ विद्यादानमें भी द्रव्य दिया जाता तो क्याही अच्छा होता!

चेतावनी.

हमारे कितने एक ग्राहक महाशय आजतक बराबर जैनमित्र लेते रहे, और अखीरमें तकाजा पहुंचनेपर इन्कार करके सब दाम डकार गये. कितने एक वी. पी. का २ आना और भी दक्षिणामें लेकर चुप साध बैठे इसकेसिवाय इसका सफा १२) रुपया मासिक. एक पैसा का टिकट न लग सकनेके कारण बढ़ गया. जिससे यह पत्र बहुत घाटेमें पड़ता जाता है. हमारे भाइयोंको इसके ग्राहक बढ़ाकर सहायता करना चाहिये. जिससे यह अपने काममें सुस्त न होने पावे!

क्षमा प्रार्थना.

जैनमित्रकी रजिस्टरोंमें गड़बड़ होनेके कारण अंक ३ व ४ ठीक समयपर न निकल सके हमारे कितने एक ग्राहक महाशयोंने उलहने दिये हैं. उनसे हम क्षमा मागते हैं और आशा करते हैं कि अब आगामी अंक बराबर समयपर सेवामें पहुंचेंगे.

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

जगत जननहित करन कहँ, जैनमित्र वरपत्र ॥
प्रगट भयहु-प्रिय ! गहहु किन ?, परचारहु सरवत्र ! ॥ १ ॥

तृतीय वर्ष. } पौप सं. १९६८ वि. { अंक ४.

सम्पादकीय टिप्पणियां.

यद्यपि इस देशके शिल्पकारोंको पेट भर भोजन न मिलनेके कारण शिल्पविद्याका भारतवासियोंमें प्रायः अभाव ही सा दिख रहा है. तथापि अलमोड़ेके पंडित श्रीकृष्ण जोशीने यूरोपके भी विद्वानोंको चकित करनेवाला एक "भानुताप" नामक विचित्र यन्त्र हाल हीमें बनाकर भारती भाइयोंकी कीर्ति का द्वार खोला है. यह यंत्र ऐसा है कि जिससे आकाशमें विस्तृत सूर्य किरणोंका सौर कर पकड़ा जा सक्ता है. फिर उस गर्मीसे चाहे जिस तरह पर इच्छानुसार आग का काम निकाल लीजिये, रसोई बनाइये, गाडी चलाइये, और इच्छा हो तो तपनी तापिये, इत्यादि. कलकत्तेकी कांग्रेसमें जो प्रदर्शनी हुई थी, उसमें यह यंत्र दिखाया गया था.

कानपुरमें वैश्य कानफरेन्सकी जो बैठक हुई उसमें नीचे लिखे ढंग के कई मन्तव्य हुए. (१) विवाह का अनुचित खर्च घटाया जावे (२) थोड़ी उमरमें वर तथा कन्या का विवाह न किया जावे (३) लड़के और लड़कियां, दोनों को विद्या पढ़ाई जावे. शास्त्रीय व्यवस्थाके विरुद्ध कन्याका विलायतियोंकी देखादेखी रजस्वला होने पर विवाह करना हिन्दू विवाह नहीं है. बी. ए. चार वर्ष पढ़ना चाहिये, इन्ट्रेन्स परीक्षामें उमर की बाधा नहीं रहना चाहिये. हिन्दी भाषा को इन्ट्रेन्स परीक्षामें लेना चाहिये.

व्यवसाय की शिक्षा भी स्कूल कालेजोंमे मिलनी चाहिये. कानपूरकी शिक्षा सम्बन्धी सब ही बातें सरकारके लिये विचारने योग्य हैं. किन्तु हे वैश्यगण! आप भारतके प्राचीन व्यवसायी हैं. केवल सरकारही पर अपने बालकोंकी व्यवसाय शिक्षा का भार न दीजिये. आप स्वयं इस का प्रबन्ध कीजिये. आप की त्रुटिसे, व्यवसाय के सर्व नाशसे भारत सर्वस्वान्त हो रहा है. स्वयं उपाय कीजिये! स्वयं उपाय कीजिये!

भूगर्भमें धन—लाहौर शहरमें हिन्दू बालिका विद्यालय के नजदीक की जमीनमें जहां पर किसी जमानेमें बड़े दौलतमन्दकी इमारत थी, एक व्यक्तिने धन बतलाया है. सरकारकी ओरसे मकान खुदवाया गया है. जमीनके नीचे पक्की कोठरियां निकल रही हैं. अभी धन नहीं मिला, किन्तु वहां पहरा बैठाया गया है.

चूहोंके बदले मनुष्य—नवसारीमें एक भयानक दुर्घटना हुई. वहां चूहे खेतीकी हानि कर रहे हैं; इसलिये एक किसानने बाजारसे मुरमुरे लाकर उनमें विष मिलाया. इसके बाद उसने आधे मुरमुरे चूहे मारनेकेलिये खेतमें डाले और आधे घरमें रख छोड़े. खेतमें डालते समय अचानक उसे सांपने काट खाया. जब उसकी स्त्री उसे ढूंढने गई तो वह मरा हुवा पाया; इधर बालकों ने माता पिता को घर न देखकर मुरमुरे खा लिये इससे एक ही दिन में चूहों को मारने के प्रयत्न में तीन मनुष्य मर गये. दुष्टताका फल यही है न?

श्रीमतीकी वक्तृता—इस बार कांग्रेसमंडपकी समाज सुधार कानफरेन्समें सहयोगी "भारतभगिनी" की स्वामिनी सम्पादिका श्रीमती हरदेवी रोशनलाल भी बोली थी, जिसका बड़ा भारी प्रभाव हुआ. विषय "स्त्री शिक्षा था."

अकालके कारण – सवा वर्षसे सरकारी कर्म्मचारी, उनके पृष्टपोषक समाचार पत्र और कितनेही विलायती अंगरेज समझने लगे हैं कि, प्रजापर ईश्वरका कोप है, फसले बिगड़ जाती हैं और वृष्टि पूरी तथा समयपर नहीं होती है. इसलिये अकाल न पड़ना असंभव है. परन्तु जो कार्य विवादसे नहीं हो सक्ता था वह सन ९९ ई. के अकालकी आपत्तिने कर दिखाया है इसने अच्छे शिक्षकका काम किया है. यह निश्चय हो गया है कि देशमें अन्नका टोटानथा; परन्तु भिखारियोंके पास अन्न खरीदनेको एक फूटी कौड़ी न थी. जबतक रोगका निदान नहीं हो लेता है वैद्य रोगकी चिकित्सा नहीं कर सक्ता है. यदि हम अकालके गंभीर कारणों पर विचार करें तो उस का रोकना सरकार और देशहितैषियोंको समान कर्तव्य है. अकाल उसी समय बन्द हो सक्ता है जब

कि उसके कारणों की खोज की जाय. अकाल केवल भारत ही में नहीं पड़ता है. किन्तु अब पचास साठ वर्षोंसे रूसको छोड़कर यूरोपमें कहीं अकाल नहीं पड़ा है. यद्यपि इग्लेंड का पेट परदेशके अन्नमें भरता है; परन्तु वहां भी इतने ही वर्षोंमें अकाल नहीं पड़ा है. इसका कारण यही है कि वहांके कारीगरों और मजदूरोंकी दशा सुधारी गई है. परन्तु भारतकी दशा बिलकुल बिगड़ गई है. पहिले यहां की प्रजा के पास कुछ बचा-बचाया था. जिसे बेचकर वह अकाल की टक्कर झेलती थी; परन्तु अब वह शक्ति बिलकुल नष्ट हो गई. सन् ९१ ई० मे किसानों को चैन नहीं है. फसलों ने बिगड़ २ कर उन्हें ऋणमें डाल दिया है. इस के सिवाय उन पर सरकारी कर का बोझा भी बडा भारी है और इसीसे वे पिसते जाते है. स्वयं लार्ड सालस्बरीतकने स्वीकार किया है कि वारम्वार का भूमि सम्बन्धी प्रबन्ध किसानोंके लिये लाभदायक नहीं है. सरकारी लगान का बोझा हलका करनेके लिये किसानोंको महाजनोंकी शरण लेनी पड़ती है. जब एकवार वे उनके पंजेमें फंस जाते है, तो उनका फिर छूटना कठिन है. सन् ८३ में भारत वर्ष का. अच्छा अनुभव रखनेवाले एक योग्य लेखकने 'स्पक्टेटर' में लिखा था कि भारतवर्षकी दशा दिन २ हृदयविदारक होती जाती है. इस देश के करोड़ो मनुष्यों की जीविक[ा] खेतीसे चलती है. यदि खेतीसे उन्हें अ[न्न] न मिले, तो उनके लिये आशाका मा[र्ग] कौनसा है? और पेशोंसे भी उन बिचा[रों]के प्राण बच सकते हैं; परन्तु वे पे[शे] कहां हैं?

ब्रह्मदेशमें विश्वविद्यालयकी बात चलने पर श्रीमान् लार्ड कर्जनने अपनी वक्तृतामें कहा, "भारतवर्षमें मैंने अबतक परीक्षाके पत्रोंमेंसे एकभी ऐसा न देखा जिसका मैं आधा मतलबभी समझ सका हूं." इसीसे समझना चाहिये कि इस देशके परीक्षा लेनेवाले कैसे विश्वपंडित हैं तथा उनके हाथमें विद्यार्थियोंकी कैसी मिट्टी खराब होती है!

बन्दरकी गवाही— मझगांव पुलिस कोर्टमें मजिस्ट्रेट बड़ी दुविधामें पड़े. दो आदमी एक बन्दरपर मेरा २ कह, झगड़े हैं. दोनों तरफके गवाह पक्के हैं मजिस्ट्रेट गड़बड़ीमें पड़े. आगे विचारा- कि बन्दर तो बुद्धिमान जानवर है; डारबिनके मुताबिक बन्दर जाद है. सो फर्य्यादीसे कहा, कि तुम बन्दरको कुछ बुद्धिका खेल दिखाओ. वह न दिखा सका. किन्तु आसामीने अनेक खेल दिखाकर तथा बन्दरी सलामसे साहिबको खुश कर समझा दिया कि बन्दर मेरा है. तब हाकिमने बन्दर आसामीको दिलाया. फर्य्यादी एक पुलिस मेन है.

शिलालेख.

जैनमित्र पत्रमें हमने अनुमान एक वर्ष पहिले एक विज्ञापन[1] दिया था, कि "हमें प्राचीन जैन शिलालेखोंकी अत्यन्त आवश्यक्ता है. जिस किसी भ्राताको मालूम हो, हमारे पास लिख कर भिजवा देवें." किन्तु हमारा विज्ञापन कौन देखता है? किसीभी भ्राताने हमें एक भी लेख देकर सहायताा न की. वंडे २ एम. ए, बी. ए. पंडित जैन जातिमें जीते जागते मौजूद हैं; किन्तु किसी भाईने वर्षभरके ३६० दिनोंमें भी लेख देनेकी हामलभी न भरी. भेजना तो दरकिनार रहा. अस्तु. प्रिय भाईयोंके साम्हने हमने जो वर्षभरमें इस विषयमें कार्य्य किया उसको क्रमशः दिखलानेकी चेष्टा प्रारंभ करते हैं. हां! यदि किसीको विशेष ज्ञान हो तो वे हमें लिखकर सूचित करते रहें.

आजके शिलालेखके साथ जो कुछ हाल लिखा हुआ था उसकाभावार्थ भी प्यारे भाइयोंके साम्हने रखते हैं.

"कहाऊँ गांव सलामपुर" मझोम्ली परगनेमें जिलेके मुख्य नगर गोरखपुरसे आग्नेय कोणकी तरफ ४६ मीलकी दूरी पर है. इस ग्राममें एक स्तम्भ है. जो उत्तरकी ओर है.

इसकी उंचाई २४ फुट है. यह बढ़ियां लाल पत्थरका बना हुआ है. लेख जो इसपर खुदा हुआ है, उसके अक्षर साफ तथा गहरे हैं. स्तम्भका आधार भूमिमें ४½ फुटकी उंचाई तक १, १० का वर्ग है. ५, ६ पर ६, ३ की उंचाई तक यह एक अष्ट कोणके रूपमें है. इस शराकार भागके उत्तरीय तीन पहलुओं पर लेख पाया जाता है. इसके उपर ५, १०½ खडी उंचाईका एक भाग १६ पहलूका है. फिर २, ११½ की उंचाई तक यह गोल है. इसके ऊपर ९ मोटा तथा १८ लम्बा चौडा एक वर्ग है. असल स्तम्भ इस वर्ग तक ढालू होता गया है.

४½ ऊंची मेखलापर और लाटोंमें उपर्युक्त पेरो पोलिटिन ढंग (Paropolitan type)* का एक शिखर २, १½ ऊंचा है. मुख्य अंश घंटेके आकार का तथा नड़मय है.

इसके उपर एक वर्ग खंड है जिसपर हरतरफ दिगम्बर तीर्थंकरोंकी खड़ी हुई मूर्तियोंवाले छोटे २ छह आले हैं. उंचे एक गोल खंडमें एक लोहे की कील घुसेड़ी हुई है. इसपर शायद कोई जैनधर्मका चिन्ह लगा हुआ हो.

इलूराके इन्द्रसभा जैन गुफा मन्दिरके चौकमें सुंदर इकरंगास्तम्भ, जिसको इसका प्रतिरूप मान सक्ते हैं. उसपर एक चौमुख वा चार जिन मूर्ति थी स्तम्भके पश्चिमीय भागमें एक धरणेन्द्र सहित पार्श्वनाथ स्वामीकी मूर्ति है.

[1] केवल एक लेख बाबू बनूलालजीने हमे दिया था जो जैन गजटमे मुद्रित हो गया किन्तु खंडित था.

* फरगूसन साहिबके इंडियन एन्ड ईस्टर्न आर्किटेक्चरका ५५ पृष्ठ देखिये.

(नकल.)

सिद्धम्.

(१) यस्योपस्थानभूमिर्नृपतिशतशिरः पातवातावधूता (२) गुप्तानां वंशजस्य प्रविसृतयशसस्तस्य सर्वोत्तमर्द्धेः (३) राज्ये शक्रोपमस्य क्षितिपशतपतेः स्कन्दगुप्तस्य शान्ते (४) वर्षे त्रिंशद्दशैकोत्तरक शततमे ज्येष्ठमासि प्रपन्ने (५) ख्यातेऽस्मिन्ग्रामरत्ने ककुभ इति जनैस्साधुसंसर्गपूते (६) पुत्रो यस्सोमिलस्य प्रचुरगुणनिधेर्भट्टिसोमो महात्मा (७) तत्सूनू रुद्रसोम पृथुलमति यशा व्याघ्र इत्यन्य संज्ञो (८) मद्रस्तस्यात्मजो भूद्द्विजगुरु यतिषु प्रायशः प्रीतिमान्य (९) पुण्यस्कन्धं सचक्रे जगदिदमखिलं संसरद्वीक्ष्य भीतो (१०) श्रेयोर्थं भूतभूत्यै पथि नियमवतामर्हतामादिकर्तॄन् (११) पञ्चेन्द्रान्स्थापयित्वा धरणिधरमयान्सन्निखातस्ततोयम (१२) शैलस्तम्भः सुचारुर्गिरिवरशिखराग्रोपमा कीर्तिकर्त्ता.

भावार्थ—जिनके दरबारका आंगन प्रणत सैकड़ों राजाओंके नत मस्तकों से वीजित होता है; प्रचारित कीर्ति, गुप्तवंशमें उत्पन्न, सबसे अधिक सम्पतिवाले शक्रके समान, सैकड़ों राजाओंके स्वामी उन स्कन्द गुप्तके शांतिमय राज्यमें १४१ सम्वत् ज्येष्ठ मासके आनेपर इस रत्न सदृश ग्राममें (जो ककुभ नामसे प्रसिद्ध है) और जो सज्जनोंके संगसे पवित्र है. इसमें महात्मा भट्टीसोम गुणनिधि सोमलका पुत्र जिसका पुत्र रुद्रसोम व्याघ्रापर नामा विशाल कीर्ति तथा विशाल बुद्धिवाला है; जिसका पुत्र मद्र विशेषत ब्राह्मण, गुरू, यतियोंपर प्रीति तथा मान करनेवाला इस जगतको चंचल जानकर भीत होकर उसने अपने तथा सब जगतके कल्याणकेलिये पुण्य स्कंध बनाया. पत्थरके पांच इन्द्र अधिकारी (तीर्थंकर) यतियोंके मार्गमें बनाये और यश फैलानेवाला पत्थरका स्तम्भ बनाया जो कीर्ति करनेवाला पर्वतोंके शिखरोंके सदृश सुन्दर है. इति.

लेखमें स्पष्ट मालूम होता है कि यह स्तम्भ जैनियोंका है. यद्यपि वर्तमान कालमें कोई मन्दिर आसपास नहीं है. तथापि स्तम्भसे २५ फुट उत्तरकी ओर प्राचीन ईंटोंकी नींव पाई जाती है. जिससे मालूम होता है कि अवश्य प्राचीन कालमें मन्दिर होंगे. इस उपरान्त प्राचीन दो मन्दिरोंके अवशेष स्तम्भके पूर्वकी तरफ २०० गजकी दूरीपर वर्तमान है. जो बृचननके कालमें थे. इनमें एकमें कायोत्सर्ग मुद्रायुक्त श्री पार्श्वनाथ स्वामीकी मूर्ति अबतक विद्यमान है. (यह लेख इन्डियन अन्टिक्वरी नाम पत्रके कालम १० के १२५ के आधारसे लिखा गया है) इति शुभम्.

मिस्टर जैनवैद्य.
जौहरी बजार, जयपुर.

---

१ (शुद्ध) वंशजस्य. २ (शुद्ध) त्रिंश.

"श्रीयुत भाई मन्नालाल छावड़ा केम्प इन्दौर लिखित"

प्रिय पाठक! आज हम ये तीन बातें तलाश कर उत्तर उन भाइयोंसे चाहते हैं; जिन्होंने उच्च श्रेणीकी अंग्रेजी विद्या पढ़कर एफ. ए., बी. ए., एम. ए., एल. एल. बी., आदि की पदवी प्राप्त की हैं. जो भाई इन तीन बातोंका उत्तर देवेगा, उसीको सच्चा धर्मका प्रेमी समझेंगे.

(हद्दसिकन्दरी)

दोहा.

मनमतंगतनलहरहै, नैनपहरदरयाव।
बेसर भुजा सिकन्दरी.यहां न आव? न आव?॥

हिन्दुस्थानमें किसी गुजरे जमानेमें बादशाह सिकन्दर (जुलकरनैन) होगया है. उसने इस पृथ्वीके बहुतसे भागोंमें भ्रमण किया और दरयावमें जहाजका चलाना शुरू किया. दर्याई शेरकी और उर्दूवालोंकी जवानी मालूम होता है कि उसने तमाम दुनियांकी चीजोंपर अपना सिक्का जमा दिया. यहांतककी पानीपरभी सिक्का जमा दिया. उसीका नाम हद्दसिकन्दरी है. सो वह हद्द ऐसी विषम जगह बनाया हुआ सुना है कि वहां बोट जहाज नहीं जा सक्ते हैं और उसीके बुर्जपर अपना हाथ बनाया है (जिसका साक्षी उपरका दोहा है.) वह हाथ उधर जानेवाले को बड़ी दूरसे मने करता है. जैसे स्त्रीकी नाकमें बेसर (लटकन) हमेशा हिलता है; और वह पर पुरुषोंको उधर जाने या देखनेको मना करता है, तैसेही वह हाथभी हिलता है और कहता है यहां न आव! न आव!

सो भाइयो, उस बादशाहने कोनसे दरयावमें ये हद्द बनाई है और वहांपर बोट जहाज क्यों नहीं जाते हैं? वह बादशाह कैसे गया होगा? उसके आगे कोनसा दरयाव व टापू है?

२ प्रश्न -- (भूगोल) पृथ्वी गाड़ीके पहियेकी तरह फिरती हुई, या कुम्हारके चाककी नाई फिरती हुई अंग्रेजी भूगोल विद्यावाले मानते हैं?

३ प्रश्न -- (गिरनार पर्वत) एक किताव (दि नेटीव स्टेट आफ इन्डिया) में यह बात लिखी हुई है कि गिरनार नामके कितने पहाड़ हैं जो ३७०० फूट ऊंचे हैं? गिरनार पर्वत भी एक तीर्थस्थान समझा जाता है और एक चट्टानपर जो उसके बगलमें है. राजा अशोकने अपनी आज्ञायें खुदवाई हैं. यह बात सन ई० से २५० वर्ष पहिलेकी है.

इस बातको पढ़कर हमें बड़ा शोक हुआ. गिरनार हमाराही तीर्थ है. राजा अशोक भी शायद जैनीही हो! उसने आज्ञाओंमें क्या लिखा है; इसकी बड़ी उत्कंठा है क्यों कि उन लेखोंमेंही कोई ऐसी बात पाई जावे जिससे दिगम्बर धर्मको मदद पहुंचे, तो कितनी खुशीकी बात हो.

"रथयात्रामहोत्सव श्री कुंथलगिरि सिद्धक्षेत्र."

पाठक महाशय, यह लिखते हर्ष होता है कि उपर्युक्त सिद्धक्षेत्रपर जो दो प्रतिष्ठा रामचन्द अभयचन्द वावीकर व जयचन्द हेमचन्द खरडेकर की तरफसे होनेवाली थी वे सानन्द सकुशल समारोहके साथ पूर्ण हुई. प्रतिष्ठाकारक महाशयोंका उत्साह व परिश्रम सराहनीय था. जिन्होंने ऐसे विषमस्थानपर हजारहों रुपया खर्च करके ऐसा प्रबन्ध किया; जोकि अच्छे शहरोंमें होना मुश्किल है. इसके अतिरिक्त उन्होंने दिगम्बर जै. प्रा. सभाको आदरपूर्वक आमंत्रण दे बुलाया और इसके संबन्धी समस्त कार्योंमें तन मन धनसे पूर्ण सहायता दी. जिसके बदलेमें यह सभा शतशः धन्यवाद देती है. अब हम अपने भाइयोंको व बातें सुनाना चाहते हैं जो इस उत्सवके अंतर्गत हुई.

दिगम्बर जैन प्रान्तिकसभाकी ४ बैठकें हुई जिनमेंसे प्रथम बैठक ता. १७–१२–०१ को ९॥ बजेसे १०॥ बजेतक हुई. जिसमें प्रथम नागपूर निवासी श्रीयुत पंडित रामभाऊ मास्तरने "नमः श्री वर्धमानाय" आदि कहकर सविस्तर मंगलाचरण किया और फिर सेठ पानाचन्द रामचन्दजीने दिगम्बर जैन प्रान्तिक सभा बम्बईमें पास हुए सम्पूर्ण प्रस्ताव सुनाये और जिसका सविस्तर वर्णन आवश्यक्ता सहित पंडित धर्मसहायजीने कहा जिनको सुनकर सर्व भाइयोंके हृदयमें इस सभाका निष्पक्षपातपना अच्छी तरहसे जम गया होगा.

"दुसरी बैठक."

बुधवारकी रात्रिको ९॥ बजेसे प्रारंभ हुई प्रथमही सेठ नानचन्द बालचन्दजी धाराशिववालोंने सभापतिका आसन ग्रहण किया तत्पश्चात् भाई अणंतराज संघवे उपदेशकने मंगलाचरणपूर्वक सम्यक्दर्शनका स्वरूप बतलाया. फिर भाई तवनप्पा उपाध्यायने द्वादशानुप्रेक्षाके विषयपर कुछेक कहा. आज श्रीमान् पंडित गोपालदासजी कृपाकरके मोरेनासे पधारे थे जिनके कारण सभामंडप श्रोताओंकी भीड़के मारे ठसाठस भर रहा था उपर्युक्त पंडितजीने भी सम्यक्दर्शनके विषयपर मनोहर वचनों द्वारा युक्ति गर्भितसविस्तर भाषण किया जिसके अंतरगत अष्ट मूलगुणमेंसे रात्रिभोजन निषेधपर जोर अधिक दिया गया. जिसके असरसे अनेक भाइयोंने रात्रि भोजन त्याग करनेकी प्रतिज्ञा की. और जयध्वनिके साथ ११ बजे सभा विसर्जन हुई.

तृतीय बैठक.

गुरुवारकी रात्रिको ९. बजेसे सभाका प्रारंभ हुआ प्रथमही शोलापूर निवासी सेठ पानाचन्द रामचन्दजीने इस बैठकका कार्य्यक्रम सुनाकर सेठ मानिकचन्द पानाचन्दजीको सभापति होनेकी प्रार्थना की व श्रीयुत रावजी मलूकचन्दने अनुमोदन

किया. पश्चात् आकलूज जैनपाठशालाके अध्यापक पंडित धर्मसहायजीने मंगलाचरणपूर्वक सभाको शरदकी उपमासे विभूषित कर निवेदन किया और कार्य्यक्रमके अनुसार परोपकार इस विषयपर आधा घंटा व्याख्यान दिया. तदुपरान्त पं० रामभाऊ मास्तर नागपूर निवासीने अपनी लघुता प्रगटकर "परोपकार" हीसे सम्बन्धित 'दान' इस विषयपर व्याख्यान दिया और पं० गोपालदासजीने उसे भलीभांति पुष्ट किया इसप्रकार आनन्दपूर्वक जयध्वनिसे ११ बजे सभा विसर्जन हुई.

चतुर्थ बैठक.

मिती मार्गशीर्ष शुक्ल १० शुक्रवार रात्रिको ९ बजेसे १०॥ बजे तक इस सभाकी चतुर्थ बैठक हुई, तिसमें प्रथमही सेठ नेमचन्द बालचन्द धाराशिवने सभा स्थापन कर होनेवाले प्रबन्धका कार्यक्रम सुनाया. पश्चात् सेठ रामचन्द अभयचन्दने सेठ माणिकचन्द पानाचन्द जोहरी बम्बईवालोंसे सभापति होनेकी प्रार्थना की और उक्त सेठसा०ने स्वलघुता वर्णन कर सहर्ष सभापतिका आसन सुशोभित किया; पश्चात् भाई अनंतराज पांगुलने श्रीकुंथलगिर क्षेत्रके प्रबन्ध विषयमें सेठ रावजी सखाराम भूमकर, हीराचन्द परमचन्द खरडेकर नानचन्द बालचन्द धाराशिवकर, हीरालाल तुलजाराम बार्सीकर, रामचन्द अभयचन्द बावीकर, जयचन्द हेमचन्द खरडेकर, बालचन्द रामचन्द गांधी शोलापूर, दोसी बालचन्द रामचन्द शोलापूरकर. बापू तुलजाराम सांगलीकर इन ९ महाशयोंकी एक कमेटी नियत करना चाहिये और एक होशयार गुमाश्ता हिसाब किताबकेलिये रखना चाहिये इत्यादि कहा और जिसका पुष्टीकरण दयाराम ताराचन्दजी पूनावालोंने किया तथा सेठ पानाचन्द रामचन्द शोलापुर निवासीने उक्त कमेटीके नियम वर्णन कर यह कमेटी दि. जै. प्रा. स. बंबईकी शाखा सभा समझी जावेगी और यदि खर्चके अनुसार आमदनी होगी तो उसका योग्य प्रबंध करेगी. (भंडारमें १००) रु से ज्यादा होनेपर नियत हुए कोषाध्यक्षके पास जमा होवेंगे) इस प्रकार सूचना की. और प्रार्थनापूर्वक सब भाइयोंकी सम्मति मांगी तो सब भाइयोंने सहर्ष स्वीकार किया. इत्यादि रीतिसे उक्त क्षेत्रका प्रबन्ध भलीभांति हो गया तत्पश्चात् सेठ रामचन्द अभयचन्दजीके निवेदनसे पं. गोपालदासजीने संस्कृत विद्याकी आवश्यक्ता युक्तिपूर्वक मिष्टध्वनिसे समझाकर उसमें उन्नति करनेका मूल कारण जैन संस्कृत विद्यालयको बतलाया. इस व्याख्यानसे हमारे ज्ञाति भाइयोंके दिलपर ऐसा असर हुआ कि अनुमान ५३२) रुपयेका चन्दा हो गया. जिसके पलटेमें निम्नलिखित उदार धर्मात्मा भाइयोंको कोटिशः धन्यवाद है.—

१०१) कोठारी वेणीचन्द जयचन्द व उगरचन्द झवेरचंद बावीकर.

५१) जयचन्द हेमचन्द खरडेकर
५१) बापू जेठीरामजी बढ़ाळेकर
५१) मैनाबाई भरतार मोतीराम माणिकचन्दजी नरखेडकर
२५) अमीचन्द परमचन्दजी पंढरपुर
२५) लक्ष्मीचन्द वेणीचन्दजी बार्सीरोड
२५) समस्त जैनी पंचानयात्री जबलपूर
५) फूलचन्द जयचन्द कुरलकर
५) देवचन्द मोतीचन्द जनोनी
५) गुलाबचन्द अमीचन्द मोडनिम्ब
५) तलकचन्द मोतीचन्द आष्टी
१०) रामचन्द मोतीचन्दजी बढ़ाळे
२०) वेणीचन्द नानचन्द बढ़ाळे
५) रामचन्द सूरचन्द मोडनिम्ब
५) निहालचन्द झवेरचन्द मोडनिम्ब
५) वेणीचन्द परमचन्द पापड़ी
५) रामचन्द जेठीराम चड़चण
५) सखाराम माणिकचन्द मोडनिम्ब
११) सखमल धनजी बार्सीरोड
५) अण्णापा पाटील सांगली
५) दादाकालप्पा मोरचे सांगली
११) मोतीराम भवानजी मोहोळ
१५) भवानचन्द मूलचन्द माढ़े
१०) सावतामउ आरवाडे सांगली
११) फूलचन्द खेमचन्द बाहूज
११) वेणीचन्द खुशाल कुरडुवाड़ी
२१) मगनलाल नेमीलाल पोरवाड़
२१) जैनपंचान नागपुर मार्फत रामभाऊ मास्तरके
५) अम्बादास देशमाने मगरूल
२) महता बापू वेचर बढ़ाळे

५३२) कुल मीजान्

"विशेष व्यवस्था"

इस उत्सवपर अनुमान ६ हजार आदमियोंकी भीड़ हुई थी. जो बहुत दूर २ से इस पंचकल्यानक उत्सवके अर्थ पधारे थे. प्रतिष्ठाविधि करानेवाले शोलापुर निवासी श्रीयुत पासूगोपालजी शास्त्री थे. जिन्होंने सकुशल योग्यताके साथ यह कार्य्य पूर्ण कराया. यात्रियोंकी भीड़केमारे दर्शन मिलना सबहीको सुलभ न थे. कारण कि मंदिरजीका वेदीग्रह अति संकीर्ण है. जो प्रथम निकल गया सो तो पा गया. नहीं तो पीछेवालोंको नीचेके मन्दिरोंकही दर्शन कर संतोष करना पड़ता था. भगवान्के पंचकल्यानक भी दक्षिणकी रीत्यानुसार अत्यानंदके साथ हुए. हजारों रुपया अष्टद्रव्य व फूलमालमें एकसे एकने बढ़ाचढ़ा कर दिये. प्रतिष्ठाकारकोंकी तरफसे ऐसे उतंगविषम पर्वतपर हजारों डेरे तम्बू आदि खड़े किये गये थे. तथा पानी जिसकी बड़ी तकलीफ थी २ मीलके अन्तरसे मंगाया जाता था. इसके अतिरिक्त भोजनादिका प्रबन्ध ऐसी सुगमतासे किया गया था जिससे सम्पूर्ण यात्री वाह २ आदि शब्दोंसे सराहना कर उनकी धर्मवात्सल्यबुद्धि पर आश्चर्य करते थे. इस पवित्र क्षेत्रपर अनेक महात्मा ब्रह्मचारी जैनी भी पधारे थे. तथा एक नग्न दिगम्बर मुनिराज भी सर्व जनोंके नेत्र सफल करनेकेलिये एवं शास्त्रके इस वाक्यको पुष्ट

करनेको कि "पंचमकालके अन्त तक दिगम्बर मुनि रहेंगे" पधारे थे जिनका संक्षिप्त जीवनचरित्र हम अपने विचारवान भाइयोंके अवलोकनार्थ यहां प्रकाश करते हैं.

कोल्हापुर जिलेकी उत्तर दिशामें सांगली नामक संस्थानिक राज (पटवर्धन) में माघ कृष्ण ५ शाके १७९० में आपका जन्म हुआ. पिताजीका नाम काड़प्पा मोरचे था. ये अपनी माता जीजीबाईके अण्णापा, दादा, भाऊ आदि तीन पुत्रोंमें प्रथम पुत्र थे. ये अपने घर साधारण दशाके धन सम्पन्न ग्रहस्थ थे. ६ वर्षकी अवस्थासे शालामें विद्याभ्यास करना प्रारंभ किया था. ४ चौपड़ी (पुस्तकें) पूरी पढ़ चुकनेपर इनका विद्याभ्यास छूट गया. कारण कि इस बीचमें इनके पिताका देहान्त हो गया. इनका प्रथम विवाह यद्यपि शाके १७९६ में हो चुका था तथापि अपनी इच्छानुकूल शाके १८१६ में द्वितीय विवाह किया. प्रथम स्त्रीसे २ पुत्र उत्पन्न हुए जिनमें द्वितीय पंडोबा अभी विद्यमान है ग्रहस्थाश्रममें इन्हें गानविद्याका अधिक शौक था और जिसके असरसे इन्होंने विषयादिकोंमें लवलीन हो बहुत धन तथा समय व्यर्थ गमाया.

एक दिवस शास्त्र बांचते थे कि कथा प्रसंगसे वैराग्य प्रकरण आया बस क्या था उसका विजलीकासा असर इनके हृदयमें पैठ गया और संसारको अस्थिर जान घर बास छोड़नेका इरादा किया परन्तु घरवाले इस कार्य्यमें बाधक हुये. उन्होंने इसप्रकार भुलाया कि "पहिले तुम साधना कर सक्ते हो या नहीं इसकी परीक्षा तो कर लो? फिर पीछे जो चाहै सो करना." तब ये तोंदकि पहाडपर जहां पार्श्वनाथ स्वामीका मन्दिर है, २ माह रहकर घर आगये. और दो तीन वर्ष व्यतीत हो गये. अचानक प्लेगसे पांच छह दिनके बीचहीमें माता व भाईका देहान्त हो जानेसे अति भयभीत हुए और "संसारमें कोई अपना है या नहीं" यह देखनेके अर्थ प्लेगका बहाना कर पड़ रहे. तब इन की दोनों स्त्रियां भागने लगी. फिर क्या था, संसारकी दशाका पूर्णरूप से अनुभव हो गया. तुरंतही अपने कुटुम्बी लोगोंमें यथायोग्य धनके विभाग कर तथा मान्दिरको कुछ जमीन लगाकर एक क्षुल्लक मुनिके पास "वर्धमान" ऐसा नाम रखकर क्षुल्लकी दीक्षा धारण की. पश्चात् संमेद शिखर आदि क्षेत्रोंमें भ्रमण करते २ आरामें मंगशिर मासमें लक्ष्मीकीर्ति जी भट्टारकके पास दिगंबरी दीक्षा धारण कर भ्रमण करते २ चातुर्मास फलटणमें व्यतीत किया व इस अवसरपर कुंथलगिर क्षेत्रपर पधारे थे.

पाठको? उपर्युक्त मुनिराज को दीक्षा ग्रहण किये अभी केवल १ वर्ष ही हुआ है परन्तु आपके जैसे निर्मल और शांति परिणाम हैं वह दर्शन करनेवाले भाई ही विचार सक्ते हैं आचरण भी समयानुसार

अच्छे हैं और जो कुछ त्रुटि है भी; वह बहुत जल्द दूर होनेकी संभावना है, इस विषय की सूचना आपको समय २ पर दी जायगी.

अब हम इस महोत्सव की रिपोर्ट पूर्ण करनेके पहिले उक्त क्षेत्रवर्ती महाराजा निजाम सरकार को बारंबार धन्यवाद देते है जिनकी कृपासे यहां पर किसीप्रकार का विघ्न उपस्थित नहीं होने पाया और सर्वयात्री आनन्दसे धर्म साधते रहे. इत्यलम.

दर्शक
नाथूराम (प्रेमी)

प्राप्तपत्र व लेख.

(प्रेरक पत्रोंके हम उत्तरदाता न होंगे.)

"विनय अविनयके झगडे और मध्यस्थ भावको भूल जाना"

हमारे जैनीभाई अन्यमती मिथ्यादृष्टी अविनयीयोंसे तो माध्यस्थभावसे चलते हैं; परन्तु अपने जैनीभाइयोंके साथ वर्तन करनेमें माध्यस्थभावको कोई २ वक्त छोड़ देते हैं. इसका एक नमूना बम्बईमें अभीके रथोत्साहके मेलेमें देखनेमें आया. भगवानकी वेदीके सामने नृत्यगान हो रहा था, पेटीका बाजा बजानेवाला कुरसीपर बैठकर बजा रहा था, और उसी वक्त कई जैनीभाई वहां भीड़में आगे जगह न मिलनेके सबबसे पीछेकी बाजूपर लकड़ीके बेंचपर बैठके नृत्य देख रहे थे. वह बेंच श्रीजीकी वेदीसे बहुत नीचा था और गरमीके सबब पंखा हाथमें लेके पवन भी ले रहे थे. इतनेमें कई भाइयोंने आकर उनको नीचे बैठने और पंखा रख देनेकेवास्ते कहा परन्तु उन्होंने नहीं माना. जिसपर यह जवाब मिला कि तुम अविनय करते हो, हाथ पकड़के बाहर निकाल दिये जाओगे, इत्यादि बातोंसे कषाय बढ़ गया. सो यहांपर हमारे जैनीभाई अपने माध्यस्थ भावको भूल गये. अविनय कोई करता होगा तो उसको अविनय होना ही मिष्ट भाषणसे समझाना चाहिये, इतनाही जैनीका काम है. उसको हाथ पकड़के निकालनेका अथवा गालीगलूची करनेका काम जैनीका नहीं है. जो कोई अविनय करेगा सो आप उस पातकको भुगतेगा. एक बार कह देना अपना काम है. वह नहीं माने तो हम अपने परिणाममें कषायकी तीव्रता क्यों करें? फिर दूसरा एक नमूना सुनिये! श्रीजीसे अनुमान दो सौ कदमकी दूरीपर एक अलग मकानमें शास्त्रजीकेवास्ते अलग सभा हुई थी. वहां सब भाइयोंको शास्त्र अच्छी तरह सुननेमें आवे इसवास्ते एक हाथ ऊंचा लकड़ियोंका चौतरा बनाया था, उसपर पंडित गोपालदासजी बैठके शास्त्रजी चौकीपर रखके खोल रहे थे और मंगलाचरण आधा हो चुका था इतनेमें कोई भाई आकर कहने लगे कि यह तो अविनय होता है. पंडित गोपालदासजीने कहा कि इसमें कुछ अविनय नहीं है. इसी माफिक ऊंचे आसनपर बैठके इन्दौर और अजमेरमें भी मेलेके समय सभामें शास्त्रजी बांचते हैं. इतनेपर भी उनका समाधान नहीं हुआ. और उन्होंने शास्त्रजी चौकी समेत उठाकर नीचे रख दिये

जिससे गोपालदासजीके दिलमें बहुत रंज होगया. सो कई भाई कहने लगे यह तो ठीक नहीं हुआ; कलकत्तेवाले बलदेवदासजी कहने लगे मंगलाचरण प्रारंभ हुए पीछे शास्त्रजीको उठाकर नीचे रख देना यह ठीक नहीं हुआ. राजा दीनदयालजी और पं. धर्मसहायजी इत्यादि बहुतसे लोग सभामें कहने लगे कि शास्त्रजी ऊंचेसे नीचे रख दिये यह बडा अविनय हुआ, सो अब फिर पहिले ठिकाने ऊंचे आसनपर रख देना चाहिये और ऊंचे आसनपर बैठके ही बांचना चाहिये; जो सबके सुननेमें आवे. नीचे बांचनेसे किसीके सुननेमें नहीं आता, फिर गोपालदासजीने तो वहां नीचे बैठके ही थोासडा बांचकर पूरा कर दिया. सो जो भाई नजकि थे उनके सुननेमें तो आया परन्तु पीछे बैठनेवालोंने कुछ भी नहीं सुन पाया. क्या? विनय अविनयमें पंडित गोपालदासजी नहीं समझते थे जो उन को और शास्त्रजीको मंगलाचरण आधा हो चुके पीछे उठाकर नीचे लाना चाहिये?

श्रीजीसे ऊंचे आसन पर नहीं बैठना! यहां तो श्रीजी थे भी नहीं; सो इसमें तो कुछ अविनय हुआ ही नहीं है. परन्तु यदि अविनय कहीं होताभी होगा तोभी अपने २ माध्यस्थ भावको क्यों छोड़ देना? सर्व प्राणीमात्रसे मैत्री, अपनेसे अधिक गुणवान होय जिसमें प्रमोद्भाव, जो दयापात्र है उनकेवास्ते करुणाभाव. और अविनयी होय उसकेलिये माध्यस्थभाव ये चार भावना हिंसादिक पंच पापसे रोकती हैं, ऐसा जिनवाणीका अभिप्राय है. उसको हमेशा याद रखना चाहिये, यहां कोई कहै कि क्रोधके विना किये मिथ्यात्व और पाप रुकता नहीं. सो नहीं है, जिनवाणीका ऐसा अभिप्राय है कि भगवानने विना क्रोधके किये शत्रुको जीत लिया है, देखो कल्याणमंदिरमें क्या कहा है--

क्रोधस्त्वया यदि विभो प्रथमं निरस्त।
ध्वस्ता तदावतकथं किल कर्म चौरः॥
प्लोषत्य मुत्रयदिवा शिशिरापि लोके।
नीलद्रुमाणि विपनानि न किंह मानि॥

हे भगवान्! आपने क्रोधको तो प्रथम ही छोड़ दिया. तो फिर कर्मरूपी चोरोंका नाश कैसे किया? (इसका उत्तर)—देखो लोक विषें नील वृक्षोंके बनकेबन हिम शीतता करके भस्म हो जाते हैं कि नहीं? (वैसे ही विना क्रोध कर्म शत्रुका नाश कर दिया.)

विना क्रोध मिष्ट वचनसे ही धर्मके काम हो सक्ते हैं. एक हाथमें शमशेर और दूसरे हाथमें कुरान लेके धर्मग्रहण करानेका काम मुसलमानोंका है. जैनी तो युक्ति प्रमाणकर मिष्ट वचनसेही धर्मग्रहण कराता है. जैनोंके मंदिरोंमें क्रोधादि कषाय नजर आनेसे अन्यमती लोग हांसी करते हैं. जैनोंके मंदिरोंमें तो जहां देखो वहां क्षमा, दया, शांति, मार्दव, सत्य, शौच इत्यादि उत्तम वस्तुओंका ही सद्भाव देखनेमें आना चाहिये. इसमेंही धर्म है, इसमेंही विनय है. और इसीमेंही मार्गप्रभावना है.

आपका,

हीराचन्द नेमीचन्द, शोलापूर.

समालोचना.

जैन इतिहास सोसाइटीकी.

प्यारे पाठको! इस वर्ष महासभाके वार्षिक

अधिवेशनपर एक "इतिहास सोसाइटी" कायम की गई है, उसकी समालोचना करनाही इस लेखका उद्देश है.

महासभाका तो मख्य उद्देश जैनमतकी उन्नति करना है; सो सदाही जैनमतके उन्नतिके उपाय सोचती रहती है, परन्तु जैनमतकी उन्नतिका मूल कारण तो जैनमतमें उत्तम विद्वानोंका होना है. अन्यथा उन्नति होना असंभव है. यद्यपि जैनमत निर्बाधतत्वका प्रतिपादक, तथा सत्यमत है. तथापि प्रतिवादीके मुकाबिलेमें तत्वकी निर्बाधता सिद्ध कर देना, यह काम तो उत्तम विद्वानोंकाही है.

बहुत बढ़ियां तलवार भी यदि निर्बल मनुष्यके हाथमें होगी, तो प्रबल बैरी उससे छीन लेगा. तलवार अपना कुछ भी गुण नहीं दिखा सक्ती. तलवारका गुण तो पराक्रमी, शस्त्रविद्याका जानकार शूरवीरही दिखा सक्ता है. इससे महासभा यदि जैनमतकी उन्नति किया चाहती है तो प्रथम जैनलोगोंमें उत्तम विद्वान् तयार करे. विद्वान् तयार होनेपर आपके सब मनोरथ अनायासही सिद्ध हो सक्ते हैं. नहीं तो वही कहनावत है "मूलं नास्ति कुतःशाखा" अब जैनइतिहास बनानेकेवास्ते जो उक्त सुसाइटी सभाने कायम की है तथा उसकी बड़ी आवश्यक्ता प्रगट करी, उसकी विवेचना करते हैं.

प्रथम तो जैन इतिहास बनानेकेवास्ते सुसाइटी कायम की गई. इसमें हम पूंछते है कि जैनइतिहास बड़े ऋषियोंके रचे हुए "महापुराण" आदि विद्यमान हैं ही फिर आप कैसा इतिहास बनाना चाहते हैं? अथवा अनाप्त प्रणीत अन्यमतीयोंके ग्रन्थोंसे जैनइतिहास कैसे बन सक्ता है? जैसा कि आप प्रयोग कर रहे हैं; अथवा इतिहास शब्दके प्रसिद्ध अर्थको छोड़कर आपने कुछ दूसराही अर्थ माना है? इतिहास शब्दका वाच्यार्थ तो "इतिहास पुरावृत्ते" इस कोष प्रमाणसे पूर्वकालमें जो हुआ यह अर्थ है. और लक्षणसे पूर्वकालमें हुई कथा, व कथाओंका प्रतिपादक ग्रन्थ यह अर्थ है, ऐसा कहा है. "धर्म्मार्थ काममोक्षाणामुपदेश समन्वितं। पूर्ववृत्त कथायुक्त मितिहासं प्रचक्षते॥" अगर आपका यह ख्याल है कि इतिहास हो या उसका कोई और नाम हो हमारा अभिप्राय तो एक ऐसी पुस्तक तयार करनेका है. जिसमें अन्यमतियोंके ग्रन्थोंकी साखी देकर जिनमतकी प्राचीनता सिद्ध कर दी जावे, जिसको अन्यमती भी पसन्द करेंगे. सो ये भी आपका निष्फलही प्रयास है. प्रथम तो अन्यमतके ग्रन्थोंसे जैनमतकी प्राचनिता सिद्ध नहीं हो सक्ती, सबने जैनमतको अपने मतसे पीछे ही का लिखा है; सभी अपने मतको सनातन और जैनको आधुनिक कहते हैं; किसी ग्रन्थमें खंडनमुद्रासे अथवा और रीतिसे जैनमतका कुछ जिकर भी है; तो इससे इतनाही कह सक्ते हो कि "इस ग्रन्थकारसे पहिलेका है," ऐसे तो तुह्मारे ग्रन्थोंमें भी अन्यमतके खंड लक्षादि आते हैं वे भी तुमसे प्राचीन ठहर जावेंगे.

अथवा किसी प्रकार जैन मतको आपने प्राचीन ही सिद्ध कर लिया तो साध्य क्या सिद्ध हुआ. प्राचीनता नवीनतासे सत्यता असत्यता सिद्ध नहीं होती. किन्तु सत्यता असत्यता तो निर्बाधता सबाधतासे सिद्ध होती हैं. यह

बात आप जानतेही हो कि जीवके मिथ्या श्रद्धान, मिथ्याज्ञान, मिथ्या आचरण अनादि कालसे है. सम्यकदर्शन, सम्यक ज्ञान, सम्यक चारित्र आदि हैं. यदि सत्यता असत्यताके साधने में प्राचीनता नवीनता ही हेतु माना जाय तो मिथ्या श्रद्धान आदि सत्य ठहरे सम्यक दर्शनादि असत्य ठहरे. क्योंकि सम्यग्दर्शनादिकी अपेक्षा जीवके मिथ्या श्रद्धान आदि प्राचीन है सम्यकदर्शनादि नवीन हैं. इससे यह सिद्ध हुआ कि प्राचीनता, नवीनता, सत्यता असत्यताकी साधनेवाली नहीं है किन्तु निर्वाधता सवाधताही सत्यता असत्यता की साधनेवाली है. सो निर्वाधता सिद्ध करना जैनमतके बुद्धिमानही का काम है. इससे प्रथम विद्वान बनानेकीही कोशिश करना ठीक है. आपके किये इतिहास से कुछ भी साध्य नहीं है, और जो सभा ऐसा ख्याल करती है कि लोगोंके दिलमें जैनके बारेमें गलत ख्यालात जम रहे हैं वे इस इतिहाससे दूर हो सक्ते हैं, सो गलत ख्यालातवाले तो जब साक्षात तीर्थंकर केवल ज्ञानी विद्यमान थे, इन्द्रादिक देव वन्दना पूजाको आते थे तब भी येही मिथ्या दृष्टी लोग कहते थे, "कि ये कोई इन्द्रजाली है, अपनी माया दिखाता है, अज्ञानी लोग सर्वज्ञ मान पूजते हैं. कोई आदमी भी सर्वज्ञ होता है?" ऐसे २ गलत ख्यालातवालोंका सद्भाव तो सर्वज्ञभी दूर नहीं कर सके तो "अबका बनाया इतिहास गलत ख्यालात दूर कर सक्ता है?" यह कहना बडे साहसका वाक्य है.

गलत ख्यालात तो जीवके मिथ्यात्व कर्मके उदयसे होते हैं. ये ग्रही मिथ्यात्व है. इसका अन्तरंग कारण तो दर्शन मोहका उदय है और बहिरंग कारण मिथ्याउपदेशका मिलना है. सो दर्शन मोहके उदयका सन्तान सब जीवोंके अनादि कालसे है. किसी महाभाग्य निकट भव्य के काल लब्धि आदि सामग्री की योग्यता मिलनेसे दर्शन मोहका अभाव होता है तबही साचा श्रद्धान होय है. सो ऐसे जीव विरले हैं; जिसमें भी पंचम कालमें तो सम्यक्दृष्टी जीवोंकी अति विरलता है, बाकी सब जीव मिथ्यात्व कर्मके उदय सहितही हैं. इससे गलत ख्यालातवाले बहुत जीव होना चाहिये. इसका खेद करना तो केवल अज्ञानही है. परन्तु सत्पुरुषोंका तो यह स्वभाव ही है. सब जीवोंका हितही चाहते हैं. समाचीन मार्गकी प्रवृत्ति करनेमें सदाही कटिबद्ध रहते हैं. जीवोंके विपरीत श्रद्धान छुडाकर सत्य श्रद्धान कराया चाहते हैं. परन्तु जिन जीवोंके मिथ्यात्वका तीव्र उदय है, राग द्वेष की कलुषता से जिनका हृदय कलुषित है (दुराग्रही हैं,) उनको तो सत्यासत्य का निर्णय हो ही नहीं सक्ता. हां जो भद्रपरिणामी है, पक्षपातरहित हैं उनके सद्गुरुके उपदेश मिलने से सत्यासत्य पदार्थ का विवेक हो भी सक्ता है.

जिनके मोहकर्मका तीव्र उदय है राग द्वेष से कलुषित दुराग्रही हैं वे तो उपदेशके योग्य ही नहीं, उनको तो सर्वज्ञ भी सत्यासत्य का निर्णय नहीं करा सक्ता परन्तु जो मोहके मन्द उदय से राग द्वेषादि भावसे मध्यस्थ चित्तवाले पक्षपात रहित हैं, उनको सद्गुरु के उपदेशसे सत्यासत्यका ज्ञान हो भी सक्ता हैं. परन्तु मतकी सत्यता इष्ट तत्व की निर्वाधता से है अर्थात

जिसका इष्ट तत्व प्रत्यक्ष तथा अनुमान आदि प्रमाण से बाधा नहीं जाय वही मत सत्य है, प्राचीनता नवीनता से कुछ नहीं इस से जैसा इतिहास नामधारक ग्रन्थ आप बनाना चाहते हैं वैसा यदि ग्रन्थ बने भी तो जैन मतके न्याय ग्रन्थके अनुसार देशकालके योग्य युक्तिपूर्वक जैनमत के माने इष्ट तत्वकी निर्बाधता सिद्ध करनेवाला अन्य मत के माने तत्वमें बाधा दिखानेवाला हो तो ठीक है. परन्तु ये काम अच्छे विद्वानोंका है इस से विद्वानों ही की आवश्यक्ता रही.

एक जैनी.

शाखा सभाओंकी रिपोर्ट.

श्रीमती बालज्ञान संवर्धक दि. जै. सभा नागपूर का वार्षिकोत्सव कार्तिक शुक्ला ९ मी को बडी धूमधाम के साथ हुआ. जिसकी संक्षिप्त व्यवस्था इस प्रकार है:- प्रथम ही सेठ रतनसाव रुखबसावजीने मंगलाचरण किया तथा सभापतिका आसन गुलाबसावजीने व उपसभापतिका रामभाऊ पांडुरंग दुधेने सुशोभित किया था, विद्यार्थी नेमलाल वर्धासावने "स्थित्यंतर" इस विषय पर अति उत्तम व्याख्यान दिया. पश्चात सेठ लोमासाव नेमासावजीने श्री सम्मेद शिखरजीके मुकद्दमें में जीत होने के कारण सेठ माणिकचन्द पानाचन्दजी को धन्यवाद दे हर्षका तार दिया और इसी अवसर पर एक श्रुत संग्रहालयभी स्थापन किया गया. पश्चात् श्रीयुत जयकुमार देवदासजी चवडे बी. ए. ने "सभा" इस विषयपर अति उत्तम व्याख्यान दिया. सभामें उपस्थित जनोंकी संख्या ३५० थी. सभाके कार्य्योंमें मुख्य सहायक रा. रा. जमनासा लछमनसा और हीरालालसा थे.

श्री जैनधर्म हितेच्छुमंडल करमसदकी रिपोर्ट कार्तिक सुदी १ से मंगशिर सुदी १ तककी हमारे पास आई है जिसका खुलासा यह है—

१ जो विद्यार्थियोंके पढानेका पाठक्रम अनियमित था वह महाविद्यालयकी पढाईके अनुसार किया गया.

२ प्रथम इस मंडलमें १७ विद्यार्थी थे परन्तु अब कारणवश ४ खारिज हो गये हैं. इससे ९ बालक अ खंडमें ४ क खंडमें रह गये.

३ श्रीयुत शा. मथुरादास हरगोविंददासने परीक्षा लेकर पारितोषक दिया तथा डाह्याभाई शिवलालने द्वादशानुप्रेक्षापर व्याख्यान दिया. पुरुष स्त्रियोंकी इस समयपर अधिक भीड हुई थी.

नोट— उपरोक्त दोनों सभाओंके प्रबंधकर्त्ताओंको हम कोटिशः धन्यवाद देते हैं जिन्होंने यह समाचार भेज हमें बाधित किया ह.

सम्पादक.

दिगम्बरजैनविद्वज्जनसभा—की नियमावली हमने अनुमान १०० पंडित महाशयोंके सेवामें भेजी, और पिछले जैनमित्रमें तकाजा भी कर चुके; परन्तु आज लों केवल सात आठ ही महाशयोंने हमारी प्रार्थना सुनी है; कितने एक सम्बाददाताओंके प्रश्नपत्र आ चुके, परन्तु हमने इसी कारण अबलों प्रकाशित नहीं किये. आज हम कुछ थोडेसे प्रश्न यहां लिखते हैं. और आशा करते हैं कि हमारे पंडितगण उत्तर देवेंगे तथा फार्म भरकर इस आवश्यकीय सभाकी कार्य्यवाही प्रारंभ करेंगे.

(१) सचित्त, अचित्तका क्या लक्षण है? कच्चा अनाज सचित्त है या अचित्त? यदि सचित्त है तो श्री गोमट्टसारमें योनिभूत क्यों कहा? और यदि अचित्त है तो पांचवी प्रतिमावाला सचित्त त्यागी कच्चा अन्न क्यों नहीं खावे?

(२) मुनिकी सामायिकका समय प्रातःकाल, मध्यान्ह, और सायंकालको उत्कृष्ट ६ घड़ी जघन्य २ घड़ी प्रमाण है. जब वे समवशरणमें जावें, तो वहां उपदेश सुने या सामायक करें. यदि करें तो किस समय? और न करें तो क्यों?

(३) तीर्थंकरभगवान्, या गणधरदेव चौमासेमें विहार करें या नहीं?

(४) श्री द्रव्यसंग्रहमें "दर्शन पूर्वं ज्ञाणं" ऐसा कहा है. तो मनपर्जय ज्ञान किस दर्शनपूर्वक होय है?

(५) चर्म शरीर तें किंचित ऊन सिद्ध भगवान्की अवगाहना कही है. तो कर्मनाश होनेपर ऊन करनेवाला कौन है? और ऊन किस तरहसे होय है?

(६) त्रसनाडी १ राजूलम्बी चौड़ी और १४ राजू ऊंची कही है परन्तु नर्कसे मोक्षतक १३ राजूही है नरकके नीचे १ राजूमें निगोद (थावर) हैं तो फिर १४ राजू क्यों कहा? १३ राजू कहना था.

(७) मनुष्य अपनी आयुके अन्तमरण करके देवगतिमें गया तो अंतरालमें १–२ आदि समयतक किस आयुका उदय रहा? जो मनुष्य आयु कहोगे, तो मनुष्य आयुके अन्तमें तो मरण किया. कालशेष रहा ही नहीं. जो देव आयु कहोगे तो उस क्षेत्रमें पहुंचकर वैक्रियक शरीर योग्य आहार पर्य्याप्तको भी ग्रहण नहीं किया. देव आयुका उदय कैसे कह सक्ते हैं?

(८) बहुधा सुननेमें आया है कि षष्टम गुणस्थानवर्ती महामुनिके मस्तकमेंसे सन्देह निवारणार्थ आहारक पूतला निकलता है तो जब उसे केवली या श्रुत केवलीके निकट जाने हेतु मोड़ा खाना पड़ता तो कहते हैं कि वह पुतला तो वहीं रहता, उसमेंसे दूसरा पूतला निकलता; इस तरह प्रति मोड़ेमें नया पूतला पूर्वके पूतलेमेंसे निकलता है सो इस विषयमें यथार्थ बात क्या है?

(९) सम्पूर्ण द्वादशाग के अपुनरुक्त अक्षर है और वे एक घाट इकट्ठी प्रमाण है. इकठी एक द्वि त्रि आदि ६४ संयोगी पर्यंत मिलानेसे होवे है. इनका प्रमाण ६४ इवा मांड परस्पर गुणनेसे भी आवे है. इसमेंसे १ घटानेसे द्वादशांगके अपुनरुक्त अक्षर होय है. इनमें १ पदके अक्षर १६३४ करोड़ तिरासी लाख ७ हजार आठसो अठासीका भाग देनेसे ११२ करोड ८३ लाख ५८ हजार ५ इतने तो अंग प्रविष्ट श्रुतके पदनका प्रमाण आया, तथा ८ करोड १ लाख ८ हजार १७५ अक्षर अंग बाह्य प्रकीर्णक के रहे तो इसमे ज्ञात होता है कि द्वादशांगमें अपुनरुक्त अक्षर हैं ही नहीं तो क्या कोई अक्षरदुबारा आता ही न होगा? और ये १–२ आदि संयोगी क्रमसे आते होंगे या क्रम रहित? और अंग प्रकीर्णकमें कहां के अक्षर निकाले गये? आदिके अंतके या मध्यके, और अंगप्रविष्टके कोई अक्षर अंगबाह्यमें आये या नहीं?

(प्रश्न प्रेषक दरयावसिंह हीराचन्दजी.)

विद्वानोंका दास,

गोपालदास बरैया,

मंत्री दि. जै. विद्वज्जनसभा बम्बई.

निर्माल्य द्रव्य सम्बधी प्रश्न

(१) निर्म्माल्य द्रव्य जलनेके पीछे जो राख रहती है, उसका क्या किया जावे?

(२) निर्माल्य द्रव्यको जलानेसे दूसरे जीवोंके पेटमें द्रव्य रूप परमाणु होके जावेंगे, क्यों कि जलानेमें रसायन शास्त्राधारसे उस द्रव्यका नाश नहीं होता; किन्तु रूपान्तर होता है.

(३) जिनेन्द्र देवके आगे सुवर्ण रूपेके द्रव्य दागीने वगैरह जो चढ़ाते हैं, उनका क्या किया जाय वह जलानेसे जलता नहीं, तुम कहोगे कि परमेश्वरके आगे सुवर्ण रूपा आदि चढ़ानेकी आज्ञा नहीं है. परन्तु भंडारोंमें जो द्रव्य रहता है वह निर्माल्य समझा जाय या नहीं? निर्माल्य न समझा जाय तो क्यों? अथवा समझा जाय तो क्या किया जाय?

(४) जिनेश्वरके सन्मुख जो पदार्थ चढ़ाते हैं उसमें अपवित्रता उत्पन्न होनेका क्या कारण? सन्मुख रखनेके पहिले तो पवित्रता थी फिर अपवित्रता कहांसे आई? जिससे आखिरी परिणाम जलाने तक आया.

(५) जिनेश्वरके सन्मुख जो द्रव्य चढ़ाया जाय वह सदोष कैसे होवे? हिसावसे देखो तो निर्दोष होना चाहिये; जिनेश्वर और उस द्रव्यका कुछ सम्बन्ध नहीं, होनेसे भी इतना अशुद्ध क्यों होता है. जिसका कहीं भी ठिकाना नहीं मिलता, पानीमें डालनेसे दोष, जलानेसे दोष, और मनुष्यके खानेमें भी दोष, हरेक अवस्थामें दोषही दोष हैं तो अब क्या किया जाय ?

(६) जो द्रव्य चढ़ानेमें दोष होता तो पूर्वाचार्योंने विचार क्यों नहीं किया ? जिन्होंने पूजन वगैरह अनेक तरहके पाठ रचे हैं उन्होने क्या निर्माल्य तरफ इतना लक्ष नहीं दिया होगा ? जहांतक समझमें आता है, जरूर दिया होगा; पीछे पूजा पाठादिकी रचना की होगी. तो अब हमको पूजन पाठ आदि करना चाहिये या नहीं.

उपर्युक्त प्रश्नोंके उत्तर विद्वान जनोंको अवश्य देना चाहिये. क्योंकि इन प्रश्नोंके खुलासा उत्तर हुए बिना पूजनप्रभावनादि कार्योंमे बड़ीही हानि होती है, इसलिये इन प्रश्नोंके उत्तर देनेमें विद्वानमंडली अवश्यही परिश्रम करेगी ! ऐसी आशा है—

आपका कृपाभिलाषी,
गंगाराम नाथाजी, आकलूज.

शंका समाधान और सूचना.

जैन गजट अंक ५ में हमारे एक हार्दिक हितैषी भाईने प्रान्तिक सभा बम्बईकी समालोचना करते समय सरस्वतीभंडार ईडरके उद्धार करने अर्थ "धुरंधर सेठोंने रुपयों की थैली खोली या नहीं." यह शंका कर डाली है, इसी का समाधान करना इस लेख का मुख्य उद्देश है.

यद्यपि इस आवश्यकीय कर्तव्य पर अभी हमारे श्रीमानोंनें लक्ष नहीं दिया तथापि दिगम्बर जैन प्रा. स. के अधिष्ठाता. कर्तव्य एवं बचनबहादुर श्रीमान सेठ माणिकचन्द पानाचन्दजीने यथाशक्ति प्रयत्न करके भाई पन्नालालजी बाकलीवालको इन्स्पेक्टर मुकर्रर करके जैन पाठशाला व सरस्वतीभंडार का महत कार्य सौंप ईडर की सम्हालको रवाना कर दिया. जिनके उद्योगसे थोड़े ही समयमें बहुत कुछ फल प्राप्त होनेकी आशा है. परन्तु इस समाचारको प्रकाशित करनेमें मुझे सन्देह है कि कहीं हमारे श्रीमान निश्चिन्त हो खुली हुई थैलियोंके मुँह फिर से बन्द न कर लेवें जिससे फिर परिश्रम करनेकी आवश्यक्ता पड़े. पहिले ही से कार्य का अनुमान कर द्रव्य डिपाजट कर रक्खें ताकि आवश्यक्ता पर शीघ्र ही सूचना पहुंचने पर मिल सके.

द्वितीय सूचना प्रत्येक स्थानके प्रबंध कर्त्ताओंको करना है; जो कि हमारे कर्त्तव्यके विशेष साधन है. और उनके इस जातिकी दशापर किंचित द्रवीभूत होनेपर हमारे सर्व मनोरथ सिद्ध हो सक्ते हैं. आशा है कि वे इस प्रार्थनापर दृष्टि कर नीचे लिखी हुई बातोंकी खोजमें परिश्रम कर हमको बाधित करेंगे.

(१) पाठशाला है या नहीं ? यदि है; तो स्थापक महाशयका नाम. प्रबंध कर्त्ताओंके नाम, आमदनी, खर्चका द्वार, पाठक, पढ़ाईका क्रम, विद्यार्थियोंकी संख्या, शाला स्थापन होने का समय, कृपाकर सूचित करें. और नहीं है तो इसका कारण, मुखियाओंके नाम व उनकी सामर्थ. एवं जातिधर्म स्नेह किसप्रकार है आदि लिख भेजें.

(२) कोई सरस्वतीभण्डार है या नहीं? है तो. उसके स्थापकका नाम, स्थापन होनेकी तिथि, ग्रन्थोंकी अनुमानिक संख्या, तथा वर्तमानमें अध्यक्ष कौन हैं. उनके नाम. भण्डारकी फिहिरिस्त है या नहीं. आदि बातोंसे हमको सूचित करें.

महाशयो! इतने समाचार प्रत्येक स्थानसे मिलने पर हम अपना कर्त्तव्य दिखा सक्ते हैं; कि इस छोटोसे सभाने इतने समयमें धर्मकी कितनी रक्षाकी, कारण कि श्रीयुत भाई पन्नालालजी. जो कि इस कार्यके करनेको कटिबद्ध हुए हैं, समाचार मिलते ही उस स्थानपर दौरा करेंगे. और भाइयोंसे प्रार्थना करके तथा उपदेश आदि देकर पाठशाला स्थापन करावेंगे. स्थित पाठशालाकी पढाई व पाठक वगैरहका क्रम ठीक करेंगे, सरस्वतीभण्डारकी फिहिरिस्त स्वतः बनावेंगे, ग्रन्थोंकी वेष्टन गत्ते आदिसे दुरुस्तीकर आलमारियोंमें यथोचित स्थानपर स्थापन करेंगे, इसके सिवाय भाइयोंको प्रतिदिन धर्मोपदेश देकर हर्षित करेंगे, इत्यादि. क्या हमारे साधर्मी सज्जन भाई इस छोटीसी प्रार्थनाको ध्यानसे पढकर विचार करेंगे? आशा है कि अवश्य करेंगे!

निवेदक,

मंत्री विद्याविभाग

"श्रीसम्मेदशिखरजीका झगड़ा."

भाइयो, पार्श्वनाथ स्वामीकी टोंकके चरण स्वेताम्बरियोंने उखाड़ डाले. और अब वहां २० फरवरीको प्रतिष्ठाकर प्रतिमा स्थापन करनेवाले हैं. उन्होंने इस अनुचित व अकर्तव्यकार्य्य करनेकी चिट्ठियां भी जगह २ प्रकाशित कर दी हैं. यद्यपि इसे रोकनेके विषयमें हमने अपनी न्यायी गवर्नमेंटको अर्जी दी है और आशा है कि वहांसे शीघ्रही यह कार्य्य बंद करनेका हुक्म होगा जबतक कि उक्त पर्वतपर किसी एक पक्षका अधिकार साबित नहीं हुआ है. तथापि अब हमारे दिगम्बरी भाइयोंको सचेत होना चाहिये. इस धर्मकार्य्यमें तन, मन, धनसे परिश्रम करना चाहिये नहीं तो फिर पीछे पछतानाही हाथ रह जावेगा. देखिये, झगड़ा छोटा नहीं है, उन लोगोंकी तरफसे पिछले मुकद्दमेकी अपील भी दायर हो गई है. उदारता दिखलानेका यही एक समय है.

श्री बिम्बप्रतिष्ठा सिवनी.

फाल्गुण वदी १२ सम्वत १९५८ की शुभ मुहूर्तमे स्वर्गवासी सेठ गोपालशाहजीके सुपुत्र पूरणचन्द्रजीके तरफसे प्रारंभ होगी, आशा है कि इस महतउत्सवमें विद्यालयकेलिये बहुत कुछ सहायता मिलैगी—

विद्यालयमें विद्यार्थियोंकी आवश्यक्ता—संस्कृत जैन विद्यालय बम्बईका कार्य्य प्रारंभ होगया. स्थान व अध्यापक भी सौभाग्यसे सुयोग्य प्राप्त होगये परन्तु केवल दो तीनही विद्यार्थी अभीतक आये हैं, विद्याभिलाषियोंको शीघ्रताकर विनयपत्र नीचे लिखे पतेसे भेजना चाहिये.

धन्नालाल काशलीवाल

मंत्री, विद्याविभाग.

श्री जिनपंच कल्याणकोत्सव मूड बिद्री.

आलडक निवासी श्रीमान श्रेष्ठिवर्य्य पाचपगौडाजीने श्रीशांतिनाथस्वामीके मन्दिरका जीर्णोद्धार कराके अब प्रतिष्ठा करनेका विचार किया है. हमारे यात्रा करनेवाले भाईयोंके "एक पंथ दो काज" होंगे. इस लिये ऐसे अवसरपर अवश्य पधारना चाहिये. प्रतिष्ठा फाल्गुण सुदी ११ से प्रारंभ हो १५ को मोक्ष कल्याण हुए पश्चात् पूर्ण होगी.

सूचना.

प्रगट हो कि श्रीयुत पंडित नरसिंहदासजी अजमेरवाले, दिगम्बर जैनविद्वज्जन सभाके उपमंत्री नियत किये गये हैं. इसलिये उपर्युक्त सभासे जिन महाशयोंको पत्रव्यवहार करना हो वह उक्त पंडितजीसेही करें?

सम्पादक.

Registered No. B. 288.

श्रीवीतरागाय नमः

जैनमित्र.

जिसको

सर्व साधारण जनोंके हितार्थ,

दिगम्बर जैनप्रान्तिकसभा बंबईने

श्रीमान पंडित गोपालदास बरैयासे सम्पादन कराकर

प्रकाशित किया.

जगत जननहित करन कँह, जैनमित्र वरपत्र।
प्रगट भयहु–प्रिय! गहहु किन? परचारहु सरवत्र! ॥

तृतीय वर्ष } माघ, फाल्गुन सं. १९५८ वि. { अंक ५-६ वां.

नियमावली.

१ इस पत्रका उद्देश भारतवर्षीय सर्वसाधारण जनोंमें सनातन, नीति, विद्याकी, उन्नति करना हैं!

२ इस पत्रमें राजविरुद्ध, धर्मविरुद्ध, व परस्पर विरोध बढानेवाले लेख स्थान न पाकर, उत्तमोत्तम लेख, चर्चा उपदेश, राजनीति, धर्मनीति, सामायिक रिपोर्ट, व नये २ समाचार छपा करेंगे.

३ इस पत्रका अग्रिमवार्षिक मूल्य सर्वत्र डांकव्यय सहित केवल १।) रु० मात्र है, अग्रिम मूल्य पाये विना यह पत्र किसीको भी नहीं भेजा जायगा.

४ नमूना चाहनेवाले)॥ आध आनाका टिकट भेजकर मंगा सक्ते हैं.

चिठ्ठी व मनीआर्डर भेजनेका पताः—

गोपालदास बरैया सम्पादक.

जैनमित्र, पो० कालबादेवी बम्बई—

'कर्नाटक' प्रिंटिंग प्रेस, कांदेवाडी, मुंबई.

"शोक पर शोक."

हम अभी श्रीयुत सेठ दौलतरामजी डिपुटी कलक्टरके कठिन शोकसे निर्वृत्त नहीं हुए थे. कि हाय यह दूसरा और तीसरा. विषम हृदय विदारक वज्र हमारे सिरपर पड़ा. अरे निरदयी काल! तू इस दयामयी जातिके पीछे क्यों पड़ा है? सो मालूम नहीं होता; यदि तू इन सज्जन स्वपरोपकारी ज्ञानवान जीवोंकोंका ग्रास न करता तो क्या तू शक्तिहीन कहलाया जाता? हा हत!

पाठको! अब हम उन बाबू बच्चूलालजी प्रयागवालोंकी मूर्ति मात्र देखनेको तरसेंगे; जिन्होंने अपनी तीक्ष्ण बुद्धि व स्वधर्मानुरागसे अति कठिण परिश्रमके साथ दिगम्बर जैन परीक्षालयका कार्य छह साल इस उत्तमताके साथ चलाया कि जिसका फल आश्चर्यजनकही नहीं वरन प्रत्येकसे होना दुःसाध्य है इसके अतिरिक्त महासभाके प्रत्येक कार्मोंमें ये तनमनधनसे सहायता देनेमें उद्यत रहते थे. अपनी जीविका एक ऊंचे दर्जेकी नौकरीपर करनेपरभी इन्होंने जो कार्य किये है, वे सर्वथा प्रशंसनीय हैं कुछ दिनों "जैनी" पत्र भी आपकी सहायतासे निकलता रहा, तथा आजकल जैनगजटमें भी ये पूरी २ मदत देते थे. हाय!

दूसरा शोक—श्रीयुत सेठ हीराचन्द नेमीचन्दजी शोलापूरवालोंके प्रिय सुपुत्र मानिकचन्द व जीवराजजीका है. जिन्होंने अपनी इस छोटीही अवस्थामें पश्चिमी विद्याकी उच्चश्रेणी बी. ए. तक की शिक्षा पाई थी व थोड़ेही दिनोंमें अपने पिताका सम्पूर्ण भार अपने सिर ले इन्हें एक प्रकारसे निश्चिन्त कर देना परम धर्म समझा था इतनी ही नहीं बरन यहांकी प्रांतिकसभाका व बम्बई सभाका जो कुछ काम था सब आपही अपने पिताके बदलेमें करते थे. हाय! ऐसे २ होनहार जातिधर्म रक्षक रत्नोंकी यह अन्तिम अवस्था सुन २ कर तथा इस जैनसमाजके ऐसे २ अंगोके अचानक टूट जानेसे हमारे समस्त मनोरथ व साहस एकदम गिर जाते है! न जाने क्या भवितव्य है!

प्रार्थना.

यह सर्व भाई जानते हैं कि संसारके संपूर्ण कार्य रुपयेसे ही चलते हैं. जब मनुष्यके पास द्रव्य नहीं रहता तब वह ऐसा शिथिल हो जाता है कि कोई भी उद्योग नहीं कर सक्ता ठीक इसी प्रकार हमारे इस सभाके कार्योंको समझना चाहिये. इसके जिस फंडमें द्रव्यकी त्रुटि होवेगी वही कार्य शिथिल हो जावेगा. इसको सोचकर आप लोगोंसे यह प्रार्थना करना पड़ती है कि जिन २ महाशयोंपर इस सभासंबंधी उपदेशकभण्डार, सरस्वतीभण्डार, विद्यालय, प्रबंधखाता, (वार्षिक सभासदी) तीर्थक्षेत्रखाता, जैनमित्रखाता आदिके जितने रुपये हों वह सब कृपाकर भेज देवें, जिससे यह सब कार्य सकुशल चलते जावें.

विज्ञापन.

हमको दो तीन ऐसे जैनीभाईयोंकी आवश्यकता है. जो वही खाता आदिके हिसाब किताब भली भांति कर सक्ते हों तथा थोड़ी बहुत अंग्रेजी भी जानते हों जिससे राज्य सम्बन्धी कार्योंमें उनसे मदद मिल सके. वेतन योग्यतानुसार पच्चीस तीस रुपया महीने दिया जावेगा. परन्तु पहिले हमको किसी प्रतिष्ठित पुरुषसे चालचलन तथा ईमानदारीके विषयका पत्र भिजवाना होगा. क्यों कि तीर्थक्षेत्रोंकी मुनीमीके लिये हम उन्हें मुकर्रर करना चाहते हैं. पत्रव्यवहार हमसे करें!

शा. चुन्नीलाल झवेरचन्द,
मंत्री—तीर्थक्षेत्र.

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

जगत जननहित करन कहं, जैनमित्र वरपत्र ॥
प्रगट भयहु-प्रिय! गहहु किन?, परचारहु सरवत्र! ॥ १ ॥

तृतीय वर्ष. | माघ, फाल्गुन सं. १९५८ वि. { अंक ५,६

सम्पादकीय टिप्पणियां.

देश हितैषी — श्रीमान छोटे लाटसाहिब लखनऊमें कागजकी कल देखने गये थे. क्यों कि इन्हें भारतवर्षमें कलाओंकी वृद्धि का सदाकाल ध्यान रहता है. नवलकिशोर प्रेसके स्वामी श्रीयुत प्रयाग नारायण भार्गव (जिन्हों-ने लोहे की ढलाईका अपने यहां एक कारखाना खोला है) से बोले की आप अपने यहां छुरी कैंची भी बनवाया करें तो देशका भला हो. जब श्रीमान को देशका इतना ध्यान है तो समर पाकर देशी कारीगरी अवश्यही उन्नति करेगी. सत्यही हमारे देश भाइयोंको भी चाहिये कि अपने काम की चीजें आप बनानेका प्रयत्न करें और जो २ वस्तु आज तक बन चुकी हैं उन्हें काममें लावें.

इस देशमे जो लोग विलायत पढ़ने जाते उनपर कोई दबाववाला नही रहता इस कार[ण] विलायतमें स्वतंत्ररूप से वे विद्यार्थी गण दूषित चरित्रके हो जाया करते हैं. इसलिये उ[न] स्वतंत्र विद्यार्थियोंके चरित्र निरीक्षणके लि[ये] एक सभा मुकर्रर होनेवाली है. इसकी सला[ह] करनेकेलिये डाक्टर मल्लिक बम्बईके गवर्नर[से] मिले और गत ता. १२ को रवाना हो महारा[जा] बड़ोदाके महमान हुए हैं. आशा है कि [इन] महाशयसे बहुत कुछ भलाई होगी.

अल्मोड़ा निवासी पंडित श्रीकृष्णजीने भानुताप नामक यंत्र बनाया है और जिस[में] सूर्य की किरणोंहीके द्वारा सब प्रकार [का] भोजन पकता है उसी को लखनऊकी बा[रा]दरी और कालेज भवनके बीचमें १० बजेसे [...] बजे तक टिकट लगा कर दिखाया था. देश

तैषियोंको उचित है कि इन महाशयको सहायता दे कर उनका हौसला बढावें.

महाराजा ग्वालियरने अपनी राजधानीमें उच्च कुलकी महिलाओं (स्त्रियों) की शिक्षाकेलिये एक पाठशाला स्थापित की है. श्रीमती महाराणी साहिबाने महाराष्ट्र भाषामें " स्त्री शिक्षासे लाभ " इस विषयपर एक ललित व्याख्यान दिया था. उस समय अनेक कुलवती स्त्रिया उस स्थानपर उपस्थित थीं. धन्य है!

श्रीमानका उपदेश— गत १९ फरवरीको कलकत्तेके विश्वविद्यालयमें कानवोकेशनकी महती सभा हुई थी. उसमें श्रीमान लाटसाहिबने व्याख्यान दिया था; जिसका सारांश यह है:—

१ जो लोग विद्याध्ययन कर सरकारी दफ्तरोंमें नौकरी करते हैं उन्हें उचित हैं कि सेवामें नियुक्त होनेपर अपने कर्तव्य का विचारपूर्वक पालन करें और निश्चय रक्खें कि अंगरेज गवर्नरोंकी यह इच्छा नहीं है कि देशी लोग अपनी योग्यताके पीछे हटे रहें. श्रीमानका यह अभिप्राय था कि इस देशके लोग अपने देशकी भाषा, रीति, नीति, जैसी जानते हैं, संभव नही कि वैसी विदेशी जन जानसकें.

२ वकील बैरिष्टरोंको चाहिये कि पहिले तो जिस विषयका मुकद्दमा है उसपर अधिक ध्यान दें. दूसरे जो कुछ कहें ललित और मधुर भाषामें कहनेका प्रयत्न करें.

३ जो लोग विद्यालयोंमें अध्यापकी का कार्य करते हैं उन्हें ध्यान रहे कि वे लोग विद्यार्थियोंको तोते के ऐसा रटाया न करें, इस पढाई से ज्यों त्यों पास तो कर लेते हैं; परन्तु उन्हें लौकिक वा व्यवहारिक ज्ञान प्रायः थोड़ा होता है.

४ देशी समाचार धीरे २ उन्नति तो कर रहे हैं और गंभीरता भी धारण करते जाते हैं. परन्तु अत्युक्ति और नियम उलंघन करनेका स्वभाव उनके प्रभावको न्यून करता है. देशी समाचार पत्रोंका मुख्य धर्म यह है कि वे अपने लेखोंकेद्वारा लोगोंमें उत्तेजना उत्पन्न करनेके स्थानमें जातीय गौरव की उन्नत्ति करनेके यत्नोंको बतलावें. सर्व साधाराण को ज्ञानवान बनावें और जातीय विचारोंको सुधारें.

अन्तमें श्रीमानने कहा कि आप लोग समझ रक्खें कि हिन्दुस्थान न हिन्दुओंकेलिये है और न मुसलमानोंके; बंगाल न बंगालियोंके लिये है और न दाक्षिण दक्षिणियोंके लिये. भारत केवल भारतवासियों के लिये नही है. पिछली दो सदियोंसे पश्चिमी रक्त ने पूर्वी धमनीमें जाकर उसे सजीव किया है. अब अंगरेज और भारतवासियोंको बहुत दिन एक साथ रहना होगा. तुम हमको छोड नहीं सकोगे. हम तुम्हें छोड़नेसे शक्तिहीन हो जावेंगे. ईश्वरकी इच्छासे इंग्रेज और भारतवासियोंका यह शुभ मिलन हुआ है. सारे देशको एकताके सूतमें बांधकर सबके सुख बढ़ानेको चेष्टा करना हमारा एक मात्र लक्ष्य होना चाहिये. श्रीमानने जो सदुपदेश दिये हैं, वह यथार्थमें सत्य और ग्रहण करने योग्य है.

भूकम्प—एशियाई रशियाके समारवा नामक स्थानमें एक ऐसा भूचाल आया कि नगरके दो हजार मनुष्य मरगये. उस नगरमें प्रायः ऐसाही

भूचाल हुआ करता है. यह नगर अनुमान १३०० वर्षसे आबाद है!

महाराजका आगमन—प्रिन्स आफ वेल्स आगामी नवम्बरकी पहिली तारीखको विलायतसे रवाना होवेंगे.

पन्नामहाराज—बड़े लाट साहिबने महाराज पन्नाके बारेमें अभीतक अपनी कोई राय प्रकाश नहीं की. जिसके जाननेके लिये लोग उत्कंठित हैं!

नवीन टिकट—आगामी २६ जूनसे वर्तमान राजाधिराजकी मूर्तिका डांक टिकट छपके प्रकाशित होनेवाला है.

जबरदस्ती अपना—"जैनधर्म प्रकाश" स्वेताम्बरपत्रमें एक प्रश्नका उत्तरयों छपा था कि देवदर्शनकी प्रतिज्ञावाला दिगम्बरी प्रतिमाके दर्शन कर प्रतिज्ञाको अखंडित नहीं रख सक्ता तो फिर मक्सीजीके मन्दिरको जिसमें सरासर दिगम्बर प्रतिमा स्थापित हैं. स्वेताम्बरी क्यों जबरदस्ती अपना कहकर लड़ते हैं?

मुनिका शरीरान्त—पाठको, अभी हमके श्रीदिगम्बर मुनिवर्द्धमानजीका चरित्र आपको सुनाये एकही महीना व्यतीत हुवा होगा तथा आपको स्मरण होगा कि हमने उनके विशेष चारित्र चरित्रको सुनानेकी प्रतिज्ञाभी की थी. परन्तु हाय! इस विकराल पंचमकालने उनके प्रचंड साहस और निर्म्मल स्वभावकी प्रशंसा लिखनेका शुभ अवसर न आने दिया. हमारे इस विषय चारित्रपदको शून्य कर दिया तथा उक्त महाराजकी शांति दिगम्बर मूर्तिको देखने हेतु हमें निरन्तरको वंचितकर दिया.

उपर्युक्त मुनिराजके शरीरान्तका समाचार विशेष भयानक है. इसको सुनकर रोमांच हो आते तथा पंचमकालकी लोक मुर्खतापर अत्यन्त शोक होता है यद्यपि इस विषयपर एकाएक विश्वास नहीं होता है तथापि हमने जिस प्रकार सुना है उस प्रकार प्रकाश करते हैं.

महाराजका चारित्र दिनपर दिन बढताही जाता था. वह केवल एक अन्न मूंगमात्रका आहार लेते थे और इसी कारण शरीरभी अति कृश हो गया था अभी सांगली स्थानमेंसे इन्होंने केशलुंचन किया तो वहांके श्रावकोंने भक्तिवश विचारा कि महाराजका अभिषेक करना चाहिये. परन्तु यह नहीं सोचा कि मुनिको तो स्नान करना वर्जनीय है फिर अभिषेक करनेकी किस शास्त्रमें आज्ञा लिखी होगी. बस मूर्खतावश चट उसी समय मन दो मन दूध, दही, ईक्षुरस, मंगाकर महाराजके ऊपरसे ढोल दिया. वह बिचारे भोले शांति परिणामी किसी प्रकार इनके हठको रोक नहीं सके निदान अति शरीर कृश होनेसे तथा केश लुंचन होनेसे, ठंडका विशेष प्रवेश हो गया और उसकी तीव्र वेदनासे महाराजका समाधि सहित शरीरान्त होगया. धन्य है ऐसे दृढ परिणामोंको कि अंततक लेश मात्रभी च्युत नहीं हुए.

नवीन पाठशाला—फाल्गुण शुक्ल तृतीया बुधवारके दिन **अमरावतीमें** बड़े आनन्दके साथ जैन पाठशालाकी स्थापना हो गई. जिसमें संस्कृताध्यापक पंडित नृसिंहलाल शास्त्री जयपुर वाटिका निवासी तथा हिन्दी मराठी अध्यापक पं. मोतीसा नियत किये गये.

होनहार संस्कृत विद्यालय.

दक्षिण महाराष्ट्र जैनसभाके कई वर्षके उद्योगसे इस वर्षके अधिवेशनमें छह सात हजार रुपयाका चन्दा इकट्ठा हो गया. और कोल्हापुरमें विद्यालय स्थापन करना निश्चित हुआ. देखें यह पाठशाला कबतक दर्शन दे हर्षित करती है.

नगर समाचार.

स्वेताम्बर समाजमें हलचल—बम्बईकी "जैन एसोसियेशन आफ इन्डिया" ग्वालियर सरकारके न्यायसे बहुत असंतोषित है. उक्त राज्यके मक्सी पारनाशथ तीर्थके फैसलेसे नाखुश हो उसने दश हजार रुपयाका चन्दा वास्ते चलाने कार्यवाहीके इकट्ठा किया है. और बड़े २ विचार बांधे है. इसका मूल कारण मक्सीका खारिज किया हुआ स्वेताम्बर मुनीम है.

बी. ए. परीक्षा—बम्बई विश्वविद्यालयमें दो गुजराती ब्राह्मणपुत्रीं बी. ए. परीक्षामें उत्तीर्ण हुई हैं. जिनकी दूसरी भाषा संस्कृत थी.

नये मजिस्ट्रेट—बारांबंकी जिलेके डाक्टर श्यामसबलजी अब बम्बईवासी हैं! अपने व्यवसायमें अच्छी नामवरी करनें उपरान्त उन्होंने सरकारका अनुग्रह भी लाभ किया है वह शहरके जस्टिस आफ दी पीस बनाये गये हैं.

लाटके यहां मछुए—बम्बईके मछली पकड़नेवाले बड़े जबरदस्त मालूम होते हैं. वे एक दरख्वास्त लेकर एकाएक लाट साहिबके यहां पहुंचे थे. दरख्वास्तमें लिखा हुआ है: देखो कि लाट! ये जो तुह्मारी बम्बई है इस टापूको न तुम पहिले जानते थे न कोई जानता था. मछली पकड़ते २ हमही लोगोंने इस टापूको निकाला था. इस टापूमें रहकर यदि हम लोग बिना रोकटोक मछली न पकड़ने पावेंगे तो तुम हमसे बड़ा अन्याय करोगे. लाट साहिबने इन कोली मछुओंके हाथसे यत्नपर्वक दरख्वास्त ली और अपने मंत्रीसे उनके दो आदमियोंकी बातचीत कराई.

मूडबिद्री महात्म.

(गुजराती मुम्बई समाचारसे उद्धृत.)

मद्रास प्रान्तके गवर्नर सा० ब० ने जैनधर्मकी प्राचीनता दिखलानेवाले मूडबिद्री नामक स्थानके दौरेमें इस प्रकार लिखा है:

यह शहर दक्षिण कानड़ा जिलेमें जैन धर्मके सर्व तीर्थोंमें उत्तममन्दिरोंवाला मंगलोरसे २० मीलके अन्तरपर है. यहांपर एक पुलिस थाना, अस्पताल, सर्व रजिस्ट्रारका आफिस, व एक मुसाफिरखाना है. जैनियोंकी थोड़ीसी आबादी है.

इस नगरमें जो जैनियोंके मन्दिर हैं वे चन्द्रनाथ महाराजको अर्पण किये हुए हैं. यह प्राचीन चतुर्थ* जैनके कुटुम्बकी जगह है. जिसका प्रतिनिधि अभी जीवित है. और उसको सरकारसे थोड़ीसी पेन्शनभी मिलती है. यहांका मन्दिर ईस्वी सन् चौदहवीं सदीका बना हुआ कहते हैं. और जैनियोंके मध्यभागमें होनेके कारण गुजरात और दूसरे दूर २ के यात्री लोग वहां आते हैं मूडबिद्री ग्राम मंगलोरसे ईशान कोनमें २२ मील दूर पर्वतकी शिखरोंपर है. लेखोंके प्रमाणसे "इसका बिद्री" "वेणूपुर" या "वंसपूर" नाम जाना जाता है. बिदारू और वेणू इन दोनों शा-

* जैनी ब्राह्मणोंके चतुर्थ, पंचम ये दो भेद हैं.

ब्दोंका अर्थ बांस होता है. और तुलू देशके राज्यसे लगता है. वहांपर जैनियोंके मुख्य महाराज चारूकीर्ति पंडिताचार्य स्वामीकी गादी है. वे एक मठमें रहते हैं. जहांकि जैनधर्मके लेखोंका और बड़े ग्रन्थोंका बड़ा संग्रह (पुस्तकालय) है और वहां १६ मन्दिर हैं उनमें कितने एक बड़े सुंदर पत्थरोंके बने हुए हैं. उनकी छतेंभी बड़े २ पत्थरोंकी बनी हैं. इमारत बनानेकी इस ढंगकी हुनरमंदी यही देखने योग्य है. अर्थात् एकही पत्थरका बड़ा ऊंचा स्तंभ है जिसे मानस्तंभ कहते हैं. वह सात मन्दिरोंके साम्हनेके भागमें खड़ा हुआ है. और तांबेके पत्रोंसे जड़े हुए लकड़ीके दो ध्वजस्तंभ (मानस्तंभ) व मन्दिरोंके बीचमें लगे हैं. इस बस्तीमेंके ये स्तंभ वगैरह छः सतार इस नामसे प्रसिद्ध है और वह जैनी सेठ लोगोंकी तरफसे बनाये गये हैं ऐसा जान पड़ता है. यह सोलह मन्दिर पृथक २ तीर्थंकरोंको अर्पण किये हुए हैं.

तथा बस्तीके मन्दिर सर्व तीर्थंकरोंको अर्पण किये हैं; और दूसरी बस्ती* बेधक्षोंके मन्दिर हैं. सबसे बड़ा और सुन्दर "हौसबस्ती" नाम एक नवीन मन्दिर है वह चन्द्रनाथको अर्पण किया हुआ है तथा ईस्वी सन् १४२९-३० में बनाया गया है. इस मन्दिरमें दोहरी भीतें व एक बहुत ऊंचा मानस्तंभ और प्राचीन कारीगिरीका नमूनारूप नक्शी काम किया हुआ एक दरवाजा है. सबके ऊपरका भाग लकड़ीका बना हुआ है तथा उसकी ९ वर्ष पहिले मरम्मत की गई थी.

इस मंदिरमें एक गरभगरूड़ का मन्दिर है जिसके आगें तीर्थंकरमंडफ, चित्रमंडफ, गडीगे मंडफ ये तीन मडफ हैं. चित्रमंडफके आगें मरूदेवी मंडफ है. जो ईस्वी सन् १४९१-९२ में बना है. इसके पायेके चौतरफ नक्शीका काम किया गया है मन्दिरके अंदर अंधेरे भागमें मूर्ति है जिसका यात्रियोंको दूरसे आभास होता है यह पंचधातुओंकी बनी हुई है. परन्तु चांदीका भाग ज्यादा है तिसके पीछे गुरुगल बस्ती है वहांपर जैन सिद्धान्तके दो प्राचीन लेख एक पेटीमें तीन तालोंके अन्दर बड़ी हिफाजतसे रखे हैं जिसकी चावी तीन जुदे २ अधिकारियोंके हाथमें है. यात्रियोंसे पैसा लेकर इन सिद्धांतोंके दर्शन कराते हैं तथा उसकी नकल पांच बरससे जैनी सेठ लोगोंकी तरफसे नागरी व कानडी अक्षरोंमें हो रही है. इस छोटी बस्तीमेंभी गर्भगरूड तीर्थंकरमंडफ और नमस्कार मंडफ है. मूडबिद्री ग्राममें हाल २३ घर जैनीयोंके हैं और कितने एक नष्ट हो गये हैं. ऐसा जान पड़ता है कि यहां जैनीयाके गुरू (इन्द्र) और श्रावक नामके दो विभाग हैं. गुरू लोग अपनेको ब्राह्मण मानते हैं. सर्वही जैनी यज्ञोपवीत पहिनते हैं. गुरू लोग श्रावकोंके साथ भोजन व्यवहार रखते हैं परन्तु उनकेसाथ बेटी व्यवहार नहीं करते. इस नगरमें खास जैनीयोंके मकानोंकी तरफ रास्तेपरके ऊंचे झाड़ों पर हजारों उड़ते हुए पक्षी दिखते हैं. इन प्राणियोंको यह स्थान अति प्यारा होनेका मुख्य कारण जैनियोंका प्राणियोंपर अतिशय दया होना सुबूत होता है.

---

* बस्ती शब्दका अर्थ मंदिर समूह है.

उत्तरावली.

जैन गजट अंक ७ तारीख १६ फरवरी सन १९०२ में "प्रश्नावली" इस शीर्षक का लेख एक जैनी की तरफसे छपा है. जिसमें प्रश्नकर्त्ता ने प्रतिष्ठा करानेवाले पंडितोके संबंधमें ७ प्रश्न किये हैं उन प्रश्नोंका उत्तर देनाही इस लेख का उद्देश है.

प्रश्न १—पंडित भागचन्दजीने प्रतिष्ठाकी परिपाटीको क्यों चलाया.

उत्तर—क्योंकि आजकलके तेरहपंथियोंने प्रतिष्ठा करानेसे उपेक्षा ग्रहण कर रक्खी थी इस कारण प्रतिष्ठा की परिपाटीका तेरहपंथियों में प्रचार करना ही उनका मुख्य प्रयोजन था.

प्रश्न २—भागचन्दजीने प्रतिष्ठा कराई कुछ लिया या नहीं?

उत्तर—कुछ नहीं लिया.

प्रश्न ३—तो अब पंडितलोग क्यों लेते हैं?

उत्तर—पहिले कस्तूरचन्दजी बंडी अथवा अ-मरचन्दजी दीवानसरीखे धर्म्मात्मा धनाढ्य भक्ति-पूर्वक पंडितोंकी आर्थिक सहायता करते थे. परन्तु आजकलके धनाढ्य लोभी और जड़ मात्र रह गये हैं. पंडितोंमें से भी किसी लोभिष्ट महात्माने उन का अनुकरण कर दिखाया फिर क्या था? "लोभी गुरू लालची चेला. दोउ जगतमें ठेलम ठेला" की लोकोक्ति सार्थक हो गई.

प्रश्न ४—जो लोग लेते हैं वे समाजमें प्रतिष्ठित हैं या अप्रतिष्ठित?

उत्तर—जो टहराव करके लेते हैं वे अप्रति-ष्ठित हैं.

प्रश्न ५—भट्टारक लोग तो प्रतिष्ठा कराईका बहुत साधन मन्दिर धर्मशाला आदिमें लगाभी दिया करते थे. पंडित लोग यह धन कहां लगाते हैं क्या यह जैनीयोंके पुरोहित हैं?

उत्तर—भट्टारक लोग ग्रहस्थी नहीं थे इस कारण उनका बहुत साधन मन्दिर धर्मशाला-ओंमें लगता था. परन्तु पंडित ग्रहस्थी हैं इस कारण उनका बहुत साधन ग्रह जंजालमेंही लगता है. यह पंडित जैनियोंके पुरोहित नहीं हैं किन्तु बराबरके भाई हैं क्योंकि जैनी और आज-कलके वैश्य पंडित दोनों एकही वर्णके हैं परन्तु ब्राह्मण पंडितोंको शायद पुरोहित या ग्रहस्था-चार्य्य कहा जाय तो कुछ अत्युक्ति नहीं होगी-

प्रश्न ६—यदि पंडितोंको उक्त धन लेना उचित नहीं है तो पंडितोंकी जीविका का क्या उपाय है? यदि यह कहा जाय कि जीविका दूसरे कामोंसे करो पंडिताईसे नहीं; तो कोई पंडित रोज २ प्रतिष्ठा कराने देश परदेश नहीं जावेगा. और उस समयतक कोईभी धुरंधर पंडित नहीं हो सक्ता. ज-बतक उसका सारा समय लिखने पढ़नेमें व्यय न हो.

उत्तर—पंडितोंकी जीविकाका उपाय वर्णा-नुसार है. यदि पंडित वैश्य है, तो उसकी जीविकाका उपाय वाणिज्य है. यदि ब्राह्मण है तो वैश्योंकर दिया हुआ भक्तिपूर्वक द्रव्यही उसकी जीविकाका उपाय है. प्रतिष्ठाकारकोंको चाहिये कि ब्राह्मण पंडित (गृहस्थाचार्य्य) से प्रतिष्ठा कराकर भक्तिपूर्वक उसका आर्थिक सत्कार करें. गृहस्थाचार्य्य भी किसी संतोषीको बनाना चाहिये. और ऐसे ब्राह्मण पंडित अथवा गृहस्था-चार्य्यही निरन्तर विद्याभ्यासमें काल व्यतीत होने-से धुरन्धर पंडित हो सक्के हैं.

प्रश्न ७—क्या उपाय है? कि जैनियोंमें धुरन्धर पंडित हों, और उनकी जीविका निर्दोष हो, और जैनी मात्र उनका आदरसत्कार उसी तरह करें जैसा वैष्णवभाई एक उत्कृष्ट ब्राह्मण पंडितका करते हैं.

उत्तर—जैनधर्म प्राचीन है. आजकल जो प्रचार और क्रिया ब्राह्मणोंमें दीखती है वह सब जैनियों ही की है. केवल पदार्थ और अभिप्रायोंहीमें फर्क पड़ गया है. उस समयतक धुरंधर पंडित नहीं हो सके. जबतक कि उसका सारा समय लिखने पढ़नेमें व्यय न होय, और जबतक आजीविकाकी तरफसे निश्चिन्तता नहीं होगी तबतक सारा समय लिखने पढ़नेमें व्यय नहीं हो सक्ता. और आजीविकाकी निश्चिंतता जबही होगी. जब कि धनकी आमदनीका एक भिन्न द्वार खोला जाय. यही सब समझकर भरत महाराजने ब्राह्मणवर्ण स्थापित किया था. इनकी आजीविकाके ...वास्ते इतर वर्णवाले भक्तिपूर्वक द्रव्य अर्पण करते थे. और यह ब्राह्मण लोग आजीविकासे निश्चिंत होकर निरन्तर विद्याभ्यास करके न्याय, व्याकरण, साहित्य, धर्मशास्त्र, गणित, वैद्यक, ज्योतिष, मंत्रशास्त्र आदि अनेक विद्याओंके पारगामी धुरंधर पंडित होते थे. इनही ब्राह्मणोंद्वारा इतर वर्णवालोंके संतानका संस्कार करण, संतानको विद्याभ्यास कराना, जन्मपत्र वर्षफलादिक बनाना, भूत पिशाचादिकोंसे मंत्रद्वारा रक्षा करना, बीमारोंका इलाज करना, धर्मशास्त्र सुनाना, इत्यादि अनेक उपकार होते थे परन्तु फर्क केवल इतनाही पड़ गया है कि पहिले धनाढ्य वैश्य सरल और उदार होते थे. इस कारण ब्राह्मणोंकी भक्तिपूर्वक आर्थिक सहायता हमेशा करते रहते थे. और ब्राह्मणलोग संतोषी व समदर्शी होते थे कि जो जितना मिला उतनेही में संतोष करके धनाढ्य और दरिद्रीको समानदृष्टिसे देखते थे परन्तु आजकल कालदोषसे धनाढ्य तो जड़ और कृपण हो गये. इस कारण सब कार्य मुफ्तहीमें निकलना चाहते हैं. और ब्राह्मण लोभाविष्ट और विषमदर्शी हो गये. इस कारण बिना पैसे कुछ भी कार्य न करके धनाढ्योंकी खुशामद और दरिद्रोंसे उपेक्षा करने लग गये. इसलिये दोनोंको चाहिये कि अपने २ दोष निकालकर दूर करें तो यथार्थ मार्गकी प्रवृत्ति हो जाय अथवा ऐसा तो हैही नहीं कि सब एक सारखे हो जावेंगे. जो दोषी होंगे वह निंद्य कहलावेंगे. और जो निर्दोष होंगे; वे प्रशंसाको प्राप्त होंगे. अजीर्ण होनेके भयसे भोजनका त्याग करना बुद्धिमानोंका काम नहीं है. इस कारण अब समस्त जैनीभाइयोंसे प्रार्थना है कि जो इस जिनधर्मकी ऐसी अवनति दशा देखकर आपके हृदयमें कुछ चोट लगी है, यदि आप जैनियोंमें धुरंधर पंडितोंके दर्शनाभिलाषी हैं, और यदि इस दशाको सुधारनेकी अन्तःकरणमें सच्ची उत्कंठा है तो दक्षिण देशमें रहे सहे ब्राह्मणोंका जीर्णोद्धार करके इस धर्मको धुरंधर पंडितोंसे परिपूर्ण कर दीजिये इसका सहज उपाय यहीहै कि दक्षिण देशके जैन ब्राह्मण बालकोंमेंसे अच्छे २ तीक्ष्ण बुद्धिवाले दश बीस बालकोंको लाकर उनको उत्तम पारितोषक दे कर अपने विद्यालयमें उनको उच्चश्रेणी की विद्याभ्यास कराओ. आजकलकी प्रणालीसे धुरंधर विद्वानोंका होना कष्टसाध्य ही नहीं किंतु असंभव है. परन्तु यह कार्य भी बिना धनकी

सहायताके नहीं हो सका इस कारण समस्त सज्जनोंसे यही प्रार्थना है कि, विद्यालयमें से आर्थिक न्यूनता की न्यूनता कीजिये.

समस्त सज्जनोंका दास,
गोपालदास बरैया.

जैनमित्रके मित्रगणो !

(जरा इसे भी पढ़िये)

मनहर

आवैगो अवश्य प्रतिमास सेवकाईहेतु,
खबरें सुनावैगो विचित्र यत्र तत्र की!।
भरम भगावैगो जगावैगो सुज्ञान ज्योति,
उन्नति करावैगो सु धरम पवित्र की ॥
प्रेमीजू विचित्र राज चित्र दरसावैगो,
हंसावैगो सुनाय चर्चा जगके चरित्र की।
नेम निरवाहगो बढ़ावैगो सुप्रेम प्यारे!
कीजिये ग्रहण प्रति जैनमित्र पत्रकी ॥ १ ॥

सवैया.

वादि विवादन वीरन के उर,
तीरसे तीखन लेख चलावै।
काम परे पर न्याय को दंड लै,
होय प्रचंड पखंडन दावै ॥
प्रेमी पुरातन सत्य सनातन,
आपनो धर्म सदैव रखावै।
ऐसे बहादुर पत्रको आदर,
कीजिये नागर! जो मन भावै ॥ १ ॥

ग्राहकों प्रति निवेदन.

नौकरी कीन्हीं खरी इक साल,
करी न कभीं कबहूं सुन लीजे!।
बारह बार बराबर बाखर,
द्वार पै ठाड़ो रहै अति खीजै ॥
प्रेमीजू तापर भांतिन भांतिके;
देवे भले उपदेश पतीजे!।
याहू पै जो मरजी नहिं तौ,
अब देय बिदाई बिदा कर दीजे ॥ २ ॥

प्रिय ग्राहको!

आज इस पत्र को प्रकाशित हुए प्रायः दो वर्ष व्यतीत हो गये. इसने नियमित समय पर आप की सेवकाईमें उपस्थित होने हेतु कभी आलस्य नहीं किया. और अपने रंग ढंगसे अर्थात् कागज छपाई आदिकी उत्तमतासे प्रायः सभी पाठकोंका प्यारा बना रहा. इसके सिवाय आजतक इसके द्वारा जिस प्रकारके आवश्यक लेख व समाचार प्रकाशित हुए हैं और उनसे जो २ लाभ हुए हैं वह आप लोगों से छिपे न होंगे; सच पूछो तो दिगम्बर जैनप्रान्तिकसभा ने जो कुछ उन्नति की है उसका मुख्य कारण यही एक है.

परन्तु शोक है कि कितने एक भाई अभी तक इसको स्नेह तथा कृपा की दृष्टिसे नहीं देखते. बल्कि कोई २ तो अति रुष्ट होकर बंद करनेका हुक्म फरमाते हैं; भाईयो! रुष्ट होने का कारण इसके लेखोंकी कठोरता व निरसता नहीं है. और होने काहेको लगी? पत्र खोलनेकी तकलीफ ही कौन करता है, परन्तु सालके अखीरमें जो एक कारड लिखा जाता है और जिसके "सवारुपया भेजिये नहीं तो वी. पी." यह दो चार शब्द बांचना पड़ते हैं एक मात्र खफा होनेके कारण हैं, बस चट लिख मारा कि अब जैनमित्र हम नहीं चाहते हैं." इतनेपर भी यदि वी. पी. आया तो वापिस कर दिया. अरे! यह दो आना व्यर्थ खर्च हो जानेका भी दरेग नहीं करते, अतः हम भी अब ऐसे ग्राहकों को दूरहीसे राम २ करेंगे, जिनकी

बदौलत ४०९=)॥ का घाटा* पिछली वर्ष रहा. और हालमें १०० के करीब वी. पी. वापिस आये हैं.

पश्चात् अब हम अपने उन दृढ़, उदार, और प्रेमी ग्राहकोंसे प्रार्थना करते हैं कि, जो अंतःकरणसे इस पत्रकी वृद्धिके इच्छुक हैं और जिनके साहससे यह इतने कर्जेका बोझा अपने सिरपर रक्खे हुएभी आगे कदम बढ़ानेको उत्सुक है, और आशा करते हैं कि यह थोडेही दिनोंमें इस बोझेको अदेनियां ग्राहकोंकी छातीपर रख आप हल्का हो अपने उदार भाइयोंकी सेवा निरन्तर करने लगेगा.

पिछले अदेनियां ग्राहकोंके नाम पर कालिमा फेरने अर्थात् नाम काट देने पर वर्तमानमें हमारे ४०० ग्राहक हैं, जो प्रायः सबही हितैषी हैं. यदि ये प्रत्येक भाई एक २ दो २ ग्राहक बढ़ानेका प्रयत्न करें तो सहजमें एक हजार ग्राहक हो सक्ते हैं और फिर यह हमेशाके लिये दृढ़ हो सक्ता है.

इसमें कोई सन्देह नहीं कि यदि इस पत्रके अच्युत ग्राहक एक हजार हो जावें, तो शीघ्रही यह अपने पाठकोंकी पाक्षिक व सप्ताहिक रूपमें सेवा कर "उन्नति" इस शब्दका अर्थ दिखला देवें; नहीं तो यह कौन नहीं जानता; कि ऋणी मनुष्य उद्योगी होने पर भी कार्य कर दिखानेमें असमर्थ होता है.

अस्तु. अब हम पुनः उपरी प्रार्थनापर ध्यान दिलानेके लिये अपने ग्राहकोंको किंचित कष्ट दे अपने इस लेखको पूर्ण करते हैं और साथमें यह भी सूचित करते हैं कि सर्व ग्राहकगण पिछला सब बकाया चुकता कर अग्रिम मूल्य भेज शीघ्रही कृतार्थ करेंगे.

निवेदक,

नाथूराम प्रेमी, क्लर्क.

* देखिये वार्षिक रिपोर्ट पृष्ट ३१.

संक्षिप्त रिपोर्ट भाई अनन्तराज संघवे उपदेशककी.

दक्षिण प्रान्तमें दौरा करनेवाले उपदेशक भाई अनन्तराज संघवे की रिपोर्ट हमारे पास आई है जिसका सूक्ष्म व्योरा हम इस स्थानपर प्रकाश करते हैं.

कार्तिक कृष्णा ९ से माघ शुक्ला १४ तक इन्होंने पूना, श्रीगोंदे, अहमदनगर, करमाले, केम, वार्सी, कुरुडवाडी, करकंब, पंढरपुर, माढा, आष्टी, मोडनिम्ब, स्तवनिधिक्षेत्र, निपाणी, सांगली, बारामती आदि १६ स्थानोंमें दौरा कर जगह २ सभायें कर भाइयोंको प्रथक २ व्याख्यान सुनाये. तथा कितने एक भाइयोंको रात्रिभोजन कुदेवपूजनादिका त्याग कराया व अष्टमूल गुण स्वाध्यायादिकी प्रतिज्ञा करवाई. इनके द्वारा १४ सभासद प्रान्तिकसभाके सभासद हुए. उनके २३ व २३।) उपदेशक भंडारके इस प्रकार ४६। रुपयाकी प्रबंधखाते व उपदेशक भंडारमें आमदनी हुई. व ७ ग्राहक जैनमित्रके बनाये. इनके दौरे की विशेष हालत हम स्थानकी संकीर्णताके कारण प्रकाश नहीं कर सक्ते. तथापि उन महाशयोंको हम धन्यवाद देते हैं जिन्होंने इनके उपदेशद्वारा ऊपर लिखी प्रतिज्ञायें की तथा हमारे

भंडारको सहायता पहुंचाई, और उपर्युक्त उपदेशकसाहिबसे आशा करते हैं कि ये इस धर्मकार्यमें तन मन से परिश्रम कर सुयशके भागी होंगे. क्रमशः

" विपक्षियोंका साहस और हमारा सौभाग्य."

संसारकी गति विचित्र है. उसके सब पदार्थोंकी स्थितिमें समय २ पर परिवर्तन होता ही रहता है. जिसको कल आपने हाथीपर सवार मस्तकपर क्षत्र सहित देखा था, आज वही विपत्तिमें पड़ उसी मस्तकपर मृतिकाकी टोकनी रक्खे सड़कपर नंगे पांव दौड़ रहा है. तथा जिस रंकको आज नगरकी किसी गलीमें पड़ा २ एक रोटीके टुकड़े मात्रको त्राह २ करते आप देख रहे हैं, कल उसीके दरवाजेपर सैकड़ों भिक्षुकोंको पालन होते पाओगे. इसके सिवाय जिस स्थान पर थोडे दिन पहिले आपने एक आलीशान इमारत देखी थी आज वहीं तमाम शहरका कचरा घर बना हुआ है. और जहां आज एक टूटी झोपड़ी नहीं है, आश्चर्य नहीं कि कल वहीं बम्बई सरीखा सुन्दर शहर बस जावे. इसी प्रकार प्रत्येक जाति, प्रत्येक धर्म, प्रत्येक पक्षमें व प्रत्येक मनुष्यके स्वभाव, बुद्धि, बल, स्थितिमें हीनाधिक्यता होती रहती है.

किसी समय हमारा भी वह दिन था कि समस्त भारतवर्षमें एक इसी सर्वोपरि धर्मका झंडा चारों तरफ फहराता था. इसी मारतंडके प्रचंड प्रतापसे अन्योन्य धर्म खद्योत (जुगनू) सरीखे कहीं २ नजर आते थे. किसी समय वह दिन था कि इसी जैनजातिमें अनेक शार्दूल पंडित ऐसे मौजूद थे जो अनेक विधर्मी दिग्गज गयन्दवृन्दोंके मान मस्तकोंको अपनी विचित्र बुद्धि शूरता कर विदीर्ण करते थे. परन्तु हाय! आज वह दिन सन्मुख उपस्थित है कि जैनधर्म भारत वर्षके एक धर्ममेंसे निकला हुआ गिना जा रहा है; और जिसके अनुयायी केवल मात्र १४ लाख ही गिने हुए रह गये. आज वह दिन है कि हमारे धर्ममें पंडित नहीं. जो दो चार हैं भी वे बिचारे संसारी झगड़ोंसे लिप्त होनेके कारण दूसरोंका कुछ भी उपकार नहीं कर सक्ते. हाय वह एक्यता, वह धर्मवात्सल्यता, वह नम्रता आज हम लोगोंमेंसे बिलकुल कूच कर गई. आज उसी पवित्र सनातन जैनधर्ममें कई पक्षें खड़ी हो गई हैं. और व्यर्थ हम पहिले, हम पहिले, यह हमारा, यह हमारा. आदि कह कर वितंड विवाद कर आपसहीमें छुरीं चलाकर दूसरोंका भला कर रहे हैं. जिसमें लक्षादि द्रव्य व्यय करके रहा सहा जो कुछ है उसको भी जमींदोज करना चाहते हैं. भाइयो, अब आप हमारे ऊपर लिखे हुए का कुछ आशय समझे होंगे. अवश्य समझे होंगे! कारण यह दृश्य निरन्तर नेत्रोंके साम्हने उपस्थित रहता है.

पाठको! धर्म कहीं बांटा नही जाता और न पैसा देने पर मोल मिल सक्ता है. कारण वह एक पदार्थका स्वभाव है जो केवल अनुभव करनेसे ही प्राप्त होता है. ठीक इसीके अनुकूल रुपयोंद्वारा धर्म प्राचीन समीचन नहीं कहलाया जा सक्ता. इसके कहलानेका प्रयत्न करना.

धर्मके मोल मिलजानेकी आशा करना है. अस्तु. इससे सिद्ध है कि, जगह२ झगड़ा मचाकर अर्जी नालिशें दायर कर तथा लाखों रुपया धूलकी नाईं वकील बैरिष्टरोंमें बरवाद करनेसे अपने अभीष्टकी प्राप्ति नही हो सक्ती है. परन्तु यह प्राचीनता और समीचीनता बिना ज्ञानके नही जानी जा सक्ती. इससे हमको उचित है कि पहिले अपनी जातिमें विद्या प्रचार करनेक प्रबंध करें. बस फिर शास्त्रानुसार पंडित खड़े कर वादानुवाद कीजिये. देखिये बिना ही पैसेके ज्ञात हो जायगा कि दिगम्बर व स्वेताम्बर दोनों पक्षोंमें कौन पवित्र प्राचीन और कौन पाखंड व अर्वाचीन है. बस निश्चय समझिये सत्यकी विजय होगी. पवित्रता पाखंडता इन दोनों बातोंका विचार ज्ञानहीकी सहायतासे हो सकेगा. परंतु ज्ञान होनेपर भी निर्मल दृष्टि न्याययुक्त होना चाहिये. नहीं तो यही ज्ञान अपने पक्षको पुष्ट करने हेतु अनर्थ करता है. अर्थात् सत्यको असत्य और असत्यको सत्य वकील बैरिस्टरों की तरह करनेमें समर्थ होता है. पाठको! पंडितोंमें जब शास्त्रार्थ होगा तो अनुमान प्रमाणकी अवश्य ही आवश्यक्ता होगी. जिसके लिये उन्हें बड़ी ढूंढ़ खोज और शिरपच्ची करनी होगी. मेरी समझमें यदि उस विषयमें यह दो तीन प्रत्यक्ष प्रमाण दिये जावेंगे तो जो निष्पक्षपाती है वह अवश्य ही सत्यको सत्य माननेमें हठ न करेंगे.

प्रथम श्री संमेद शिखरजीकी पैंड़ियोंका मुकद्दमा है. जिसके विषय हमको विशेष लिखने की आवश्यक्ता नहीं. कारण उसमें विजय प्राप्त होनेकी हर्षध्वनि प्रायः सब ही भाइयोंके कर्णगोचर हो चुकी है. पश्चात् उसी स्थानपर (पार्श्वनाथस्वामीकी टोंक) स्वेताम्बरी भाइयोंने चरण उखाड़ किसी प्राचीन प्रतिमा की स्थापना करनी विचारी. परन्तु अखीरमें वह भेद छिप न सका. और शंका होनेसे इस सभाकी तरफसे तथा अन्य २ पंचायतियोंसे लार्ड साहिबको कितनी एक दरख्वास्तें व तार इस कामको रोकनेके लिये दिये गये तथा कितनी एक जगह स्वधर्माभिमानी भाई शिखरजी पर स्वतः जाके उपस्थित हुए. तब सरकारकी तरफसे वहां पुलिस आदि रखके पूरा २ बन्दोबस्त रक्खा गया. जब इस प्रबंधकी खूबीमें दाल गलती न दिखी तो फिर स्वेताम्बरी भाइयोंने जो चरण उखाड़ डाले थे उन्हीका जीर्णोद्धार करके स्थापना कर दी. चरण उखाड़नेके नुकसान का स्वेताम्बरियों पर दश हजारका दावा किया गया है. सारांश सत्यकीही विजय हुई.

दूसरे—श्री सिद्धक्षेत्र बड़वानीजीका झगड़ा है. जो कितने दिनोंसे वैष्णव व स्वेताम्बर पक्षके साथ चल रहा था. और जिसका समाचार चौथे अंकमें प्रकाश कर चुके हैं. इसमेंभी हमारा पूर्ण अधिकार साबित हुआ और सत्यहीकी विजय हुई.

तीसरे—श्री मक्सीजी पारशनाथका मुकद्दमा जहांपर सैकड़ोंबार झगड़ोंके तूफान उठे और शांत हो चुके हैं फिरसे चल रहा था. अन्तमें महाराज ग्वालियरकी ओरसे सम्वत् १९३९ के पंचायतनामेके अनुसार यही हुक्म सुनाया गया कि दिगम्बरी लोग मंदिरमें प्रातः ६ बजेसे ९ बजे तक पूजन करें बाद स्वेताम्बरी करें. दिगम्बरी अगर ९ बजे बाद दर्शन करने आवें तो उनको

किसी तरह रोक नहीं हो सक्ती. दोनों पक्षके झगडोंको रफा करने सरकारसे एक सुप्रिटेंडेंट व सिपाही दिया जावे; जिनका खर्च ८१) माहवार आधा २ दोनों पक्षवाले देवें; जबतक कि दोनोंमें इत्तफाक पैदा न हो जावे. यद्यपि इस विषयमें स्वेताम्बरी विवाद करनेवाले हैं. और कहते हैं कि न्यायाधीशने जिससे हमारी पहिलेसे ना इत्तफाकी थी यह हुक्मसे विरुद्ध सुनाया है. परंतु हमको अच्छी तरहसे उम्मेद है कि ग्वालियर सरकारका यह अन्तिम हुक्म उनकेलिये पत्थरकी लकीर होगा. इत्यादि इसमेंभी सत्यकी विजय होनेमें कुछ शंका नहीं है.

अब हमारे भाई इससे सोच सकेंगे कि स्वेताम्बरीय भाइयोंके अधिकार जमानेके हौसले कितने बढ़ रहे हैं. उनको इतनेपरभी संतोष नहीं है. वे समझते हैं कि हमने अपनी चालबाजीसे सरासर दिगम्बरियोंकी प्रतिमा होते, तथा उनका प्राचीन अधिकार होते हुए जिसप्रकार पहिले यह पंचायतनामा करा लिया था वैसे अबभी इस पंचायतनामेंको रद करवा स्वतंत्र हो जावेंगे, सो अब वह बात नहीं है. हमारे दिगम्बरीय भाई अब इनके फंदेमें फंसनेवाले नहीं है. वह निरन्तर इस विषयसे चैतन्य रह अपना प्राचीन अधिकार पानेका प्रयत्न करेंगे ना कि पहिलेकी भांति सोकर सर्वस्व खो देवेंगे. तथा हमारी ग्वालियर सरकारभी निष्पक्षपात हो सत्यकी विजय करा अपना सुयश प्रगटावेगी इत्यादि.

पाठक! अब हमारे इस सौभाग्यसुवर्णको ज्ञानकी कसौटीपर चढ़ाकर विचारेंगे तो मालूम हो जायगा कि सत्यही सत्य सत्य है.

अब हम अपने लेखको पूर्ण करनेके पहिले स्वेताम्बरी भाइयोंकी हिकमत अमलीकी प्रशंसा करके सोते हुए अपने भाइयों (तीर्थक्षेत्रके प्रबंधकर्ताओं) को जगाते हैं. जगह २ के तीर्थक्षेत्रों व अतिशय क्षेत्रोंपर धोखेसे, माहूकारीसे, नम्रतासे, मेलसे मन्दिर बनवाना, प्राचीन प्रतिमा स्थापन कर देना, शिलालेख आदि हमारे मिलें उन्हें उखड़वाकर अपने लगाना. बगुला भक्ति करके तुह्मारे मन्दिरकाभी जीर्णोद्धार करवा देना, और मौका मिलनेपर कहीं एक जगह अपना हक सुबूत करने स्मारक लगा देना, आदि कर्त्तव्योंमें स्वेताम्बरी कैसे कटिबद्ध हैं सो सर्वथा प्रशंसाके योग्य है. परन्तु हमारे भाई इसपर सत्यताके घमंडमें कुछभी विचार नहीं करते, और मौका पड़नेपर जब वे अपनी हक सुबूती दिखलाते है तो फिर कहते हैं. हैं! हैं! यह कैसे हुआ. अगर हमारे भाई इस विषयमें पहिलेहीसे चैतन्य रहते तो काहेका यह अर्जी नालिशें करनेका मौका आता और इतने सोचविचारमें पड़ना होता बल्कि हमको तो यह लेखही लिखनेकी आवश्यक्ता न होती; खैर! पहिले जो हुआ सो हुआ परन्तु अब हमारे भाइयोंको निरन्तरकेलिये चैतन्य होना चाहिये. किसीने कहा है. "गई सुगई अब राख रहीको."

हम यहांपर मक्सीजीके मुकद्दमेके फैसलेकी नकल भाइयोंके अवलोकनार्थ प्रकाश करते हैं. आशा है कि सब भाई विशेष कर राज्य कर्मचारी (वकील बैरिष्टर) महाशय ध्यानसे पढ़ विचार करेंगे और योग्य सम्मति दे कृतार्थ करेंगे.

सम्पादक.

नकल जजमेंट मक्सीजी.

महक्मे चीफ सेक्रेटरियट हुजूर दरबार.

जुडिशियल डिपार्टमेंट.

पंचना दिगंबरी मुदईयान

बनाम.

पंचान सितंबरी मुद्दालेहूम्

दावा हक्क दर्शन पूजन वगैरा.

१ बाहम फरीकैन एक मुदतमे तनाजा मजहबी चलाआता है. अगरचे दोनो फरीक अमलमें एकही धरमके है लेकिन उनमें किसी वजहसे फिरके अलाहिदा अलाहिदा होकर दर्शन वपूजनमें इख्तिलाफ होगया है तरीका सितम्बरीयान जिनको ओसवालभी कहते है यह हैं, कि वह पारसनाथजी की पूजा पुष्प व केसर वगैरा चढाकर करते हैं, और उनके मतमें बिला पुष्प व चन्दन वकेसर चढनेके दर्शन करना मना है. फिरका दिगम्बरी लोगोंमें दो तफरीक हैं, एक वीसपंथी, व दूसरे तेरापंथी, वीसपंथीवाले, केशर सिर्फ मूर्ती पारसनाथजीके पांवके उंगलीपर चढाते हैं. तेरापंथीवाले केसर मुतलक नहीं चढाते. मुकाम मक्सीमें जो मंदिर हैं, उनमेंसे बड़ा मंदिर दोनों पंथोंका पूजास्थान या तीर्थ है; दोनों फरीक उसमें जाकर, दर्शन व पूजन हस्ब तरीका मजहब खुद करना चाहते हैं. याने दिगम्बरी चाहते हैं कि जिसवक्त हम दर्शन पूजन करनेको आवें केसर धो डाली जाया करे, और सितम्बरी इस बातको नामन्जूर करते हैं. यही बुनयाद फिसाद दरमियान फरीकैन है.

२ साबिकमें तारीख १० जनवरी सन १८८३ को इस्तगासा कुफ्ल षिकनी (ताला तोड़ना) दायर हुआ व अदालत हाय मातहात में चन्द साल तक मुकद्दमा लढा. आखिरकार श्रीनिवासराव साहेब चीफ जस्टिस ने अपील फरीकैन का ता० १० माह जुलाई सन् १८८९ को खारिज करके फैसला अदालत मातेहत मनसूख किया और हरदो फरीक को हिदायत दी. के जबतक अदालत दिवानी से अपने हक्क साबित न करे पंचनामा आसाढ १३ सम्बत १९३९ का कायम रहेगा

३ बाद इसके ता. १८ अगष्ट सन १८९८ को. पंचान दिगम्बरीयान ने, बनाम सितम्बरीयान अदालत दिवानीं में नालिस बहवाले फैसला श्रीनिवासराव चीफजष्टिस दायर की. वह नालिश

दौरा मालवा में हमारे नजर से गुजरकर जाहिर हुवा के यह मामलाजात दो फिरकों का बड़ा है. इसलिये हमने मुकदमा हाजा को उठाकर कई मरतबा कोसिस की के बाहम फरीकैन सुलह हो जावे, लेकिन जब एक फरीक किसी कदर राजी होगया, तो दूसरे फरीक ने अपने आपको खेंचा; इस तौर से यह मामला अबतक फैसला न हुआ इसका अफसोस है.

४. एक पंचायत सरदार साहेबान व हुक्काम व साहूकारान भी हमने मुकर्रर की थी. सरदार साहेबानने भी, मौके का मुलाहिजा करके कोसिस बलीग, की, के बाहम सुलह होजावे, लेकिन वह भी नाकामयाब रहे.

५. जब के इसी मामले में ब रजामन्दी फरीकैन एक पंचनामा बाहमी तौर पर मिति आसाढ़ बदी १३ संमत १६३९ को तहरीर हुआ है. कि जिसपर हरदो फरीक के मुखीया लोगों के दस्त-खत मोजूद हैं उस पंचनामें की शरायतसे कोई फरीक अब चाहे कि लोट जावे, तो यह हरगिज नहीं होसक्ता, क्योंकि ऐसा होने देना इंसाफ के, व इन्तजाम मुल्क के खिलाफ है.

६. पंचनामा सदर सम्बत १९३९ के.

(१) कलम अव्वल के माफिक बड़ा मंदिर स्वेताम्बरियों के सुपुर्द रहा है,

व

(२) कलम दुसरी के रूसेछोटा मंदिर दिगंबरियों के सुपुर्द रहा.

सितंबरियान व दिगंबरियान जिन के सुपुर्द बड़ा व छोटा मंदर रहा है, ऐसा जो इन दो कल्मों का मजमून है, इस के माइने यह हैं. के उनकी मालकी नहीं कायम कीगई है; वह सिर्फ मानिंद ट्रूस्टी के हैं, मालिक नहीं हैं; क्योंकि हरदो मंदिर की मिल-कियत उसी देवता की है जिस की प्रतिष्ठा उस मंदिर में की गई है.

(३) कलम तीसरी के रूसे दोनों मंदर के तआलुक जो रकमा है, वह जिस की उसी के पास रहने का ठेराव हुआ है.

इस कलम की मनशा बिल्कुल साफ है, वह यह है के मालियत किसी फरीक की नहीं; जो मूर-त जिस देवता की मंदिर में प्रतिष्ठा करके स्थापित की हैं, उसी देवता का वह मंदिर व मालियत है, क्योंके अपने जाती इखराज में कोई फरी उसको अपने मिलकियत के तोरपर नहीं लासक्ता.

(४) कलम चौथी के रूसे यह ठेराव हु-वा है के दोनों मंदरों के दर्शन व पूजन के वास्ते एक दुसरे मंदिरमें जावे तो मुआफिक उस मंदिर के जिस मंदिरके मुआफिक हमेशा दर्शन

इस कलमसे यह साफ होचुका की फरीकेन को हरदो मंदरमें दर्शन व पूजन का हक है, वह दर्शन व पूजन जिस मंदरमें करना चाहे उस मंदर के तरीके से करना चाहिये उस मंदर के

व पूजन करते आये वैसा करना कोई नई बात या हठ नहीं करना.

तरीके के खिलाफ कोई अम्र नहीं होना चाहिये क्योंकि जो अम्र खिलाफ तरीका मंदर किया जावेगा, पंचायत सरदार साहेबान जो हमने मुकर्रर की थी उनकी भी इस चौथे कलम के बाबत, बाद मुलाहिजा मौका व दरयाफत हाल व समायत बहस यही राय करार पाई है कि तरीका मंदर, का अमलदरामद रहना वाजिब है.

बडे मंदर का तरीका यही पाया जाता है के वक्त प्रक्षालन बड़ी मूर्ती के दिगंबरीयान पूजन व दर्शन अपने कायदे माफिक करते आये हैं वैसा करें.

५ कलम पांचवींमें यह तहरीर है कि रास्ता जोहमेशाका है उसको कोई न रोकै.

यह कलम बिल्कुल साफ है कि जिसकी तशरीह करनेकी जरूरत नहीं.

६ कलम ६ में लिखा है कि भंडार जिस मंदरका उसके तालुक रहेगा.

यह भी कलम साफके जिसके तसरीहकी जरूरत नहीं है.

७ इस पंचनामेके कलमोंपर गौर करनेके बाद जिस अमरपर हालमें बहस पेश है उसके निस्बत टेराव करना लाजिम आया, और वह इस तौरपर किया जाता है के बड़ा मंदिर जो सुपुर्द सितंबरी लोक हस्व पंचनामा संमत १९३९ हुआ है उसमें वक्त प्रक्षालन यानै प्रातःकालमें मूर्तिके स्थानके समयमें दिगम्बरीयान आवें तो दर्शन व पूजन करने वालों की तादाद के मुआफिक उनको वक्त मिलना मुनासिब है. याने वह वक्त इस कदर होना चाहिये कि जिसमें उनके दर्शन व पूजन को हर्ज न हो, , और वह वक्त कमसे कम सुबह को ६ बजेसे ९ बजे तक ३ घंटे का मुकर्रर किया जाता है. बाद इस वक्त के, सिर्फ दर्शन के लिये अगर दिगंबरीयान आवें तो उनको हरगिज मुमानिअत न कीजावे.

८ चूंके यह मामला इस कदर तूल पर पहुचंने की वजह भाऊ सरदारमल है ऐसा हमको कई तोरसेयकीन होगया है, इसलिये हुक्म दिया जाता है के वह अलेहदा किया जावे व उसका तालुक मंदर से आयन्दा कभी न रखा जावे.

९ हम अब भी एक मौका देना चाहते हैं के हुक्म हाजा की आगाही होते ही पंचान दिगंबरी व पंचान सितंबरी अपने अपने फिरकों में से दो दो शक्स बतौर मुखीया के वास्ते इन्तजाम भंडार व जायदाद हरदो मंदर बहामी तौरपर, फौरन मुकरर करें,

के वह इत्तिफाक बाहमी तामील पंचनामा संमत १९३९ व तामील हुकम हाजाके अपने अपने बिरादरी से करावें, कि जिसका अखीर नतीजा बाहमी सुलह व यकदिली होजावे, और इसी गरज से उनके मदद के बास्ते व तामील कराने के लिये एक अफीसर सरकार की तरफसे मुकर्रर किया जावे इस अफीसर व गारद की तनख्वा ह माहेवार—

१ आफीसर. .... ९०) कल्दार.
१ गारद. ....
१ जमादार. .... ६) "
९ सिपाही
———
६ दर ९ प्रमानें. } .... २१) "

———— ————

२ ८१ के हिसाब मे मालियाना रुपया ९७२ सिक्का कल्दार हुये, हरदो मंदर से इस रकम का आधा रुपया ४८६) लिया जावे.

१० आफीसर मजकूर को चाहिये के वह दोनों मंदरों के मालियत की जांच बरूय बही खातेजात वगेरा व इमदाद पंचान मुतजिकरे सदर करे, जिसमे यह तहकीक हो जावे, के जो शिकायत तसरूफ बेजा निसबत मालीयत भंडार, भाऊ सरदारमल या किसी दिगंबर शख्स की कीजाती है, वह कहां तक दुरुस्त है.बाद जांच कामील के, अफसर मजकूर को लाजिम होगा के एक रपोर्ट जा़सेसे पेश करें.

११ सरकारी अफीसर वहां तक ही रखना सरकार को मंजूर है के जब तक बहाम फरीकेन पूरी सुलह न होजावे. जिस वक्तकुल खरखसे रफे हो जाकर दरमियान फरीकेन पूरा इत्तिफाक हो जावेगा, उस वक्त इस अफीसर व गारद को फोरन उठा लिया जावेगा.

एस डी. माधवरावसिंदे
तारिख ८।२।१९०२ ट्रूकापी
नकल
एम फीलोज मायकील फीलोज
एस. बी. ऐल चीफ सेक्रटरी हुजूर दरबार
शंकरराव भीकाजी लीमये
अंडर सेक्रेटरी

निर्म्माल्यद्रव्यनिर्णय.

जैनमित्र अंक १, २ के पृष्ट १७ से २५ तक निर्माल्यद्रव्य सम्बन्धी चर्चा विषय जो विचार, शास्त्रानुकूल प्रकाश किये गये हैं वह संपूर्ण यथार्थ हैं. इनमें वादविवाद या पक्षपात ग्रहण करना योग्य नहीं किंतु निर्माल्यद्रव्य संबंधी चर्चाका निर्णय होना योग्य है. तथास्तु.

१ निर्माल्य भोक्ताको अंतराय कर्मका आश्रव होता है अथवा अन्य पापाश्रव होता है?

२ निर्माल्य द्रव्य किस समय समझा जाता है और पूजाके अनन्तर उसका क्या किया जाय?

उपर्युक्त २ प्रश्नोंका समाधान होना योग्य है. शास्त्रोक्त प्रमाण जो लिखे हैं यही ठीक समझना चाहिये. संपूर्ण समाधान उक्त प्रमाणोंमें मौजूद हैं.

" विघ्न करण मंतरायस्य " उमा स्वामीके मूल सूत्रार्थ पर ध्यान अवश्य रखना योग्य है. इसी से संपूर्ण प्रयोजन सिद्ध होगा.

हृदानाऽदनयोःजुहोमिस्वाहा हविर्दान योगे-देव द्रव्य दो भेद रूप समझने योग्य है. उपभोग द्रव्य, निर्माल्य भोग द्रव्य.

देव द्रव्य देवार्पित देवार्पित देव निर्म्माल्य-स्थावर जंगम उपभोग पदार्थ छत्र चामर आसन भामंडलादि पूजोपकरणादि जंगम द्रव्य, सुवर्ण रोप्य मुद्रादि स्थावर द्रव्य, क्षेत्रवास्तु आदि जो देवता के अर्थ निवेदन हो चुका हो. उसको जो स्वयं स्वीकार करते हैं. वे महात्मा नरक में प्राप्त होके वहांके आनन्द को सागरों पर्यंत भोगेंगे, अंतराय कर्मके आश्रवकी तो चर्चा ही न कीजिये जैसा कि सद्भाषितावलीमें लिखा है (जै. मि. पृ. १९) सद्भाषितावलीके श्लोकोंसेही २ भेद प्रकट होते हैं श्लोक ५१-५२-५३ में देव निर्माल्य, व श्लोक ५५ में देव द्रव्य.

देवद्रव्यके स्वीकार करनेकी प्रशंसा प्रथम भेदमें लिखी गई, अब निर्माल्यके भोक्ता अशुभाश्रवके भागी और पाप प्रवृत्तिके उदयके भोक्ता अवश्य होंगे. क्योंकि देवद्रव्य और देव निर्माल्यके ग्राहक मिथ्या दृष्टी ही हो सक्ते हैं. उनके मिथ्यात्वके योगसे पापास्रव सांपरायिक समझना योग्य है अंतराय कर्म भी पाप प्रकृतिमेंलिखा गया है, और जो महाशय कहते हैं कि देवद्रव्य निर्माल्यके स्वीकार करनेसे अंतराय कर्म का आश्रव नही होता यथार्थ है परन्तु देव द्रव्य किंवा निर्माल्य का अधिकारी जो हो उसको न देनेसे विघ्न कर्ताको कौनसे कर्म का आस्रव होगा? आप अच्छी तरह विचारें. उक्त निर्माल्यका ग्राहक मिथ्या दृष्टी समझा जाता है, जब कि पूजाकारक स्वयं ग्राहक हो गया तद अवश्य ही

अंतराय कर्मका आस्रव होगा, यदि अंतराय कर्मका आस्रव नही हुआ. तो फिर रयणसार गाथा ३२ में क्यों लिखा है कि पूजादानादि द्रव्यका हर्ता पूर्व भवमें पुत्र कलत्र द्रव्यादि रहित होगा फेर गाथा ३४ में भी वही स्पष्ट लिखा है अर्थात् पूजा द्रव्यका स्वीकारकर्त्ता जैनी कदापि नहीं होता. जबकी पूजाकारक स्वयं निर्म्माल्य किंवा देवद्रव्य भक्षण करेगा तद वह मिथ्याती परकी आजीविकामें अंतराय्यका कर्त्ता अवश्य समझा जायगा मिथ्याती अज्ञानी निर्म्माल्यका ग्राहक समझा जाता है. जैनी ज्ञानी अभक्ष्यको समझके भक्ष्य मानें तद वह अनेक भवोंमें दुःखका भोक्ता होगा पंच परिवर्त्तनका अंत आना ही दुर्घट समझो. क्योंकि जैनी ज्ञातभाव तीव्र भावसे तृष्णातुर हो अभक्ष्य भक्षण करता है.

अब निर्माल्य द्रव्यका क्या किया जाय ? इसका विचार करना चाहिये निर्म्माल्य वह वस्तु समझी जाती है. जो देवतार्थ निवेदन की गई पुनः निवेदनकर्त्ता उससे निर्ममत्व हो भिन्न निर्ज्जन्तु स्थानमें स्थापनकर पूजाके पात्र लेके अपने ग्रह जाके पूजोपकरण शुद्ध करे किसी शास्त्रमें ऐसा लेख नहीं है कि जिन मन्दिरमें ग्रहस्थी से अधिक आरंभ पंच शूचका परिग्रह रक्खो और लेन देन व्योपार करो किंवा निर्म्माल्य देके माली या व्याससे मन्दिरका वा ग्रहका कार्य कराओ, दिल्लीमें सुगनचन्द्रजीके मन्दिरमें गदर के पहिले यह आम्नाय अच्छी तरहथी कि पूजाकी चढ़ी हुई सामग्री लेनेवाले जिनमन्दिरके बाह्य द्वारपर बैठे रहते थे. जब पूजा हो चुकती तो पूजाकार बाहर आके उनके वस्त्रमें सामग्री क्षेपणकर देते थे. सामग्री (निर्मल्य) लेनेवाले मंदिरमें नहीं जाने पातेथे न उन लोगोंसे कुछ काम लिया जाता था. बाद सन ५७ के सर्वत्र ही सर्वथा शिथलाचार हो गया.

अब विचार योग्य है कि निर्म्माल्य कूट, किंवा संस्कार कूट जिन मन्दिरोंके बाह्यद्वारपरबनवोनकी आम्नाय प्राचीन है जब कि साक्षात केवली तीर्थंकरों के समवशरणमें इन्द्रचक्री पूजा करते थे तद उस समयमें भी पूजाकी सामग्री निर्म्माल्य बाहर रख दी जाती थी और ऋषि निवेदक, बनपालक, क्षेत्राधीश, अथवा और २ मिथ्या दृष्टी उक्त निर्म्माल्यके ग्राहक ले जाते थे. और नित्य पूजा या महामहादि पूजोत्सवकी सामग्रीका किसी शास्त्रमें अग्निमें हवन करना किंवा जलमें प्रवाह करना नहीं लिखा न संकल्पित मनुष्यको देना. केवल निर्ममत्व बाह्यस्थान जो ऊंचा तथा पवित्र हो वहां रख देनी चाहिये उसके ग्राहक स्वतः ले जावेंगे, पंचोंको व अधिकारियोंको किंचिन्मात्र भी क्लेशका कारण न होगा और जो कि महा पुराणमें वर्णन है वह

अग्निहोत्र द्विजकी क्रियाका वर्णन है. जो द्रव्य एक बार मंत्रोच्चारण करके निवेदन कर चुके पुनः मंत्रोच्चारण करके हवन क्रियामें स्वीकार नहीं हो सक्ता इस वास्ते सम्पूर्ण शंकाओंको त्यागकर स्वात्म कल्याणकी तरफ ध्यान करके शास्त्रोक्त रीत्यानुसार निर्म्माल्यकूटमें निर्म्माल्यको स्थापन करना उचित है.

और जो महात्मा देवद्रव्य किंवा देव निर्म्माल्यको निर्मल समझके स्वीकार करते हैं वह नरक आदि दुर्गतिके मार्गका कपाटोद्घाटन करते हैं जिनवाणी वास्ते उपदेश के है नाकि आदेशके, और जो महाशय द्राविड कर्नाटकादि देशका दृष्टान्त लिखते हैं सो हमारे मध्य प्रदेशमें उन लोगों की रीति लाभदायक न होगी हम अपने नेत्रोंसे उनका आचरण देख चुके हैं. कंदमूलादि अभक्ष्य भक्षण निर्म्माल्यपूजा द्रव्य को मिथ्यातियों के समान महा प्रशाद समझ ग्रहण करते हैं हम नहीं जानते उन के उपदेशक कौन से कुशास्त्र के अनुकूल शिक्षा देते हैं. हमको उनकी प्रथासे क्या प्रयोजन है जो निंद्य कार्य करते हैं उसका फल उनको होगा

देवतानिवेद्याऽनिवेद्य ग्रहण— देवता के निमित जो भोगोपभोग द्रव्य उस की निवेद्य संज्ञा है, जैसा पाद्यं अर्घ्य मित्यादि उक्त निवेद्यद्रव्यको (ऽनिवेद्य) विना निवेदनके स्वयं भक्षण करै तद अंतराय कर्मका पांचों प्रकार का आस्रव कर दुर्गतिका पात्र होता है,

इस स्थलमें विद्वज्जन पक्षपात को छोड़के विशुद्धताके साथ विचार करें, जब कि द्रव्य भगवत के निमित्त संकल्प कर धर्माधिकारी सज्जनोकी सुपुर्द करा गया. जैसा तीर्थस्थानादि पंचायती मंदिरोंका द्रव्य उसको धर्मार्थन खरचनेसे उक्त अधिकारी अंतरायकी पांचों प्रकृति के आस्रव का कर्ता समझा जाता है तद जो द्रव्य मंत्रपूर्वक भगवत के सन्मुख अर्पण किया गया ऐसे निर्म्माल्य द्रव्यके भक्षणके पाप का क्या निर्णय किया जाय,(**निर्म्मोल्य देवार्प्पितोज्झितेद्रव्ये—अर्थात् देवोच्छिष्ट द्रव्ये निर्म्मल मिति, उक्तं—**

अर्वाग विसर्जना द्रव्यं, नैवेद्यं सर्व मुच्यते।
विसर्जिते जगन्नाथे निर्म्मोल्य भवति क्षणाति॥

इति शब्दार्थ चिन्तामणोमाल्य शून्ये, अर्थात् कोष और व्याकरणकी रीतिसे भी निर्माल्यद्रव्य स्वीकार करने योग्य नहीं. जैसा उच्छिष्ट भोजन अग्राह्य समझा जाता है किंवा दान देके कोई सामान्य पुरुष भी स्वयं स्वीकार नहीं करता. तद जैनी निर्माल्यको किस तरह स्वीकार कर सक्ताहै. और जहां २ जिन २ महाशयोंके अधिकार में धर्म्मार्थ द्रव्य रक्खा गया वह लक्षादि रुपये मालूम नहीं कहां किस धर्मकार्यमें निर्म्मल समझ लगाये गये. जब उन लोगोंने निर्माल्यद्रव्यको निर्दोष समझा तब उस को स्वीकार किया; जिसके स्पर्शन करनेमें भी प्रायश्चित्त है!

और जो शंका करते हैं कि निर्म्माल्य द्रव्य आप न खावे औरोंको खिलावे तो कृत, कारित, अनुमोदनारूप दोषका भागी होगा सो यह प्रश्न ठीक है. परन्तु शंका समाधान शास्त्राम्नायसे करा जाता है. जो लौकिक रीति लोभके वश अन्यथा है वह विपरीतिही समझना चाहिये. और शास्त्रकी आज्ञा तो स्पष्ट है कि पूजाकारक अष्टद्रव्य शुद्ध प्राशुक अपने ग्रहसे तयार करके ले जाय. पूजा करके निर्म्माल्यद्रव्यको निर्ममत्व बाह्य-कूटमें स्थापन करके अपने ग्रह चला आवे. निर्म्माल्यके देनेका अधिकारी कोई नहीं हो सक्ता; जो चाहे वही ले जाओ निर्माल्य एक शून्य द्रव्य है. पूजा करनें पर्य्यंत उस द्रव्यसे अनुराग है. विसर्ज्जनके बाद चाहे एक लक्ष रुपये की भी निर्म्माल्य हो तो भी उससे ममत्व रखना या लक्ष्य करके किसीको देना पूर्ण पापास्रवका कारण समझना चाहिये.

अष्टद्रव्यसे पूजा की जाती है उसको भेंटका दृष्टान्त ठीक नहीं; क्योंकि राजा आदि महात्मा पुरुषोंकी भेंटमें जो सुवर्ण रौप्यरत्नादि दिये जाते हैं वह किसी मंत्रविधानसे नहीं और भगवतकी पूजा विधानमें भिन्न २ द्रव्य मंत्रित कर (निर्व्वपामि—स्वाहा) शब्दोच्चारण करके समर्पण किया जाता है. (निर-डुवप्-बीजतंतुसंताने) धातुका प्रयोग अर्थात् कृषाण पृथ्वीमें बीजबोके फेर पृथ्वी समर्पित बीजका ग्राहक नहीं होता किन्तु फलका ग्राहक समझा जाता है. तैसेही पूजाकारक फलार्थी होके द्रव्य चढ़ाता है या निर्म्माल्यार्थी जैसा "**मोक्षफल प्राप्त हेतवे फलं**" "**मोहांधकार विनाशनाय दीपं**" इत्यादि पुनः **स्वाहा** मंत्रमें पल्लव अंतमें ऐसे स्थानकमें दिया जाता है कि जहां दानीय पदार्थसे पुनः दाताका प्रयोजन ३३ भंगसे नहीं.

जैसा हवन क्रियामें द्रव्य अग्निमें क्षेपना दिया जाता है तद्वत् आगामी फलकी विधिके वास्ते अष्टद्रव्य से पूजा करनेवाला बीज बोता है. न कि बीज भोगी होके सर्वस्व खोया चाहता है जैसा द्यानत रायजी कृत भाषा अष्टान्हिका पूजनमें.

"**द्यानत कीनों निज स्वेन भूप समर्पित हों**" यह भाषा है पंडित जन इसके गूढार्थको समझेंगे तो सम्पूर्ण भ्रम स्वतः नष्ट हो जांयगे. न्याय व्याकर्ण कोषमें परिश्रम करनेकी कोई आवश्यक्ता नहीं. यह निरापेक्ष होके समझने योग्य है. और जो देवद्रव्य निर्म्माल्य को निर्म्मल समझें. निश्चय है कि उनके वास्ते कोई शास्त्रोपदेश लाभदायक न होगा

निरीक्षक,

पंडित शिवचन्द शर्म्मा जैन,

वैद्य इन्द्रप्रस्थीय.

रिपोर्ट दौरा पं. रामलालजी उपदेशक दिगम्बर जैनप्रांतिक सभा मुम्बई का

(प्रान्त गुजरात)—तारीख ७ जनवरी को बम्बईसे चलकर करमसद आया. शाह रणछोरदास प्रेमानन्दजीके मकानपर ठहरा. उक्त साहिबने योग्य खातिर कीन्हीं. रात्रिको सभा करके व्याख्यान सम्यक्चारित्र के विषयमें दिया. श्रोता गण अनुमान ५० थे. ता. ८ को भी इसी स्थानमें सभा कर सम्यक्दर्शन के विषय पर व्याख्यान दिया. विद्याकी आवश्यक्ता दिखा उसका कारण स्वाध्याय बतलाया. १६ भाइयोंने स्वाध्याय की प्रतिज्ञा लीनीं. २ अन्य मतावलम्बी भाइयोंने चातुर्मासमें रात्रि भोजन का त्याग किया. ता. ९ को पाठशाला की परीक्षा ली. जो विद्यार्थी पास हुए उन के उत्तेजनार्थ पारितोषक दिया. इस पाठशालाके अध्यापक डाह्याभाई शिवलालजी हैं. जो परोपकारार्थ विना वेतनही पढ़ाते हैं. आपही के परिश्रम व उत्साह के कारण यहां प्रति चतुर्दशीको सभा होती है. इस स्थान पर मेवाड़ भाइयोंके ३० घर हैं. सरस्वती भंडारकी देखरेख करनेसे तीन प्राचीन ग्रंथ ज्ञात हुए. १ जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति प्राकृत गाथा बद्ध पद्मनंदी आचार्यकृत है. श्लोक ३५०० के अनुमान है. सम्बत् ज्ञात नही हुआ. २ यशोधर चरित्र श्लोक बद्ध सोमकीर्ति आचार्यकृत है जिस पर सम्वत् ३६ लिखा है. श्लोक संख्या नवहजार के अनुमान है. ३ आत्मानुशासन जिस के मूलकर्ता जिन सेनाचार्य टीकाकार गुणभद्राचार्य भाषाकार पं. प्रभाचन्द्रजी है. सम्वत् २७१ टीका करनेका लिखा है.

तारीख १० को सोजित्रा आया. शाह हरीलाल बृजलालजीके मकानपर ठहरा. सभा करनेका प्रबन्ध किया. निदान ता० ११ को मंदिरजीमें सभा कर विद्याके विषयमें व्याख्यान दिया उपस्थित जनोंकी संख्या ५० थी; तारीख १२ व १३ को भी इसी स्थानमें रहा और श्रावक षटकर्म व दान पूजादि विषयोंपर व्याख्यान दिये. यहांपर मंदिरजी तीन हैं. जिनकी पूजादि विचारसहित होनेकी भाइयोंसे प्रेरणा की एक मंदिरमें एक जैनी पुजारी रक्खा. आशा है कि अब यहांके भाई पूजाप्रक्षालादि विनयसहित होनेका प्रबंध करेंगे. सोजित्रामें पाठशाला होनेकी बड़ी आवश्यक्ता है.

तारीख १४ को बोरसद जिला खेड़ा आया. शा प्रेमचन्द नारायणदासजीके मकानपर ठहरा. आज सभा कारणवशात् न हो सकी. ता. १५ को मंदिरजीमें सभा हुई. प्रथम दामोदरदास प्रेमानन्दजीने मेरे आनेका समाचार और बम्बई सभाका उपकार प्रगट किया. पश्चात् पारमार्थिक षट्कर्मोंका स्वरूप वर्णन किया. तारीख

१६–१७–१८–१९–२०–२१ को क्रमशः इसी स्थानपर सभा कीन्ही. श्रोतागण ४०–५०–६० के अनुमान सर्व मतावलम्बी प्रतिदिवस एकत्र हुए. व्याख्यान षट्कर्म, त्यागधर्म, सम्यक्दर्शन, ज्ञान, चारित्रआदि विषयोंपर क्रमशः दिये. ता० १९ को स्वेताम्बरी भाइयोंसे "स्त्रीको तथा गृहस्थको मुक्ति नही होती." इस विषयपर बादानुवाद हुआ. जिसमें दिगम्बर पक्षकीही विजय रही. इस स्थानके कितनेएक भाइयोंने स्वाध्याय करने तथा अभक्ष त्यागादिकी प्रतिज्ञा लीन्ही. व प्रति शुक्ल चतुर्दशीको सभा करना स्वीकार किया. निम्नलिखित धर्मात्मा भाइयोंने २५।) उपदेशक भंडारमें व १।) जैनमित्र पत्रकी ग्राहकीका दिया—

५) शा प्रेमानन्द नारायणदासजी.
५) शा दलपतभाई केवलदासजी.
५) शा भाइजी पानाचन्दजी.
३) शा मथुरादास पानाचन्दजी.
२) शा कालीदास जैसिंह किशोरदासजी.
१) शा शिवलाल शामलदासजी.
१) शा आशाराम केवलदासजी.
१) शा मथुरादास मूलजी.
१) शा मनोहरदास मानदासजी
१।) शा जयचन्द मुकुन्दजी.
१।) समस्तपंचान (जैनमित्रका मूल्य)

इस स्थानपर मेवाड़ा भाइयोंके ३० वर व १ मंदिरजी हैं.

ता २३ को बूचासन जिला खेड़ा आया. शा जीवनलाल हलोचन्दजीके मकानपर ठहरा; योग्य खातिर कीनी, रात्रिको इन्हीं भाई सा० के मकानपर सभा कीन्हीं. उपस्थित भाई ४० के करीब सर्व मतावलंबी थे. प्रथम जीवनलालजीने बंबई सभा का उपकार प्रगट कर मेरे आनेके समाचार कहे. पश्चात् मैंने सदाचारकी प्रवृत्ति व अनाचार का त्याग इस विषयमें व्याख्यान दिया. चंद भाइयोंने रात्रिभोजन, कंद मूलादि का त्याग किया. ३) शा केवलदास पुरुषोत्तमदासजीने व २) बनमालीदास हरपचन्दजीने उपदेशकभंडारमें दिये. उक्त स्थानपर मेवाड़ा भाइयोंके ६ वर हैं, मंदिरजी नहीं है.

ता २४ को रुदेल आया. शा जयसिंहदास हरकिशुनदास के मकानपर ठहरा. ता २५ को सभा कर सत्यार्थ देव गुरु धर्मका वर्णन किया. सभामें श्रोता ६० के करीव सर्व मतावलंवी थे. यहांपर १० वर मेवाड़े भाइयोंके हैं. मंदिरजी नहीं है. ७॥) उपदेशक भंडारमें निम्न लिखित महाशयोंने प्रेमपूर्वक दिये.

५) जैसिंहदास हरकिशनदास.
२॥) तापीदास जादवजी तथा जीवनभाई जादवजी.

ता २५ को कोणेसा जिला बड़ौदा आया. शा फूलचन्द जयसिंह भाईके मकानपर ठहरा. सभा करनेका प्रयत्न

किया पर इस दिन न हो सकी. ता. २६ को अन्यमतकी धर्मशालामें ५० भाई एकत्र कर सभा कीन्हीं. सुख व दुःख का स्वरूप वर्णन कर अनाचारका त्याग करनेसे सुख प्राप्त होता है, ऐसा दर्शाया- अन्यमती दो भाइयोंने चातुर्मासमें रात्रि भोजन व अनछानें पानी पीनेका त्याग किया. परन्तु अफसोस कि जैनियोंमें किसीने भी नहीं किया. ता. २७ को भी इसी स्थानपर सभा की.

ता. २८ को सायमा आया. शा पूंजा- भाई देवचन्दके मकानपर ठहरा. इन भाई साहिबने मुझे प्रेमपूर्वक रक्खा. दो सभा कीन्ही. जिनमें श्रोताओंकी संख्या बहुत न्यून रही. इस स्थानमें मेवाड़ा भाइयोंके दश घर हैं, मन्दिर नहीं है.

ता. ३० को तारापुरमें आया. छगन- लाल वेचरदासजीके मकानपर ठहरा. दो सभा कीन्हीं. व्याख्यान मिथ्यात्व खंडन व दयाधर्म इस विषयपर दिया. यहां मेवाड़ा भाइयोंके ५ घर हैं, मंदिर नहीं है. शा प्रेमचन्द दीपचन्दजीने ५) व शाह काशीराम नरोत्तमदासजीने १) उपदेशक भंडारमें दिया.

तारीख १ फरवरीको परीराच आया- शा फूलचन्द गुलाबचन्दके यहां ठहरा. दो सभा कीन्हीं. व्याख्यान सदाचार,त्याग- धर्मपर हुआ. श्रोता २५ के अनुमान दोनों दिन उपस्थित हो सके. यहां मेवाड़ा भाइ- योंके ७ घर है, मंदिर नहीं, है. कितनेएक भाइयोंने रात्रिभोजनादि त्याग किया. शोक है कि उपर्युक्त ग्रामोंमें जैनी भाइ- योंके रहते भी मन्दिरजी नहीं है. मुझे दर्शन करने खंभात जाना पड़ता था. खंभातमें दिगम्बर जैन कोई भी नहीं है परन्तु १ दि. जै. मंदिर है. जिसमें प्राचीन प्रतिमाओंका बड़ा समूह है. पूजादिका प्रबंध बिलकुल खराब है. इस मंदिरके प्रबंधकर्ता कोणेसा व सायमाके भाइयोंको ध्यान देना चाहिये.

ता० ३ को मालावाड़ा जिला बड़ौदा आया. शा पूंजाभाईके मकानपर ठहरकर ३ सभा कीनीं. कितनेएक भाइयोंने व्याख्यानोंको सुन हरित काय कंद मू- लादि अभक्ष त्याग किया व स्वाध्यायकी प्रतिज्ञा लीनी. यहां मेवाड़ा भाइयोंके ५घर व१ जैनमंदिर है. यहांके भाइयोंने जैनमित्र मंगाना स्वीकार किया.

ता० ६ को वसो आकर धर्मशालामें ठहरा. यहांके शिवलाल खुशालदास आदि स्नेही भाइयोंने अच्छी खातिर कीनीं. यहां मेवाड़ा भाइयोंके २० घर व एक मंदिर है. मैं इस स्थानपर ता. १२ तक रहा. प्रत्येक दिवस सभामें पचास साठ सर्व मतावलम्बी भाई एकत्र होते थे. व्याख्यान सम्यक्दर्शन, ज्ञान, चारित्र षट्- कर्म, यत्नाचार, सृष्टिस्वयं सिद्ध है आदि विषयोंपर पृथक् २ दिये शास्त्रस्वाध्यायादि की कई भाइयोंने प्रतिज्ञा ली. वहांके चार भाइयोंने प्रान्तिक सभाकी सभासदी

स्वीकार की व दो भाइयोंने उपदेशक भंडारमें द्रव्य दिया. जिनके नाम यहां प्रकाशित करते हैं.

३) शा शिवलाल खुशालदासजी.
३) शा फूलचन्द हरगोविंददास.
३) शा जगजीवन पूजाभाई.
३) शा शामलदास जेसिंहभाई.
१) शा शिवलाल खुशाल.
१) शा नारायणदास हरगोविंददास

ता. १३ को मेहलावी आकर शा चीका भाई नाथाभाईके मकानपर ठहरा. ३ सभा कीन्हीं. व्याख्यान मिथ्यात्व, अन्याय, अभक्ष, ध्यान आदि विषयोंपर दिया. यहां मेवाड़ा भाइयोंके केवल १० घर हैं. इससे सभामें जन संख्या बहुत कम रहती थी. एक मंदिर जी हैं. नीचे लिखे महाशयोंने ९) उपदेशक भंडारमें दिये.

३) शा वृजलाल नथूजी
२) शा हरगोविंद भाई वीरचन्दजी
२) शा मकुंदास ताराचंदजी
२) रायजी प्रेमचन्दजी

ता. १६ को पेटलाद आया. यहां ६ घर मेवाड़ा भाइयोंके व १ मंदिर है. शा छगनलाल हरीभाईने बहुत खातिर कीन्हीं. ता. १६ व १७ को २ सभा कीन्हीं. सदाचार, पापका त्याग इन दो विषयोंपर व्याख्यान दिया. चंदभाइयोंने रात्रि-भोजन त्याग व दर्शन का नेम लिया.

इस प्रकार गुजरात प्रांतका दौरा पूर्ण हुआ. अब हमारे पाठकगण इस रिपोर्टसे इस प्रांतकी हीन दशा को स्वतः जान जावेंगे कि यहांके भाइयोंमें अनाचार व अविद्याकी सीमा कहां तक है. यद्यपि इस प्रांतमें बोरसद, सोजित्रा, वसो आदि बड़े बड़े स्थान हैं. जहां पाठशालादि का प्रबंध होना कुछ कठिन नहीं है; परन्तु शोक कि है यहांके भाई न जाने इस विषयपर क्यों ध्यान नहीं देते.

क्रमशः

श्रीसिद्धक्षेत्र अने अतिशय क्षेत्रना प्रबंध करनारा भाइओंने सूचना.

तीर्थक्षेत्र तथा अतिशय क्षेत्रना प्रबंध करनाराओने खबर हशेके गए वरसे एटलेके संवत १९५७ ना सालमां मुंबाई जैन प्रांतिकसभा तरफथी सर्वे प्रबंध करनाराओ उपर एक एक तीर्थक्षेत्रनुं फॉर्म मोकली आपवामां आव्युं हतुं. आ फॉरमो केटलाक प्रबंध करनारावो तरफथी भरीने मोकलवामां आव्या हता, ज्यारे केटलाकोए मोकल्या हता नहीं. भराइने आवेला फॉरमोमां केटलाक बराबर भराइने आव्या हता अने केटलाक बराबर भराइने आव्या हता नहीं. तेनी सुचना मुंबाई प्रांतिकसभानी वार्षिक मेलावड़ा वखते थएला ठरावप्रमाणे ज्यारे प्रबंध करनारावो उपर धन्यवाद पत्र मोकलवामां आव्या त्यारे करवामां आवी हती. जे भाइओ तरफथी अमारा मोकलेला

फॉरमो भराइने नथी आव्या तेने दिल-गीरी साथे नीचली सुचना करवी पड़े छे.

सुरत शहेर पासे आवेलुं गाम महुवा एक पुरातन अतिशय क्षेत्र छे. आ महुवा गामना वहीवट करनाराओमां मांहो-मांहेनी फुटने लीधे देहरानो वहीवट बराबर चालतो नथी. आपणा जैनी-भाइओए मांहोमाहेना टंटाने लीधे देव-स्थानना भंडारनो वहीवट खराब करवो ए सारी वात नथी. आपणा जैन बंधुओ जे हजारो रुपीआ खरचीने प्रतिष्टा क-रावे छे ते पुन्य उपार्जन करवाने करावे छे वास्ते आपणे तेनो सदउपयोगज करवो. आ प्रमाणे गेर उपयोग करवाथी तेनुं परिणाम केवुं आवे छे ते आपणने क-हेवुं पडे तेम नथी. हवे ज्यारे सं. १९५७ ना रीपोर्ट मंगाववाने ज्यारे प्रांतिकसभा तरफथी फॉर्म मोकली आपवामां आवे त्यारे अमने आशा छे के आ अतिशय क्षेत्रना वहीवट करनाराओ तुरत भरीने मोकली आपशे.

वळी फलटण पासे आवेला दहींगाम अतिशय क्षेत्रनो वहीवट राखनारी क-मेटी जो के वहीवट बराबर चलावे छे पण आ कमेटीना मेम्बरोना पेटमां कोण जाणे शुं वहेम भरायो छे के फारम भ-रीने मोकली आपता नथी. गए वरसे आसो मासमां थएला मुंबाई प्रांतिकस-भाना महोत्सव वखते आ कमेटीना के-टलाक मेम्बरो हाजर हता. अमे ज्यारे आ लोकोने वात करी त्यारे तेओए कह्युं के दहींगाममां कार्तिक मासमां मेळो भराए छे ते वखते सघळा मेम्बरो भेगा थशे वास्ते ते वखते तमे सुचना लखी मोकलशो तो अमो तुरत मोकली आपशुं. आ मेळा वखते ज्यारे अमारी सुचना ए लोकोपासे गई त्यारे केटलाक कहेवा लाग्या के ए लोको आपणी पासे हीसाब मांगनार कोण? पण समजवुं जोइए के सभा तमारी पासे पैसा नथी मांगती अथवा तो खरच वधारे ओछो करो तेनो अटकाव करवा नथी मांगती. पण फकत हिसाब मांगे छे के जेथी धरमना खा-ताना हिसाब चोखो रहे. आप समजुं कमेटीने वधारे कहेवुं पड़े तेम नथी. आप थी दर वरसे हीसाब छपावी प्रसिद्ध कर-वानुं नबने तेटला माटे आ सभा पोताने खरचे तम करवा तैयार छे. तेथी करी ज्यारे संवत १९५७ ना सालनो रीपोर्ट मांगवाने फॉरमो मोकली आपवामां आवे त्यारे अमने आशा छे के तुरत भ-रीने मोकली आपशे.

श्रीसिद्धक्षेत्र गिरनारजी तो सर्व भा-इओने जाहेर हशे. अंहीआना वहीवट करनारा प्रतापगड़वाला छे. आ भाइओ बराबर वहीवट करता नथी अने जात्री-ओ तरफथी घणी फरीआद आवे छे. जैन प्रांतिकसभा तरफथी केटलाक फॉ-रमो मोकलवामां आव्या पण तेनो बीलकुल जवाब सरखो आवतो नथी त्यारे पछी सभा तरफथी बे त्रण मे-

ख्बरोने मोकलवामां आव्या ने कहेवामां आव्युं के तमे बराबर वहीवट करता नथी वास्ते सभा सघळो वहीवट पोताना हाथमां लेशे अने पोते चलावशे. त्यारे प्रतापगड़थी बे त्रण जण आव्या ने कहेवा लाग्या के हवे भविष्यमां सघळी वातनो पुरे पुरो बंदोबस्त राखीशुं अने थोडा दिवसमां जुनो हीसाब बहार पाड़ीशुं. ते वातने वरस दहाडो थयो पण कांई ठेकाणुं नथी. अमे दीलगीरी साथे प्रतापगड़वाला भाइओने जणावीए छीए के मास बेनी अंदर जुनो हीसाब बहार नहीं पाड़ो तो सोलापुर पासे आवेला आकलूज गाममां प्रतिष्ठा वखते थएलो ठराव अमलमां मेलवानी फरज पड़शे. अमने आशा छे के वहीवट करनाराओ मास बेमां हीसाव बहार पाड़शे अने जात्रीओनी अडचण दूर करशे. जो आप साहेबोनो हीसाब बहार पाडवानो विचार होय तो हमने आठ दिवसमां चेतवणी आपशोजी.

श्रीगजपंथा तीर्थक्षेत्रके जे नाशक पासे आवेलुं छे तेनो वहीवट त्यांना भट्टारक चलावता हता पण पोता थी न बनी शकवाथी भट्टारकजीए मुंबाई तथा शोलापुरना गृहस्थोनी एक कमीटी नीमीने तेमने स्वाधीन कीधो छे. अमने आशा छे के भविष्यमां आ कमीटी बराबर वहीवट चलावशे. दर वरसनो हीसाब बाहर पाडशे. अने वळी आवा धरम खाताना वहीवट करनारो आ भट्टारकजीनो दाखलो ध्यानमां राखी जो पोताथी न बने तो आवी एक कमीटी नीमी पोताना हाथमांनो वहीवट सोंपी देशे.

श्रीसिद्धक्षेत्र मागीतुंगीके जे खानदेशमां आवेलुं छे त्यानो वहीवट त्यानां प्रबंध करता गाम पारोलावाला बराबर चलावता नथी कारण जातरीओनी त्यांथी घणी फरीआद आवे छे. अमो सूचना करीए छीए के वहीवट करनाराओ वहीवटमां सुधारो करीने जात्रीओने संतोष पमाडशे. अने संवत १९५७ नो रीपोर्ट मगवाने ज्यारे फॉरम मोकलवामां आवे त्यारे तुरत भरीने मोकली आपशे.

सर्वे भाइओने खबर हशेके आपणा वडीलो जे आवा तीर्थक्षेत्रोपर हजारो रुपीआ खरची गया ते पुन्य उपार्जन करवाने नके वहीवट करनाराओने वास्ते जागीर माटे तीर्थक्षेत्रनो प्रबंध करोतो एवी रीते करो के जेथी सर्वे बंधु खुशी थाय. आप जे वहीवट करो छो ते पुन्य उपार्जन करवाने करो छो, पाप उपार्जन करवाने करता नथी. वास्ते अमने आशा छे के सर्वे तीर्थक्षेत्रना वहीवट करनाराओ पोतानो हिसाब चोखो राखशे अने ज्यारे सभा तरफथी रीपोर्ट मांगवाने फारम मोकलवामां आवे त्यारे तुरत भरीने मोकली आपशे.

आपनो हितैषी,
चुन्नीलाल झवेरचन्द,
मंत्री, तीर्थक्षेत्र.

श्रीयुत सेठ दौलतरामजी साहब डिपुटी कलेक्टर नीमचनिवासीका समाधिमरण सजीवन चरित्र.

इस मालवा प्रांतके वा समस्त जैन धर्मावलंबी भाइयोंमेंसे ऐसा कौन पुरुष होगा कि जिसने उक्त महाशयका नाम न सुना हो। मैं जानता हूं कि सर्व ज्ञात होंगे.

आप बड़े धर्मात्मा पुरुष थे. धर्मकार्यमें हमेशा अग्रणीय होकर तनमनधनसे सहायता करते. शास्त्र श्रवणका तो ऐसा नियम था कि कितनाही बुखारादि रोगोंका जोर क्यों न हो केवल चलने ही की ताकत होनेपर सबसे प्रथम मंदिरजी पधारते. आप प्रातःकाल ४ बजे उठते उसी समय शौचक्रिया कर शुद्ध हो। नैत्यका पाठ पढ़ पांच बजने ही मंदिरजीमें आ दर्शन स्वाध्याय सामायक करते. ततपश्चात गृहकार्यमें प्रवर्तते थे.

आपका जन्म सं. १८८६ में हुआ. बालकपनसे ही भागचन्दजी सरीखे उत्तम २ पुरुषोंकी संगति रही जिससे जैनधर्मके सच्चे जानकर हो गये. कुदेवादिक मिथ्यात्वका तो लेश मात्र विश्वास न था.

सं. १९२१ में झालरापाटनके सुपरिंटेंडेंटकी पदवीपर प्राप्त हुये फिर डिप्टी कलैक्टीकी पदवी पाई. १० वर्ष वहांपर रहे उसही समयमें वहांके वीस पंथी तेरा पंथी भाइयोंमें अधिक प्रीति कराई. वे भव्यजन वीसपंथीसे तेरापंथी होकर आजतक उनका यश गाते और समीचीन मार्गमें प्रवर्त रहे हैं.

इसी रियासतमें आपने बहुत योग्यतापूर्वक काम करके कई इंग्रेजोंसे सार्टिफिक्ट हासिल किये.

वैद्यकमें तो इतने निपुण थे कि नाडीपरीक्षाके विषयमें उनके बराबर इस समय शायद् कोई होगा.

एक दिन मैं उनके पास मामूली तौर पर गया जैजिनेन्द्रकी उन्होंने बडे हर्षसे स्वीकार कर आदरपूर्वक बिठाया. उसी समय मैंने कहा कि, मुझे वैद्यक विद्या सिखाईये. तब आपने कहा कि मेरेमें संपूर्ण रीतिसे सिखानेकी शक्ति नहीं. तो मैंने हाथ जोड़कर कहा कि सज्जन पुरुष अपनेको लघु मान विद्याका मान नहीं करते; फिर मैंने लाचारीसे पूंछा, तब आप बोले कि इससे प्राणियोंको लाभ पहुंचाना तुम पर बन नहीं सकेगा.

सच है. मैं किसी तरहसे प्राणियोंको लाभ नहीं पहुंचा सक्ता था कारण आपका इस प्रकार वर्त्ताव था कि कोई छोटेसे छोटा पुरुष अर्ध रात्रिको आकर कहे कि मेरे घरमें बहुत तकलीफ है तो आप उसही समय जाते. चाहे कैसाही शीत क्यों न पडता हो अगर मुझे कोई बुलाने आता तो कहो कैसे जाता? कि पानी बरस रहा. ठंडी ठंडी पवन जोरसे चल रही. अंधेरा छा गया. निद्राका जोर आखोंमें आ रहा. परंतु ऐसे समयमें जानेकी ताकत उन्हींमें थी.

एक बडी भारी बात यह थी कि आपने कई सौ रोगियोंको आराम पहुंचाया परन्तु एक रुपया भी भेंटका न लिया. और कई रुपय माहवारीकी औषधियां मुफ्त देते थे.

जैनपाठशालापर पूर्णतया ध्यान रखते; विद्यार्थियोंकी पाक्षिक परीक्षा लेते; समयपर उनके चित्त प्रसन्नार्थ इनाम भी बांटते.

आपही पंच श्रेणीमें श्रेष्ट गिने जाते थे. बल्कि मजिस्ट्रेट साहब भी इनकी राह जाति संबंधी या अन्य मुकद्दमोंमें लिया करते, जैन महासभाके मथुराके उपसभापति. और जैन प्रांतिकसभा छावणी नीमचके वा जैनधर्म प्रचारणीसभाके सभापति आपही थे.

ग्यारह बिंबप्रतिष्ठाओंमें आपने पधारकर पुण्य उपार्जन किया आज कल भानपुराकी बिंबप्रतिष्ठामें जानेको उत्साही थे.

दानके विषयमें तो एक गोलक अपने पास रखते; उसमें नित्य प्रतिअपने किये शुभाशुभ कर्मोंका चिंतवन कर शक्ति प्रमाण द्रव्य उसमें डालते तीन मासमें खोल चार दानोंमें वितरण कर देते.

अभक्ष्य पदार्थोंका वा सप्तव्यसनोंका तो त्याग कई वर्षोंसे था.

रात्रिमें सिवाय जल पीनेके खान पानका भी त्याग था.

पूस वदी ४ सं. १९५८ को बुखारका जोर होनेपर भी आप पांच बजे प्रातःकाल मंदिरजी पधारे. भाग्यवशात् मेरा भी संयोग हुआ. मैंने उनकी शक्ति कम देख पूछा कि आप ऐसी हालतमें क्यों पधारे? तब उत्तर दिया कि इस शरीरका क्या भरोसा, न जाने कब दगा दे जावे तो धर्ममेंही विघ्न पड़े.

आपको उसी दिनसे बुखारका जोर ज्यादा होता गया. तब मुझे बुला कर कहा कि स्तोत्रपाठ सुनाओ. मैंने सभ्राता दयाचंदके तीनों समय तीन दिन तक स्तोत्रादिक सुनाये. जहांपर भूल हो जाय वहांपर आपही बताते जाते. पूस वदि ७ हीको कफकी अधिक वृद्धि जान वचन शक्तिको कमती देख इस देहका भरोसा न मान अपने चारों पुत्रों सहित सर्व कुटुम्बको बुलाके कई प्रकारकी शिक्षायें दी और कहा कि जो पुरुष सबसे मिलकर ऐक्यताके साथ इस संसारमें अपनी आयु पूर्ण करेगा वही बलवान, वही श्रेष्ठ, वही सुखी, गिना जायगा. देखो तिनका कितना तुच्छ है परंतु जब उसको एकत्र करके रस्सी बनाते तब उसीसे मस्त हाथी बांध लेते हैं. इसी प्रकार तुम सब मिलकर चलना और सुखी रहना और इस प्रकार धर्म कार्यों में रुपया भेजनेको कहा सो उसी वक्त उनके पुत्र हजारीलालजीने पेंन्सिलसे लिखा—

११) सिखरजी
५) गिरनारजी
५) पावापुरजी
५) चंपापुरजी
४) राजग्रही
५) सिद्धवरकूट
७) सोनागिरजी
५) बड़वानीजी
१६) झालरापाटनके मंदिरमें
११) पाटनके मंदिरमें
२) चांदखेड़के मं०
५) मंदसोरके मं०
५) फर्रुख नगरके
५) परतावगढ़के
५) आगरके
४) मलार गढ़के
२) जावदके मंदिरमें

२) प्रणासाके
२) भानपुरके मंदिरजी
१९) नीमचकी छावनीके
१९) जैन पाठशाला छावनीके
९) जैन औषधालय नसीराबाद
९) जैन औषधालय अजमेर
९) स्वेतांबरी मंदिरकी छावनीके
९) रिषम देवजीके मंदिरमें
९१) दुःखित भुखितोंको नाजकपड़ा
१९) महा सभा मथुराके उपदेशक फंडमें
१०) महा विद्यालय मथुरा

२७१)

तत्पश्चात् शामको सिंगारबाईजीके बुलानेको मंदसोर तार दिवाया. उक्त बाईजी बड़ी धर्मात्मा धर्मज्ञ धर्मज्ञाता जैन मतके रहस्यको संपूर्ण रीतिसे जानकार परिग्रहसे उदासीन हैं. श्री गोमट्टसारजीकी चर्चा तो कंठाग्र है. उनकेपास तार पहुंचनेही रात्रिको १० बजे रेलगाड़ी द्वारा आन पहुची. आकर बड़े हर्षसे उनकी कुशल पूंछी तब आपने कहा कि शरीरकी क्या कुशल? आप तो धर्म श्रवण कराके इस आत्माकी कुशल करो.

यह सुन बाईजीने संपूर्ण रात्रि स्तोत्रादिकके पाठ श्रवण करा. बारा भावनाका चिंतवन कराया और कफकी अधिकही वृद्धि जान आत्मकल्याण-के अर्थ परिग्रहका त्याग कराया कि प्राण बचेंगे तो ग्रहण नहीं तो त्याग. और पलंग परसे सांथरापर कायोत्सर्गासन लिटाया. आपकी वचन शक्ति मंद हो जानेसे आप पाठोच्चारण तो नहीं कर सके थे. परंतु चैतन्य शक्ति तो इस प्रकार रही कि जहां नमस्कार शब्द आता था उसी समय हाथ उठा मस्तकपर लगाते और हरएक स्वासके साथ "ओं" का उच्चारण करते थे. जब हाथ उठाने धरनेकी शक्ति न रही तब मस्तकपरही लगा लिया और कहा कि झालरापाटनकी छावनीके चौवीस महाराजकी पूजन करानेको तार दो. सो उसी समय उनके बड़े पुत्र गुलजारी लालजीने लिख कर तार दिया.

आप ओं३म्का उच्चारण करते करते उसी दिन पूस वदी ८ बृहस्पति वारके प्रातःकाल ८।।। बजे इस असार संसारको छोड स्वर्गवास कर गये. आपका ये ७२ बहत्तरवाँ वर्ष था.

शोक! शोक! महा शोक!

हाय! हाय! रे विधाता, तूंने ऐसे उत्तम पुरुषोंको जो कि जैन धर्मोन्नति जात्योन्नति आदि शुभकार्योंके कारक थे. नहीं छोड़ा; तो किसको छोड़ेगा. अर्थात् एकदिन सबको तेरा शरण लेने पड़ेगा. सच कहा है.

दोहा

राजा राणा छत्रपति, हाथिनके असवार।
मरना सबको एक दिन. अपनी अपनी बार॥
दल बल देवी देवता, मातपिता परिवार।
मरता विरियां जीवको कोई न राखन हार॥

प्रार्थना.

हे भ्रातृगणो, इसके छपवानेसे मेरा यह प्रयोजन नहीं है कि आप पढ़ लेवें वा सुन लेवें किंतु मेरा यह प्रयोजन है कि यह दिन सबको आनेवाला है. ऐसा न हो कि काल अचानक आकर उठा ले जावे. और रास्तेके वास्ते कुछ खर्च

लेने पावें. कारण कि परलोकपुरीमें सबको गमन करना है और विना खर्ची गमन करना मूर्खोंका काम है.

आपही देखो कि जो देखे हुए देशमें जाना चाहें कि जहांपर अपने मित्र रिस्तेदार आढतिये आदि रहते हैं. और चिट्ठी आने जानेका भी मार्ग है. तो भी खानपानका सामान डोर लोटा कुछ नगदी लेकर रास्तेकी आपत्तियोंसे बचनेके लिये संग ले जाते हो. तो भला बताओ कि परलोकपुरी कि जिसमें न मित्र न रिस्तेदार, न आड़तिये, न चिट्ठी आनेजानेका मार्ग है. वहांकेवास्ते क्या खर्चीका बंदोबस्त किया? चतुर पुरुषोंको अति शोचनीय वार्ता है. सोचो. और निरंतर परलोकसंबंधी उपायमें रत रह जिनशासनोक्त भावनामें तत्पर हो धर्मरूपी खर्ची एकत्र करो.

जैसा अवसर उक्त सभापतिजीने अपना सफल किया तैसाही मेरे प्यारे सज्जन पुरुषो आपको कर्तव्य है.

उक्त सभापतिजीहीके लघुपुत्र हजारीलालजी इस जैन प्रांतिकसभाके मंत्री हैं. उनसे भी यह प्रार्थना करता हूं कि अपने पिताजीहीके अनुसार दृढ रह सर्व उत्तम कार्योंकी उन्नति करें.

इसमें कोई अनुचित शब्द आ गया हो तो पाठकगण इसे अपना अनुचर जान क्षमा करें.

आपका शुभचिंतक,

खेमचन्द अध्यापक,

छावनी—नीमच.

हमारे सभापति साहिबका स्वधर्मानुराग.

बम्बईके सुप्रसिद्ध सेठ माणिकचन्द पानाचन्दजी जोंहरीका यशस्वी नाम किससे अप्रगट होगा. प्रायः छोटे बड़े सबही इनके नामसे परिचित हैं. आज हम उनहीं की स्वधर्मानुरागता अपने भाइयोंको सुनानेकेलिये उत्कंठित हैं.

इन्होंने अपने मृत पिताके चिरस्मरणार्थ "हीराचन्द गुमानजी जैनबोर्डिंग स्कूल" प्रायः पोनलाख रुपयेकी लागतका मकान बम्बईमें बनवाया है जिसमें उच्चश्रेणीके अंग्रेजी पढ़े हुए जैनविद्यार्थी रहते व स्कालिशिप पाते हैं. और इन्हें धर्मशास्त्रोंका अभ्यास भी कराया जाता है. इसकेसिवाय जैनसंस्कृतविद्यालय जो अभी इस सभाकी तरफसे खोला गया है इसी मकानमें स्थापित किया गया है. दूसरे सूरत शहरमें "हीराचन्द गुमानजी जैनपाठशाला" नामकी शाला भी कितने दिनोंसे चल रही है. जिसका सब खर्च आपही देते हैं. उक्त पाठशालाकी व्यवस्था आपको इस सभाकी वार्षिकविज्ञप्ति देखनेसे ज्ञात होगी.

दूसरे इस वर्ष हमारे जैनयात्रियोंके अधिक आनेसे तथा उनको विशेष तकलीफ होते देखकर आपके दिलमें "बम्बईमें जैनधर्मशालाका अभाव दूर करना" यह विचार आया. और औसर

पाकर एक धर्मशाला (जिसका नाम पंजीकी वाड़ी है) बत्तीसहजार रुपयेमें लेकर अपना उत्साह प्रगट किया. अब बम्बईमें आनेवाले जैनयात्रियोंके दुःखका अंत आ गया

इसकेसिवाय दिगम्बर जैनप्रान्तिकसभा-को इस योग्य करनेके आपही एक मात्र कारण हैं. तीर्थक्षेत्रोंपर तो आपका ध्यान इसप्रकार रहता है; कि जरा भी कहींके अप्रबंधका समाचार मिला कि वहांके प्रबंधकर्त्ताको लिखकरके, समझाकरके, आप खुद जाकरके, जैसे तैसे उसका प्रबंध यथोचित कर देना. सम्मेदशिखरजीपर जो अभी झगड़ा हुआ था उसके मेटनेको आप खुद व सेठ पानाचन्द रामचन्द शोलापूर, सेठ नाथारंगजी गांधी, आकलूज, लल्लूभाई प्रेमानन्द बोरसद, बालचन्द हीराचन्द शोलापूर, आदि भाइयोंको उत्साह दे व साथ लेकर शिखर-जी पधारे थे जिसकी संक्षिप्त रिपोर्ट हम अपने भाइयोंके अवलोकनार्थ प्रकाश करते हैं—

तारीख २४ को बम्बईसे रवाना होकर नागपूरमें ठहरे. रात्रिको पंचायती जैनम न्दिर आदित्यवारीकी पाठशालामें सभा कीनी जिसमें अनुमान २५० भाई एकत्र हुए, प्रथम भाई पानाचन्द रामचन्दने "हमारी पहिले क्या स्थिति थी और अब क्या है" इस विषयमें व्याख्यान दिया और फिर निम्नलिखित चार प्रस्ताव पेश किये.

१ यहांके भाईयोंको भी सहायताके निमित्त शिखरजी पधारना चाहिये २ यहांपर जो जैनपाठशाला चल रही है उसको चिरस्थाई करना चाहिये ३. भा-इयोंमें जो परस्पर अनैक्यता हो रही है, वह दूर की जावे. ४ स्वाध्याय करना प्रत्येक जैनीभाईका मुख्य कर्त्तव्य है.

स्वाध्यायपर विशेष जोर देनेसे उसी वक्त प्रायः ५० भाइयोंने शक्ति अनुसार प्रतिज्ञा ली.

शिखरजीको चलनेकेलिये श्रीयुत सेठ गुलाबसाव बापूसाव, मालूसाव तयार हुए.

पाठशाला चिरस्थाई होनेकेलिये उसी दम ६५००) साड़ेछह हजारका चंदा हो गया. और पूरा आठहजार कर देनेकी प्रतिज्ञा की. उपरोक्त रुपयोंसे एक मकान खरीदकर उसके भाड़ेमात्रसे काम चला-या जायगा.

आपसका फिसाद मिटानेकेलिये श्री सेठ रतनसाव व मारवाड़ी मन्दिरके पंचोंसे पंचायतनामा लिखवा लिया.

उपर्युक्त प्रस्तावोंका इस प्रकार हर्षो-त्पादक फल हुआ.

तारीख २६ को वहांसे चलकर गिरेडी पहुंचे. वहां सेठ हजारीमलजी स्टेशनपर लेनेको आये थे उनसे मुकद्दमेंके बारेमें पूछा तो उन्होंने कहा कि मेरेको यह बात मालूम है कि तिलकचन्द मुकद्दमा दायर करने गया है. परन्तु विशेष हालतसे अपनेको अज्ञात बत लाया पश्चात्

हजारीमलजीने कोठीकी व्यवस्थाकेलिये दश पंद्रह महाशयोंकी कमेटी की. तथा कमेटीकी सम्मतीसे कार्यवाही करनेका विचार किया फिर वहांसे मधुबन गये, वहां आरावालोंको बुलानेकेलिये हमने पहिलेहीसे तार किया था. सो वहांसे लाला मुन्शीलालजी व लाला राजाजी वगैरह दो दिन पीछे आये. और उन्होंने भी कोठीकी कारवाईकी कितनी एक हकीगत जाहिर की. जब हम मधुबनमें थे उस वक्त लाला सुल्तानसिंहजी रहीस दिल्लीवाले भी आये थे. उन्होंनेभी चरण उखाडनेकी कैफियत कही और अपनी मदद देनेकी इच्छा प्रगट की. तुरन्त अपने संघके नामसे एक हजार रुपया जमा कराया. आरावालोंकी तरफसे कोठीपर रक्खे हुए राम नरायण गुमास्तासे कोठीकी व्यवस्था पूछने पर संतापजनक उत्तर प्राप्त न हुआ और देखनेसे भी कोठीकी व्यवस्था ठीक नहीं पाई. भंडारकी देख रेख करनेसे ज्ञात हुआ कि गत वर्षका हिसाब अभीतक तयार नहीं हुआ तो फिर हालका कहांसे हो? कोठीके द्रव्यसे लिये हुए गांवोंकी आमदनी की उगाई ठीक नहीं होती है. नौकर चाकर लोग भी पूरा वेतन पानेपर काम बराबर नहीं देते. यद्यपि हम नीचेकी कोठीकी हिसाब वही वगैरहकी देख रेख नहीं कर सके. तथापि अनुमानसे कह सक्ते हैं कि इसका प्रबंध भी ठीक नहीं है, यहांके कार्य्यकर्ता अपने दिलसे काम की परवाह रखते हैं ऐसा हमको मालूम नहीं होता.

वहांसे गिरडी आये, बाहरसे आये हुए दिगम्बरी भाइयोंके तार यहां मिले. जिन सबका सारांश यही था कि "तुम मनाईके हुक्म लेनेका प्रयत्न करो, हम मदत देनेको तयार हैं."

फिर तिलकचंद मनाईका हुक्म लेकर रांचीमे आया और मालूम हुआ कि दिगम्बर जैन प्रांतिकसभा बंबईसे जो तार लार्ड कर्जनको दिया गया था, उसपर लार्ड सा० ने रांचीके डिपुटी कमिश्नरको इसका जरूरी इन्तजाम रखनेका हुक्म दिया है. फिर यहांसे चलकर आरा गये, और वहां कोठीका प्रबन्ध और हिसाबके विषय सुधारा करनेकी पंचोंसे प्रेरणा की और उन्होंने निम्नलिखित बातें स्वीकार की जिसके बदलेमें हम उन्हें कोटिशः धन्यवाद देते हैं.

१ पिछला सम्पूर्ण हिसाब चैत सुदी १ तक छापकर प्रसिद्ध करना.

२ आगामी एक सालतक सर्व भाइयोंको संतोषदायक काम दिखाना व मासिकवार हिसाब जैनगजटद्वारा प्रकाश करना.

३ हिसाबकी जांचकेलिये दो आडिटर जैनप्रांतिकसभा बम्बईसे मांगना.

इसके पीछे बम्बई आनेपर मालूम हुआ. कि प्रतिष्ठा होनेकी जो तारीख थी उसपर सरकारकी तरफसे दो सौ कानिस्टबिल व एक दारोगा और एक सुपिरंटें-

टवास्ते इन्तजामके मुन्तिद रहे और उन्होंने पूरा बन्दोबस्त रक्खा जिससे प्रतिष्ठा न हो सकी. इस विषयमें हम अपनी न्यायशीला गवर्नमेंट सरकारको तथा श्रीमान दूरदर्शी लार्ड कर्जन व बंगालके ले. गवर्नरसाहिबको तथा पुलिससुपरिटेंडेंट साहिबको बारंबार धन्यवाद देते हैं. जिन्होंने यह उचित प्रबंधकर हमको हर्षित किया.

अब हम उक्त सेठ साहिबके उद्योगकी यह संक्षिप्त रिपोर्ट भाइयोंको सुनाकर शोलापुर जैनसमाजकी वात्सल्यतासे पास हुए अड्रेसको नीचे प्रकाशकर अपने लेखको पूर्ण करते हैं. और आशा करते हैं कि हमारे जातिके धनिकगण इनके उत्साहका अनुकरण कर प्रशंसा पात्र बनेंगे तथा हमारे सेठजी साहिब भी अपने उत्साहकी दिन प्रति वृद्धि कर जीवन सफल करेंगे.

कृपापात्र,
नाथूराम प्रेमी.

--

नकल.

जवेरी शेट माणकचंद पानाचंद जोग्य

प्यारा धर्मबंधु,

जत अमे नीचे सही करनारा सोलापुरना दिगंबर जैन श्रावको आपसाहेबनी स्वधर्मविषे अत्यंत प्रीति देखीने आ मानपत्र आपने आपवानी रजा लईये छीये ते कृपा करी स्वीकारशो.

आपणा जैन बंधुओ स्वधर्मसंबंधी तेमज राजकाजसंबंधी केळवणीमां घणा पछात पडेला जोईने तेमने धर्मसंबंधी अने राजकाज, वैदकीय, शिल्पशास्त्र वगेरेनी ऊंचा दरजानी केळवणी मेळववानूं अतिशय जरूरनूं साधन जे "बोर्डिंग हाऊस" ते मुंबईसरखा मोहोटा शेहेरमां पोताना पोणो लाख रुपिया आसरे खरच करीने ओप बांधी आप्युं तेथी आपनी धर्मकृत्यमां खरी उदारता प्रगट थायछे.

श्रीसिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखर जहां वीस तीर्थंकर अने असंख्यात मुनी मोक्ष पाम्यां छे त्यां जात्रालूना सगवड माटे पगथियां करवानूं काम चाल्युं हतूं. ते आपणा श्वेतांबर भाईओए वगर कारणें उखाडी नाखीने कज्यो वधार्यो ते काममां आप आगेवान थई मेहेनत लईने सरकारनी अदालतमां जय मेळव्यो. तेथी आपणे टेकारो स्वधर्म वात्सल्य गुण तारीफ करवा लायक छे एम स्पष्ट देखाय छे.

जयधवल, महाधवल जेवा प्राचीन ग्रन्थोना जीर्णोद्धार करवामां पण आप राहेज आगेवान थई सर्व भाईओना मदतथी काम चलाव्युंछे तथा ज्ञानवृद्धी माटे आपनी अत्यंत उत्कंठा देखाई आवेछे.

श्रीगंधहस्तमहाभाष्य नामना अत्यंत उपयोगी परंतु अदृष्ट थयेला धर्म पुस्तकनी तपास लगावी आपनारने पांचसो रूपियानुं इनाम आप जाहेर कीधुं तेथी आपना विषे प्रवचनवात्सलत्व गुण रहेलो जणाई आवेछे.

तेमज आपणा केटलांक गरीब अने निराश्रीत जैन बंधूओने विद्याभ्यास करवामां योग्य पारितोषिक अने स्कालर्शिप आपीने उत्तेजन आपोछो, तेथी जैनधर्मना यथार्थ दाननो मार्ग आप बतावी आपोछो.

एवीज रीते स्वधर्मसंबंधी हरयेक काममां आप पोताना तन, मन, धनथी मेहनत करीने अमारा सरखां धर्मबंधूओने पण साथे लई पुण्यनो लाभ आपोछो. हवां तमारा सदगुणो जोईने अमने घणो संतोष थयोछे. ते संतोषना बे बोल आ मानपत्रमां टांकीने आपने भेट करीछे. ते आप मानपूर्वक अंगिकार करशो एवी अमे उमेद राखिये छीये.

सोलापुर, तारीख ६ अक्टोबर सन १९०१ | आपना, सदगुण चाहनारा

"विद्यालयमें पढावे किसको?"

पाठको! अब हमको यह फिर भी शोकके साथ कहना पड़ता है कि जो उपर मोटे अक्षरोंमे आप लिखा देख रहे है.! अभी तो हम सब चारों ओरसे यह पुकारते थे कि कोई विद्यालय उच्च शिक्षाका खोला जावे; तो जैन जातिमें पंडित हो सकें जिसके लिये द्रव्यवानोंसे प्रार्थना करते थे. तथा उत्साह देते थे. परन्तु जब भाग्यवश विद्यालय खुल गया. द्रव्यभी खर्च योग्य एकत्रित हो गया. तथा अध्यापक आदिभी अच्छे विद्वान मिल गये. व द्रव्यभी खर्च होने लगा तब कहते है पढावें किसको; अब कहिये! "हमारी होनहार खोटी है" ऐसा समझनेमें क्या संदेह है.

बंबईमें विद्यालयको खुले प्रायः पांच महीने हो गये. परन्तु आजतक केवल दो विद्यार्थी आये हैं और जिनके पीछे सवासौ रुपया महीना खर्च पड़ रहा है. सो हमारे भाइयोंको इस खर्चपर ख्याल करके प्रत्येक स्थानसे प्रवेशिका पास हुए अथवा इतनी योग्यता रखनेवाले विद्यार्थियोंको उत्साह देकर जल्द भेजना चाहिये जिससें यह खर्च सार्थक होवे और हमारे मनोरथ विटपमें कुछ फल दिखनेका सुऔसर प्राप्त हो.

बम्बईमें यह मनोहर विद्यालय ऐसे खुले स्थानपर बना हुआ है. जहांकी आब हवा प्रायः नगरभरमे अच्छी है. विद्यार्थियोंके आराम सुभीते और चित प्रसन्न रहनेके सर्व उपकरण मौजूद हैं. बालकोंको किसी प्रकारकी तकलीफ यहा होनेकी नहीं.

जिन विद्यार्थियोंको आनेकी इच्छा होवे वह हमसे पहिले फार्म मंगावे तथा उसकी खाना पूरी कर भेजें. पीछे पत्रव्यवहार करें. असमर्थ विद्यार्थियोंको स्कालर्शिप आदिसे पूरी २ सहायता दी जावेगी. सर्व भाईयोंका हितैषी.

धन्नालाल काशलीवाल, मंत्री विद्याविभाग.

सुशिक्षा.

प्रायः प्रत्येक पुरुषके हृदयमें यह बात जम रही है कि पाश्चिमात्यशिक्षा (इंग्रेजी) से मनुष्यके धर्म कर्म आचरण सब नष्ट हो जाते हैं, सो सत्य है परन्तु इसीके साथ २ धर्म शिक्षा दी जानेसे उलटा परिणमन होकर उसमें अच्छे २ गुणोंकी वृद्धि होती है. यथार्थ में पूछो तो विद्याका कोईभी दोष नहीं है. दोष केवळ कुसंगतिका है जिसकी बदौलत यह अंग्रेजी शिक्षाकी बदनामी हो रही है इस शिक्षाके साथ धर्मशिक्षा देनेका प्रतिफल क्या होता है. उसके नमूना स्वरूप परलोकवासी भाई मानिकचन्द हीराचन्दजी शोलापूरवाले हैं. उक्त भाई बी ए. क्लास तककी शिक्षा पाये हुए थे. इनके पिताजीने इसके साथ भली भांति. धर्म शिक्षा दी थी. जिसके प्रभावसे ये. इस सभा सम्बन्धी धर्म कार्य्योंमें अनुराग रखकर पूरी २ मदद देते रहे और अन्तमें संलेपनासहित मरण करके अपने पिताको तथा समस्त समाजको वियोगके शोकमेंभी एक हर्षके कारण हो गये.

Registered No. B. 288.

श्रीवीतरागाय नमः

जैनमित्र.

जिसको

सर्व साधारण जनोंके हितार्थ,

दिगम्बर जैनप्रान्तिकसभा बंबईने

श्रीमान पंडित गोपालदास बरैयासे सम्पादन कराकर

प्रकाशित किया.

जगत जननहित करन कँह, जैनमित्र वरपत्र ।
प्रगट भयहु–प्रिय! गहहु किन ? परचारहु सरवत्र ! ॥

तृतीय वर्ष } चैत्र, वैशाख सं. १९५९ वि. { अंक ७-८वां

नियमावली.

१ इस पत्रका उद्देश भारतवर्षीय सर्वसाधारण जनोंमें सनातन, नीति, विद्याकी, उन्नति करना है.

२ इस पत्रमें राजविरुद्ध, धर्मविरुद्ध, व परस्पर विरोध बढानेवाले लेख स्थान न पाकर, उत्तमोत्तम लेख, चर्चा उपदेश, राजनीति, धर्मनीति, सामायिक रिपोर्ट, व नये २ समाचार छपा करेंगे.

३ इस पत्रका अग्रिमवार्षिक मूल्य सर्वत्र डांकव्यय सहित केवल १।) रु० मात्र है, अग्रिम मूल्य पाये बिना यह पत्र किसीको भी नहीं भेजा जायगा.

४ नमूना चाहनेवाले)॥ आध आनाका टिकट भेजकर मंगा सक्ते हैं.

चिट्ठी व मनीआर्डर भेजनेका पताः—

गोपालदास बरैया सम्पादक.

जैनमित्र, पो० कालबादेवी बम्बई—

कर्नाटक प्रिंटिंग प्रेस, कांदेवाडी, मुंबई.

ग्राहकगणोंसे निवेदन.

हमारे पाठकों को यह अवश्य ही असह्य होगा. कि जैनमित्र ५ वां ६ वां अंक युगल निकलने पर भी. ७ वां ८ वां अंक फिर इकट्ठा निकला. और साथमें यह भी सोचते होंगे. कि ऐसा करनेसे दो टाइटिलका एक टाइटिल करने व दो टिकट की जगह एक टिकट लगने से जो द्रव्य बचता है उसका लोभ करते हैं. परन्तु भाइयो! यहां ऐसा विचार नहीं है. कारण यह पत्र किसी एक व्यक्ति की ओरसे द्रव्य कमाने को प्रकाश नहीं होता है. वरन सर्व जाति धर्मकी उन्नति करनेको ही दिगम्बर जैन प्रान्तिक सभाकी तरफसे निकलता है. इसमें जो कुछ हानि हो व लाभ हो सभाकाही है. आज तक इसमें जितना घाटा अदैनियां ग्राहकों के कारण हुआ है. जिसके विषय हम पूर्वअंकमें लिख चुके हैं, वह सब इसी सभाका है. जो आजकल जैनमित्र खाते नामें लिखा हुआ है.

यह अंक दुहरा निकलने का केवल मात्र कारण यह है कि इस माहमें लेख बाहर के अधिक आगये थे और प्राय: वे सब आवश्यकीय थे. तिसपर "जैन पत्रिका" का लेख "विधवा विवाह" सम्बन्धी देख कर उसका खंडन जो इस अंकमें अंकित है, इसी समय शीघ्रतासे प्रकाश करना आवश्यकीय समझा गया. कारण इस विषय पर उक्त पत्रिकाका बड़ा आन्दोलन देख अपने भोले भाइयोंको उसके धोखेमें फंस जाने की आशंकासे चुप बैठे रहना ठीक नहींथा— अत: उपरोक्त कारण सत्य जानकर आप लोग दुखित न होंगे. ऐसी संभावना है.

पूर्व अंक में अपने भाइयोंसे ग्राहक बढ़ाने की प्रार्थना की थी. परन्तु शोक कि उसका कुछ भी प्रतिफल नहीं हुआ. केवल दो एक भाइयोंने ही अपनी दया दिखाई है इस लिये अब यह फिरसे विनय करना पड़ी. कि यदि आप जैन मित्रको बंद होने की आशंकासे निकालकर पाक्षिक करना चाहते हैं, यदि आप अपनी जातिकी वृद्धिके इच्छुक पत्रोंमें यह एक अद्वितीय पत्र देखा चाहते हैं, यदि आप जातिधर्मवात्सल्यता दिखलाना चाहते हैं. तो शीघ्रही जैन मित्र के ग्राहक बनाकर मूल्य भिजवाइये और अपना भी पिछला शेष मूल्य भेजनेकी कृपा कीजिये.

एक सुभीता.

जो महाशय जैनमित्र के पांच ग्राहक बनाकर मूल्य भिजवावेंगे. तो उन्हें एक प्रति भेंटमें भेजी जावेगी अर्थात् ५ के मूल्यमें ६ जैनमित्र भेजे जावेंगे परन्तु मूल्य पेशगी आना चाहिये. आशा है. कि इस को पढकर हमारे भाई अवश्यही ग्राहक बढ़ाने की कोशिश करेंगे

सम्पादक.

जैन बिम्बप्रतिष्ठा वर्धा

"वर्धा," नागपूर जानेवाली जी. आई. पी. रेलवेका प्रसिद्ध स्टेशन है यहां पर बैसाख सुदी ११ से १५ तक पंचकल्यानक प्रतिष्ठा होगी. नागपुरके सुप्रसिद्ध सेठ गुलाबसाव ऋषभसावजीने यह महोत्सव करानेका विचार किया है, धर्मात्मा भाइयोंको इस अवसरपर अवश्यही जाकर पुन्य संचय करना चाहिये, इसके सिवाय दिगम्बर जैन प्रान्तिक सभा बम्बईका नैमितक अधिवेशनभी यहां पर होगा, जिसके कारण अनेक जाति, धर्म देशोन्नत्ति कारक विचार इस स्थलपर होने से विशेष आनन्द होगा

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥
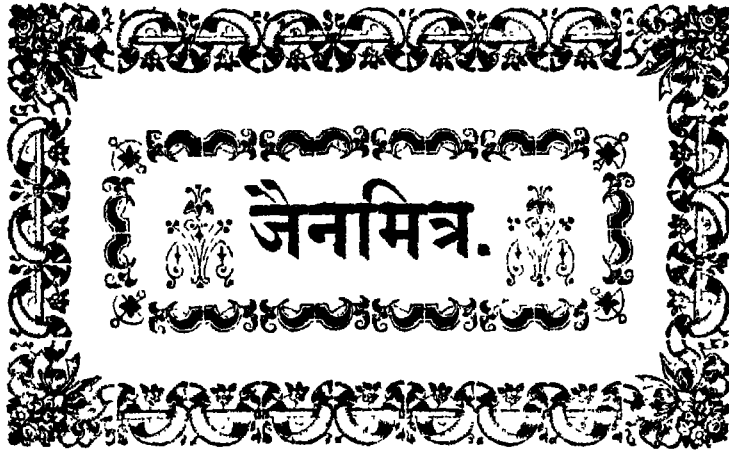
जगत जननहित करन कहँ, जैनमित्र वरपत्र ॥
प्रगट भयहु-प्रिय ! गहहु किन ?, परचारहु सरवत्र ! ॥ १ ॥

तृतीय वर्ष. } चैत्र, वैशाख सं. १९५८ वि. { अंक ७, ८.

सम्पादकीय टिप्पणियां.

नवीन कल—ब्रह्मदेशके थ्येटम्यो जिलेमें हिन्दुस्थानी व्यवसायियोंकी कम्पनीका उत्साह सुनकर जीको बड़ा संतोष हुआ. कम्पनीका नाम है "जमाल ब्रादर्स." इसने तख्ता बनानेकी अंजनसे चलनेवाली एक कल बनाई है. कल बहुत बड़ी है. तथा आजतक वैसी कलकी जितनी बड़ी उन्नतियां विलायतमें हुई हैं. वह सब इस नई कलमें विद्यमान हैं. इसके उपरान्त कपड़ा बुनने तथा रुईके बीज (बिनौले) से तेल निकालनेकी एक कलभी कम्पनीने खड़ी की है. इस कलके होनेसे उस देशमें रुईकी खेतीभी बहुत बढ़ गई है. यह कम्पनी बहुत नफा उठा रही है. अनेक लोगोंका प्रतिपालनभी कर रही है. जब तक ऐसे २ नये कामोंमें देशवासियोंका उत्साह न होगा; तबतक देशका दुःख दूर न होगा. और अब उत्साह न करनेसे क्रमशः अंगरेज लोग यह काम करते हुए. भविष्यमें ऐसे कामोंमें देशवासियोंके प्रवृत्त होनेकी आशा तक नष्ट कर देंगे.

मन्द्राजमें मिस्त्री—हिन्दुस्थानके प्रत्येक प्रान्तसे लड़के लेकर मद्रासमें एक मिस्त्री विद्यालय खुलनेवाला है. इसमें विद्यार्थियोंको ईंट बनाना, मकान बनाना आदि लुहार बढ़ईके कामकी शिक्षा देकर प्रवीन होनेपर सर्टिफिकटभी दिये जावेंगे.

दुर्भिक्षमें पालना—आजकल हिन्दुस्थानमें सरकार तीनलाख ५८ हजार आदमियोंसे मिहनत लेकर अन्न दे पालना कर रही है.

शोकदायक मृत्यु—जैन पाठशाला बजरंगगढ़के अधिपति, जाति धर्मोन्नति करनेवाले श्रीमान् सेठ शालिग्रामजी फाल्गुण शुक्ल १० बुधवारके ४॥ बजे इस असार संसारको त्यागकर

सम्पूर्ण कुटुम्बी जन तथा ग्राम परग्राम वासियोंको शोक समुद्रमें डुबा. अपनी ७९ वर्षकी आयु पूर्ण कर परलोकवासी हो गये. आपके आचरण आदि अति प्रशंसनीय थे, बजरंगगढ़की पाठशाला इन्हींके निजव्ययसे चलती थी. जिससे इनकी जाति धर्म-वात्सल्यता भलीभांति प्रगट होती है; आपका मरण समाधिसहित शान्तितापूर्वक हुआ, अन्तिम समय निम्न लिखित प्रकार द्रव्य दान कर गये.

१२९) निर्वाण क्षेत्रोंको
१९१) बजरंगगढ़के तीनों मन्दिरोंको.
२९०) गुना, गुना छावनी, राघोगढ़, बरषद छीपाबड़ौद, छबड़ा, आरोन, रूट आई, घरनाडदे, छिगरी, स्वेताम्बरी, प्रभृति ग्रामोंके मन्दिरोंको.
९९) चंपाबाईको.
९०) दौलीबाईको.

आपके भतीजे श्रीयुत गोपालजी बुद्धिमान हैं, ये चिरायु होवें. तथा अपने पिताके समान स्वपरोपकारी होवें ऐसी हमारी कामना है.

अद्वतीय कूप— रंगूनमें दोसौ फुट जमीन खोदकर अति स्वादिष्ट जल निकाला है. पृथ्वीमें इतना गहरा कुआ और नहीं है. इसमेंसे नित्य लाख लाख गैलन जल निकाला जाता है.

काले क्रस्तानोंकी सेना—मद्रासमें सेना बनानेके लिये काले क्रस्तान चुने जाते है. जिस जातिके लोगोंको पहिले सेना बननेका अधिकार न था वे क्रस्तान बनकर सेना बननेके अधिकारी हो गये. सो क्या क्रस्तानी. वंशकी कमजोरी मिटा देती है? भई! राजधर्मका प्रभाव बड़ाही विचित्र है.

कोल्हापुर विद्यालय—दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभाके बहुत दिवसोंके परिश्रमसे एक विद्यालय स्थापित हो गया है. उसका विज्ञापन भी "जैन बोधक" पत्रमें निकल चुका; कि जिस विद्यार्थी को पढ़ने की इच्छा हो, बिनयपत्र भेजे. स्कालर्शिप दी जावेगी. मरहटी, कनड़ी पांचवी कक्षा के पढ़े हुए विद्यार्थी भर्ती किये जावेगे.

होनहार जैन पाठशाला—आलंदकी प्रतिष्ठामें पन्द्रह सोलह हजार रुपयाका ध्रुव चन्दा एकत्रित हुआ है. और शाला शीघ्रही खुलनेवाली है. परंतु शोक है कि वहां के पंचोंने पत्र लिखनेपर भी समाचार नहीं दिया. आशा है कि वहांके प्रबंधकर्ता इस शुभ समाचार की रिपोर्ट भेज हर्षित करेंगे.

प्राचीन मन्दिर—मुम्बई समाचारद्वारा प्रकाशित हुआ है. कि हिमालय पर्वतमे एक यात्री संबाद दाता लिखते हैं; कि यहां एक सुवर्ण का जैन मन्दिर है. तथा वहीं गुफाके भीतर एक प्राचीन प्रतिमा है. जिसकी फोटो उन्होंने अपने साथ ली है. देखें इस का कहां तक शोध लगाता है.

शोक प्रकाश—किशोरचन्द मंत्री प्रांतिक सभा पंजाबभे लिखते हैं. कि आज तारीख २ अप्रैल को व वक्त ९ बजे शामके बाबू बनारसीदासजी लश्कर व प्राविंशियल सेक्रेटरी बाबू देवी सहाय नाहनवालोंकी चिट्ठियोंसे मालूम हुआ. कि हमारे सरपरस्त कौम की वहबूदी चाहनेवाले, जैन का नाम इस पंचम कालमें प्रगट करनेवाले, बाबू बच्चूलालजी मंत्री परीक्षालय हमको हमेशा के लिये इस असार

संसारमें छोड गये. अरे जालिम! क्या तुझको ऐसे सज्जन पुरुषोका ग्रास किये बगैर चैन नहीं आती थी. क्या ऐसा न करनेसे तू निर्बल कहलाता था? अरे कमबख्त काल! तूने बहुत गजब किया. कि एक पुरुष जिसने इस डूबती हुई जाति को सम्हालके किनारे लगाना चाहा था उसको हमारेसे जुदाकर दिया! इस बातके पढ़ते हुए गम मेरे चारों तरफसे छा गया. अभी चिट्ठी को खतम नहीं करने पाया था कि मालूम हुआ कि हमारी बम्बई प्रान्तिक सभा जिसने जैन धर्म को तरक्की देनेमें कुछ कसर नहीं रक्खी है. जिसने कठिनसे कठिन काम धर्मके वास्ते अपने ऊपर ले रक्खे है. इसके मंत्री साहिब सेठ हीराचन्द नेमीचन्द शोलापूर निवासीके दो पुत्र जालिम मोतने नहीं छोड़े. कैसा सख्त सदमा सेठ साहिबके दिल पर होगा! यह देखते ही दिल शोक सागरमें डूब गया और उसी वक्त सभाके नोटिस तकसीम किये गये. रात को एक खास सभा हुई जिसमें कीर्तिचंदने बाबू बच्चूलाल की अकाल मृत्यू की खौफ नाक खबर तमाम सभासदोंको सुनाई. इसी वक्त तमाम सभासद शोक समुद्रमें डूब गये. गम व अलम इस कदर हुआ जो अहाते बयानसे बाहिर है. हाय जालिम मौत! तूने क्या किया. वह नेक सूरत सर परस्त जो हमारी वह बूदी व तालीमके वास्ते इस कदर महिनत उठाता था. उस को हम से हमेशहके वास्ते छीन लिया. यह सदमा ऐसा सख्त था कि इसने तमाम सभाके सभासदोंको बेहाल कर दिया. गो मौत सब को लाजिमी है; मगर ऐसे पुरुषोंसे जिनसे हजारों मखलूको की भलाई हो. एक ऐसा बडा नुकसान पहुंचाया; जिसका भूलना ना मुमकिन है. मगर इसमें सिवाय सब्रके और कुछ पेश नहीं आता.

बादमें सभाको सख्त अफसोसमें डूबा हुआ देख कर बाबू साहिब के वह बहबूदीके काम जो कि उन्होंने महासभामें करके दिखाये है. सुनाकर उन के अफसोसको मध्यम किया. फिर सभापति और सभासदोंकी गमनाक आवाजसे निकला कि ज्वाइन्ट जनरल सेक्रेटरी महासभाको बाबू बच्चूलालजी की अकाल मृत्यु का जो शोक हुआ है एक अफसोसनाक चिट्ठी भेजकर तसल्ली दें और दूसरे बम्बई प्रान्तिक सभाके उपदेशक भंडारके मंत्री साहिब को जिनको दो सख्त जिगर मंझधारमें छोड़ गये हैं. और ऐसा सख्त सदमा उनके दिलपर दे गये; चिट्ठीद्वारा संतोषित करें अन्तमें मेरी इष्ट देवसे यह प्रार्थना है कि इस जैन जातिको इस अकाल मृत्युसे बचावे.

नगर समाचार.

सेठ नेमीचन्दजीका स्वागत—गत ८ अप्रैलको मंगलवारके दिवस ३ बजे तारदेवके "सेठ हीराचन्द गुमानजी जैन बोर्डिंग स्कूल" में अजमेर निवासी रायबहादुर सेठ मूलचन्दजी सोनीके सुपुत्र सेठ नेमीचन्दजीके सन्मानार्थ एक नैमित्तक सभा की गई थी उसमें नगरके निम्न लिखित प्रतिष्ठित पुरुष पधारे थे.

१ सेठ हरसुखराय अमोलकचन्दजी.
२ सेठ गुरुमुखराय सुखानंदजी.
३ सेठ खेमराज श्रीकृष्णदासजी.

४ सम्पादक बाबू अमृतलालजी.
५ सेठ नाथारंगजी गांधी.
६ जौहरी सेठ माणिकचन्द पानाचन्दजी.
७ पंडित बल्देवदासजी.
८ धन्नालालजी काशलीवाल.
९ सेठ छगन धनजी.

प्रथम भाई पानाचन्द रामचन्दजीने मंगलाचरण करके बोर्डिंग स्कूल खोलनेका हेतु, स्थानकी व्यवस्था, वार्षिक आय, व्यय, शिक्षा. आदिका लेखा सुनाया. तथा इस स्कूलके विद्यार्थियोंको धर्मशिक्षा वा स्कालरशिप किसप्रकार दी जाती है; कही.

पश्चात वैय्याकरणाचार्य पंडित ठाकुर प्रशादजी (जो बोर्डिंग स्कूलके सुप्रिटेंडेंट व संस्कृत विद्यालयके अधि शिक्षक हैं.) ने अंग्रेजी शिक्षणके साथ धर्मशिक्षा देनेकी प्रयोजनीयता उत्तम रीतिसे दिखाकर "बलवन्त बावाजी बुकटे" नामक दीन विद्यार्थीकी प्रशंसा की. यह अंग्रेजी बी. ए. क्लासमें तथा संस्कृतमें "न्यायदीपिका" उच्च संस्कृत न्याय ग्रन्थ पढ़ता है! प्रशंसा सुनकर एक उदार धर्मात्मा भाईने सभा विसर्जन हुए बाद एक सुवर्ण मुद्रा (गिनी) उक्त विद्यार्थीको गुप्त रीतिसे दी. और नाम प्रगट करनेमे निषेध किया.

पश्चात् लहेरू भाई वकीलने "श्वेताम्बर दिगम्बरका भेद न रखकर धर्मविद्याकी उन्नति ही करना" इस प्रकार गुजराती भाषामें व्याख्यान दिया!

तदुपरान्त बाबू अमृतलालजी (जो वर्तमानमें "श्री व्यंकटेश्वर समाचारके" सम्पादक हैं) ने "संस्कृत विद्यासे लाभ होनेवाली गुरु शिष्य भक्ति" पर अति मनोहर भाषामें व्याख्यान दिया।

पश्चात् सेठ नेमीचन्दजीने विद्योन्नतिकी प्रयोजनीयता व गरीब विद्यार्थियोंको स्कालरशिप देनेकी उत्तेजना देकर अति उत्तम व्याख्यान दिया. जिसके प्रभावसे १०) मासिक एक वर्ष पर्यंत सेठ नाथारंगजीने ५) मासिक दो वर्ष पर्यंत सेठ गुरुमुखराय सुखानन्दजीने १०) मासिक एक वर्ष पर्यंत सेठ छगन धनजीने स्कालिर्शिप देना स्वीकार किया व ५०) के संस्कृत व्याकरण न्याय आदिके ग्रन्थ सेठ श्रीकृष्णदासजीने और रत्न करंड श्रावकाचार, द्रव्यसंग्रह, तत्वार्थ सूत्रकी दश २ प्रति हस्त लिखित आपहीने देना स्वीकार की. इसके अतिरिक्त "**विद्यालयकी हम भी कुछ मदत करेंगे**" यह वाक्य कहा. जिसको सुनकर हमें बड़ा भारी संतोष है.

आजकलके धनी पुरुषोंमें प्रायः जो विद्याकी वधर्मवात्सल्यताकी न्यूनता देखी जाती है वह आपसे कोसों दूर है. व्याख्यानकी शक्ति तो ऐसी है, कि सुननेवाले मुग्ध होकर धन्य धन्य के अतिरिक्त कुछ नहीं कह सक्ते. इस सभाके दो दिवस पहिले चतुर्दशीको जो आपका व्याख्यान भोईवाड़ेके मन्दिरमें "धर्मोपदेश" विषयपर हुआ था अति सराहणीय था. इसके असरसे कितने एक भाइयोंने वहां ब्रह्मचर्य व्रत व वेश्यागमन त्यागकी प्रतिज्ञायें की थी.

पश्चात जैन बोर्डिंग स्कूलके सैक्रेटरी चुन्नीलाल झवेरचन्दजीने सभामें उपस्थित सभ्यों तथा द्रव्यदाता महाशयोंको धन्यवाद दे ५॥ बजे सभा विसर्जन की.

कविता

स्त्री केलवणी विषय.

(राग गरबीनो.)

देशोन्नतिने जो इच्छो तो उदय आपणो चाहोजी ॥
आर्यभूमिनी चढ़ती माटे, उपाय सौथी दाहो ॥
स्त्रीकेलवणीथी ॥ टेक ॥ १

आर्य सकलनुं मंडल आजे थयूं प्रमादी सुस्तजी ॥
उद्योगीने कलाकुशलता, माटे थाओ चुस्त स्त्री० ॥ २ ॥
आर्यभूमिनी अवनति थइ छे, अंधकार आव्यो छे जी ॥
चीन अने जापान, सुविद्या थी कीरति रीब पाम्यो. स्त्री० ३
घरमां हांडीफक्त मळेन, होय न खावा पीवाजी ॥
नानूं सरखुं राज्य मळे. वळी थाय सुकीरति दीवा. स्त्री० ४
दुःख रोगने दारिद्रता मा, होय कदापी वासोजी ॥
सुख संपत्ती मळे समृद्धि, वळी खजानो खासो, स्त्रीके० ५
आवक जावक हिसाब राखे, विवेक बुद्धि राखे जी. ॥
केलवणी सुकल्प वृक्ष नो ताजा फल नितचाखे, स्त्रीके० ६
निज घरनी सुव्यवस्था राखे, प्रधान पेठे सारा जी ॥
निज बालकने केलवणी थी, सदा करे सुखकारी. स्त्री० ७
पर निन्दा तज सकल वखतनों, सुउपयोग करे छे जी ॥
सुलक्षणी स्त्री सुखदुखमां, साथी थइ कष्ट हरे छे स्त्रीके० ८
घरते नानूं राज्यगणो वळी स्त्रीतें घरनी राणी जी ॥
सुखनां साधन भेगां कर नारी मलशे ते शाणी. स्त्री० ॥ ९ ॥
क्लेश अने ककास दुष्टता, दोष अने वळी दंभजी ॥
ते मटी थाशे संप सुगुणता साचो सुखनो स्तंभ स्त्रीके०
संसार रूपी आमहेल तणो पायो केलवणीनो छे जी ॥
ते पाया मां सुखनां साधन नी मेळवणीतो छे. स्त्रीके० ॥
सब खीलेलो बाग बने छे होय जो निर्मल पाणीजी ॥
"व्हाली" बागजगतने जाणो निर्मल पाणी खाणी, स्त्री०

स्त्री. व्हाली वीरचन्द

अध्यापिका—ईडर

नोट—उक्त बाईने "स्त्रीशिक्षा" के विषय यह गुर्जर भाषामें कविता भेजी है. आशा है कि इस को पढ़कर स्त्रीगण लाभ उठावेंगी और उक्त बाईका अनुकरण करेंगी।

सम्पादक

शोलापूर जैनपाठशालाकी सं० १९५६ सालकी रिपोर्ट व हिसाब.

१ यह पाठशाला सम्वत् १९४१ की सालमें स्थापित हुई जिसकी सोलहवीं वर्षकी यह रिपोर्ट है.

२ जिस समय यह शाला स्थापित हुई, उस समय इसका कुल फंड केवल दो हजार रुपये थे. सो आज बढ़ते २ नव हजार रुपया फंडखातेमें तथा १५८५।।।=)। खैरीज उपजखातेमें. कुल दशहजार पांच सो पचासी रुपया सवाचौदह आने जमा है, जिसमेंसे ९।। हजारका व्याज उत्पन्न होता है. और बाकीके पैसे पुस्तकोमें तथा सामानमें लगे हैं.

३ गत वर्ष सम्वत १९५६ में व्याजसे व खैरीज उपजमे ६७३।=) की आमदनी हुई है. और खर्च ३१५।≡)।।। हुआ. शेष ३५७।।=)। बचतमें रहे,

४ यह पाठशाला स्थापन करनेका मुख्य उद्देश जैन जातिमें धर्मशास्त्रके जानकर विद्वानें की न्यूनताका पूर्ण करना ह.

इस पाठशालासे पढ़कर तयार हुए विद्यार्थियोंके नाम:—

१ पासू गोपाल शास्त्री प्रथम इसी पाठशालामें पढ़े और अब इसी पाठशालामें अध्यापकीका कार्य करते हैं, इनका काव्य अच्छा हुआ है आजकल न्यायशास्त्र पढ़ते हैं.

२ गजपति उपाध्याय काव्य पढ़कर बम्बईके मन्दिरमें शास्त्र जी बांचते थे सो अब श्री मूडबिद्रीमें जयधवल महाधवल सिद्धान्तोकी प्रती कर रहे हैं.

३ कल्लापा भरमापा निटवे यहां काव्य पढ़कर जयपुरमें व्याकरण न्याय पढ़े हैं. अब कोल्हापुरमें महापुराण, सागारधर्मामृत आदि संस्कृत ग्रन्थोकी मराठीमें वचनिका करके प्रसिद्ध करते हैं. तथा "जैन बोधक" मासिक पत्रके सम्पादक हैं.

४ तात्या आपा ठकुडगे काव्य पद्मनंदि पच्चीसी पढ़कर अपने ग्राममें हैं.

५ नाना बाबाजी मोहोलकर चन्द्रप्रभु काव्य धर्मशर्म्माभ्युदय पढ़कर वैद्यकशास्त्र पढ़ता है. वहां की चतुर्विधिदान शालामें वैद्यके हाथ नीचे दवा देते हैं.

६ विरदीचन्द पंडित श्री कुंथलगिरिपर पुराण बांचते हैं.

इस प्रकार विद्यार्थी पढ़कर प्रथक २ धर्मोन्नतिके कामपर लगे हैं; अब हालमें पाठशालामें पढ़ते हुए और दिगम्बर जैन परीक्षालय में परीक्षा देकर पास हुए उनके नामः—

१ आदप्पा लक्ष्मण उपाध्याय—यह रत्नकरंड श्रावकाचार, द्रव्यसंग्रह, तत्वार्थसूत्र, चन्द्रप्रभु, काव्य सर्ग ७ में परीक्षा देकर पास हुआ है. अब न्यायदीपिका पढ़ता है.

२ शांति गोविंद कटके—ऊपरके विषयोंमें यहभी पास हुआ है.

३ जीवराज गौतम—ऊपरके सब विषयोंमें परीक्षा देकर पंडित परीक्षाके धर्मशर्म्माभ्युदय काव्यमें पास हुआ है. अब वह न्यायदीपिका तर्क संग्रह और सिद्धांतकौमुदी पढ़ता है.

४ जीवराज हीराचन्द—रत्नकरंडमें परीक्षा देकर पास हुआ अब द्रव्यसंग्रह सूक्त मुक्तावली पढ़ता है. अंग्रेजी पढ़ा है.

५ रावजी सखाराम—ऊपरके अनुसार तथा अंग्रेजीभी पढ़ा है.

६ तात्या नेमिनाथ पांगल—ऊपर की नाईं तथा अंग्रेजी पढ़ा है.

इनके सिवाय अमरकोष, रूपावली, समास चक्र, कातंत्र पंचसंधि पढ़नेवाले पांच विद्यार्थी हैं.

इनके अतिरिक्त मराठी हिसाब वगैरह सरकारी क्रमानुमार पढ़नेवाले ४२ विद्यार्थी हैं ये सब जैनियोंके हैं. और इनमें से १७ विद्यार्थी अनाथ हैं. जिनको चतुर्विधिदानशालासे भोजन मिलता है तथा दो विद्यार्थी मध्य प्रदेशके बैतूल ग्राम के दो माहसे आये हैं. उनके खर्चके लिये बम्बईके अनाथालय फंडसे सौ रुपया आये हैं.

शोलापूरके १७ अनाथविद्यार्थियोंकी सहायतार्थ बम्बई प्रान्तिक सभाकी तरफसे दो सौ रुपये दान शालामें आये हैं. जो धन्यवाद पूर्वक स्वीकार किये जाते हैं.

५ इस पाठशालाकी सम्बत् १९५३ में सरकारी तरफसे रजिष्टरी हुई है. इस कारण सरकारी अमलदार हर वर्ष परीक्षा लेते हैं. तथा प्रतिवर्ष चालीस पचास रुपया मदत भेज देते हैं.

६ संस्कृतके आदप्पा लक्ष्मण व शांति गोविंद कटके दो विद्यार्थियों को छह छह रुपया मासिक वजीफा दिया जाता है और भी विद्यार्थियों को वजीफा देनें की आवश्यक्ता है, परन्तु फंडमें द्रव्य की न्यूनता होनेके कारण नहीं दे सके. यदि उदार धर्मात्मा ग्रहस्थ सहायता करेंगे तो और विद्यार्थियोंको वजीफा देनेका प्रबन्ध किया जावेगा.

७ पच्चीस वर्ष पहिले इस दक्षिणदेशमें रत्नकरंड, द्रव्यसंग्रह, तत्वार्थसूत्र, चन्द्रप्रभकाव्य, धर्मशर्माभ्युदय काव्यका सान्वयार्थ जानकार एकभी जैनी नही दीखता था. परन्तु आज दस पांच दीखने लगे हैं, सोभी तयार करनेमें कई विघ्न खडे हुए थे। अब विचार करनेसे ज्ञात होता है; कि अपने किये परिश्रमका और खर्च किये द्रव्यका सदुपयोग हुआ है.

८ इस पाठशालाकी स्थिति देखकर सूरत, आलन्द और आकलूज ऐसें तीन ग्रामोंमें पाठशाला स्थापित हुई हैं. और तीनोमें पच्चीस २ पचास २ विद्यार्थी पढ़ते हैं. ऐसा उन की रिपोर्ट देखने से मालूम होता है. सो बड़े हर्ष की बात हैं.

९ जैन धर्म की मुख्य नींव सम्यक दर्शन, सम्यकज्ञान और सम्यकचारित्र प्राप्त कर देनेवाला यह पाठशालारूपी उपकरण जो आज सोलह वर्ष तक निर्विघ्नपने से चला. उसी प्रकार चिरकाल चलता रहे. और इस उपकरणसे हजारों भव्य जीवों को रत्नत्रय साधन जो ज्ञान—सो प्राप्त होता रहे. ऐसी सर्वज्ञ प्रभुसे प्रार्थना करके इस रिपोर्ट को पूर्ण करता हूं.

हीराचन्द नेमीचन्द
व्यवस्थापक—जैनपाठशाला शोलापूर.

उत्तरावली.

जैनमित्र अंक ४ द्वारा प्रकाशित हुए. भाई गंगाराम नाथाजी आकलूजवालोंके 'निर्म्माल्यद्रव्य सम्बन्धी' प्रश्नोंका उत्तर देनाही इस लेखका उद्देश है.

प्रश्न १.—निर्म्माल्यद्रव्य जलनेके पीछे जो राख रहती है उसका क्या किया जाय?

उत्तर—निर्म्माल्यद्रव्य जल जाने पीछे उसकी राखको "द्रव्य" ऐसी संज्ञा नही मान सक्ते. शास्त्रोंमें जो दोष कहा है वह निर्म्माल्यद्रव्यके ग्रहण करनेके लिये है, ना कि राखके वास्ते; कारण राख ग्रहण करने तथा खाने योग्य पदार्थ नहीं है. राखको तुम जहां चाहे तहां डाल दोगे; उसपर किसीकी इच्छा चलनेकी नहीं. शास्त्रकारोंका अभिप्राय लालची पदार्थ त्याग करनेका है.

प्रश्न २.—निर्म्माल्यद्रव्य जलानेसे दूसरे जीवोंके पेटमें द्रव्यरूप परमाणु होकर जावेंगे. क्यों कि जलानेमें रसायन शास्त्राधारसे उस द्रव्यका नाश नहीं होता किंतु रूपान्तर होता है.

उत्तर—प्रथम शंकाके समाधानमें इस शंकाकाभी समाधान होता है. निर्म्माल्यद्रव्य भक्षणका अथवा स्वतः उपयोगमें लानेकाही दोष है. इस लिये जब उसे आप नहीं खाया. दूसरोंको भी नहीं देखा, तो फिर रूपान्तर होनेपर दोष नहीं लग सक्ता. जैसे मलमूत्र यह पदार्थ अभक्ष है. उसमें अनंत जीवोंकी उत्पत्ति होती है परन्तु उसका खात ऊख अथवा दूसरे धान्योंके लिये जमीनमें डालते हैं और उसके परमाणु धान्यमें तथा सांटे (गन्ना) में रूपान्तर होके आते हैं. तोभी धान्य अभक्ष है ऐसा कोईभी नहीं मानता. इसी प्रकार निर्म्माल्यद्रव्य यह पर्याय है. उसको जलानेसे पर्यायका नाश होके पुद्गल परमाणु अविनाशी रहते हैं. ऐसा सब पदार्थोंमें जानना.

मनुष्यके शवका स्पर्श कर हम लोग स्नान करते हैं. परन्तु वही शव (मुर्दा) जलकर वायु व जलके परमाणुरूप हो. हमारे अंगमें स्पर्शित होनेसे हम अशुद्ध हुए ऐसा मानकर स्नान नहीं करते, अस्तु. सिद्ध हो गया कि रूपान्तर हुए पीछे परमाणुसे पहिले पदार्थका कुछभी सम्बन्ध नही रहता.

प्रश्न ३—जिनेश्वरके साम्हने सोने रूपेके गहने रुपये पैसे चढाते हैं, वह जलानेसे जलते नहीं तो उनका क्या किया जाय?

(इस शंकाका उत्तर प्रश्नदाताहीने आगे कह दिया है कि पूजनमें ऐसी द्रव्य चढाना नहीं कहा है) परन्तु देवके भंडारमें जो द्रव्य है वह निर्म्माल्य है कि नहीं है? और उसका क्या करना. जलाना, कि संग्रहमें रखना?

उत्तर—पूजनमें सोना रूपा दागीना चढानेकी कुछ आवश्यकता नहीं. भंडारमें जिस कार्यके वास्ते द्रव्य देना वह उसी कार्यमें खर्च करना. यदि वह द्रव्य मन्दिरकी मरम्मत करनेकेवास्ते होवे तो मरम्मत कराना. शास्त्र अथवा उपकरणादिके लिये होवे तो शास्त्रादि कराना. उस द्रव्यको कोईभी ग्रहण करनेकी अभिलाषा न करे. कारण वहभी निर्म्माल्यद्रव्य सरीखे दोषका कारण है.

सोना रूपा जलानेसेभी उतनी कीमत का रहता है जितना था, कारण उसका जलानेसे नाश नहीं होता. इस लिये उसका जलाना टीक नहीं. "भंडारमें दिया हुआ द्रव्य मन्दिरके प्रबंधके लिये है. और पूजाका द्रव्य पूजा करते वक्तही अग्निमें डालना," इस शास्त्रकी आज्ञाके अनुसार अग्निमें जला देनेसेही निर्म्माल्य लेनेका दोष मिटता है. और शास्त्रानुसार पूजन होना कहलाया जा सक्ता है.

प्रश्न ४—जिनेश्वरके सन्मुख जो द्रव्य रखते हैं उसमें अपवित्रता क्यों उत्पन्न होती है?

चढानेके पहिले वह पदार्थ पवित्र था, और फिर क्यों ऐसा अपवित्र हो गया. कि जिसका कहींभी ठिकाना नहीं पडता?

उत्तर—जिनेश्वरके सन्मुख जो चढाते हैं वह अपवित्र होता है; ऐसा कौन कहता है? चढानेके आदिमें जैसा वह पवित्र था. वैसाही चढाने बाद पवित्र है. वह अपवित्र हो गया इसलिये जलाना ऐसा कोई नहीं कहता. पूजा करते वक्तही वह द्रव्य अग्निमें डालना ऐसी जो आज्ञा है, उसीका पालन करना हमारा कर्तव्य है.

प्रश्न ५.—जिनेश्वरके सन्मुख जो द्रव्य रक्खा जाय वह दोषी क्यों होता है? आदि.

उत्तर—निर्म्माल्य द्रव्य दोषी है ऐसा कोई भी नहीं कहता, परंतु वह उपयोगमें लानेसे बडा पापका कारण होता है—ऐसा कहा है. जैसे सोनेके दागीने (गहने) बिकते हुए लेनेमें दोष नहीं; परंतु वह चोरीके जानकर लेनेमें दोष है.

प्रश्न ६.—जो द्रव्य चढानेमें दोष होता तो पूर्वाचार्योंने विचार क्यों नहीं किया? आदि.

उत्तर—यह शंका चौथी पांचवी शंका सरीखी ही है. पूर्वाचार्योंने पूजा पाठ रचे हैं उनहीमें लिखा है; कि पूजा अग्निकुंडमें करना. इसलिये उनका कोई दोष नहीं है.

हीराचन्द नेमीचन्द,
शोलापूर.

विधवा विवाह अर्थात् धरेजा.

प्यारे पाठको! उक्त विषय पर गत अंकोंमें बहुत कुछ लिखा जा चुका है. परन्तु क्या करें विपक्षियों का दुराग्रह देखकर लेखनीको विश्राम देना पड़ा था. मगर अबके १५ अप्रैल की जैन पत्रिका अंक ६४ में राय मथुरादासजी सहारणपुर निवासीका एक बड़ा लम्बा चौड़ा लेख बांचकर चंचलचित्तने चुप नहीं बैठने दिया. इस लेखमें राय साहिबने मुजफ्फर नगर निवासी बाबू चेतनदासजीकी एक चिट्ठी का (जिसमें उन्होंने विधवा विवाह के विपक्षमें कुछ लिखा था) खंडन करनेका हौसला किया है. इस विषय पर पुनः लेखनी उठाने का मुख्य कारण उक्त राय साहिबकी एक प्रतिज्ञा है. जो कि उन्होंने अपने लेख की आदिमें इस प्रकार की है. "यदि आप निर्पक्षी परमाण और युक्ति को गौरसे देखकर और जैन महासभामें पेश करके मेरी इस शंका को निर्वत कर देंगे और कायल कर देंगे, तो मैं आपका धन्यवाद करूंगा. और अपनी भूलपर पश्चाताप करूंगा. और आपसे और सारी सभासे माफी मांगूगा." राय साहिबने उक्त प्रतिज्ञामें संस्कृत की खूब ही टांग तोड़ी है. परन्तु इस समय शब्द शुद्धि को गौण करके उनके अभिप्राय की तरफही झुकते है. राय साहिबने प्रतिज्ञा तो बहुत उत्तम की है परन्तु इसका निर्वाह होना बरा दुःसाध्य दीखता है, क्यों कि ऐसे मौकों पर एक जाट का दृष्टांत चरितार्थ हो जाता है, पाठकों के विनोदार्थ वह दृष्टांत भी इस स्थलपर लिखना उचित समझते हैं:—

दृष्टांत—एक जाटने अपनी स्त्रीसे कहा कि यदि मुझे कोई यह साबित करके दिखा देवे, कि २० और २० चालिस होते है, तो मैं उस को अपनी भैंस हार जाऊं! उसकी स्त्रीने कहा कि यह तो हर कोई साबित कर देगा. जाटने उत्तर दिया कि उसके कहने ही से क्या होता है. मैं मानूंगा जब न?

कहने का प्रयोजन यह है कि जब तक कोई निष्पक्ष विद्वान मध्यस्थ नियत न होय तबतक दो विपक्षियों की हार जीतका निर्णय होना कष्टसाध्यही नहीं किंतु असंभव है. परन्तु ऐसे मध्यस्थ का मिलना और उसको दोनों विपक्षियों का स्वीकार करना अत्यन्त दुःसाध्य है; इस कारण इसका निर्णय सर्वसाधारण की बुद्धिपर ही छोड़ा जाता है.

बाबू चेतनदासजी की सात दलीलों का खंडन करनेमे पहिले राय साहिबने विधवा विवाह की पुष्टिमें दो दलीलें दी है. इस करण हम भी सात दलीलों के खंडन का खंडन करनेसे पहिले राय साहिबकी दो मुख्य दलीलों का (जो कि उनके लेखमें सारभूत हैं) खंडन करना उचित समझते है. उनकी पहिली दलील यह है कि, जैसे स्त्रीके मर जाने पर पुरुष दूसरा विवाह कर लेता है, उसही प्रकार पुरुषके मर जानेपर स्त्री भी दूसरा विवाह कर सक्ती है. दूसरी दलील यह है कि विधवाओंका विवाह न होनेसे विधवाएं बहुत दुखित होती हैं, और अक्सर व्यभिचार तथा गर्भपातादिक कुकर्म करने लग जाती हैं.

प्यारेपाठको! जगतमें समस्त कार्योंको सिद्ध करनेकेवास्ते कोई न कोई उपाय अवश्य होता है;

इसही प्रकार सत्यासत्य पदार्थोंके निर्णय करनेका भी एक उपाय आचार्योंने बताया है. जो महाशय उस उपायको प्रयोगमें लाये बिना. पदार्थोंका निर्णय करते हैं. वे मृग तृष्णावत् व्यर्थही खेद खिन्न होते हैं। आजकल समाचारपत्रोंमें बहुतसे महाशय अनेक पदार्थोंका निर्णय करनेकेलिये घोर आन्दोलन मचा रहे हैं; परन्तु उसका फल कुछभी दृष्टिगोचर नहीं होता. इस कारण जो महाशय पदार्थका यथार्थ निर्णय करना चाहते हैं, उनको आचार्योंके बताये हुए उपायका अवलंबन करना उचित्त है. उस उपायका नाम "प्रमाण" है. जिसका सविस्तर स्वरूप न्यायशास्त्रमें निरूपण किया है. इसही प्रमाणका संक्षिप्त स्वरूप जैनमित्रके प्रथम वर्षके ९ वें अंकके ५ वें और छटवें सफेमें लिखा जा चुका है. हम भी इस विषयका निर्णय उक्त उपायद्वारा करनाही उत्तम समझते हैं. पाठकोंसे प्रार्थना है कि, अब यह लेख न्यायगर्भित लिखा जाता है. इस कारण जरा ध्यान देकर पढ़ें. और जिन महाशयोंको प्रमाणका स्वरूप याद नहीं रहा होय. तो वे हमारे उक्त प्रमाण प्रतिपादक जैनमित्रके अंकको साम्हने रख लें. राय साहिबकी प्रथम दलीलका उल्लेख न्यायकी सैलीसे इस प्रकार हो सक्ता है:—

स्त्री पुनर्विवाह निर्दोष है. क्योंकि यह पुनर्विवाह है, जो २ पुनर्विवाह होते हैं. वे निर्दोष हैं. जैसे कि पुरुष पुनर्विवाह. यहांपर स्त्री पुनर्विवाह पक्ष है, निर्दोषपना साध्य है, पुनर्विवाहपना हेतु है. सो यह हेतु शंकित व्यभिचारी नामा हेत्वाभास है. शंकित व्यभिचारी उसको कहते हैं जिसके कि विपक्षमें व्यापनेकी शंका होय. जैसे कि एक मनुष्यके मित्रके चार पुत्र थे, चारोंही श्यामवर्ण थे, पांचवा पुत्र गर्भमें था. अब वह मनुष्य कहता है कि मित्र भार्या गर्भस्थ पुत्र श्याम होगा. क्योंकि वह मित्रका पुत्र है. जो २ मित्रके पुत्र है, वह २ श्याम हैं. जैसे कि चारों वर्तमान पुत्र. यहांपर मित्रपुत्रत्वहेतु शंकितव्यभिचारी है. क्योंकि गर्भस्थ मित्रपुत्र यदि गौर भी हो जाय. तो उसमें कोई बाधक नहीं है. इसलिये विपक्षमें व्यापनेकी शंका है. सो यहांपर विचारना चाहिये कि मित्रपुत्रत्व समान होनेपर भी आधार विशेषके निमित्तसे एकमें श्यामत्व और एकमें गौरत्व. उसही प्रकार पुनर्विवाह समान होनेपरभी आधार विशेषके निमित्तसे पुरुष पुनर्विवाह निर्दोष होनेपरभी स्त्रीपुनर्विवाह सदोष हो सक्ता है. जैसे कि मेघजल समान होनेपरभी आधार विशेषके निमित्तसे ईखमें मधुरता और नीममें कटुकताको प्राप्त होता है. अब विचारना चाहिये कि पुरुष-पुनर्विवाह निर्दोष क्यों है. और स्त्री पुनर्विवाह सदोष क्यों है.

१ स्त्री और पुरुषमें भोज्यभोजक सम्बन्ध है, स्त्री भोज्य है. और पुरुष भोजक है; जैसे एक पुरुष अनेक अभुक्ति थालियोंको भोगनेसे निर्दोषही रहता है. परन्तु झूंठी थालीका भोगना निर्दोष नहीं समझा जा सकता.

२ पुरुषके पुनर्विवाह होनेसे किसीभी व्यक्तिको दुःख नहीं होता. परन्तु स्त्रीका पुनर्विवाह होनेसे उस स्त्रीके पूर्वपतिको असह्य दुःख होता है. क्योंकि संसारमें प्रायः समस्तही प्राणियोंमेंसे

कोईभी इस बातको सहर्ष स्वीकार नहीं करता कि मेरी स्त्री मेरे जीते हुए या मेरे पीछे किसी दूसरे पुरुषसे संभोग करें.

३ आपने जैनशास्त्रोंमें अनेक उत्तम पुरुषोंकी कथाएं बांची होंगी. उनमें पढ़ा होगा कि एक पुरुषके एकही समयमें अनेक स्त्रियां थी. परन्तु यह कहींभी नहीं पढ़ा होगा कि एक सच्चरित्रा स्त्रीके एकही समयमें अनेक भर्तार हुए. पुनर्विवाह विषयमें पुरुष स्त्रीकी समानता करनेवाले शायद इस हुकुमकोभी जारी करनेमें अपनी शूर वीरता दिखावें! मेरी रायमें इस बातको कोईभी स्वीकार नहीं करेगा. बस इससे सिद्ध होता है कि एक कालमें अनेक व्यक्तिसंभोगवत् पुनर्विवाह स्त्रीको सदोष होनेपरभी पुरुषको निर्दोष है.

अब राय साहिब की दूसरी दलील यह है कि स्त्री विधवा होनेपर कामातुरतासे अत्यंत दुखित होती है. इस लिये उस के दुःखोंको दूर करना परम धर्म है. पुनर्विवाहके पक्षपातियोंने विधवाके दुःखके विषयमें अनेक छंद रचे हैं. परन्तु जरा विचारना चाहिये. कि जो विधवा की काम वेदना को दूर करना. धर्ममें शामिल है. तो जैसे धर्मशास्त्रोंमें क्षुधापीड़ितोंके लिये आहारदानकी, रोगपीड़ितों को औषधिदानकी, अज्ञान पीड़ितों को ज्ञानदान की और भय पीड़ितोंको अभय दान की आज्ञा दी है, उस ही प्रकार काम पीड़ितोंको संभोगदान की आज्ञा किसी शास्त्रमें क्यों नहीं दी? फिर राय साहिबने एक और चमत्कारिक बात लिखी है. आप फरमाते हैं. कि विधवाविवाहके रोकनेसे व्यभिचार का प्रचार हो जाता है. सो जरा विचारिये कि व्यभिचार का लक्षण क्या है? यदि अपने पतिको छोड़ कर अन्य पुरुषसे संभोग करनाही व्यभिचार है; तो जिस पुरुष के साथ पुनर्विवाह किया जाता है. वह पुरुष भी पतिभिन्न है. इस लिये पुनर्विवाहमें भी व्यभिचारका दोष आया. यदि कहोगे कि, जिसके साथ पुनर्विवाह किया जाता है वह पति मान लिया जाता है, तो जिस पुरुष के साथ वह व्यभिचार करती है उस को भी पति मान लेती है. इससे सिद्ध होता है. कि पुनर्विवाह और व्यभिचारमें कुछ भी भेद नहीं है. सो बड़े आश्चर्य की बात है कि राय साहिब व्यभिचारसे ही व्यभिचार के रोकने का हौसला करते हैं.

फिर आप का कहना है कि विधवाविवाहके रोकनेसे गर्भपातादिक कुकर्म्मों की प्रवृत्ति होती है. सो यह हेतु भी व्यभिचारी है. क्यों कि विलायतमें जहां विधवाविवाह की बिलकुल छुट्टी है, वहां भारत वर्ष की अपेक्षा गर्भपातादिक दुष्कर्मोंकी बहुत कुछ अधिकता है. अब राय साहिबने जो बाबू चेतनदासजी की सात दलीलोंका खंडन लिखा है उस का खंडन किया जाता है.

१ दलील बाबूचेतनदासजीकी—विधवाविवाह एक नई रसम है, जिसका कोईप्रमाण हमारे शास्त्रों और रिवाजोंमें नहीं मिलता.

इसपर रायसाहिबके लिखनेका सार यह है कि रिवाज प्रमाणतामें दाखिल नहीं हो सक्ता. क्योंकि रिवाज पापरूप और धर्मरूप दोनोंही प्रकारके हो सक्ते हैं. और शास्त्रप्रमाणमें आपने विवाह पद्धतिके एक श्लोकका अर्थ लिखा है. मूल श्लोक विवाहपद्धतिमें भूलसे छपनेमें रह गया है. जिसको कि आपने विधवाविवाहके विपक्षियोंकी

चालबाजी बताई है. उस श्लोकका अर्थ आपने इस प्रकार लिखा है.

"वर पातगी हो जाय, सन्यासी हो जाय, नपुंसक हो जाय. तथा कुछभी समाचार प्राप्त न हो तो पंचनको तथा राजसभाके मनुष्योंसे कहकर अन्य वरसे विवाह करै." परन्तु बडे खेदका विषय है कि, रायसाहिबने इस स्थलके आगे पीछे कुछभी न बांचकर उसको विधवाविवाहकी पुष्टिमें प्रमाण देते हैं. जिस श्लोकका आपने अर्थ लिखा है, उससे ठीक एक श्लोक पहिले यह श्लोक है:—

वाग्दानाद्यदिवर्योद्वीपंदेशांचदूरतोगत्वा ।
स्वंचारं न प्रेषति वर्षत्रय मन्यतः कन्याम् ॥

अर्थ— जो वर वाग्दान (सगाई) के पीछे देशांतर वा द्वीपान्तरमें दूर जाकर तीन वर्ष पर्यन्त अपना दूत व समाचार नही भेजे; तो वह कन्या अन्य वर को देने योग्य है.

प्यारे पाठको! इस श्लोकपरसे आप विचार सक्ते हो कि यह प्रकरण कौनसा है. हमारी समझमें मूर्ख से मूर्ख भी कह सक्ता है कि यह प्रकरण सगाई और विवाह के बीच के काल का है. फिर यहांपर यह भी विचारना चाहिये. कि "वर" शब्द का क्या अर्थ है? संस्कृत में यह शब्द "वर्य" है. अर्थात विवाहने योग्य. याने जिस के साथ सगाई हो गई हो. और विवाह नहीं हुआ होवे. विवाह होने पश्चात् उस की पति संज्ञा हो जाती हैं. परन्तु जहां पक्षपात का ढकोसला लगा हुआ है. वहां नेत्रों के आगे परदा पड़ जाता है. और फिर आगे पीछे कुछभी नहीं सूझता.

२ दलील—यह रसम बचपनकी शादियोंका रिवाज ज्यादा करती है. क्योंकि यह बच्चोंके मा बापके दिलोंमेंसे इस बातका डर मिटा देती है. कि अगर वह अपनी लड़कियोंकी शादी बचपनकी उमरमें कर देंगे, तो उनके विधवा हो जानेका ज्यादा डर है. इसलिये यह रसम बचपनकी शादियोंको रोकनेकी तजवीजको हानि पहुंचाती है. इस दलीलको खंडन करते समय राय साहिबने अपनी सारी अकल खर्च कर दी है. आप फरमाते हैं कि, "यह आपकी फिलासफी बिलकुल पोच है. क्या आपका यह मतलब है. कि छोटी उमरकी शादीका रिवाज रोकनेसे पहिले यह दो क्रोड़ बालविधवा दीन दुनियांसे खो दी जावें जो लाभ छोटी उमरकी शादीके रोकनेसे होगा वह तो आगेको उन कन्याओंको मिलेगा. जो इस रीतिके रोके जानेके पीछे व्याही जावेंगी, इन दो क्रोड़ बालविधवाओंका क्या उपकार होगा. इससे यह अच्छा होवे. कि इन दो करोड़ बाल विधवाओंको किश्तीमें बिठला कर डुबा दिया जावे. फिर जैन महासभाका यश और कीर्ति दुनियांमें फैल जावे. शोक! अतिशोक! महाशोक!"

पाठक महाशय! देखा. रायसाहिबने कैसा भद्दा खंडन किया है. अब जरा गौर करके विचारिये कि बाबू चेतनदासजी की दलीलका क्या अभिप्राय है? आजकल जो बालविधवाओं की संख्या बढ़ी है, उस का मूल कारण बालविवाह है. इस लिये बालविधवाओं की उत्पत्तिके रोकनेवाले को चाहिये. कि बालविवाहको रोके. परन्तु जो बालविधवाओंके पुनर्विवाह की रसम जारी हो जायगी तो फिर बालविवाह करनेवाले बालविवाह करनेमे क्यों बाज आवेगें. और फिर हमेशा बाल-

विवाह होनेसे हमेशा बालविधवाए होती रहेंगी. और फिर हमेशा उन का पुनर्विवाह भी होता रहेगा. इस प्रकार की परंपरा चलनेसे संतान की निर्बलता आदिक अनेक दोष दृष्टिगोचर होने लगेंगे, और इस संसारमेंसे धीरे २ शील रत्नका बिलकुल अभाव हो जावेगा. इसही लिये बाबू चेतनदासजीका लिखना है कि विधवाविवाहके होनेसे बालविवाहके रोकनेको हानि पहुंचेगी; तो आगामीमें इस का परिणाम बहुत भयानक होगा. इस के खंडनमें राय साहिबके कहनेका अभिप्राय यह है कि इस दलीलसे वर्तमान दो करोड़ बालविधवाओंकी कतल हुई जाती है. प्यारे पाठको! वर्तमान बालविधवाओंका दुःख और बालविवाह व विधवाविवाह जनित उपर्युक्त भयानक परिणाम इन दोनोंको अपनी बुद्धिरूपी तुलामें धरकर जांचिये. कि इनमें भारी कौन और हलका कौन है. इसका यथार्थ निर्णय करने के वास्ते इन दोनों पदार्थोंके स्वरूपका फोटो पाठकोंके अवलोकनार्थ खींचा जाता है. बालविवाह होनेसे बाल्यावस्थामेंही बहू घरमें आजाती है. और बाल्यावस्थामें ही स्त्री पुरुष का संबंध हो जाता है. इस अवस्थामें संबंध होनेसे और अपक्व वीर्य के बाहर निकलनेसे उस पुरुष का दिमाग कम जोर हो जाता है. और फिर वह इस लायक नहीं रहता कि सांसारिक तथा पारमार्थिक उच्चश्रेणीकी विद्याओंके गूढ़ रहस्योंकी गंभीरताको पहुंचे. और इस प्रकार वह लौकिक और पारमार्थिक विद्यासे हाथ धो बैठता है, तथा उसका शरीर इतना निर्बल हो जाता है. कि गृहस्थाश्रम चलानेके योग्य परिश्रम करना भी उसको पहाड़के समान हो जाता है. संतान अत्यंत निर्बल होने लग जाती है. बाल्यअवस्थाहीमें रोजगार की चिंता लग जाती है. जिससे सदाकाल दुखी रहता है. बहुत कहनेसे क्या, उनमेंसे बहुतसे तो उस बाल अबला को वैधव्य के घोर दुःखमें छोड़ कर इस असार संसारसे कूच कर जाते हैं. विधवाविवाहसे तो स्त्रीपर्यायमें सारभूत शीलरत्नकाही अभाव हो जाता है. संसारमेंसे एक धर्मका अभाव हो जानेसे बढ़कर और क्या हानि हो सक्ती है? पुराणोंमें आपने अनेक कथन बांचे होंगे. परन्तु किसी उत्तम स्त्रीके विधवाविवाह होनेकाभी कथन पढ़ा. या कहीं इसकी विधि या प्रशंसा देखी? भला अब विधवाओंके दुःखका विचार कीजिये. इसमें कोई सन्देह नहीं. कि विधवाओंको कामवेदना होती है. और वह वेदना ठीक उस वेदनाके सदृश है. जो कि एक दाहज्वर पीड़ित पुरुषको होती है. जिस प्रकार दाहज्वर पीड़ित पुरुषकी तृष्णाको दूर करनेके दो उपाय हैं; एक तो उसकी तृष्णा जल पीनेसे दूर होती है. परन्तु थोड़ेही काल पीछे पुनः तृष्णाका प्रादुर्भाव होकर दुःसहदाह होता है. और दूसरे किसी रसायनादि औषधि विशेषसे उस दाहज्वर वेदनाका जड़ मूलसे नाश हो जाता है. ठीक उसही प्रकार कामवेदनाको दूर करनेकेभी दो उपाय हैं. एक तो मैथुनसे कामवेदना दूर होती है. परन्तु थोड़ेही कालमें उस वेदनाका पुनः प्रादुर्भाव होता है. और कालांतरमें नरकनिगोदकी घोर वेदना सहनी पड़ती है. कामवेदनाको शांति करनेका दूसरा उपाय जिन शासनरूपी समुद्रको मथन कर निकलनेवाला वैराग्यामृत है. जो उस

अमृतका पान करते हैं, उनकी कामवेदना जड़ मूलसे नाश हो जाती है. और इसही उपायसे अनंत जीवोंकी कामवेदना हमेशाकेवास्ते शांत हो गई.

परन्तु बड़े खेदका विषय है. कि हमारे राय साहिब को विधवा की कामवेदनाके नाशक दो उपाय अर्थात् एक तो **पुनर्विवाह** याने **व्यभिचार** और दूसरे किश्तीमें बिठलाकर डुबादेने के सिवाय कोई तीसरा उपाय नहीं सूझा. अथवा इसमें रायसाहिबका अपराधही क्या है. जब उन्होंने जिन शासनके गूढ रहस्यों का कभी स्वप्नही नहीं देखा तो उनको वह उपाय सूझे कहांसे? आपने अभ्यास किया है **आर्य समाजकेमंत्री**पनका. और शागिर्दीकी है **दयानन्दसरस्वती** की. फिर जैसा गुरूनें मंत्र फूंका. उस का वैसा असर होनेमें कसरही क्या थी? बहुत लिखनेसे क्या बुद्धिमानोंको इशाराही काफी होता है. बालविधवाओंको धर्मशिक्षा पूर्वक पंडिता बनाकर उनको उपदेशिका पदवीसे विभूषित करके स्त्रीसमाजमें धर्मका आन्दोलन करने के बदले कामवेदनावर्द्धक अनेक छंद और गजलोंकी रचना करके और विधवाओंको सुनाकर उनको विधवा विवाह अर्थात् व्यभिचारके सन्मुख करके पुनर्विवाह रूपी पाषाणपोतमें बिठलाकर अनंत संसाररूपी समुद्रमें डुबाकर चिरकालपर्यंत नरक निगोदके भयानक दु:खोंके प्रवाहमें पटकना किस बुद्धिमानका कार्य है? उच्च पदवीको पहुंचानेवाले **श्रंगारबाई** (प्रतापगढ़ निवासिनी अद्वतीय पंडिता) के दृष्टान्तको छोड़कर आर्यसमाजके अनंत संसारमें परिभ्रमण करानेवाले भयानक दु:खदायक विधवाविवाह दृष्टान्तका आश्रय करना बुद्धिमता नीतिज्ञता और धर्मज्ञतासे सर्वथा बहिर्मुख है.

३ दलील—यह हमारी सामाजिक अवस्थाको गिराता है. यूरोपदेशमेंभी जहां विधवा विवाहका इतना प्रचार है, किसी बड़े खानदानकी स्त्री विधवा हो जानेपर अपना पुनर्विवाह करना पसंद नहीं करती. बड़े खानदानवालोंके दिलोंको ऐसे ख्यालसे नफरत है.

रायसाहिबकृत खंडन—क्या व्यभिचार, भ्रुणहत्या, भाग जाना, नीचोंसे खराब होना, पूज्यजी महाराजकी उपपत्नी बनना, इस जातिको खराब नहीं करते हैं? भाई साहिब किसी दलीलसे कायल करें. जाति तो इन कुकर्मोंमेही खराब हो रही है. लाखों अस्तकात हमल और मुकद्दमे होते हैं. मेलोंसे भाग जाती हैं. वगैर: वगैर:

पाठक महाशय! विचारिये कि बाबू चेतनदासजीके लिखनेका क्या अभिप्राय है. उनके लिखनेका यह मतलब है; कि विधवाविवाह एक नीच कर्म है. और इसी वास्ते यूरोप देशमेंभी जहां विधवाविवाह की कुछ भी मुमानियत नहीं है. बड़े खानदान की स्त्रियां इसकामसे नफरत करती हैं. राय साहिबने इसका कुछभी उत्तर नहीं दिया है. इससे मालूम होता है. कि विधवाविवाहका नीच कर्म होना उनको स्वीकार है. आश्चर्यकी बात तो यह है कि आप उक्त दलीलके खंडनमें फरमाते हैं कि "व्यभिचार गर्भपातादि दूसरे नीच कर्म क्या इस जातिमें नहीं है? आपके इस तर्कसे यह मतलब निकलता है. कि अगर किसी आदमीमें चार दोष होवें तो उसको पांचवा दोष ग्रहण करनेमें कोई हर्ज नहीं है. मसलन कोई आदमी कुप्पेका

घी खाता है और वह भटियारीके हाथकी रोटीखाने लग जाय तो कुछ हर्ज नहीं है. परन्तु पाठक महाशय समझ सक्ते हैं कि, यह सिद्धांतनीतिसे सर्वथा विरुद्ध है. नीतिशास्त्रके अनुसार तो वर्तमान दोषोंको घटानेका प्रयत्न करना चाहिये. न कि वर्तमान एक दोष को देख कर दूसरे दोषके ग्रहण करने की कोशिश की जाय. इस लिये कर्तव्य तो यह है कि, व्यभिचार गर्भपात आदि दोष वर्तमानमें पाये जाते हैं. उनके निकालने की कोशिश की जाय. ना कि दोषोंको देखकर विधवाविवाह एक नया दोषभी मान्य किया जाय. यदि आप यह कहो कि विधवाविवाहके जारी होनेसे यह पहिले दोष मिट जावेंगे सो भी ठीक नहीं है. क्यों कि विलायतमें विधवाविवाह जारी होनेपर भी व्यभिचार गर्भपात आदि दोष भारत वर्ष की अपेक्षा कुछ अधिक तर पाये जाते हैं.

४ दलील—इस रसमके प्रचार होनेसे पतिपत्नी की परस्पर प्रीति उतनी ज्यादा नहीं रह सक्ती जितनी कि आजकल हिन्दुस्थानमें है. हमारा गृहस्थका आनंद जो कि आज कल ऐसा मशहूर है फिर नहीं रहेगा. और मुहब्बत के बंध ऐसे पक्के नहीं रहेंगे.

राय साहिबकृत खंडन—वह खुशी सुहागनको होगी. परन्तु वह सुहागन भी एक विधवाके होनेपर दुःखित देखी जाती है. और सब को यही कहते सुनते हैं; कि फलानेके घर धूनी सुलग रही है. मेरी रायमें जिस घरमें एक बालविधवा होती है. सारे खानदानका आराम मट्टीमें मिल जाता है. और जो २ जुल्म उसपर किया जाता है वह बयानसे बाहर है. मैं तो उसको ग्रहस्थका दुःखड़ा कहता हूं.

पाठक महाशय! विचारिये कि बाबू सा० के कहनेका अभिप्राय तो यह है. कि विधवाविवाहके जारी होनेमें पतिपत्नीमें दृढ प्रेम नहीं रहता. और रायसाहिब उसका उत्तर देते हैं कि विधवा होनेपर तो वह दुखीही होती है. क्या खूब! "पूंछे आम बतावें अमरूद" विधवा दुःखी हैं, यह तो सही, परन्तु इस रसमके जारी होनेपर लाखों पतिपत्नीयोंके दृढ प्रेममें विघ्न पड़ेगा. रहा विधवाओंका दुःख सो इस विषयमें दूसरी दलीलके खंडनके खंडनमें बहुत कुछ लिखा जा चुका है.

५ दलील—अगर विधवा भारतवर्षमें वेश्या बन जाती है. तो क्या वह अन्य देशोंमें जहां विधवाविवाह प्रचिलित है, वेश्या नहीं बन जातीं? वेश्या हर मुल्कमें हैं, और अफसोसकी बात है कि उनकी संख्या यूरोप देशमें भारतवर्षकी बनिस्बत ज्यादा है.

रायसाहिबकृत खंडन—उनकी मिशाल लेनी आपको ठीक नहीं. उन जैसी आजादी वे तहजीबी यदि आप स्वीकार करें; तो एक विधवा भी घरमें नहीं रहे. अब लाखों विधवाओंसे काशी आबाद है, फिर करोड़ोंसे भर जावें.

पाठक विचारेंगे कि रायसा० का यह लिखना कि "उनकी मिशाल लेना आपको ठीक नहीं है." कहांतक सत्य है. उनकी मिशाल क्यों नहीं लेनी. इसका आपने कोई हेतु नहीं दिया है. और "उन कीसी आजादीसे घरकी विधवाएँ काशीको चली जावेंगी" ऐसा जो आपका

लिखना है, उसपर प्रश्न हो सक्ता है कि "काशीमें जाकर वे शील पालन करेंगी. या पुनर्विवाह करके व्यभिचार करेंगी" यदि कहोगे कि शील पालन करेंगी, तो आपकी पुनर्विवाह की विधि व्यर्थ ठहरेगी. और जो कहोगे कि व्यभिचार करेंगी तो इसीसे तो हम कहते हैं कि ऐसी आजादी नहीं देना चाहिये.

६ दलील—अगर विधवा अपने यारोंके साथ गुप्त तौरपर पत्रव्यवहार रखती है. तो क्या बहुतसी सुहागिन ऐसा काम नहीं करतीं? यह उनकी खासियत है. जिसपर हमारा कुछ वश नहीं चल सक्ता.

रायसाहिबकृतखंडन—स्त्री जातिसे खत किताब यारोंसे कराना यहभी कुरीतिका दोष है. क्यों समान कन्यावरसे शादी नहीं करते, क्यों बूढोंके साथ बेचने देते हो. क्यों आदमियोंको जातिसे नहीं निकलाते, क्यों सजाकर मेलोंमें ले जाते हो, क्यों कर्मगुण स्वभावके अनुसार विवाह नहीं कराते हो, क्यों धर्मकी शिक्षा बालकपनमें नहीं देते हो, क्यों फोहशराग और सीठने सिखाते हो, क्यों नीच ब्राह्मणी नायनकी सोहबतमें बिठाते हो, क्यों छोटी उमरकी शादी कराके सारी उमरकेलिये बलवीर्य पराक्रम नष्ट कराते हो, यह उन बालिकाओंका कुसूर नहीं है. यह उनके मबाप, पंचायत और सभाका कुसूर है.

पाठको! बाबूसाहिबके लिखनेका अभिप्राय यह है. कि यदि कोई विधवाविवाहके मंडनमें यह हेतु देवे. कि विधवा यारोंसे पत्रव्यवहार करती है. सो यह हेतु व्यभिचारी है. क्योंकि सुहागिन भी यारोंसे पत्रव्यवहार करती पाई गई है. इसके ऊपर रायसाहिबका फरमाना है कि छोटी उमरकी लडकियोंकी वृद्धपुरुषोंके साथ शादी क्यों करते हो भला! विचारिये तो सही कि बाबूसाहिबकी दलीलसे और राय सा० के उत्तरसे क्या सम्बन्ध है. क्या बाबूसाहिबकी दलील यह हुक्म चढाती है कि छोटी उमरकी लडकियोंकी शादी वृद्धपुरुषोंके साथ कर दी जाय? और जिसका स्वभावही व्यभिचारी होता है. वह समान वयवाले बलिष्ट पुरुषकेसाथ व्याही जानेपरभी दूसरे यारोंके साथ पत्रव्यवहार करती देखी जाती है. बड़े २ राजा महाराजाओंकी स्त्रियां कोढी दरिद्रियोंसे व्यभिचार करती हैं. स्वभाव दुर्निवार है. इसी प्रकार जिन विधवाओंका स्वभावही दुष्ट है, उनसे हरतरह उपाय नहीं है.

७ दलील—चन्द खास ज्यादह दुखिया विधवाओंकेलिये हमे सारी जातिको खराब नहीं करना चाहिये. और यदि इन सबकेसिवाय कोई खास ऐसी दलीलेंभी हों (जो मुझे पता न हो) और जो आपको विधवाविवाहकी उन्नतिकेलिये कोशिश करनेपर आमादा करती हों, तो भी मुझे पूरा विश्वास है; कि यह काम आपको बाकी तरफोंकी कोशिशको घटावेगा. और इसके कारण आपकी बहुतसी ताकत जिससे कि लोगोंका उपकार होता; गडे झगडेमें खोई जावेगी. मेरे ख्यालमें हमारेलिये यह बिहतर हैं, कि हम पहिले वह संशोधन करें जो कि आहिस्तगीसे होता है, और उसके बाद दूसरे. जरूरी विषयोंपर कोशिश करें. बचपनकी शादियोंको रोकना और फिजूल खर्चीको दूर करना बड़ी जरूरी और मुफीद बात है.

रायसाहिबकृत खंडन—अब इतनी बुराइयोंसे जो ऊपर लिखी हैं. आपअपनी जातिको अभीतक भी खराब हुई. हुई न समझें; यह आप की मर्जी. मैं तो यह समझता हूं; कि दुनियाभरमें आपकी जातिको कोईभी अच्छा नहीं जानता है. जिधर देखो इस जातिपर सब दांतोंमें अंगुलियां दबाते हैं. जब जैन स्त्रियोंके १६ श्रृंगार ४९ आभूषण पहिनकर बिसातियोंके आगे पैर जमजाते हैं. सब नीचसे नीच इनको कुंजरियोंसेभी निंदित समझते हैं. बाहरे! जाति की इज्जत और मान मर्य्यादा बाबूसाहिबकी इस दलीलपर कि "चन्द दुखिया विधवाओंके वास्ते सारी जातिको खराब नहीं करना चाहिये" रायसाहिबका लिखना वही है. जो कि आप तीसरी दलीलके खंडनमें लिख चुके हैं, और हमभी उसका खंडन वही करते हैं, जो कि तीसरी दलीलके खंडनके खंडन में किया है. और बाबू साहिबकी इस दलीलका कि "अगर आपकी रायमें विधवा विवाह उत्तम भी होय, तो भी लोक विरुद्धताके कारण उसकी कोशिश कुछभी मत करो. नहीं तो उन्नतिके अन्य कार्योंमें बहुत कुछ विघ्न पड़ेगा." इसका रायसाहिब ने कुछभी उत्तर नहीं दिया है.

अबहम सर्व साधारणसे प्रार्थना करते हैं, कि लौकिक और पारमार्थिक दोनों विषयोंपर विचार करके "विधवाविवाह" विषयपर अपनी सम्मति प्रगट करें. और रायसाहिब! हमारी अन्तिम प्रार्थना यह है. कि जो आपको धरेजा करना इष्ट ही है. तो आप अपने कुटुम्ब की विधवाओंका धरेजा शौकसे कर डालिये. और जिन जातियोंमें धरेजाका रिवाज जारी है. उनमें शौकसे मिल जाइये. क्योंकि आप का तो कर्म गुणस्वभावके अनुसार पद्धति चलानेका सिद्धांतही है. उत्तम कुलवानों को खोटी दलीलोंसे विषयाशक्त करके, घृणित कार्यों की तरफ उत्साहित करना. सज्जन पुरुषोंकी सज्जनतामें वट्टा लगाता है. यदि अब भी आपमें विधवाविवाह को सच्ची दलीलोंसे सिद्ध करनेका हौसला बाकी है. तो यहां भी दवात कलम कागज तयार है.

जैनजातिका दास,

गोपालदास बरैया.

तीर्थक्षेत्रोंका प्रबन्ध.

दिगम्बर जैन प्रान्तिक सभाकी तरफसे तीर्थक्षेत्रोंका प्रबन्ध करनेकेलिये शा. डाह्याभाई शिवलालजी भेजे गये हैं. उन्होंने अभीतक जो २ कार्रवाई की है. उनकी रिपोर्ट सविस्तर बनाकर भेजी है. वही हम संक्षिप्ततासे प्रकाश करते हैं.

सम्पादक.

सोमवार तारीख १७—३—०२ को बम्बईसे रवाना होकर मंगलवारकी रात्रिको ८ बजे उज्जेन पहुंचा. वहां स्टेशनपर जैनी भाईयोंके मुंहसे जो मक्सीजीके मेलाको जाते थे, मक्सीजीके विषय इतना समाचार मिला कि सरकारसे जो हुक्म निकला है वह अमलमें बराबर लाया जाता है. पश्चात् बुधवारको मक्सीमें पहुंचकर सेठ सांवतराम सेवारामजीके तम्बूमें ठहरा. और सेठ तिलोकचन्द हुकमचन्दजी इन्दौरवाले आदि सब भाईयोंसे मिला; अपने आनेका कारण व सभाकी चिठ्ठी उन्हें बतलाकर वहांकी सब व्य-

वस्था पूंछी. उन्होंनें सब यथायोग्य समझाकर प्रान्तिक सभाका आभार प्रगट किया; फिर दो प्रहरको मुनीम गणपतरायसे पूछनेपर ज्ञात हुआ. कि प्राचीन मन्दिरकेलिये अभीतक कोई स्थायी मनुष्य नहीं रक्खा है. यात्रियोंके हमेशा आते रहनेसे प्रबंध अच्छा रहता है. इसके विषयमें मैंने एक आदमी मुकर्रर करनाही आवश्यक समझा. और रात्रिको निवेदन करनेका विचार किया.

पश्चात् राजा सेठ फूलचन्दजी तथा समरथमलजी आदि महाशयोंसे मिलकर गिरनारजीके विषय सबसे सम्मति मांगी, तो सबने कहा कि वहांके प्रबंधकर्ताओंको लिखना चाहिये. और "सभा" जैसा करे. हमें स्वीकार है. फिर रात्रिको "तीर्थक्षेत्र प्रबंध" इस विषयमें मैंने एक व्याख्यान दिया, तथा गिरनारजीका अप्रबंध, मक्सीजीकी स्टेशनपर एक धरमशालाकी आवश्यकता, प्राचीन मन्दिरमें एक स्थायी मनुष्य रखनेकी सूचना, स्वेताम्बरियोंने मुकद्दमा चलानेके लिये जो खटपट की है, आदि विषयोंपर थोडा २ कहा, मेरे व्याख्यानके १ दिन पहिले मुम्बईवाले झवेरी प्रेमचन्द मोतीचन्दजीने "जैन जातिमें विद्या प्रचारकी आवश्यकता है" इस विषयमें भाषण किया था. तथा शिखरजीके मुकद्दमेकी सम्पूर्ण हकीगत सुनाई थी. फिर पेश किये हुए प्रस्तावोंपर विचार कर दूसरे दिन एक सभा कीन्ही. और उसमें नवीन प्राचीन दोनों मन्दिरोंके प्रबन्धके लिये सेठ पन्नालाल झवेरचन्दजीके दुकानके मुनीम घासीलालजी व विनोदीराम बालचन्दजीकी दूकानके मुनीम कुन्दनमलजी ये दो मुखिया चुने गये और उसपर देखरेख करनेको उज्जेन, सोनकच्छ, इन्दौर, बड़नगर, रतलाम, मन्दसौर, खांचरोद, पीपला मउ, ग्वालियर, धार, सनावद, बम्बई, भोपाल आदि स्थानोंके मुखिया सेठ लोगोंकी कमेटी नियत की गई. पीछे हर वर्ष फाल्गुण सुदी १ ऊपर मेला करनेका ठहराव हुआ. और उसी समय मालवाके पंचोंने प्रति घर दो रुपया, एक रुपया, आठ आना जमा करनेका नियम किया, कारण विना इस रीतिको कार्यमें लाये. मेलाका खर्च और दूसरे खर्च नहीं चल सक्के. इस वर्ष भंडार खातामें ऊपरके नियमके विना १०००) एक हजार रुपया एकत्र हुआ. स्टेशनपर धर्मशाला बनाने, तथा ग्रामसे स्टेशन तक कच्ची सड़क बनानेके विषय आगामी वर्ष विचार करनेका ठहराव हुआ. हालमें तो नये मन्दिरकी धर्मशाला (जो गिर गई है) के दुरुस्त करानेकेलिये मुनीमको मंजूरी दी गई. तथा एक दूसरी धर्मशाला जिसका काम पहिले शुरू हुआ था. परन्तु स्वेताम्बारियोंके झगड़ेके कारण बंद था. मुकद्दमाका फैसला हो चुका; इसलिये मन्दिरमें शिलक एकत्र होनेपर काम प्रारंभ किया जायगा, ऐसा विचार हुआ.

विशेष जाननेकी बात यह है. कि जबतक भाऊ सरदारमल (स्वेताम्बारियोंका मुनीम) था, तबतक प्राचीन मन्दिरके पासकी एक धर्मशाला दिगम्बरीयोंके उपयोगमें नहीं आती थी. परन्तु अब नये फैसलाके जरिये वह निकाल दिया गया, और अपना व स्वेताम्बरीयोंका धर्मशालामें बराबर २ हक्क है. यह धर्मशाला बहुत बड़ी है; स्वेताम्बरीयोंके हालमें पूजा करनेवाले पांच

२ रुपया बेतनवाले ३ पुजारी हैं. अपनी जगहपर हिसाबकी देखरेख करने भाऊ सरदारमल एक आदमी रख गया हैं. पुराना खजाना सरकारमें जप्त हैं, और नया भंडार सुप्रिंटंडेंटके ताबेमें रहता है.

एक दो वृद्ध पुरुषोंके पूछनेसे ज्ञात हुआ; कि पहिले दोनों पक्षवाले पूजा करते थे. और इसके भी पहिले केवल दिगम्बरी पूजन करते थे, परन्तु यह कथन कुछ सुबूतीसहित नहीं है. पहिले ब्राह्मणलोग मन्दिरमें पूजा करते व आजीविका करते थे. परन्तु भाऊ सरदारमलने धीरे २ उन सबको दूर कर दिया. और अब द्रव्य बेचकर मन्दिरखाते जमाकरने लगे.

मन्दिरमें मूल प्रतिमा बालूकी श्यामवर्ण है. परन्तु उनपर लेख वगैरह कुछ भी नहीं है. सब लक्षण चिन्ह दिगम्बर आम्नायकी प्रतिमातुल्य हैं. इस प्रतिमाके दोनो ओरकी प्रतिमा भी श्यामवर्ण है. और दाहिनी ओरकी प्रतिमाके पासमें दो प्रतिमा कार्योत्सर्ग दिगम्बरीय हैं. इससे साफ जाहिर होता है. कि स्वेताम्बरी व्यर्थ फिसाद करते हैं. इसका कारण भाउसरदारमल जो पहिले जब यहां आया था, भिखारी समान था; और अब अच्छा जायदादवाला हो गया है. अब इसे पैसे मिलनेमें बाधा होने लगी. इसीसे सबको झगड़ा करने को उभार रहा है.

मन्दिर की शिखरमें द्वारके ऊपर दो लेख हैं. लेकिन अधिक उंचाईके कारण साफ पढ़े नहीं जाते. पूछनेसे ज्ञात हुआ कि ये मन्दिर बननेके सम्बन्धमें हैं. परन्तु ऐसा प्रतीति होता है. कि ये लेख किसी दूसरे ने थोड़े ही दिन पहिले लगवाये हैं. कारण एक तो लेख नवीन है. तथा दूसरे वह आसपास की दीवाल खोदकर जोड़ा हुआ. साफ दिखाई देता है.

छोटे मन्दिर की प्रतिमा भी दिगम्बरी है. जिनके ऊपर इसप्रकार लेख हैं:—"सम्वत् १९४८ वैसाख सुदी ३ मूल संघ आम्नाय जीवराज पापड़ीवालेने प्रतिष्ठा कराई." इन्ही भाईद्वारा इसी दिन की स्थापित की हुई प्रतिमा लश्कर ग्वालियर आदि स्थानोंमें भी हैं. किसी २ मन्दिरमें स्वेतांबरियों की पीछे स्थापित की हुई प्रतिमा हैं. उसमें भी सं १९४८ व तपागच्छ आदि लिखे हैं.

मेला बहुत आनन्द के साथ हुआ. अढ़ाई द्वीप विधान मंडल मांडा गया था. अनुमान अढ़ाई हजार भाई उत्सवमें एकत्र हुए थे. शास्त्रादि धर्मचर्चा नित्य होती थी. फाल्गुण शुक्ल ११ श्री जैनेन्द्रदेवकी सवारी बड़े धूमधामसे निकली थी. भोपालवालों का मन्दिर (रथ) भी आया था.

मक्सीजीमें दिगम्बर जैन का एक भी घर नहीं है. मन्दिर की आमदनी ४००–६०० रुपया साल की थी, परन्तु अब इस झगड़के कारण खर्च अधिक होनेसे कुछ शिलक नहीं दीखती.

मक्सीसे चलकर मैं उज्जैन आया. यहां ३ जैन मन्दिर हैं. तथा दिगम्बरी भाईयोंके घर अनुमान ८० हैं. रात्रिको सभा हुई. प्रथम जवेरी प्रेमचन्दजीने व्याख्यान दिया. उसके असरसे यहांके पंचोंने व्याह शादियोंमें गाली (भांडवचन) गाये जाने का रिवाज बन्द करना स्वीकार किया. और फिर एक खाचरोदवाले भाईने "पंचोपापोप-

देश"पर व्याख्यान दिया. यहां एक दिवस ठहर कर इन्दौर गया. मारवाड़ी धर्मशालामें ठहरा. यहांभी प्रेमचन्द भाईके व्याख्यानसे पंचोंने नीचे लिखी बातें स्वीकार की—

१. विवाह शादियोंमें अपशब्द न कहे जावें.

२. किसीकी मृत्युमें मन्दिरमें रोते २ जाना सर्वथा बन्द करना.

३. जैन विवाहपद्धति अनुसार विवाह करना.

श्रीमन्दिरजी यहांपर आठ हैं एक पाठशालाभी है. जिसमें एक ब्राह्मण शिक्षक शास्त्र बांचना सिखाते हैं.

दूसरे दिन मोरतका स्टेशनपर उतर सिद्धवरकूट आया. मैं इन्दौरवाले सेठ तिलोकचन्दजी की चिट्ठी ले आया था; यहांपर उनकी तरफसे एक आदमी जीवनलाल प्रबंधके लिये रहता है. तथा दूसरा मंदिरोंका प्रबंध रखने मुनीम सरीख रहता है. पहाड़के ऊपर ३ मंदिर हैं. एक महेन्द्रकीर्तिका बनवाया जिसकी प्रतिष्ठा शोलापुरवालोंने की है. दूसरा इन्दौरवालोंका, तथा तीसरा बड़वायवालोंका है. मन्दिरोंका हिसाब किताब बड़वायवाले सेठ देवासा घनश्यामसाके पास रहता है. पुजारी वगैरह पांच मनुष्य यहां रहते हैं, यात्रियोंके लिये दो धर्मशाला है; तथा एक नवीन बनी है; श्वेतांबरियोंका यहां नाम निशान अधिकार नहीं है. पर्वतके खंडहरोंसे ज्ञात होता है. कि यहां पहिले कोई नगर होगा. कितने एक प्राचीन मंदिर खंडित मालूम होते हैं. जिनमें प्रतिमा मिलती हैं.

इस गढ़के ऊपरकी ६७ एकड़ जमीन अपने अधिकारमें है. पहिले इससे दूनी १३४ एकड़ थी. इसके मुकद्दमेकी हकीगत ऐसी है. कि यह पहाड़ एक जागीरदारके ताबेमें है. उससे रुपया देकर यह जमीन खरीदी थी. परन्तु लिखावटी सनद कुछ नहीं की थी. इस कारण कितने एक दिन बाद वह जमीन मांगने लगा. और आखिरको मुकद्दमा चलकर चीफ कमिश्नर सा० ब० नागपूरकी इजलाससे फैसल हुआ; उसमें जैनियोंको आधी ६७ एकड़ जमीन मिली.

यहां तीन वर्ष पहिले डेढ़ सौ रुपया साल घाटा रहता था. वह सेठ घनश्यामजी अपने घरसे पूरा करते थे. परन्तु गई सालमें रुपया बचे हैं; वह उक्त भाई सा० ने अपने हिसाबमें जमा किये. सम्वत् १९५१ की साल प्रतिष्ठामें १९००) रु० जमा हुए थे. वह सेठ सांवतराम सेवारामजीके यहां जमा है. आवश्यक्ता पड़नेपर मंगाये जाते हैं.

यहांसे चलकर मउ आया. फिर बैनेड़ा रवाना हुआ. बैनेड़ा ५०० घरकी वस्तीका ग्राम है. श्रावकोंके ४ घर हैं. तथा एक छोटा चैत्यालय है. मुख्य मंदिर गांवकी उत्तर दिशामें है. उसकी बनावटसे बादशाही जमानेका बना हुआ मालूम पड़ता है. उसके आगेका गुम्बज बहुत विशाल है. उसका घेरा अन्दरके गर्भसे ५० गजका है. इतना बड़ा गुम्बज कहीं देखनेमें नहीं आता. मंदिरमें दो स्थानोंपर चैत्यालयोंकी स्थापना है. ८० प्रतिमा पाषाणकी सम्वत् १५४८ की हैं, केवल एक धातुकी है. मंदिरके आगे सभामंडप है. जिसका कार्य अधूरा पड़ा है, यह स्थान अतिशय क्षेत्र है. प्रतिवर्ष

चैत सुदी १५ को मेला भरता है. अनुमान १५०० मनुष्य एकत्रित होते हैं. यहां आमदनी १००) रु० सालकी है. परन्तु खर्च ४००) रु. सालना है, पहिले ऐसा ठहराव था. कि मालवाके पंच प्रति घर दो रुपया, एक रुपया, आठ आनाके हिसाबसे चन्दा देवें. परन्तु शोक. कि अब वह बन्द हो गया. हिसाब किताब इन्दौरवाले सेठ नाथूराम चुन्नीलालजीके यहां रहता है. इनका मंदिरके ऊपर कितनाही चढ़ता निकलता है, यहां एक धरमशाला है. तथा मंदिरके आसपास पत्थरका कोट फिरा हुआ है.

यहांसे चलकर तारीख ९ अप्रैलको वड़वानीजी पहुंचा. (शेषमग्रे.)

शा. डाह्याभाई शिवलाल.

श्री गिरनारजीके प्रबन्धकर्ताओंको अन्तिम सूचना.

जैनमित्रके पिछले अंकमें हमने विदित किया था. कि परतापगढ़वाले भाई श्री गिरनारजीकी देखरेख बहुत वर्षोंसे करते हैं. और उनको दिगम्बर जैनप्रान्तिकसभा बम्बईने लिखा था. कि आप हिसाब भेजनेकी इच्छा रखते हैं, या नहीं? इसका उत्तर आठ दिनमें दीजिये, परन्तु आजतक इसका कुछ उत्तर नहीं दिया. और गतवर्ष प्रतापगढ़वाले भाई श्री गिरनारजीके भंडारमेंसे पन्द्रह बीस हजार रुपया ले गये थे. उसमेंसे थोड़े रुपया तो मन्दिरकी मरम्मतमें खर्च किया. शेष रुपयोंका क्या किया, सो कुछ मालूम नहीं पड़ता, इससे अनुमान किया जा सक्ता है. कि इसीप्रकार कई बार लाखों रुपया लेगये होंगे.

और हमको बहुतसे भाइयोंने लिखा है. कि श्री गिरनारजीका इन्तजाम अच्छा नहीं है, बल्कि इसी विषयका एक आर्टिकल (लेख) मार्च महीनेके जैनगजटमें आया था. जो सब भाइयोंने पढ़ा होगा.

प्रतापगढ श्री गिरनारजीसे बहुत दूर है. तथा और सब कारणोंको ध्यानमें ला- विचार करनेसे ज्ञात होता है कि परतापगढ़वाले भाइयोंसे वहांका इन्तजाम हो नहीं सक्ता है. जैन प्रांतिक सभा, बम्बई प्रांतके सर्व तीर्थक्षेत्रोंकी देखरेख रखती है. और गिरनारजीभी इसी प्रांतमें है. इससे योग्य है कि इस तीर्थका कार्यभी अपने हाथमें रक्खे. और परतापगढ़के भाइयोंको मदत देवे. ऐसा विचार कर यह सभा वहांका प्रबन्ध अपने हाथमें रखना चाहती है. हिसाब प्रतिवर्ष छपा कर प्रकाश करती रहेगी. आशा है; कि इसको सर्व भाई स्वीकार करेंगे. और जिन भाइयों की इसमें राय न होवे. वह कारण सहित हमें सूचना देवें.

तीर्थक्षेत्र और मन्दिरजीका इन्तजाम करना नजदीकके ग्रामवालोंका मुख्य कर्त्तव्य है. सो सर्व भाइयों को इस कार्यमें तन, मन, धनसे मदद करना चाहिये.

शा. चुन्नीलाल जवेरचन्द,
मन्त्री, तीर्थक्षेत्र.

प्राचीन जैनधर्म संजीवनी सभा बेड़कीहाल.

श्रीमान सम्पादक महाशय! जयजिनेंद्र अपने सर्वमान्य पत्रमें निम्नलिखित लेखको प्रकाशित करोगे. ऐसी पूर्ण आशा है.

यहां जैनी भाइयों की संख्या अनुमान १५०० है, स्थिति सर्वसाधारण की अच्छी हैं, दिगम्बर जैन मन्दिर १ है.

दक्षिण महाराष्ट्र जैनसभा की चौथी बैठकमें स्थानीय सभा स्थापन करनेके लिये जो प्रस्ताव पास हुआ है उसी का पालन करनेके अर्थ माघ सुदी १३ को यह सभा श्री रामगोंडा तात्या पाटील के अधिपतपनेमें भरी.

प्रथम पंडित स्तवनेशबाबाजी उपाध्यायने एक दीर्घ भाषणपूर्वक मंगलाचरण किया. तदनंतर शास्त्री सिराचन्द ताराचंदने सभापति मुकरर्र करने की सूचना की. व उसका अनुमोदन श्री रावजी राघोबा बनकुदरे व तात्या सखाराम पाटीलने किया. हर्षध्वनि बाद सभापतिने आसन ग्रहण किया. पश्चात् रा. रा. दादा चंदापा धावतेने श्री आपा अण्णा गोंडा पाटील को सैक्रेटरी बनाने की सूचना की. और शा मोतीचन्द जयचंदने अनुमोदन कर सर्वानुमतसे प्रस्ताव पास कर सैक्रेटरी नियत किये.

सभापति सा० ने सभा स्थापन करनेका अभिप्राय मनोहर भाषणद्वारा प्रगट किया. पश्चात् श्रेष्ठी मल्लापा निंगप्पाकरपुरने अपने चटकदार व्याख्यानद्वारा सभा होनेके लाभ दिखाये. जिसको श्रवण कर सर्व भाइयोंको अत्यानंद हुआ और सर्व सम्मति से प्रतिचतुर्दशीको सभा करनेका प्रस्ताव पास किया. श्री आणापाटीलने सभामें पास करनेके लिये जो प्रस्ताव पेश किये वह इस प्रकार हैं:—

१ जैन धर्म्मानुयायिओंमें ऐक्यता सम्पादन करना.

२ स्वधर्म सुधारण.

३ बालक बालकाओंको शिक्षा देना.

४ दक्षिण महाराष्ट्र जैनसभामें जो ठहराव पास होवें. वह निरंतर अमलमें लानेका प्रयत्न करना.

इन प्रत्येक प्रस्तावोंके लाभ रा. रा. बाला चंद्रापा धावतेने अनेक रीतिसे सिद्ध करके दिखाये. जिससे सर्वउपस्थित सभ्योंने आनंदपूर्वक तालध्वनि की और सब की ओरसे शा लालचंद रावजीने पास करनेका अनुमोदन किया. उस पर सभापति साहिबने ऊपर लिखे ठहराव पास किये.

तदुपरांत रा. रा. दादा चंदापा धावतेने "जैनधर्म रहस्य" इस विषयपर सुरस मनोहर भाषण दिया. उसको सुनकर सर्व सज्जन आनंदित हुए. इस दिवस मेहरबान डिपुटी पुलिस सुप्रिंटेंडेंट सा० के पधारनेसे उनके साथ ब्राह्मण लोग भी पधारे थे, सभाको देख आनंदित हुए. "आज की सभासे ज्ञात होता है. कि यह सभा निरंतर उत्तम रीतिसे चलेगी. और इसके निमित्तसे जैनसमाजका बहुत कुछ सुधारा होगा." ऐसा कह कर सभापति सा० ने सर्वसाधारणका उपकार मानकर सभा विसर्जन की.

आपा अण्णागोंडा पाटील.
सैक्रेटरी प्रा. ध. सं. स. बेडकीहाल.

दिगम्बर जैन प्रांतिक सभासे निवेदन है कि निम्नलिखित बातों पर ख्याल करके अमलमें लाने का प्रयत्न किया जावे.

(१) हर जिलेमें एक उपदेशक होना.

(२) उपदेशक को गांव २ फिर कर उपदेश करना. जिसमें लोगोंकी व्यवस्था सुधरे. और धर्म्मोन्नति हो.

(३) उपदेशकके निकट धर्म संबंधी पुस्तकें होना.

(४) जिलाके मुकामपर एक पाठशाला अवश्य होना चाहिये. कारण इसके बिना धर्मवृद्धि होना कठिन है.

(५) उपदेशकके साथ सभाका एक सिपाही बिल्ला पट्टा सहित होना चाहिये. जिससे लोगोंको श्रद्धान होवे. कि यह सभा की तरफका है.

(६) हमारे बहुतसे धर्मबंधु देवालय बनवानेके लिये जो द्रव्य खर्च करते हैं, अगर वह द्रव्य प्राचीन मंदिरोंके जीर्णोद्धार करनेमें खर्च हो; तो अति प्रशंसनीय हो. और द्रव्य भी थोड़ा खर्च हो, शेष द्रव्य जो बचे वह प्रांतिक सभामें जमा करा देवें तो "एक पंथ दो काज" होवें जैसे कुंथलगिरि (रामकुंड) शोलापूर, बीजापूर, इंडी वगैरह स्थानोंमें लोक वस्ती की अपेक्षा मंदिर ज्यादा हैं.

आपका हितचिन्तक,
तिलकचन्द वेचरचन्द गूजर,
बीजापूर.

मृत्युमंगल व मन्दिरमहोत्सव श्रीयुत जगाती प्यारेलालजी टंडा सागरनिवासीका.

प्रान्त सागरमें टंडा एक साधारण ग्राम है. यहांपर श्री जैनमन्दिरजी ४ हैं, जिनमेंसे तीन तो प्राचीन हैं, एक श्रीयुत जगाती प्यारेलालजीका बनवाया है. जिसकी प्रतिष्ठा सं० १९५६ में बड़े धूमधामकेसाथ हुई थी. उसही समयसे आपका प्रेम धर्मकार्योंसे इतना हो गया. कि अहर्निश प्रभावनांग बढ़ानेके ही प्रयत्नोंमें लगे रहते थे.

वर्तमानमें इसही ग्रामके प्रतिष्ठित पुरुष श्रीयुत मोदी मूलचन्दजी (जिनकी अभिरुचि एक नवीन मन्दिर बनानेकी दीर्घकालसे थी) ने पांचवें मन्दिरकी नीव फाल्गुन वदी २ की शुभ मुहूर्तमें डाली, और चतुर्थीके दिवस श्रीजीकी जलेव बड़े धूमधामकेसाथ निकालकर अति आनन्द मनाया. उत्सवमें अनुमान १५०० भाई बाहरके सम्मिलित हुए थे. इस उत्सवमें जो कुछ द्रव्य व्यय हुआ. उसका आधा लाला प्यारेलालजीने हर्षपूर्वक दिया.

इस मंगल मुहूर्तपर श्रीमान् बालब्रह्मचारी ज्ञानगुणभूषण सदाकालजिनचरणाम्बुज सेवक श्रीयुत बाबा शिवलालजी, व धर्मपरायण श्रीमान् बाबा जवाहरलालजी, व श्रीयुत पंडित दौलतरामजी, व श्रीयुत शांतिमूर्ति बाबा भगीरथजी, व चिरंजीव वृजलालजी पधारे थे; उक्त महाशयोंका चातुर्मास इस वर्ष मालथौनमें हुआ था. जिनके उपदेशके योगसे वहां जो क्रिया आचरणादि शिथिल हो रहे थे. अच्छे हो गये और धर्मका प्रचार बहुत हुआ, ये सम्पूर्ण मूर्तियां अति शान्तिक्षमावान विरक्त तथा विद्वान् इस पंचम कालमें अद्वितीयही हैं; मालथौनसे चलकर पिडरुवामें श्रीमंत सेठ मोहनलालजी खुरईवालोंके यहां ठहरे थे. वहांसे श्रीयुत मोदी मूलचन्दजीके सुपुत्र गनपतरायजी यह

समाचार श्रवणकर लिवा लाये. मुख्य बावा श्रीयुत शिवलालजीके रेल आदि सवारीका त्याग है. यहांसे गिरनारजीकी यात्राको पैदलही आवेंगे. इसही समय जगाती प्यारेलालजी कफरोगकर ग्रसित हो गये थे. बावाजी सा० से बोले कि हमको इस गृह जंजालसे निकालकर अपनेसाथ रक्खो. तब बावाजीने इन्हें भली भ्रांतिसे सम्बोधन कर समझाया कि "ग्रहका भार दूसरेके सुपुर्दकर निशल्य हो जानेसे सर्व धर्मकार्य घरहीमें बन सक्ते हैं." तथा अनेक भांतिसे धर्मोपदेश दे. चतुर्गति रूपसंसारका स्वरूप कहा; तो अति भयभीत होकर अति हर्षके साथ चौधरी धरमचन्दजीको राजेश्री ठाकुर चंदनसिंहजी व श्रीयुत मोदी मूलचन्दजी व श्रीयुत जगातीहरचंदजी व दुमातज भाई श्रीयुत जगातीलालचन्दजी हजारीलालजी धरमचन्दजी आदि पंचोंके सन्मुख निजग्रहके मालिक किये, और सर्वजनोंके समक्ष स्वामीपनकी पगड़ी बंधवा दी, और फिर निम्नलिखित प्रकार द्रव्य धर्मकार्योंमें उत्साहपूर्वक दिया.

१००) वार्षिक टंडाके मन्दिरको पूजादि धर्मकार्यके हेतु. जबतक दूकान कायम रहे.
१५) श्री सिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखरजी.
५) श्री सोनागिरजी.
१०) श्री गिरनारजी.
६) श्री पावापुरीजी.
६) श्री चंपापुरीजी.
१०) श्री थूबोनजी.
५) श्री बीनाजी.
१०) श्री मंदिरजी टंडा.
१०) श्री मंदिरजी देवरी (मालिया)
५) श्री मंदिरजी जैसिंहनगर.
५) ,, ,, ईश्वरवारा.
२) ,, ,, पटना (रहली)
१०) दुखित भुखित जीवोंको.
३४३) बहिन भानजा आदि कुटुम्बी जनोंको.

इस प्रकार द्रव्य पुन्य करने पश्चात् कहा. कि भाई! जिस रीतिसे हम धर्मकार्य करते आये हैं, उसी प्रकारसें अब तुम करते जाना. शक्ति बढ़े तो बढ़ाना घटाना नहीं. और तुम्हारी भावज आदि घरमें जो कुटुंबी जन हैं, उनकी तथा दुखित भुखित जीवोंकी सदा प्रतिपालना करना. इसके पीछे सर्व ग्रहसम्बन्धी कार्योंका त्याग कर दिया. इस समयसे आपकी अवधिके केवल ९ दिवस अवशेष रहे थे. शय्याको त्यागकर भूमिपर शयन करते धर्मध्यानकेसाथ कालक्षेप करने लगे. औषधि पान सेवनका त्याग प्रथमहीसे कर दिया था. चिरंजीव वृजलालजीको समीप बैठाकर समाधिशतक आदि पाठ उनके मुखसे सुनते रहे. पंचनमस्कार मंत्र आदिका निरन्तर उच्चारकर एक क्षणभी व्यर्थ नहीं खोते थे. अन्तिम दिवस ७ घंटा प्रथम कफांश जो था वह जाता रहा. और निरन्तरकी नाईं साफ बोलने लगे रात्रिके १० बजे बावाजी साहिबको बुलाया आपके सन्यासके कारण बावाजीका रात्रि गमन त्याग नहीं था. उसी समय आये. शरीरकी दशा पूछी, तो बहुत हर्षके साथ कुशलता कही, और धर्मोपदेश श्रवणकर आचरणमें अति दृढ़ हो. परिग्रह मात्रको बिलकुल विलगाकर चार प्रकारके आहार का त्याग कर नमस्कारमंत्रका स्मरण करने लगे; इस अवसर पर बावाजीने समाधिशतकमें का यह पद कहा—

ज्यों रणभेरी सुनतही, सुभट जाय रिपु पर झुके।
त्यों काल बलीके जीतने, साहस ठानें भव चुके॥

इस पदको सुनतेही अति हर्षित हुए. और सुनने देखनेवाले जो उस समय उपस्थित थे, इन के साहस पर आश्चर्य करने लगे. अनुमान १ बजे पर आपने पूछा कि अभी क्या बजा है? समयका निश्चयकर उठके बैठ गये. और श्रीसीमंधर स्वामीको भावपूर्वक मस्तक नम्रीभूतकर पंचनमस्कार मंत्रोच्चारण करते २ फाल्गुण कृष्णा १० मंगलवारकी रात्रिके १ बजकर ५ मिनट पर, अपनी ४७ वर्षकी अवस्थामें निरन्तरके लिये इस असार संसारसे गमन कर गये.

धन्य है इस अवसर को जो परंपराय निश्चयरूप पदका कारण है. यह दुर्लभ समय भव्य जीवोंको भव २ में प्राप्त होवे. ऐसी श्रीजीप्रति मेरी प्रार्थना है.

अब इस पंचम समयमें धर्म शर्म दातार।
यौंही मरण समाधि लख, कीजे भव रुचिधार॥

समस्त सज्जनोंका सेवक,

जगाती चौधरी धरमचन्द.

टँड़ा—सागर.

चिट्ठीपत्री.

(प्रेरित पत्रोंके उत्तरदाता हम न होंगे.)

प्रश्नावली

१—श्री जिन मन्दिर प्रतिष्ठा, श्री जिन बिंबप्रतिष्ठा. जैन पद्धति अनुसार विवाह करना आदिके अधिकारी निर्ग्रंथाचार्य हैं. या गृहस्थाचार्य और क्यों?

२—पंचामृत अभिषेक अहिंसामई जैन धर्मके अनुकूल हैं या प्रतिकूल? यह कबसे जारी हुआ. और क्यों? यदि पंचामृत अभिषेकही योग्य है. तो इसका प्रचार क्यों नहीं किया जाता? व यदि अयोग्य है. तो इसका प्रचार क्यों नहीं रोका जाता?

आशा है कि श्रीमती विद्वज्जन सभा इसका विचारपूर्वक निर्णय करेगी. और निर्माल्य द्रव्यके समान इसकाभी पक्षपात रहित निर्णयकर जैन जातिका वृहत आभार प्राप्त करेगी.

धर्म सेवक,

दरयावसिंह हीराचन्द जैन,

रतलाम.

जैनमित्र अंक १, २ के निर्माल्य द्रव्यसम्बन्धी लेखमें अनुक्रमसे पृष्ठ २४—२५ में 'पूजन करनेका कुछ महत्व नहीं है. तथा पूजनका पक्ष गौन है' ऐसा लिखा गया है. सो इसको पढ़कर यहांके भाई बड़े सन्देहमें पड़ रहे हैं. क्योंकि वर्तमान कालमें श्रावकोंको पुन्य उपार्जनकेवास्ते यही एक कारण है. क्योंकि चारों प्रकारके दान देने योग्य इस अवसर्प्पणी पंचम कालमें तीनों प्रकारके पात्र नहीं. व सप्तगुणसहित दाताभी नहीं, स्वाध्याय करने योग्य विद्वत्ता नहीं. व पढ़ानेवाला कोई गुरु नहीं. एक तो पढ़नेवालेही बहुत कम हैं, और जो पढ़भी सक्ते हैं, तो अर्थ नहीं समझते. रहा यही एक कारण पूजन. सो उसको आप गौन बतलाते हैं. पूजनका महत्व व पूजन अभिषेक आदि करनेकी विधि जिनसेनाचार्यकृत पूजनपाठ, श्रवकाचार उपदे-

शासिद्धांतरत्नमाला, आदि ग्रन्थोंमें लिखी है' रविसेनाचार्यकृत पद्मपुराणमें पूजनका महत्व इस प्रकार लिखा है. कि लंकापति रावणने कैलास पर्वतपर जाकर श्री जैनेन्द्र भगवानकी पूजन अति विनय भक्तिपर्वक अष्ट द्रव्यसे की. जिसके प्रभावसे भवनवासी इन्द्रका आसन कंपायमान हुआ. और उसने आकर विनयपूर्वक रावणको शक्ति विद्या दीनी.

और आपनेभी लिखा है, कि श्रावकके षट्कर्मोंमें प्रथम पूजन है; वसुनन्दि श्रावकाचारमें भी पूजनका पक्ष उत्तम रीतिसे लिखा है.

लेखदाता महाशयको यहां शंका हुई है कि "यदि पूजनका महत्व होता. तो समंतभद्राचार्य अपने उपासकाध्यायमें तत्वका श्रद्धान. सामायक, अनर्थदंडादिक विषयोंके भांति पूजन इस विषय-परभी बहुत कुछ लिखते, परन्तु नहीं लिखा."

सो यह शंका ठीक नहीं है. कारण वह तो आचार्य थे. उनका जितना कर्तव्य था, लिखा. एक पूजनका विषय पूर्ण नहीं लिखा तो क्या उससे उनका वा पूजनका महत्व घट गया? कभी नहीं! यह आपकी भूल है. अगर इसमें आपको किसी ग्रन्थका आधार हो. तो आगामी अंकमें प्रकाशित करना चाहिये.

पूजन विषयमें यहां बहुत आन्दोलन मच रहा है सो शीघ्रही निर्णय होना चाहिये.

सज्जनोंका दास,

हीराचन्द उगरचन्द पंढरपुर.

"रत्न करंड श्रावकाचार" जी की भाषा वचनिका (जो पंडित सदासुखदासजीने बनाई है) में देवमूढताका प्रकरण लिखते २ पत्र ३९ में "क्षेत्रपाल" को वर्तमान पर्यायमें मिथ्यादृष्टि कहा है. वहां इस प्रकार वाक्य लिखा है. "भगवान परमात्माके स्वरूपको यह मिथ्यादृष्टि अज्ञानी कैसे जानेगा?"

यहां क्षेत्रपालको वर्तमान पर्यायमें मिथ्यादृष्टी कहा है, क्षेत्रपाल है; सो व्यन्तर देवोंमें का एक यक्ष है, यद्यपि सम्यग्दृष्टि जीव व्यन्तर योनिमें जन्म नहीं धारण करता है; जिससे यह व्यंतर पूर्व भवमें मिथ्यादृष्टि थे, यह सत्य होता है. परंतु व्यन्तर योनिमें जन्म हुए पीछे इनको सम्यक्त उपजनेका अभाव नहीं है. व्यन्तर योनिमें क्षायिक सम्यक्तका अभाव कहा है. परन्तु औपशमिक और क्षायोपशामिक सम्यक्त होता है, ऐसा "सर्वार्थ सिद्धि" कार लिखते हैं. देखिये! "भवनवासि व्यंतर ज्योतिष्काणां देवानांच सौधर्मैशानकल्पवासिनीनांच क्षायिकं नास्ति॥ तेषां पर्याप्तकानां औपशमिकं क्षायोशपमिकं चास्ति"

अर्थ—भवनवासी व्यंतर ज्योतिषी देवों को और उन की देवीन को. तथा सौधर्म ईशान स्वर्ग की देवीन को, क्षायिक सम्यक्त नहीं होता है, इनके पर्याप्त जीवन को औपशमिक और क्षायोपशमिक सम्यक्त होता है.

इस परसे क्षेत्रपालको वर्तमान पर्यायमें सम्यक्त हुआ होगा तो कुछ असंभवित नहीं है. परंतु पंडित सदासुखजीने इनको वर्तमान पर्यायमें मिथ्यादृष्टि लिख दिया है. यदि कहो कि पूर्व पर्याय की अपेक्षा मिथ्यादृष्टि कहा है सो पूर्व पर्याय की अपेक्षा पृष्ट ३६ में इन को एक वक्त मिथ्यादृष्टि कह चुके हैं. पत्र ३९ में जो

इन को मिथ्यादृष्टी कहा है. सो वर्तमान पर्याय की अपेक्षा से ही कहा है; सो गलती है या नहीं? यदि गलती होवे तो इसे दूर करना चाहिये. "मिथ्यादृष्टी अज्ञानी" जहां ऐसा शब्द लिखा है, वहांपर फक्त "व्यंतर अज्ञानी" ऐसा शब्द कर देने से अशुद्धि दूर हो सक्ती है.

हीराचन्द नेमीचन्द
शोलापूर.

जैन मित्र अंक ५—६ में पंडित शिवचंद्रजी शर्म्मा लिखित निर्माल्य द्रव्य निर्णय पढ़ा. उस विषय में भी कुछ निवेदन करना चाहता हूं.

निर्माल्य द्रव्य का क्या करना चाहिये? इसपर पंडितजीने जो लिखा सो ठीक है. "मंदिरके अंदर व बाहर किसी पवित्र स्थानपर पूजा करने के पीछे सामग्री को डाल देना चाहिये. उसके ग्राहक स्वतः ले जावेंगे."

यही रिवाज आज कल सब मंदिरोंमें हो रहा है. पूजा करनेवाला पूजा करके सामग्री को मंदिरके अंदर पाटपर रखकर चला जाता है. और दर्शन करनेवाले भी जो द्रव्य चावल बादाम आदि भेंटको लाते हैं, पाटपर चढ़ाकर चले जाते हैं. इनका इस सामग्री व द्रव्यसे कुछ ममत्व नहीं रहता. माली व्यासादि जो मंदिरके चाकर होते हैं और जो मिथ्यादृष्टी ही होते हैं, उस को स्वतः उठा कर ले जाते हैं. इसमें पूजा करनेवाले व दर्शन करनेवालेको कुछ भी दोष नहीं लग सक्ता अलबत्तह मंदिरके अधिकारियों को (जो यह ठहराव कर के कि मंदिरमें जो सामग्री वगैरह आवेगी उस की एवजमें तुम को मंदिर की व हमारी नौकरी करनी पड़ेगी, व्यास माली रखते है.) यह दोष लगता है. और जो मंदिरमें नौकरी करने की तनख्वाह अलग ठहरा ली जावे. तो उन को कोई दोष नहीं लग सक्ता. जो यह बात कही जावे कि वह (माली व्यास) चढ़ी हुई वस्तुके खानेवाले मिथ्यादृष्टी हैं, उनका आना मंदिरमें दुरुस्त नहीं. तो यह बात किसी शास्त्रमें पाई नहीं जाती. अगर ऐसा कहीं कहा होय तो पंडित जन उसे प्रकाशित करें.

और पंडितजीने जहां दिल्लीके सुगनचन्दजीके मंदिरके विषयमें लिखा है, वहां विचारने की बात है. कि पूजाकारक सामग्री उनके वस्त्रोंमें क्यों डालता था? और उसको कृतकारित अनुमोदनाका दोष लगता था वा नहीं? और सामग्री लेनेवाले मंदिरमें नहीं आने पाते थे. आते तो क्या दोष लगता?

केवली तीर्थंकरोंके समवशरणमें बनपालक क्षेत्रावीरा आदि जो सामग्री उठाकर ले जाते थे, क्यों जाने पाते थे, इसका शास्त्रोंमें क्या प्रमाण है?

भूरामल जैन, बीकानेर.

कल्पित कौतुक.

"प्रथम दृश्य"

उपदेशक— सेठजी साहिब जयजिनेंद्र!

सेठजी—(आसनसे उठकर मनमें कोई घर खंडित पंडितसे ज्ञात होते हैं) भाईजी साहिब जयजिनेन्द्र, कहिये किस औरसे शुभागमन हुआ!

उपदेशक—(नम्रभावसे) महाराय मैं एक

जैनसभा सम्बन्धी अल्पबुद्धि उपदेशक हूं. धर्मोपदेश हेतु भ्रमण शील हुआ हूं. (इतना वार्तालाप हो सेटजीकी आज्ञानुसार सेवकोंने डेरा दिया) संध्या समय सन्निकट आया. देवालयके वृहत घंटेकी दीर्घध्वनि श्रवणकर शास्त्र सभाका जाना निश्चित हुआ. सर्व जैनमंडली मन्दिरमें सुशोभित हुई. उपदेशक महाशय यथोचित मंगलाचरण पढ़ शास्त्रोच्चार कर इस भांति व्याख्यान देने लगे.

भुजंगप्रयात.

तजेंपक्षपातेविपक्षीनिकामी।
भजेंविघ्नहोवेविजैअग्ग्यामी॥
यचोंमैंयहीसुप्रवरदाननामी।
अहोविश्वस्वामीनमामीनमामी॥ २॥

प्रिय बंधुवर्गो! आपको अनेक समाचारों पत्रोंद्वारा तथा स्वतः भ्रमण कर अवलोकन मात्रसे विदित हुआ होगा. कि वर्तमानमें प्रख्याति जैन-जाति अत्यन्त दीन हीन और विद्या, वृद्धि, संख्या आदि सर्व विषयोंमें उत्तरोत्तर न्यून है. (यहांपर अवनतिके विषय अधिक कहनेकी आवश्यक्ता नहीं जंचती क्योंकि इससे सब जानकार हैं.) इस हेतु हमें उचित है. कि अपनी शक्ति अनुसार उसे उन्नतिके शिखरपर पहुंचावे, "कार्य्यसिद्धार्थ उद्योगकी आवश्यक्ता होती है" संसारके प्रत्येक कार्य्य इसीके आसरे चलते हैं. विना उद्योग कार्यसफलता प्राप्त करना असंभव है. क्योंकि कहा हैं॥

मनहर (सवैया इकतीसा).

आलस अभागीकर बांकुरो अजीत अरि,
करत फजीत नित सालत है सूल सो॥
सिद्धको सहाई भाई, वृद्धिको जनक-माई,
बुद्धिको तमय प्रेमी कहत कबूलसो॥
याहीके करेतें मिलै, भोग भूमिस्वर्ग सुख,
याहीकी करेतें कर्म, होत निरमूल सो॥
याही उद्योगकी न करें परवाही जैनी, ताही
सम रोवें हीन, हालत की हूलसों॥ ३॥

उद्योगके सहाई शारीरिक, मानसिक, द्रव्य आदि तीन बल हैं, जिनमेंसे मुझे यहांपर केवल एक द्रव्यबलसेही अभिप्राय है. जो कार्य्यकारी है. यथा,

दोहा.

सुर नर वर वर ज्ञानियां,
क्रोधी ग्रोधी ढेर।
लोभी छोभी मानियां,
एक दरबके चेर॥ ४॥
दरव सरब करतब करै,
कुकरम धरम पुनीत।
नीति अनीति पिरीत सुख,
सुख फजीत सुनमीत
तन बल मन बल बुद्धिबल,
रिद्धि सिद्धि बल भूर।
"प्रेमीजू" इन सबन सों,
अधिक द्रव्य बल सूर॥ ६॥

अतः इसीके भरोसे विद्योन्नति होना संभव है. विद्यावृद्धि सर्वोन्नतिका द्वार है, और अविद्या प्रत्यक्ष अवनति ही है.

किसी नीतिकारका वचन है. "विद्यारत्नेन योहीनः स हीनः सर्व वस्तुषु" इससे हे प्यारे भाइयो! अपनी संतानको पंडित बनाने हेतु प्रयत्न करहु. प्रयत्न करनेसे अनेक असंभव आश्चर्य जनककार्य्य सिद्ध हो सक्ते हैं, देखोन! प्रयत्नपरायण पश्चिमी पुरुषोंने रेल तार आगबोट आकाशयान आदि कैसे २ विस्मयजनक कर्तव्य किये हैं. जिनके अवलोकनमात्रसे बुद्धि चकरा

जाती है. क्या वह मनुष्योंका कर्तव्य नहीं है? आज किंचित दृष्टि प्रसारकर देखिये! आर्य्यक्षेत्र वर्ती समस्त जातियां अपने २ धर्मउद्योगकी उन्नतिमें कैसी कटिबद्ध हैं. किसीने धर्म महामंडल खोल रक्खा है. किसीने लाखों रुपया प्रदानकर विद्यालय औषधालय भोजनालय कार्य्यालयादि खोल रक्खे हैं, जिनमें अनेक अनाथोंका निर्वाह होता और प्रतिवर्ष सेकडों पंडितवर्य्य निकलकर अनेक उन्नतिकर देशविदेश भ्रमणकर उपदेश दे. स्वधर्म दृढ़ करनेमें तत्पर हैं, फिर आप क्यों नैन मूंद कर बैठे हैं. कहिये आपकेपास किस पदार्थकी न्यूनता है, है तो केवल एक विद्याकी. सो तो कदाचित आप उसे ठीक नहीं समझते. क्योंकि वह तो अदृश्य है. और अदृश्य पदार्थमें द्रव्य व्यय करना इस जातिकी चतुराई और चालाकीमें कलंक लगाता है.

सवैया.

एकके दोय करे दुसरे दिन,
तीजे दिना तिगुने कर आंके ॥
चाहे गरीब पै गाज परै चहै,
लाज औ राजकी हद्दको नांके ॥
योग अयोग गिनैन कछू,
इक स्वारथ लाभही आपनो झांकैं ॥
जो परमार्थ करैं कछु तो,
चतुराई चलाकी क्या आपनी ढांके? ७

और मान सुयश हेतु —

सवैया.

सोवत स्वपनमें न सोचत ते कीवेपुन्य,
लेत हते दमडी जो चमडी चीरकरके।
तेऊ निज नामके कमावे करें साहसयों,
धूरसी उडावैं भूरि द्रव्य धीर धरके ॥
मन्दिर मनोज्ञ मंजुकलश चढावे केते,
रथ हूं चलावें और, भारी भीर करके।
विद्या व्यर्थ जाने ताकी सुधी नहिनेकु चाहे
ज्ञानीबिन पूजा होय, बिना विधिवरके॥

महाशय! देखान! करेंगे तो केवल स्वार्थ हां यदि पंचोंके भाग खुल गये तो फिर क्या था चार छै दिन चूल्हा फूंकनेकी आवश्यक्ता नहीं. अब सोचिये व्यर्थ खर्चनहीं करते. पुन्य करते हैं. हां हां! खूब पुन्य हुआ, चाहे पंडित हो या न हो स्वाहा २ होना चाहिये. फिर संसार भरमें नाम कैसा फरफरायगा. लोगों पर दबाव होगा. पंच आदर करेंगे, ओर सिंगईका तिलक खलकभरमें दूर ही से दृष्टि पड़ेगा.

सेठ— पंडितजी तो क्या प्रभावनांग सर्वथा न करना चाहिये, सिद्धान्तों में तो इसका अतिशय फल लिखा है और आप उसकी निन्दा करते हैं.

उ० दे०—अजी सा० मेरे कहने के आशय को कुछ सोचो तो सही. कि वैसे ही दोषका टोकरा हाथमें देते हो. मेरा कहना यह कदापि नहीं है कि प्रभावनांग अफल है परन्तु हां; यह बात प्रसिद्ध है कि "ऊसर भूमि पर वारि वृष्टि विफल होती है" इसी प्रकार वह विना विद्याके अंकरहित शून्य सदृश हैं. और विद्यांक के सहित होते प्रमाणसे दशगुणा मानवर्धक हैं यथा.

सवैया.

देवो दान वे प्रमाण शीलसंतोषठान,
क्षमा सत्य शौचआदि गुणमें सरसनों ॥
सामायकसाधना अराधनाअनूपमकी,
करवो प्रभावनांग जगको हरसनो ॥
बसवो विजनवन बीच में विषादबिन,
बहुतौ विचार युक्त तन को करसनों[1] ॥
प्रेमीजूहजारन बरसनों करो वो कहा,
आखिर विज्ञान बिन ऊसर बरसनों ॥८॥

---

[1] करसनो=कृश करना.

अतः इससे सिद्ध है. कि बिना विद्या ये सब करतूतें बोझा हैं.

एक भिन्न धर्मी—पंडितजी! मैंने अपने एक मित्रके मुंहसे सुना था कि रथ प्रतिष्ठादि करानेमें पुन्य से प्रथक संघी, सवाईसंघी, सेठ, श्रीमन्त सेठ, आदि सकारकी जंजीरें जोर उपाधियां भी प्राप्त होती हैं. इसी से ये सब जैनी बात पर मरके बरवश करते हैं.

उप०— हां साहिब! आपका कहना सत्य है, यही मान (घमंड बड़प्पन) तो सर्वस्वाहा कराये देता है. हा हत! तूही तो आरत भारतभूमिका सत्यानाशक प्रबल शत्रु है. तू न होता तो हमारी यह दशा काहेको होती. परवश पड़ अपना सर्वस्व क्यों खो देते, दूसरोंकी दशा देख २ हम क्यों रो देते, अविद्या विषवृक्षका बीज क्यों बो देते, अधिक कहनेकी सामर्थ्य नहीं. सारांश. तेरीही करतूत हमारी अधोगति दशा है.

सवैया.

देत गमाय कियो चिरकालको,
पुन्य अलेख तुही वश अंधसे ॥
तेरे ही हेत मृषा छल छंद,
करें सु रहें जगमें फंसे बंधसे ॥
प्रेमी कवी कह आरत भारत.
भौ, अति गारत तेरीही गंधसे ॥
हाय! तेरेही प्रताप गये जग सों,
अवनीश किते दशकंध से ॥ १० ॥

भाईजी! जब वह इतना सामर्थी है. तो उसपर क्या वश? हां प्रिय महाज्जनो! यदि आपको उपरोक्त उपाधियां प्राप्त करना आवश्यकीय हो तो ये क्या. आपको रथ प्रतिष्ठादिसे आधे चतुर्थांशही व्ययमें सृष्टि शिरोमणि पदवियां महासभासे प्राप्त हो सक्ती हैं. और उस व्ययसे चारोंदान गर्भित विद्यामंडल कोविद करंड चिरकालतक अखंड हो. आपकी सुयश पताका पृथ्वी पृष्टिपर चहुं ओर फहरायगी.

भिन्न धर्मी—पंडितजी आप इसमें काहेको पड़े हो, यहां सोटासे गोंद लगनेवाली नहीं, पुरैन पत्रपर पानी कहीं ठहर सक्ता है. हां दबावसे कुछ देंगे. तो निदान वही टांय २ फुस्स होगा. और फिर ये लाजसे कुछ काजही नहीं रखते, खासे गोबर गणेशसे बैठे २ मौन साध सब अनाप सनाप सुना करते हैं.

वर्तमानमें जो चौधरी जगतरायजीके यहां लड़कीका व्याह बड़ी धूमधामसे सहस्त्रों मुद्रा व्ययसे हुआ है, उस समय मेरे एक कवि मित्रने लौकिक और पारलौकिक कार्य्य दशाकी समता कर एक काव्य कह डाला था:—

कवित्त. (मनहर सिंहावलोकन)

जावोगेजाति हीपर जान लीन्ही कला ऐसी
बनियां कृपण नाम जाहिर दिखावोगे ॥
खावोगे खूब खुल औ अन खिलाओगे सु,
भांड गांड हेत काड मूसकर लावोगे ॥
लावोगे लबारी गप्प, दाप्पनमें छप्पन सो,
धर्मको न कौडी पै निर्म्माल्य चप्प जावोगे ॥
जावोगे जमाले देत देत मन्तव्य करत,
आखिर अभागे हाथ मलते रह जावोगे॥११॥

उसमें चाहे हजारके डेड् हजार लग जावें. परन्तु इसमें पैसा दुस्तर है. क्योंकि इनकी तो वही दशा होना है न? कहनावत प्रसिद्ध हैं.

"मान बड़ाई कारनें जिन धनखोयो मूंड़ ।
ते मरके हाथी भये धरती लटके सूंड़" ॥

और जो आप अधिक करोगे तो वह एक

"सर्व व्यय भय निवारक मंत्र" कंठाग्रही किये हैं सुनिये!

(मनहर.)

काननमें तेल नाय रहेंगे चिमाय अरु,
आंखेनहूं मींच सब ऊंच नीच सहेंगे ॥
मौन साध 'प्रेमी' सब सुनेंगे गुनेंगे हितै,
बीचमें अलिफसे सु वे न खींच कहेंगे ॥
इब्बल लिखित नामें मब्वल भगेंगे उठ,
कौन हूं बहानेसों न सभा बीच रहेंगे ॥
चंचलाके चेरे चोखे आवें काउके न धोखे,
आखिर अनोखे धर्मी होय मीच लहेंगे॥१२॥

कहिये! अब इस मंत्र पर किस जादूगरका जोर चल सक्ता है.

उपदेशक—यह सत्य है पर सर्वजन एकहीसे नहीं होते. क्योंकि किसी कविका वचन है.

एक उदर वाही समय उपजन इकसी होय।
जैसे कांटे बेरके बांके सीधे जांय ॥

वह तो किन्हीं २ सूमके सपूतन की करतूत है. परन्तु उदार पुरुषोंके द्रव्य व्यय न करनेका कारण "एक वार ठगा चुकनेपर शिक्षा ग्रहण करना है." अर्थात् कितने एक कलिके कुचाली, कपटी, क्रूर लोगोंने इसही बहाने से सैकड़ों मुद्रा एकत्रित कर कुछ दिनों धूमधाम मचा. अन्तमें गोता साथ निरलज्जताम्बर ओढ़ पटतरमें कुम्भ करणकी नाईं गाढ़ निद्रामें व्यस्त हो निरंतरको लुप्तहीसे हो गये. और कितने एक मूसक महाराज तो यों कार्य्य वाहीकर उदर पोषणाकर जन्म सफल कर बैठे.

मनहर

ललित रंगीन जंगी वेल बांके बूटा भरे,
विज्ञापन वितर विश्वास बहुदीने हैं ॥
सज धजकेगजट विकासे बहुतेरे
जाति उन्नतिके हेतु मानो औतार लीने हैं ॥
विद्या वृद्धि हेतु वेग भेजो द्रव्य ऐसी भांति,
पायो जब वाप कैसो हाथ खूबकीने हैं ॥
प्रेमी यों प्रतीति गई कलिकी अनीतिकर
कपटी कलकी क्रूर गये जब चीने हैं ॥१३॥

विज्ञवरो! अब यदि कोई देने को साहस भी करे. तो किस जड़ को पकड़ कर करै. इस से तो प्रभावनांग ही में शक्ति अनुकूल द्रव्य व्यय कर अपना जन्म सफल करना अत्योत्तम है.

भिन्न धर्मी—पंडितजी, यह तो केवल एक कहने सुनने का आसरा है यथा. "गिरनहारवृक्ष वायु पर द्वेष" जब देना नहीं. तब मानव कई एक बहाने बना सक्ता है. मेरी समझमें जो कार्य्य नीति नियम विश्वास और विचारपूर्वक किया जाता है उसमें एकाएक धोका नहीं हो सक्ता और फिर "कर कंघन को आरसी क्या" देखिये महासभा की रजिस्ट्री हो चुकी है और उसके कार्य्यकर्ता द्रव्याध्यक्ष बड़े २ सेठ लोग हैं. तो उसमें ऐसी आशंका करना मूर्खता है.

और यदि अबभी शंका है तो सबको त्याज्यकर स्वग्रामोंमें ही अपने हस्ततले. यदि दो चार लक्ष्मीधर विचार लेवें. तो एक क्या दस महाविद्यालय खोल खड़े कर सक्ते हैं. और एक २ प्रतिष्टा न सही! यह हमारी भिक्षासी मांगना तो छूटे.

अब रही क्षात्रोंकी आवश्यक्ता सो वह वे प्रयाप्त हो सक्ती है, वर्तमानमें विद्यार्थियोंकी त्रुटिका कारण विद्यालयका अप्रबंध और व्यय सकीर्णता ही है. (इस विषयमें महज्जनोंकी सेवामें पृथक लेख लिखूंगा.) आशा है. कि सुप्रबन्ध होनेपर अनेक विद्यार्थी विना नेवतेही उपस्थित होने लगेंगे. और आश्चर्य्य नहीं कि

भिन्न धर्मी (द्विजादि उच्चवर्णी) भी दारिद्रके बुलाये इसी शालाकी शरण लें. परन्तु पंडितजी मैं अच्छी तरह जानता हूं कि यहां तो केवल वचनोंका भण्डार है.

उपदेशक—

सवैया.

सिगरे नाहिं ऐसे कहो तुम झूठ,
है चार भये तो कहा भइजू ॥
धनवान उदार अपार अजों,
जिनको धनी लक्ष दई दइजू ॥
पर देके कहा करें? प्रेमी कहो,
कलिकेर कलिङ्की भये कइ जू ॥
जिन ओर लगाई न कार्जमें द्रव्य ॥
प्रतीति सबै इहि सों गइजू ॥ १४ ॥

यह दशा देखकर तो सच्चों पर भी विश्वास नहीं होता. कहावत है कि "दूध का जला मठा फूंक २ पीता है.

आजकल तो यह दशा है कि उपदेशक आये और लोगोंके श्रौन खड़े हुए. कि फट कहने ही तो लगे.

सवैया (तेईसा मत्तगयन्द) सानुप्रयास.

पोषक पेटके कोषके शोषक,
तोषके नाम को दागलगावें ॥
बांके विदूषक दूषक आगरे,
मूसक मूढों के दीनन दावें ॥
दोश उड़े सुन के उपदेश,
कोऊ कहुं लेश को पेश न पावें ॥
देश विदेशते घूमत ये,
उपदेशक भेषक वेशक आवें ॥ १५ ॥

प्रिय दूरदर्शी विज्ञो! इसके विषय अधिक कहना "अपनी जांघ उघारिये आपहि मरिये लाज" की कहनावत सिद्ध करना है. अपना कार्य्य शिक्षा देना है. और नहीं तो हमें क्या "जो करता सो भोगता."

सचमुचमें यह द्रव्य ऐसी ही द्रव्य है. जिस की चुंगलमें बडे २ दिव्यदृष्टी पड़ अधोगति गमन कर गये.

कवित्त.

जग भरमैया मोक्ष बंधको बंधैया,
वेग २ ये चलैया नर्कगाडीकर पैया है ॥
ध्यान छुटवैया दान मान मिटवैया घन,
तम प्रगटैया ज्ञान भान को तुपैया है ॥
प्रेमी कहै सुनो भैया भैया बाप मैया आदि,
विलगावे दैया! यह विकट सिपैया है ॥
धर्मको छुपैया कुल शर्मको लुपैया द्वेष
बैर को रुपैयो यह रूपे को रूपैया है ॥ १६ ॥

परन्तु उदार जनों की प्रथा इस काव्यानुकूल है. वे मानों इस मंत्रको कंठ हार किये पुन्य भंडार भरनेमें ही तत्पर हैं.

मनहर.

छायासी छिपत छिन छिन ना रहत राखी
बारि के बबूलासी विचित्र याकी गति है।
केवल इक दान से सुफल सुखदाई है.
विफल रखाये अंत करती कुगति है ॥
प्रेमीजू कहतयाते उद्यत उदार जन
देखत लगाय जाति हितमें विगति है ॥
चारो दान सधे याभें बंधे शुभ बंध जान,
कीरति किरनें चंद कैसी जगमगाति है ॥ १७ ॥

इतनाही कह पाया था. कि पहुरुए ने घंटी ध्वनि की. ज्ञात हुआ. कि अब केवल अर्द्ध रात्रि ही अवशेष है. अधिक काल गत हुआ जान सभा विसर्जन हुई.

क्रमशः

---

१ तोष=संतोष.

१ पहिया=चक्र. २ छीपा=रोकनेवाला.

प्रार्थना १.

सर्व धर्मात्मा भाइयों से फिर भी प्रार्थना है; कि वे इस सभा सम्बन्धी "उपदेशक भंडार" की सभा सदी का, व प्रान्तिक सभाकी सभासदी-का, वार्षिक चन्दा (जो अपने उदार भावसे देना स्वीकार किया था; व फार्म भरे थे) जितना देना हो शीघ्रही भेजकर कृतार्थ करें. जिससे यह दोनों अति आवश्यकीय धर्मकार्य किसीभी प्रकार शिथिल न होने पावें,

हमने इसके विषय पूर्वके अंकमेंभी प्रार्थना कीथी, तथा एक २ कार्ड सर्व महाशयोंकी सेवामें फिरभी दिया था. परन्तु शोक कि उसकी कुछभी सुनाई न हुई अब आशा है; कि इस प्रार्थनाको पढ़कर हमारे भाई अवश्य रुपया भेजने का परिश्रम उठावेंगे और यदि आगामी देना, स्वीकार न हो तो एक पत्र लिखकर. तीफा भेज देवेंगे जिस से हम आशामें न रहें.

प्रार्थना २.

जो धर्मात्मा अपने पुत्र पुत्री का विवाह जैनपद्धतिके अनुसार करें. कृपा करके उसकी सूचना मय ग्राम पोष्ट जिला के हमको देवें, जिससे हम उन्हें जैन विवाह पद्धतिके अनुसार विवाह करने का धन्यवाद भेज सकें, आशा है; कि इस कार्यके करनेमें हमारे भाई आलस्य न करेंगे—

प्रार्थना ३.

हमको अभीतक यहभी ज्ञात नहीं है कि हमारे प्रान्तमें कितनी पाठशाला व कितनी सभा हैं, व कार्य क्या २ करती हैं. इस हेतु सम्पूर्ण प्रबन्ध कर्ताओंसे प्रार्थना है. कि वह प्रतिमास अपना २ पाठशाला व सभाओंकी सूक्ष्म रिपोर्ट हमारे पास भेज दिया करें. ताकि हमें उनकी व्यवस्था सुधारने का उपाय करनेमें सुभीता पड़े

महामंत्री

ग्रीष्मावकाश—तारीख १५ अप्रैलसे "हीराचंद गुमानजी जैनबोर्डिंग स्कूल" व "जैनसंस्कृत विद्यालय. गर्मीकी छुट्टीके कारण बन्द किये गये हैं, तारीख १५ जूनको फिरसे खुलेंगे.

डांकका सुभीता—अभी हमारे भाइयोंके, "जैनमित्र" का मूल्य व सभासदीका रुपया भेजनेमें डांकका दोआना महसूल लगता था जिससे वह जरा जबर मालूम होता था. परन्तु अब आगे पांचरुपये तकके म० आ० व वी. पी. पर केवल एक आना महसूल लगेगा, तब तो हमारे भाई रुपया भेजनेमें हीला हवाला न करेंगे!

उपदेशक भंडारके सभासदोंको हर्षदायी समाचार—दिगम्बर जैनप्रांतिकसभा बम्बईसम्बन्धी उपदेशक भंडारके जो महाशय ३) तीन रुपया वार्षिकसे ज्यादाके सभासद हैं. उन्हें आगामी अंकसे "जैनमित्र" मासिकपत्र मुफ्तमें भेजा जायगा. परन्तु शर्त यह है. कि वे अपना पिछला बकाया सब साफ कर देवें. आशा है. कि इस शुभ समाचारको सुनकर इस फंडके सभासद पिछला सब रुपया भेजकर यह अपूर्व लाभ उठानेमें न चूकेंगे!

भूलसंशोधन—जैनमित्र अंक ५—६ के पृष्ठ ३ में मुनिके शरीरांतका जो समाचार प्रकाशित हुआ है. वहां "सांगली" स्थानके बदले पाठकोंको बारामती पढ़ना चाहिये!

गुप्तदान—दक्षिणके किसी एक भाईने आठ आनेका टिकट पारितोषक भंडारकी सहायतार्थ गुप्त नामसे भेज अपने उदारभावका परिचय दिया है. जिन्हे बारंबार धन्यवाद दिया जाता है. आजकल ऐसे दान करनेवालेभी थोड़े हैं!

जैनविद्यार्थियोंको सूचना.

सम्पूर्ण अंग्रेजी हाई स्कूल तथा कालेजोंमें पढनेवाले जैनविद्यार्थियोंको नम्रतापूर्वक सूचना दी जाती है कि बम्बई तारदेवपरके "सेठ हीराचन्द गुमानजी जैनबोर्डिंग स्कूल" में आनेवाली टर्म (term) में प्रवेश होनेवाले विद्यार्थियोंकी अर्जी आने लगी हैं; इसलिये दूसरे विद्यार्थियोंको यदि आना हो तो 'सुप्रिंटेंडेंट ही. गु. जै. बो. स्कूल' से एडमीशन फार्म (Admission Form) मंगा कर ठीक२ भरके ता. २९ वीं मईके पहिले भेज देना चाहिये. देर करनेसे इस स्कूलमें आनेका लाभ प्राप्त नहीं हो सकेगा.

शुभेच्छक,

गांधी हीरालाल घेलाभाई,

बोर्डर ही. गु. जै. बो. स्कूल, **बम्बई**.

संस्कृत विद्यार्थियोंको सूचना.

सम्पूर्ण प्रवेशिका परीक्षा पास हुए, तथा इतनी योग्यता रखनेवाले. जैन विद्यार्थियोंको व जैन पाठशालाकी अध्यापकी चाहनेवाले ब्राह्मण विद्यार्थियोंकोभी सूचना दी जाती है. कि वेभी अगर "संस्कृत जैन विद्यालय" बम्बईमें पढनेकी इच्छा रखते हैं. तो हमसे प्रवेश होनेका फार्म मंगाकर शीघ्रही भरकर भेज देवें. नहीं तो फिर उन्हें यहां आना लाभ नहीं हो सकेगा. कारण अब केवल ६–७ स्कालर्शिप ही की जगह खाली है.

तुम्हारा हितैषी

पन्नालाल काशलीवाल–मंत्री

विद्याविभाग.

विद्यादान.

१ श्रीमान सेठ नेमीचन्दजी अजमेरवालोंने बम्बईसे पयान करते समय वर्तमानमें "सेठ हीराचन्द गुमानजी जैन बोर्डिंगस्कूल" की सहायताकेलिये २४०) रुपया. १०) मासिकके हिसाबसे दो वर्ष पर्यंत. देना स्वीकार किये, और आगामी अधिक सहायता पहुंचानेकीभी आशा है.

२ श्रीयुत सेठ हनुमतरामजी अमरावतीवालोंने ६) मासिक एक वर्षतक एक असमर्थ विद्यार्थीको देना स्वीकार किये इसके बदले हम उपरोक्त दोनों साहिबोंको धन्यवाद देकर आशा करते हैं कि हमारे धनिक गण इनके अनुकरण करनेमें विलम्ब न करेंगे.

प्राप्तिस्वीकार.

"जैनधर्मनो प्राचीनइतिहास" नामक पुस्तक हमको "जैन भास्करोदय" के सम्पादक श्रावक पंडित हीरालालजीद्वारा प्राप्ति हुई है. जिसे हम सहर्ष स्विकार करते हैं.

श्वेताम्बर सम्प्रदायानुकूल महावीर स्वामीसे पीछेके आचार्योंकी नामावली. व थोडा २ चरित्र होनेपरभी "प्राचीन इतिहास" पुस्तकका नाम रक्खा गया है, तथा ग्रन्थकर्ताने पुस्तक इतिहासिक होनेपरभी आचार्योंके नाम व चरित्र वर्णानुक्रमसे लिखे हैं, जिससे किनके बाद कौन आचार्य हुए, इसबातकी खोज करनेमें बडी दिक्कत होती है, और तिसपर भी मजा यह. कि आचार्योंका सूचीपत्रभी लगाया है. विशेष उसके सत्य झूठ की समालोचना उस सम्प्रदायवालेही कर सकेंगे. जो हो. पुस्तक उपयोगी है परन्तु १) कीमत पुस्तकके आकारसे अधिक है, ग्रन्थकर्ता "सम्पादक जैन भास्करोदय" जामनगरसे नकद दाममें पुस्तक मिल सक्ती है.

Registered No. B. 288.

श्रीवीतरागाय नमः

जैनमित्र.

जिसको

सर्व साधारण जनोंके हितार्थ,

दिगम्बर जैनप्रान्तिकसभा बंबईने

श्रीमान पंडित गोपालदास बरैयासे सम्पादन कराकर

प्रकाशित किया.

जगत जननहित करन कँ जैनमित्र वरपत्र ।
प्रगट भयहु-प्रिय! गहहु किन? परचारहु सरवत्र ! ॥

तृतीय वर्ष } ज्येष्ठ सं. १९५९ वि. { अंक ९ वां

नियमावली.

१ इस पत्रका उद्देश भारतवर्षीय सर्वसाधारण जनोंमें सनातन, नीति, विद्याकी, उन्नति करना है.

२ इस पत्रमें राजविरुद्ध, धर्मविरुद्ध, व परस्पर विरोध बढानेवाले लेख स्थान न पाकर, उत्तमोत्तम लेख, चर्चा, उपदेश, राजनीति, धर्मनीति, सामायिक रिपोर्टें, व नये २ समाचार छपा करेंगे.

३ इस पत्रका अग्रिमवार्षिक मूल्य सर्वत्र डांकव्यय सहित केवल १।) रु० मात्र है, अग्रिम मूल्य पाये विना यह पत्र किसीको भी नहीं भेजा जायगा.

४ नमूना चाहनेवाले ।। आध आनेका टिकट भेजकर मंगा सक्ते हैं.

चिट्ठी व मनीआर्डर भेजनेका पताः—

गोपालदास बरैया सम्पादक.

जैनमित्र, पो० कालबादेवी बम्बई—

कर्नाटक प्रिंटिंग प्रेस, कांदेवाडी, मुंबई.

ग्राहक गणोंसे निवेदन.

प्रिय ग्राहको! आपको हर अंकमें बारंबार सूचना देकर हमें व्यथित करना पड़ता है. कि आप अपना मूल्य भेजें तथा शीघ्रही और ग्राहक बढ़ानेकी कृपा करें. परन्तु आजतक बहुत थोड़े महाशयोंने हमारी प्रार्थना सुनी है. पूर्व अंकमें आपको यह भी सूचित किया था. कि **पांचके मूल्यमें छह जैनमित्र** भेजे जावेंगे. परन्तु यह भी सब सुनी अनसुनी हुई. इस लिये आज फिर अपने पाठकोंको यही सूचना देकर आशा करते हैं. कि आगामी अंक निकलने तक प्रत्येक भाई कमसे कम एक २ ग्राहक बढ़ाकर इस पत्रको उत्साह देनेमें त्रुटि न करेंगे.

हम यहां पर भाई दरयावसिंहजी हेडमाष्टर रतलाम व बाबू कंचनलालजी मुजफ्फरनगरवालोंको हार्दिक धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सक्ते. जिन्होंनें चार चार पांच पांच ग्राहक बनाकर हमारे उत्साहको बढ़ाया है.

विशेष सूचना—हमारे पास १ मनीआर्डर सवा रुपयाका इलाहाबादसे आया है. परन्तु कूपन पर भेजनेवाले महाशयका नाम नहीं है. और लिखा भी हो. तो वह उर्दू लिपिमें होनेके कारण ठीक २ पढ़ा नहीं गया. सो जिस भाईनें भेजा हो वह कृपा कर शीघ्र सूचित करें. और सर्व महाशयोंसे प्रार्थना है. कि इस कार्यालय व सभा सम्बन्धी कोई चिट्ठी भेजना हो. और शीघ्र उत्तर चाहना हो तो स्पष्ट नागरी भाषामें लिखें. अन्यथा उत्तर देनेमें विलम्ब होगा. विशेष कर उर्दू लिपिका आशय समझनेमें बड़ी दिक्कत होती है.

उपदेशक भंडार.

पूर्व अंकमें प्रकाशित किया गया है कि उपदेशक भंडारके ६) वार्षिक सहायता करनेवाले महाशयोंको जैनमित्र मासिक पत्र भेंट स्वरूप (मुफ्त) भेजा जायगा. सो प्रतिज्ञानुसार यह अंक सब महाशयोंकी सेवामें भेजा जाता है. और साथमें एक २ नियमावली व सभासदीका फार्म उपदेशक भंडार सम्बन्धी भी भेजा जाता है. सो जो महाशय पहिलेके सहायक हैं. और जब यह भंडार वर्धा सभाके हाथमें था. तब इसकी सभासदीके फार्म भरे हैं. वह इन फार्मोंको भरकर भेज देवें. और पुराने वकायेकी रकममें से जो कुछ देनेंकी इच्छा हो. वह भी भेज देवें. ताकि पुराने फार्म रद्दी कर दिये जावें. और नया हिसाब चलाया जावे—आशा है. कि इस प्रार्थनाको सहायक महाशय स्वीकार करेंगे.

नवीन विचार.

दिगम्बर जैन प्रान्तिक सभा बम्बई—सम्बधी सम्पूर्ण सभासदोंको जो प्रतिवर्ष ३) ६) १२) चंदा देते हैं. तथा उपदेशक भंडार में जो वार्षिक सहायता देते हैं. तथा जिनके पास इसके बदलेमें जैनमित्र भेजा जाता है. उनके पास आगामी वर्षसे जैनमित्र वी. पी. करके भेजा जायगा जिसमें रुपया वसूल होनेमें हमें भी सुभीता होगा और सहायक महाशयोंको भी रुपया भेजनेका परिश्रम न करना पड़ेगा. आशा है कि इस नवीन विचारको हमारे सम्पूर्ण भाई पसंद करेंगे.

पूर्व अंकमें आप लोगोंसे पिछला सम्पूर्ण बकाया चुका देनें की प्रार्थना की गई थी परन्तु उसपर अभी तक किसी महाशय की दृष्टिनहीं गई है. भाई साहिब! आपकी इस प्रकार की शिथिलतासे यह कार्य किस प्रकार चलेगा. सभा सम्बन्धी सम्पूर्ण कार्योंकी जड़ एक यही प्रबंध खाता है. यदि यह भी रुपयों कीन्यूनतासे तंग रहा तो फिर अन्य कार्योंमें उन्नति होनेकी किस प्रकार आशा की जावे. उम्मेद है. कि इस प्रार्थना को पढ़कर सर्व भाई अपना पिछला बकाया भजने में आलस्य न करेंगे.

निवेदक,
क्लर्क दिगम्बर जैन प्रान्तिक
सभा बम्बई.

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥
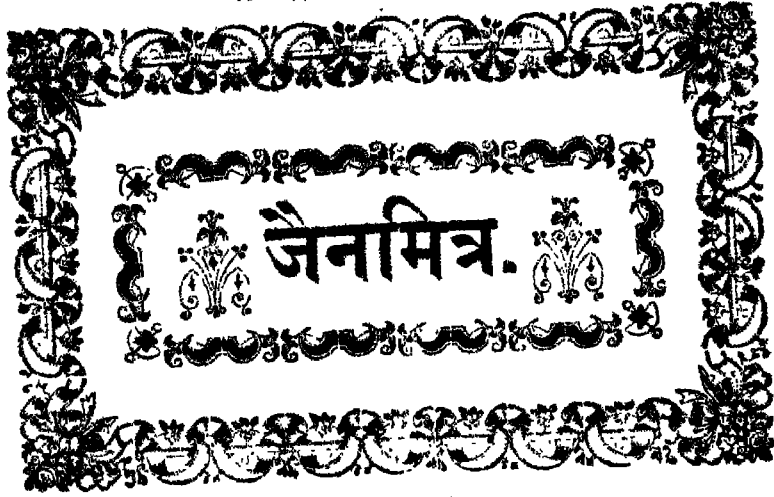
जगत जननहित करन कहँ, जैनमित्र वरपत्र ॥
प्रगट भयहु-प्रिय ! गहहु किन ?, परचारहु सरवत्र ! ॥ १ ॥

तृतीय वर्ष. } ज्येष्ट, सम्वत् १९५९ वि. { ९.

महा विद्यालय मथुरा.

प्यारे पाठको ! आजकल इस जैन समाजमें विद्योन्नति विषय का घोर आन्दोलन हो रहा है. इधर उधर समाचार पत्रोंमें इसी विषय की चरचा पाई जाती है. बड़े २ नीतिवान् बुद्धिवान् और तजुर्बेकार इस विषयपर खेद करते है कि, जैन समाजमें विद्या की अत्यन्त न्यूनदशा हो गई है. ऐसी अवस्था होनेपर भी हमारे बहुत से भाई अभीतक विद्वानों का स्वप्न देख रहे हैं. जैसे कोई पुरुष श्रावण मासमें अंधा हो जाय, तो उस को हरियाली ही हरियाली नजर आती है, इसी प्रकार हमारी जैन समाजमें भी भूतकालमें बहुत से दिग्गज विद्वान मौजूद थे और उसी कालमें उन विद्वद्रत्नों के परीक्षक कुछ सूझते हुए महाशय भी मौजूद थे. अर्थात् उन को इस बात की पहिचान थी कि, "विद्वान किस को कहते हैं और मूर्ख किस को" इन सूझते हुए महाशयों की संतान विषयभोगोंमें फंसकर जड़ वक्र हो गई. और विद्वान व मूर्ख की परीक्षा करना उन की ताकतसे बाहर हो गया. अब धीरे २ इस समाजमें से विद्वानोंका अभाव होता चला और आखिरकार इस हीन दशाको पहुंचा. परंतु यह परीक्षा चक्षुर्हीन संतान अपने बड़ोंके मुखसे यह बात सुनती आई थी, कि हमारी समाजमें बड़े २ दिग्गज विद्वान हैं, सो हमारे बहुत से भाई अभी तक वही स्वप्न देख रहे हैं. और अखबारोंमें चिल्लाकर कहते हैं कि, "हाय! यह जैन जाति दिन पर दिन अवनति दशा को पहुंचती जाती है; परन्तु कोई भी इस के सुधारका उपाय नहीं करता इस जातिके अवनति दशाको पहुंचनेका भार उन पंडितोंके

सिरपर है. जो नाना प्रकार की विद्याओंसे विभूषित हो कर बड़े २ वादियोंको क्षणमात्रमें परास्त करनेमें समर्थ होने पर भी उपदेशार्थ देशाटन करनेसे उपेक्षित हो रहे हैं" ऐसे लेख जिनमें कि पंडितोंके ऊपर नाना प्रकार के मिथ्या आक्षेप किये गये है. जैनगजटमें कई बार छप चुके हैं. बड़े अफसोस करने की बात है. कि जैनियोंमें पंडितोंका नाम निशान न रहने पर भी हमारे भाई पंडित तयार करनेके उपाय को भूल कर मृग तृष्णावत् पंडिताभासों को पंडित समझके पांडित्य पर उपालंभके वाण चलानेमें अपनी बुद्धिमानी खर्च कर रहे हैं. ऐसे भाइयोंसे हमारी प्रार्थना है. कि जैनियोंमें अभी बहुत पंडित हैं. इस ख्याल को अपने दिलोंमेंसे निकाल कर पंडितोंपर मिथ्याआक्षेप करनेके बदले पंडित बनाने का उपाय करें. प्यारे भाईयो! पहिले पंडित बना तो लो! पीछे आक्षेप करो. यद्यपि महासभाके कर्तव्य कार्य अनेक हैं तथापि उनसबमें प्रधान कार्य पंडित बनानेका है, इस कार्यको सिद्ध करनेकेलिये महासभा अनुमान दश वर्षसे घोर आन्दोलन मचारही है. परन्तु बड़े खेदका विषय है, कि इस कार्यकी साधक सामग्री अभी रुपयेमें चार आना भर भी एकत्रित नहीं हुई है, इस कार्यमें सबसे बड़ा प्रतिबंधक कारण यह है. कि हमारे भिन्न २ देशनिवासी भाई महाविद्यालयको अपने देशोंमें स्थापित करनेका मिथ्या पक्षपात कर रहे हैं. महासभाके कितने एक प्रधान सभासदोंका यह हठ है कि. महाविद्यालयका स्थान मथुराजी है. इस हठने महाविद्यालयको जो कुछ हानि पहुंचाई, है. वह आप लोगोंसे छिपी नही है.

जैनविद्यालयभंडारअजमेरवालोंकी कुछ गतिही निराली है. यह भंडार भारत वर्षके किसी मुख्य स्थानमें सर्व साधारण की सम्मतिसे एक विद्यालय स्थापित करनेकेवास्ते किया गया था. परन्तु शोकका विषय है कि उस भंडारमें इतना रुपयाही एकत्रित नहीं हुआ. जिससे एक विद्यालयका काम चल सके; आजतक उस भंडारमें अनुमान (१०००) हुआ है. जो कि लाला छोगालालजी गोधाकेपास जमा है. कुछ दिनोंतक इस रुपयेके व्याजसे थोड़े बहुत अनाथ विद्यार्थीयोंको सहायता दी जाती थी. उसकी रिपोर्ट भी "जैन प्रभाकर" में छपा करती थी. परन्तु जबसे जैनप्रभाकर अस्त हुआ, तबसे उस भंडारसंबंधी कुछभी खैरखबर नहीं मिलती है. मंत्रीसाहिबको इस विषयमें कई पत्र दिये गये हैं. परन्तु उसका नतीजा कुछ भी नहीं निकला क्योंकि उन्होंने इस विषयका उत्तर देनेकेवास्ते मौनव्रतका अवलंबन कर रक्खा है.

इस भंडारके प्रधानकार्यकर्ता तीन महाशय थे. अर्थात् १ भाई मोहनलालजी ओसवाल, २ बाबू बैजनाथजी वाकलीवाल, ३ छोगालालजी गोधा. इसमें कोई शक नही कि, इन तीनों महाशयोंने बिलकुल नेकनीयतीसे यह कार्य प्रारंभ किया था. परन्तु पीछेसे विद्यालयके स्थानसम्बन्धी पक्षपातने इन महाशयोंके हृदयमें डेरा जमा दिया. सर्व साधारणसे भी यह बात छिपी न रही, बस यही इस भंडारकी उन्नतिका प्रतिबंधक कारण हुआ. और फिर लोगोंने भी इस भंडारमें रुपया देनेसे हाथ खींच लिया. और यह भंडार ज्योंकात्यों रह गया. ऐसी अवस्था होनेपर भी

उक्त तीनों कार्यकर्ताओंके दिलोंमेंसे विद्याका जोश नहीं गया. और सच्चे दिलसे भंडारकी उन्नतिका उपाय करते रहें परन्तु उस स्थान सम्बन्धी पक्षपातके सबबसे अभिमत फलकी सिद्धि नहीं हुई. बड़े शोककी बात है कि. इन तीनोंमेंसे भाई मोहन लालजीका गत आश्विन मासमें परलोकवास हो गया. और लाला बैजनाथजी वृद्धावस्थाके कारण शरीरकी शिथिलतासे परिश्रम करनेमें असमर्थ होकर इस कार्यसे उपेक्षित हो गये हैं. अब रहे लाला छोगालालजी. सो प्रथम तो उनमें विशेष बुद्धि ही नहीं. दूसरे अपने लौकिक कार्योंसे सावकाश नही. तीसरे रहगये अकेले. बस. इन्होंने भी इस कार्यके करनेमें उपेक्षा ग्रहण कर रक्खी है. यदि इस भंडारकी कुछ दिनों तक और भी यही अवस्था रही. और कालचक्रने कुछका कुछकर दिखाया तो यह भंडार जहांका तहांही नष्ट भ्रष्ट हो जायगा. इस कारण अब अवशिष्ट दोनों महाशयोंसे और खास कर बाबू बैजनाथजीसे प्रार्थना है कि, कृपा करके अपने जीतेजी इस भंडारका सुरक्षित उपाय करके या तो इस जैनसमाजके नामसे कोई जायदाद खरीद कर लें. या किसी विश्वासपात्र बैंकमें जमा करा दें. और जो कुछ उसके सूदका रुपया आवे, वह महाविद्यालय अथवा परीक्षालयभंडारको दिया जाय. यदि इस उपायके करनेमें किसी प्रकारका प्रमाद किया, और उक्त रकमको किसी प्रकारकी हानि पहुंची तो याद रक्खो ! कि यह कलंकका टीका परलोक तक तुम्हारा पीछा न छोड़ेगा.

अब पंजाबकी हकीगत सुनिये कि वहांके भाइयोंने सहारणपुरमें एक बड़ी पाठशाला खोलनेके वास्ते ३००००) रुपयेका चिट्ठा किया है. जिसमें कुछ रकम तो वसूल हो गई है. और बाकी शीघ्रही वसूल होनेकी आशा है.

बम्बई प्रांतवाले भी इस विषयमे गाफिल नहीं हैं. बम्बई प्रांतिक सभाने बम्बईमें एक बड़ी पाठशाला स्थापित की है. जिसके खर्चकेवास्ते अनुमान १४०००) रुपया एकत्र हो गया है. महाराष्ट्रदेशवालोंने भी कोल्हापुरमें एक बड़ी पाठशाला खोलनेके वास्ते अनुमान १००००, रुपयेका चिट्ठा किया है. जिसमें कुछ रकम इकट्ठी हो गई है. और शेष शीघ्र इकट्ठी होनेकी आशा है. शोलापुर वालोंने भी शोलापुरमें एक चतुर्विध दानशाला खोल रक्खी है. जिसके खर्चके वास्ते अनुमान ९००००) रुपया एकत्र करके विश्वासपात्र सेठोंके पास ॥) आठ आनाके सूदपर रक्खा है. अब एकंदर विचारिये,

२००००) महाविद्यालयमथुरामें
६०००) जैन विद्यालय अजमेरमें
३९०००) पंजाबमें
१४०००) बम्बईमें
१००००) महाराष्ट्र देशमें
९००००) शोलापूरमें
२०००) खैरीजमें

१९००००)

इस प्रकार आज दिन अनुमान डेड़ल रुपया मौजूद है. जिसमेंसे शोलापूरकी चतुर्विध दानशालाके पचासहजार रुपयोंसे औषधिद अभयदान, और आहारदानकी ३९०००) येकी रकम बाद करनेसे ११९०००) रु

केवल विद्यादानकेवास्ते इस समय मौजूद हैं. जिसका व्याज ।।) सैकड़ेके हिसाबसे ५७१) रुपया माहवारी होता है. इतने रुपयोंका बन्दोबस्त होनेपर भी एकताके अभावसे एक भी पाठशाला-का काम यथावस्थित नहीं चल सक्ता. परन्तु जैसे कि भिन्न २ सूतके डोरोंसे एक बकरीको भी रोकनेमें असमर्थ हैं. और यदि वही परस्पर एकत्र होकर रस्सेके रूपमें हो जावें. तो बड़े हाथियोंके रोकनेको समर्थ होते हैं, उसी प्रकार यह रुपया भी जोकि भिन्न २ होकर एक छोटीसी पाठशालाका काम भी नहीं चला सक्ते है. यही रुपये यदि एकत्र करदिये जाय तो समस्त पाठशालाओंका काम बहुतही सुगमताके साथ चला सक्ता है. परन्तु नहीं मालूम कि हमारे भाइयोंकी बुद्धिपर क्या परदा पड़ रहा है. कि जो स्थान विषयक मिथ्यापक्षपातके निमित्तसे इस जैनजातिके भावीसौभाग्यको एक बड़ा भारी धब्बा लगा रहे हैं. महासभा यद्यपि चिल्ला २ कर कह रही है. कि यह सभा समस्त भारत वर्षकी एक महती सभा है. परन्तु यह उसका कहना केवल बचनमात्र है. क्योंकि इसने भी मिथ्यापक्षपातका आश्रय लेकर मथुरा स्थानमें जो कि इस कार्यके वास्ते अनेक युक्तियोंसे अनुचित सिद्ध हो चुका है. अपने वार्षिक अधिवेशन और महाविद्यालयका अटलडेरा जमा रक्खा है. गुजरात, करनाटक, महाराष्ट्र, खानदेश आदि बम्बई प्रान्त अनेक देशोंसे महासभाकी बेलकुल हमदर्दी नहीं है. ऊपर के बहुत से लोग यह भी नहीं जानते, कि महासभा किस चेड़िया का नाम है. कुछ दिन पहिले महासभा वाले यह बहाना किया करते थे. कि यदि कोई महासभाका निमंत्रण करे, तो वार्षिक अधिवेशन अन्यत्र हो सक्ता है. परन्तु सेठ माणिकचन्दजी पानाचंदजी बम्बईवालोंके निमंत्रणको स्वीकार न करनेसे वह उनका बहाना भी कपोल कल्पित सिद्धहोचुका है. इसी कारण से दक्षिण वासियोंके दिलमें अभी तक महासभाका कुछ भी गौरव नहीं जमा है. बहुत कहने कर क्या. हमारी तो सर्व भाइयोंसे यही प्रार्थना है. कि आपसके द्वेष ईर्षा और पक्षपात को छोड़कर जिस तरह कार्य की सिद्धि सुगमतासे होय, उसी प्रकार प्रवृत्ति करना चाहिये. इस छोटीसी रकमसे यदि आप चाहें कि दश पांच महाविद्यालय स्थापित कर लें सो नहीं हो सक्ता. इस लिये चाहिये कि भारत वर्षके किसी मध्य नगरमें जहां कि पुस्तक और विद्यार्थियों की सुगमतासे प्राप्ति हो सक्ती हो, एक महाविद्यालय स्थापित किया जाय. और बम्बई, कोल्हापुर, शोलापुर, और सहारणपुर अथवा जिस स्थानमें बहुतसे योग्यता सिद्ध हो, उन स्थानोंमें चार या पांच शाखा पाठशाला स्थापित की जाय. हम शाखा पाठशालाओंमें प्रवेशिका तक की पढ़ाई पढ़ाई जाय. और साथमें एक घंटे अंग्रेजी पढ़ाई जाय. प्रत्येक शाखा पाठशालाके वास्ते पचास रुपया माहवारी विद्यालय भंडारमें दिया जाय. इस प्रकार पांच शाखापाठशालाओं का एकत्र खर्च २५०) माहवारी हुआ. और २५०) रु. माहवारीका खर्च महाविद्यालयमें रक्खा जाय. और २१) माहवारीका खर्च विद्यालयके दफ्तरका रक्खा जाय. और ५०) माहवारी १ इन्स्पेक्टरकी तनख्वाह और दौराखर्च

का रक्खा जाय. जिसमे कि सब पाठशालाओंकी संभाल टीक २ होती रहै. इस प्रकार ५७५) रुपया माहवारीमें सब प्रबंध टीक २ हो सक्ता है. शाखा पाटशालाओंके विद्यार्थी प्रवेशिका पास करके महाविद्यालयमें आकर जिनधर्मसम्बन्धी उच्चश्रेणीकी विद्याभ्यास करके जैनधर्मके मर्मज्ञ विद्वान हो सक्ते हैं. महाविद्यालयभंडार बढ़ानेका और भी प्रयत्न किया जाय. तथा डेप्युटेशनपार्टीद्वारा भिन्न २ देशोंसे चंदा एकत्र किया जाय. और उचित मर्यादा होनेपर महाविद्यालयकी पंडितपरीक्षामें तीन कक्षा और खोली जावें. अर्थात् एकमें जैनवैद्यक दूसरीमें जैन ज्योतिष और तीसरीमें पूजा और संस्कारविधि क्यों. कि यह तीनोंही विद्या लुप्तप्राय हो गई हैं. इस लिये इन का उद्धार करना परम आवश्यक है. यह सब कुछ हुआ. और बहुत ही कुछ लिखा जा चुका. परन्तु सुनता कौन है. और अगर सुना भी तो इस कानसे सुना और उस कानसे निकल दिया. और इसीकारण लिखनेको जी नहीं चाहता परन्तु क्या करें. लिखे विना भी रहा नहीं जाता. अब सब भाइयोंसे प्रार्थना है. कि करने धरने को तो अलग रखिये. सबसे पहिले अपनी २ सम्मति तो दीजिये. देखें हमारी और आपकी राय मिलती है, या नहीं. खैर यहतो धीरे २ हुआ ही करेगा. इस समय हम आपको एक दूसराही सुगम उपाय बताते हैं. यदि उसके अनुसार सब भाइयोंनें सहायता की तो आशा है कि, शीघ्र ही विद्याविषयमें कुछ उन्नति दृष्टिगोचर होगी.

दूसरा उपाय.

"जैनगजट और जैनमित्रमें घोर आन्दोलन होकर यह बात सिद्ध हो चुकी है कि, महाविद्यालयके वास्ते वर्तमान स्थान उचित नहीं है. उसको यहांसे उठाकर किसी ऐसे स्थानमें लेजाना चाहिये कि, जहांपर स्थानीय विद्यार्थी सुगमतापूर्वक अधिकार मिलसकें, तथा अनेक विषयोंके शास्त्रोंकी भी सुलभता होय. महा विद्यालयकी शिक्षाप्रणाली पर भी बहुत कुछ वादविवाद होकर यही सार निकला है कि, चूंकि महाविद्यालय भंडारमें अभी अधिकतर सरमाया नहीं है. इस कारण उच्चश्रेणीकी अंग्रेजी विद्याकी पढ़ाई अभी महाविद्यालयमें जारी नहीं की जा सक्ती. लेकिन संस्कृतविद्याके साथ २ प्रतिदिन एक २ घंटे अंग्रेजीविद्याका साहित्य अवश्य पढ़ाया जाय. क्योंकि अंग्रेजी आजकल राजविद्या है. इस लिये विना अंग्रेजीके आजीविकाके साधनमें अनेक त्रुटियां रह जाती हैं. इस लिये धर्मविद्याके साथ २ आजीविकाके साधनमें सहायभूत अंग्रेजीविद्या भी अवश्य पढ़ाना चाहिये. स्थानके विषयमें भी महासभाके मुख्य २ कार्याध्यक्षों तथा दूसरे विद्वानों और नीतिज्ञोंकी सम्मतिसे प्राइवेट तौर पर यह बात करार पा चुकी है. कि महा विद्यालयके वास्ते उत्तम और उचितस्थान आगरा है. सो यदि महाविद्यालय मथुरासे उठाकर आगरेमें लाया जाय और उसके साथ २ में अंग्रेजी साहित्य पढ़ाया जाय तो महाविद्यालयके खर्चका हिसाब नीचे लिखे अनुसार होगा.

५०) मुख्य अध्यापककी तनख्वाह.

३०) द्वतीयाध्यापककी तनख्वाह.

२०) तृतीयाध्यापक तनख्वाह.
२०) अंग्रेजी और गणित पढानेवाले अध्यापककी.
१५) का एक मुनीम और सुप्रिटंडेंट बोर्डिंग
५) सिपाही.
१०) माहवारी खेरीज खर्च.

१५०)

इस प्रकार १५०) माहवारीमें आगरे आनेपर महाविद्यालयका काम अच्छीतरह चल सक्ता है.

इस प्रकारके प्रबंधमें तीन बातोंकी त्रुटि है. अर्थात् १ **महाविद्यालयके वास्ते मकान. २ बालबोध परीक्षाकी पढाई पढानेवास्ते एक अध्यापक. ३ अनाथ विद्यार्थियोंके वास्ते भोजनखर्च** इन तीनों कार्योंमेंसे बालबोध परीक्षाका प्रबंध तो भाई गोपीनाथ बजाज आगरेवालेंने कर रक्खाहै. और मकानकेलिये हम आगरावाले पंचोंसे प्रार्थना करते हैं कि मोतीकटरेके मन्दिरके साम्हने जो धरमशाला बन रही है, वह महाविद्यालयके वास्ते देना स्वीकार करें तो बहुतही उत्तम होगा, आशा है कि आगरेवाले इस विषयमें हमको हताश नहीं करेंगे. तीसराप्रश्न अनाथ विद्यार्थियोंके भोजन खर्चके बारेमें है. सो महाविद्यालय भंडारसे इन अनाथ विद्यार्थियोंके वास्ते प्रबंध नहीं हो सक्ता. क्योंकि महाविद्यालयके मुस्तकिल समरियेमें २६०००) के लगभग जमा है. और १०००) अनाथालय फंडका है. जिसका व्याज भी महाविद्यालयको मिलनेका नियम हो गया है. और ३०००) नकुडमें लालादयाचन्दजी निहालचन्दजीके यहां नकुडके भाइयोंका जमा है. जिसका भी सूद बराबर मिलता है. इस प्रकार सब रकम मिलाकर ३००००) की है. जिसका सूद १५०) रुपये माहवारी होता है. बशर्ते कि ॥) सैकडेका व्याज बराबर मिलता रहै. इस प्रकार महाविद्यालय भंडारकी व्याजकी आमदनीसे महाविद्यालयके तनख्वाहदारोंका काम मुश्किलसे चल सक्ता है. फिर अनाथविद्यार्थियोंके भोजन खर्चके वास्ते किस प्रकार दिया जा सक्ता है. और दिया गया तो महाविद्यालयकी पढाई संतोषदायक न होगी. महाविद्यालयकी वर्तमान अवस्था जो शोचनीय दशाको पहुंची है, उसका मुख्य कारण यही है कि. प्रबंधकर्त्ताओंने लोभाविष्ट होकर बडी तनख्वाह पानेवाले उत्तम अध्यापकोंका खर्च घटाकर तथा अनाथविद्यार्थियोंकी संख्या बढाकर पढाईके प्रबंधमें गडबड मचा दी. और छिद्रान्वेषियोंको महाविद्यालयका नाम भुक्कडखाना रखनेका मौका दिया. हम नहीं चाहते कि महाविद्यालयकी पढाईमें किसी प्रकारकी गडबड पडे. चूंकि महाविद्यालयभंडारमें इतनी गुंजाइश नहीं है. इसलिये इस भंडारमेंसे केवल पढाईका इंतजाम किया जाय. और महाविद्यालयका स्थान आगरा हो जानेपर बहुत स्थानीय विद्यार्थी ऐसे हो जावेंगे कि, जिनका रसोईखर्च महाविद्यालयसे नही दिया जायगा. सिवाय इसके चूंकि इसमें धर्म विद्याके साथ२ अंग्रेजी पढाई भी जारी की जायगी. इसलिये देशदेशांतर के प्रतिष्ठित और धनाढ्यपुरुष भी अपनी संतान को महाविद्यालय में विद्याभ्यासकरने केलिये भेजनेसे नहीं हिचकेंगे. ऐसी

अवस्था होने पर भी जब तक महाविद्यालय में अभ्यास करनेवाले अनाथविद्यार्थियोंको सहायता देने का प्रबंध नहीं किया जायगा. तब तक महाविद्यालय अपने नामको सार्थक करनेमें असमर्थ ही रहेगा. क्योंकि महाविद्यालय असली महाविद्यालय तबही हो सक्ता है, जब कि इस के विद्यार्थी उच्च श्रेणी की संस्कृत विद्या अभ्यास करके जैनियोंमें से विद्वानोंके अभाववका अभाव करें परन्तु धनाढ्य तथा मध्यम श्रेणी की संतान मे हमारा यह अभिमतफल सिद्ध नहीं हो सक्ता. क्यों कि यह लोग अपनी संतान को अपने रोजगार के काम लायक थोड़ी सी विद्या पढ़ाकर शीघ्रही विद्याभ्यास छुड़ा देते हैं. और जो अनाथविद्यार्थी होंगे, वे चित्त लगाकर उच्च श्रेणीकी विद्याका अभ्यास करेंगे तो आशा है कि स्वल्पकालमें अच्छे विद्वान हो जांयगे. यहांपर यह प्रश्न उठता है कि अनाथ विद्यार्थियोंकेलिये निर्दोष आजीविकाका उपाय क्या है. इसके उत्तरमें हम कह सक्ते हैं. कि हमारे भाइयोंको चाहिये. कि महाविद्यालयके समये में कोशिश करके २००००) और एकत्र करें. तो उसका व्याज जो कि १००) माहवारी होगा उससे महाविद्यालयमें पंडितपरीक्षाके प्रथम खंडसे जैनज्योतिष जैनवैद्यक और पूजासंस्कारविधि तीनों विषय पढ़ानेकेवास्ते तीन कक्षा और जारी कर दी जायगी. इसका सुगम उपाय यह है, कि अजमेरवाले भंडारके ६०००) और बम्बई प्रांतिकसभाके १४०००) कुलमिलकर २००००) रु० पक्षपात छोड़कर कार्यकी ओर दृष्टि देकर यदि महाविद्यालयमें मिला दिया जाय तो शीघ्रही कार्यसिद्धि होनेकी संभावना है.

अब पाठक समझ गये होंगे कि यह तीनों विद्या अर्थात् जैनवैद्यक, जैनज्योतिष और पूजा संस्कारविधि इन अनाथ विद्यार्थियोंकी आजीविकाका निर्दोष उपाय होंगी. इन विद्याओंसे आजीविका करना सदोष है. या निर्दोष इस विषयका निर्णय जैनमित्र तृतीय वर्ष अंक ५ और ६ के पृष्ट ६ वें ७ वेंमें अच्छी तरहसे हो चुका है. जिस भाईने नहीं देखा होय, वह उक्त अंकको निकाल कर देखलें. यहांपर पाठक यह भी याद रक्खें कि अनाथ विद्यार्थियोंमें बहुभाग दक्षिण देशके जैन ब्राह्मणोंका होगा. अब यहांपर विचार इस बातका है कि इन अनाथ विद्यार्थियोंकी संख्या कमसेकम कितनी होना चाहिये. तथा उनके भोजनोंको कितने रुपया माहवारीकी आवश्यक्ता है और उसका उपाय क्या है. हमारी रायमें ऐसे विद्यार्थियोंकी संख्या कमसेकम २० होनी चाहिये. जिनके भोजन खर्चकेवास्ते १००) माहवारी काफी होगा. और उसका सुगम उपाय यह है. कि २० महाशय एक २ विद्यार्थीकेवास्ते पांच २ रुपया माहवारी देना स्वीकार करें तो यह कार्य भी शीघ्रही हो जाय. और एक २ महाशयकी तरफसे एक २ विद्यार्थी पढ़ाया जाय, तो उन महाशयोंका इस लोकमें बहुत कुछ यश होगा. और परभवकेवास्ते सातिशय पुन्यका बंध होगा. अब अंतमें समस्त भाइयोंसे हमारी प्रार्थना है, कि भारत वर्षमें इस जैनजातिके दान शालिनी होनेका बहुतही कुछ आन्दोलन हो रहा है. तो क्यों इस जैनजातिको विद्यादानरूपी हस्तावलम्बन देकर इसका उद्धार करनेवाला कोई नहीं रहा. हाय! बड़े खेदका विषय है कि

एक दिन तो वह था कि, जब इस जातिमें बड़े २ धुरंधर विद्वान धनाढ्य और दानशाली थे. कि जिनके महानुभावसे बड़े २ दिग्गजवादी और दानी लज्जाको प्राप्त होते थे. और आज यह दिन आगया कि, इसकी अनाथ संतानको विद्याभ्यास करते समय भोजन और वस्त्रकी सहायता देनेवाला भी कोई नही रहा. एक दिन वह था कि जब केवल ज्ञानी देशदेशांतरोंमें विहार करके धर्मोपदेशामृतकी वर्षासे जगह २ पर भव्यजीवोंकी चित्तरूपी भूमिको सींचकर रतनत्रयरूपी बगीचा प्रफुल्लित करते थे. और आज वह समय आगया कि अज्ञान ज्वरसे सतृप्त चित्तमें कोई उपदेश रूपी जलका छींटा डालनेवालाभी नहीं रहा. और ऐसी अवस्था होनेसे यह दीन हीन जाति अज्ञान संतापसे दुःखित होकर उपदेशामृतकी पिपासाकुलित भये संते पंडिताभासोंमें भ्रमायल होकर मृगतृष्णावत् वृथाही खेदखिन्न हो रही है. प्यारे पाठको! यदि अपनी जाति की, ऐसी शोचनीय अवस्था देखकर आपके दिलमें कुछभी चोट लगी है, यदि आप जैनियोंमें धुरंधरपंडितोंके दर्शनाभिलाषी हैं, और यदि इसदशाको सुधारनेकी अंतःकरणमें सच्ची उत्कंठा है. तो अब बहुत सो चुके. अब घोरनिद्रासे जागो. अब सोनेका समय नहीं है. यदि इस अवस्थामें भी प्रमादको आश्रय दोगे तो किनारेपर आई हुई नौका पुनः मंझधारमें जा-जाकर शीघ्रही डूब जायगी. इससे अंतिम प्रार्थना है. कि इस विषयमें आनाकानी न करके विद्यादानमें अपना उत्साह प्रगट करें और कमसे कम एक २ विद्यार्थीके वास्ते पांच २ रुपया माहवारीका स्वीकारपत्र नीचेलिखे पतेपर भेजनेकी कृपा करेंगे.

जैनजातिका दास,

गोपालदास बरैया मंत्री, महाविद्यालय,

मोरेना (ग्वालियर)

रिपोर्ट दौरा पं. रामलालजी उपदेशक.

तारीख १९ फरवरीको मुम्बई आया. यहांपर नियमित सभा (जो प्रति चतुर्दशी को होती है) में अपने गुजरात प्रान्तके दौरे की रिपोर्ट व देशकी दशा सुनाई.

ता. २३ को अहमदाबाद आया और २४ को सेठ महासुखलाल दामोदरदासजीके मकानपर षट्कर्मका वर्णन किया. सिवाय इन महाशय के घरके आदमियोंके व दो तीन बाहर के आदमियोंके और कोई भाई नहीं आये थे. यहां के भाइयोंको धर्मकी रुचि कम है. उक्त महाशयने २) अनाथालय फंडमें दिया और जैनमित्र मंगाना स्वीकार कर १।) उसका मूल्य दिया. इस शहरमें ९ मंदिर हैं. प्रतिमा बहुत प्राचीन सं. ६१७ तककी व मनोज्ञ है.

ता. २५ को प्रांतीज आकार धर्मशालामें ठहरा. २६ को सभा कीन्हीं अनुमान ४० महाशय उपस्थित हुए. व्याख्यानमें 'पुन्य पाप' का स्वरूप दिखाया. यहांपर हूमड भाइयोंके १० घर व १ मन्दिर है. मन्दिरजीमें बडी २ अवगाहनाकी प्राचीन प्रतिमा है.

ता. २७ को ओरण आया. दो सभा कीन्हीं दुखसुखका स्वरूप व अनित्यभावनाका स्वरूप दिखाया. सभामें १९, २० महाशय आये थे. यहां ९० घर हूमड़ भाइयोंके व एक मंदिरजी है. ३) भाई धर्मचंद जयचन्दजीने व १०) पंचानने सरस्वती भंडारमें दिये.

ता. ७ मार्च को लाकरोडा आया. शाह मगनलाल अमीचन्दजीके यहां सभा हुई. स्वाध्याय विषयपर व्याख्यान दिया. दूसरे दिनभी सभा कीन्हीं. ता. ८ मार्च को ईडर आया, हूमड़ोंकी धर्मशालामें ठहरा यहापर ४ मन्दिर शहरमें और एक पहाड़के ऊपर है. १२९ घर हूमड़ श्रावकोंके हैं. ता. ९ को श्रीआदिनाथजीके मंदिरमें सभा कीन्हीं. अनुमान ६० भाई एकत्र हुए. मनुष्यके कर्तव्य विषयपर व्याख्यान दिया. भाई वर्द्धमानस्वरूपचन्दजीने बम्बईसभाका आभार प्रगट करके मेरे व्याख्यान की समालोचना की. फिर सभापति सा० वीरचन्दजी वकीलने सभाको धन्यवाद दे सभा विसर्जन की. इस स्थान की विशेष व्यवस्था पं. पंनालालजी वाकलीवालकी रिपोर्टसे (जो यहांपर सरस्वती भंडार की सम्हाल के लिये आये थे.) भाइयोंको ज्ञात होगी. यहांपर मैं बीमार होगया था. इस कारण कहीं जा नहीं सका.

ता. १७ को अंकलेश्वर आकर धर्मशालामें ठहरा ता. १८ को सभाकर दशलक्षणधर्म पर व्याख्यान दिया. यहांपर सभा प्रति शुक्ल चतुर्दशी को होती है. एक छोटीसी पाटशाला भी है. द्रव्य की परिपूर्णता होनेसे इस का कार्य उत्तम रीतिसे चल सक्ता है. मंदिरजी ४ व हूमड़ भाइयोंके ४० घर हैं. दो मंदिरोंके भोंहरोंमें बड़ी अवगाहनाकी चौथे कालकी प्रतिमा हैं.

ता० १४ को सूरत आकर चंदावाड़ीमें ठहरा. २१ व २३ तारीखको दो सभा हुई. अनुमान सो डेडसो भाई उपस्थित हुए. प्रभावनांग व स्वाध्याय विषयोंपर व्याख्यान दिये. कितने एक भाइयोंने स्वाध्याय करनेकी प्रतिज्ञा लीन्हीं. इस स्थानमें ६ जैन मंदिर व १५० घर जैनियोंके हैं. श्रीहरगोविन्दभाई देवचन्द व रतनचन्दजी अध्यापककी धर्मरुचि विशेष है. जैनियोंमें आपसी विरोध बहुत बढ़ रहा है. आशा है. कि सर्व भाई इसको दूर करनेका प्रयत्न करेंगे—यहां की जैन पाठशालाकी परीक्षा भी ली गई. फल साधारण रहा. इस पाठशालामें यदि दो तीनके बदले एकही विद्वानपंडित रक्खा जावे. तो अति लाभ हो शाहहरगोविंद भाईने विद्यार्थियोंको मिटाई बांटी.

यहांसे चलकर व्यारा, नगीरा, धूलिया, पारोला, धरणगांव, जलगांव आदि ग्रामोंमें गया. प्रतिजगहमामूली सभा तथा व्याख्यान हुए निम्न लिखित महाशयोंने द्रव्यसे सहायतादी.

६) सेठगुलाबचन्द हीराचन्दजी सभासद धूलिया
१) रामचन्द सवाईराम उपदेशक भंडार ,,
२) मोतीराम सुआलालजी ,, ,,
२) चंपालाल बागमलजी ,, ,,
२) मंनालाल जेठमलजी ,, ,,
२) ऋषभ दास चंपालालजी ,, ,,
६) शा. उदयलाल कस्तूरचन्दजी सभासदी.
३) शा. अखयचंद त्रिलोकचंदजी ,,

१) शा. गोपालशाह कृष्णाशाहजी „
१) सेठ चुंनीलालजी. धरणगांव „

धूलियाके सरस्वतीभंडारमें २० ग्रंथ संस्कृत भाषाके व ४ कर्नाटकीलिपिमें सं. ५०० के लिखे हुए हैं.

ता० ९ को कन्नड़ जिला औरंगाबाद आया. यहां सेठ गिरधरलालजी खंडेलवालने मंदिरप्रतिष्ठा वैसाखवदी १२ से सुदी २ की मुहूर्तमें थी. इस उत्सवमें अनुमान ६०० स्त्री पुरुष एकत्र हुए. रात्रिको मंदिरजीमें सभाहुई. सभामें प्रायः सबही पुरुष उपस्थित थे. प्रथम सेठ दयाचन्द ताराचंद पूनाकरनें सभाका प्रारंभ किया. पश्चात् जैनधर्मोन्नति विषयमें देव गुरुशास्त्रका स्वरूप कहा, तथा पाठशाळाके विषय प्रेरणाकी सो चंदभाइयोंनें दस्तखत करकुछचंदा इकट्ठा किया. और पंडितके मिलनेपर स्थापन करनेका प्रण किया. सभामें श्रीमान तहसीलदार साहिबभी अपनी पत्नी सहित पधारे थे इन्होंने भी इस विषयपर बहुत जोर दिया. ये महाशय पारसी हैं इन ऐसी धर्मरुचि और न्यायशीलता. प्रायःप्रत्येक राज्यकर्म चारियोंमें होना असंभव है.— ता. १० कोभी सभाकी गई, ग्रहस्थ धर्मपर व्याख्यान दिया. इसदिन उत्सवमें मुसलमानभाई कुछ उपद्रव करना चाहतेथे. परन्तु उक्त तहसीलदार साहिबके प्रबंधसे कुछ न होनें पाया. इस ग्राममें एक मंदिरजी व २५ घर जैनी भाइयोंके हैं. यहांसे चलकर मलकापूर आया. पर प्लेगकेकारण सभा न हुई.

ता० १३ को आकोला आया सभाकरके विवेक विषयपर व्याख्यान दिया. चंदभाईयोंने स्वाध्यायकी प्रतिज्ञालीन्हीं. यहां जैनियोंके १० घर व २ मन्दिरजी हैं.

ता० १४ को मूर्तिजापूर आकर १५ महाशयोंकी सभामें विनियधर्मपर व्याख्यान दिया. सेठ केशवजी ईशाजीने ३) देकर सभाकी सभासदी स्वीकारकी. व उपदेशक भंडारमें १) डालूभाई ईशरीलाल १) काशीनाथ लक्ष्मणजी १) पासोव राम पुटलसाह १) सीताराम तानाबाजी आदि महशयोंने दिया. यहांपर १ मंदिर व १० घर श्रावक भाइयोंके हैं—

ता० १५ को वर्धा आया यहांपर सेठ गुलाब साहजी नागपूर वालोंकी ओरसे प्रतिष्टाथी ता. १७ की रात्रिको सभाकी अनुमान २५० भाई एकत्र हुये प्रथम पं. धर्मसहायजीने मंगलाचरण किया फिर मैनें "द्वादशानुप्रेक्षा" पर व्याख्यान दिया. व पं रामभाऊ मास्तरने उसको पुष्ट किया ग्यारह बजे आनंदपूर्वक सभा विसर्जन हुई. वर्धामें २० घर जैनी भाइयोंके हैं. व १ जैन मंदिर है.

क्रमशः—

उत्तरावली.

(श्रीयुत भाई दरयावसिंहजीके प्रश्नोंका उत्तर)

प्रथमप्रश्नका उत्तर-श्री जिन मंदिरादिकों की प्रतिष्टा या जैनविवाहपद्धत्यनुसार विवाहादि करानेका अधिकार ग्रहस्थाचार्योंको ही योग्य है. निर्ग्रंथाचार्य नहीं करासक्ते. क्योंकि जैनधर्ममें निर्ग्रंथगुरुको किसीप्रकारका आरंभ ग्रहस्थों तथा अपने वास्ते करना सर्वथा वर्जनीय है. एतन्निमित्त ग्रहस्थाचार्योंके सिवाय अन्य किसीको भी अधिकार नहीं है.

द्वितीय प्रश्नका उत्तर-पंचामृतअभिषेक अहिंसामयी जैनधर्मके अनुकूल नहीं है. क्योंकि मूलसंघ दिगंबराम्नायीकृत ग्रन्थोंमें तो पंचामृतका नाममात्रही नहीं है. किंतु अभिषेकादिकोंके लिये तो नियम पूर्वक इसकी गर्जना बृहत्सामायिक ग्रन्थोंमें है.

स्नपनार्चा स्तुति जपा साम्यार्थं प्रतिमार्पिते
पुंजाद्यथाम्नाय माद्यादृते संकल्पितेर्ईति ॥

अर्थ—साम्यभावकी प्राप्तिके अर्थ आम्नाय पूर्वक प्रतिमामें अर्पित किया स्नपन, अर्चन, स्तवन, जपन इन चारोंकोही युक्त करै. और संकल्पित अरहंतके विषें स्नपन विना पूजन, स्तवन, जपन. ये तीनोंही कर्तव्य हैं. स्पष्टार्थ—साकार स्थापनारूप प्रतिमाका तो अभिषेचन पूजन स्तवन, जपन, चारोंही करना. और पुष्प तंदुलादिकोंमें की हुई; निराकार स्थापना तिसका स्नपन तो नहीं करना. और पूजन स्तवन जपन करना. अस्तु, तुमने कहा कि दिगम्बराम्नायी कृत ग्रन्थोंमें पंचामृतका नाम मात्रही नहीं सो तुम क्या सर्वज्ञ हो? ऐसा प्रश्न होनेपर उत्तर—हम सर्वज्ञ तो नहीं. परंतु सर्वज्ञने अनुमान प्रमाणको भी प्रमाणभूत कहा है. तो अनुमान करें हैं कि. दिगम्बराचार्य्योंके वचनमें प्रत्यक्ष अनुमानके विषय परस्पर विरोधता यानें अन्योन्याश्रयता नहीं. क्योंकि अकृत्रिम कृत्रिम बिम्बोंका अभिषेक सिद्धांतसार विषें श्लोकत्रय करके वर्णित है

अभिषेक महन्नित्यं सुरनाथा सुरैः समं ।
द्वि द्वि प्रहर पर्यंतं मेकैक दिशिशांतये ॥
कनकांचन कुंभास्य निर्गतै निर्मल्यांबुभिः ।
महोत्सवशतै र्वाद्यै जयकोलाहल स्वनैः; ॥
नित्यं प्रकुर्वते भूत्या विश्व विघ्न हरंशुभं ।
जिनेन्द्र दिव्य विम्बानां गीतनृत्यस्तवैःसह॥

इत्यादि प्रमाणों करकें अकृत्रिम विम्बोंका नियम है. और कृत्रिम बिंबोंका अभिषचन करना शुद्ध जलसे. आदिपुराणमें श्लोक द्वय करके निरूपित है.

दिक चतुष्टयमाश्रित्य रेजे स्तंभचतुष्टयं ।
तत्प्रद्या जादि वोद्भूतं जिनानंतचतुष्टयं ॥
हिरण्यमयी जिनेन्द्रार्चा तेषांबुध्न प्रतिष्टिता॥
देवेन्द्रा पूजयंतिस्म क्षीरोदांभोभिषेचनैः ॥

इत्यादि सिद्धान्त करके कृत्रिम बिंबोंका अभिषेचन उक्त है. परन्तु पंचामृत का कहा लेशमात्र संदर्शनीय नहीं है. इसलिये पंचामृत की जैनमतावलम्बी मुमुक्ष जनों को कदापि स्वीकारता स्वप्नमें भी नहीं करना. यह पंचामृत का प्रकर्ण काष्टासंघसे प्रारंभ हुआ है, क्योंकि वीतराग प्रतिमाकी छवि काष्टके जलके संपर्क होनेसे स्फोटन होती है. इस लिये सचिक्कण द्रव्य यानें पंचामृत करके काष्ट प्रतिमाका स्फोटन न हो, इस अभिप्रायसे केवल काष्टसंघमेंही युक्त है, किंतु पाषाण धात्वादिकोंकी प्रतिमाओंके बदल नहीं है. तस्मात् उपर्युक्त प्रतिमांका पंचामृत अभिषेचन करना. केवल जिनाज्ञाको उल्लंघन करके निगोद स्थितिको प्राप्त होना है. एतत् निमित्त पंचामृतका अभिषेचन करना ठीक नहीं है, इसीसे दिगम्बरशुद्धाम्नायमें तो इसका प्रचार बिलकुल नहीं है. यदि अन्य स्थलोंपर होगा. तो महाशय इस ग्रंथाधारको पढ़के श्रद्धान पूर्वक

शिरसामान्य करके परित्याग करेंगे. हठरूप बद्धता नहीं करेंगे. ऐसी आशा है इत्यलं

पंडित शिवशंकर शर्म्मा.
बड़नगर (ग्वालियर.)

निर्माल्य चरचा.

जैनमित्र अंक ५,६ में पंडित शिवचंद्रजी शर्म्माने लिखा है. कि "देव द्रव्य किंवा निर्माल्यका अधिकारी जो हो. उसके न देनेसे विघ्नके कर्ताको कौनसे कर्मका आश्रव होगा? और मिथ्याती अज्ञानी निर्माल्यका ग्राहक समझा जाता है" सो इसमें दो बातें हुई. प्रथम तो निर्माल्य द्रव्यके ग्रहण कर्ताकोअंतराय कर्मका आश्रव बताते हैं. दूसरे इसके विपरीत निर्माल्य द्रव्य ग्रहण करनेका अधिकारी मिथ्याती अज्ञानीको बतलाया. तो जो पुरुष जिस बातका अधिकारी होता है. वह पुरुष उस कार्यके दोषका कदापि अधिकारी नहीं हो सक्ता. इससे तो स्पष्ट ऐसा होता है. कि मिथ्याती अज्ञानीके निर्माल्यके ग्रहणसे अंतराय कर्मका आश्रव नहीं होता. सम्यग्दृष्टी जैनीकेही अंतराय कर्मका आश्रव होता होगा. सो यह बात मेरी बुद्धिमें नही आती. अंतराय कर्मके आश्रवके भागी तो दोनोंही होवेंगे अगर मिथ्याती निर्माल्य ग्रहणका अधिकारी है. तो यह बात किस शास्त्रमें कौन आचार्य्यने लिखी है? मैं जानता हूं निर्माल्य ग्रहण करनेका अधिकारी शास्त्रमें किसीको नहींलिखा होगा. और पंडितजीने लिखा है. कि जब साक्षात केवली तीर्थंकरोंके समोसरणमें इन्द्रचक्रवर्ति पूजा करते थे. उस समय पूजाकी सामग्री निर्माल्य बाहर रख दी जाती थी. और निर्माल्यके ग्राहक ले जाते थे. सो यह भी किस आर्ष ग्रन्थका प्रमाण है? जब कि पूजा कारक निर्माल्य द्रव्यसे निर्ममत्व है. तो फिर द्रव्यको अर्पण करनेके बाद दूसरेको क्यों उठाकर अर्पण करेगा? प्रथम तो श्रीजीको अर्पण किया फिर उनके साम्हनेसे उठाकर दूसरेको अर्पण देनेमें कितना भारी दोष होगा? इससे जो जिनाज्ञा हो. सो ही क्रिया करनेको कही जावे. मनोक्तक्रिया न बतलाई जाना चाहिये. और पंडितजीने जो निर्माल्यकूटपर निर्माल्यद्रव्यक्षेपन करनेकी आज्ञा बतलाई. सो यह किस ग्रन्थानुकूल है? और पूर्वमें किस २ समय किस २ ने पूजन करके निर्माल्य द्रव्य किस २ को दिया इसका भी कोई प्रमाण देना चाहिये!

अंतमें सर्व पंडितजनोंसे मेरी यही प्रार्थना है. कि शास्त्रोक्त महान्‌आचार्यों द्वारा बताये मार्गको ही प्रगट करें. और जब तक अन्य महान् आचार्योंके मतसे वह मार्ग विरुद्ध न भासे. तब तक उसमें कोई शंका न करें. तथा जो रूढी प्रवृत्ति विरुद्ध होवे. उसको शास्त्रानुसार तर्क वितर्क करके शुद्ध करें. न कि अपने वचनपक्ष को ही पुष्ट करें. समीचीन सत्यार्थ निर्दोष मार्गको प्रगट करनेमें परिश्रम निरन्तर करें.—

पंडित जनोंका दास,
पन्नालाल गोधा शेरगढ़

सम्मेद शिखरजी पर झगड़ा

प्रिय धर्मात्मा जैनी भाईयो! यह बात आप अच्छीतरह जानते हैं. कि शिखरजी जैनियोंका एक बड़ाभारी सिद्ध क्षेत्र है. जहांसे अनन्त चौबीसी मोक्ष कोगई हैं. तथा जिस की यात्रा किये

विना हम अपने जीवितव्य को भी सफल नहीं समझते.

विगत सम्वत् १९५३ में मुम्बई से सेठ माणिकचन्द पानाचन्दजी जौहरी के छोटे भाई भाई नवलचन्दजी शनिकाल में शिखरजी की वंदना करने के लिये गयेथे. उस समय अन्य २ देशों के भी धर्मात्मा जैनी भाई आये हुए थे. वहांपर समस्त भाइयोंका विचार हुआ. कि सीतानालेसे कुंथनाथस्वामीकी टोंकतक चढनेका मार्ग बड़ा कठिन है इसलिये यहांपर सीढियां बन जायें तो यात्रियों को वंदना करने में बहुत कुछ सुभीता हो जाय. सो यहबात सबको प्रिय लगी. और उसी समय ६०१४=॥ कांचिट्ठाहोगया. और उसका प्रबंध बाबूहरलालजी जोकि शिखरजी में दिगम्बर कोठी के मुनीमथे. उनके सुपुर्द किया गया. उन्होंने योग्य परिश्रमसे उगाही करके आगामी सीढ़ियां बनवाना आरंभकर दिया. परंतु शोक के साथ प्रगट करना पड़ताहै. कि उगाही करके शीघ्रही वे इस असारसंसारसे कूच कर गये. और उन के पीछे बाबूराघवजी इस काम के पूरा करने को नियत हुए वहां पर ४००० पैड़ियोंके बनने की आवश्यकताथी. जिसमें चंदेका सब रुपया लग चुका. और नवीन चिट्ठेका प्रबंध हो ही रहाथा. कि पोषसुदी १ ता० २२ जनवरी की रात्रिको स्वेताम्बर कोठी के आदमियोंने २०९ पैड़ियां बिलकुल तोड़ डालीं और कहा कि **इस पहाड़ पर तुह्मारा कोई हक नहीं है. जो इमारत बनवाओ."** दूसरे दिन प्रातःकालही बाबू राघवजीको मालूम हुआ. तो उन्होंने पुलिसमें रिर्पोट की. परन्तु स्वेताम्बरी भाइयों की कार्य कुशलतासे राघवजी का परिश्रम बिलकुल व्यर्थ हुआ. तब राघवजीने गिरहडीके माजिष्ट्रेट मा० की कचहरी मे नालिश की.

इस मुकद्दमेमें स्वेताम्बरपक्षवालों को आठ दिन की सजा हुई. और उनके मुचलके लिये गये. तत्पश्चात् स्वेताम्बरीभाइयोंने कलकत्तेमें अपील की. जिसमें कि दिगम्बरीयोंके प्रमादसे पैरवी न होनेके कारण स्वेताम्बरीभाई बरी हो गये. इसकेबाद दिगम्बरियोंने पैड़ियोंके हर्जेकी हजारीबागमें नालिश की. हम लोगोंकी बहुत कुछ कोशिस से नतीजा यह हुआ कि. स्वेताम्बरियोंपर १८३०, रु० की पैड़ियोंके हर्जाने की डिगरी हुई. अब स्वेताम्बरियोंनें कलकत्ता हायकोर्टमें अपील की है. लेकिन अबतक उसका कोई नतीजा जाहिर नहीं हुआ है. इसी बीचमें स्वेताम्बरी भाइयोंने शिखरजीके पहाड़ पर **पार्श्वनाथ स्वामीकी टोंक** पर एक मंदिर बनवाके पार्श्वनाथस्वामीके चरण उखाड़ डाले. और उस स्थानपर मूर्ति पधरानेका विचार था. लेकिन यह बात दिगम्बरियोंको मालूम हो गई. और उन्होंने सरकारसे इस कार्यके रुकवानेकी प्रार्थना की. तो बकायदे यह काम रोक दिया गया. और उस स्थानपर स्वेताम्बरियोंके विचारानुसार कोई मूर्ति नहीं पधाराई गई. और जो चरण उन्होंनें उखाड़े थे. वहांसे वहीं कुछ दूरपर पधरा दिये गये. अब स्वेताम्बरी भाइयोंसे अदालतमें इस विषयके मुकद्दमे जोर शोरसे चल रहे हैं. दिगम्बरीयोंका कहना है. कि पहाड़पर जितना ही हक स्वेताम्बरियो का है. उतना ही हमारा है. और स्वेताम्बरीयोंका कहना है. कि

पहाडपर सर्वथा हक हमारा ही है. तुम्हारा कोई नहीं है. अगर हम चाहें. तो तुमको दर्शन करनेसे भी बंद करसक्ते हैं इसप्रकार दोनों तरफसे मुकदमों की झड़ाझड़ी चल रही है. और जिसमें कि दोनों तरफके हजारों रुपया स्वाहा हो रहे हैं. स्वेताम्बरियोंकी ओरसे अकेले रायबद्रीदासजी कलकत्तेवालेने ही यह बोझा सिरपर उठा रक्खा है. और अकेले ही हजार क्या वल्कि लाखोंरुपया खर्च करनेको तयार हैं. दिगम्बरियोंमें कुछ धनाढ्योंकी कमी नहीं. बद्रीदासजी सरीखे सैकड़ों धनाढ्य दिगम्बरीयोंमें भी मौजूद हैं. परन्तु शोक इसबातका है. कि दिगम्बरियोंमें धर्मवात्सल्यता नहीं रही. जब उनके घरके कार्य विवाहादि आकर उपस्थित होते हैं. तो उस समय झूटी नामवरीके वास्ते लाखों रुपया पानीकी तरह वहानेमें अपनी उदारता का परिचय देतेहैं. परन्तु बड़े खेदका विषय है. कि जब धर्मकार्योंकी सहायताके वास्ते धनसे ममत्व छोड़नेका उपदेश दिया जाताहै. उस समय वह उदारता न मालूम कौनसी खोहमें जा छिपतीहै. बहुत कहनेकर क्या. यदि आपलोग धनकी व चतुरआदमियोंकी मदद नहीं भेजोगे. तो इसतीर्थपरसे हमारा हक सर्वथा उठजायगा इसलिये अबआप सर्व भाइयोंमे निवेदन किया जाता है. कि जबतक आप इसविषयमें तन, मन, धनसे कोशिस नहीं करोगे. तो ये आपका परमोत्तम सिद्धक्षेत्र, यह आपके धर्मकी मूल पूंजी. यह तुम्हारी बन्दनाका आनन्द, सब तुम्हारे हाथसे छिन जायगा. आप हजारों रुपया बिवाह शादियोंमें लगा देते हैं, आप लाखों रुपया उपकरण व प्रतिष्ठादिकमें खर्च करदेते हैं. तो क्या इस छोटेसे कामसे मुंह मोड़कर अपना मुख्य सिद्धक्षेत्र श्रीसम्मेदशिखरजीको हाथसे खो बैठोगे? तब फिर यह तुम्हारा धनाढ्यपना फिर तुम्हरी यह उदारता किसकाम आवेगी? और फिर लौकिकमें बैठकर क्या किसीको मुंहदिखानें लायक रहोगे?—

जरा ध्यान देनेका विषयहै कि स्वेताम्बरी लोग तुम्हारेसाथ किसकिस्मका वर्ताव कर रहेहैं. इसको सुनकर किस वज्रहृदयके हृदयमें चोट न लगेगी. कौन ऐसा स्वधर्माभिमानी होगा. जो तुमको कायर, आलसी आदि शब्द कहनेमें कसर करेगा, आप सब लोग कई बार इस पवित्र क्षेत्रकी वन्दना कर आये होंगे. क्या आपने जल मंदिरकी प्रतिमाओंके दर्शन नहीं किये होंगे? अवश्य किये होंगे. आज उसी मंदिरमें दिगम्बर प्रतिमाका नाम निशान तक नहीं है. हाय! और उनपर आप लोगोंका ऐसा वर्ताव. आपका इतना ध्यान न रहनेसे अब वह छाती ठोककर कहते हैं. कि यहां तुम्हारा कोई हक्क नहीं हैं. अब क्या आप इसमें गवाही दे सक्ते हैं कि अमुक सम्वत्में हमने दर्शन किये? और कुछ सुबूती भी दे सक्ते हो. जो मुकद्दमेंके अन्दर की जावें. भाइयो! चेतो इस प्रकार उन्होंने सब स्थानोंपर अपने हक्क सुबूत करनेके प्रयत्न कर रक्खे हैं. और हर जगह दिगम्बरियोंको नीचा दिखाना इसी फिराकमें है. हालमें मांडूजीके मन्दिरकी दिगम्बरी प्रतिमामें चक्षु लगाके उन्होंने स्वेताम्बरी करना चाहा था. जिसका मुकद्दमा फौजदारीमें दायर हुआ है. तथा दूसरे गिरनारजीमें भी ऐसे

ही एक उपद्रवके सुननेकी खबर आई है. सारांश यह कि प्रायः हर जगहोंके वे ही स्वतंत्र राजा बनना चाहते हैं.

और आप लोगोंकी असावधानी कहां तक वर्णन करें. यह टोंकका मुकद्दमा जो दायर किया था. सुबूती चारों ओरसे प्राप्त न होनेपर पछि खींच लेना पड़ा है. अब फिरसे दायर करनेका हुक्म लिया है सो अब हमारी जातिके उदार और मुयशी पुरुषोंको तथा सम्पूर्ण वकील वैरिस्टरोंको एकमन होके इसके चलानेकी कोशिस करना चाहिये.

भाइयो ! चेतो शीघ्रही मोहनिद्रासें जागकर सावधान हो जाओ. नहीं तो पीछे पछताओंगे. और फिर कुछ नहीं हो सकेगा.——

यह मुकद्दमा विना विलायत तक गये फैसल होना नहीं दिखता है. और इसमें लाखों रुपया खर्च हुए बिना अंत भी न आयगा. सो जाति हितैषियोंको जगह २ उपदेश देकर चंदा एकत्र कर **दिगम्बर जैन प्रान्तिक सभा बम्बई** के सभापति सेठ माणिकचन्द पानाचन्दजी जोहरीके पास भेजना चाहिये. क्योंकि इस सभाको **महा सभा मथुरा**से इस मुकद्दमेका कार्य चलानेका स्वतंत्र अधिकार मिल चुका है.

आपको सावधान करनेवाला

गोपालदास बरैया.

शाखा सभाओंकी रिपोर्ट.

जैनधर्म हितेच्छु मंडल करमसद—की चैत्रमासकी रिपोर्ट सेक्रेटरीद्वारा प्राप्त हुई है. उसको सूक्ष्मतासे यहां भाइयोंके अवलोकनार्थ प्रकाश करते हैं. और आशा करते हैं. कि अन्यसभाओंके अध्यक्ष महाशय भी इस प्रकार रिपोर्ट भेजनेका अनुकरण करनेकी कृपा दिखावेंगे—

१. विद्यार्थियोंकी हाजिरी—दर्ज रजिष्टर २० विद्यार्थियोंकी फीसदी हाजिरी ६२ के लगभग है.

शिक्षाक्रम—अ वर्गके विद्यार्थी रत्नकरंड श्रा० छहढाला. पंचमंगल. देवपूजा. आदि पुस्तकें पढ़ते हैं तथा ब वर्गके बालगुटका. भक्तांमर. देवदर्शन पढ़ते हैं. अध्यापक प्रभुदासजी हैं.

३. देखरेख—पं. पंनालालजी इन्स्पेक्टरने विद्यार्थियोंकी परीक्षा लेकर. शिक्षाक्रम बदलनेकी प्रेरणाकी तथा पुस्तकालयका शोध किया. बालकोंके उत्तेजनार्थ यथायोग्य पारितोषक बांटा.

४. सभा—चैत्र सुदी २ को शा रणछोरदास प्रेमचंदजीके प्रमुखपणा नीचे सभा हुई. ३० के अनुमान श्रोतागण उपस्थित हुए. पंडित मोहनलालजीने "गुरुका स्वरूप" इस विषयपर व्याख्यान दिया. पश्चात् प्रभुदासजीने उसको पुष्ट किया. पीछे भाईलाल कुबेरदासजीने पाठशाला की आवश्यकता दिखलाई. इस प्रकार कार्य करके सभा विसर्जन हुई. दूसरी सभा चैत्र वदी १४ हुई. सभापति शा मोतीलाल भगवानदासजी थे. पं. पंनालालजीबाकलीवालने "श्रावक षटकर्म" पर अतिउत्तम व्याख्यान दिया. और अन्तमें पाटशालाकी देखरेखका नतीजा सबभाइयोंको सुनाया.

५. पुस्तकालय—यहांके पुस्तकालयमें कुल

ग्रन्थोंका नम्बर इस मासमें २९४ है. स्वाध्यायार्थ २७ पुस्तकें दिई हुई हैं.

जैन सभा इंडी—की दोमाहकी रिपोर्ट सैक्रेटरी शा कस्तूरचंद वेचरजीने सूक्ष्म रूपसे इस प्रकार भेजी है.

नं०	ब्योरा.	प्रथम सभा.	द्वतीय सभा
१	सभापति	शा. गुलाबचंद लालचंद	सेठ माणकचंद जादवजी
२	जैनियोंकी संख्या	२५	१२
३	व्याख्यानदाता	कस्तूररचंद वेसरचंदजी	कस्तूरचंद वेसरचंदजी
४	विषय	धार्मिकसभाका उद्देश और विद्या	सत्यधर्म.
५	तिथि	चैत्र शुक्ला १४ रात्रि	वैशाख शुक्ला १४ रात्रि
६	स्थान	बड़ा जैनमंदिर	बड़ा जैन मंदिर

विविधि समाचार.

श्री जैन प्रतिष्ठा महोत्सव वर्धा— आनन्द के साथ पूर्ण हुवा. मेला में अनुमान पांच हजार भाई एकत्र हुएथे." सेतवाल जैन महासभाहिन्दुस्थान" नाम की एक सभा स्थापित की गई. और उसका पाहिला अधिवेशन किया गया. सभाका नाम "भारतवर्षीय सेतवाल जैन महासभा" रक्खा जाता. तो क्या कर्ण मधुरन होता ?

श्रीजिन सेन विद्यालय—हर्षका विषयहै कि इस नामका एक विद्यालय कोल्हापूरमें स्थापन हुआ है.इस के सम्पूर्ण खर्च प्रबंध के आधिकारी. वहां के भट्टारक श्रीजिनसेन जी है. जिन के नामसे विद्यालय खोला गया है. धन्य है.

प्राचीन सरस्वती भंडार—सुनने में आया है कि. नागौर के भट्टारकमहाराज के भंडार में ४० गाड़ी तथा कारंजा में अढाई हजार जैन ग्रन्थहै. क्या ही अच्छा हो. यदिउन स्थानों के अध्यक्ष ग्रन्थों की सम्हाल करके उन का एक २ सूचीपत्र प्रकाश कर देवें,

प्रतिमाओं की अधिकता—श्रीगोंदा जिला-अहमदनगरसे भागचन्द ताराचन्दजी लिखते है. कि यहांपर प्रतिमाओं का समूह इतना है, कि उना कापूजा प्रक्षालन भली भांति नहीं हो सक्ता. कोई भाई चाहें तो वहां हम से पत्र लिखकर प्रतिमाजी मंगा लेवें. हमारे भाइयोंको चाहिये. कि व्यर्थ दाम खर्चके नवीन प्रतिमा मंगाने. तथा प्रतिष्ठा करनेके बदले. ऐसी प्राचीन प्रतिष्ठित प्रतिमाओंहीकी स्थापना कराके यशलाभ करें.

संस्कृत जैनविद्यालय व सेठ हीराचंद गुमानजी जैन बोर्डिंग स्कूल बम्बई—की छुट्टी १९ मईको पूर्ण हो जावेगी. संस्कृत तथा अंग्रेजी विद्याके लालसी विद्यार्थियोंको शीघ्रता कर अपनी दरख्वास्तें भेज आनेकी तयारी करना चाहिये. अन्यथा विलम्ब करनेसे पछताना पड़ेगा.

मनुष्य गणना—सरकारी रिपोर्टसे मालूम हुआ कि सन् १८७२ में हिन्दुस्तानमें १८८९१२८४२ सन् ८१ में २९३८९११९७ सन् ९१ में २८७३१४६७१ और सन् १९०१ में २९४३६०३९६ मनुष्य थे.।

अफगानिस्तानके अमीर—ने अपने व्याख्यानमें कहा है कि मैं तो पिताके ढंगपर चलूंगा; परन्तु यहां वालोंको सुख तबही होगा. जब कि देशमें शांति होगी. वह अपने राज्यमें अरबीखेती और सैनिकशिक्षाकेलिये मदरसा खोलना चाहतेहैं.

भारतवासियोंको उपाधि—श्रीमान भारतेश्वरके राज्याभिषेकपर उपाधिया बांटी जावेंगी. इसका भारतवासियोंको हर्ष मनाना चाहिये. परन्तु अबकीबार कई लोगोंको निराश होना पड़ेगा. क्यों कि लिस्ट बहुत छोटीहै. लिस्ट २६ जून तक प्रकाशित होगी.

विचित्र चूल्हा—पंडित श्री कृष्ण जोशी ने जो "भानु ताप" नामक यंत्र बनाया है. उस से भोजन बनानेका काम किया जाता है. उक्त पंडितजी आजकल लखनऊ गये हैं. बडाकाम करनेकेलिये वह एक इञ्जिन बना रहे हैं-इन की बुद्धिको धन्य है.

वकीलोंको नौकरी—भारतमें अब वकीलोंका बाजार मंदा हो गया है. अहमदाबादमें कई एम. बी. ए. एल एल. बी वकील २०) मासिकपर दीवानी अदालतोंमें नौकर हैं. एक वकीलने मजिस्ट्रटसे कहा था. कि वकीलोंको पहिले पहिल छोटी नौकरी देनेसे उनकी उन्नति नहीं होती है. इसलिये एकदम बड़ापद देना चाहिये साहिबने बिल्कुल नाहीं करदी.

डांकके टिकट—नये सम्राटके नये राज्यासनके उत्सवपर हिन्दुस्थानमें नये टिकट चलनेकी जो बातथी. उसके पूर्ण होनेमें अभी विलम्बहै. डांकके डाइरेक्टर जनरलने प्रकाशित किया है. कि नये सम्राटके चित्र सहित नये टिकट, पोस्टकार्ड लि. फाके. २९ जून तक तयार नहीं हो सकेंगे. इस से मालूम होता है कि भारतवासियोंको नये टिकट देखनेके लिये अभी थोड़े दिन राह देखना पड़ेगा.

पतिपरदया—कलकत्तेके मजिस्ट्रेट मिस्टर पियर्सनके न्यायालयमें सुखिया नामक स्त्रीने अपने पतिपर दावा किया था. सुखियाका बयान था कि, मेरे पति नाथनीडोमने मुझे डोंवसे मारकर घायल कर दिया. दावा करने बाद न मालूम उसे कैसी सुबुद्धि उत्पन्न हुई. कि उसने न्यायालयमें प्रार्थना करके अपना दावा उठवा लिया. और कहा. कि पतिको दंड मिलनेसे मैं बहुत कष्ट पाऊंगी. इस लिये इन्हें छोड़ दीजिये. न्यायाधीशने भी उसकी बात मानली. इससे जान पड़ता है. कि पाश्चिमी शिक्षाका बंगालमें इतना प्रचार होनेपर भी अभीतक पतिप्रेम नष्ट नहीं हुआ है।

हाड़ोतीमें जैनविवाह—शेरगढ़से पंनालालजी गांधा लिखते हैं कि कोटा निवासी श्रीयुत भूरामलजी अग्रवालने अनेक विरोधोंको न गिनकर साहस व उत्साहपूर्वक अपने सुपुत्र लक्ष्मीचन्दका विवाह अपनी सनातन प्राचीन पद्धति (जैनविवाहपद्धति) के अनुकूल कराया. विशेष प्रशंसाकी बात तो यह है. कि कन्याका बाप वैष्णव होनेपर तथा उस ग्राममें अधिकतर उन्हींका जोर होनेपरभी विवाह हटपूर्वक शास्त्रानुसार कराया उन लोगोंकी पंचायतीमें पंचोंने बहुत झगड़े किये, परन्तु वह एक भी न चले. विवाहविधि जो पंडित मंगलचन्दजी ने कराई उसको देखकर जैनी तो क्या अन्य मती भी धन्य धन्य कहने लगे. और यहां हम भी धन्य! धन्य! धन्य! कहते हैं.

श्री जिन विजय—नामक मासिक पत्र महाराष्ट्रीय भाषामें कोल्हापुरसे निकलना आरंभ हुआ है. अभी दो अंक निकले हैं. पत्रके लक्षण अच्छे दिखते हैं; जैनियोंमें न्यूजपेपरोंकी न्यूनता देखकर बहुधा जातिहितैषी उसके अभाव करने को कमर कसते तो हैं परन्तु द्रव्यके अभावसे अन्तमें "जैन प्रभाकर" व "जैन प्रदीप" की तरह अस्त करनेमें देर नहीं लगाते. श्रीजीकी कृपासे यह पत्र चिर-

जीवी होवे. ऐसी हमारी आन्तरिक कामना है—

रिपोर्ट दौरा अनंतराज संघवे उपदेशक दक्षिणप्रान्त.

पूर्व ६ वें अंकमें उक्त उपदेशके दौरेका समाचार माघ शुक्ल १४ तक का हम अपने पाठकों को सुना चुके हैं. आज उसी मितीसे वैशाख शुक्ल १५ तक के दौर का संक्षिप्त व्योरा नीचे लिखते हैं यद्यपि उपदेशकों की रिपोर्टका सविस्तर प्रकाश करना आवश्यकीय है. परन्तु हमारे कितने एक पाठक इस विषयको पढ़नेमें बड़ा आलस्य करतेहैं. और प्रायः उतने पृष्ट आंख बंद करके उलट डालते हैं. जिससे इस पत्रसे अरुचि होनेकी संभावना हैं. और दूसरे यह पत्र महीनेमें एक वार निकलसक्ता है. यदि इस सभा सम्बन्धी जो दो उपदेशक. एक सरस्वती भंडार व पाठशालाके इन्सपेक्टर एक तीर्थक्षेत्र की देखरेख करनेवाले. इस प्रकार चार महाशयोंकी पूर्ण रिपोर्ट प्रकाशितकी जाय तो हम समझते हैं. कि हरमहीने केवल रिपोर्ट ही प्रकाश करनेसे इसका नाम **मासिक रिपोर्ट**" रखनेकी आवश्यक्ता पड़े. अतः रिपोर्टोंका सूक्ष्म व्योरा ही प्रकाशित करना उचित समझा जाता है.

राक्षसभुवण, पांडुली. धाराशिव, बेराग. वढ़ाला, बार्सी, मोहोळ वीजापूर इंडी अक्कलकोट, कोपरगांव, कन्नड़ नांदगांव कवलाणें, श्रीगोंदे, आदि स्थानोंमें. आवश्यक्तानुसार तीन २ सभा की गई. और समयानुसार विद्या, दशलाक्षणधर्म आदि विषयोंमें व्याख्यान दिये. कितने एक स्थानोंके भाइयोंने स्वाध्यायादि करनेके नियम किये व कन्नड़ तथा नांदगांवके भाइयोंने पाठशाला स्थापन करनेका साहस प्रगट कर प्रबंध करनेका प्रण किया. कोपरगांवके भाइयोंने जैन विधि अनुसार विवाह करनेका विचार किया. वीजापूर व इंडीमे प्रति शुक्ल चतुर्दशीको सभा होनेका प्रस्ताव हुआ तिसमें इंडीके भाइयोंने तो सभा प्रारंभ कर दी और उसकी रिपोर्ट भी अन्यत्र छपी है आशा है कि **वीजापूरके** भाई भी इस प्रकार सभाकी रिपोर्ट भेजा करेंगे. इसके सिवाय जिन २ भाइयोंने इस सभा सम्बधी भंडारेमें जो रुपया दिया है. वह सहर्ष स्वीकार किया गया है. स्थानाभावसे उसे यहां प्रकाश नहीं कर सके. वार्षिक रिपोर्टमें सब व्योरेवार छपेगा.

क्रमशः—

Registered No. B. 288.

श्रीवीतरागाय नमः

जैनमित्र.

जिसको

सर्व साधारण जनोंके हितार्थ,

दिगम्बर जैनप्रान्तिकसभा बंबईने

श्रीमान पंडित गोपालदास बरैयासे सम्पादन कराकर

प्रकाशित किया.

जगत जननहित करन कँह, जैनमित्र वरपत्र।
प्रगट भयहु-प्रिय! गहहु-किन? परचारहु सरवत्र!॥

तृतीय वर्ष } आषाढ सं. १९५९ वि. { अंक १० वां

नियमावली.

१ इस पत्रका उद्देश भारतवर्षीय सर्वसाधारण जनोंमें सनातन, नीति, विद्याकी, उन्नति करना है.

२ इस पत्रमें राजविरुद्ध, धर्मविरुद्ध, व परस्पर विरोध बढानेवाले लेख स्थान न पाकर, उत्तमोत्तम लेख, चर्चा उपदेश, राजनीति, धर्मनीति, सामायिक रिपोर्ट, व नये २ समाचार छपा करेंगे.

३ इस पत्रका अग्रिमवार्षिक मूल्य सर्वत्र डांकव्यय सहित केवल १।) रु० मात्र है. अग्रिम मूल्य पाये विना यह पत्र किसीको भी नहीं भेजा जायगा.

४ नमूना चाहनेवाले)॥ आध आनाका टिकट भेजकर मंगा सक्ते हैं.

चिट्ठी व मनीआर्डर भेजनेका पताः—

गोपालदास बरैया सम्पादक.

जैनमित्र, पो० कालबादेवी बम्बई—

कर्नाटक प्रिंटिंग प्रेस, कांदेवाडी, मुंबई.

१ बस एकही बार.

हम पत्रव्यवहार करनेवाले महाशयोंसे यथावकाश कई बार प्रार्थना कर चुके हैं कि जो कुछ जैनमित्रमें छपनेयोग्य लेख तथा हरएक विषयके पत्र दिया करैं वे स्पष्ट नागरी अक्षरोंमें देवें तथा उसमें अपना नाम पत्ताग्राम और पोष्ट जिला पूरे तोरसे लिखें. परंतु शोकका विषय है कि कितनेही महाशय, इस हमारी प्रार्थनापर ध्यान न देकर उर्दू आदि अक्षरोंमें पत्रव्यवहार करते हैं. जिससें हमको बांचने और उत्तर देनेमें पूर्ण परिश्रम करना पडता है. इसलिये बस एकहीबार हम फिर सूचित कर देते हैं कि यदि कोईभी महाशय आगेसे उर्दू आदि अक्षरोंमें पत्र देंगे या नागरी अक्षरकेभी पत्रमें अपना पूरा पता न लिखेंगे तो हम उस पत्र पर ध्यान न देंगे और न उसके उत्तर न देने के दोषके भागी होंगे.

---

२ ग्राहकोंसे निवेदन.

हरएक जैनमित्रके ग्राहक महाशयोंसे प्रार्थना है कि जैनमित्रके समयपर न पहुंचने आदि विषयमें जो लेख व पत्र दें या इसका मूल्य भेजें तो उसपर अपना ग्राहक नंबर डाल दें जो जैनमित्रमें उनके नामपर लगा रहता है. ताकि हमको रजिष्टरमें नाम देखनेमें परिश्रम न हो और तामीलभी यथोचित शीघ्र हो जांय.

विज्ञापन.

हमको दो तीन ऐसे जैनी भाइयोंकी आवश्यकता है जो कमसेकम इंट्रेन्स क्लासतक अंग्रेजी पढे हुवे हों और देशी भाषाके जानकार हों तथा महकमा दिवानी फौजदारीके कानूनसेभी वाकिफ हो. अतः जो कोई ऐसे जैनी भाई आना चाहैं वे अपने चालचलनकी किसी प्रतिष्ठित पुरुषकी सिफारस सहित दरख्वास्त भेजें. वेतन योग्यतानुसार दिया जायगा. विनयपत्र भेजनेका पता.

सेक्रेटरी दिगम्बर जैन प्रांतिकसभा,

दूसरा भोईवाड़ा, मुम्बई.

ननद और भावजका विवाह

हालेन्ड नगरमें एक ऐसा विवाह हुवा कि जिसमें वरकी एवज उसकी बहन विवाहनें आई और विवाह कर भावजको साथ लेगई. इसका कारण यह था कि कन्या अमष्टरडममें थी जहांपर वर नहीं आ सक्ता था. और विवाहकी चाह थी जिससे अपनी बहनको एवजाना भेजदी. अब विवाह कार्यमें भी प्रतिनिधि होने लगे हैं.

अजब ढंग.

तिब्बतमें ऐसा कायदा है कि कोई किसीकी सबसे बड़ी लड़कीसे सादी करले तो उस लड़कीकी छोटी बहनें भी उसहीकी जोरू होवेंगी. जिसमें वरके भाई भी हिस्सेदार रहते हैं और उनके पति मरनेपर पतिके भाई मालिक होते हैं.

पतंग उड़ानेसे मृत्यु.

कलकत्तेमें एक लड़का पतंग उडाता उडाता पानीके खड्डेमें गिरकर मर गया. माता पिताओंको चाहिये कि वे पतंग देकर बालकसे लाड़ न करैं.

उसके दर्शन कर आवो. लाचार पूछते २ उस मंदिरजीमें दर्शन किये परन्तु दूसरे मंदिरजीके भी दर्शन करनेकी इच्छाको नहिं रोक सका तो फिर भी छगन परसोत्तमके घर जाकर प्रार्थना करी तो बुढिया बडी खपा हो गई कहा कि जालीमेंसे दर्शन होते हैं सो चले जावो. फिर दो स्वेताम्बरी छोकरोंको दो पैसे देने कर मंदिर बता देनेको साथ ले गया. मंदिरजी मिले परन्तु अंधकार वशात् जालीमेंसे भगवानके दर्शन नहिं मिले. लाचार धर्मशालामें आकर क्षुधा शांति कर जैन हितेच्छुके एडीटर मोतीलाल मनसुखरामसे मिलनेको गया. परन्तु वे दूसरे गांव गये थे. इस कारण डेरे आकर थोड़ासा छतपर टहल कर सो गया. ता० १८ को सबेरेही ७ बजे इका भाड़े कर इष्टेसनपर पहुंचा. अहमदनगरका टिकट लिया. सामान तुलवा—बिछोनेका बोज कम देनेको कहा परन्तु लगेज माष्टरने वैसा कायदा नहीं बताया २७ सेर बोझ तोला ८=) खाकर -।) भाडे कर देनेको कहा. मैंने कहा कि ऐसा करना हमारे धर्मके विरुद्ध है जो उचित भाड़ा हो सो ले लो. तब ०।।) देकर नं० ७८९१० का लगेज रसीद लेकर गाडीमें बैठकर अहमदनगर इष्टेसनपर २ बजे पहुंचा. वहांसे -।।।) में घोड़ा गाड़ी भाड़े करके ६।। बजे श्यामको ईडर पहुंचा. हुमड़ोंकी धर्मशालामें गांधी पूनमचंद शाकलचन्दने डेरा कराया. और अनेक प्रकारसे खातिर की. दिगम्बर जैन प्रांतिक सभाकी पचोपर लिखी हुई चिट्ठी सरपंच शेठ अमीचंद बस्ताके पास पहुंचा. ईगई ईडरमें स्वेताम्बरी ओसवाल पोरवालोंके सिवाय १०० घर हुमड़ जैनी भाइयोंके हैं. इनमेंसे भी काष्टासंगी, मूलसंगी और स्वेताम्बरी तीनों गच्छोंके भाई हैं. यहांके सब भाइयोंमें एकता है. अर्थात् सब भाई प्रायः स्वेताम्बरी दिगम्बरी दोनों मंदिरोंमें दर्शनार्थ जाते हैं. मंदिरजी शहरमें दो स्वेताम्बरी दो दिगम्बरी और एक संभवनाथजीका मंदिर दिगम्बरी है. परन्तु न तो वह दिगम्बरी ही है और न स्वेताम्बरी ही है. स्वेताम्बरी मंदिरोंमें भगवानकी प्रतिमाको समय २ पर सुवर्ण रौप्यमई आंगी (कोट) पहनाई जाती है. संभवनाथजीके मंदिरमें पुष्पोंकी आंगी पहनाई जाती है. इस मंदिरजीमें स्वेताम्बरी दिगम्बरी तथा अन्यमती सबही दर्शनार्थ जाते हैं. संभव है कि कुछ दिनोंमें इस मंदिरजीमें भी सोने चांदीकी आंगी चढने लग जायगी. कारण यहांके हुमड़ पंचोंमें स्वेताम्बरी भाइयोंका जोर है, जातिका सरपंच शेठ भी स्वेताम्बरी है. यह बडा आश्चर्य है कि जातिका सरपंच शेठ ही धर्म संबंधी कार्योंकेलिये सरपंच हैं. दिगम्बरीय धर्म कार्योंके प्रबन्धमें स्वेताम्बरीका सरपंच होना और उसकी ही आज्ञानुसार चलना मेरी तुच्छ बुद्धिमें उचित नहीं समझा जाता. खुद सेठके मुहसे ही कई बार पाठशाला व सरस्वती भंडारके बाबतमें सुना है. कि क्या करूं मैं स्वेताम्बरी हूं. मैं दिगम्बरी भाइयोंपर विशेष जोर नहीं दे सक्ता. जैसी दिगम्बरी भाइयोंकी इच्छा होती है वैसी ही मुझे हांमेंहां मिलानी पड़ती है. शहरके शिवाय परबतपर जहां कि किसी समय ईडर नगर बसता था वा सरकारी महल थे वहां एक बहुत प्राचीन पत्थरका दिगम्बरी मंदिरजी है. तथा एक स्वेताम्बरी मंदिर भी है. परन्तु यह नवीन है. यहांपर पूर्ण

मासीके दिन बहुत भाई दर्शनार्थ जाते हैं. स्त्रियें तो सिवाय बूढियोंके प्रायः शहरके मंदिरोंमें भी नहिं जाती. मुझे ईडरके गलते सडते हुये प्राचीन सरस्वती भंडारकी रक्षार्थ तथा जैन पाठशालाके स्थापनार्थ बंबई सभाने भेजा था. सोई शेठसे कहकर ता० २३ जनवरीकी रात्रिको ८ बजे पंचोंको बुलाये सरस्वती भंडारको खोलकर नवीन गत्ते वेष्टन चढाकर संदूकोंमेंसे निकालकर आलमारियोंमें यत्नके साथ रखनेकी प्रार्थना की गई. यदि आलमारियों व गत्ते वेष्टनादिकके लिये खर्चकी व्यवस्था नहिं होय तो ५००)रुपये तक बंबई सभासे आ सक्ते हैं. भाइयोंने सम्मति करके कहा कि खर्चका प्रबंध तो यहींसे हो जायगा कलसे ग्रंथ संभालनेका काम जारी कर दो. यह सुनकर जो कुछ हर्ष हुवा वह बचन अगोचर है. परन्तु इतनेहीमें दशा हुमडोंके मुखिया भाई आये तब फिरसे दुकानमें जाकर परस्पर काना फुंसी होने लगी और बाहर निकलकर एक भाईने कहा कि मेरे पास पंचोंकी तरफसे आदमी आवे. मैं कुंजी दे देताहूं. मैं खुद भंडारमें नहिं जाऊंगा. इसमें भविष्यतमें हानि लाभके पंच मालिक हैं. इतने कहते ही पंचोंनें अपने सरपर भविष्यत हानिका दायित्व नहिं लिया और गड़बड होकर वह प्रस्ताव खारिज हो गया. ११ बजे सभा भंग हो गई. लाचार उदास होकर डेरे आकर सो गया. फिर दूसरे दिनसे उक्त सरपंच शेठ और हीराचन्द शाकलचन्द आदि धर्मात्मा भाइयोंसे भविष्यतमें कुछ भी हानि नहीं है इत्यादि समझाया परन्तु किसीने भी नहिं सुना इस बीचमें उदयपुर जिलेका एक काष्ठासंघी भुवनकीर्ति नामक भट्टारक आया. उसने ईडरकी गादीपर किसीको भट्टारक बनानेकी प्रार्थना करी. पंचोंने कहा कि "गादी बिठानेका केवल हमाराही अधिकार नहीं हैं. ईडर प्रान्तमें ४२ गांव है और उनमें भी प्रतिनिधिके तरीके ७ मुख्य गांव हैं. उन ४२ गांवोंके नही तो ७ टप्पोंके (प्रतिनिधि ग्रामोंके) पंच इकट्ठे होकर बिचार करके गादी बिठानेका प्रस्ताव पास कर सक्ते हैं. पंचोंके इकट्ठे करनेका भार ईडरसे ६ कोशपर पोसीना नामक टप्पेके पंचोंपर हैं. अर्थात् पोसीनेके पंच ४२ गावोंके पंच मंडलके मंत्री तरीके काम करनेवाले हैं सो आप पोसीने जाकर पंच इकट्ठे कराकर उस पंच मंडलमें अपना प्रस्ताव पेश करो. वहांसे पत्र आनेपर हम लोग भी सब आवैंगे" तब वह भट्टारक पोसीने गया. वहांपर प्रायः दो महिने तक रहकर उसने पंच इकट्ठे कराये. ईडरके भाइयोंने मुझे भी इस पंचमंडलमें अपनी प्रार्थना पेश करनेको कहा तो मैं भी दो महिने तक बैठा रहा. मुम्बई सभाके उपदेशक रामलालजी भी इस प्रान्तमें दौरा करनेको आये थे सो प्रांतीजमें बीमार होकर ईडर चले आये. ईडरमें ता०९ मार्चकी रात्रिको एक सभा की उसमें भाई रामलालजीने षट्कर्मका उपदेश दिया. क्यों कि यहांपर सिवाय दर्शनके पूजन स्वाध्यायादि कोई भी धर्मकार्य नहिं किया जाता. मंदिरजीमें प्रक्षाल तपोधनब्राह्मण और माली किया करते हैं. मैने सभाके लिये तथा रात्रिको शास्त्र सभा करनेके लिये भाइयोंसे बहुत बार कहा परन्तु मेरी सुनाई नहिं हुई. अनपढ भट्टारकोंने भाइयोंके दिलसे धर्मरुचि सर्वथाही उठा दी. धर्मके अभावसे हमारे भाइयोंकी अवस्था भी हर तरहसे अति शोचनीय हो गई है. यदि

यहांकी गादीपर फिर भी किसी अनपढ मूर्खको बिठा देंगे तो कुछ दिनोंमें इस प्रान्तसें जैन धर्मका व जैन जातिका सर्वतया अभाव हो जायगा.

उस भट्टारककी कोशिशसे फागण सुदी ११ को छे टप्पोंके पंचोंने इकट्ठे होकर प्रथम बैठक करी. मैं भी पं. रामलालजीसहित वहांपर गया था. प्रथम बैठकमें नीचें लिखे ३ प्रस्ताव पास हुये.

१ डेरेल टप्पेके भाइयोंने लिखा है कि हम आ नहीं सक्के जो पंच करैंगे सो हमें मंजूर है इनको फिर भी एक पत्र दिया जाय.

२ जिन २ भाइयोंको अपने टप्पेके मुखिया भाइयोंको बुलाना होवें सवेरेही आदमी भेजकर बुलालेवें. फिर कोई उजर करैगा कि हमारे यहांके अमुक भाई नहिं आये तो किसीका उजर नहिं सुना जायगा.

३ कल दिनको १२ बजे सभा करकें पं. रामलालजी का उपदेश सुनना.

इस प्रकार प्रस्ताव पास करके ११ बजे पंचसभा विसर्जन हुई परन्तु जब भट्टारकने सुना कि कल सभा होगी, तो उसने सबको बहकाना सुरू किया कि ये तेरहपंथी हैं. बीस पंथीका खंडन करैंगे. इस देशमें इनका उपदेश सुना जायगा तो यहांसे बीस पंथी धर्मका लोप हो जायगा. सभा तुमने जो एक भाईके घरपर करना टहराया सो ठीक नहीं. हमारे सामने हमारे डेरेपर होना चाहिये. हम बीच २ में प्रश्न करैंगे तो उनको जबाब देना होगा. इत्यादि कह २ कर सबको बहका दिया. हमसे पूछा गया तो हमने कहा कि कोई हर्ज नहीं. हम भट्टारकजीके सामने ही उपदेश देंगे. परन्तु प्रश्न बीच २ में नहिं होने चाहिये. व्याख्यानके पश्चात् वे प्रश्न करैंगे और वादविवाद नहिं करैंगे तो केवलमात्र संदेह निवारणार्थ उत्तर दिया जायगा. परन्तु पंचोंने समझा कि ये लोग वाद-विवाद करकें परस्पर लडैंगे. इस कारण सभाही नहिं करना. हमने बहुत कुछ कहा कि हम वादविवाद नहीं करैंगे यदि हमको वादविवाद करना होता तो हम अष्टान्हिकामें आठ दिन तक पूजा करनेसे कदापि नहिं सकते. परन्तु पंचोंको भय हो गया तब सभा होना बंद रक्खा. फिर ता. २४ मार्चको पं. रामलालजीको बडे जोरसे बुखार आगया था. सो ता. २४ मार्चको सवेरेही ९ बजे रामलालजीको चिकित्सा करानेकेलिये खाटकी डोलीमें सुलाकर ईडरको भेज दिया. तत्पश्चात् फिर कई जगहँके पंचआनेपर ता. २५ मार्चको रात्रिके ८ बजे पंचसभाका अधिवेशन हुवा. मैं भी ८॥ बजे उसमें जा बैठा. भट्टारकजीने पहिले दिन शास्त्रजीकी सभामें प्रस्ताव पेश कर दिया था—और बडालीको दर्शनयात्राकेलिये चले गये थे. मंत्रीकी तरफसे प्रस्ताव पेश किया गया कि गादी बिठाना किनहीं. यदि बिठाना हो तो किसको बिठाना ? भट्टारकजीनें प्रस्ताव किया है कि "प्रथम तो लछमनको (जो कि गादीकी दो लाख रुपयेकी सम्पति हस्तगत करके व्यभिचारादिकमें उडा रहा है) बिठाना चाहिये. नही तो एक छोटा चेला भट्टारकजीका मोहनलाल है उसको बिठाना. यदि पंच मंजूर नहिं करें तो जयपुरमें एक

पंडित है उसको बुलादूंगा." तिसपर–प्रस्ताव पास हुवा कि–"गादीपर किसीको अवश्य बिठाना. यदि लक्ष्मण मान जावे, समस्त दुराचार छोड़ दें, सम्पत्तिका हिसाब समझा दे, तो उसको नहीं तो मोहनलालको गादी बिठा सक्ते हैं परन्तु इसकेलिये पंचकी तरफसे कुछ नहिं कहा जाय. भट्टारकजी समझाकर लछमणको यहां ले आवे तब विचार करना चाहिये–नहीं तो भट्टारकजी और दो भाइयोंको जयपुर भेजकर जयपुरवाले पंडितको बुलाना चाहिये." इस प्रकार निश्चय होनेपर मैंने कुछ कहनेकी आज्ञा मांगी. और उनपर भट्टारकके द्वारा धर्मकी प्रत्यक्ष हानियें दिखाकर पंडित परीक्षामें पढे हुये विद्वान्कोही गादीपर बिठाना चाहिये ऐसी प्रार्थना की. उसकी परीक्षार्थ आदमी भेजने वगेरहकी जरूर नहीं. बंबई सभासे ऐसा पंडित मांगोगे तो वह तलास करके देगी. यदि आप लोग किसी अन्यको बुलावें तो उसकी परीक्षा बंबई सभा अथवा शोलापुरकी सभासे कराकर गादी बिठाना चाहिये. आप लोग उसकी परीक्षा नहिं कर सकेंगे. जिसको सुनकर ठीक २ है–ऐसाही करेंगे इत्यादि कहकर फिर कोई गुप्त विचार करनेके बहानेसे मुझे सभामेंसे उठ जानेको कहा मैं तुरंतही अपने डेरे आ सोया. परन्तु दूसरे दिन मालूम हुवा कि समस्त पंच मेरे कहनेका भावार्थ कुछका कुछ निकालकर और ही प्रकार समझ गये. दूसरे दिन जब दुपहरको पंचसभाका अधिवेशन बैठा तो मुझे बुलाया भी नहीं और विना बुलाये जाना भी उचित नहीं समझा कारण सभासे दो घंटे पहिले मैंने बंबई सभाकी ७ रिपोर्ट सातों टप्पोंकी पंचायतीमें पूजारीके हाथ भेजी तो किसीने भी ग्रहण नहिं करी. कारण पूछनेसे मालूम हुवा कि हम भिन्न २ टप्पेवाले नहिं ले सक्ते. दूसरे मैं ता. २३ मार्चके दिन ८ बजे नेमचंद भाईकेपास (पोसीनेके पंचोंमें जो बडे समझदार और हर्क तरीके काम करते हैं) गया. सरस्वती भंडारके विषयमें प्रस्ताव पेश करने बाबत सम्मति पूछी तो, उन्होने कहा कि इस विषयमें प्रस्ताव करना व्यर्थ होगा. कारण ईडरके भाइयोंको ऐसा श्रद्धान हो गया है कि "यदि बंबई सभाको भंडार दिखाया जायगा तो वह जोर जुलमसे सब ग्रंथ बम्बई ले जावेगी सो चाहे ग्रंथ सड़ जांय पर इनको भंडार नहिं दिखाना" मैंने कहा कि ऐसा श्रद्धान भ्रमात्मक है. परन्तु मालूम हुवा कि उसी भट्टारकने इनको बहका दिया. इनका श्रद्धान हटाना कष्टसाध्य है. क्यों कि जब कोई सुनताही नहीं तो कहैं किसको? लाचार अपना काम असाध्य समझ पोसीनेमें ता. २७ को ईडर चला आया. उसी दिनही अर्थात् ता. २६ की रात्रिको प्रस्ताव पास हुवा कि भट्टारकजी जयपुर जाकर पंडितको बुला लावें सो ता. २७ के सबेरे भट्टारक भी जयपुरको चला गया. मैंने जाते समय पूछा तो कहा कि मुझे विशेष कार्य वशात् अहमदाबाद जाना है. पंच लोग अपनी २ तरफसे एक २ आदमी रखकर सब अपने २ घर चले गये. अर्थात् अभीतक पंचमंडलका काम अच्छीतरह पूरा नहिं हुवा. गादीपर बैठनेवाले पंडित और भट्टारकके आनेपर फिरसे सब पंच इकट्ठे होकर

विचार करैंगे. परन्तु जब भट्टारकजीकी दलाली नहिं चली अर्थात् उस पंडितने आना ना मंजूर किया. तो भट्टारकके आनेपर फिर सब पंच इकट्ठे हुये और उनसे पूछा और दबाया कि तुमने ८ दिनके भीतर पंडित ला देनेका कहा था. सो पंडितको नहिं लाये. वृथाही पंचोंको दो महीने तकलीफ देकर पंचोंके दो हजार रुपये नष्ट कर दिये. इत्यादि तो विचार रात्रिको दो बजे अपने बुकचे बोटी संभाल कर भाग गया. सबेरे होनेपर पंचोंको मालूम हुवा कि भट्टारकजी रात्रिको भाग गये. पंच भी दो हजार रुपये नष्ट करके अपने २ घर को चले गये. यहां पाठशालाकेलिये एक भाईने १०००) रु. दिये थे और जब सेठ प्रेमचंद मोतीचंद और मुन्नालाल राजकुमार आये थे तो करीब ५००) के चंदा किया था. पाठशालाकेलिये कहा गया तो पंचोंने पंडित मांगा. मैने तीन पंडितोंका प्रबंध किया—और बुलानेकेलिये कहा गया तो सरपंच सेठने दो चार भाइयोंको बुलाकर रुक्षताके साथ कहा कि चाहे पाठशालामें एक भी छोकरा नहिं आवे. परन्तु १२ महीनातक पाठशाला अवश्य रखनी होगी. अतः १ वर्षका खर्च ३००) रुपये मेरेपास लाकर जमा करदो तो उत्तही पंडितको बुलानेकेलिये खर्च भेज दूं नहीं तो मै इस विषयमें कुछ नहिं कर सक्ता. उन भाइयोंने कहा कि हमारे कहनेसे कौन देगा. आप सरपंच हैं पंचोंकी तरफसे आदमी भेजकर आप हजार रुपये देनेवालेसे अथवा ५००) रु. चंदे देनेवालोंसे अदांकर मंगालें. तब शेटने कहा कि मैं अपनेपास रुपया जमा करनेके लिये मैं नहिं कह सक्ता. तुमको पाठशाला करनी हो तो रुपये ३००) मेरे पास पहिले जमा कर दो. तब मैं पंडितको बुलाऊं. फिर उन भाइयोंने कुछ नहिं कहा. यहांपर ऐसा धारा है कि जो धर्मात्मा भाई आगें होकर किसी धर्मकार्यमें प्रेरणा करता है तो उससे सब जने नाराज हो जाते हैं. इस कारण कोई भाई आगें होकर नहिं कहता. मुझे बंबई सभाने सब हाल कहनेको मुंबई बुलाया तो मैने पंचोंमे सरस्वती भंडारके बाबत व पाठशाला न करनेके बाबत लेखी जबाब लिये विना जाना अनुचित समझा. परन्तु पंच तो इकट्ठे होतेही नहीं. होते हैं तो मुखजबानी सुनेंगे नहीं इसकारण एक प्रार्थनापत्र पंचोंके नाम लिखकर सेठ अमीचंदकेपास पुजारीके हाथ भेजा. उसमे "लिखा था कि सरस्वती भंडारका जीर्णोद्धार क्यों नहीं करते और पाठशालाके १५००) रु० होनेपर भी पाठशाला क्यों नहिं की जाती इसका जबाब मुझे जबतक लिखकर नहिं देंगे मैं यहांसे नहिं जा सक्ता. सो आप इसका जबाब मुंबई सभाकेनाम लिखकर मुझे देंगे तो बड़ी कृपा होगी मुम्बई सभाके १००) और मेरे ७९) रु आजतक खर्च हो गये अब कहांतक मुझे बिठाये रक्खैंगे. सभाका धर्मका पैसा वृथा ही क्यों खर्च करवाते हैं इत्यादि लिखा था सो इस प्रार्थनाको पंचोंमें सुनानेसे हमारे भोलेभाई बहुतही नाराज हुये. और बिचार किया कि पन्नालालजीने पंचोंको नोटिश दिया है. तब मैनें यहांपर रहना अनुचित समझ ता. २९ अप्रेलको ईडरसे चलकर सोजित्रा कर्मसदको रवाने हुवा.

यद्यपि ईडरके पंच उस भट्टारकके बहकानेसे मुंबई सभाके द्वारा भंडारका जीर्णोद्धार कराना अनुचित समझा तो भी अनेक भाइयोंके चित्तमें पाठशाला और सरस्वती भंडारके जीर्णोद्धारके करनेकी फिकर है. आशा है कि दो चार महिनेमें ये दोनों ही काम अवश्य कर डालेंगे. क्यों कि यहांके भाई अनपढ भट्टारकोंकी समान पाठशाला और जिनवाणीके दुश्मन नहीं हैं किन्तु भोलेभाले हैं. इस भोलीभाली बुद्धिके कारण कार्यकी हानि लाभका विचार नहिं करके कहनेवालेकी बातका अभिप्राय कुछका कुछ समझ लेते हैं. सो संभव है कि शीघ्रही इनकी बुद्धिमें जिनवाणी माताकी भक्तिकी प्रेरणा होयगी. और पाठशाला नहिं करेंगे तो दो चार महीनेमें कोठारमेंसे गलती सडती हुई जिनवाणीका जीर्णोद्धार तो अवश्य ही कर लेंगे.

मैं ईडरके पंच महाशयोंसे बारंबार प्रार्थना करता हूं कि मेरी चिठ्ठीसे तथा इस रिपोर्टसे किसी भाईका दिल दुखा होय तो मुझे बालक जान क्षमा करें.

भाइयोंका हितैषी दास,

पन्नालाल जैन.

चिठ्ठिपत्री व विविध समाचार.

हर्षजनक समाचार यह है कि यहांपर राय मथुरादासजी की पोतीका विवाह था. वारात तिस्सा जिला मुजफ्फर नगरसे १८ मईको लाला यादरामजी के यहांसे आईथी. हर्ष है कि वारातमे अमंगला मुखी वेश्या महाराणीका नृत्य नहीं था. और उसके स्थानमें १९ मईको १॥ बजेके करीब एक सभा की गईथी. जिसमें राय मथुरादासजी भी स्वयं अपने पुत्र (बुलंदराय वकील) तथा बाबू सूर्यभान वकील और पं. मंगतराय नानोतावी आदि सहित पधारे थे और खास २ भाइयोंके पास भी आपने आमंत्रण पत्र भेजा था सभामें बाबू द्वारकाप्रशादजी तहसीलदार देवबंद आदि बडे २ प्रतिष्ठित पुरुष मौजूद थे. प्रथमही पं. मंगतरायजीने मंगलाचरण कहकर पत्रमें १५ मिनिट तक वेश्यानृत्य बुराई प्रगट की बादमें बाबू सूर्यभान तथा राय साहेब आदिकी अतिशय प्रेरणापर भाई जुगलकिशोरजी व्याख्यानके लिये खडे हुवे और यह ख्याल करकै कि सभामें अछे २ विचारशील परीक्षक और निर्णयकर्ता विद्यमान है. मंगलाचरणपूर्वक सातिशय युक्तियों तथा शास्त्रीय प्रमाण कर विधवा विवाहका खंडन करना आरंभ किया. जिस पर राय मथुरादासजीकी अनर्थमूलक तथा निर्हेतुक पक्षपाताग्नि प्रज्वलित होगई. और उनको जोश आगया और उन्होंने व्याख्यान रोकनेकेलिये बहुत कोलाहल मचाया और कहा कि यह इस मजमूनका अवसर नही है. और न कोई खंडन कर सक्ता है. तब व्याख्यानदाताके यह दिखानेपर कि यह मजमून सबसे जरूरी (आवश्यकीय) है. और इसकेलिये इससे अच्छा और क्या अवसर मिल सक्ता है? जब कि ऐसे २ विद्वान, विचारशील और निर्णयकर्ता (तहकीक कुनंदे) भाई मौजूद हैं; दो तीन दुराग्रही भाइयोंके अतिरिक्त यादरामजी (बेटेवाले, आदि समस्त भाइयोंने यही कहा कि आप इनको क्यों इस व्याख्यानके देनेसें रोकते हैं. यह

व्याख्यान बहुत उत्तम और ठीक है और इसकी बडी आवश्यक्ता है और हम इनको इसकी इजाजत देते हैं चूंकि यह सभा बेटेवालेकी थी. और उन्होंनें इस अनर्थ मूलक विधवा विवाहके निर्मूलक करने अर्थात् खंडन करनेकी इजाजत देदी थी. अंत एव लाचार राय साहेबको लज्जित होकर चुप होना पडा. तब व्याख्यान फिर आरंभ हुवा और जब प्रमाण नय कर विधवा विवाहका खंडन होने लगा और विपक्षियोंके हेतुओंके हेत्वाभास दिखाने लगा, तब राय साहेबनें यह ख्याल करके कि ऐसे २ प्रबल हेतुओंका खंडन करना हमारी शक्तिसे बाहिर है और वास्तवमें असंभव है अपने मकानपर जानेके लिये क्रुधित रूपमें यादरामजी आदिसे इजाजत मांगी जिसपर यादारामजीने कहा कि यदि आपको जाना है तो आप जाइये. तब रायसाहेब तथा उनके पुत्र बुलंदरायजी सभासे चले गये. उनके इस चलेजानेमें उनके उपर बुरा असर डाला व्याख्यान दो घंटे तक बराबर होता रहा. जिसमें प्रबल युक्तियोंसे तथा शास्त्रीय प्रमाणसे विधवा विवाह का खंडन हुवा और जितनेभी हेतु इस अनर्थकी खानि विधवा विवाहकी पुष्टिमें दिये जाते हैं, उन सबको प्रगटपने हेत्वाभास सिद्ध कर दिया और सत्यार्थप्रकाशमें जो पुनर्विवाह और नियोगका विषय है उसके हवाले दे देकर खूबही अच्छी तरहसे पोल खोली गई और नियोगको केवल व्यभिचाह नहीं किंतु उससे बढकर (दोष) सिद्ध किया गया. शायदही है की कोई ऐसी युक्ति रही होय जो विपक्षी इसके मंडनमें देते है और जिसका युक्ति तथा शास्त्रीय प्रमाणकर खंडन किया गया हो. इस व्याख्यानको सुनकर समस्त सभासद गणोंका चित्त अत्यंत प्रसन्न हुवा और इसके पूर्ण होनेपर सबने वाह २ की ध्वनी की और तहशीलदार साहेब तथा बाबू सूर्यभानजी और पंडित लालजीमल आदि भाइयोंने व्याख्यानकी बहुत प्रशंसा की और कई भाईयोंने तो यहां तक कहा कि हमारा पहिल इसकी पक्ष (favour) में खयाल था परंतु आज इस व्याख्यानसे हमारा बहुत दिनोंका भ्रम दूर होगया है इत्यादि. इसके बादमें पण्डित लालजीमलने विद्याकी आवश्यकतापर व्याख्यान दिया. और अंतमें एक पद कहकर आपना व्याख्यान पुरा किया. पदके बीचमेंही नौतने को आ गये थे किन्तु शोक! कि राय साहिबको उक्त दुराग्रह जनित जोशने ऐसा दबाया कि स्वयं रायसाहिब नौतनेभी न आये! लाला यादरामजीको अपने खयालके विरुद्ध यह मालूम होनेपर कि रायसाहिब विधवाविवाहके पक्षी हैं. बहुत अफसोस हुवा कि उन्होंने अगले दिन बरी पट्टेके समयपर राय साहिबको बहुत कुछ कहा. जिसके लिखने की यहांपर कोई आवश्यकता नही है. वास्तवमें जो प्रसन्नता और आनंद परस्परके सम्बन्धमें होना चाहिये था वह यादरामजीको प्राप्त न हुवा क्योंकि ला. यादरामजी बडे धर्मात्मा सज्जन और पक्के जैनी हैं और धर्मविरुद्ध कार्यों तथा उनके कर्ताओं और सहायकोंसे अरति (नफरत) रखते हैं. ऐसा न होता और राय साहिब सत्यके खोजी और निर्णयकर्ता होते तो कदापि सभासे उठकर न भागते और नीचा न देखते. धिक्कार हो ऐसे दुराग्रहको कि

जिसके कारण मनुष्यको हेयाज्ञेयका विचार नहीं रहता. यह सब यथोचित शिक्षाका अभाव और कुसंगतीका फल है. किसी नीतिकारने क्या अच्छा लिखा है कि "अहो दुर्जन संसर्गात् मान हानिः पदे पदे पावको लोहसंगेन मुद्गरैरभि हन्यते ॥ १ ॥ इत्यलम्.

एक जैनी.

श्रीयुत संपादकजी जय जिनेन्द्र. कृपया अधो लिखित लेखको जैन मित्रमें स्थान दें.

मैंने जैन गजट अंक १० ता. १ अप्रेल सन १९०२ को आद्योपांत पढा श्री बिंब प्रतिष्ठोत्सव सिवनीका हाल पढ कर अतीव हर्ष हुवा रोमाञ्च तक खडे होगये. मैं उन सेठ साहिबको जिन्होने की ऐसे महान् धर्म कार्यका शुभ अवसरमें प्रारंभ करके अपनी उदारताका परिचय देते हुवे अत्यंत सुंदरताके साथ सम्पूर्ण किया और सर्व उपस्थित भाइयोंके हृदयकमलको प्रफुल्लित करके अपने परिश्रम, धन व मनुष्य जन्मको सफलीभूत किया. शुद्ध अन्तःकर्णसे कोटिशः धन्यवाद देताहूं और उन धर्मात्मा भाइयोंको भी जिन्होनें कि अपने अमोलिक समयको व्यापारादि कार्योंको तुच्छ समझकर और उस ओर ध्यान न देकर ऐसे महान् धर्मोत्सवार्थ अर्पण किया और मनुष्यजन्म और जैन जातीमें उत्पन्न होनेका लाभ उठाया. धन्यवाद देनेसे मुखको बन्द नही रख सक्ता. परंतु अत्यंत शोकका विषय है कि ऐसे शुभ अवसरपर जिस्मे कि २५००० के अनुमान पुरुष व स्त्री उपस्थित थे. जैन इतिहास सोसायटी फंडमें केवल ४१२८= आये. हाय २ शोक महाशोक, कि इतिहास सोसायटीका जिसका कि मुख्य उद्देश यह है कि वह जर्मन और अमेरिकादि देशोंसे जहां कि जैनियोंके सहस्रों वा इससे भी अधिक इतिहास और ग्रंथ उपस्थित है. मूल्य भेजकर और उनकी प्रतियां मंगवाकर जैनियोंके कर्ण गोचर करें और भाइयोंको जो कि स्वमत सम्बन्धी इतिहासादि न मिलनेके कारण अन्यमत सम्बन्धी इतिहासोंको पढते हुए अपने असली धर्मसे च्युत होते चले जाते हैं. फिर धर्ममें दृढ करनेका परिश्रम उठावे और जो कि उपरोक्त विषयमें तन मन धनादिसे कोशीश करभी रही है. ऐसा निरादर किया जाय. क्या ऐसे शुभ अवसरपर जब कि बहुतसे धनाढ्य भाईभी उपस्थित होंगे. ग्रंथों और इतिहासोंकी प्रतियोंके मूल्य योग्य चंदा होना कुछ कठिन बात थी ? नहीं. नहीं. यदिकमसेकम हरएक भाई एक रुपयाभी देता तोभी २५०००) एकत्रित हो सक्ते थे. हाय ! हाय ! हमारी जैन जाती जो कि बहुत धनाढ्य समझी जाती है ऐसे अत्यंत आवश्यकीय धर्मकार्यमें सहायता देनेसे प्रमादी रहै. क्या आप यह समझते हैं कि जर्मन अमेरिकादि दूर देशांतरोंसे प्रतियां मंगवानेमें २००) या ४००) व्यय होंगे. नहीं, नहीं. प्यारे भाइयो, उसमें सहस्रों किंतु इससेभी अधिक द्रव्यकी आवश्यकता है. तत्पश्चात् यह पढकर कि उपदेशक फंडमें केवल २९७॥=) आये इससे भी अधिक शोक हुवा क्योंकि आप स

महाशयोंपर भली भांति विदित है कि इस निकृष्ट कालमें उन जैन साधुवोंका जो कि पूर्व समयमें अपनी सदुपदेश रूप सूर्यकी किरणोंसे भव्य जीवरूप अम्बुजोंको विकाशित करते थे और धर्मामृतरूप बाणिकी धारासे भव्यों रूप वृक्षोंको सींचते थे अर्थात् संसाररूप समुद्रसे पार उतरनेके लिये प्रोहण सदृश थे. अभावहीसा है और यहही कारण है कि अब बहुतसे अपने भाईभी उपदेश न मिलनेके कारण अपने धर्मको न जानते संते अन्य मतानुयाइयोंके उपदेशको सुनकर अपने असली धर्मसे च्युत होते चले जाते हैं. अपने भाइयोंको ऐसी बुरी अवस्था में देखकर हमारे परम धर्मात्मा भाइयोंने एक उपदेशक फंड खोला और जगह २ उपदेशकों द्वारा धर्म व्याख्यानकी वृष्टि कराई और उन भाइयोंको जो कि धर्मके नाम तकसें अज्ञात थे और प्रमादके भंवरमें पडे थे धार्मिक उपदेशरूप सुंदर वायुसे सचेत किये. परन्तु शोकका विषय है कि हमारे भाइयोंने ऐसे धर्म फंड की जिसमें कि द्रव्यकी अत्यंत आवश्यक्ता है सहायता करनेसे मुख मोडा और बिंबप्रतिष्ठोत्सव जैसे शुभ समय पर भी कुछ अधिक संतोषनीय सहायता देनेमें असमर्थ रहे और यह ही कारण है कि उपदेशक फंड पहिलेसे बहुत गिरी हुई दशामें है और प्रतिदिन और भी हीन दशाका आश्रय लेता चला जाता है. मैं सर्व भाइयोंसे प्रार्थना करता हूं कि वे अवश्यही फंडकी हीन दशाकी ओर दृष्टि करें और इसको सम्भालें. तत्पश्चात् यह स्मरण आते हुए कि आगामी वर्षमें छिन्दवाडेमें बिंबप्रतिष्ठोत्सव होगा मुझको हर्ष उत्पन्न होता है परन्तु सब भाइयोंकी दृष्टि इस ओर कराता हूं कि वे अवश्य वहां पधारकर उपरोक्त दोनों फंडोंकी मन बचन कायसें सहायता करें और सिंगई खेमचन्द व लक्ष्मीचन्दजीसे यही प्रार्थना करता हूं कि यह अवश्यही उपरोक्त दोनों फंडोंमें सहायता करें क्योंकि यदि ऐसेही धनाढ्य भाई इस और ध्यान न देंगे और सहायता न करेंगे तो अवश्यही जैन जाति इससे भी हीन दशाको प्राप्त होगी और पश्चातापके सिवाय और कुछ भी न होगा. अब मैं अपने लेखको सम्पूर्ण करता हुवा भाइयोंसे प्रार्थना करता हूं कि यदि कोई अनुचित शब्द लिखा गया हो तो पाठक जन क्षमा करें.

समस्त जैन जातिका कृपाकांक्षी,
रामलाल जैन.
सदर बाजार मियांमीर.

संशयावली.

पंडित शिवशंकरजी शर्मा बडनगर के अंक ९ में दिये हुवे उत्तर में.

द्वितिय प्रश्नके उत्तरमें आप लिखते हैं कि अहिंसामय जिनशासनमें पंचामृताभिषेक मूल संघाम्नायके ३ ग्रंथोंके अनुकूल नही है. परंतु इसमें निषेध साधक मूलाम्नायके ग्रंथका आधार पंडितजीनें नहीं छपाया. अतः प्रतीत होता है कि उनको ग्रंथका आधार मिला नहीं. यदि मिलता तो उसको प्रच्छन्न कर अनुमानका शरण कभी नहीं लेते. स्नपनार्चा स्तुतिजपा इत्यादिका श्लोकार्थ यह है कि साम्यभावकी प्राप्तिके लिये यथाम्नाय प्रतिमार्पित अर्हंतमें स्नपन, अर्चा, स्तुति, जप इन चारका और

यथाम्नाय संकल्पितार्हतमें स्नपनको छोड़ शेष ६ का योग करैं. इससे पंचामृताभिषेकका तो निषेध नहीं हुवा. पुनः निषेधार्थ सिद्धान्तसारके तीन श्लोक प्रमाणमें दिये, परंतु सुर देवादि कृत जलअभिषेकके विधानसेही सिद्धान्तसार मूल संघाम्नायका ग्रंथ नहीं हो सक्ता. और उन श्लोकोंमें भी देवोंकि कर्तव्यका कथन है. न कि ऐसा उपदेश कि उपासकोंको नित्य नैमित्तिक उत्सवोंमें शुद्ध जलसेही अभिषेक करना चाहिये. और यह सिद्धान्तसारमें लिखा भी नहीं अतः सिद्धान्तसारसे पंचामृतका निषेध नहिं हो सक्ता. एवं आदिपुराणके भी जो दो श्लोक दिये हैं वे भी देवोंहीके कर्तव्यको द्योतन करते हैं. और शास्त्रोंमें लिखा हुवा कर्तव्य अर्थात् किसी पुरुषका किया हुवा आचरण विधि अर्थात् आज्ञा रूप नहीं होता. यदि ऐसा हो तो वज्रकर्ण नामक राजा अर्हत् प्रतिबिम्बको अपनी अंगुष्ट मुद्रिकामें रखता था. उसके अनुसार क्या हम भी अंगुष्ट मुद्रिकामें मूर्ति रखने लग जाय. कदापि नहीं. भाई साहब अपने लिये विधि अर्थात् आचार्योंकी प्रवर्तनार्थ आज्ञा प्रमाण होती हैं. अतः मूलसंघाम्नायके पूजन प्रकर्ण विधायक ग्रंथोंमें नित्य नैमितिक पूजन व अभिषेककी विधि जिस प्रकार वर्णित है. उसहीके अनुसार अपनको प्रवर्तना उचित है. और वही प्रमाणभूत है. क्योंकि यह प्रकर्ण आज्ञासे सम्बन्ध रखते हैं. अतः इनके द्वारा जो पूर्णतया निर्णीत विषय हो वही प्रकाशित करना उचित है. और निषेध साधनार्थ लोकोक्तिसे जो यह लिखा कि शुद्ध जलाभिषेकसे काष्ठ प्रतिमाका स्फोटन होता था. इसलिये काष्ठासंघियोंने पंचामृताभिषेक चलाया उसही प्रकार प्रति पक्षमें हम भी यह कह सकते हैं कि आधुनिक संघवालोंने धातु पाषाणके प्रतिबिम्बोंकी जिला बिगडनेके भयसे पंचामृताभिषेक उठा दिया. इसमें प्रमाण क्या ? क्योंकि दोनों युक्ति समकक्षी हैं. इससे यह भी प्रतीत होता है कि पंडितजीने काष्ठासंघका मुख्योदेश काष्ठ प्रतिबिम्बही माना है. परंतु यह नहीं. और इन्द्रनन्दि स्वामीने नीति सारमें लिखा है ॥ श्लोक ॥ श्री भद्रबाहु श्री चंद्रो जिन चंद्रो महामतिः ॥ गृद्धपिच्छ गुरूः श्रीमान् लोहाचार्यो जितेन्द्रियः ॥१॥ एलाचार्यः पूज्यपादः सिंघनन्दी महाकविः ॥ वीरसेनो जिनसेनो गुर्णनन्दी महातपः ॥ २ ॥ समन्त भद्रः श्री कुंभ शिव कोटीः शिवंकरः ॥ शिवायनो विष्णुसेनो गुणभद्रो गुणाधिकः ॥ ३ ॥ अकलङ्को महाप्राज्ञः सोमदेवो विदाम्बरः ॥ प्रभाचंद्रो नेमिचंद्र इत्यादि मुनिसत्तमैः ॥ ४ ॥ यच्छास्त्र रचितं नूनं तदेवादेय मन्यकैः विसंघै रचितं नैव प्रमाणं साध्वपिस्फुटं ॥ ५ ॥ इनमें पांचवें श्लोकका भावार्थ ऊपर कहे हुए आचार्यों कर जो शास्त्र बनाये गये हैं, वे तो प्रमाणभूत हैं. और अन्य संघवालोंके रचे हुये प्रमाणभूत भी प्रमाण नहीं है. ऐसा है और श्लोक चतुर्थमें इत्यादि मुनिसत्तमैः यह जो पद है इससे और भी मूलसंघी आचार्योंका ग्रहण है. तथा उपरोक्त आचार्योंने जिन २ को ग्रंथोंमें नमस्कार किये हैं, वे भी स्वतःही प्रमाण हैं. जैसे आदिपुराण प्रथम पर्वमें 'जयसेन गुरूः पातु बुध वृन्दाग्रणी सनः' इससे वसु बिंदुस्वामी, क्योंकि उन्होने प्रतिष्ठापाठके अंतमें लिखा है कि 'जयसेनाऽपराख्यायाम् मा भ्रमोस्तु हितैषिणम्' अर्थात् मेरा नाम जयसेन भी है. सो उसमे किसीको भ्रमन होय. इससे वसुबिन्दु स्वामीके वचन भी आदेय है, ऐसा सिद्ध होता है. और इनही प्रमाणभूत आचार्योंमें सोमदेवजीके रचे हुये यसस्तिलक चंपूके उपासकाध्ययन प्रकर्णके आठवें उच्छ्वासमें पंचामृताभिषेक सुस्पस्ट अभिषेक श्लोकोंसहित

लिखा हुवा है. और भी इनही आचार्योंमेंके बनाये हुवे अकलंक प्रतिष्ठापाठ, जिनसंहिता, इन्द्रनन्दि संहिता, पूजासार आदिमें भी यह विषय लिखा हुवा है. जिससे हमको दृढ निश्चय है कि पंचामृताभिषेक करना. फिर क्योंकर हम पंचामृताभिषेकको अनुचित समझें. और आधुनिक विद्वानोंकेलिखे निराधार भाषा ग्रंथोंसें संस्कृत ग्रंथोंको झूठे मान बैठें. और पंडितजीके कहेसे निगोदके भागी हो जांय. यह कभी भी सम्भव नहीं हो सक्ता. अतः हम उपरोक्त पंडितजीसे निम्नलिखित प्रश्न करते हैं. जिसका उत्तर पंडितजी शीघ्र देकर हमारे संशयको दूर करें. ऐसी प्रार्थना है. (१ प्रश्न) मूलसंघ और काष्ठासंघमें क्या २ भेद है? तथा इन दोनोंकी उत्पत्ति कैसे हुई? (२ प्रश्न) काष्ठासंघ और मूलसंघाम्नायके ग्रंथोंकी क्या पहिचान है? जिससे हम समझें कि इस शास्त्रको मानना और इसको न मानना. (३ प्रश्न) पंचामृताभिषेकके निषेधमें मूलसंघके किनकिन ग्रंथोंके कौन २ से प्रकरण व अध्यायमें क्या क्या श्लोक दिये हैं जिनका पता और निषेधके आज्ञारूप श्लोक लिखें; जिससे मेरा और अन्यभी भाई जो उपरोक्त लेखसे संदेह सागरमें मग्न होगये हैं, उनका उद्धार हो जाय. तथा निगोदमें जानेसे बचाव हो. आशा है कि उपरोक्त पंडितजी और अन्यभी विद्वानगण हमारे तीनों प्रश्नों के उत्तर मूल आम्नायके ग्रंथोंके श्लोकों द्वारा अतिशीघ्र देकर मुझे अत्यंत कृतार्थ करैंगे, यदि कोई भाषा बचनिका ग्रंथोंका आधार देंगे तो हम सर्वथा नहीं मानेंगे. इत्यलम विद्वत्सु. निर्णिनीषु रहमेका जैनः

बनारस परीक्षोत्तीर्ण जैन विद्यार्थियोंकी नामावलि. यू. पी. आग्रा व अवधके गवर्नमेंट गजट (ता. ३ मई. सन १९०२.) से ग्रहीत.

नाम विद्यार्थी.	जाति.	विषय.	नंबर.	अध्ययन स्थान.
१ मेवाराम वैश्य.	अग्रवाल.	न्यायमध्यम परीक्षायां तृतीयखंडे.	१ प्रथम.	जैन पाठशाला खुर्जा.
२ स्यामसुंदर वैश्य.	„	„	२ द्वितीय.	„
३ बन्सीधर वैश्य.	पद्मावती पुरवाल.	न्यायमध्यम परीक्षायां प्रथम खंडे	२ द्वितीय.	„
४ श्रीलाल वैश्य.	खंडेलवाल.	व्याकर्ण मध्यम परीक्षायां तृतीय खंडे.	३ तृतीय.	जैन पाठशाला अलीगढ
५ झम्मनलाल वैश्य.	लमेचू.	„	१४ चतुर्दश.	दि. जै. म. वि. मथुरा

हम आशा करते हैं कि अन्य धनिकगणभी इनका श्रम देखकर इनका अनुकरण करेंगे और जैन धर्मकी प्रभावनाके सच्चे प्रचारक बनेंगे.

ह० पं० गौरीलाल उपमंत्री.
दि० जै० परीक्षालय दिल्ली.

श्रीमान् सम्पादकजी, जय जिनेन्द्र. कृपाकर निम्नलिखित लेखको जैनमित्रमें मुद्रितकरके कृतार्थ करैंगे. हर्षका विषय यह है कि यहां सम्वत १९५४ के सालमें रथ जात्राके समय अन्यमती लोगोंने उपद्रव करके बहुत अविनय किया था. जबसे रथ जात्रादि सर्व प्रकारके धर्म कार्य बंध थे. इसके लिये हमने जगह २ सर्व सज्जनोंसे प्रार्थना करी, मुम्बई, अजमेर, खुर्जा, हातरस, कानपुर, इन्दोर, उज्जैन, लश्कर आदि. परंतु किसी स्थानसे भी बराबर जबाब नहीं आया हमने रथजात्रा मेला होनेके हुकुम नकल व कागजात मंगाये परन्तु किसी स्थानसे भी नही आये. फक्त दिल्लीसे भाई सोहनलाल किशोरीलाल जरी किनारीवालोने एसे जबरजस्त कागजात भेजे कि हम लिख नहीं सक्के. और थोडे कागजात कानपुरसे भाई बालाबक्सजी साहेबने भेजे. उन कागजोंकी मदतसे कारवाही करते रहे. कई बार बहुत मजबूतीके साथ हुवा और सब कामका बंदोबस्त हुवा परन्तु अन्य मतियोंने ऐसी कार्रवाही करके एकदम हुकुम बदलकर बंदीका हुकुम दे दिया. यहां तक कि सम्बत १९५८ आसोज बदी ३ की रथ जात्राका परवाना हमारे नाम वजरिये नोटिस आफिसरके यहांसे जारी हो गया. सब जगह मेलेकी खबर भेज चुके पूरा बंदोबस्त हो गया. आखिर भादो सुदी १३ को एकदम हुकम हुवा कि रथ जात्रा बंद की जावे.

उस बखत जैसा दुःख हमको हुवा हम लिख नही सक्के. लाचार होकर फिर सब जगह चिठियां देना पडा कि रथयात्रा मोकूफ है कोई मत आवो. इसमें बहुत बदनामी हुई परंतु दरजा लाचारी फिर आजतक कोसीस होती रही. अब एक चिठी जो सम्बत १९५७ में कारनेल दरमेन साहब बहादुरजीने रथयात्रा करनेकेवास्ते दिल्लीके फेसलेको देखकर उसी मुवाफक हुकुम लिखकर दिया था. उस चिठीके जरियेसे और मेजर मेन साहब बहादुरके परिश्रमसे कि जिसका हाल हम अपनी लेखनीसे नही लिख सक्के. क्योंकि जैसी जैसी तरकीबोंसे बडी कोशिसके साथ बंदोबस्तका पक्का हुकुम दिया. और व मुजब हुकुम साहब बहादुरके रिसालदार मेजर मलक गुलाम महमद खां साहेबने एक गारद रसालेका जंगी व कोतवाल जमादार व पुलिशका पक्का बंदोबस्त करके मिती वैशाख सुदी ५ सोमवार व सुदी ६ मंगलवारतक बंदोबस्त रखकर रथयात्रा बडी हिफाजतके साथ हुई. उस बखतका हाल हम कहांतक लिखे देखनेसेही जाना जाता.

१ सुदी ५ सोमवारको सरेबाजारमें होके बडे धूमधामसे नगारे निशान मय अंग्रेजी बाजेके नृत्य भजन होते हुए बगीचेमें पधारे. दिनभर पूजन व रात्रभर भजन नृत्यगान होते रहे.

सुदी ६ मंगलवारको सरेबाजारमें जलूस जिस धूमसे गयेथे उसी मुजब वापिस आकर श्रीमंदिरजीमें पधारे. जैनी मरद लुगाई कुल मिलकर करीब एक हजारके एकत्रित हुएथे.

बगीचेमें जाती दफे अन्य मतियोंने नीच लोंगोंको बहकाके उपद्रव कराने का इरादा किया था. और ऐसा उपद्रव किया कि जिसका कुछ उपाय नही परंतु धर्मके प्रशादकर सब लोग

पकडे गये. इसमें कुछ तो हलकी आतके आदमी थे और एक दो बडे आदमी भी थे सबको एक २ दर्जन बैतकी सजाका हुकम हुवा. कुछ लोग बीच बाजारमें पिटवाये गये और गांवसे बाहिर निकाले गए और कुछ लोग हमारी कोदीससे कैद की सजाके बदले जुर्मानेसे छोडे गये. हम अपने शुद्ध अन्तःकरणसे कोटिशः धन्यवाद लाला सोहेनलालजी किशोरीलालजी दिल्लीवालोंको तथा बालाबक्सजी कानपुरवालोंको देते हैं कि जिन्होने बडी मदत्त के जगह २ के हुकुम तथा फेसले तथा नकलें भेजे जिसके जरियेसे हम लोगोंने बहुत कुछ उद्योग किया जिससे अपनी विजय हुई. हम प्रार्थना करते हैं कि सर्व भाइयोंको धर्म कार्यमें ऐसीही प्रीति रखनी चाहिये. जिससे धर्मकी विशेष प्रभावना होवे. और जुमले साहबानके जिनसे हुकुम मिला उनको अनेकानेक धन्यवाद देकर आशा करते हैं कि न्यायके प्रशादकर इन लोगोंको बडा दर्जा मिले याने लार्ड-का दर्जा हो.

समस्त जैनी पंच

गूणा छावणी

ज्ञान प्रकाशिनी जैन सभा बडनगर मालवाकी जय जिनेन्द्र. आपको प्रसन्नताकी खबर सुनाते हैं कि आजकल हमारे यहां पाठशालामें पढाई महाविद्यालयके क्रमानुसार होती है. जिसमें लडके ३९ व लडकियां ४९ का रजिष्टर शुमार है. और जिनमें मुख्य अध्यापक पं० शिवशंकर शर्मा व एक और असिस्टेंट पंडित भी है और बालिकाओंके वास्ते एक पंडिता है. परन्तु उपरोक्त पंडितजीकी पढाई बहुत उत्तम पाई जाती है. क्योंकि विद्यार्थियोंके चित्तकमलको तत्काल प्रफुल्लित कर देते हैं. और उनके चित्तपर पढा हुवा अचल रहता हैं सो आशा है कि यदि हमको ऐसे पंडितजीका समागम रहातो कुछ दिनमें पाठशाला उन्नतिको प्राप्त होगी इसी अवसरमें बडवानी नीवासी सेठ चंपालालजी पधारे थे जिन्होने लडके तथा लडकियोंकी परीक्षा ली जिसमें उनको बडा हर्ष हुवा और उन्होनें दोनू पाठशालाओंमें कुलविद्यार्थियोंकोपारितोषक दिया और पंडित शिव शंकरजी शर्मा मुख्य अध्यापकको भी भेट दीनी. इश्वरसे यही प्रार्थना है कि सदा ऐसेही विद्योन्नति बढकर जहांतहां जैन धर्मका अधिक प्रचार हो. सही महामंत्री

(प्रश्न १) सोहं इसका जाप ग्रहस्थोंको लेना उचित है या नहीं ?

(प्रश्न २) आत्मप्रदेश संकोचविस्तार-रूप कैसे होते हैं ?

(प्रश्न ३) भगवानकी ध्वनी अक्षरात्मक होती है या अनक्षरात्मक ?

इस लेखको आप अपने जैनमित्रमें अवश्य देवे ता कीं हमको उत्साह बढे.

प्रश्नकर्ता—शिवशंकर शर्मा

यादी १ सरस्वती भंडारके वास्ते उपदेशक अनंतराज सघवेकी मार्फत वीरगांवमें एकत्रित हुवा जिस्की द्रव्यदाताओंके नाम

११) महादूराम दगडूरामजी मांडवडकर

९) छगनीरामजी नारायणदासजी वीरगांव

२॥) राजाराम मोहनलाल नांदगांव

२) गिरधारीलाल कन्हैयालाल कन्नड
१।) भाऊलाल गोविंदराम नांदगांव
॥=) प्रतापरामजी लुहाडा ,,
१) रामलालजी सेउरकर
॥) गोपालदासजी पहाडे भरुंडगांव
१।) हरलालजी चुन्नीलालजी कोकंठाण
१) गंगारामजी दौलतरामजी संवत्सर
१) चंदुलालजी चुन्नीलालजी कापुसवडगांव
१।) भाऊलालजी पाटणी नांदगांव
१) सवाई रामजी पहाडा भारम
॥) गणूलालजी काशलीवाल रुईगांव
॥) गुलाबचंद हीरालाल वीरगांव.
१) साहेबरामजी कचरदासजी वागलगांव.
॥) नथमलजी लुहाड्या नाहूर.
१) कस्तूरचंद पाटोदी ,,
१।) सुकलालजी पहाड्या कवलाणे.
२) मणूलालजी पाटणी कनकोरी.
२) सुकलालजी पापडीवाल देवलगांव.
२) कचरदासजी आलमचंदजी पाहाड्या वीरगांव
॥) भाऊलालजी काशलीवाल नारसर.
॥) सुकलालजी अजमेरा कोपरगांव.
॥) विठलदासजी महादूरामजी दगडे देवगांव
१।) भागचंदजी दगडे नांदगांव.
१।) सोभागचंदजी सवाईराम बाबुलगांव.
॥) चिमनीरामजी सेठी पात्रीकर.
॥-)सदासुखजी पाटणी वीरगांवकर.
१) कचरदासजी पापडीवाल वाडगांव.
॥) रामचंदजी गंगवाल ,,
॥) बालचंदजी सेठी काकडी.
१) बालमुकुंद किसनलाल. ,,
॥) कस्तूरचंद गंगवाल वीरगांव.
॥) भागचंदजी रायचंद लुहाड़ा पाडळदे.
१) वंकटलालजी पापडीवाल देवगांव.
१) जेठमलजी जीतमलजी काशलीवाल खेतवाड

९७।)

इसमें हमारा कोई दोष नहीं है.

प्यारे पाठको! यह बात आप अच्छी तरह-से जानते हैं कि संसारमें कोई कार्य्य कारणके बिना सिद्ध नहीं होता. जैसे कि दाल आटा अग्नि आदिके बिना रसोई नही बन सकी अथवा रसोईकी सामग्री उत्तम नही होती तो रसोई भी उत्तम नही बनती है तथा उसमें भी अगर खानेवाले रसोइयाको रसोई बनानेकी क्रियामें पूर्ण स्वतंत्रता न दे तो रसोईके उत्तम बननेके दोषका भागी रसोइया कदापि नही हो सक्ता. ठीक इसही प्रकारकी अवस्था हमारे महाविद्यालय मथुराकी है. क्यों कि प्रथम तो महाविद्यालयकी मूल पुंजीमें केवल ३०,०००) रु० जिससे कि मकानका भाड़ा तथा अनाथ विद्यार्थियोंका भोजन खर्च दूरही रहो. केवल अध्यापकोंकी तनखाका कामही नहीं चल सक्ता. दूसरे महासभाके सरस्वती भंडारमें पंडित परीक्षामें समस्त खंडोंमें पढाने योग्य शास्त्रोंकी एक २ प्रति भी नहीं है. तीसरे महाविद्यालयका स्थान ऐसे नग्रमें है कि जहांपर अपने घरका खर्च पाकर पढनेवाले विद्यार्थियोंकी प्राप्ति कष्टसाध्यही नहीं किन्तु असंभव है. ऐसी अवस्था होनेपर भी यदि प्रबंध कर्ताओंको प्रबंध करनेमें स्वतंत्रता प्राप्ति न हो तो महाविद्यालयका फल उत्तम न होनेके

दोषका भागी प्रबंध कर्ता नहीं हो सक्ता. इसीसे हम कहते हैं कि इसमें हमारा कुछ दोष नहीं है.

गोपालदास बरैया.
मंत्री महाविद्यालय मथुरा.

निर्माल्य द्रव्यसंम्बधी चर्चा.

पाठकोंको मालूम होगा कि गत अंकोंमें भाई पन्नालाल गोधा शेरगढ़वालोंने उक्त विषयपर अनेक शंकायें कीनी है उनका उत्तर करनाही इस लेखका उद्देश है.

१ निर्माल्य द्रव्य पूजन करनेके बाद मंदिरजीके बाह्य किसी नियत स्थानमें जिसको कि निर्माल्य कूट या संस्कार कूट कहते हैं निक्षेपण करना चाहिये. जहांपर पूजन किया जाता है वहींपर छोड देनेपर मंदिरजीके नौकरके सिवाय और कोई दूसरा आदमी नहीं ले सक्ता है. ऐसा होनेसे हमारे भाई लोभाविष्ट होकर वह निर्माल्य द्रव्य उस नोकरकी नोकरीमेंसे मुजरा लेने लगते हैं. जिससे कि निर्माल्यके ग्रहणका दोष उस नोकरको छोडकर हमारे भाइयोंकी गर्दनपर सवर होता है. मंदिरके बाहर निर्माल्य कूटमें निर्ममत्व भावसे निक्षेपण करनेमें कोई दोष नहीं है. क्योंकि निर्माल्य ग्रहणरूप क्रियामें उसकी किसी प्रकार प्रेरणा नहीं है.

मिथ्यानी और अज्ञानी निर्माल्य द्रव्य ग्रहण करनेके अधिकारी नहीं हैं. किन्तु ऐसा अभिप्राय समझना चाहिये कि शास्त्रोंमें निर्माल्य ग्रहण करनेवाला सदोष बतलाया है. इसलिये जो कोई निर्माल्य ग्रहण करेगा वह पापका भागी होगा. भावार्थ पापी लोग निर्माल्यका ग्रहण करते हैं. अथवा पापी लोग निर्माल्य ग्रहण करनेके अधिकारी हैं. इन दोनों वाक्योंमें केवल वाक्य-रचनाका भेद है, दूसरा कोई नहीं. फिर आपने लिखाहै कि इस विषयमें शास्त्र प्रमाण क्या है. सो हरएक विषयोंमें शास्त्रका अभिप्राय तथा अविरुद्धता लीजाती है. यह तो शास्त्रोंमें जगह २ मिलताही है. कि निर्माल्य ग्रहण करनेवाला दोषका भागी होता है. निर्माल्य कूटकाभी जगह २ उल्लेख है. और कूट नाम स्थानका है. इससे सिद्ध होता है कि पूजन करनेके बाद निर्माल्य द्रव्य निर्माल्य कूटमें निक्षेपण करना चाहिये. अन्यथा निर्माल्य कूटको व्यर्थता आती है. अब यहांपर यह सवाल उठसक्ता है कि वह निर्माल्य कूट मंदिरके भीतर होना चाहिये या बाहर होना चाहिये तो विचार करनेसे यही निश्चय होता है कि निर्माल्य कूट मंदिरके बाहरही होना चाहिये. क्योंकि भीतर होनेसे मंदिरके नौकरके सिवाय निर्माल्यको दूसरा आदमी कोई ग्रहण नहीं कर सक्ता और ऐसा होनेपर मंदिरके पंच लोभवश होकर उस निर्माल्य द्रव्यको नोकर कीतनख्वा में से मु-जरा लेने लग जाते हैं. जिससे कि निर्माल्य ग्रह-णका दोष उस नौकरको छोडकर उन पंचोंका आश्रय लेता है.

जैनजातीका दास
गोपालदास बरैया.

दिल्ली दरबार.

दिल्लीके दरबारमें १ मंडप ऐसा बन रहा है, जिसमें १२ हजार लोग बैठकर अच्छी तरह बहार देखेंगे. कारण १ तो खम्बे वगैरहकी रुकावट नही. दूसरे बैठकें भी सब उंची नीची लगाई हैं. बीचोंबीच बडे लाट रहेंगे और खडे होकर एक लेक्चर देंगे और बडे लाटकी वाणी ३६० फुट तक पहुंचेगी.

समालोचना.

हमारे जैनपत्रोंके सुप्रसिद्ध लेखक श्रीयुत भाई दर्यावसिंहजी हिन्दी हेडमास्टर सेन्ट्रल कालेज रतलामने अपनी निर्मल बुद्धि कर संकलित व्याकरण सार नामकी पुस्तक भेजी है. जिसको देखकर हमारे अंतःकरणमें जो असीम हर्ष हुवा वह अकथनीय है. कारण हमने हिन्दी भाषाके बीसों व्याकरणोंको दृष्टिगोचर किये. परन्तु जैसा अल्प अक्षरोंमें बहुतसा सार सुगमताके साथ इसमें खेंचा गया है. वैसा अन्यमें नहीं. अतः हिन्दी भाषाका व्याकरणसार जो इसका नाम है, सो वास्तवमें यथार्थ है. इसको पढनेसे अल्पावस्थापन्न सुकुमार शिशुगण भी अनायास छ मासमें हिन्दी भाषाके रहस्यवेत्ता होसक्ते है. अन्यकी तो कथाही क्या! हम बहुत दिवसोंसे चाहते थे कि यदि कोई भाषा व्याकरणकी सुगम पुस्तक मिले तो हम उसे बालबोध परीक्षामें नियत करें. परंतु अब यह अनायासही हमको प्राप्त होगई. अतः आशा है कि सम्पूर्ण जैन पाठशालाओंके प्रबंधकर्त्ता महाशय इसको अपनी २ पाठशालाओंमें नियत करके असीम लाभ उठावेंगे. और ग्रंथकार महाशयकाभी परिश्रम सफल करेंगे.

अमन्दानन्दानन्दन.

प्रिय पाठक गण महाशय, इससे बढकर अन्य हर्ष का विषय क्या होगा कि जिसकेलिये हम चिरकालसे उत्कंठित हो रहे थे, जिसकेलिये अहर्निश श्री जिनेन्द्र चंद्रसे प्रार्थना करते थे, और जिसके राज्याभिषेक वृत्तान्तको कर्णद्वारा सुनकर हमारा अन्तःकरण आनन्दामृतसे पूरित हो उछलने लगता था वही भारतेश्वर श्रीमान् सप्तम एडवर्ड महोदयका राज्याभिषेक गत ता. ९ अगस्तको निर्बिघ्न होगया. उस समयमें जो आनंद हमारे अन्तःकरणमें हुवा वह तो स्वानुभव गोचर हो है, कह नहीं सकते. परन्तु उस आनंदका प्रदर्शन सर्व साधारणके अर्थ जो हमने बम्बईमें प्रकटरूपसे कर दिखाया वह भी कम नहीं है. तथापि उसका दिग्मात्र अंश आपको भी प्रदान कर हम अमन्दानन्दसे आनन्दित करते हैं. जरा वांचिये. ९ तारीखके प्रातःकाल बहुतसे भाई देवाधिदेवकी पूजन कर निर्विघ्न राज्याभिषेक होनेकी प्रार्थना करी, तदनन्तर दोपहरके १ बजेसे तीन बजे तक दिगम्बर जैन प्रांतिक सभाके स्थानपर एक नैमित्तिक सभा हुई. जिसमें प्रथमही श्रीयुत महाशय धन्नालालजी काशलीवाल मंत्री विद्या बिभागने मंगलाचरण कर श्रीयुत सेठ माणिकचन्दजी जौहरीको सभापति नियतकर शेठ हीराचन्दजी आनरेरी माजिस्ट्रेट शोलापुर व मंत्री उपदेशक फंडसे व्याख्यान देनेकी प्रार्थना करी जिसको सहर्ष स्वीकार कर हीराचन्दजी साहिबने सभा करनेका मुख्य प्रयोजन यह बता या कि जो सुख हम जैनियोंको इस ब्रिटिश राज्यमें मिल वैसा बादशाही समयमें नहीं क्योंकि मिसाल मशहूर कि एक हातमें तलवार और एकमें कुरान अर्थात् या त कुरानको मानो नहीं तो तलवारको ऐसा अत्याच जिनके राज्यमें था उस समय हम हमारे जैन धर्मक सेवा यथोचित कैसे कर सक्ते थे कभी भी नहीं. परन्तु आज हमको धार्मिकाचरणमें वह स्वतंत्रता मिली जिसमें हम मेला महोत्सव प्रतिष्ठादि जो कुछ धर्म व

थे करें कर सके हैं और किये जिसमें प्रतिबंधकताके बदले सरकार हरएक प्रकारकी मदत देती है और कहती है कि तुम तुमारे धर्मको यथेष्ट पालो अतः ऐसे धर्मराजाके राज्याभिषेक बासरमें हम जैनियोंको आनन्द मानना और भारतेश्वरके गुणानुवाद करना और जिनेन्द्रदेवसे चिरायुताकी प्रार्थना करना मुख्य कर्तव्य है इत्यादि कहकर व्याख्यान समाप्त किया. तदनंतर हीराचन्द गुमानजी जैनबोर्डिंग स्कूलके सुपरिन्टेन्डेन्ट, और प्रान्तिक दिगम्बर जैन संस्कृत विद्यालयके प्रधानाध्यापक श्रीयुत पं० ठाकुर प्रसादजी शर्मा वैयाकरणाचार्यने बडी मिष्ट ध्वनीसे कहा कि पहलेके बादशाह जिन जैन ग्रंथोंको जलाकर उनकी आंचसे गरम जल करते थे उनही जैन ग्रंथोंके लिये आज गवर्नमेन्ट लक्षावधि रुपयेके खर्चसे उनको हर प्रान्तमें स्थापित करी हुई लायब्रेरियोंमें संग्रह कर बडी हिफाजतसे रखती हैं और प्राचीन जैनी राजा मुनी आदिकोंका पता स्थल २ के शिलालेखोंसे व सिक्कोंसे लगाकर इंडियन् आंटिक्वरी आदि पुस्तकोंमें मुद्रित करा रही है यह कितना बडा उपकार है इत्यादि औरभी बहुतसे लाभ दिखाकर अन्तमें कहा कि जैसा लाभ मुख्यकर जैनियोंको इस राज्यसे हुवा वैसा बौद्ध हिन्दू और मुसलमानोंके राज्योंमें नहीं. अतः जैनी लोग सरकारसे बडे उपकृत हैं इत्यादि कहकर समयाभावसे अपनी वक्तृता पूर्ण करी तदनंतर जयपुर जैन महापाठशालाके मुख्यछात्र पं. जवाहिरलालजी साहित्यशास्त्री अध्यापक-दिगम्बर जैनपाठशाला बम्बईने अपने बनाये हुये अपूर्व संस्कृत धारा और बहुतसे श्लोकोंद्वारा राजराजेश्वरके राज्यका गुण वर्णनकर भगवान्से सम्राटके चिरकाल भारतेश्वर रहनेकी प्रार्थना करी पश्चात् श्रीयुत पन्नालालजीने राज्यभक्तिकी आवश्यका बता उपरोक्त महाशयोंके कथनको पुष्टकर सबसे रात्रिके ७॥ बजे जैन बोर्डिंगस्कूलकी सभामें पधारनेके अर्थ प्रार्थना कर आनंदकेसाथ भगवानसे सम्राट्की चिरायुता चाहते हुये जय २ ध्वनिसे सभा विसर्जन कराई.—

नोट पाठकगणोंसे निवेदन है कि स्थानाभावके कारण हम पं. जवाहिरलालजी साहित्यशास्त्रीकी अपूर्व कविता और जैन बोर्डिंगस्कूल बंबईकी सभाके वृत्तान्तका आनन्द नहीं दे सके सो आगामी अंकमें अति शीघ्र प्रदान करेंगे इति.

पाठशालाका पुनरुद्धार

सहारनपुर पंजाब हातेमें एक बडाभारी शहर है जिसमें करीबन ११ मंदिर और ४०० घर जैनी अगरवाल भाईयोंके हैं वहांपर १ पाठशाला पहले थी परन्तु किसी कारण वश ५ बरससे बंद होगई थी परन्तु हर्षका विषय है कि गत कार्तिक मासमें पं. जवाहिरलालजी साहित्य शास्त्री और हकीम कल्याणरायजी उपदेशक. की प्रेरणा होनेसे वहांके सबे जातिहितैषी धर्मात्मा जैनी भाईयोंने पुनः जोलाई मासमें पाठशाला स्थापित करी है. जिसके मुख्याध्यापक पं. सुन्दरलालजी गोध (जो जयपुर महा पाठशाला के सुशिक्षित छात्र और बडेयोग्यहैं) नियतहैं जिसके कारण पाठशाला होतेही १४० का नंबर विद्यार्थियोंका होगया. तब प्रबंधक महाशयोंने दो पंडित और नियत किये जिसका धन्यबाद हम सहारनपुर के भाइयोंको देकर प्रार्थना करते हैं कि वहां के भाई इसको चिरस्थायी बनानेका यत्न करें और यथावकाश पाठशालाकी रिपोर्ट भेजकर हमें हर्षित करते रहें इति.

सूचना.

१ जिन महाशयोंको अपनी शंका दूर करनेके अर्थ किसी प्रकारके प्रश्न करने होवें वे अबसें अपने प्रश्न स्पष्ट अक्षरोंमें लिखकर विद्वज्जन सभाके मंत्री पं. नरसिंहदासजी जैनी अध्यापक दि. जैन पाठशाला अजमेरके समीप भेजें उक्त पंडितजी उत्तर देकर प्रश्नकर्ताको संतुष्ट करेंगे तथा छपने योग्य विषय होगा तो जैन मित्रमें छपनेकोभी भेजेंगे.

२ हमारेपास जैन पाठशालाके लिये दो जैनी पंडितोंकी मांग आई है. एक तो नांदगांव जिला नाशिकसे दूसरी नीमचकी छावनीसें. अतः जिनको यह कार्य करना स्वीकार होवे मंत्री, विद्याविभाग बम्बईसे पत्रव्यवहार करें. प्रवेशिका संपूर्ण खंड पढानेकी योग्यता वालोंको २०) और प्रथम खंड पढानेकी योग्यतावालोंको १२) और रहनेको स्थान दिये जांयगे इति.

Registered No. B. 288.

श्रीवीतरागाय नमः

जैनमित्र.

जिसको

सर्व साधारण जनोंके हितार्थ,

दिगम्बर जैनप्रांन्तिकसभा बंबईने

श्रीमान पंडित गोपालदास बरैयासे सम्पादन कराकर

प्रकाशित किया.

जगत जननहित करन कँह, जैनमित्र वरपत्र।
प्रगट भयहु-प्रिय! गहहु-किन? परचारहु सरवत्र!॥

तृतीय वर्ष } श्रावण सं. १९५९ वि. { अंक ११ वां

नियमावली.

१ इस पत्रका उद्देश भारतवर्षीय सर्वसाधारण जनोंमें सनातन, नीति, विद्याकी, उन्नति करना है.

२ इस पत्रमें राजविरुद्ध, धर्मविरुद्ध. व परस्पर विरोध बढानेवाले लेख स्थान न पाकर, उत्तमोत्तम लेख, चर्चा उपदेश, राजनीति, धर्मनीति, सामायिक रिपोर्ट, व नये २ समाचार छपा करेंगे.

३ इस पत्रका अग्रिमवार्षिक मूल्य सर्वत्र डांकव्यय सहित केवल १।) रु० मात्र है, अग्रिम मूल्य पाये बिना यह प० किसीको भी नहीं भेजा जायगा.

४ नमूना चाहनेवाले)॥ आध आनाका टिकट भेजकर मंगा सक्ते हैं.

चिट्ठी व मनीआर्डर भेजनेका पताः—

गोपालदास बरैया सम्पादक.

जैनमित्र, पो० कालबादेवी बम्बई—

कर्नाटक प्रिंटिंग प्रेस, कालबादेवी, मुंबई.

संस्कृत जैनविद्यालय बम्बई.

हम कईवार इस विषयमें धर्मरोचक विचार-सिक महानुभावोंसे प्रार्थना कर चुके हैं, कि उक्त विद्यालयमें पढ़नेकेलिये बहुतसे विद्यार्थियोंकी विज्ञप्तियें आनेपर भी स्कालर्शीपके प्रबन्ध विना उनकी विज्ञप्तियें सहसा स्वीकार नहीं कर सक्ते. अतः विद्यार्थियोंकी मासिक सहायताके हेतु द्रव्य प्रदान कीजिये. परन्तु खेदके साथ लिखनेमें आता है कि हमारी इस प्रार्थनापर प्रायः किसीने भी ध्यान नहीं दिया. अब पुनः निवेदन है कि सम्पूर्ण भ्रातृ गण इसको धर्मोन्नतिका मुख्य आयतनजान अति शीघ्रही बहुकष्टोपार्जित चंचल लक्ष्मीसे अचल यश और धर्मका लाभ प्राप्त करें. तथा कोई उत्तम श्रेणीकी विद्या पढ़नेवाले जैन छात्रोंको यहांपर पढ़नेको भेजें.

मंत्री विद्याविभाग.

अत्युत्कट शोकोद्गम.

पाठक महाशय! प्रतीत नहीं होता कि इस पवित्र जैन धर्मधारक सुजातिका क्या भवितव्य है. क्योंकि इस विकराल कलिकालके प्रविष्ट होते ही कैसी व्यवस्था होगई. जो देखते २ बड़े २ धनीमानी, यशस्वी विद्वान और धर्म व जात्युत्कर्षाभिलाषी मानव रत्नोंकी देहको यह महादुष्ट प्रचंड भुजदंडधारक त्रिलोकविजयी कृतान्त, नितान्त, अन्त करते हुए किंचित भी शान्तिताके प्रान्तको प्राप्त नहीं होता.

हा दुष्ट यमराज! क्या तुझे इस जैन जातिके-ऊपर द्वेष है. क्या तुझे इसके बिना तृप्ति नहीं होती. क्या तेरे योग्य और नहीं जो तू सबको छोड़कर इस जैन जातिमें सेही प्रतिदिन अल्पावस्थापन उत्तम उत्तम धर्म्मात्मा विद्वान और धनीमानी पुरुषोंकोही टटोल टटोल कर अपने कपोलोंकी पोलमें गोल मोल किये लेता है. रे आववेकी! क्या तुझे अपने नामपर भी लज्जा नहीं आती? जो समवर्ती कह लाकर असमवर्ती पनेका आचरण कर जैन जातिके रत्नोंके ग्रसनेको ही कमर कसी है, हा वंचक! तू शमन ऐसे धार्मिक नामको धारण कर हम भाले भालोंको ठग रहा है, रेनिर्दयी! जो तू चिरकालसे शोकाग्नि दग्ध हमारे हृदय व्रणके शमन करनेके स्थानमें भी नमकमिर्च डाल२के दूना चौगुना प्रज्वालितकर रहा है; तो और साधारणोंपर तो तेरी क्या प्रवृति होगी यह तूही जाने.

महाशयो! हम कहां तक इसको दूषण दें इसने हालहीमें दिल्ली जैन समाजके धोरी पं० शिवचन्द्रजी शर्म्मा का वियोग इस जैन जातिसे कर दिया है. उक्त पंडितजी कैसे योग्य विद्वान और जैन ग्रथोंके रहस्य वेत्ताथे, सो किसीसें भी छिपा नहीं होगा. आपने मनुष्य गणनाके ममयमें तथा औरभी बहुत समयोपर अपनी विद्वत्तासे जैन जातिका बड़ा उपकार किया है. अधिक क्या लिखें. आपके वियोगसे जैन जातिको एक अमूल्य रत्नकी हानि पहुची है, अब ऐसे रत्नकी प्राप्ति होना दुर्लभ है. पर क्या करें! हमारा भाग्यही ऐसा है, कहें किसको? अब हम श्रीजिनेन्द्र देवसे यही प्रार्थना करते है. कि उक्त परोपकारी पुरुषकी आत्माको सुख प्राप्त हो!

स्य, बिकरालकलिकालव्यालविषमविषनिवारण जाङ्गलिकस्य. भारतनरनरेंद्रचक्रचक्रेश्वरस्य, श्रीशब्दानुगतविक्टोरियामहाराज्ञिपट्टोदयाद्रिदिनकरस्य, श्रीमत्सम्राडेड्वर्डस्य तिरस्कृदमरपुरीमहोत्सवो विश्वजनानंदप्रदो महोद्भवो वर्तते खलु राजराजपुरी मानखण्डने लण्डने तस्मिन्नुत्सवे ये केचिन्महाभाग्यमहानुभावाः प्रकटीकृतस्वपौरुषाः पुरुषाः प्रत्यक्ष एवाऽऽलोकयन्ति तत्रत्यकृत्यम् समनुभवन्ति च राजराजेश्वरबदनसुधाकर दर्शनानन्दम् तेषामेव सफलाद्य मानवदेहावाप्तिः ! कृतकृत्यास्तेत्र लोके, किं बहुना त एव सुकृतिनो धन्याः राज्यमान्याः लोके मानार्हाश्च. अहंतु सामर्थ्याभावादत्रैवतदानन्दमनुभूय राज्यभक्त्या एतदीयराज्ये धार्मिकार्थिकशारीरकाणां सर्वेषामपि सुखानामप्रतिबन्धप्राप्त्या च प्रेर्यमाणः किंचिदपितदीयराज्यजनित सुखवर्णनं स्वविरचितपद्यैः कृत्वा सकलापद पर्वतभेदनकुलिशादर्हदीशादस्य चिरजीवित्वंसंप्रार्थयामि अतो भवन्तोऽपि सावधानाः सन्तः मम कथनेन सार्द्धमेव तावनुमोदयेयु इत्यभिलषामि भृशम् (मंगलाचरणम्) निखिल भुवन स्थायी लोकैर्नुतांघ्रिसरोरुहा चिरपरिचिताऽज्ञान ध्वान्तप्रभेदनसद्युतिः ॥ बुधजनमनः कल्मापौघः प्रशोधन स्वर्णदी दिशतु भवतां जैनी वाणी मुदं स्थिरतास्पदम् ॥ १ ॥

संपूर्ण जगतके मनुष्यों कारि नमित है चरण कमल जाके ऐसी. और अनादि कालसे लगे हुऐ अज्ञानांधकारके नाशनेको सूर्यकी प्रभाके समान. और विद्वानोंके मनमें स्थित पाप रूप कालिमाके शोधनेको स्वर्ग गंगा सदृश ऐसी जिनवाणी आप सब सभासदों को अविनश्वर आनंद प्रदान करो. ॥ १ ॥

श्लोक

यद्राज्याऽभिषवोत्सवेऽद्य भुवनप्रीत्यास्पदे सर्वतो गत्वा मांडलिका नृपाः स्वविभवै रत्यादृतास्तज्जनैः ॥ इंग्लेण्डे परिभूषयन्ति महतीं श्रीलंडनाख्यां पुरीम् स श्री सप्तम एडवर्ड नृपतिः पायाच्चिरं भूतलम् ॥ २ ॥

आज संपूर्ण जगतकी प्रीतिके स्थानभूत जिसके राज्याभिषेकोत्सवमें चौतरफसे बड़े बड़े मंडलेश्वर राजा अपने विभवसहित जाकर सम्राट् सम्बन्धी बड़े बड़े पुरुषोंकर आदर पाते हुए विलायतमें लंडन नाम नगरीको भूषित कर रहे हैं. वह श्रीमान् सप्तम एडवर्ड सम्राट् इस पृथ्वीतलको चिरकाल पालन करो. ॥ २ ॥

श्लोक

यदीये सद्राज्ये नियमपरिपुष्टाः प्रकृतयो। नयन्त्यः सन्नीत्या निखिलजनसंघं निपुणया ॥ कदाचित्संतापं दधति न यतो दुर्बल जनं ॥ ततो धर्माचारं विदधति प्रजा स्वंप्रमखिलं ॥ ३ ॥

जिसके समीचीन विजय राज्यमें सम्पूर्ण राज्याधिकारी पुरुष कानूनपर पुष्ट हुए संते सम्पूर्ण जनोंको निपुण न्यायमे प्रवर्तन कराते हुए, दुर्बल मनुष्यमें भी कभी दुखको नहीं धरते हैं. जिसहीसे सारी प्रजा अपने अपने धर्मका सम्पूर्ण आचरण करती है. ॥ ३ ॥

श्लोक

यस्यप्रकाण्डवसुधासु ससागरासु रात्रौदिवाचरति यत्खलु तिग्मरोचिः ॥ तद्भुजोऽस्य भवने सततप्रतापं। लोकान् स्वकीय सदृशं प्रकटीकरोति ॥ ४ ॥

स्कूल मु० तारदेव मुम्बई वगैरह स्थानोंपर जो सभा हुई थी, उनके वृत्तान्तको भी श्रवण कराकर आपको संतुष्ट करते हैं. जरा सावधान दृष्टि दीजिये.

प्रथम तो जैनबोर्डिंगस्कूलमें एक बड़ा भारी सभामंडफ सजाया गया था. जिसमें ध्वजा बंदनवार आदि मांगलीक वस्तुओंका समावेश कर नाना प्रकारके झाड़ फानूस और कंदीलोंमें बिजली तथा तेलकी रोशनी की गई थी. जिसका इतना प्रकाश था, कि दूरदूरके मनुष्योंकी भी आंखें चकचोंध जाती थी. नीचे फर्सपर गालीचे बिछाकर उनपर अनुमान २०० सो कुरसियाँ लगाई गई थी; सभासद अनुमान चार सौ के उपस्थित थे. जिनमें जैनियोंके सिवाय सेंट झेवियर कालेज मुम्बईके प्रिन्सिपल फादर रिवेरेंट साहिब महोदय और उसही कालेजके संस्कृत प्रोफेसर फादरड्रेकमेनहेगालिनसाहिब और व्येंकटेश्वर समाचारके प्रोप्राईटर सेठ खेमराज श्रीकृष्णदासजी आदि ले पचासों प्रतिष्ठित पुरुष पधारे थे. उस समयका आनंद बचन अगोचर है. समय २ पर हर्षके वश लोगोंकी करताल ध्वनि होती थी. उचित समय आनेपर सभाका प्रारंभ हुवा. जिसमें प्रथमही श्रीयुत सेठ हीराचन्द नेमीचन्दजी ऑनरेरी माजिष्ट्रेट शोलापुर मंत्री उपदेशकभण्डार ने जैनबोर्डिंगस्कूल बम्बईमें सभा करनेका उद्देश राज्यराजेश्वरका राज्याभिषेकानंद बतलाकर श्रीमान् सेठ जेटाभाई [illegible] जी को सभापति नियत करनेका प्रस्ताव पास किया. तदनंतर सभासदोंकी प्रार्थना वी[illegible]र कर उक्त सेठ साहबने सभापतिका आसन सुशोभित कर सभाकी प्रस्तावना द्योतन की. पश्चात् प्रोग्रामके अनुसार विद्यार्थियोंने हारमोनियम बाजेपर भारतेश्वरके आशीर्वादात्मक पद और श्लोक गुजराती तथा संस्कृत भाषामें बड़े उत्तम स्वरसे श्रवण कराये. तदनंतर श्रीयुत सेठ हीराचन्दजी शोलापुरवालोंने ब्रिटिश गवर्नमेंटके राज्यमें जैनियोंको जो सुख मिला; उनका निरूपण गुजराती भाषामें किया. तत्पश्चात् श्रीयुत पं० ठाकुर प्रसादजी शर्मा वैयाकरणाचार्य सुप्रिंटन्डेन्ट बोर्डिंग स्कूल व प्रधानाध्यापक संस्कृत जैन विद्यालयने आधे घंटेतक संस्कृत भाषामें संक्षिप्त रीतिसे बोर्डिंगकी रिपोर्ट श्रवण कराई. तथा व्याख्यान दिया. और नवविरचित श्लोकोंद्वारा सम्राटकी भगवानसे जय चाही. और सभामें अनुग्रह कर पधारे हुए सेन्ट झेवियर कालेजके प्रिन्सिपल और प्रोफेसर महोदयोंके विषयमें कहा कि आप दोनो महात्मा वैराग्य वृतिका अवलंबन कर एक बड़े भारी पद के अधिष्ठाता होकर भी बड़े सरल और साधारण दशामें रहते हैं. जिसका परिचय इस सभामें पधारकर प्रत्यक्षमें दे रहे हैं. और एक हमारे प्रति बड़ा भारी उपकार आपने यह किया है कि बोर्डिंगके छात्रोंको परीक्षामें आधी फीस लेकर शामिल करते हैं. इत्यादि कहकर बहुत धन्यवाद दिया. पीछे सेठ माणिकचन्द घेलाबाईने धर्मके विषयमें व्याख्यान दिया. उसमें अनेक युक्तियोंद्वारा धर्मोन्नातकी मुख्यजड़ धार्मिक शिक्षाको द्योतन करी. इसके पीछे जो २ अंग्रेजी पढ़े हुए छात्र बोर्डिंगमें धर्मशास्त्र पढ़ परीक्षा देकर उत्तीर्ण हुए. उनको श्रीयुत सेठ माणिकचन्दजीकी पत्नी श्रीमती चतुराबाईकी तरफसे घड़ी

आदि बहु मूल्य वस्तु पारितोषकमें उपरोक्त प्रिन्सिपल साहबके कर कमलोंसे वितीर्ण कराई गई.

पारितोषिक पानेवाले छात्रोंके नाम.

नं०	नाम विद्यार्थी	विषय.
१	बाबाजी बलवंतराव बुकटे	न्यायदीपिका.
२	लट्ठे ए. बी.	द्रव्यसंग्रह.
३	मणीलाल दौलतराम	,,
४	पारिख. पी. डब्ल्यु	,,
५	लडके. ए. बी.	,,
६	बरूर. ए. के.	,,
७	नाना बटी मणीलाल	,,
८	गांधी हीरालाल	रत्न करण्ड पूर्ण
९	गां. या. पी. एच्	,,
१०	दोसी. ए. जी.	,,
११	दोसी. सी. जी.	,,
१२	महता. एन्. जी.	,,
१३	महता. एम्. जे.	,,
१४	कोठारी प्रभाकर.	,,
१५	नाना बटी केशवलाल.	,,
१६	पारेख. एफ्. एम्.	,,
१७	संघवी. के. जे.	,,
१८	मास्तर. के. बी.	,,
१९	संघवी. एन्. जी.	,,
२०	मालगानी. ए. बी.	,,

इन बीस विद्यार्थियोंको इनाम दिई गई. जिनमें लट्ठे. ए. बी. द्रव्य संग्रहमें और गांधी हीरालाल रत्न करण्डमें अव्वल नंबर रहे. जिसके हर्षमें एक एक घडी पं० ठाकुर प्रसादजीनें भी इनको पारितोषकमें दिई. पश्चात् जो पुरुष सभामें पधारे थे, उनका यथायोग्य शिष्टाचार करनेके अनन्तर सभापति साहिबने जयजय ध्वनि पूर्वक सभा विसर्जन कराई. इति.

राजतिलककी खुशियें.

भरतपुर.

यहांपर ता० ९ को ८ बजे दिनके बड़े जैनमंदिरजी वाके वासन दरवाजे सभा हुई, जिसमें सब जैनी खंडेलवाल अग्रवाल ओसवाल पल्लीवाल. श्रीमाल वगैरह भाई करीब ५०० के जमा हुए. और रायबहादुर मुंशी सोहन लालजी साहब मेम्बर कौन्सिल व पंडित गुलाबसिंहजी साहिब नाजिम व मुंशीरामसहायजी साहिब सुपरिन्टेन्डन्ट सायर व पंडित रघुवर दयालजी साहिब सेक्रेटरीम्युनिसिपिल कोर्ट व कमान तोताराम साहिब अफसर सुतरखाना, वगैरह औरभी दीगर मौनिज अफराज जलसा थे. उसवक्त लाला तन्नूलालजी साहिब, खजांची रियासतने खडे होकर लेक्चर दिया. जिसमें मजमून यह था कि सब साहिबोंको जाहिर हो कि आज यह जलसा ताजपोशी श्रीमान् सम्राट् एडवर्ड महोदयकी खुशीमें हुआ है. क्योंकि जनाबे मल्का मौजिमा, कैशरेहिन्द (कि जिसकी अमलदारीमें आफताब कभी नही छिपताथा.) की अहद हकूमतमें जैसी आजादी, अमन और आशायश हमको मिली. वह सबको जाहिर है. आज उसही मसनद हकूमतपर हमारे शाहंशाह एडवर्ड राज्यसिंहासनारूढ हुए हैं. जिससे जो धर्माचरणमें आजादी अमन व आशा यश हमको

पहिले थी, उससे विशेष मिलनेकी उम्मेद है. सबसे बड़ी खुशी कामुकाम यह है. कि हमारी बदकिस्मतीसे जो बादशाह सलामतकी तबियत नासाज हुई. जिससे ता० २६ जूनको बजाय राज तिलककी खुशीके जो बेहद सबके दिलोंको रंज हुआ था. उसके आज दूर होनेसे फिर हम हर्षित हुये. अब श्री जिनेन्द्र देवसे प्रार्थना करते हैं. कि हे परमेश्वर हमारा बादशाह सलामत उदयसहित स्वास्थ्यदशामें चिरकाल अटल राज्य करै. और हमको यथेष्ट जैनधर्म साधनेकी आजादगी दे. और इनका साया शंहशाहना श्रीमती भारतेश्वरी महारानी विक्टोरियाकासा रहै. इनके बाद बाबू मंगलसेनजी साहिबने व्याख्यान दिया. पश्चात् जय २ ध्वनिपूर्वक सभा विसर्जन हुई. फिर राज्यकी तरफसे दिनके बारा बजे मुहताजों और कैदियोंको मिठाई खिलाई गई. संध्या ६ बजे कोठी खासपर दरबार हुवा. जनाबे एजंटसाहब बहादुरने लेक्चर दिया. ६१ कैदी छोड़े गये, और जो नेकचलन कैदी थे, उनकी दो २ महिनेकी मियाद कम की गई. २१ तोप सलामीकी चली. तमाम शहरमें रोशनी हुई.

मंत्री जैनसमाज
वेवरचंद गोधा, खजांची.
एजेंसी भरतपुर.

शिमला.

यहांपर भी ता. ९ अगष्टको जैनसभाका, अधिवेशन हुआ. और शहंशाह आलम पनाहकी आयु व भारतेश्वरके कुटुम्ब और राज्यकी वृद्धिकेवास्ते श्री जिनेन्द्रदेवसे प्रार्थना की गई.

सूचना:—यहां तरह वर्षसे जैनसभा कायम थी. परंतु सभाके अधिवेशन और भाइयोंके ठहरनेके लिये मकान नहीं था. इस तकलीफको रफा करनेके लिये, सभाने बिचले बाजारमें, मकान खरीद लिया है. अब हरएक जैनी भाई शिमलामें हवा खाने तथा कोई कार्य आवे तो यहां ठहरें. हर तरहके सुखका सामान मौजूद है.

उपमंत्री सिपाहीलाल, जैन.
सभा, शिमला.

खण्डवा.

यहांकी लोकल सभाने प्रातःकालही श्री जिन मंदिरजीको छत्र, चामरादि उपकरणोंसे और बिछायतसे सजाये. और नौ बजेसे १ बजे तक नवग्रह विधान पूजन जैन पाठशालाके पांच विद्यार्थियोंने करी. और पूजनके पहिले सभाकी तरफसेही अनुमान १००० कंगालोंको मंदिरजीके सामने सड़कपर पूरियें बांटी गई. इस मौकेपर खण्डवेके डिष्ट्रिक्ट कमिश्नर, मे० मेज साहिब, व ए. अ. क. मि. अब्दुल रहमान साहिब व हाजी विलायतुल्ला साहब, तथा रा. रा. गोविन्दराव व आन्ना भाऊ मंडलोई जागीरदार, व ब्रेंच मजिष्ट्रेट और पुलिश इन्सपेक्टर साहब, वगैरह तशरीफ लाये. पुलिसका इन्तजाम अच्छा रहा. इसही वक्त एक भाई साहिबने जैन पाठशालाके छात्रोंको पुस्तकें वितीर्ण किई. उस समय मंदिरजीमें बेंड बाजा भी बजाया गया.

फूलचंद सा. जैन; खंडवा,

रिपोर्ट दौरा उपदेशक रामलालजी

ता० २९ मईको नागपूर आया. सवाई सिंघई गुलाबसावजीके मकानपर ठहरा.

ता० ३१ को परवारोंके मंदिरमें सभा करी. प्रथम पं० रामभाऊजीने मंगलाचरण किया. फिर मैंने एक घंटा जात्युन्नतिमें व्याख्यान दिया. सभासद ४० थे. ता० १ जूनको बघेरवालोंके मंदिरमें सभा हुई. विद्योन्नति विषयपर व्याख्यान दिया. श्रोता ६० थे. यहांपर मंदिरजी १३ हैं. जैनियोंके घर ५०० हैं. सभा पाक्षिक विद्यार्थियोंकी होती है. यहांके भाइयोंकी धर्ममें रुचि कम है. नीमचमेंही रामटेकके दर्शन करने गया. यहां ८ मंदिरजी हैं. प्रतिमा मनोज्ञ है. शांतिनाथजीकी मूर्ति १० हाथ ऊंची खड्गासन बहुत मनोज्ञ है. प्रबंध अच्छा है. वहांसे कामठी आया. दो सभा कीन्हीं सभासद ५० थे. पुरुषार्थ और एकयता विषयपर व्याख्यान किया. यहां सभा पहिले टूट गई थी. सो अब फिर स्थापन कराई. जैनियोंके घर ४० और १ मंदिरजी है.

ता. ३ जूनको वर्धा आया. सभामें पंचपापकास्वरूप वर्णन किया. निम्नलिखित दो भाइयोंने १०) रु दिये. ५) तुकारामजी रोडे, ५) रु. नेमिचंद्र नारायणजी चवडे उ. भं. में. ता. ४ को पुलगांव आया. रात्रिको सभामें अष्टमूलगुणपर व्याख्यान किया. फिजूल खर्चीपर भी जोर दिया. यहांके भाईयोंने आतिशबाजी छुडाना बंद किया. चंद भाइयोंने चातुर्मासमें स्वाध्यायका नियम लिया. किशनलालजी वैष्णव अग्रवालने चातुर्मासमें रात्रि भोजनका त्याग और नित्य पानी छानकर पीना स्वीकार किया. निम्नलिखित भाइयोंने ८) रु. दिये. ५) मानमल रामचंद्रजी उ. भं., जुहारमल रेखचंद श्वेताम्बर ३), उ. भं. यहांपर १ मंदिर और १० घर श्रावकोंके हैं.

ता. ५ को नाचनगांव आया. गोविन्दराम बदनोरेकी दुकानपर सभा हुई. वर्तमानकी अवस्थापर व्याख्यान दिया. सभासद ६० थे. यहांके भाइयोंने पाठशाला करना स्वीकार किया. ५) रु. गोविन्दराम बदनोरेनें उ० भ० में दिये. मंदिरजी १ घर १० हैं. ता. ६ को धामणगांव आकर अंजनसिंगी आया. रात्रिको सभा हुई. श्रावकाचारका वर्णन किया. सभासद १५ थे. चार भाइयोंने यावज्जीव स्वाध्यायकी प्रतिज्ञा ली. २) रु. पांडोबानागोजीने उ० भ० में दिये. मंदिरजी १ घर ७ है. ता. ७ को आर्वी आया. रात्रिको सभा हुई. मैत्री आदि चार भावनापर व्याख्यान किया. श्रोता ८० थे. एक भाइनें यावज्जीव स्वाध्यायका नियम लिया. चंद भाइयोंनें कंदमूलका त्याग किया; और दर्शन करनेका नियम लिया. जैनगजट व जैनमित्र मंगाना स्वीकार किया. १०॥।) रु. निम्न लिखित भाईयोंने दिये. ५) रु. किशोरी लालजी चंदूलालजी उ० भ०, ४॥) रु. जैन मंडली उ० भ०, १।) रु. दुलीचंदजी वीरचंदजी जैनमित्र. यहांपर मंदिरजी दो हैं. सम्वत् ११९६ तककी प्रतिमा हैं. १ पद्मासन प्रतिमा चार हात ऊंची श्यामवर्ण पार्श्वनाथजीकी मनोज्ञ है. जैनियोंके घर १८ हैं. ता. ८ को रसु-

लाबाद होकर ९ को चांदूर आया. सभामें अनुमान १० महाशय थे. प्रशमादि चार भावनाका व्याख्यान किया.

ता० १० को अमरावती आया. रात्रिको बजाजीके मंदिरजीमें सभा हुई. श्रोता २९ थे. धर्म विषयपर व्याख्यान दिया. यहां मंदिरजी ६ तथा घर १५० परवारादि जैनियोंके हैं. सभा पाठशाला है. एक मंदिरमें स्फटिककी प्रतिमाजी हैं.

ता० १३ परतवाड़ा आया. सभामें मूढ़ताके विषयमें व्याख्यान दिया. सभासद २९ थे. ३) रु० उपदेशक भण्डारमें आये. मंदिरजी १ घर ८ हैं.

ता. १४ को मुलतानपुर आया. सा. लालासा मोतीसाके मकानपर सभा हुई. शरीरावस्थामें भाषण किया. मंदिर ४ घर २० हैं.

ता. १५ को मुक्तागिरजी गया. मंदिरजी २६ हैं. जिनमें बड़ी २ अवगाहनाकी प्राचीन प्रतिमा हैं. दो प्रतिमा खड्गासन चार हाथ ऊंची चौथे कालकी है. यहांसे साड़ेतीनकिरोड मुनि मुक्ति गये हैं. हर अष्टमी चतुर्दशीको केशरकी वर्षा होती है. यह अतिशय मैने प्रत्यक्ष देखा. भील कितनीही प्रतिमायें खंडित करके उठा लेगये. जिससे किवाड़ लगानेकी आवश्यकता है. मंदिरजी १ धर्मशालाके पास है. पुजारी २ हैं. परंतु सारसम्भाल ठीक नहीं.

ता. १८ को भातकोली दर्शन करनेको गया यहां ऋषभदेवजीकी अतिशय चतुर्थ कालकी मूर्ति है. और भी बहुतसी बड़ी २ प्रतिमा हैं. हजार रु. सालका आमद खर्च है. प्रबन्धकर्ता नेमासा रतनसा अमरावतीवाले हैं. प्रबन्ध योग्य है.

ता. १९ को कारंजा आके दो सभा की सभासद ५०-६० थे सप्त तत्व और जैनियोंकी प्राचीन अवस्थापर व्याख्यान दिया. यहांके भाइयोंने पाठशाला करना स्वीकार किया. १४) रु. आये.

५) देवीसा गंगासाजी चवड़े. उ भं.

५) गोकलसावजी उ. भं.

१) हीरासा मोतीसा माष्टर. उ. भं.

३) सेठ नरसिंहसाव रुखबसावजी सभासद

मंदिरजी ३ में प्रतिमा ११०० सम्वत की है. एक मंदिरजीमें चांदी, सोना, हीरा, मूंगा, पन्ना-गरुड़मणि, आदिकी कई प्रतिमा हैं. धातुपाषाणकी हजारों प्रतिमा हैं. कई चतुर्थ कालकी हैं तीन सहश्र कूट चैत्यालय तीन हाथ लंबे पांच हाथ चौडे सांचेमें ढलकर बने हैं. घर १०० सेतवाल जैनियोंके हैं.

ता. २१ को मगरूलपीर आया. सभा करी. देवगुरू शास्त्रके विषयमें कहा. मंदिरजी १ घर सात हैं.

ता. २२ को वासिम आया. भोग विषयपर व्याख्यान दिया. सभासद २९ थे. मंदिरजी २ घर ३० हैं. ता. २३ को शिरपुर (अन्तरीक्ष पार्श्वनाथ) आया. व्रत विषयमें कहा चंद भाइयोंने स्वाध्यायादिका नियम लिया. मंदिरजी १ घर ४० हैं. मंदिरजीमें श्यामवर्णन पार्श्वनाथजीकी २ हाथ ऊंची पद्मासन मूर्ति एक अंगुल अंतरिक्षविराजती हैं. यहांपर कार्तिक मासमें मेला भरता है. प्रबन्ध

ठीक नहीं. यात्री बहुत आते हैं. शहरके बाहिर एक बहुत प्राचीन मंदिरजी हैं. जिनमें प्रतिमा सम्वत् १९८ की है

ता. २९ को खामगांव आया. सभामें संसारदुःख व मोक्षसुख का व्याख्यान किया. श्रोता २३ थे. ६ भाईयोंने यावज्जीव स्वाध्यायकी प्रतिज्ञा ली. और चारनें रात्रिभोजनका त्याग किया. मंदिरजी १ घर २२ हैं. ता २८ को हरणखेड (बुलढाणा) आया. ता. २९ को सभा हुई. संसारकी दशा द्योतन की. सभासद ४० थे. चंद भाइयोंने स्वाध्यायादिका नियम लिया. ॥॥ रु. आए. गणपत पलिजी ३॥ रु. मासिक बाकी १॥) मेंसे आए. २॥) रु. हरीभाऊ रामभाऊके मासिक बाकी १०) मेंसे आये. ९) रु. मोतीराम महीपतिने उपदेशक भण्डारमें दिये.

ता. १० को मल्कापुर आके तप विषयपर व्याख्यान किया. पहिलेके २१ फार्म भरे हुये थे. जिनके रु. मांगनेपर सबने इनकार किया. सभासद ४० थे.

ता. १ जुलाईको मावदा वगैरह में होकर ३ को बुरहानपुर आया. नर्कदुःखका वर्णन किया सभासद १९ थे. ९) रु. उपदेशक भण्डारमें आए.

ता. ४ को खंडवा आके सेठ चम्पालालजी आनरेरी मजिस्ट्रेटके ठहरा. सभामें सुखके विषयमें व्याख्यान दिया. सभासद ९० थे. यहां सभा प्रतिमास होती है. पाठशाला है. मंदिरजी १ घर ३४ हैं.

ता० ९ को सनावद आया. रात्रिको सभामें प्रथम शास्त्रजी पढ़े. पश्चात् जीवका धर्मही सन्मित्र है. इस विषयमें व्याख्यान किया. यहांपर मंदिर प्रतिष्ठा सेठ फूलचन्दजीने कराई थी. इस कारण सभामें ८०० सभासद थे.

ता. ७ को उक्त स्थानपरही दूसरी सभा हुई. व्याख्यान मोक्षमार्ग विषयपर किया सभासद १००० महाशय थे. शिखरजी आदिके कार्योंकी सहायताके लिये जोर दिया. परंतु कुछ फल नहीं हुआ.

ता० ८ को बड़वाय जिला निमाड़ आया. यहांपर भी मंदिर प्रतिष्ठा थी. उत्सवमें लगभग १००० भाई उपस्थित हुए थे. सभामें राग द्वेष विषयपर व्याख्यान किया. सभासद १०० थे. ता० ९ को भी सेठ केशवसाजीकी प्रेरणासे सभाका प्रारंभ हुआ. परंतु भजनमण्डलीनें गाना शुरू करके सभा न होने दी. और कहा कि क्या सभासे मोक्ष होती है? यह बड़े अफसोसकी बात है. यहां घर ३४ और मंदिरजी १ है.

ता. ११ को सिद्धवरकूट आया. यहां २ मंदिरजी और तीन धर्मशाला हैं. पहाड़ उपर अनेक प्राचीन मंदिर और वस्तीके चिन्ह हैं. प्रबंध कर्ता खण्डवाके सेठ देवासा घणस्यामसा है. यहांके हीरालाल पुजारी भी योग्य है. यात्रियोंको बड़ा सुख मिलता है. मेला सालदरसाल होता है.

ता. १२ को फिर वापिस सनावद आया. दिनमें सेठ लक्ष्मणजीकी पाठशालाकी परीक्षा ली. विद्यार्थी ३६ चतुवर्णके पढ़ते हैं. जिनमें २९ हाजिर थे. दूसरी पाठशाला सेठ घासीरामजी

खंडवावालेकी तरफसे है. जिसमें खाली इंग्रेजी पढ़ाई जाती है. १२ लड़के जैनियोंके हैं. परीक्षा फल अच्छा रहा सेठ लक्ष्मणजीकी तरफसे मिठाई और मुम्बई सभाकी तरफसे १८ लड़कोंको दर्शन पाठादिककी पुस्तकें मैंने वितीर्ण करी. सभा पहिले होती थी. फिर बंद होगई. सो भाइयोंने पुनः स्थापन करना स्वीकार किया. यहां मंदिरजी १ घर १०० हैं.

ता. १३ को खाण्डवाके भाइयोंके आग्रहसे पुनः खण्डवे गया. अष्टान्हिकामें यहां ही रहा. एक सभा ता. १६ को की. जिसमें मनुष्यको मनुषत्वके विषयपर व्याख्यान दिया. दूसरी सभा ता. २० को की. सामायक विषयपर कहा. सभासद ५० थे. १८ भाइयोंने शास्त्र सुननेका व स्वाध्याय करनेका नियम लिया. यहांके भाई-योंकी धर्ममें अच्छी रुचि हैं. सभामें शास्त्रजी रोज बांचते हैं. पाठशालामें लड़के २५ पढते हैं. यहांकी सभाने भी अच्छी तरक्की की है. १४) रु० आये. ११) रु० उपदेशक भंडार-में पंचोकी तरफसे और ३) रु० केशवसा मही-कालसाके सभासदोंके.

ता० २२ को भुसावल आया. ३० महा-शयोंकी सभामें जातिकी भूत भविष्य व वर्तमाना-वस्थापर व्याख्यान दिया. १८ भाइयोंने स्वाध्यायकी प्रतिज्ञा ली. ३ नें यावज्जीवकी ली. भाई छोटे लालजी हरदेवदासने "जैनमित्र" मंगाना स्वीकार किया. मंदिरजी १ घर २० जैनियोंके हैं.

ता० २३ को नसीराबाद जिल्हा खानदेश आया. ४० महाशयोंकी सभामें चतुर्गतिका दुःख वर्णन किया. १३ भाइयोंने शास्त्र बांचने व सुननेका नियम लिया. यहांपर मंदिरजी ५ घर ४० हैं.

ता. २४ को जलगांव आया. सभा नहीं हुई. यहांके दो भाइयोंमें दो फारमके रुपये बाकी थे. जिसमेंसे ५) चुन्नीलालजीने १) रु. मगनलालजीने बाकी नामंजूर किये. यहां चै-त्यालय १ व १० घर जैनियोंके हैं.

ता. २५ को पाचोरा आया. भाइयोंके घर थोड़े होनेसे सभा न हुई तब इसही तारीखको नाथडोंगरी आया. सभामें पंच परमेष्टीके गुण वर्णन किये. श्रोता २० थे. भाई रूपचंदजीनें सभामें नित्य शास्त्र बांचना स्वीकार किया. सि-खरजीका चंदा किया. जिसमें १६) रु. तो उसही वक्त आए. बाकी जो भाई हाजिर नहीं थे, उनसे भी वसूलकर २५) रु० भाई श्या-मलाल छोटमलनें भेजनेको कहा.

ता. २६ को नांदगांव आया. ३ सभा कीन्हीं. जिनमें क्रमसे विद्याके फायदे, ध्यान और मिथ्यात्व विषयपर व्याख्यान दिया. सभासद ८०–५०–६० थे. पाठशालाकेलिये २७) रु. माहवारका चंदा होगया. तब पंडितकेवास्ते मुंबई सभाको लिखा. पंडित आनेपर पाठशाला स्थापित होगी. २) रु. इतिहास फंडके आये.

ता. २९ को मालेगांव आके सभा करी. श्रावकाचारका वर्णन किया. भाइयोंने शिखर-जीकेलिये चंदाकर भेजना स्वीकार किया.

ता. ३० को नगरसूल आकर ३१ को शिवर, जिला औरंगाबाद आया. सभामें प्राचीन

इतिहास विषयपर कहा. श्रोता १० थे. १४ भाइयोंने शास्त्र बांचने व सुननेका नियम लिया. भाऊलालजीने शास्त्र बांचना स्वीकार किया. भाईयोंने शिखरजीकेलिये चंदाकर भेजनेको कहा. यहांपर मंदिरजी २ और घर २५ हैं. गांवके बाहर एक टीलेपर गोमठस्वामीकी प्रतिमा खण्डित बहुत प्राचीन चतुर्थकालकी प्रतीत होती है.

ता. १ अगस्तको कसावखेड़ा आया. दो सभा हुई. एकादश प्रतिमा और उपकार विषयमें भाषण किया. श्रोता २५-३० थे.
५०) रु. मनियार्डर द्वारा भेजने कहा.
४०) सकलपंच, शिखरजीके मुकद्दमेके.
५) उपदेशक भंडार.
५) इतिहास सोसायटी.

---

५०)

यहां मंदिरजी १ व घर २० हैं.

यहांसे ३ मील पर एरूलगांवके पास अनंग पर्वतपर गोमट्ट स्वामीकी प्रतिमा ५॥ गज ऊंची पद्मासन बहुत मनोहर चतुर्थ कालकी है. पर्वतके नीचे (इन्दसभा नामक मंदिरमें समवशरणकी रचना है. और बड़ी २ अवगाहनाकी ३ चौवीसीजी है. यह पर्वतमें उकीरी हुई है. और भी षट्मतकी मूर्तियां व मंदिरजी हैं. जिनमें कहीं २ दि॰ जैनियोंकी प्रतिमा हैं. यह स्थान बहुत प्राचीन देखने योग्य है. परंतु अप्रासिद्ध है. इस लिये कसावखेड़ाके भाइयोंको चाहिये. कि यहांका प्रबन्ध हाथमें लें. और सर्व भाइयोंसे प्रगट करें.

ता०४ को कचनेरा आया. सभामें सत्संगतिपर व्याख्यान दिया. श्रोता २० थे. मंदिरजी १ घर १ है. मंदिरजीमें प्राचीन चतुर्थ कालकी सातिशय प्रतिमा चिन्तामणि पार्श्वनाथजीकी है. एक समय धड़ अलग होकर स्वयं जुड़ गया था. कार्तिकमें मेला होता है. हर १५ को यात्री आते हैं.

ता०५ को मुंगीपट्टन आया. अष्टकर्म विषयपर व्याख्यान दिया. सभासद ३० थे १३ भाइयोंनें स्वाध्याय करनेका नियम लिया. मंदिरजी एक है जिनमें मुनिसुव्रतनाथजीकी बहुत प्राचीन मूर्ति है. एक पुस्तकपर लिखा है कि इस मूर्तिको १७९० के शाकेतक ११९६३१५ वर्ष हुए. यात्री हमेशाह दूर २ के आते हैं. मंदिरजी जीर्ण होगये हैं. परंतु यहांके लोग उद्धार करनेमें असमर्थ हैं. मेला कार्तिकमें होता था. अब दो सालसे बंद है.

ता० ६ को बालूज आया. लोकका स्वरूप द्योतन किया. ३० सभासद थे. एक भाईने स्वाध्यायका नियम लिया. बाकी सब करते हैं.

ता. ७ को औरंगाबाद आया. १५ महाशयोंकी सभामें लोभ विषयपर उपदेश दिया. घर ४० मंदिरजी ५ हैं. अग्रवालोंके मंदिरजीमें प्राचीन संस्कृत प्राकृत ग्रंथ २०० हैं. प्रतिमाओंका समूह बहुत है. सम्वत् २४८ की अनेक प्रतिमा हैं.

ता. ८ को जालना आया. रात्रिको लश्करके मंदिरजीमें सभा हुई. आप्तका स्वरूप कहा. सभासद सर्वमतावलम्बी ५० थे.

ता. १० को पंडित रामभाऊ नागपुरवालोंकी कोशिससे तारकाबादमें अग्रवालोंके मंदिरमें सभा हुई. स्वतन्त्र परतन्त्र विषयमें भाषण दिया.

सभासद १०० थे. निम्नलिखित महाशयोंने ३५) रु० भेजना कहा.

१२) रु० सेठ रामधन गुलाबचंदजी झांझरी, सभासदी.

३) सोनासा हीरासा ,,

३) राघोसा हीरासा ,,

३) नवलसा पूजासा ,,

३) भाऊसा नत्थूसा ,,

३) दगडूसा गिरीसा ,,

३) चिन्तामणसा पांडूसा. ,,

५) गणेशलालजी काला. उपदेशक भंडार.

---

३५)

शहर जालनाके तीन भाग हैं. लशकर, कादराबाद और जूना जालना. इन तीनों स्थानोमें मंदिरजी ६ घर २५ हैं जूने जालनेके २ मंदिरजी बड़े जीर्ण होगये. गिरनेको तैयार हैं. सहारेसे खड़े हैं. वहांके भाइयोंको व और भी कोई धर्मात्माको इन मंदिरजीका जीर्णोद्धार कराकर सातिशय पुण्यलाभ करना चाहिये. कादराबादके ३ मंदिरजीकी भी संभाल ठीक नही हैं. ज्ञान और धर्मकी न्यूनता है. मिथ्यात्वका प्रचार है.

ता. ११ को राजाके देवलगांव आया.

ता. १४ को काष्टासंघी अग्रवालोंके मंदिरमें सभा हुई. जीवद्रव्य विषयपर व्याख्यान देकर सभा व पाठशालाकी आवश्यकता बताई. और मुम्बई सभाका महात्म वर्णन किया. जिसपर ७२) रु. निम्नलिखित भाइयोंने दिये.

३) रतनसा राघोसा अग्रवाल सभासद.

३) सुमतिसा गोकलसा ,,

३) गोविन्दसा इंकुसा ,,

३) चांगासा सोनासा ,,

३) हीरासा गोकुलसा ,,

३) गंगाराम गिरीसा ,,

३) चिंतामणीसा लखुसा ,,

३) पूजासा पासूसा ,,

३) हीरासा ताऊसा ,,

३) गुलाबसा रामसा ,,

३) मोतीसा आकूसा ,,

३) भाऊसा मालसा ,,

३) बंडूसा पासूसा ,,

३) माणिकसा सीतलसा ,,

३) गोबिन्दा रंगोबा ,,

३) कुंडोबा विठोबा ,,

६) गुलाबसा माणिकसा उ० भण्डार

६) हुंकारसा सखाराम ,,

६) बेनीचन्द ज्ञानमल स्वेताम्बर जैन ,,

३) भीकासा लक्ष्मणसा ,,

३) हरीभाऊ गोबिन्दा तांबे ब्राह्मण ,,

---

७२)

पश्चात् १५ भाइयोंने शास्त्र वांचने व सुननेका नियम लिया. पश्चात् यहां सभा स्थापन हुई. जिसमें गुलाबसा माणिकसा सभापति और हुंकारसा सखाराम सेक्रेटरी और २० सभासद चुने गये. यह सभा महिनेमें एक बार होगी. रिपोर्ट मुम्बई सभाको भेजती रहेंगी. पाठशाला करनेका भी विचार हुआ. सभासद २५० थे. मंदिरजी २ घर ४० हैं. गोबिन्दसा लखबसाबजीके घर

१०० ग्रंथ प्राचीन संस्कृत प्राकृत भाषामें है. यहां श्रावण शुक्ला १३ को मंदिर प्रतिष्ठाका मुहूर्त था. ५०० महाशय एकत्रित हुए. पं० रामभाऊ नागपुरवाले प्रतिष्ठाकारक थे. मैं उक्त पं० जीको हार्दिक अनेक धन्यवाद देता हूं. क्योंकि यह स्थान २ पर मुम्बई सभाके सहायक हुए. और मुझे भी मदत दी.

ता. १९ अगष्टको शेलू आया, वहां ३ घर १ मंदिर है. परन्तु मकानपर कोई न मिला. सभा न हो सकी. उसी दिन चलकर बालूर आया. श्रीयुत नाना पर्वणकारजीकी सहायतासे सभा की. अनुमान २९ श्रोता एकत्र हुए. २० भाइयोंने स्वाध्याय करनेका नियम लिया. यहांके जो भाई गिरनार गये हैं उनके आनेपर पाठशाला स्थापित हो जायगी, ऐसी आशा है. नानाभाई पर्वणकार, नैरोवा-हगरे, रामभाऊ गोंडगेने सवा २ रुपया देकर जैनमित्र मंगाना स्वीकार किया.

ता. १९ को वामनगांवमें २९ भाइयोंको एकत्र कर मूर्तिपूजाके विषय व्याख्यान दिया. इस ग्राममें ७० घर जैनियोंके, व २ मंदिरजी हैं. ४० भाई अभी गिरनारजी गये हुए हैं.

ता. २० को पर्मणी आया. वर्षाके कारण व भाइयोंकी अरुचिसे दो दिन रहनेपर भी सभा न हो सकी. २९ घर जैनियोंके हैं.

ता० २२ को हैदराबाद आया. सिकन्दराबादमें श्रीमान राजा बहादुर दीनदयालजीके मकानपर आरामपूर्वक रहा. दो तीन दिनके उद्योग व राजा ज्ञानचन्द्रजीकी सहायतासे बेगम बाजारके मंदिरजीमें सभा की. २९ महाशय एकत्र हुए. "ऐक्यता" का व्याख्यान दिया. राजा धर्मचन्द्रजी व लाला जयंतीप्रसादजी सहारणपुरवाले भी साथमें थे. परन्तु फल कुछ भी न हुआ. शोकका विषय है. कि ऐसे महान-गरमें भी धर्मकी महा अरुचि लोगोंमें हो रही है. जिन दर्शन करना भी उनका कोई नित्य कर्म नहीं है. पुस्तकालयमें ताला पड़ा है. कदाचित् कोई स्वाध्याय न कर डाले. इतने पर भी जो महाशय यहां पाठशाला स्थापित होनेके आकाश पुष्पतोड़ें उनकी भूल नहीं तो क्या है? इस धनाढ्य नगरमें ७० घर जैनी व ९ जैन मंदिर हैं.

ता. ३० को शोलापूर आया. प्रथम सिप्टेम्बरको पंचायती जैन मंदिरमें १०० भाइयोंकी सभामें "सामान्यधर्म" पर व्याख्यान दिया. ता. २ को सेतवाल मंदिरमें भी सभा कीन्ही. उन्नति विषय भाषण किया. पश्चात् जीवराज गौतमजीने उक्त विषयकी पुष्टिता की. उक्त नगरमें १९४ घर सेतवाल हूमड़ खंडेलवालोंके व ९ मंदिरजी हैं. सभा पाठशाला दानशाला आदि सब इस नगरकी शोभाके असाधारण कारण हैं. निम्नलिखित महाशयोंने इस भांति सहायता की. उनको हृदयसे धन्यवाद है.

१९) शेठ बालचन्द रामचन्दजी.
११) „ रावजी कस्तूरचंदजी.
७) „ हीराचन्द नेमचन्दजी.
२) „ जीवराज गौतमचन्दजी.

ता. को पूनामें आकर सेठ दयाराम ताराचंदजीके मकानपर ठहरा. सभा करके "उद्यम"

विषयपर व्याख्यान दिया. ६० घर सेतवाल खंडेलवाल जैनियोंके हैं. [क्षेमंकर.]

चिट्ठी पत्री.

जैनमित्र अंक १० में पन्नालालजी गोधा शेरगढ़ निवासीके प्रश्नका जो उत्तर दिया गया है, वह यथार्थ नहीं जँचता. लेख पंडित शिवचन्द्रशर्म्मा इन्द्रप्रस्थीयका अंक ९१६ में इस प्रकार मुद्रित हुआ है कि "निर्म्माल्यकूट किंवा संस्कारकूट जिन मंदिरोंके बाह्यद्वारपर बनवानेकी आम्नाय प्राचीन है. जब कि साक्षात केवली तीर्थंकरोंके समवशरणमें इन्द्रचक्री पूजा करते थे; तब उस समयमें भी पूजाकी सामग्री निर्म्माल्य बाहिर रख दी जाती थी. और ऋषी, निवेदक, वनपालक, क्षेत्राधीश अथवा और मिथ्यादृष्टी उक्त निर्म्माल्यके ग्राहक ले जाते थे" इत्यादि कौनसे ग्रन्थमें व उसके किस प्रकरणमें लिखा है, सो लिखिये. ऐसा प्रश्न था. उसका उत्तर पंडित गोपालदासजीने दिया है कि "निर्म्माल्यकूटका जगह २ उल्लेख है" इत्यादि यह कुछ उक्त प्रश्नका जबाब नहीं है, जिसका वर्णन जगह २ है, उसमेंसे दो चार ग्रन्थोंके नाम और प्रकरण देना अवश्य है. ग्रन्थोंके नाम जबतक नहीं मिलेंगे तबतक इस अभिप्रायको कौन मान्य करेगा?

आशा है कि पंडित गोपालदासजी व पं० शिवचन्द्रजी ग्रन्थोंके नाम व प्रकरण तथा वाक्य प्रकाशित करके प्रश्नका समाधान करेंगे. और यदि किसी ग्रन्थमें ऐसा न आया हो. तो निषेध लिखकर संतोषित करेंगे.

शा. नानचन्द्र खेमचन्द्र,
शोलापूर

दुःखकी वार्ता—श्रीयुत रा. रा. आबाजी गांधी नागपूर निवासी जो एक धर्म कार्योंमें अग्रगण्य परुष गिने जाते थे, और जिन्होंने नागपूर जैन पाठशालाके फंडमें १०००) रुपये देकर अपनी दान शूरता दरशाई थी, वही श्रेष्ठी आज श्रावण सुदी १२ को परलोकवासी बनके हमारी सारी जैन समाजको दुःखित कर गये. शोक! शोक!

सेक्रेटरी बा. शा. सं. जैनसभा,
नागपूर.

दिगम्बर जैन पंजाब प्रांतिक सभा रावलपिंडी.

ता. ९ अगष्टको श्रीमान् सम्राट सप्तम एडवर्डके राज्य तिलकोत्सवके आनन्दमें उक्त सभाका अधिवेशन बड़े समारोहके साथ किया गया. सभापतिका आसन लाला गनेशीलालजी पेन्शनर रहीस गुहानाने सुशोभित किया. बाबू कीरतचन्दजीने अपने ललित व्याख्यानमें गवर्नमेंट हिन्दके निष्पक्ष न्याय व प्रजावात्सल्यताको आभार प्रगट कर तख्त नशीन शाहनशाहके चिरंजीवी होनेके हेतु इष्ट देवसे प्रार्थना की. तथा वाइसराय हिन्दकी मार्फत एक एड्रेस सम्राटकी सेवामें भेजनेका प्रस्ताव पास कराया. सभाकी आज्ञानुसार अभिनन्दन पत्र भेजकर हर्ष ध्वनिपूर्वक सभा विसर्जन की गई.

आर्य समाजियोंसे झगड़ा.

आषाढ़ी अष्टान्हिकाके उत्सवमें पं० पंजावरायजी हकीम कल्याणरायजी, व भाई हीरालालजी विद्यार्थी यहांपर पधारे थे. इसी अवसरपर पंजाब

प्रान्तिक सभाका वार्षिक जलसा करनेका विचार हुआ, और नगरमें इस्तहार मयप्रोग्रामके प्रकाशित किया गया. २१ जोलाईको साधारण व्याख्यान होनेके अतिरिक्त सत्यार्थ प्रकाशके वार हवें समुल्लास पर विचार होनेकी सूचना भी दी गई थी. कारण यहां वैशाखके महीनेमें एक सत्यानंद स्वामी जो पहिले १० वर्ष तक जैन ढूंढिया पंथी लक्ष्मणदास साधूके नामसे रह चुके हैं और आजकल आर्यसमाजके अग्रगण्य निशानदार हैं, आये थे. उन्होंने अपने एक व्याख्यानमें जैनधर्मपर कितनेक निरर्थक निर्मूल दोषारोपण किये थे. इस लिये उस अधर्मोपदेश की श्रद्धा लोगोंके दिलमेंसे निकल डालना अति आवश्यकीय था. और उसके निर्णय करनेको यही अवसर योग्य समझा गया.

ता० १९ को मामूली सभा व उक्त पंडितोके सार गर्भित व्याख्यान हुए. ता० २० को रात्रिको बहुतसे आर्यसमाजी समुल्लासको सम्हालके जोशमें एकत्रित हो गये थे; और विघ्न करनेको उतारू थे. परन्तु वह विपक्षका बल देखकर उसमें सफलीभूत न हो सके. हकीम कल्याणरायजीका "परमात्मा" विषयपर व्याख्यान पूर्ण होते ही समाजके सभ्यलालाप्रभुदयालजी अपनेको समाजका मेम्बर प्रगट न कर धर्मका खोजनेवाला बतलाया, और मैत्रीभावसे प्रश्न करनेकी प्रार्थना की. तो उनके प्रश्नोंका उत्तर पं० पंजावरायजीने भले प्रकार १२ बजे लों जबतक वह थक न गये. देकर संतोषित किया. अधिक समयबीत गया था, इस कारण सभा विसर्जन की गई.

ता० २१ को अनुमान ९००।१०० श्रोता उपस्थित थे. प्रोग्रामके अनुसार उसी १२ वें समुल्लासकी समालोचना की गई. स्वामी दयानन्दजीने जो श्लोकोंका विरुद्ध अर्थ लगाके व्यर्थ आक्षेप किया था. उसका युक्तिपूर्वक खंडन किया गया. इसको सुनकर आर्यसभ्य अधिक कुपित हुए. और शास्त्रार्थको छोड़ शास्त्रार्थ दिखानेको उतारू हो कुछ कहनेकी सभामें इजाजत मांगी. परंतु उनके क्रूर भावको देखकर सभापति सा० ने आज्ञा न दी. बल्कि यह कहा कि उक्त पंडितजी जहां ठहरे हैं वहां जाकर जो सन्देह व प्रश्न तुह्मारे इस विषयमें हो निराकरण कर डालो. इसके उत्तरमें समाजियोंने कहा कि कल हम शास्त्रार्थ करेंगे. इसके पश्चात् सभा विसर्जन हुई.

दूसरे दिवस ९ १/२ बजे सब महाशय इकट्ठे हुए. लाला गोविन्दशाहजी वैष्णव जो एक निष्पक्षपाती सज्जन हैं. दोनोंके शास्त्रार्थके नियम करने बुलाये गये. दोनों पक्षवालोंने वह सब नियम स्वीकार किये. परन्तु जब यह प्रस्ताव पेश हुआ. कि शास्त्रार्थ करनेवाले पंडितोंके नाम मुकर्रर हो जाना चाहिये. तब तो समाजी इनकारकी डकार मार गये, और एक इश्तहार शहरमें देकर घर बैठे राजाको दंडित करनेकी मसलके माफिक प्राइवेट सभाओंमें निन्दाके व्याख्यानोंसे अपने मुखोंको सुशोभित करने लगे. सच है जो जैसा होता है. उसे वैसाही जगत देख पड़ता है.

इसके अनन्तर सभाके सम्पूर्ण कार्य पूर्ण किये गये. पंडित गण २७ ता. को रवाना हो गये.

किशोरचन्द मंत्री रावलपिंडी.

शाखासभाओंकी रिपोर्ट.

जैनसभा आकलूज—उक्त सभाके अध्यक्ष श्रेष्टी हरीचन्द नाथाजी गांधी द्वारा तीन माहकी रिपोर्ट प्राप्त हुई है जिसे हम नीचे प्रकाशकर प्रेषक महाशयको धन्यवाद देते हैं.

ज्येष्टकृष्णा १४—को सोलहवां अधिवेशन हुआ. अध्यापक खेमचन्दजीने अपने आनेका उद्देश प्रगटकर कर्म्मोत्पत्ति विषयपर संतोषदायक व्याख्यान दिया. और वेणीचन्दजी व दयाचन्दजी ने उसीको पुनः पुष्टकर सभा विसर्जन की. १९ सभासद उपस्थित थे.

आषाढ शुक्ला १४—वेणीचन्दजीनें प्रारंभी मंगलाचरण पढा. अध्यापकजीने आश्रव तत्वपर भाषण दिया.

आषाढ कृष्णा १४—विद्यार्थी अमरचन्दने मंगलाचरणकर सभा प्रारंभ की फूलचन्द विद्यार्थीने "ऐक्यता" पर व्याख्यान दिया. जिसे सुन सभा हर्षित हो, विद्यार्थीका परिश्रम सराहने लगी.

व्यवस्थापक,

हरीचंद नाथाजी.

जैनधर्म हितेच्छु मंडल.

करमसद—पूर्व अंकमें प्रकाशित रिपोर्टके अनन्तर इस मंडलके दो अधिवेशन हुए. प्रथम सभा आषाढ शुक्ला १४ की रात्रिको हुई. सभापतिका स्थान इंग्लिश हैडमास्तर कृष्णराव लक्ष्मणरावजीने सुशोभित किया था. श्रोतागण १०९ के अनुमान उपस्थित थे. व्याख्यान भाईलाल रणछोरदासजीने विद्या विषयपर दिया.

द्वितीय सभा—आषाढ वदी १४ को ९ बजेसे ११ बजे तक हुई. सभापति जीवराम मथारामजी थे. प्रथम बालक व बालिकाओंका मनोहर गायन हुआ, पश्चात् है. मा. कृष्णराव लक्ष्मणरावजीने नीति विषयपर अति विस्तृत व्याख्यान दिया.

पुस्तकालय—पूर्व माससे वर्तमान माहमें ९ अधिक होकर १९९ पुस्तके होगई हैं. जिसमेंसे २४ पुस्तकें स्वाध्यायार्थदी हुई हैं.

पाठशालाकी व्यवस्था—१ हाजिरी—सर्व विद्यार्थियोंकी संख्या वर्तमान मासमें ३१ है तिसमें १९ कन्या इसी मासमें दाखिल हुई हैं. औसत हाजिरी २९ अति संतोषजनक रही.

अभ्यासक्रम—पूर्व अंकमें प्रकाशित रिपोर्टके अनुसारही है. हालमें "हिन्दी भाषाका व्याकरण" पढाना आरंभ किया है, तथा बालिकाओंको स्त्रीशिक्षा प्रथम भाग प्रारंभ कराया है.

सैक्रेटरी जै. ध. हितेच्छुमंडल.

अंकलेश्वर जैन सभा.

प्रथमश्रावण सुदी ८ को रात्रिको सभा हुई तिसमें नीचे लिखे ठहराव हुए.

१ "मार्गोपदेशका" मंगानेके लिये रुपया भेजना.

२ पाठशालाकी सहायताके लिये जबतक शिलकसे काम चले तबतक किसीसे न कहना.

३ आगामी सभामें "सत्संग" विषयपर बापालाल छगनलालजीका व्याख्यान होगा आदि.

पश्चात् सुदी १४ को सभा शेठ शा दलीचंद मोतीचदजीके अध्यक्षपणें नीचे हुई पूर्व स्थिर

किये व्या. द्वा. ने सत्संगपर एक रोचक व्याख्यान दिया

जैनशाला—इसमें विद्यार्थियोंकी संख्या २२ है. जो बालबोध कक्षामें अध्ययन करते हैं तिसमें बालिकायें ९ हैं.

शा नगीनदास नेमचन्द.

नवीन पाठशाला.

हर्षका विषय है कि श्रावण सुदी ९ शनिवार को मऊ (छावणी) वाले लाला बालाबक्सजी साहिबके उत्साह व प्रेरणासे कोटियां (रियासत शाहपुर) में जहां ४० घर जैनी भाइयोंके हैं, एक जैन पाठशाला स्थापित हो गई. ४० विद्यार्थी नित्यप्रति पढ़नेको आने लगे. पं. गंगाधरजी एक सुयोग्य अध्यापक मुकरर्र किये गये हैं, कातंत्रव्याकरण प्रारंभ कर दी गई है. पाठकमहाशय! उत्साह व धर्मप्रेम इसीको कहते हैं. अन्यथा रथ प्रतिष्ठादिकोंमें हजारों बहानेवाले महाशय तो बहुतसे मौजूद हैं. आशा की जाती है, कि कोटियांके शाह कजोड़ीमलजी गोधा, शाहजिणदासजी सेठी, शाह चोथमलजी काशलीवाल, शाह मोषमचन्दजी सुआलालजी, शाह तेजपालजी गोधा, शाह किशनलालजी बड़जात्या आदि धर्म्मात्मा पुरुष इस जातिधर्मोन्नतिके कार्य्यको इस प्रकार उठाकर अंततक चलावेंगे. और लोक परलोकमें सुयशके भागी बनेंगे.

---

३ कारंजा संस्थान.

नागपूरकी **बालज्ञान संवर्धक** जैनसमाज द्वारा विदित हुआ है कि उक्त स्थानमें श्री भट्टारक देवेन्द्रकीर्तिजी महाराजके सदुपदेश व द्रव्यकी सहायतासे एक जैन पाठशाला स्थापित हो गई. जिसके लिये १००) वार्षिक चंदा भी भाइयोंकी प्रसंशनीय उदारतासे एकत्र हो गया. आशा है कि सहायक भाई इस चन्देके देनेमें आजकल न करके, यशके भागी बनेंगे.

पाठशालाओंका पुनरुज्जीवन.

हमको लिखते हुये हर्ष होता है कि प्रतिमासमें एक न एक जगहँसे पाठशाला स्थापित होनेके शुभ समाचार प्राप्त होते हैं जिससे यह विदित होता है. कि अब प्रतिस्थानके भ्रातृगणोंके हृदयमें अज्ञानांधकार विनाश करनेकी वासना ने कुछ प्रवेश किया है. वर्तमानमें निम्नलिखित पाठशालाओं हढ़तय स्थापित होनेके अतिरिक्त कई स्थानोंसे जैनी पंडित भेजनेको प्रेरणा की गई है. तथा कहीं २ पाठशालार्थ द्रव्य एकत्र होनेके संतोषजनक समाचार मिले हैं, परन्तु हम उन स्थानोंके महाशयोंसे प्रार्थना करते है. कि जिन्होंने चन्दा एकत्रित कर लिया है. अथव जैनी पंडितोंके अन्वेषणमें बैठे हैं. वह यदि जैन पंडित मिले तो ठीक है; नहीं तो सदाचरणीय सत्कुलीन ब्राह्मणोंकोही नियत कर पाठशालाका कार्य शीघ्र प्रारंभ करें हम सूचना देंगे.

मुम्बई.

यहांकी पाठशाला योग्य अध्यापकके न मिलनेसे २।४ मासतक प्रायः बन्द रही. परंन्तु अब आनंदके साथ प्रगट करना पड़ता है. कि विद्यार्थियोंके भाग्योदयसे जयपुरनिवासी. पं० जवाहरलालजी साहित्यशास्त्रीका आगमन होगया. और उक्त पंडितजीके आतेही श्रावण वदी ५ से पाठशालाका कार्य्य पुनः यथोचित रीतिसे चलने लगा. और १९ विद्यार्थी आने लग गये. इनमेंसे

दो छात्र तो कातंत्रका उत्तरार्द्ध ओर महापुराणका प्रथम पर्व पढ़ते है. तीन कातंत्र षट लिङ्ग व ७ विद्यार्थी कातंत्रपंचसंधि रत्नकरंड श्रावकाचार पढ़ते हैं शेष ३ जन बालबोध, व इष्ट छतीसी भक्तामरादि पाठोका पठन संप्रतिकर रहेहैं आशाहै.कि थोड़े दिनमें कईछात्र योग्य बनजावेंगे.

इन्दौर

इसनगरमें प्रथम तीन पाठशाला थी, जिनमें एकतो कन्याओकी थी, और शेष दो बालकोकी परन्तु भिन्न भिन्न होनेंके कारण प्रवन्ध भी ठीक नही होताथा. विद्यार्थीभी कम उपस्थित होते थे. अब वहांके विद्यारसिक धर्म्मात्मा पुरुषोंके सुविचारसे यह तीनों मिलकर मारवाड़ी मन्दिर जीमें एक बड़ी पाठशालाके रूपमें आगई हैं, इस पाठशालामें ११० विद्यार्थी ओर बालिका पठन कर रही हैं. पाठक तीन हैं. जिनमें प्रधानाध्यापक पंडित श्रीवरजीशास्त्री और द्वितीयाध्यापक श्रीकृष्ण शास्त्री सुयोग्य तथा परिश्रमी पुरुष हैं श्रीमती बाल प्रवोधनी जैन सभाके सभासद इसके प्रवन्ध कर्त्ता हैं.

इन समाचारोंको प्रगट करते हमको बड़ा भारी हर्ष हुआ है. कि इन्दौर ऐसे योग्यतापन्न बृहन्नगरमें जो त्रुटि थी. वह पूर्ण हो गई. आशा की जाती है कि वहांके धर्म धनसम्पन्न सज्जनजन इस नवारोपित पाठशालालताको आवश्यक्तानुसार द्रव्य जलसे सिंचित कर अपूर्व विद्वानरूपी सुरभि पुष्पोंके आमोदसे प्रमुदित होवेंगे. हम समझते हैं कि यह ११० बालकोंकी पाठशाला पाठशाला ऐसा छोटा नाम रख करकेही प्रबंधकर्ताओंकी कार्य कुशलता व धनवानोंकी सहायतासे महा विद्यालय सरीखे महा नाम विनाही महान् विद्वान बनानेमें पीछे न रहेगी.

जैनहितैषीके ग्राहकोंको सूचना.

विदित हो कि मैं दिगम्बर जैनप्रान्तिक सभा बम्बईकी आतिशय प्रेरणासे अत्यावश्यकीय कार्य समझ ईडर आदि प्राचीन सरस्वती भंडारोंकी जैन पाटशालादिकोंकी रक्षार्थ देखरेख करनेकेलिये नियत होकर ता. १६ जनवरी सन १९०२ को दौरेकेलिये बंबईसे रवाने हुआ था. सो तीन महीनेतक तो ईडरमेंही रहा. जिसकी रिपोर्ट जैनमित्रमें शायद आपने देखी होंगी. तत्पश्चात् मजित्रा, कर्मसद, अंकलेश्वर, सूरत, वर्धाकी बिंबप्रतिष्ठा, भोपाल, सम्मसगढ़, भेलसाकी पाठशाला वगेरह देखकर बासोद का प्राचीन भंडार देखा. तत्पश्चात् सवामहिनेतक बरवासागर रहकर ता. २ अगष्टको सब कुटुंबसे मुलाखात करनेकेलिये अपनी दूकानपर यहां आया हूं. इतने दिन जैनहितैषीके बंद रहनेसे हमारे अनेक ग्राहक महाशयोंको हताश होनापड़ा होगा.सो उनसे प्रार्थना की जाती है कि आप हताश न हूजिये यद्यपि मेरे गुरुभ्रातादि बंबई जानेकी आज्ञा नहीं देतेकिन्तु कलकत्तेमें रहकर अपना कर्तव्य यथाशक्ति साधन करनेकी आज्ञा देते हैं. सो अब शीघ्रही जैनहितैषी पत्र कलकत्तेसे निकलकर धर्मात्मा जैनी भाइयोंकी सेवा करनेकेलिये हाजिर हुआ करेगा. जिनको इस विषयमें पत्रव्यवहार करना होवे. नीचे लिखे ठिकानेसे करें. क्योंकि दशहरे तक मेरा रहना यहींपर होगा.

जैनी भाईयोंका हितैषी दास

पन्नालाल जैन मु. दुर्गापुर.

पोष्ट—भोगल हाट—(बंगाल)

Registered No. B. 288.

श्रीवीतरागाय नमः

जैनमित्र.

जिसको

सर्व साधारण जनोंके हितार्थ,

दिगम्बर जैनप्रान्तिकसभा बंबईने

श्रीमान पंडित गोपालदास बरैयासे सम्पादन कराकर

प्रकाशित किया.

जगत जननहित करन कँह, जैनमित्र वरपत्र।
प्रगट भयहु–प्रिय! गहहु किन? परचारहु सरवत्र!॥

तृतीय वर्ष } भाद्रपद सं. १९५९ वि. { अंक १२ वां

नियमावली.

१ इस पत्रका उद्देश भारतवर्षीय सर्वसाधारण जनोंमें सनातन, नीति, विद्याकी, उन्नति करना है.

२ इस पत्रमें राजविरुद्ध, धर्मविरुद्ध, व परस्पर विरोध बढ़ानेवाले लेख स्थान न पाकर, उत्तमोत्तम लेख, चर्चा उपदेश, राजनीति, धर्मनीति, सामायिक रिपोर्ट, व नये २ समाचार छपा करेंगे.

३ इस पत्रका अग्रिमवार्षिक मूल्य सर्वत्र डांकव्यय सहित केवल १।) रु० मात्र है, अग्रिम मूल्य पाये बिना यह पत्र किसीको भी नहीं भेजा जायगा.

४ नमूना चाहनेवाले)॥ आध आनाका टिकट भेजकर मंगा सक्ते हैं.

चिट्ठी व मनीआर्डर भेजनेका पता:—
गोपालदास बरैया सम्पादक.
जैनमित्र, पो० कालबादेवी बम्बई—

कर्नाटक प्रिंटिंग प्रेस, कांदेवाड़ी, मुंबई.

१ विज्ञापन.

पंजाब प्रान्तमें उपदेश देने हेतु एक ऐसे जैनी पंडितकी आवश्यक्ता है जो संस्कृत और उर्दू जबानका जानकार हो. तथा जैन धर्म विषयक उपदेश देनेकी अच्छी शक्ति रखता हो. वेतन १९) मासिक दिया जावेगा. जिस किसीकी इच्छा हो वह नीचेलिखे पतेसे पत्रव्यवहार करें.

किशोरचन्द मंत्री,

दि. जै. पंजाब प्रान्तिक सभा

सदरबाजार रावलपिंडी.

२ विज्ञापन.

जो जैन विद्यार्थी "उत्तम क्षमा" के विषयमें सबसे प्रथम सर्वोत्तम लेख जैनमित्रमें प्रकाशित होनेंको भेजगा. उसको एक प्रति "ज्ञान सूर्योदय नाटक" की पारितोषकमें प्रदान की जावेगी—

राजाराम जैन

देवबन्द (सहारणपुर)

प्रार्थना

सर्व जैन पाठशालाओं व शास्त्रसभाओंके कार्य्याध्यक्षोंसे निवेदन हैं, कि अपनी २ पाठशाला व सभाओंकी रिपोर्ट अतिशीघ्र भेजनेकी कृपा दिखावें कारण जैन प्रान्तिक सभाका द्वतीय वर्ष पूर्ण होनेको आया है और अधिवेशन अति शीघ्र होनेवाला है. इससे परिपूर्णावश्यक्ता है.

दशलाक्षणी महोत्सव.

बम्बई.

गत वर्षोंकी भांति इस सालभी उक्त जल्सेमें १० दिन अपूर्व आनन्द रहा. तिसमेंभी श्रीमान् राजाबहादुर दीनदयाळजी धर्मचन्दजी, सहारणपुर निवासी लालाजयंतीप्रसादजी, श्रीमान पं. गोपालदास बरैया. पं० बलदेवदासजीके उपस्थित होजानेसे आनन्दकी सीमा न रही. प्रतिदिन १० बजेसे १ बजे तक तत्वार्थ सूत्र सवार्थ सिद्धि के एक एक अध्यायकी विवेचना सुनकर जैनधर्मके जगज्जयी आचार्योंकी बुद्धि व धर्मकी सत्यार्थताका विचार होते ही श्रोतागणोंका चित्त आनन्दसागरमें मग्न हो; स्वर्ग वैभवका अनुभव करता था. इसके अतिरिक्त दोनों समय शास्त्रोच्चार भी सदाकी भांति होताथा.

पूजन विधानादि प्रभावनाङ्गके कार्योंमें भी यहांकी मंडलीने किसी प्रकार कमी नहीं की हैं. परन्तु यह विषय सबही जगह मुख्यतासे होनेके कारण लिखनमें कुछ नयापन नहीं दिखलाता.

चतुर्दशीकी रात्रिको भोईवाडेके मंदिरमें मासिक सभा हुई. जिसमें व्याख्यानदाता पं० बल्देवदासजी कलकत्तानिवासी नियत किये गये थे. उक्त पंडितजीकी विद्वत्ता भरे ललित व्याख्यानोंसे प्रायः सबही जन परिचित होंगे. तिसपर भी एक अनूठा. गंभीर विषय "स्याद्वाद" इनके मुखसे श्रवण करनेका यह अवसर आया—पाठको! यही "स्याद्वाद" शब्द जैन मतका अद्वितीय भूषण है. इस भूषणके धारण करनेवालेमें वह शक्ति है कि अनेक दिग्गजवादीगण देखकर अवाक् हो मानरहित हो जाते है. पश्चात पं० गोपालदासजीनें इसीकी पुष्टितामें स्याद्वाद वाणीका भले प्रकार वर्णन किया. इसके आगे क्या हुआ सो आगामी अंकमें विस्तारपूर्वक लिखा जायगा.

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥
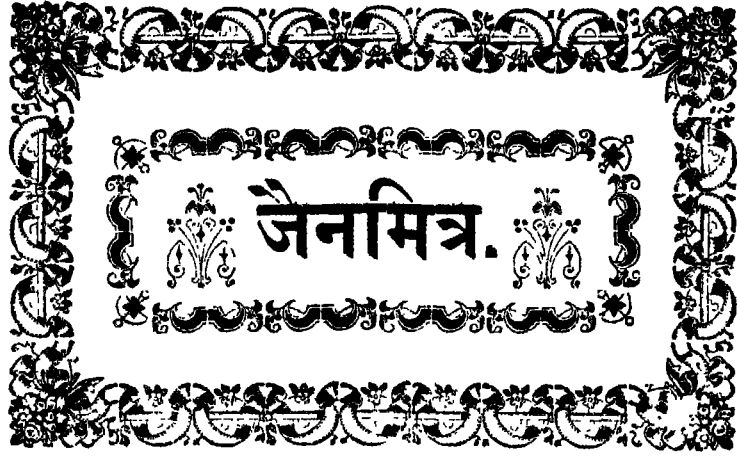
जगत जननहित करन कहँ, जैनमित्र वरपत्र ॥
प्रगट भयहु-प्रिय ! गहहु किन ?, परचारहु सरवत्र ! ॥ १ ॥

तृतीय वर्ष. } भाद्रपद, सम्वत् १९५९ वि. { १२.

पञ्चमृताभिषेक निःसंशयावलि

इस लेखका मुख्यतः उद्देश जैनमित्र दशमांककी संशयावलिके निराकर्णार्थ—

पञ्चामृताभिषेकके निषेधसाधक ग्रंथाधारके प्रमान नहीं देनेका कारण यही है. कि "विधिवाचकत्वंनिषेधोभवति यत्रविधिर्नास्तितत्रानिषेधोपिनास्तीत्यादिन्यायेन" यही सिद्ध होता है, कि जिसकी विधिहोवे, उसकाही निषेध होता है. इसवास्ते प्रथमतः लिखचुके. कि सर्वज्ञ वीतराग भगवद्भाषितानुमान प्रमाण करके जैन धर्माम्नायमूलसंघार्षग्रंथोंमें पंचामृताभिषेक का कर्तव्य सर्वथा नहीं है. क्योंकि अनुमान प्रमाण करके निश्चय किया है. सो अनुमान प्रमाण भी अनुमिति पदार्थोंको यथार्थ संशय विपर्यय अनध्यवसायरहितद्योतक है और "प्रमाणादर्थसंसिद्धिस्तदाभासाद्विपर्ययः" इसवाक्य करके प्रमाणसेही अर्थकी संसिद्धि है. प्रमानाभाससे नहीं हो सक्ती. तस्मात् अनुमान प्रमाण करके यही निश्चय है कि पंचामृताभिषेक नहीं करना क्यों कि मूलासारमें अनागार भावनाके व्याख्यानमें सुगंध द्रव्यादि करके उद्वर्तन नहीं करना साधुओंके वास्ते उक्त है. कि "मुहणयणदंतधोयणमुवट्टणपादधोयणंच संवाहण परिमद्दण सरीर संठावणसव्वं ७४" व्याख्या "मुखस्यनयनयोर्दंतानांच धावनं शोधन प्रक्षालक्षालनं उद्वर्तनं सुगंधद्रव्यादिभिः शरीरोद्वर्तनं पादप्रक्षालनं कुंकुमादिरागेणपादयोर्निर्मलीकरणं संवाहनं अंगमर्दनं पुरुषेणशरीरोपरिस्थितेन मर्दनं परिमर्दनं करमुष्टिभिस्ताडनं काष्ठमययंत्रेणवापीडनं इत्येवंसर्वशरीरसंस्थानं शरीरसंस्कारंमाभवो न कुर्वंतीति संबंधः"

सो भाई साहब जरा विचारिये तो सही कि जिन अष्टाविस मूल गुणके धारकोंके वास्ते उक्त द्रव्य सर्वथा वर्जनीय है. तो फिर मदोन्मत्त होकर अनुमान नहीं करते हैं. कि वीतराग निर्लेपको मणोंशो दुग्ध दही इत्यादि पंचद्रव्योंसे खूबमर्दन व अभिषेचन करना किस प्रकार है. परंतु ऐसा न विचार कर सिर्फ वचन पक्षपर अवरूढ होकर अकल्याण करलेते हैं. (प्रश्न) यह कहना तुह्मारा असमीचीन है. क्योंकि इसप्रमाणसे प्रतिमाके बदल निषेध नहीं हुआ. (उत्तर) वसुनंदि प्रतिष्ठासारमें यही लिखा है कि प्रतिमामें व स्वरूपमें कोई तफावत नहीं है. तस्मात् साधुकी प्रतिमामें उक्तद्रव्योंके वर्जनीयका नियम हुआ. तो अर्हत प्रतिमामें अवश्यही हुआ क्योंकि उपरोक्त स्पष्टतया वर्णित है. अतः हमको पंचामृताभिषेक सर्वथा नहीं करना सिद्ध हुआ. (प्रश्न) स्नापनार्चा स्तुतिजपा इत्यादिक श्लोक करके तो पंचामृताभिषेक का निषेध नहीं हुआ (समीक्षक) इस श्लोकमें साम्यभावकी प्राप्तिके वास्ते तो सिर्फ स्नपन, अर्चन, स्तवन, जपन यही पूजनमें कहा है. इनसे भिन्न जो पूजन क्रिया वह केवल असाम्यभावोत्पत्तिकारक है. क्योंकि यह श्लोक केवल लक्षणार्थ है. लक्षणा उसे कहते हैं "तात्पर्यानुपपत्तिलक्षणाबीजं" तात्पर्य जहांपर कि अनुपपात्ति हो वहां लक्षणा होती है. इस वास्ते तात्पर्यानुपपात्ति लक्षणामें बीज है. "गंगायांघोषः" यहांपर गंगामें घोष याने अहीरोंका ग्राम कहनेका तात्पर्य नहीं है तैसेही हमारे वीतराग धर्ममें पंचामृताभिषेक कहना तात्पर्य नहीं है. किंतु पंचामृताभिषेकको छोड़के शुद्ध जलाभिषेक करना तात्पर्यार्थ है. इसवास्ते पूर्णतया नियम हुआ कि स्नपनादि उक्त क्रियाके सिवाय पूजनादिमें और कर्तव्य जिनाज्ञाको उल्लंघन करना है. "तस्मान्नप्रमाद्येत्" तिस स्नपनादिक उक्त क्रिया ओंसे प्रमाद नही करना. (प्रश्न) सिद्धान्तसारादिक श्लोक प्रमाणमें दिये. परन्तु वह देवताओंके कर्तव्य द्योतक हैं. न कि नित्तनैमित्तिकानुष्ठानीको आज्ञा. (समीक्षक) देवादिकोंने जो अभिषेचन किया है, वह आज्ञापूर्वक है. या विनाही आज्ञा? यदि आज्ञापूर्वक है; तो हमको करनेमें दोष नही. और यदि उन्होंने विना आज्ञाही अभिषेचन किया. तो दोषके भागी रहे क्योंकि जहां तहां अष्टद्रव्यों करके देवादिकोंके पूजन कर्तव्य द्योतक हैं इसवास्ते शनशः स्थानोके देव कर्तव्य पूर्वक पूजादि क्रिया करते हैं. तो फिर एक राजा वज्रकर्णके दृष्टांताभाससे देवोंका अभिषेचन दूर कर देवें क्या? नहीं. और यह सिद्धांत सारमें ही ६९ वें श्लोकमें लिखा है, जरा पुस्तक खोलकर देखें (प्रश्न) मूलसंघाम्नायके पूजन प्रकर्णके विधायक ग्रंथोंमें जिस प्रकार आज्ञा होवे उसही प्रकार प्रवर्तो. (समीक्षक) मूलसंघाचार्योक्तार्ष ग्रंथोंमें जिस प्रकार आज्ञा हैं उसही प्रकार हमको माननीय है. परंतु केवल ग्रंथाज्ञाको माननेवालोंको यथार्थ कल्याण नही हो सक्ता. कारण कि इस पंचम कालमें केवल ज्ञानी व ऋद्धिधारी बहुश्रुती गुरुका अभाव है. और ग्रंथ विद्रोहियोंके नष्ट भ्रष्ट करनेसे बहुधा असंभावित तथा विपर्यय कथनसे भर रहे हैं. इससे परीक्षा करके ही श्रद्धानदृढ होनेकी संभावना है. आज्ञाका अर्थ यह नहीं है. कि जो ग्रंथोंमें लिखा है. वही भगवानकी आज्ञा है और उसीपर श्रद्धान करो. नहीं नहीं

उस्का आशय यह है. कि नानाप्रकार परीक्षा करके भ्रम मिटालो उसीको ग्रंथाज्ञा कहते हैं.(प्रश्न) आधुनिक संघवालोंने धातु पाषाणके प्रतिबिंबोंकी जिला बिगड़नेके भयसे पंचामृताभिषेक उठा दिया इस्में प्रमाण क्या? यहभी समकक्षी युक्ति है. (समीक्षक) जरा बिचारिये तो सही. स्फोटन जिला बिगड़नेको समकक्षीपना नहीं हो सक्ता क्योंकि स्फोटन और जिला ये दोनोंकी क्रिया प्रथक २ रूप है. वास्ते आपकी युक्ति असमीचीन है. (प्रश्न) मूलसंघमें श्रीभद्रबाह्वादि नेमिचंद्रपर्यंत मुनीसत्तमोंने जो जो ग्रंथोंमें लिखा है. वही मान्य हैं. (समीक्षक) मान्य तो हैं. परंतु उन आचार्योंके नामसे कोई धूर्तनेंधूर्ताचार करके ग्रंथोंमें वस्त्रधारणादिका प्रकर्ण उक्त लिखा है कि वस्त्रधारण वीतराग भगवतका बहुत उत्तम है. क्योंकि नग्न रहनेसे स्त्रियोंके भाव बिगड़ते हैं. आशा है कि ऐसे हमारे आधुनिक पंचामृताभिषेककारी अविद्वान अवश्यही उन वाक्योंपर अवरूढ होकर भगवत् भाषितानुमान प्रमाणका तिरस्कार सर्वथाही कर सक्ते हैं. (प्रश्न) श्रीजिनसेनाचार्यजीने आदिपुराणमें जिस जिनसेनको नमस्कार किया है उन्हीका दूसरा नाम वसुबिंदु है. ऐसा प्रतिष्ठापाठमें लिखा है. (समीक्षक) यहभी लेख आधुनिक है एक एक नामके अनेकाचार्य होनेसे किसीके बदले किसीका वाक्य माननीय नहीं हो सक्ता. इसी प्रकार जयसेनके बदले वसुबिंदका वाक्य माननीय नहीं हो सक्ता. जहां आगम अनुमान और प्रत्यक्ष प्रमाणका मेल हो, वही वाक्य माननीय है. अन्यथा नहीं. (प्रश्न) यशस्तिलकमें व अकलंक प्रतिष्ठा पाठमें तथा जिनसंहिता, इन्द्रनंदिसंहिता, पूजासार आदि ग्रंथोंमें भी पंचामृतके वास्ते सुस्पष्ट आज्ञा है. (समीक्षक) फिर आपको आज्ञारूप पंचामृताभिषेकके श्लोक सुस्पष्ट लिखनेमें क्या हरजा पाया गया.? क्या वह ग्रंथ मिला नहीं ? सो नाम मात्र ग्रंथोंका दर्शन कराकर अपने लेखसे ही पंचामृताभिषेकको उक्त समझ लिया और मूलसंघार्षग्रंथोंके आचार्योंके वचनोको आधुनिक विद्वान समझ बैठे. वाह २ ! जैन जातिमें क्या विद्याका लोप हो गया. कि धोका देकर भ्रातृगणोको संदेह समुद्रमें डाल देना यह विद्वानोंका काम नही है. विद्वानोंका तो कार्य सच झूटकी परीक्षा कर ग्रहण करना सर्वोत्तम है.

प्रश्नोंका उत्तर.

(१) मूलसंघ और काष्टासंघमें पंचामृतका ही भेद है. और मूलसंघ अनादि है. व काष्टासंघकासादित्व है. क्योंकि महावीरस्वामीके पांचसौपंदरा वर्षके बाद लोहाचार्य हुए, यह सात अंगके पाठी थे. इन्होंने महावीरस्वामीके निर्वाणसे ८१० वर्षके बाद काष्टासंघ प्रवर्ताया जिस्में ग्रंथकर्ता आचार्य मूलसंघके भगवत् जिनसेनजी तथा गुणभद्रजी भये. तिस ही समय काष्टासंघके आचार्य रविषेणजी जिनसेनजी भये. जिन्होंने पद्मपुराण---हरिवंश पुराणमें जहां तहां पंचामृताभिषकका वर्णन किया. यह प्रमाण इन्द्रनंदि दिगंबराचार्यकृत्नीतिसारमें लिखा.

(२) मूलसंघ ग्रंथोकी व काष्टासंघ ग्रंथोंकी बहुधा यही पहिचान है. कि जिस्में पंचामृताभिषेक कथित है. वह तो काष्टासंघ है और जिस्में पंचामृताभिषेक अकथित है. वह मूल-

ध है. और माननीय दोनो हैं. क्योंकि पदार्थ दोनोंमें यथार्थ प्रदर्शनीय हैं. सिर्फ इतनाही है. कि काष्ट प्रतिमाके माननेसे पंचामृताभिषेक शुरू हुआ सो काष्टप्रतिमाकोही उक्त है.

(३) इसका ऊपर लिख चुके. कि विधिका निषेध होता है. सो हमारे मूलसंघाचार्योंने तो इसका नाममात्रही नहीं लिखा. तस्मात् हम क्यों निषेध करें. सर्वथाही अनुमान प्रमाण करके हुआ है

आशा है कि इस लेखसे हमारे सनातन जैन धर्मावलंबी भ्रातृगण अपने २ अंतःकरणोंके संदेहरूप मेलको निकालकर शुद्धरूप होके शुद्धाम्नायमें प्रवर्त होंगे. इत्यलम्.

पंडित शिवशंकर शर्मा.
बड़नगर, मालवा.

दशलाक्षणी महापर्व व पाठशालाओंकी आवश्यकता.

पावसका प्रखर प्रताप पहुमिपर प्रसर रहा है, बलाहक गण चारों ओर उमड घुमड़ कर अनभिज्ञ नवयुवक कर्म्मचारियोंकी भांति प्रजापर घुड़की दिखाकर काम निकाल रहे हैं. कभी मूसलाधार और कभी मंद वृष्टि कर अपना असामान्य शक्ति प्रगटकर मरीचिमालीको कभी तो लुप्त और कभी परदेसे बाहर निकाल सृष्टिको दर्शन करा आशीर्वादके भागी बन रहे हैं. अवनीतलके प्रायः सबही प्राणी अपना हीतलशीतल कर विश्राम भावमें हैं. चात्रक चकोर प्रभृति प्राणी कलित कलरवकर किसीको आनन्द और किसीको दुःखमय संसारका दुःखही अनुभव कराते हैं. चंचला चमक २ कर क्षणभंगुर चंचला (लक्ष्मी) की गति का द्योतन करती है. परतौभी तृष्णातुर जन इससे मोह नही छोड़ना चाहते हैं. सो इसमें आश्चर्यही क्या ? उसकी मोहनी छवि ऐसीही है, कि अच्छे २ संतोषी त्यागी उसकी वृहत चुंगलमे फंस दोनों हात पसारनेको तत्पर हो जाते हैं. किसी सम्राटने एक समय किसी कोविद पर प्रसन्न होके एक लक्ष मुद्रा पारितोषकमें प्रदान करनेकी आज्ञा मंत्रीको दी. परन्तु वह यह नही जानते थे कि एक लक्ष कितना होता है. जब मंत्रीने उनके सन्मुख इतनी द्रव्यका ढेर लगाया तब महाराजकी आंखें चकचोंधा गई. अतः एक महस्त्रसे अधिक देना बन न पड़े. सारांश संसारके मोहकी यह एक वृहत् जंजीर है. मेह की न्यूनाधिक्यता यद्यपि इस चातुर्मासमें लगी रहती है. पर तो भी वीथियां पंक समूह से तृप्त सदाही रहती हैं. इसही कारण सम्पूर्ण क्रयविक्रय सम्बन्धी कार्य शिथिल रहते हैं. गृहमेंसे बाहर केवल वेही बेचारे निकलनेको चाहते हैं; जो हत्यारे उदरकी चिन्तामें सदा निमग्न रहते हैं. अतः विचार करनेसे जाना जाता है. कि वर्षभर की वृहत विटम्बनासे मुक्त एक यहही समय है और इसहीपर आज हमारा वक्तव्य है. ऊपरका पंवारा केवल इसही तक पहुंचनेकी सीढ़ी है.

पाठक महोदय ! इस व्यवसायापन्न जैन जातिके प्राचीन पुरुषोंके प्रचुर पांडित्यकाभी इस समय स्मरण कीजिये. किंचित उनके कर्त-

क्योंकी और आज सूक्ष्म दृष्टिसे देख उनके आशयकी ओर झुकिये. अहा! यह दशलाक्षणिक पर्व जिसके सेवनमें आज सर्व जैनीमात्र मनसावाचाकर्मणासे आरक्त हो. धर्माभिमानी बन रहे हैं. बालक युवक सबही जिसके असाधारण उत्सवमें प्रफुल्लित हैं; जिसकी सच्ची भक्तिसे मुमुक्ष जन मोक्षको पडोसका पुरवाही समझते हैं. उसहीं महत्पुनीत पर्वको इस सर्व जंजालसे छुट्टी पाये हुए; उत्तम अवकाशप्रद प्राविट ऋतुमें जिसमें दशधाधर्म सर्व प्रकारसे पलसकनेकी संभावना है: स्थापित किया है. यह बडे विचारशील विद्वानोंका कार्य है. पश्चिमी हवाखोर नवयुवक अकसर ऐसा प्रश्न कर उठते हैं कि यह पर्व इन्हीं दिनोंमें क्यों होता है? उसहीका ऊपर उत्तर है.

किसीने कहा है कि "दिल चंगा तो कठौतीमें गंगा" सचमुचमें प्राणीमात्र निश्चिन्त एवं विश्रामयुक्त होनेसेही अपने कर्तव्योंकी पालना बाधारहित निर्दोषितापूर्वक कर सक्ता है. अन्यथा नहीं. और योंतो पंचमकालीय प्रमादी अथवा अनंतानुबन्धी बन्धी पुरुष पावसमें तो क्या सदाही प्रचलाप्रचलाका प्रभाव व महाभारतका विचित्र दृश्य देखते हैं. मनुष्य निश्चिन्त होनेसे कितना हलका हो जाता है, उसके शिरपरसे कितना बडा संसाररूपी पहाड़ उठ जाता है, वह कैसा सौख्यमय दृश्य देखता है, इसका लिखना अवश्यही कठिन है. असलमें पूछो. तो सर्व देश निश्चिन्त होनाही मोक्ष है. परन्तु पुरुष जब चिन्तायुक्त विषादमय होता है तब यह सब लक्षण विरुद्ध दीखते है. उसकी विषम वेदनाका पार नहीं हैं. वह संसारको अंधकारमय रौरवतुल्य देखता है. धर्म कर्म शर्म की परिभाषा उसके सोच संयुक्त हृदयपटलपर कर्भी अंकित नहीं होती. मेघाछन्नभमडलमें इन्द्रधनुष ऐसी पंचरङ्गी हंसीकी रेखा उसके मुखपर आना देख मानवगण पर्वका दिवस समझ आश्चर्ययुक्त होवें तो अयोग्य नही है. प्रयोजन यह कि अविश्रामी आकुलतासंयुक्त मनुष्य, मनुष्यभवका लाभ, दशधाधर्म (क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग, आकिंचन, ब्रह्मचर्य) पानेसे वंचित रहते. जीवनको भारतुल्य देखते हैं. तो नवयुवको! क्या यह उत्तम समय अबभी अयोग्य है? नहीं देखिये, आज श्री मन्दिरजीमें भईया भाइजी भी जो भादवद मासमेंही मन्दिरमें आनेसे अपनेको जैनी मानते हैं. कैसी तानें छोड़ रहे और झांझ दफकी झनकारमें मग्न हुए, चिनकार तक नहीं करते हैं. आज आल्हाके गानेवाले भी स्वाध्यायका मैदान देख रहे हैं. आज वृषभयान हांकनेवालेभी श्री जिनेन्द्र देवकी पूजनमें गला फाड़ २ धन्य २ की प्रतिध्वनि मंदिरमें बार २ उठा रहे हैं. आहा! आज जैनी जन व्यवसाय सम्बन्धी टांय २ से मुक्त हो, भक्तिरूपी स्वर्ग गंगामें स्नान कर कर्ममल धो रहे हैं. क्या वास्तवमें कर्ममल धोया जाता है?

और क्या नहीं? अजी बुद्धि कहीं समीर सेवनको तो नहीं निकल गई है. यह नहीं होता तो हम लोग क्यों ऐसा करते. हमारे परंपरायाचार्यगण ऋषिमुनिमानवगण जिस वृत्त की प्रशंसा करते २ थक गये; जिसके

प्रतापसे आज वह अखंड अक्षय अलोकिक सुख सम्पन्नस्थानमें जा विराजे हैं तो उसके विषयमें तुम्हारे मुंहसे यह प्रश्न निकलना. समीर सेवन को गई हुई बुद्धिका स्मरण अवश्य दिलाता है.

वाह! खूब "कहैं खेतकी सुनें खरयानकी" अजी महाशय मैं भी तो आपकी श्रेणीसे च्युत नहीं हूं. मैं भी तो इसी विषयका पुष्टि करता हूं. कुछ विरुद्ध नहीं हूं. मेरा कहना आप समझे नहीं. उक्त प्रश्न जो किया गया है वह सांप्रति दशा देखके किया गया है. देखिये! विधिप्रयोग विचाररहित की हुई. अमोघ औषधि भी फलदायक नहीं होती. इसही प्रकार ज्ञान विद्या विचार विधिविना क्रिया केवल भार है. यद्यपि आपके आचार्यका इतना माहात्म्य वर्णन कर गये. और आप भी उत्कृष्ठावस्था को प्राप्त हो गये. परन्तु हम ज्ञानशून्य मनुष्य उससे वंचित रहेंगे. यह कहना अव्यर्थ नहीं हो सक्ता.

विचारशील बन्धुवर्गो! यदि आप दशधा धर्मका अर्थ भावार्थ भली भांति जानते होंगे. तो अवश्य कहेंगे. कि उन दशही धर्मोंमें कैसा श्रृंखलाबद्ध सम्बन्ध है. एकके अतीचार रहित पालन करनेसे सब पलते हैं. एकके त्यागनेसे सब जाते हैं. यथा जो पुरुष ब्रह्मचर्य्य रहित है. उसके पास क्षमा विनय आर्जव सत्य शौच संयम तप कभी खड़े नहीं रह सक्ते ऐसे ही जिसके पास क्षमादि नहीं प्रायः सबही विसर्जन हो जाते हैं. और एक सत्य पालनेवाला सम्पूर्ण वृत्तोंका पालनकर सक्ता है. इसे भली भांति हिसाब लगाकर देखिये! परन्तु एक ज्ञान विहीन कुछ भी नहीं पाल सक्ता. कारण वह इनका अर्थही नहीं समझता. इनके भेद प्रभेदही नहीं जानता. इनके अतीचार नहीं जानता. इनके पालनकी विधिही नहीं जानता. एक दूसरोंसे क्या सम्बन्ध है सो नहीं जानता. त्रियोग कर करनेसे इनमें कितनी लाभ हानि है. केवल मनसेही करनेमें क्या हानि है; नहीं जानता. ऊपर लिखे विषयोंसे वह बिलकुल अनभिज्ञ होनेसे यदि पार पा जायगा. तब तो जन्मका अन्धा विंध्याचल ऐसे कंटकसम्पन्न कठिन मार्गसे श्रृंगतक पहुंच ही जायगा. अब रहा भक्तियुक्त भजन पूजन का फल. सो उसकी विधिही निराली है. उसका पाठ ऐसा हास्यरस टपकाता है कि वर्णन नहीं हो सक्ता, संस्कृत पाठ जो आचार्य्योंने विधिसहित बड़े परिश्रमसे लिखे हैं. उनकी कठिन काव्य तो दूरही जाने दीजिये. एक साधारण भाषा विनती है. जिसका पाठ हमारे भोले भाई "तुम पतित पाहन हो अपावन चरण आयो शरणजी" ऐसा पढ़ते हैं. भला कहिये ऐसी भक्तिसे क्या हानिके अतिरिक्त लाभकी संभावना है? सो इस अमूल्य पदार्थके विना कोई भी पदार्थ प्राप्त नहीं हो सक्ता.

और फिर आप इन दश धर्मोंको सामान्य दृष्टिसे जब देखते व मानते हैं. तो फिर क्या "त्याग" धर्मका अर्थ नहीं समझते. अथवा उसका अर्थ सर्वत्यागही तो नहीं समझ रक्खा है. इसके अन्तर्गत, ज्ञानदान, आहार, औषधिदान, अभयदान, इन चार दानोंमें श्रेष्ट जो ज्ञानदान है. क्या वह आपके इन दशही धर्मोंको सार्थक व आचार्य्यके वचनोंको यथार्थ नहीं कर

सक्ता ? अवश्यही कर सक्ता है, पर प्यारे भाइयो! शोकके साथ प्रगट करना पड़ता है कि आपका ध्यान इस ओर नहीं है. और इसके न होनेसे थोड़े दिनोंमें वह समय आना चाहता हैं. कि आपके इस पवित्र सर्वोपरि धर्मका जाननेवाला कोई भी न रहेगा. हाय! यह क्या शोकोद्घाटन शब्द निकल पड़ते हैं. इसके श्रवण मात्रसे हृदय कंपित व शरीर अवसन्न हो जाता है. ईश्वर (कर्म) न करे; कि यह समय हमको व हमारी संतानको देखना पड़े, क्या आपको लज्जा नहीं आती. कि अपनी जिनवाणीका उद्धारकर अन्य देशवासी अन्य धर्मावलम्बी (काव्यमाला सम्पादक रेम् हार्पर्ट प्रभृति विद्वान) लाभ उठावें और हम भंडारोंमें पड़े हुये अलभ्य ग्रन्थरत्नोंको मिट्टी कूड़ा समझ दीमक और चूहोंके हवाले करें. भाइयो चेतो! चेतो! चेतो!! "गई सुगई अब राख रहीको" इस पदको स्मरण कर कमर कस उद्यत हो जाओ. आलस्यको तिलांजुली दे दो, उद्यमका आव्हानन कर मेल मंत्रीसे शीघ्रही यह कार्य संपादन करा डालो. प्रिय सभ्य सभासदो! सर्व त्रुटि जो आप लोगोंमे देखी जाती हैं. उन सबको पूर्ण करनेका कारण एक विद्याही है. और जिसकी आवश्यक्ता आपमें होनेसे ऊपर लिखे शिक्षायुक्त वचन कहे हैं. इस विद्याका जातिमें प्रचार करनेका मुख्य साधन पाठशाला है. जिसके विषय कुछ कहनाही हमारा अभीष्ट है. पाठशाला होनेका साधन सभा व सभाका साधन मेल है.

अहाहा! मेल जिसका पर्यायवाची शब्द ऐक्यता है. कैसा सुहावना है. इसके श्रवणमात्रसे रोमरोम खिल उठते हैं. भय दूरहींसे भागता है. आश्चर्य अवसन्नसा हो जाता है. असंभव कार्य्य संभवताके भावको दिखलाते हैं, सो क्या है. इसकी परिभाषा क्या है. वह तो हम आपके परोक्ष होनेसे नहीं बतला सक्के. परन्तु हां कह सक्के हैं. कि यह जो वर्णावली, आप पढ़ रहे हैं. और जिससे हमारे मनका भाव समझ रहे हैं वह इसी ऐक्यता व मेलका ऐश्वर्य है. देखिये. अकारादि वर्ण पृथक २ रहनेसे निरर्थकही है, वह एकत्रित होनेसे कैसी विचित्र मंत्र यंत्र ऐसी शक्ति दिखलाकर हमारे मनका भाव आपपर प्रगटकर रहे हैं. तो फिर हम एक मनुष्य ऐसी उत्तम देह पाकर इस तरह ऐक्यता करनेसे कितना पराक्रम दिखला सकेंगे. इसका अनुमान आप स्वतः करेंगे. अब आप फिर प्रथम कहे हुए अभीष्ट की ओर झुकिये. वह अभिप्राय इसीके अवलम्बनसे सिद्ध होगा ऐसा हम पहिले कह चुके हैं. अतः मेल कीजिये? ऐक्यता कीजिये? इत्तफाक कीजिये?

इस स्थानपर यदि हम ऐक्यताका फल सभा व समाज कह देवें. तो अनुचित नहीं होगा. क्योंकि जिस जगह ऐक्यता है वहां सभा अवश्य देखते हैं. जिन मनुष्योंमें मेल है. वह एक स्थानपर बैठकर अवश्यही कुछ न कुछ विचार करतेही होंगे. अन्यथा उसे ऐक्यता नहीं कह सक्के. और हमारी बुद्धिके अनुसार चार छह व अधिक आदमियोंका एक जगह बैठकर किसी एक विशेष विषयपर चाहे वह लौकिक हो चाहे पारमार्थिक विचार करें उसे सभा कहते हैं. फिर जिस विषयके विचारकी वह सभा हो उसके

वैसेही विशेषणसहित नाम जातिसभा धर्मसभा, व्यवसायसभा, राज्यसभा, तथा मीटिंगकांग्रेस, कान्फरेंस, पार्लीमेंट आदि हो जाते हैं. अब हमारा अभीष्ट सिद्ध होना इसही ऐक्यता विटपके समाज पाठशाला प्रभृति प्रमल प्रसूनोंके बहुपरागद्वारा शास्त्रपुराण पारगामी पंडित फल उत्पन्न होना है. सो कुछ कठिन नहीं है. इसहीसे कहते हैं. कि नगरनगर, गांवगांव प्रदेश २ में सभा कीजिये! सभा कीजिये! सभा कीजिये! सभाके स्थापित होनेसे क्या २ लाभ होते हैं. सो विस्तारभयसे इस लेखमें न लिख सभाके स्वतंत्र लेखमें जो इसी पत्रमें अन्यत्र छपा है भलीभांति दरशाये हैं. ऊपर हम कह चुके हैं. कि पाठशालाको स्थापित करनाही हम लोगोंमें विद्योन्नतिका कारण होगा.

पाठशाला.

पाठशाला शब्दका अर्थ पठन करनेकी शाला, अर्थात् पढ़नेका ग्रह व मकान है. इस ग्रहके खड़े करनेकेलिये निम्नलिखित आडम्बरोंकी आवश्यका है.

१ द्रव्यका सद्भाव, २ सज्जनसदाचारी प्रवीणपाठक, ३ शील व सत्य स्वभावीबालक, ४ प्रबन्धकर्ताओंकी गंभीरता व निगरानी, ५ यथोचित प्रबन्ध, ६ अध्यक्षोंका प्रेम, ७ पक्षपातता रहित वर्ताव, ८ पढ़ाईका क्रम, इन प्रत्येकोंका पृथक २ वर्णन नीचे देखिये!

पाठक आप जानते होंगे. द्रव्य (धन) कैसी असाधारण शक्तिको धरनेवाली द्रव्य है! इसके आसरे संसार भरके सर्व कार्य्य व सौख्य सकुशल सम्पादन हो सक्ते हैं. इसलिये यह हमारे पाठशालारूपी ग्रहकी नीव कही जावे, तो अत्युक्ति न होगी. प्रायः देखा गया है कि अनेक स्थानोंके भाइयोंने अपने उत्साहसे व सज्जनोंकी शिक्षासे शाला स्थापित की. और इसीके अभावसे थोड़ेही दिनोंमें वह नष्ट भ्रष्ट हो चल वसीं, अथवा कायम हैं भी. तो व्ययकी संकीर्णतासे उनमें कुछ लाभ होनेकी संभावना नहीं दीखती. अतः पाठशाला स्थापन होनेके पूर्व धनका प्रबंध अवश्यही होना चाहिये. सांप्रतिमें यह कार्य तीन प्रकारसे चलाया जाता है. वार्षिकचन्दासे, मासिकचन्दासे, इकमुष्ट द्रव्यके व्याजसे, जिसमें प्रथमके दो तो विश्वासपात्र साधन नहीं हैं. कारण यदि चन्दा देनेवाले महाशयोंके चित्तमें अनैक्यता काबीज बोया गया. और उससे विरोध फल उत्पन्न हुआ तो तत्क्षणही वह सम्पूर्ण प्रशंसक कार्योंको नष्ट करने व अपकीर्ति फैलानेमें जादूसे न्यूनशक्ति नहीं दिखलाता. और चन्दाकी सहायता तो दूरही रहो. उलटा उस कार्यके एकदम मिटा देनेके उपाय करनेको उद्यत हो जाता है. परन्तु तीसरी इकमुष्ट द्रव्य सुप्रबन्धकके आसरेसे अति विश्वास योग्य है. और वह कार्य चिरकालतक रह सकनेकी संभावनासहित है, कारण इकमुष्ट द्रव्य यदि इतना एकत्र होगया. कि उसके व्याजमात्रसे कार्य भलीभांति चल सक्ता है. और वह किसी बैंकमें या किसी प्रतिष्टित पुरुषके यहां जमा है. तो रुपया देनेवाले महाशय यदि विरोध खड़ा भी करें तो नहीं चल सक्ता. और न कोई विघ्न करना उनका कार्यकारी हो सक्ता है. अतः तीसरी प्रथाही सर्वोपरि व लाभजनक सिद्ध हुई.

इस प्रकरणमें हम अपने धनाढ्य महाशयोंसे प्रार्थना करना योग्य समझते हैं. आशा है कि वह कुछ दृष्टि देकर हमारे परिश्रमको सफल करेंगे. देखिये! आपकी थोड़ीही दयादृष्टिसे हमारी इस अधोगतितक पहुंची हुई जातिका कितना सुधार होता है. कितने कुकर्म्मी सुकर्ममें लगेंगे! कितने अज्ञानी ज्ञानीबन अपना सुकार्य करनेके अतिरिक्त दूसरोंका और दूसरे तीसरोंका उपकारकर धर्मका परम्परा चलावेंगे? कितने राज्यमान्य जातिमान्य बन अपनी जीविका चलाय आपका यशोगान करेंगे! कितने उदर पोषणाकर कितने कर्मरूपी रोगोंसे आरोग्य हो, संसारसे निडर हो. आहारदान, औषधिदान, अभयदानके भागी बनावेंगे? आपकी कितनी प्रतिष्ठा जाति परजाति तथा राज्यमें होगी? आदिबातोंका विचार तो कीजिये. और लक्ष्मी तो सदा चंचल है ही. आप खर्च करेंगे तो और न करेंगे तो. जबतक आपको साताका उदय है; तबतक अवश्यही रहेगी. आजतक आपने यह कहीं न सुना होगा; कि अमुक धनाढ्य जो अतिही सूमथा. आजतक वैसाका वैसाही धनिक बना रहा. और अमुक उदार अधिक व्ययसे कंगाल हो, दुखी हो गया. एक कविका यह दोहा इस समय स्मरण आता है.

घटन जाय इहि भयभरौ, करै नदान न दान॥
ताही डरसु उदार जन, खरचत बहु धनधान॥

अर्थात् सूम पुरुष इस भयसे दानमें द्रव्य नहीं खरचता; कि कहीं मेरी लक्ष्मी घट नहीं जावे. और इसही प्रकार अपनी लक्ष्मी घट जानेके भयसे उदार पुरुष अधिक २ दान करता है. इसमें कविने विरुद्धालंकार कहा है. अब आप सोच सक्ते हैं; कि यह लक्ष्मी सिवाय एक दानमें लगनेके अतिरिक्त कहीं भी यश प्राप्त नहीं करा सक्ती. और यों तो "जोर गये सिर फोर कितेक गये मर सूम करोरन ऐसे" सबही जानते हैं, नाम उनहीका जगतसेठ ऐसा चिरस्मर्णनीय होता है. जो इससे कुछ कार्य लेते हैं. इसमे हे भाइयो यह सर्व श्रेष्ठकार्य सम्पादन करनेमें देर न करो.

दूसरा साधन पाठशालाका प्रवीणपाठक है. असलमें पूछा जावे, तो पाठककी उत्तमताहीपर पाठशालाकी सम्पूर्ण उत्तमता निर्भर है. यह शाला ग्रहका वृहत खंभ है, यदि पाठक बुद्धिवान, न्यायी, सदाचारी, निष्कपट, निर्लोभी, होगा. तो उसके पढ़ाये हुए बालक भी बुद्धिवान, न्यायी, सदाचारी, निष्कपट और निर्लोभ होंगे. और यदि पाठक धूर्त अन्यायी, दुराचारी, दंभी, पाखंडी होगा तो बालकके वैसा बननेमें क्या संदेह है. कारण बालकोंमें अनुकरण करनेकी शक्ति बड़ी प्रबल होती है. उनकी कोमल बुद्धिपर पाठककी शिक्षा वज्रलेप होकर बैठ जाती है. जो आजन्म अलग नहीं होती. इसके अतिरिक्त पाठकका बालकोंको आन्तारिक भय रहना चाहिये. क्योंकि विना दवावके बालककी चंचल वृत्ति किसीके सन्मुख स्थिर नहीं रह सक्ती. प्रायः देखा गया है कि धनवानोंके बालक गुरुका भय नहीं मानते. कारण गुरु बिचारा तो उनके आश्रित है. और वह भी अधिक कुछ नहीं कह सक्ते. अतः निर्भय रहनेसे वह मूर्खके मूर्ख रह जाते हैं. और गरीबोंके बालक प्रवीण हो जाते हैं. अतः इसपर पाठकों

का व प्रतिष्ठित पुरुषोंका अवश्य ध्यान रहना चाहिये.

शील व सरल स्वभावी बालक— जिस प्रकार पाठकका उत्तम होना आवश्यक है, उसही प्रकार बालकोंका भी. और इनका उत्तम होना न होना, पाठकके आधीन है. परन्तु इनके अच्छे और बुरे होनेमें मातापिताका पूर्व संस्कार भी कारण होता है. यदि मातापिता अपने बालकोंकेसाथ नीचेलिखे वर्ताव करेंगे तो उनके सर्वोत्कृष्ट बननेमें कुछ संदेह नही है, १ सदा सत्संगतिमें रखकर नीच पुरुषोंकेसाथ न बैठने देना और न नीच बालकोंकेसाथ खेलने देना; २ भोजनवस्त्रसम्बन्धी लाड़प्यार रखना. अधिक नहीं. ३ पढ़ने पढ़ानेको भेजनेमें कभी उजर नहीं करना. और न उसके किये हुए अपराधको पुष्ट करना, ४ अपराधपर यथोचित दंड देना. ५ पाठकनें दंड दिया हो तो उसको अपराध बताकर समझाना. पाठकपर क्रुद्धित उसहीके सन्मुख न होना. आदि इसके विषय अधिक कहना विस्तारभयसे त्याज्य किया जाता है. पाठशालामें हाजिरीका होना एक अति आवश्यकीय विषय है. जो पाठकके क्षात्रप्रेम व प्रबन्धकर्ताओंके हाथमें हैं, अतः पाठकको चाहिये कि बालकोंको वह अपने गुणोंसे ऐसा मोहित करें कि वह उसके विना कभी न रह सके. और प्रबन्धकर्ता उनके माबापोंसे सख्ती करें या उन्हें उलहना दें. ऐसा होनेसे हाजिरी अच्छी होगी. और वह पाठशालाकी उन्नति दिखानेका वायस होगी.

प्रबन्धकर्त्ताओंकी निगरानी व सुप्रबन्ध—जिस प्रकार मालीकी उत्तम सिंचाई व निगरानीसे वाटिका विटप हरे भरे हो, एक दिवस उत्तम स्वादिष्ट फल चखाते हैं. ठीक उसही प्रकार पाठशाला वाटिका भी प्रबन्धकर्त्ताओं की उत्तम सहायतारूपी सिंचाई व निगरानीसे डहडही रह मनोहर पंडित फलोंके दर्शन करा सकेगी. देखिये, महाविद्यालय मथुरानें थोड़ेही दिनोंमें कैसा चमत्कार दिखाया हैं. परन्तु अभीतक उसमें अनेक प्रकारकी त्रुटियां हैं. जिनका प्रबन्ध योग्यता पूर्वक न होनेसे बहुत कुछ हानिकी संभावना हैं.

पढ़ाईका क्रम—शुतुरमुर्ग ऐसा शीघ्रगामी पक्षी क्रम भंग चलनेसे शीघ्रही वधिक मनुष्योंके हाथमें पड़कर निश्चय कर लेता है, कि अपनेसे अधिक दोड़नेवाला मनुष्य अवश्यही होता है. इसही प्रकार उंटपटांग पढ़नेवाले बालक क्रमानुसार पढ़नेवाले विद्यार्थियोंसे पीछे रह जानेमें समझते हैं. कि इनकी बुद्धि प्रचुर है. परन्तु अपने "गोरख धंधे" को नहीं समझते. इससे प्रत्येक शालाओंमें पढाई क्रमसेही होना चाहिये. यह यदि महाविद्यालयके क्रमसे रक्खी जावे तो औरही अच्छा हो. कारण उस शाखाके विद्यार्थी "जैनपरीक्षालय" में परीक्षाभी दे सक्ते हैं और क्रम होनेसे सरलता होती ही है.

उपर्युक्त लिखित विषयोंके अतिरिक्त और भी कितनेक विषय शाळा सुधारके हैं. जो अनुभवी पाठक स्वतः विचार लेंगे. लेख बढ़ जानेकी आशंकासे उनका समावेश नहीं किया है.

प्रिय सभ्य बान्धवो! प्रायः लोग कहा करते हैं कि जैनीजन प्रभावनांगकी प्रभावना बडी बढ़-

चढ़के करते हैं. प्रतिवर्ष लाखों रुपया धूलकी तरह उड़ा देनेमें बिलकुल नही सकुचते. परन्तु दुःखके साथ कहना पड़ता है कि यथार्थमें कोईभी नही करता. प्रभावनाके अर्थको कोईभी नहीं समझता सब आंखें बंद किये लकीरके फकीर बन रहे हैं. अफसोस है, कि आप अपने परम दिगम्बर जैनाचार्य धर्म धुरंधर पंडित शिरोमणि श्रीमान् समंतभद्रस्वामीके वाक्यकोभी नहीं मानते. देखिये! वह अपने रत्नकरंड श्रावकाचारमें प्रभावनाका लक्षण क्या लिखते हैं.

अज्ञान तिमर व्याप्ति, मपाकृत्य यथायथं ।
जिन शासन माहात्म्य, प्रकाशस्यात् प्रभावना॥

अर्थात् अज्ञान अंधकारके फैलावको नाश करके जैसे तैसे जिन शासन व जिनागमका महात्म्य प्रगट करना सोही प्रभावना है. सो जिन शासनका महात्म्य विनाज्ञानकी वृद्धिके किस तरह हो सकेगा: सो अपही विचार करें. और उक्त आचार्यके वचनोंका प्रतिपाल करना. व न करना आपके आधीन है. मैं तो अपनी शक्ति अनुसार आपको चैतन्य कर चुका. अब पाठशालाओंका करना न करना आपके आधीन है. दशलाक्षणी महोत्सवमें यदि आप यह प्रभावना करनेकी सम्मति करेंगे तो मैं अपनेको कृत्य कृत्य समझूंगा इत्यलम्.

जाति सेवक,

नाथूराम प्रेमी.

बहुनामल्पसाराणां, समवायोदुरुत्तरः ।
तृणैर्विधीयतेरज्जु, र्वध्यन्तेमत्तदन्तिनः॥

पाठकगण! आप अपने मनमें अच्छी तरहसे जानते होंगे; कि संसार में जितने कार्य प्रचालित हैं, उन सबका मुख्य कारण ऐक्यताही है. क्योंकि बहुत जनोंकी एकही विषयमें अविरुद्ध अनुमति (सलाह) होनेको ही ऐक्यता कहते हैं. इस लिये जाति, कुल, धर्म, कर्म और व्यापारादि कार्य सब ही इस ऐक्यता बन्धनसे बंधे हुए हैं. लक्षावधि पुरुषोंके समुदायका नाम जाति है. उस जातिमें हजारों मनुष्योंके थोकको गोत्र कहते हैं. जाति और गोत्रका जो आचरण है सो धर्म है. उस आचरणानुसार जो प्रवृत्ति सो कर्म है. यदि किसी जातिके मनुष्य ऐक्यताके नियमसे निकल पड़ें. तो न कोई किसीसे बेटी व्योहार करें. और न कोई खान पानादि क्रियामें शामिल हो और धर्म भी उनका एकसा न रहै. साथही साथ कर्ममें भी दखल आन पहुंचे. गरज यह कि मनुष्य ऐक्यता रूपी बन्धनसे जब तक बंध रहे हैं. तब तक ही एक दूसरेको चाहते हैं. और जो वह चाहै सो ही कर सक्ते हैं. इसके टूट जानेसे किसी दिन उस जाति और धर्मकी भी नष्ट होनेकी संभावना है. इसका असर बड़े २ राजाओंपर भी पहुंचता है. देखिये जिस बड़े अपराधको एक पुरुष करता है, वह फांसीपर लटकाया जाता है. परन्तु उसी अपराधको यदि बहुतसे मनुष्य मिल कर कर बैठें, तो साधारण दंड देकरही छोड़ दिये जाते हैं. और इससे भी अधिक जन सम्मति पूर्वक करनेसे कदाचित् दंडके विनाही छोड़ दिये जाते हैं.इसमें नीतिशास्त्रकी भी आज्ञा है कि "शतमवद्यं सहस्त्रमदंड्यं" अर्थात् "सौ मारने योग्य नहीं. हजार दंड योग्य नहीं" एक कहावत भी प्रसिद्ध है कि "एक समय अकबरने बीरबलसे

पूछा कि यह क्या सबब है. जो भेड़ बकरी, प्रतिवर्ष एक या दो बच्चे जनती है. और कुत्ती आठ आठ, तो भी कुत्ते ग्राममें जितनेके जितनेही नजर आते हैं और गड़रियेके यहां भेड़ बकरी दूनी चौगुनी. यह सुन बुद्धिमान बीरबलने उत्तर दिया; कि हुजूर भेड़ोंमें ऐक्यता होनाही वृद्धिका कारण है. और कूकरोंमें अनैक्यता क्षतिका. देखिये! यदि एक भेड़ व बकरी भूल भटकके दूसरे गांवकी भेड़ोंमें जा घुसे, तो वहां उसको कोई कष्ट नहीं दिया जाता. भली भांति उसका भरण पोषण उसके कुटुम्बके समानही होता है. परन्तु कूकरोंका वह हाल है. कि जहां अन्य गांवका तो क्या चौराहे काही कोई अपने नजदीक आया; कि उसकी दुर्दशा हुई. उसका चीड़ फाड़ करकेही आदर किया जाता है, यही उनकी क्षतिका कारण है. और यदि इन्हीं कुत्तोंकी अपनी सरहद्दमें भी ऐक्यता न होती, तो यह जो १०-९ हैं, वह भी नजर न आते. यह सुन बादशाह प्रसन्न हो ऐक्यताकी प्रशंसा करने लगे. सो महाशयो ऊपर देखो! इसही लिये किसी मर्मवेत्ता महा पंडितने यह श्लोक ऐक्यताके विषयमें कह डाला है. भावार्थ यह है कि छोटे २ त्रणकोंकी बनी हुई रस्सी बड़े २ मदोन्मत्त हाथियोंको जकड़ देती है, बहुतसे निस्सार पदार्थोंका भी समुदाय बड़ोंसे जीता नहीं जाता. बस यही एक ऐक्यताकी अद्वतीय नीव है. इसही पर मनुष्य अपनी बुद्धयनुसार हजारों दृष्टान्तोंके महल खड़ा कर सक्ता है, अधिक कहनेकी आवश्यक्ता नहीं. प्रयोजन यहांपर यह है; कि ऐक्यता ऐसे सद्गुणकी आवश्यक्ता जैनियोंमें विशेष होनेसे इसकी कारणभूत सभाओंकी आवश्यक्ता अत्यन्त मुख्य है.

वर्तमानमें जितने कार्य्य और नियम राज्य, प्रजा व जातिकी ओरसे होते हैं, वह सब किसी न किसी सभासे सम्बन्ध अवश्य रखते हैं वह सभा पार्लिमेंट, कांग्रेस, कन्फरेन्स व कमैटी आदि नामोंसे प्रसिद्ध है. परन्तु यह सभाओंकी प्रथा नवीन नहीं है. हजारों वर्षोसे स्थान २ की हरएक जातिके समूहमें पंचायतें चली आती हैं. जिनका मुख्य कर्तव्य अपनी जातिका उद्धार करना व जाति सन्बन्धी झगड़ोंका तह करनाही है. ये सभायें कोई भी प्रकारका झगड़ा हो बराबर तह करती थी. और जब अशक्य होता तब राज्यके सुपर्द कर देती थी. यद्यपि अब यह प्रथा प्रायः उठसी गई है. परन्तु कितनेही विषयोंपर अबभी सरकार पंचायतोंसे बड़ी नम्रतापूर्वक हाल दर्याफ्त करती है. पंच यदि यह लिख दें कि यह कार्य विरुद्ध है, तो सरकार उसे अविरुद्ध नहीं कर सक्ती. यदि पंचायतने किसीको जातिच्युतकर दिया तो उसे कोई जातिमें नहीं ले सक्ता आदि.

पंचायत शब्दका अर्थ मुखिया २ पांच या इनसे अधिक पुरुषोंके समुदायका है. इसहीको संस्कृत में सभा कहते हैं. यह सभायें जैनमतमें अनादिसे हैं. अनादि कालसे जितने तीर्थंकर हुए हैं. उन सबने **समवशरण** सभामें धर्मोपदेश दिया हैं. इधर सुमेरु पर्वतपर नंदनादि वनेमें इन्द्रोंके सभास्थान अकृत्रिम अनादि है. और भी स्थानों २ पर राजसभाओंका उल्लेख हैं. जिससे सभाका अनादिसे होना सिद्ध है. वर्तमानमें भी जिन

२ मंदिरों में शास्त्र बंचते है. उनको शास्त्रसभा कहना चाहिये.

इसही प्रकार हालमेंभी एक ऐसी सभा है, जो साप्ताहिक, पाक्षिक, और मासिक अवधिपर इकट्ठी होती है. और उनमें सभापति, उप सभापति, मंत्री, उपमंत्री, लेखाध्यक्ष, कोषाध्यक्ष, सभासदी पद हर एकको योग्यतानुसार दिये जाते हैं. ऐसी सभाओंमें जाति व धर्मके सुधारनेके उपाय, फिजूल खर्ची, वेश्यानृत्य, आतिशबाजी आदिका निर्मूल करना, दुराचारकी प्रवृत्तिको रोकना, जिस धार्मिक स्थानमें प्रबन्धकी त्रुटि हो उसे पूर्ण करना, धार्मिक विद्या की वृद्धिके हेतु पाठशालायें खोलना. सोते हुए भाइयों को सचेत करने के हेतु उपदेशकोंको स्थान २ में भेजना, प्राचीन इतिहासका शोध करना, अपूर्व अलभ्य सद्ग्रन्थोंका उद्धार करना, सम्पूर्ण सजातीय जनोंमेंसे विरोध दावानलका उच्छेद करना, धर्मकी तरफ हर एकका ध्यान व रुचि बढ़ाना, यथाशक्ति धार्मिक पुरुषकी सहायता करना. किसीका धर्मसे च्युत न होनें देना इत्यादि बहुतसे विषयोंके विचार कर २ के अपनी जाति और धर्मको उन्नतिरूप सुमेरुगिरशृङ्ग पर चढ़ानेकी चेष्टा हरएक जातिमें बड़े जोर शोरसे कर रही हैं. परन्तु जैन जातिमें अभी इसकी ओर असली खयालात बहुत थोड़ोंके हैं. इसीसे यह सबसे हटी हुई सी भी दीखती है. क्या कारण है? कि नये नये मतोंमें तो हजारों मनुष्य धड़ाधड़ भरते जाँय. और जैन धर्म जो अनादिका सच्चा मत है, उसमें बढ़ना तो दूर रहो. किन्तु अगर कोई निकलने लगे; तो उसे रोकने वाला भी नहीं. प्रियभाइयो! यह आपकी असावधानी है. हम नहीं कहते कि आप द्रव्य खर्च करना नहीं जानते या आपमें धर्म प्रेम नहीं है. नहीं, नहीं, सब कुछ है. कमी है तो केवल एक इस बातकी है कि जो सच्चे उन्नतिके उपाय हैं उनके उपर आपकी दृष्टि नहीं है.

यदि यही परिश्रम, यही द्रव्यव्यय, यही धर्मानुराग, ऊपर लिखित कार्योंमें हमारी जैनजातिके सज्जन जन रक्खें, तो फिर देखिये जैनजातिका सितारा चमकता है कि नहीं?

हमारे भाइयोंके खयाल अभी पुरानी बातोंपर झुक रहे हैं लेकिन इस समय वह विशेष कार्यकारी नहीं, क्योंकि सर्वज्ञका वचन है. कि जो कुछ कार्य किया जाय. वह द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावकी योग्यतानुसार किया जाय. और इस वाक्यके अनुयायी हमको तो क्या बड़े २ आचार्योंको भी बनना पड़ा है. इसलिये भाइयो, पुरानी बातोंका यह अवसर न जानकर उन्हें छोड़ो. और जिस प्रकार बने उसही प्रकार तन मन धनसे सांप्रत प्रत्यक्षमें उन्नति दिखानेवाले कार्योंकी और झुकनेके हेतु अपने २ ग्रामोंमें सभा स्थापित करो. यदि साप्ताहिक पाक्षिक न हो तो मासिक सभा अवश्य कीजिये. और उसमें सभापति उपसभापति आदिका यथायोग्य चुनावकर प्रतिसभामें उपस्थित हूजिये, फिर ऊपर लिखे हुए विषयोंपर विचारकर करके बहुत पुरुषोंकी सम्मतिसे जो कार्य कराया जाय, वह उसही समय कर डालिये. और सभाओंकी मासिक रिपोर्ट जैनगजट व जैनमित्रमें छपनेको भेजकर

सबका उत्साह बढ़ाइये, अधिक क्या? बुद्धिमानोंको इशाराही काफी होता है.

पं० जवाहिरलाल साहित्य शास्त्री.

जयपुर जैन महापाठशालाकी १७ वें वर्षकी संक्षिप्त रिपोर्ट.

	गतवर्ष.	वर्तमान वर्षमें.
दर्ज रजिस्टर छात्र	२११	२०७
औसत हाजिरी	१६३	१६५
कुलखर्च	२१०२)॥	२१६६॥=

उक्त पाठशालामें पढ़ाईका क्रम दो प्रकारका है. एक महाविद्यालयकी पढ़ाईके अनुसार और द्वितीय सामान्य विद्यालयोंके मुआफिक. इस वर्ष ११ विद्यार्थियोंको महाविद्यालयसम्बन्धी विभागकी तीन श्रेणियोंमें शिक्षा दी गई.

साहित्यशास्त्री परीक्षामें ३, *न्यायोपाध्यायमें* ३, साहित्योपाध्यायमें ५ और शेष १९६ विद्यार्थियोंको ७ श्रेणियोंद्वारा सामान्य विद्यालय विभागमें शिक्षा दी गई. परीक्षामें कुल १६० विद्यार्थी बैठे जिनमें ८१ उत्तीर्ण हुए. साहित्योपाध्यायपरीक्षामें २ और प्रवेशिकामें १ अच्छे नम्बरोंमें पास हुए. इन बालकोंका परिश्रम सराहणीय हुआ.

शालाप्रबन्ध—इस पाठशालामें १० अध्यापक और ४ मुलाजिम नियत हैं. असमर्थ विद्यार्थियोंको वजीफा वगैरा भी दिया जाता है. पढ़ाईकी पुस्तकें जो इस वर्ष १२९॥।=। की खर्च हुई पारितोषकके बतौर मुफ्तहीमें दी जाती हैं. हाल सालमें २९३ दिन पाठशाला जारी रही ७२ दिन छुट्टीमें बंद रही.

इस पाठशालाकी शाखारूप दांता रामगढ़, पचार, कसवावाय, आदि चार स्थानोंमें ४ पाठशाला और भी हैं. जिनकी पढ़ाई व अध्यापकोंका प्रबन्ध उत्तम है. पढ़ाई इसी क्रमसे होती है. इनमें किशनगढ़की शालाका खर्च तो वहांके सज्जन पञ्चही देते हैं. शेष तीन पाठशालायें भाई ऋषभचन्द केशरीलालजी दांतावालोंकी तरफसे हैं. आपके इस संस्कृत विद्याके अतिशय प्रेमकी प्रशंसा हम करनेमें असमर्थ हैं. उस प्रान्तमें सर्वदा उपदेश दे लोगोंका चित्त इसी ओर आकर्षित करते रहते हैं. इन पाठशालाओंमें करीब ७०) मासिकका खर्च आपही देते हैं. अन्य धनवानोंको आपका अनुकरण अवश्यही करना चाहिये.

अवलोकन—इस वर्ष नीचे लिखे महाशयोंने शालाका अवलोकनकर सहायता दी.—

सहायता.

१	सेठ शिवनारायण आदि हजारीबागवाले.	११)
२	रायबहादुर सेठ सौभागमलजी.	५१)
३	दिवजीराम स्वेताम्बर सधू.	४)
४	सेठ नेमीचन्दजी अजमेर.	२५१)
५	देव कुमारजी रईस.	१६)

इनके अतिरिक्त पं० गोपालदासजी बरैया. गांधी नाथारंगजी. सेठ पानाचन्दजी. आदि महाशयोंने पाठशालाका अवलोकनकर नानाप्रकारकी शिक्षा पाठक व बालकोंको दी पं० गोपालदासजीने "सम्यक्ज्ञान" विषय एक अति सुन्दर व्याख्यान दिया. सेठ पानाचंदजीने कहा. कि पाठशालामें जो छापेकी पुस्तकोंकी आवश्यक्ता हो तो विना मूल्य हम दे सक्ते हैं.

धन्यवाद—प्रथम हार्दिक धन्यवाद श्रीमान राजराजेश्वर महाराज माधवसिंहजी बहादुरको हैं. जिनकी असीम कृपा दृष्टि इस पाठशालापर रहती है. और जो सर्व जैन प्रजाको प्रेमकी दृष्टिसे देखते हुए इस पाठशालामेंभी ९०) मासिक सहायतादे पूर्ण वात्सल्य प्रगट कर रहे हैं. द्वितिय धन्यवाद उनमहाशयोंको हैं जो मासिक वार्षिक व नैमित्तिक सहायतासे इस शाला रूपी नवीन पौधेको सदा सिंचनकर वृद्धिको प्राप्त कर रहे है. इति-

नोट—यद्यपि इस रिपोर्टके साथ जमा खर्च. का हिसाब तथा पढ़ाईका क्रम आदि सब मुद्रित होना थे. परन्तु स्थानाभावसे हम प्रकाश नहीं कर सके सो वाचकगण क्षमा करें.

अन्तमें हम इस पाठशालाके प्रबन्ध कर्ताओं तथा समस्त जयपूरकी जैन मंडळीको वारंवार धन्यवाद देते हैं, जिन्होंनें इस धर्मोन्नतिकारक सच्चे प्रयत्नमें चित्त लगाकर सम्पूर्ण जैनियोंको हर्षित किया है.

सम्पादक.

हमारी वर्ष गांठ.

मेरे मानससरके वासी मंजु मरालवत् ग्राहक महाशयो !

आवो ! एकवार हृदयसे हृदय लगा कर प्रेम पूरित हो वर्षभर भटकनेकी हरारत मिटाकर हर्षित होवें.

मैं आज तृतीय वर्षकी मंजिल पूरी कर श्री जिनेन्द्र देवकी जय ! जय ! जय ! बोलता हुआ चतुर्थ वर्षमें पदारोपण करता हूं. आशा है कि उस सर्वज्ञकी कृपासे आगामी मंजिले पूरी करनेमें भी सफलीभूत होऊंगा.

प्रियवान्धवो ! आप जानते होंगे कि उन्नतिका मार्ग कैसा दुर्गम, कंटकसम्पन्न और विपदाग्रस्त है. अवश्यही उस पथपर चलना एक असाधारण साहसी निष्प्रेही और वीर पुरुषका काम है. वह देखिये ! मेरेलिये आज्ञा दी गई है, कि तुझसे जहांतक बन सके. दौड़ लगायाकर ! गांव २ में नगर २ में देशदेशमें जहां कोई न जावे वहां तू जा ! कोई पूछे. या न पूछे जा. जगह न देवे तो किसी कौनेमेंही टिक रहाकर जा. खानेको देवे तो जा. न देवे तो जा. कोई आदर करें तो जा. निरादर करे तो जा. और तिसपर तुरी यह कि हर माहमें जा.

परन्तु इस प्रकार कार्य सोंपे जाने पर भी मैं उत्साहहीन व आलसी बनकर नीचा नहीं देखाता. निरन्तर अपने चित्तको ढाढस देता हुआ. उद्यतही रहता हूं, और सोचता हूं कि यदि तुमने कुछ भी स्वार्थ विचारा या धैर्य त्यागा तथा अपना मानापमान देखा कि गये रसातलको. क्या देखते नहीं हो; ज्ञान प्रकाशक जैनप्रदीप जैनप्रभाकर प्रभृति हमही ऐसे उन्नतिके मार्गपर चलनेवाले एक एक दो दो मंजिलहीमें अशक्त हो. सदाकेलिये कूचकर गये. सो भाइयो इसीसे कहते हैं कि उन्नतिका मार्ग कठिन है, और इसीपर चलकर आज हमने अपनी तीन मंजिले पूर्ण की हैं. जिनमेंसे प्रथम दो मंजिलोंकी कैफियत तो आपको पूर्वमें विदित हो चुकी होगी तीसरीके विषय अभी इतनाही कह देना उचित है कि पूर्व मंजिलोंसे इसमें घाटा कम पड़ा. जिसके कारण भूत प्रायः आपही ७०० के अनुमान सज्जन हैं. जो आपने कुछ

प्रेम दृष्टिसे देखकर इसके पोषणकी और भी थोड़ासा ध्यान दिया है. रही मेरे परिश्रम सफल होनेकी बात, सो वह आपही जाने. यदि आपने मेरी रोचक अरोचक बातें जो प्रतिमास कहता था सुनी हैं. तो कह सक्ता हूं. कि वह बिलकुल निरर्थक नहीं गई होंगी.

इस वर्षमें एक बड़ी भारी भूल हुई है कि प्रायः ठीक समयोंपर सेवामें उपस्थित नहीं हुआ हूं. जिसके कई कारण हैं. एक तो प्लेग. २ रे शिखरजीके मुकद्दमेंके कार्यकी आधिक्यता. ३ रे मेरी रजिस्टरीमें विघ्न. ४ थे क्लर्ककी अनुपस्थितता. आदि. अतः आप लोगोंसे इस अपराधकी क्षमाका आकांक्षी हूं. आगामी यह त्रुटि दूर हो जायगी.

अन्तमें प्रार्थना है कि आप लोग पूर्वकी अपेक्षा अधिक अधिक प्रीति बढाते हुए. इसे ग्रहण करते रहे तथा आर्थिक सहायता देकर इसके शरीरको पुष्ट कर अति शीघ्र गामी बनानेकी कृपा दिखावें. इत्यलम्—

आपका प्रेमपात्र
जैनमित्र

समायिक समाचार.

मथुराका मेला—सदाकी भांति इस वर्ष भी श्री जम्बूस्वामी महाराजका मेला मिती कार्तिक कृष्णा २ से कार्तिक कृष्णा ९ तक भरेगा. जैन महासभाका तथा उसकी सम्बन्धनी. जैन यङ्गमेन एसोसियेशन, व जैन इतिहास सुसाइटी-का वार्षिक अधिवेशन अति समारोहके साथ होकर जातिका सुधार करनेके लिये. प्रस्ताव पास किये जावेंगे, इतिहास सोसाइटी सांप्रति महापुराण बनाकर जैनियोंका महान उपकार करेगी. अतः इस अवसरपर दर्शकोंके अवश्य पधारना चाहिये. सेठ द्वारकादासजीकी ओरसे पूरा प्रबंध किया जावेगा.

नवीन प्रस्ताव—उक्त मेलाकी अवधि अब थोड़ी ही है. जाति धर्म सुधारकोंको अपने २ आवश्यक प्रस्ताव पेश कर पास कराना चाहिये. तथा पुराने प्रस्तावोंपर अमल किया गया है या नहीं. इसकी हिदायतें होना चाहिये.

बम्बईमें यज्ञोपवीत—यद्यपि काल दोषसे जैनी अवनतिके मार्ग पर पहुंचकर प्रायः अपनी प्राचीन समीचीन क्रिया त्याज्य कर चुके हैं. और इन प्रथाओंका बहुत दिनोंतक विच्छेद रहनेसे आधुनिक लोक उन्हें अपना कर्तव्यही नहीं समझते हैं. परन्तु बम्बईके कई एक प्रतिष्ठित धर्मात्मा जैनी जनोंने हालहीमें यज्ञोपवीत ग्रहण कर प्राचीन पुरुषोंकी परिपाटीका आदरकर यश प्राप्त किया है.

टाटा विश्वविद्यालय—बहुतसे वादानुवाद के बाद निश्चय होगया है कि मिस्टर टाटाके ३२ लाख रुपयेसे जो विज्ञान सम्बन्धी विश्वविद्यालय बननेवाला है वह रुड़कीमें न बनेगा उसके लिये अंतमें बंगलोरही निश्चय हुआ है.

नये छोटे लाट—ब्रह्मदेशके लेफ्टेंट गवर्नर सर एफ. डबल्यू. आर. फ्रायर पेन्शन लेनेवाले हैं. उनकी जगह गवर्नमेंटके फारेन सैक्रेटरी मिस्टर वार्नेसको दी जायगी. मिस्टर वार्नेस पहिले ही सी. एस. आई. हैं. अब छोटे लाट बनतेही आपको सर और दे दिया जायगा.

नागरी प्रचारिणी सभा—अपनी कार्यकारितासे सरकारकी भी स्नेह पात्री बन रही है. सरकारने हालहीमें अपनी नियमित सहायताका परिमाण पहिले से १००) रुपया बढा दिया है

अग्नि लीला—मार्टिनिक पहाड़ने मई मासमें भयंकर अग्नि लीलासे एक नगर भस्मीभूत कर दिया था. उसी पहाड़से अब फिर अग्नि निकलने लगी है. मोर्नरोंज गांवको इसने बिलकुल राख कर दोसो मनुष्योंका भुरता कर डाला है. और कार्वेट नगर इसी कारण समुद्रमें डब रहा हैं.

युक्तप्रान्तमें प्लेग- यद्यापि बंम्बईप्रान्त और पंजाबमें अभीतक प्लेग शाति है. परन्तु युक्त प्रान्तमें जोर बढ रहा है गतवर्ष प्रयागना लोंपर जैसा कष्ट पडा था, वैसा अब कानपुर के सिरपर नाच रहा है.

अनंतव्रतोद्यापन व बिम्ब प्रतिष्ठा—हर्षका विषय है कि शोलापुर नगरमें मिती माघ सुदी तृतिया की शुभ मुहूर्तपर अनंत व्रतके उद्यापनार्थ श्री जिन बिम्बप्रतिष्ठाका उत्सव बडे समारोहके साथ किया जायगा. इसके कर्ता शोलापुरके सुप्रसिद्ध श्रेष्ठिवर्य्य गांधी राव जी नानचन्दजी हैं. उक्त उत्सवपर सर्व जैनी भाइयोंको पधारकर धर्म लाभ प्राप्त करना चाहिये.

अंग्रेज चोर—पूनाके जौहरी मिष्टर डि. सिल्वाके यहांसे विलियम ब्लाकने १५०) का जेवर चुराया था माजिष्ट्रटने एक वर्षका कठोर जैल दिया.

जुआरीकी आत्महत्या—द्वारका नरसी नामक नौकरने अपने मालिकसे २०)मांगे. स्वामीने इनकार किया, बस आपने तेजाबके सहारे जान दे डाली. शराब कबाब और जुआ इनके पूजनीय पदार्थ थे.

विलायतमें शिक्षालय—महाराज सप्तम एडवर्डने दर्शन इतिहास और भाषातत्व सम्बन्धी विवेचनाके हेतु एक विद्यालय खोलने की आज्ञा दी है. उसके ४८ मेम्बर होंगे. देश सुधार यही है.

महाराजका स्वागत-- १२ तारीखको महाराज जयपुर नरेन्द्र लंदन की यात्रा कर बम्बई उतरे. बम्बईकी प्रजाने महाराजके दर्शन लाभसे अपूर्व आनन्द मनाया. और मानपत्रादिकोंसे सन्मानित किया. दिगम्बर जैन प्रातिक सभा बम्बईने भी एक अभिनन्दनपत्र अर्पणकर संतोष प्राप्त किया

रींवांनरेश—वर्तमान रींवां महाराजके गुण ग्राही व समदृष्टी होनेका आज एक उदाहरण पाकर हम अत्यंत सुखी हो, महाराजकी जय बोलते हैं. आपकी जैन प्रजाने राजधानीमें सावन शुक्ला ५ को श्री देवाधिदेवकी सवारी निकालकर हर्ष मनाया था. उसपर भिन्नधर्मियोंने असंतोष प्रगटकर महाराजसे ऐसे उत्सव आइन्दा बंद करनेकी प्रार्थना की. परन्तु राजेश्वरने अहिंसामयी जैनधर्मकी प्रशंसाकर उत्तरमें कहा कि ऐसा कभी नहीं हो सक्ता. वह लोग अन्य प्रजाकी भांति आज्ञा लेकर सब कुछ उत्सव कर सक्ते हैं. ऐसा तिरस्कार होने पर भी द्वेषी अपना यह औगुण नहीं छोड़ते.

धर्म महासभा.

एक जापानी धनाढ्य धार्मिक महोदय अक्टूबर माहमेंराजधानी टोक्योनगरमें सर्व धर्म महासभा करावेंगे. जिसमें सर्व देशोंके बडे २ विद्वान

जाकर अपने २ धर्मका स्वरूप पूर्ण रीतिसें वर्णन करेंगे. उक्त विद्वानोंके जाने आनेका खर्च भी जापानी महाशय देनेकी कृपा दिखावेंगे, चपला चंचल लक्ष्मीसे अचल यश प्राप्त करना इसीको कहते हैं! धन्य हैं उन जापानी महाशयोंके धार्मिक बुद्धिको जिन्होंने ऐसे उत्तम कार्यका विचार किया. हिंदुस्थानसे भी हरेक सम्प्रदायके बड़े २ विद्वान तशरीफ ले जायगें. जिनकेलिये जहाज ता. २९ अगस्तको कलकत्ते आयगा. उसमें भोजनादिका सर्व प्रबन्ध शुद्ध रीतिसे होयगा. और जहाजका किराया भी कम हो जायगा. क्या एसे अवसरमें जैनियोंमे भी कोई ऐसे विद्वान हैं जो वहांपर जाके स्याद्वाद मत पताकाका आरोपण करेंगे.

रियासतोंमें नागरी.

जबसे युक्तप्रदेशके भूत पूर्व लेफ्टेंटगवर्नर सरमेकडानल बहादुरनें कोर्टोंमें नागरीको स्थान देनेकी आज्ञा दी है, तब हीसे भारतवर्षके बड़े २ राजामहाराजाओंकी भी भारतकी पुराणी माता नागरीमें दृढभक्ति हुई है, इस हीसे हालमें सुना हैं कि महाराजा ग्वालियर और इंदौरके हुल्कर महाराजनें भी अपने न्यायालयोंमें हिंदीमें अर्जी वगैरह लेनेकेलिये आज्ञा दी है आशा है कि इसही प्रकार और भी नरेंद्र गण अपने न्यायालयोंमें इसको स्थान देकर सच्चे हिंदुत्व प्रजावत्सलता और भ्रात्रभक्तिका परिचय देकर भारत वासियोंको संतुष्ट करेंगे.

श्री सम्मेदशिखरजीकी सहायता.

हम अपने उन उदार धर्म्मात्मा भाइयोंको वारंवार धन्यवाद देते हैं. जिन्होंने अपने परिश्रमसे कमाया हुआ द्रव्य, इस तीर्थराजके उद्धारनिमित्त भेज अपूर्व पुन्यबंध किया है. और जिनके नाम नीचे दर्ज हैं.

९३) श्री सकलपंचान रतलाम
४१) श्रीसमस्त पंचान सिगोली
२१।।) श्रीसमस्त पंचान झातला
३९।) सेठ पूरनमल चांदमलजी झांझरी
११) श्री हीरासा नागोसा लाड़
२।।) श्री सानासा लाड़
१।) श्री चिंतामणिसा
१००) श्रीसमस्त पंचान नांदगांव
२०) लाला मित्रसेनजी ओवरसियर
२) सेठ रामचंद किशनचन्दजी होशंगाबाद
२) भाई नन्हेंलालजी ,,
१) भाई लच्छीरामजी ,,
१) श्री सिवनीवाली बाई ,,
।। भाई मिश्रीलालजी ,,
२०) श्रीयुत प्यारेलाल धर्मचन्द जगाती टंडा
२००) दिगम्बर जैनपंचान चिलकाना
४०) सकलपंचान कमावखेड़ा
२०) ....

नोट—किसी सज्जनका म० आ० बीस रुपयाका आया है. परन्तु कूपनपर नाम ठीक नहीं पढ़ा गया. इससे हम सन्देहमें पढ़कर किसीके नामसे जमा नहीं कर सके. आशा है कि द्रव्यदाता महाशय एक कार्डपर हमे सूचना देकर सचेत करेंगे.

Registered No. B. 288.

शरधा धरापै; जैनमित्र ही चिठावेगो ॥

भारी भ्रमभूरि हिये भ्रमत भयावने जेतिन्हें भट लेखन सों चूरकें घटावेगो । बृहत विपक्षी पक्षी, सन्देह अम्बर के—

श्रीवीतरागाय नमः

जैनमित्र.

जिसको

सर्व साधारण जनोंके हितार्थ,

दिगम्बर जैनप्रान्तिकसभा बंबईने

श्रीमान पंडित गोपालदास बरैयासे सम्पादन कराकर

प्रकाशित किया.

जगत जननहित करन कँह, जैनमित्र वरपत्र ।
प्रगट भयहु–प्रिय! गहहु किन? परचारहु सरवत्र! ॥

चतुर्थ वर्ष } आसोज सं. १९५९ वि. { अंक १ ला

नियमावली.

१ इस पत्रका उद्देश भारतवर्षीय सर्वसाधारण जनोंमें सनातन, नीति, विद्याकी, उन्नति करना है.

२ इस पत्रमें राजविरुद्ध, धर्मविरुद्ध, व परस्पर विरोध बढ़ानेवाले लेख स्थान न पाकर, उत्तमोत्तम लेख, चर्चा, उपदेश, राजनीति, धर्मनीति, सामयिक रिपोर्ट, व नये २ समाचार छपा करेंगे.

३ इस पत्रका अग्रिमवार्षिक मूल्य सर्वत्र डांकव्यय सहित केवल १।) रु० मात्र है, अग्रिम मूल्य पाये बिना यह पत्र किसीको भी नहीं भेजा जायगा.

४नमूना चाहनेवाले)॥ आध आनाका टिकट भेजकर मंगा सकते हैं.

चिट्ठी व मनीआर्डर भेजनेका पता:—

गोपालदास बरैया सम्पादक.

जैनमित्र, पो० कालबादेवी बम्बई—

चोखे चारु चतुर चकोर चाहकन हेतु, चन्दसो पियूषचैन पावन पठावैगो, अंधकार अविचार अबुधी, अनमेल आदि,

॥ आहित सों आपको भ्रमैके हटावेगो ॥

कर्नाटक प्रिंटिंग प्रेस, ...देवाड़ी, मुंबई.

प्राप्ति स्वीकार.

श्रीसम्मेद शिखरजीकी सहायतासम्बन्धी.

१७।) दिगम्बर जैनसभा शिमला मार्फत मुंशी खूबचन्दजी सेक्रेटरी.
२१७) सकलपंचान जैन नजीबाबाद.
३३) सकलपंचान भेलसा.
३०) सकलपंचान न्यायडोंगरी.
२९) कोठारी पूजीराम उदैचन्दजी ईडर.
१००) समस्त जैनपंचान करहल.
२९) श्री माणिकचन्द वेचरचन्दजी लवळ.
१००) श्रीलालजी राम वागमलजी स्योपुर.
९०) चिरंजीव अनंदलालकी यात्राकी खुशीमें सं. १९९३ में गये.
९०) चौदह वर्षतक अष्टमी चतुर्दशी पूर्णकी उसकी खुशीमें.
१७) गांधी गौतम जयचन्द लीमगांव.
१३) महता बापू गलाचन्दजी. „
१३) दोसी रामचन्द बालचन्दजी. „
१९) दोसी रावजी हरीचन्दजी. „
९) गांधी सखमलधनजी. „
१६) शा जोतीचन्दजी खंडेला–दीसागाम.

श्री जैनमित्र पत्रका मूल्य.

१।) गोपालराव सोमाजी. वालूर.
१।) संघी नंदराम अयोध्याप्रशादजी. पन्ना.
१।) शा. कालूराम चंपालालजी. सैलाना.
१।) भूरामलजी पाटोदी. लक्कड़ पीड़ा.
१।) घासीरामजी पाटणी. खाचरोद.
१।) हीराचन्दजी दरयावसिंहजी. रतलाम.
१।) समस्त पंचान. कोलारस.
१।) लक्ष्मीचन्दजी वेणीचन्दजी. कुरुडवाड़ी.
१।) फूलचन्द मलूकचन्दजी घोटी.
१।) बालज्ञानसंवर्द्धनी जैनपाठशाला संस्थान कारंजा.
१।) गुलाबचन्द वेणीप्रसादजी जबलपूर.
१।) ला. शंकरलाल श्रावक ए. वा. शिवप्रशाद आगरसिंगी मालवा.
१।) लाला निरंजनदासजी हुकमचन्दजी गोहाना.
१।) श्रीभाई हलकू गोलापूरव पनागर.
१।) श्रीदरबारीलाल रामलाल सोधिया पनागर.

नोट—यद्यपि प्रथम हमने मूल्य प्राप्ति स्वीकार छापना बंद कर दिया था. परन्तु कई एक कारणोंसे वह नियम बदलना पड़ा. अतः आगामी हमेशा प्राप्ति प्रकाशित हुआ करेगा, यह आसोज वदी १ के बाद आया हुआ मूल्य है.

सम्पादक.

प्रेरक लोग.

प्रवन्धकर्ता जैन मन्दिर मुरादाबाद—आपका हिसाब जैन मन्दिर सम्बन्धी बहुत उत्तम रीतिसे प्रकाशित हुआ है, स्थानाभावसे हम प्रकाशित नहीं कर सके. यदि छपी हुई. सौ दो सौ कापी आप देते तो जैनमित्रके साथ बांट दी जाती.

मांगीतुंगीके प्रवन्धकर्ता महाशय—आपने हिसाब भादों सुदी पूर्नोतकका भेजनेकी कृपा दिखाई है. जिसका धन्यवाद है. अन्य तीर्थक्षेत्रोंके प्र० क० को इसका अनुकरण अवश्य करना चाहिये.

मंत्री वालज्ञानसंवर्धक जैन सभा—अंजनगांव वार्षिकोत्सवकी रिपोर्ट भेजी. हर्ष हुआ. इसी प्रकार यदि मासिक रिपोर्ट भेजा करें. तो अत्युत्तम हो. समय २ पर प्रकाशित भी होती रहेगी.

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

जगत जननहित करन कहँ, जैनमित्र वरपत्र ॥
प्रगट भयहु-प्रिय ! गहहु किन ?, परचारहु सरवत्र ! ॥ १ ॥

चतुर्थ वर्ष. } आसोज, सम्वत् १९५९ वि. { १.

वृत्तान्तावली

श्री जिनसेन विद्यालय—दक्षिण जैन समाजमें विद्याकी न्यूनतापर भविष्य विचार कर दूरदर्शी "श्री जिनसेन भट्टारक पट्टाचार्य महास्वामी संस्थान मठ नांदणीने उक्त नामका विद्यालय धर्मार्थ प्रारंभ किया है. इसका जन्मोत्सव श्री मन्महाराज छत्रपति साहिब सरकार करवीर के हाथसे हुआ है.

विद्यालयमें ९ वीं कक्षातक मराठी शिक्षण पाया हुआ. चतुर्थ, पंचम, कासार सेतवालादि हर एक जातिका जैन विद्यार्थी संस्कृत, राजकीय (इंग्रेजी) व धार्मिक शिक्षण प्राप्त कर सक्ता है. संपूर्ण गरीब बालकों को भोजन स्थानादिकाभी प्रबंध किया है. इसके सिवाय इसी नगरमें एक दूसरी पाठशाला **दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभा** के तरफसे श्रीयुत कल्लापा निटवेके उद्यमसे खोली गई है. इन दोनो पाठशालाओंका कार्य उत्तम रीतिसे चल रहा है. हालमें १०-१२ विद्यार्थी शिक्षा पा रहे हैं.

फंडके अनुमानसे बालकों की संख्या बढने वाली है. यह कार्य अधिक व्ययसाध्य है. प्रत्येक जैनबंधुको द्रव्यकी सहायता देकर अपूर्व विद्यादान व शास्त्रदानका फल प्राप्त करना चाहिये

एक जैनबंधु.

मांडूका मन्दिर—आपलोग पहिले किसी अंकमें सुन चुके होंगे. कि श्री मांडूजीके मन्दिर की दिगम्बरी प्रतिमाको रदबदल करनेके लिये जो

स्वेताम्बरी लोगोंने कांचके चक्षु लगा दिये थे उसका मुकद्दमा धारके पंचोने धारकी मैजिष्ट्रेटीमें दायर किया है. स्वेताम्बरी लोग यह कार्य बहुत जोशके साथ कर रहे हैं. यह समाचार हमको धर्मपुरीके पंचोद्वारा प्राप्त हुआ है. क्या अब भी दिगम्बरी सोते रहेंगे!

एक पाठशालाकी न्यूनता—शोकका विषय हैं. कि अमरावती जैन पाठशाला जो आज आठ महीनेंसे बडी उन्नतिके साथ चलरही थी. वहांके धनिक गणोंके प्रमाद व स्वार्थ परायणतासे लुप्त होगई. न जानें इस जातिका क्या भवितव्य है.

हर्षके समाचार—**फलटण** जिला सतारामें गुजराती हूंमड़ जैन भाइयोंके अनुमान १५० घर हैं. कई वर्षोंसे यहां भाइयोंके अज्ञान वश व आपसके झगड़ोंसे चार तड़ें हो रही थी. सो इस वर्ष ब्रह्मचारी **मूलसागरजी** महाराजके पधारनेसे उक्त विरोध मिटकर ऐक्यताका बीज वोया गया है. ऐसे समाचार मिलनेसे हमको अति हर्ष हुआ है, यदि वहांका कोई भाई उक्त विषयसम्बन्धी पूरा २ समाचार देगा. तो आगामी अकमें प्रकाशित होकर. अन्य स्थानोंके भाइयोंको इसके अनुकरण करनेकी प्रेरणा की जावेगी.

विषाद जनक समाचार—जिला सागरमें देवरी एक प्रसिद्ध कस्वा है, यहांके जैनी भी प्रसिद्ध तथा उस परगने सम्बन्धी जातिके न्याय कार्योंमें अग्रगण्य है. साम्प्रति समय ऐसी प्रभावना करनेमें भी ये किसी कदर नीचे नहीं है. परन्तु शोकका स्थल है. कि यहांके जैनियोंका भी फूटने गला दबा रक्खा है. जिससे जाति धर्मोन्नति होनेके बदले कषायोंकी उन्नति हो रही है—समयकी बलिहारी.

प्राचीन पद्धति.

प्रतीति होता है. कि अब जानियोंमें पुरातनार्ष जैन पद्धत्यनुसार विवाहादि सर्व प्रकारके मङ्गलोत्सवोंके होनेका प्रचार शीघ्रतासे व्यापनें वाला है. अजमेरका सरकारी खजाना श्रीयुत आर्षजैन पद्धति प्रचारक राय बहादुर श्रेष्ठी चम्पालालजी नयानगर निवासीके हस्तगत हुआ है. आपने उक्त खजानेके सम्बन्धसे अजमेर नगरमें हरमुखराय अमोलकचन्द्र इसनामसे कोठी भी खोली है. उसका प्रारंभ सुमुहूर्तमें महोत्सवके साथ विधिपूर्वक जैन पद्धत्यनुसार (कुगुरु कुदेव कुशास्त्रके पूजनादि उठाकर सुगुरु देवशास्त्रोंके पूजनादि द्वारा) कराया हैं. यह कार्य आपने अति प्रशंसनीयही नही; वल्कि इस तीर्थके उपदेश करनेमें श्रेयोवत मुख्यता प्राप्त कर मढ़ताके मैटनेका का उपाय किया हैं. धन्य! आपके पुरातनार्ष विधिरोचक धर्म स्नेहको.

जब दूकानादि लघु कार्यके प्रारंभ कोही जैनपद्धति अनुसार करनेके लिये ऐसे धर्म धनसम्पन्न सच्चेश्रद्धानी महाशय सर्वथा प्रस्तुत हुए हैं. तब अब हम क्यों न आशा करें? कि जैनियोंमें विवाहादि सर्व प्रकारके उत्सवोंका प्रचार जैन पद्धति अनुसार व्यापनेवाला है. करें ही करें!

अन्तमें सर्व धर्मस्नेही भाइयोंसे प्रार्थना है कि आप भी अपने ग्रह व धर्म सम्बन्धी सर्व कार्य अपनी इसी प्राचीन प्रथाके अनुसारही करानेका उद्योग करें. ताकि मूढतादि मिथ्यात्वका अभाव हो शुद्ध सम्यक्तकी प्राप्ति हो.

पुरातनार्षविधि स्नेहवानेकोहमुपासक;

उत्तम क्षमा.

पाठको! किसी विषयको लिखनेके प्रथम उसकी परिभाषा अवश्यही दिखलानी पड़ती है. ऐसी प्रथा है. तो हमें इस स्थानपर अपने अभीष्ट क्षमाविषयमे परिचित करानाही योग्य है. किसी व्यक्तिके द्वारा दुर्वचन, अपमान, दुःखादि पाकर मनवचनकायके भावोंको जो चलायमान न करना अथवा अपनेसे निर्बल क्षुद्रजीवोंसे अपराध होनेपर कषाय भाव न करना, दया करनी, इसीका नाम क्षमा है. परन्तु यदि सबल पुरुषसे साम्हना पड़नेपर अपनी आबरू जाती देख जो बरवश साम्यभाव रखना पड़ता है; इसको क्षमा नहीं वल्कि लाचारी कहते हैं. अहा! इस उत्तम क्षमाका कैसा महत्व है. इसकी श्लाघा करना साधारण पुरुषका कार्य नहीं है. तथापि इसके गुणोंसे मुग्ध होकर लेखनी अवश्यही कुछ लिखना चाहती है. क्षमा वह वस्तु है कि इसको धारण करनेवाला त्रैलोक्य विजयी हो सक्ता है. जिसने इसके प्रतिपक्षी क्रोधको जीता वह किसी से भी जीता नहीं जा सक्ता. जो क्रोधी अपने सन्मुख संसारको कीटानुकीटवत् देखता है. वह एकवार इस क्षमावान रूज के आगे अवश्य नीचे देखता है. क्षमावान पुरुष वही हो सक्ता है जो संसारकी व जीवकी पूर्वापर दशाका भली-भांति ज्ञाता होता है. दुष्टके क्रुद्धित होनेपर वह विचारता है. कि यह जीव पूर्वके अशुभोदयसे मदान्ध हुआ इसप्रकार चेष्टा कर रहा है. इस का कुछ दोष नहीं हैं. तथा मेराभी इसमें पूर्वकृत कुछ अपराध अवश्यही होगा. सो इसे जो चाहे सो कहने दो; अन्तमें थकित होकर अवश्यही बन्द होजावेगा. और फिर यह मेरे ज्ञान गुणकों तो कुछ घात नहीं कर सक्ता. इस भिन्नपुद्गल पदार्थका जो चाहेसो करै. आदि उत्तम उत्तम विचारोंसे क्रोध अग्निको कभी भभकने नहीं देना. अन्तमें वही दुष्ट ऐसे ज्ञानी पुरुषोंके आचरणोंको देखकर लज्जित होजाता है. और नम्र होकर ज्ञानीकी सराहणा करता है. यह उत्तम क्षमा, इसलोकमें प्रतिष्ठाकी देनेवाली और परलोकमे स्वर्गमोक्षादि सुखावस्थाको प्राप्त करने वाली है. सो भाइयो! इस उत्तम रत्नको अपने हृदयमें अवश्य ही धारण करो. अन्तमें एक श्लोक द्वारा इसकी प्रशंसा कर लेख समाप्त करता हूं.

क्रीडाभूः सुकृतस्यदुष्कृतरजः संहारवात्याभवो ॥ दनबोर्व्यसनाग्निमेघपटली, संकेतदूतीश्रियां ॥ निःश्रेणिस्त्रिदिवौकसः प्रियसखीः मुक्तेःकुगत्यर्गला ॥ सत्वेषुक्रियतांकृपैवभवतुक्लैशैरशेषैः परैः ॥ १ ॥

अर्थात—पुन्यके क्रीडा करनेकी भूमि, पापरूपी रजको उड़ानेवाली पवन, संसार समुद्रके तरनेकी नौका. व्यसन रूपी अग्निको शांति करनवाली मेघपटली, लक्ष्मीको इंगित करनेवाली दूती, स्वर्गकी नसैनी, मुक्तिकी प्यारी सखी. कुगतिकी अर्गल

ऐसी जो उत्तम क्षमा है. सो अनेक कष्ट उपस्थित होनेपर भी प्राणियोंके अर्थ करो. अलं

हीरालाल विद्यार्थी
दि. जै. महाविद्यालय मथुरा.

चिट्ठीपत्री.

प्रेरित पत्रोंके हम उत्तरदाता न होंगे.

प्रार्थना! प्रार्थना!! प्रार्थना!!!

इस बातके सुननेसे केवल मुझकोही नहीं. वल्कि सर्व जैनसमाजको बड़ा आनंद होगा. चन्द भाइयोंने ग्रह त्यागकर उत्तमोत्तम प्रतिज्ञा धारण की हैं. और इसके लिये मैं सर्वज्ञ देव-प्रति प्रार्थी हूं. कि अन्त समयतक यह सब अपनी २ प्रतिज्ञायें हजार भय उपस्थित होनेपर भी पालते हुए प्रधान जैन धर्मकी प्रभावना प्रगट करें.

मेरी तुच्छ बुद्धिमें यह आता है और कदाचित वह शास्त्रोक्त भी हो. कि निम्न लिखित सर्व ग्रहत्यागी महात्मा एक मंडलीमें रहें. संघमें रहनेसे एक दूसरेका वैयाव्रत, और धर्मकी संभाल और परिणामोंकी विशुद्धता रहनेकी विशेष संभावना हैं. १ श्री यमनसेन मुनि २ श्री लालमनदासजी बाबा ३ श्री सुन्दरलालजी बाबा ४ श्री दौलतरामजी बाबा, ५ श्री शिवलालजी बाबा—श्री भागीरथदासजी उदासी. इत्यादि इत्यादि.

"जैन नाटक है या सचमुच जैन नाशक है" यह समझमें नहीं आता कि जैन नाटकका प्रचार किस शास्त्रके अनुसार हुआ है. जिसका नाम जैनधर्म है. वह शुद्धाम्नाय है. और उसका मुख्य उद्देश ज्ञान व वैराग्यकी प्राप्ति करना है. वरखिलाफ इसके नाटक नाम स्वांग व तमाशेका जिसमें हर किस्मके रूप मर्द औरतोंके बनाये जाते हैं; इस नाटकमें हर प्रकारके हाव भाव बताकर वैराग्यके बदले राग व कषायभाव पैदा किये जाते हैं. इसलिये साधर्मी भाई इसको खूब गौरसे विचारकर व इसकी हानियोंको देखकर इस ख्यालसे कि आयंदा जैनमें भी और मजहबोंकी तरह, जिनको कि अब हम हंसते हैं. अशुद्ध व विपरीति प्रवृतिका प्रचार हो जावेगा. इसका नाम जैनसे दूर करेंगे.

जाति शुभचिंतक.
मित्रसेन जैनी ओवरसियर
होशंगाबाद.

दशलाक्षणी महोत्सव बम्बई
और राजा दीनदयालजी.

पूर्व अंकमें हमने इस उत्सवके शेषसमाचार आगे प्रगट करनेका प्रण किया था. वह आज पूर्ण करनाही इस लेखका उद्देश है.

प्रजा और राजाओंकर सम्मानित उच्चश्रेणीके फोटोग्राफर मुसव्वरजङ्ग राजा बहादुर दीनदयालजीके उदार चरित्रसे हमारे पाठक अनभिज्ञ न होंगे. सहयोगी व्यंकटेश्वर समाचारने जो आपका सचित्र सत्यचरित्र लिखा था, वह अवश्यही अन्यप्रतिष्ठित पुरुषोंके अनुकरण करने योग्य है. उद्योगशील पुरुषोंकी सृष्टिमें आप

अवश्यही श्लाघनीय हैं. इनके चरित्रको जानकर मनुष्य निश्चय कर सक्ता है. कि उत्साह पूर्वक कार्य करनेसे पुरुष कैसे उच्चावस्थाको प्राप्त कर सक्ता है, और फिर उच्चावस्था प्राप्त कर राजा और प्रजाकी दृष्टिमें किस नम्रगुणसे प्रशंसनीय हो सक्ता है. वही परम प्रतिष्ठित सौजन्यादि गुण विशिष्ट हमारी जातिके एक मात्र शोभायुक्त राजासाहिब इस उत्सवमें १० दिवस बराबर उपस्थित रहे. साथमें आपके प्रियपुत्र राजा धर्मचन्द्रजी तथा सहारनपुर निवासी लाला-जयंतीप्रशादजी भी पधारे थे. जिनके कारण उक्त उत्सव सभामें महोत्सव होगया था इतर स्थानोंकी दान शूरताको गौन कर आपने जो अभी दानमें दयालुता दिखलाई है. उसीका उल्लेख नीचे करते हैं. आपने सहारणपुरकी जैन पाठशाला जो अभी हालहीमें बड़े जोर शोरसे स्थापित हुई है. उसमें ५०) पचास रुपया मासिक सहायता देना स्वीकार किया. तथा कन्हैयालाल विद्यार्थी शेरकोटवालेको जो पीली भीतिके वैद्य विद्यालयमें विद्याभ्यास कर रहा है. और जैनियोंमें एक होनहार पौधा है, उसकी दीनदशापर ध्यान करके आपने और लालाजयंती प्रशादजीने ५) मासिक सहायता एक वर्षतक देनेका उत्साह प्रगट किया. तथा बम्बई संस्कृत विद्यालयके विद्यार्थी लालारामको २) मासिक जेब खर्चकेलिगे लालाजयंतीप्रशादजीने देकर उसका उत्साह बढ़ाया. धन्य है. ऐसी कमाईको जो ऐसे सत्कार्यमें लगे.

पाठको! जरा ऊपर देखो. विद्यानुरागता और जात्युन्नति करनेका प्रयत्न इसीको कहते है हमारी जाति यद्यापि धर्मके अन्य अंगोमें द्रव्य-व्यय करनेको सूमपना नहीं दिखलाती. परन्तु ऐसे परम प्रशंसनीय कार्योंमें जिससे हमारी जाति और धर्मकी रक्षा होती है. और जिसके द्वाराही अन्य किये हुए धर्म कर्म सफलताको प्राप्त होसक्ते हैं. प्रायः एक दोही दिखते हैं. और उन्हींके दानकी हम प्रशंसा करते हुए. धन्य! धन्य! धन्य! कहते. भी तृप्त नहीं होते. तथा मुग्धकंठ से कहते हैं. कि ऐसे श्रेष्ठ सत्पुरुष चिरजीवी होहु.

हम आनन्दमें फूले नहीं समातेकि; हमारे धर्म की एक वृहत पाठशाला सहारणपुर ऐसे नगरमें स्थापित हुई है. और उसमें सहायती भी चहुं ओरसे पूरी २ दिखती है. श्रीजीकरें. उक्त पाठशाला प्रबन्धकर्ताओंके प्रबन्ध. प्रतिष्ठित पुरुषोंकीसहायतासे. और उतम अध्यापककी प्राप्तिसे लोकप्रियहो. और शीघ्रही पंडित रत्नोंको उत्पन्नकर धर्मका फरहरा भूतलपर फरहरावे.

शाखासभाओंकी वार्षिक रिपोर्ट

जैनहितेच्छु मंडल करमसद—की द्वितीय वर्ष सानन्द पूर्ण हुई. पाठशालामे विद्यार्थियोंकी संख्या १५ है. प्रायः बालबोध कक्षाहीकी पढ़ाई होती है. विद्यार्थियोंको उत्तेजन देनेका प्रबन्ध अच्छा किया है. पुस्तकालयमें १७९ पुस्तकें उपस्थित हैं. उक्त पुस्तकें जवेरीसेठ माणिकचन्दजी पानाचन्दजी बम्बई व शा त्रिभुवन रणछोरदासकी ओरसे भेट में दिईगई हैं. जिसका विद्यार्थीगण आभार मानते हैं. इस मंडळमें १२ महिनेमें २९ व्याख्यान प्रथक प्रथक वि-

षयोंपर दिये गये. जिससे भाइयोंको बहुतलाभ पहुँचा

श्री अंकलेश्वर जैन पाठशाला—पाठशालाके प्रथम वर्षकी रिपोर्ट प्रकाशित होनेको आई है. जिसका सारांश इस प्रकार है. इस छोटीसी पाठशालाके स्थापन कर्त्ता. सेठ माणिकचंन्दजी पानाचंन्दजीको ही समझना चाहिये. और इन्हींकी सहायताभी इसमें यथोचित है. पाठशाला की व्यवस्था सुधारनेको एक कमेटी भी कायमकी गई है. जो प्रतिसुदी ५ को होती है. व्ययकी संकीर्णता अधिक है. विद्यार्थीयोंकी वर्ष भरमें ४ बार परीक्षा होनेका नियम है. परन्तु इसवर्ष ३ महीने प्लेगके कारण शाला बंद रही. वर्षान्तकी परीक्षाफल २३ मेंसे १६ बाळक उतीर्ण होनेसे संतोष जनक रहा. उनके उत्साह वर्धनार्थ पारितोषक दिया गया. शालासम्बन्धी सभा इस साल ११ बार भरी जिसमें प्रथक २ विषयोंपर ११ भाइयों के व्याख्यान हुए. उक्त सभा व पाठशाला यदि द्रव्यसे पूर्ण होजावे. तो थोड़ेही दिनमें अच्छी उन्नति करके दिखलावे.

जैनधर्म प्रकाशिनी सभा आकलूज.

१९ वें अधिवेशनसे २२ वें अधिवेशनतक ४ सभाओंकी रिपोर्ट आई है. क्रमानुसार यथायोग्य व्याख्यान हुए. श्रोताओंने शिक्षा पाकर शक्त्यनुसार त्याग मर्यादा ग्रहणकी सभाका कार्य नियम बद्ध व उत्साह पूर्वक होता है. इस सभाके परिश्रमसे पाठशाला भी भली भांति चलती है.

तीर्थक्षेत्रोंके हिसाबोंकी पहुंच.

श्री सिद्धक्षेत्र रेशंदीगिर उर्फ नैनागिर—श्रीयुत तुलसीरामजी साबिक हैडमास्टर दलपतपुरने बड़े परिश्रमसे अगहन वदी २ सं. ५५ से कार्तिक सुदी १५ सं० ५८ तकका हिसाब लिखकर भेजा है. जिसका धन्यवाद दिया जाता है. हिसाबके साथ उक्त महाशयने एक चिट्टी भेजी है वह आगामी अंकमें प्रकाशित की जावेगी. उससे भली भांति विदित हो जाता है. कि क्षेत्रोंके द्रव्यका किस प्रकार सत्यानाश हो जाता है.

श्री पावापुर क्षेत्र—प्रबंधकर्ता पंडित हरलालजी राघाजीने कृपाकर १० वर्षका संक्षिप्त हिसाब भेजा है. वह स्थानाभावके कारण यहां न लिख आगमी अंकमें प्रकाशित करेंगे. यदि इसी प्रकार प्रत्येक स्थानोंके प्रबंधकर्ता थोड़ासा परिश्रम उठाके हिसाब भेजा करें. तो धीरे २ सब अप्रबंध दूर हो जावें. और वह धन्यवादके पात्र हो जावें.

श्री तीर्थक्षेत्र सम्बन्धी आवश्यकीय प्रार्थना.

सिद्धिश्री शुभस्थाने अनेकोपमायोग्य प्रभावनांग परायण धर्मोत्साही श्री समस्त दिगम्बर जैनी पंचान योग्य लिखी बम्बईसे दिगम्बर जैन प्रांतिक सभा बम्बईका धर्मस्नेहपूर्वक श्री जयजिनेन्द्र वंचनाजी. अत्र कुशलं तत्राप्यस्तु. अपरंच यह बात आप सर्व भाइयोंपर विदित है कि श्री सम्मेदशिखरजी परम पूज्य सिद्धक्षेत्रपर आज

चार वर्ष हुए. स्वेताम्बरियोंसे मुकद्दमा चल रहा है. और अभीतक उसके तह होने की बात ध्यानमें नहीं आती, जहांतक बुद्धिकी शक्ति पहुंचती है; इस कार्यके सफलीभूत होनेमें बहुत समय व सम्मतिकी आवश्यक्ता है, इसके सिवाय अन्य तीर्थक्षेत्रोंमें भी स्वेताम्बरी भाइयोंने झगडे उठा रक्खे हैं. समय समयपर हजारों रुपया अदालतों में लुटाना पड़ते हैं. और तिसपर भी उनका संतोषजनक फल नहीं निकलता. कारण कहीं २ के अधिष्ठाता लोग तो हीनशक्ति होनेसे सफलीभूत नहीं होते. तथा ऐसे झगड़ोंमें रुपया बरवाद करना फिजूल् समझते हैं. और कहीं २ के भाई परस्पर एकता न होनेके सबबसे शिथिल हो बैठते हैं. अखीर को इन सब बातोंका नतीजा यह निकलता है, कि कहीं २ तो हार मान बैठ जाते हैं. और कहीं २ दोनों हकदारहो संतोष कर बैठते हैं.

जिसका फल आज यह दृष्टिगोचर हो रहा है; कि वे अब हम लोगोंसे बराबरीका हक-सुबूत करनेके अतिरिक्त खुद मुख्तार होनेका ख्वाब देखते हैं. और जोर शोरसे कहते हैं कि दिगम्बरियो! अब तुम हमारी दृष्टिमें कुछ भी नहीं हो. तुमको चाहिये कि हमारे आधीन हो रहो. हमारी आज्ञासे इस अनादि असीमपुन्यो-त्पादक सिद्ध क्षेत्रके दर्शन करके अपनी अनैक्यता (फूट) महाराणीका प्रसाद पान करो. हमारे साम्हने बात करनेका तुम्हें कोई अधिकार नहीं है.

भाइयो देखो! इस समय तुम्हें कैसी अत्युत्तम दो शिक्षाएं मिल रही हैं. यह दोनों अपने सर्वस्व खोनेके बदलेमें मिलती हैं. तो इन्हें गांठमें बांधो! वह दो क्या हैं? एक यह कि देखो! हम ऐक्यमतसे उद्योगमें तत्पर रहनेसे कैसा स्वाधीनसुख प्राप्त करनेकी चेष्टामें हैं. और तुम देखो. अनैक्यमत व अनुद्योगी रहनेसे हमारा कैसा मुंह ताक रहे हो.

परन्तु क्या अब शिक्षा पाकरभी आप ऐक्यता और उद्योगशील नहीं बनोगे? नहीं २! अवश्यही उपाय करोगे. अहा! कैसा अच्छा उपाय ध्यानमें आ रहा है, यदि इसमें सफ-लता प्राप्त हुई तो निश्चयही हम एक दिन दूसरे लोगोंके अनुकरणीय हो जावेंगे.

प्रिय बान्धवो! आपने यह लोकोक्ति अव-श्यही सुनी होगी कि "एक सो आधा, दो सो हजार" अर्थात् एक मनुष्य कार्य सफलता प्राप्त करनेमें आधेके बराबर होता है. और इसी तरह दो सम्मतिपूर्वक करनेमें हजारके समान हो जाते हैं. सारांश एकमत होकर कार्य करनाही श्रेय-स्कर है. और इसीसे ऐक्यताकी महिमा जगह २ पर गाई जाती है, तथा इसीपर श्रद्धा कर आज हम आपको यह चिट्ठी लिखनेके लिये तत्पर हुए हैं.

देखिये! यह कैसा अच्छा अवसर हाथ आया है. कि मिती कार्तिक वदी २ से १० तक मथुरामें श्रीजम्बू स्वामीका मेला होनेवाला है. इस मेले पर महासभाका सालाना जलसा भी बड़ी धूमधामसे होगा. क्योंकि अबकी बार श्रीमान सेठ द्वारकादासजीने बड़े उत्साहके साथ इस मेलेको रौनक देनेके वास्ते तन मन धनसे

उत्तम प्रवन्ध किया है. इसी मोकेपर जैन यङ्ग-मेन एसोसियेशन व "जैन इतिहास सुसाइटी" के जल्से भी बड़े जोरशोरसे होंगे. यदि इस मेलेपर आप सब भाई पधारनेकी कृपा करेंगे. अथवा जो आपका आना न हो सके, तो कुछ प्रतिनिधि बनाकर भेजेंगे, तो उपर्युक्त तीर्थोंके झगड़े मिटानेके वास्ते तथा भारतवर्षके समस्त तीर्थक्षेत्रोंके दुष्प्रबन्धको मैटकर उत्तम प्रबन्धकर-नेका विचार किया जावेगा.

इस विषयमें हमारी बुद्धिके अनुसार एक विचार यह उपस्थित हुआ है. जो आपलोगोंके सन्मुख पेश करते हैं. यदि योग्य हो तो उसमें सहमत हूजिये. इस अवसरमें भाइयोंकी सम्मतिसे एक "तीर्थक्षेत्र कमैटी" स्थापित की जावे. जो समस्त भारत वर्ष (हिन्दुस्थान) के तीर्थक्षेत्रोंके प्रबंध करनेकी अधिकारिणी हो. इस सभामें प्रत्येक प्रान्तके, प्रत्येक बड़े २ नगरोंके, प्रत्येक तीर्थक्षेत्रोंके पासके प्रतिष्ठित २ पुरुष मेम्बर चुनें जावें और बहुमतसे हरेक तरहके प्रबन्ध किये जावें.

ऐसा करनेसे यह कमैटी कानूनकी रू से हिन्दुस्थान भरके तीर्थक्षेत्रोंकी अधिकारिणीहो सक्ती है. और हमारी सम्मतिसे ही यह सभा स्थापित हुई है. तो फिर उसका हक्क सब स्थानोंपर होनेमें संदेहही क्या है? अब यहांपर यह प्रश्न अवश्यही उठेगा, कि उक्त कमैटी करेगी क्या? उसका उत्तर नीचे पढ़िये!

यह सभा सब तीर्थक्षेत्रोंकी देखरेख करेगी. जहांपर प्रबन्ध ठीक नहीं होगा, दुरुस्त करेगी. मुनीम पुजारी वगैरह अपनी ओरसे रक्खेगी; उनकी इन्स्पेक्टरोंद्वारा समय २ पर जांच करेगी. आमद खर्चके कायदे बनाकर उसके अनुसार वहांका कार्य चलावेगी. रुपया सब जगहके भंडारोंका सब सभासदोंके मतसे जुदे २ बेंकोंमें जमा करावेगी. किसी क्षेत्रपर यदि खर्चके कारण घाटा होगा, तो दूसरे स्थानोंसे भरकर पूरा करेगी, लड़ाई झगड़े मुकद्दमोंमें अपनी ओरसे कोशिस करेगी. सब स्थानोंके हक्क सुबूत अपने अधिकारमें रक्खेगी. इस सभाके जनरल सैक्रे-टरीके दफ्तरमें जिनके नीचे एक मुहर्रिर रहेगा. सम्पूर्ण प्रान्तिक मँत्रियों उपमँत्रियोंकी अनुमतिसे यह कार्य संपादन किया जावेगा. उक्त सभा जैन महासभा मथुराकी सहचरी समझी जावेगी. और इसकी वार्षिक रिपोर्टमें समस्त भारतवर्षके तीर्थक्षेत्रोंका हिसाब व उनकी व्यवस्था प्रकाश हुआ करेगी.

पाठको! इस सभाकी कैसी आवश्यक्ता है. और इससे क्या क्या लाभ प्राप्त हो सक्ते हैं, सो आप विचार सक्ते हैं. देखिये. इस कमैटीका सरकारमें कितना गौरव बढ़ेगा. इसको कितना अधिकार प्राप्त हो जावेगा. बड़े २ तीर्थक्षेत्रोंपर जहां प्रतिवर्ष हजारहां रुपया हमारे साधर्मी भाई सुकार्यमें लगानेको भंडारमें देते हैं, और जिससे वहांके मुनीम गुमास्ते प्रबन्धकर्ता अपनी पेट पूर्जा कर जन्म सफल समझते हैं, वह इसके प्रबन्धसे यथोचित कार्यमें लगेगा. क्या आप अनुमान इस बातसे नहीं कर सक्ते हैं. कि वह रुपया आजकल व्यर्थ जाता है. देखिये जहां हजारों रुपयोंकी आमदनी हजारों वर्षसे हो रही है, और अगर वहांके मुनीमसे कहो, कि

अमुक तीर्थकी रक्षाके निमित्त कुछ रुपयोंकी आवश्यक्ता है. तुम अपने भण्डारसे देओ. तो वह सीधा उत्तर देगा. कि भंडारमें तो भाई रुपया हैंही नहीं; तो कहिये! कि हमारे यह लाखों रुपया कहां गये? सो इस कमेटीसे यह सब अप्रबन्ध दूर हो जावेगा. तीर्थक्षेत्रों व प्राचीन मन्दिर चैत्यालयोंकी भी मरम्मत आवश्यक्तानुसार इससे होती रहेगी, ऐसे बड़े २ मुकद्दमोंमें हमे आप लोगोंसे बार २ चन्दा करवानेकी आवश्यक्ता नहीं पड़ेगी. सब कार्य यथोचित रीतिसे चलने लगेगा. और इन लोगोंका हौसला भी नहीं रहेगा. जो आजकल ऐसा अप्रबन्ध व फूट देखकर जगह २ अपना हाथ डालनेको तत्पर हैं.

इसलिये उक्त कार्यके करनेके लिये यह एक अपूर्व अवसर नहीं खोना चाहिये. यदि आपलोग इस समय भी अपने आलस्य व प्रमादसे हमारी प्रार्थना नहीं सुनेंगे, और तीर्थोद्धारका यह द्वार न खोलने देंगे. तो फिर पीछे पछताना पड़ेगा. इस लिये प्रार्थना है कि उक्त मेलेपर आप अवश्यही पधारें या अपने प्रतिनिधियों को सम्मति पूर्वक भेजें. हमारे यहांसे भी दश पन्द्रह प्रतिष्ठित २ पुरुष इसी कार्यके अर्थ वहां जावेंगे. यदि आपलोग न आसकेंगे और न अपनें प्रतिनिधियोंको भेजसकेंगे. तो उपस्थित सभासदोंकी बहु सम्मतिद्वारा जो २ कार्य होंगे उनमें आपकी सम्मति समझी जावेगी. इत्यलम्.

आपका शुभचिन्तक,

गोपालदास बरैया महामंत्री,

दिगम्बर जैन प्रान्तिकसभा बम्बई.

परीक्षालय संबंधी विचार.

विद्वद्गणो! गतवर्ष परीक्षालयके पाठन क्रममें ग्रंथोंका जो न्यूनाधिक्य समावेश किया गया है, उसमें बहुकाल विचार करनेपर कितनेक ग्रंथोंका अदल बदल करना अत्यावश्यक प्रतीत हो रहा है. इसलिये हम अपनी सम्मति नीचे प्रकाश करते हैं. आशा है कि आप इसे अवधानपूर्वक अवलोकन कर शीघ्रही यथोचित सम्मतिसे सूचित करेंगे.

१ परीक्षालयकी हर परीक्षाके ४ खंड होना चाहिये. कारण ५ खंड रहनेसे समय बहुत लगता है. और इसके अतिरिक्त साम्प्रतमें अन्य किसी भी परीक्षालय व यूनीवर्सिटियोंमें ५ खंड देखनेमें नहीं आते.

२ बालबोध परीक्षा में भाषा व्याकरणके सिवाय बालकको संस्कृत व्याकरणका भी बोध होजाना चाहिये. और उस व्याकरण द्वारा पठित विषयको समझाने व पुष्ट करनें हेतु एक संस्कृत वाक्योंकी पुस्तक पढ़ानाभी आवश्यक है जिससे प्रवेशिका कक्षाके अभ्यासमें बालकको श्लोकादि लगानेमें सहायता मिल सके.

३ पंडित परीक्षामें न्याय, व्याकरण, काव्य यह तीनही विषय रहें. और हरएक विषयके ४ खंड किये जावें. विद्यार्थी उक्त विषयोंमें प्रत्येक खंडके सम्पूर्ण ग्रंथोंमें एकही समयमें परीक्षा दे सकेगा. एक विषयके भिन्न २ ग्रंथोंकी भिन्न २ समयमें परीक्षा न ली जावे. और जो विद्यार्थी अङ्गीकृत विषयके पूर्व खंडोंमें परीक्षा देकर उत्तीर्ण न होवे, वह उस विषयके उत्तरखंडकी परीक्षामें शामिल न किया जावे.

४ उक्त सब बातोंका खुलासा नीचे लिखे नकशोंसे भली भांति हो जावेगा.

बालबोध परीक्षा.

नामखंड व पठन समय.	धर्मशास्त्र.	व्याकरण.	गणित.
प्रथमखंड ६ माह.	नमोकार मंत्रदर्शन भाषा चोवीसी व बीस तीर्थंकरोंके नाम.	जैन बालबोधक पूर्ण.	३० तक पहाड़े.
द्वितीयखंड ६ माह.	इष्ट छत्तीसी दो मंगल.	हिन्दीकी द्वितीय पुस्तक.	पहाड़े पूर्ण.
तृतीयखंड १ वर्ष	भक्तामर स्तोत्र व दर्शन संस्कृत और नित्य पूजन.	हिन्दीकी तृतीय पुस्तक और हिन्दीभाषा काव्याकरणसार पूर्ण.	साधारण जोड़बाकी गुणाभाग.
चतुर्थखंड १ वर्ष	संस्कृतारोहण.	बालबोध व्याकरण पूर्ण.	मिश्र जोड़बाकी गुणाभाग.

पंडित परीक्षा (विषय न्याय.)

नामखंड व पठन समय.	न्याय.	धर्मशास्त्र.	व्याकरण.	काव्य.
प्रथमखंड १ वर्ष	न्यायदीपिका पूर्ण.	सर्वार्थसिद्धि ९ अध्याय	सिद्धान्तकौमुदी उत्तरार्द्धके प्रारंभसे भ्वादिगणान्त.	धर्मशर्माभ्युदय १ से ५ सर्ग पर्यंत ५ सर्ग
द्वितीयखंड १ वर्ष	प्रमेयरत्नमाला पूर्ण.	सर्वार्थसिद्धि पूर्ण. द्रव्यसंग्रह संस्कृत-टीका सहित.	यङ्लुगन्त प्रक्रियांत.	धर्मशर्माभ्युदय ६ से १० सर्ग पर्यन्त ५ सर्ग.
तृतीयखंड १ वर्ष	आप्त परीक्षा प्रमाण परीक्षा.	राजवार्त्तिकजी ४ अध्याय.	निष्ठा प्रत्ययान्त.	धर्मशर्माभ्युदय ११ से १५ तक ५ सर्ग वाग्भटालंकार.
चतुर्थखंड १ वर्ष	आप्तमीमांसा वसुनंदि टीकासहित नयचक्र प्राकृत	राजवार्तिकजी पूर्ण.	सिद्धान्तकौमुदी उत्तरार्द्ध पूर्ण.	धर्मशर्माभ्युदय पूर्ण वाग्भटालंकार पूर्ण.

पंडित परीक्षा विषय व्याकरण.

नामखंड व पठन काल.	व्याकरण.	धर्मशास्त्र.	न्याय.	काव्य.
प्रथमखंड १ वर्ष	सिद्धांतकौमुदी स्त्रीप्रत्ययांन्त.	सर्वार्थसिद्धि ५ अध्याय.	न्याय दीपिका प्रथम प्रकाश.	धर्मशर्माभ्युदय १ से ५ तक ५ सर्ग.
द्वितीयखंड १ वर्ष	सिद्धांतकौमुदी तद्धितान्त.	सर्वार्थ सिद्धि पूर्ण द्रव्यसंग्रह सटीक	न्याय दीपिका प्रथम प्रकाश.	धर्मशर्माभ्युदय ६ से १० तक ५ सर्ग.
तृतीयखंड १ वर्ष.	सिद्धान्तकौमुदी १० गणान्त.	राजवार्त्तिकजी ४ अध्याय.	न्याय दीपिका तर्कान्त	धर्मशर्माभ्युदय ११से१५तक५सर्ग. वाग्भटालंकार.
चतुर्थखंड १ वर्ष.	सिद्धान्तकौमुदी पूर्ण.	राजवार्त्तिकजी पूर्ण.	न्याय दीपिका पूर्ण.	धर्मशर्माभ्युदय पूर्ण वाग्भटालंकार.

पंडित परीक्षा विषय काव्य.

नाम खंडव पठनकाल.	काव्य.	धर्मशास्त्र.	व्याकरण.	न्याय.
प्रथमखंड १ वर्ष.	धर्मशर्माभ्युदय ९ सर्ग वाग्भट्टालंकार.	सर्वार्थसिद्धि ५ अध्याय.	सिद्धांतकौमुदी भ्वादिगणान्त	न्यायदीपिका प्रथम प्रकाश.
द्वितीयखंड १ वर्ष.	धर्मशर्माभ्युदय पूर्ण वृत्तरत्नाकर छंदोग्रन्थ.	सर्वार्थसिद्धि पूर्ण द्रव्यसंग्रह सटीक	सिद्धान्त कौमुदी यङ्लुगन्त.	न्यायदीपिका द्वितीयप्रकाश.
तृतीयखंड १ वर्ष.	पार्श्वाभ्युदय पूर्ण जयकुमार सुलोचना नाटक.	राजवार्तिकजी ४ अध्याय.	सिद्धांतकौमुदी निष्ठा प्रत्ययान्त.	न्याय दीपिका तर्कान्त.
चतुर्थखंड १ वर्ष.	जीवंधरचंपू अलंकार चिन्तामणि.	राजवार्तिकजी पूर्ण.	सिद्धांत कौमुदी पूर्ण.	न्यायदीपिका पूर्ण.

हाय! पुकार न सुनी.

दयार्द्र चित सज्जन जनो! आप उपर्युक्त शीर्षकको पढ़कर अवश्यमेव खेदित हुए होंगे. सो वास्तवमें उचित है. क्योंकि यह शीर्षक सामायिक समाचार पत्रोंकी नाईं चित्तरंजनार्थही नहीं दिया गया है. किन्तु इसमें आपसे महादुःख निवारणार्थ प्रार्थना की गई है. पर कहीं द्रव्य देनेके भयसे डर न जाइये. हम आपका कुछभी व्यय नहीं करावेंगे किन्तु केवळ आपको अमूल्य समयका इस ओर व्यय करना पड़ेगा. अत एव एकबार अवधान पूर्वक प्रार्थना श्रवण कीजिये. और एक २ अक्षरको विचारिये. यदि हमारी अर्ज सत्य होवे. तब तो स्वीकार करना. नहीं तो जैसा भावितव्य है, सो होगा. शास्त्रकारोंने प्रथम उद्योग करनेके हेतु उपदेश दिया है. अतएव आपको एकबार और सूचित कर देना हम अपना परम धर्म समझते है. फिर कभी ऐसा कष्ट न देवेंगे.

देखिये! "हाय पुकार न सुनी" इस वाक्यका प्रयोग कैसे स्थलमें होता है. जब किसी पुरुषपर महादुःख आवे; और वह उसको सहनेके लिये असमर्थ होवे. तब अपनी रक्षा निमित्त दूसरोंके प्रतिपुकार करता है. और बार २ पुकार करने परभी जब कोई ध्यान न देवे, तब निराश होकर "हाय" इस भयंकर बीजाक्षरके साथ "पुकार न सुनी" इस मंत्रका स्मरण करता हुआ अग्रिम शरीरकी ओर झुकता है. बस. उसी शब्दका प्रयोग कर आज हमभी गुप्त रीतिसे एक दोके नहीं किन्तु इस पत्रमें छपाकर हजारोंके साम्हने अपना दुःख प्रकट वर्णन करते हैं.

बांधवो! इस संसारमें मनुष्यके स्त्रीपुत्रमित्रादिक शतावधि प्रिय जनोंमें केवळ मातापिता ये दोही परमोपकारी हैं. क्योंकि यह दोनों चाहे वह जीव इनको सुख दे या न दे, आज्ञाका पालन करै या न करै, अङ्गहीन हो या साङ्ग, मूर्ख हो या विद्वान, सत् हो या असत्, जिस दिनसे गर्भमें आता है, उसही वासरसे उसके मरणतक अगणित द्रव्यका व्यय और नानाप्रकारकी रक्षा निमित विपत्तियें भोगते हैं. और फिर इन दोनोंमेभी जैसी माता है,, वैसा और कोई नहीं. क्योंकि वह कोई २ समय इस जविके लिये अपने प्राणतक प्रदान करनेको उद्युक्त होजाती है. अतएव जिसके माता है वह चाहे दीन हो, रोगी हो, या अन्य किसी आपदाकर ग्रस्त हो, वह अपनेपर उन दुःखोंको गिनताही नहीं. इसहीसे तो विद्वद्वंधु सुबन्धु कविने कहा है कि "जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गा दपिगरीयसी" अर्थात् जन्म देनेवाली माता, और अपने जन्म लेनेका देश, यह दोनों स्वर्गसे भी बड़े हैं.

अहा! माता इन दो अक्षरोंकी शक्ति कैसी है. कि नितान्त विपदामेंभी यह स्मरण करलिये जाँय. तो तत्काल ही शान्तिताका प्रान्त प्राप्त हो जाता है. जिनके माता नहीं, उनको संसार बन समान है. सुखभी दुःखमय है. वे अनेक पुत्र कलत्रादिके विद्यमान होते भी निःसहाय है. और हितैषिणी व्यक्तिसे रहित हैं. उन्हें धन पाषाण और विभूति स्मशान विभूतिवत्‌ही है. इसही कारण शास्त्रकारोंने माताकी सेवा, रक्षा करना आज्ञानुसार

चलना और माता जिसमें संतुष्ट हो वही कार्य करना यावन्मात्र मनुष्यके लिये उचित कहा है. एवं लोकमें उसहीकी प्रशंसा होती है. जो अपनी माताको प्रसन्न रखता है. यदि कोई पुरुषप्रमाद व किसी प्रकारके अज्ञानसे अपनी माताका पालन नहीं करता है और सुख नहीं पहुंचाता है, तो जगतमें वह कृतघ्नी, कुपुत्र, क्रूर, कलुषी, कुकर्मी. इत्यादि निन्दनीय उपाधियें पाकर उभय लोकमें धिक्कार और दुःख पानेका अधिकारी होता है. बस पाठकगण यह जो हमने इस असार संसारमें एकबार केवल इसी भवमें रक्षा करनेवाली माताका महात्म्य कह सुनाया है. सो हमारा प्रकृति विषय नहीं है. किन्तु एक प्रासङ्गिक प्रलाप है. और प्रयोजन इसका प्रकृति विषयको पुष्ट करनेका है. क्योंकि लोक बुद्धिमें प्रथम नीचश्रेणीके पदार्थोंकी प्रशंसा किये विना उच्चश्रेणीका माहात्म्य ठीक नही समझा जाता ! इतना कहकर अब हम प्रस्तुत विषयकी ओर लक्ष्य देते हैं.

विचारशील सुज्ञो ! जिस माताकी प्रशंसा आप ऊपर सुन चुके हैं, उससे भी बढ़कर अनादिकालसे नरक निगोदादिककी आपत्तियोंको दूर करनेवाली और स्वर्गादिक सुखसम्पदाओंकी अनुभव करानेवाली व सेवाकरनेसे परम्पराय मोक्षको देनेवाली एक माता और है. जो जैनजातिकी, आपकी, हमारी, और मानो तो सर्व जगतकी, जननी है. यद्यपि इसका स्वरूप अरूप है तथापि जीवोंके पुन्यसे अक्षराकार बनकर संसारी जीवकी भांति ग्रंथमय देहका अवलम्बन करके अपनी वैक्रिया ऋद्धिसे नानाशरीर धारणकर यथावकाश कहीं विशेष और कहीं न्यूनरूपसे सम्पूर्ण भारत भूमिमें व्याप्त हो रही है. नाम इसका अति सुगम कर्णप्रिय श्रवण व स्मरण करनेसे मानस सरोवरको निर्मल करनेवाला केवल चारही वर्णोंमें है. तो अब आप मेरी समझमें इन विशेषणोंसेही प्रसिद्ध विशेष्यका नाम जान गये होंगे यदि न जाना हो, तो लीजिये. हम आप दोनों उस पवित्र नामको कह सुनकर अपनी २ रसना और श्रवणेन्द्रियको सफल करें. वह हमारी परम पूज्य "जिनवाणी" (सरस्वती) माता है. और इसही रक्षा निमित्त आर्तनाद करना हमारा अभीष्ट विषय है.

पाठक गण ! आप अनादि निधन निर्विकार तीनों लोककी उद्धारक श्री जिनवाणीकी रक्षा असंभव समझकर चौंकिये न ! किंचित व्यवहारनयका अवलम्बन कीजिये ! वह यह कि जितने आधेय हैं वे अधिकरणके आधार हैं. और वे अधिकरणकेविना क्षणमात्रभी नहीं रह सक्ते. जैसे जीव देहके आधार है और देहके छिन्नभिन्न होनेपर विनासमयभी अकाल मृत्युको प्राप्त हो जाता है. अतएव देहकी रक्षाके निमित्त नानाविधि औषधि भोजनादि सहस्रों रक्षाके उपाय किये जाते हैं. औषधिशास्त्रकारोंनेभी देहकी रक्षाको दयामय धर्म तथा अरक्षाको महापाप वर्णन किया है. बस ठीक इसही लक्षणको जीव देहकी भांति **जिनवाणी** और ग्रन्थोंके विषयमें घटित कर अनेक उपायोंद्वारा ग्रन्थोंकी रक्षा करनेसे माताकी रक्षा और उनकी अरक्षासे भारतमें जिनवाणीका अभाव निसन्देह समझ लीजिये ! और अनादि निधन जीवके

व्यवहारमें स्त्रीपुत्र मित्र वैद्यादि जिस प्रकार रक्षक समझे जाते हैं, उसही प्रकार आपभी अपनेको जिनवाणीके रक्षक विचार कर लीजिये.

शेषमग्रे.

राज्याभिषेकोत्सव समाचार.

दिवस निकट आ गये. हमने अपने पाठकों को अभीलों उक्त उत्सव सम्बंधी सुखदा समाचार सुनानेसे बंचित रक्खा. सो अवश्यही भूलकी. हमारे सहयोगी नागरी, उर्दू गुजराती, मराठी, इंग्लिशआदी पत्र वर्षभर प्रथमसे लिख २ कर महापुराण बना बैठे. हमने आज प्रारंभही किया है. परन्तु कुछ हमारे पाठक इस उत्सवकी खुश खबरीसे अजान थोड़ेही रहे होंगे. अवश्यही इस आनन्द नादसे उनके श्रौनभरकर चित्तको बरवश उस दर्शको देखनेके लिये फुसला रहे होंगे. जो आगामी जनवरी मासकी तारीख १से ९ तक प्राचीन इन्द्रप्रस्थ तथा साम्प्रत देहलीकी स्वर्ग सुखसम्पन्न भूमिपर दिखलाई देगा. यद्यपि यह समारोह हमारे विराट सम्राट श्री सप्तम एडवर्ड महोदयके भारत राज्यतिलक का है. और उनका इस शुभौसरमें हमारी दीन भारतीय प्रजाको दर्शन देना उचित था. तथापि उनका आना कारण वशात् या हमारे दुर्भाग्यसेही क.ो; नही हो सकेगा. और भारतके वाइसराय श्री लार्ड कर्जन महोदय इस बृहत् समरोहके कर्त्ता उनके प्रतिनिधि समझे जावेंगे.

हमारे सम्राटके छोटे भाई ड्यूक आफ कनाट् इस महोत्सवपर अवश्यही पधारेंगे. परंन्तु वह कुछ लार्डकर्जनका प्रतिनिधिपना नहीं छुड़ा सकेंगे. केवल एक उच्चश्रेणीके दर्शकोंकी भांति इस उत्सवमें सम्मिलित होंगे. यह एक भारतदृष्टिकी दृष्टिमें विचित्र व्यवहार समझा जावेगा. परन्तु विलायती नीति (कानून) की दृष्टिमें नहीं.

पाठको! अब दिल्ली दिल्ली नहीं रही है. अब दिल्ली इन्द्रप्रस्थकी शोभासे जो इतिहासोंसे सुनते हैं, उससे भी कहीं बढी चढी दिखा रही है. अब वह मुगलोंकी बादशाहीका तथा गदरके समयका भयंकर विपदाग्रस्त स्थान नहीं है. परन्तु अब वह आङ्गलिदेशस्थ प्रसिद्ध जगज्जयी सम्राटका राज्याभिषेकोत्सवालंकारसे विभूषित शान्तिताका सौख्यमय सुन्दर सुसज्जित भाग्यशाली स्थान है. अब वह पूर्व राज्यराजेश्वरी विक्टोरिया महाराणीके राज्योत्सव समयसे भी उत्तम शोभा तथा शान्तिताको धारण किये है. तो कहिये! आपका सदाका लालसी चित्त आपके हाथमें क्यों रहने लगा?

उक्त दरबारका मंडप इतना लम्बा चौड़ा बनाया जायगा. जिसमें राजा महाराजाओंके बैठनेके लिये सामनेकी तरफ ४ कतार कुर्सी ७२० फीटकी लम्बाईमें सजाई जावेंगी. १००९ कुर्सियां उनके साथियोंके लिये होंगी. इसके पीछे ७९० कुर्सिया दर्शकोंके लिये होंगी. उनके पीछे १९ फीट चौड़ा एक बरामदा होगा. जिसमें २०,००० दर्शक खड़े होकर दरबार देख सकेंगे.

आज्ञा हुई है; कि नीचे लिखे अनुसार दर्बार मंडफके अन्दर निमंत्रित लोगोंको जाना

पडेगा.—सबसे पहिले दरबारी लोग, फिर अंग्रेज दर्शक जब बैठलेंगे. तब देशी राजे यथायोग्य पद और सन्मानके अनुसार आगे पीछे यथानियम दर्बार मंडपमें प्रवेश करेंगे. सबसे पहिले उपाधिधारी राजे उसके उपरान्त उनकी अपेक्षा सम्मानशाली राजे जावेंगे. जब जो राजे मंडफमें प्रवेश करेंगे तब उनके सम्मानके लिये निर्दिष्ट संख्यक तोपध्वनि होगी. (पर इसमें अभी संदेह है) राजाओंके प्रवेशके उपरान्त प्रादेशिक शासनकर्तागण अपने सहचरोंके साथ एक २ कर मंडफके अन्दर प्रवेश करेंगे. पश्चात भारतके नवागत प्रधान सेनापति लार्ड किचनर अपने दलबलकेसाथ मंडफमें प्रवेश करेंगे. सबके अन्तमें लार्ड कर्जन सा० ब० बड़ी सजावट और धूमधामकेसाथ सभास्थानमें उपस्थित होंगे. बडे लाट साहिबके आसनपर बैठ जानेके उपरान्त एक नकीब ऊंची आवाजसे सभाके मध्यमें खड़ा होके " श्रीमान राजराजेश्वर समस्त भारतवासियोंके स्वामी हैं" ऐसी घोषणा करेगा.

मंडफके भीतर और मंडफके बाहर जितने मनुष्य उपस्थित रहेंगे. वे लोग और चालीस हजार सैन्य एक स्वरसे श्रीमान सप्तम एडवर्डको अपना सम्राट स्वीकार करेंगे. लक्ष कंठस्वरसे निनादित शब्दके साथही बीस सहस्र बन्दूकोंका गगनभेदी शब्द दिग्दिगन्तमें गूंज उठेगा. तदुपरान्त एक दल गोलन्दाज दस फैर तोपका दागेंगे. अन्तमें अंग्रेजी गायन होकर बड़े लाट साहिब व्याख्यान देंगे.

दरबारमें दिनोदिन तय्यारियां हो रही हैं. जो लोग राजकर्मचारी नहीं है, वे बड़ी फुर्तीके साथ अपने २ टिकनेका प्रबन्ध कर रहे हैं, मकानोंका किराया बहुत बढ़ गया है. दिल्लीदर्बारका क्लबवाला मकान निजाम साहिबने ४९००० रुपये पर किराये लिया है. दस दिनके लिये आठ हजार पर मेडेनवाला होटल सर्कारने किराये लिया है. इसमें जंगी और मुल्की अफसर टिकाये जावेंगे.

उक्त दरबारके लिये बहुत चुन २ कर न्योता दिये जानेपर भी लगभग दो लाख लोग इकट्ठे होंगे.

समालोचककी समालोचना

साम्प्रतमें प्रायः ऐसी अधम प्रथा चल निकली है. कि पुरुष अपने आपही दो आगे और दो पीछे उपधियोंके पुंछल्ले बांधकर लेखकों और समालोचकोंके मैदानमें आ खड़े होते हैं. चाहे वह समालोचक शब्दकी परिभाषासेही वंचित क्यों न हों. किंचित कागज काले करनेकी शक्ति पाई; कि चले आकाशका चित्रखींचने. तुकेंजोरना सीखा कि कहलाने चले कवीन्द्र. परन्तु क्या वह सुज्ञ जनोंकी दृष्टिमें श्रेष्ठ हो सक्ते हैं. कदापि नहीं.

पाठको आज ऐसाही अवसर आन पड़ा है, जिससे एक भिन्नधर्मी व्यक्तिको सचेत करना अभीष्ट समझ लेखनीसे परिश्रम लेना पड़ता है. यद्यपि किसीपर आक्षेप करना सज्जनोंका कर्त्तव्य

नहीं है. तथापि शुद्ध दृष्टिसें अपना अभिप्राय दर्शा देना अन्याय भी नहीं कहा जाता.

हमारे सहयोगी श्री काव्यसुधाधर सम्पादक पं. देवदित्त शर्म्मा त्रिपाठी. दत्तद्विजेन्द्र प्रसिद्ध कवि तथा समालोचक है. आपने चन्द्रसेन जैन इटावा निवासीकी बनाई "सांगीत नेमचन्द्रिका" पुस्तककी समालोचना अपने अगस्तके सुधाधरमें की है. जिसमें उक्त कर्त्ताकी कविता दूषणोंसे भरी हुई बताकर निन्दा की है. सो यथार्थ ही है. उसमें हमारा कुछ भी पक्षपात नहीं है. जो पुरुष वीछीका मंत्र न जानकार व्यालके बिल्मे हाथ डालता है, वह अवश्यही ठगा जाता है. ठीक इसी तरह बाबू चन्द्रसेनजी उक्त पुस्तक बनाकर उपहासास्पद बने हैं. परन्तु दत्त द्विजेन्द्रजीने अन्तमें समालोचक धर्म छोड़कर बिना समझे बूझे अपनेही श्रुति स्मृति पुराणेतिहासादिद्वारा प्रशंसित एक पवित्र जैन धर्मपर आक्षेप धर किया है, आप अपनी सम्मतिके अनुकूल स्वामी दयानन्दजीको बतलाकर उनके वचनोंको पुष्ट करने चले हैं. (इस भेषसे कदाचित आप भी आर्यसमाजीसे जान पड़ते हैं.) आप लिखते हैं कि "इस मत (जैन) के ग्रन्थ ऐसीही झूठी गप्पोंसे भरे हैं. जिन्हे देख किसी बुद्धिमानको विश्वास नहीं हो सक्ता, इसीसे प्रायः इस मतवाले ऐसी पुस्तकें छिपाये रखते हैं. किसीको दिखलानेसे पाप समझते हैं." अब हमारे पाठकों को अवश्यही जान पड़ा होगा. कि उक्त पंडित जी जैन धर्मके कैसे जानकर तथा कैसे सत्य समालोचक है. संस्कृत तथा मागधी भाषा जिसमें जैनधर्मके लक्षावधि ग्रन्थ हैं उसके ज्ञातातो दूरही रहे. हमारी समझमें आपहिन्दी तथा अंग्रेजी इतिहासमें भी पूरे शङ्ख ढपोलसे दिखते है. नहीं तो ऊपर लिखे वाक्य आपके श्रीकर कमलोंसे सुधाधरमें कलङ्कतुल्य कभी आंकित न होते, यदि आपने प्रसिद्ध विद्वान भंडारकरकी रिपोर्ट. इंडियन इंटेक्वेरी देखी होती. यदि आपने श्री जयपुर महाराजाश्रित महामहोपाध्याय पंडित दुर्गाप्रसाद शर्मा संकलित काव्यमालाके अद्वितीय ग्रन्थ किंचितभी अवलोकन किये होते, यदि आपने सांप्रति बाम्बे, मद्रास, बंगाल यूरोपीय इतिहाससुसाइटियोंके प्रोफेसरोंकी रिपोर्टें व लायब्रेरियोंके जैन ग्रन्थोंकी प्रशस्तियां पढ़ीं होतीं, तो इस प्रकार अदृश आकाशका चित्र खींचनेको कभी आपेसे बाहिर न हो सक्ते. अन्तमें अब हम अपने पंडितजीसे अनुचित वाक्योंके कहे जानेकी क्षमा मांग आगामी आशा करते हैं. कि किसी अनजाने विषयमें इस प्रकार हस्तक्षेप करनेका साहस न करके सत्य विषयोंकी सत्य समालोचना करकेही अपने उज्ज्वल सुधाधरको निष्कलंकित रखनेकी चेष्टा करते रहेंगे.

एक जैन.

विज्ञापन. ?

जैनधर्म हितेच्छु मंडल करमसद—आपकी मासिक रिपोर्ट बहुत भारी आती है. और आशय बहुत थोडा रहता है. संक्षिप्त भेजा करें तो उत्तम हो. पत्रमें स्थानकी न्यूनता रहती है.

विज्ञापन. २

यह विज्ञापन नहीं विनय है! और वह हमारे जैनमित्रके हितैषी ग्राहकों प्रति है. आशा है कि वह इसके ऊपर ध्यान देंगे, तृतीय वर्ष पूर्ण होगया. चौथा प्रारंभ है. जिन महाशयोंका पिछला मूल्य नहीं आया है. और हम उन्हें प्रतिष्ठित समझके विना पेशगी लिये आजतक "मित्र" भेजते रहे हैं. वह. और जिनका मूल्य १२ वें अंक तक चुक गया है. वह. हमारे पेशगी नियमके अनुसार दो वर्षका व एक वर्षका मूल्य शीघ्रही भेज देवें, तथा जो महाशय मनीआर्डर फार्म भरनेका तथा डांक खानें तक जानेंका परिश्रम न उठा सकें. वह कृपाकर सूचित करें ताकि उनके नाम आगामी अंक वी. पी. कर दिया जावे.

दूसरी विनय—हमारे ऋणी "जैनमित्र" के अदैनियां ग्राहकों प्रति है. जो वेल्यूपेविलका नाम सुनतेही अपने विलमें घुसनेकी राह पकड़ते हैं. उनसे प्रार्थना क्या है? यह! कि कृपापूर्वक वह भी अपनी वाकी भेज देवें. जिसमें हमको वेल्यूपेविल न करना पड़े. कारण कि हम अपना सवाआना पैसा उलटा जुर्माना करानेको डरते रहते हैं—और यदि सर्वथा गपच बैठनेकी इच्छा हो, तो एक पैसेके कार्डमें हमको सूचना तो लिख भेजें कि, रजिष्टरमें हमारे नामपर काली स्याही फेर दो. और हमारा पैसा वट्टे खातेमें डाल दो.

विज्ञापन ३.

चौथी प्रार्थना सम्पूर्ण दिगम्बर जैनप्रान्तिक सभा बम्बईके सभासदों व उपदेशक भंडारके सहायक महाशयोंसे है. जो वार्षिक तीन रुपया, छह रुपया, बारह रुपया, और पांच रुपया चन्दा देते हैं. तथा जिनके पास जैनमित्र भेंटस्वरूप बराबर भेजा जाता है.

आज तकका चन्दा आप लोग भी चुकता करके भेज देवें. या हमको लिखें तो आगामी अंक वी. पी. कर दिया जावे पहुंचनेपर आप उसे सादरग्रहण करेंगे. ऐसी आशा है.

जिन महाशयोंको आगामी सभासदी स्वीकार नहीं है. वह एक कार्डसे सूचना दे देवें. नहीं तो हस्ताक्षरी फार्म हमारे पास रहनेसे हम उन्हें हमेशाकेलिये मेम्बर समझेंगे.

प्रार्थी—

क्लर्क दिगम्बर जैनप्रांतिक

सभा बम्बई.

कपोलकल्पना.

किसीका एक शिक्षाजनक वाक्य था कि 'अपने परसे जगतको जानों" बस हमनेंभी उसे अपने मगजमें अच्छीतरह भर लिया, परन्तु इसका अर्थ क्या है? जो हमने समझ रक्खा है! कि जैसे हम है. वैसे संसारमें सब है. जैसा हमने समझा वैसा सवहीको समझना चाहिये, जैसी हमारी इच्छा है. वैसीही सब संसारकी, फिर तो इससे यहभी स्वतः सिद्ध होगया. कि उक्त कहावतकी टीका जो मेरे मगजमें है. वही सबकेमें होनी चाहिये और कहनेवालेका आशयभी यही है.

पाठको! जिसकी ऊपर प्रस्तावनाकी है. वह घटना बड़ीही विचित्र है. मनकी मौज है. अनूठी उमङ्ग हैं. तरल तरङ्ग है. लम्बी लफंग है. जो चाहोसोही है. कहनेमें तो भय और शंकासे गला दबानेवाली है. परन्तु कहेबिना धैर्य धरानेवाली नहीं सुनिये—

एक विज्ञापन **भारत वर्षीय दिगम्बर जैन महासभा** की ओरसे सुप्रसिद्ध मुंशी चम्पतराय जी महामंत्रीके हस्ताक्षरोंका कार्डपर मुद्रितहो. प्रकाशित हुआ है. वह चटकीली वार्तोसे हमारे भाइयोंकी शीघ्रही जम्बू स्वामीके मेलेपर उपस्थित होनेकीं प्रेरणा करनेको उद्यत हुआ है. कहता है. यह होगा. वह होगा. और क्या २ होगा. सुनिये—"पंडित गोपालदासजी और पंडित सेठ मेवारामजी खुर्जे वालोंका शास्त्रार्थश्राद्ध विषयमें होगा जिसका पं. मेवारामजी खंडन और गोपालदासजी मंडन करेंगे"

पाठको! कहिये तो उत्कंठित करनेको वह कैसी मीठी २ बातें करता है; परन्तु आश्चर्य तो यह है कि "बैल न कूंदै कूंदै गौन" इस कहावतको ताल ठोकके सिद्ध करने चला है, और वही अपनी प्रसन्नताके माफिक सब प्रसन्न होंगे यही समझ रहा है, बाहरी विज्ञापन बहादुरी!

जानवरोंकी पैंड़ामें (तबेलेमें) लताई होना सुनी थी, और कभी २ ऐसेही जानवर मनुष्योंकीभी आपसमे घलाघली सुनीथी. परन्तु आज जैनियोंमें और फिर विशेषकर पंडितोंमें मारामार होनेकी अनूठी बात कहनेवाला यही एक बहादुर दृष्टि पड़ा हैं. फिर मजा यह. कि एकही हातसे ताली बजा करके आकाशसुमन भीतोड़ने चला हैं.

भाइयों सन्देहका स्थल है कि यह विज्ञापन हमारी जातिके शुभचिंतक परम प्रतिष्ठित नीतिज्ञ मुंशी चंपतरायजीके हाथसे लिखा गया है, नहीं, नहीं, कदापि नहीं. हम हजार बार कह सक्ते हैं कि उक्त दूरदर्शी पुरुषकी कलम ऐसे घृणित कार्य करनेका साहस कभी नही कर सक्ती. अवश्य यह किसी कलहप्रिय पुरुषकी करतूत उक्त कार्यकुशल महाशयकी कीर्ति कौमुदीमें कलंक लगाने हेतुकी गई है.

क्योंकि मुंशी जी को न तो हमने इस विषयकी कभी इत्तलादी. और न किसीसे इस विषयका वार्तालापही किया था. और न मैं तेरहपंथ आम्नायी इस कपोल कल्पित विषयका कभी स्वप्नमें भी पक्षपाती हुआ. फिर क्या यह कार्य वाही मुंशीजीकी कही जा सक्ती है?

कदाचित पं. सेठ मेवारामजी ही की एक तरफी डिगरीसे यह विज्ञापन दिया गया हो सो भी समझमें नहीं आता.

हां! कहीं पं. गोपालदासजी कोई दूसरेही वैष्णव या अन्यधर्मी हो. जिनसे मैं अनभिज्ञ हूं. और उनके धर्मसे प्रतिपादित श्राद्ध विषयका पं. मेवारामजीसे शास्त्रार्थ होना हो. तो क्या आश्चर्य है. कारण मेरे नामके आगे "बरैया या जैन" यह दो सूचक पद भी नहीं लगे हैं. यदि यह बात सच हो. तो हम भाइयोंसे अपनी भूलकी क्षमा मांगते हैं. और उस खंडनमंडनके देखनेके उत्कट अभिलाषी है, अलम्—

आपका कृपाकांक्षी

गोपालदास बरैया.

Registered No. B. 288.
४ शारदा बचावे, जैनमित्र ही चितावेगो ॥

श्रीवीतरागाय नमः

जैनमित्र.

जिसको

सर्व साधारण जनोंके हितार्थ,

दिगम्बर जैनप्रान्तिकसभा बंबईने

श्रीमान पंडित गोपालदास बरैयासे सम्पादन कराकर

प्रकाशित किया.

जगत जननहित करन कँह, जैनमित्र वरपत्र ।
प्रगट भयहु–प्रिय! गहहु किन? परचारहु सरवत्र ! ॥

चतुर्थ वर्ष } कार्तिक सं. १९५९ वि. { अंक २ रा

नियमावली.

१ इस पत्रका उद्देश भारतवर्षीय सर्वसाधारण जनोंमें सनातन, नीति, विद्याकी, उन्नति करना है.

२ इस पत्रमें राजविरुद्ध, धर्मविरुद्ध, व परस्पर विरोध बढ़ानेवाले लेख स्थान न पाकर, उत्तमोत्तम लेख, चर्चा उपदेश, राजनीति, धर्मनीति, सामायिक रिपोर्ट, व नये २ समाचार छपा करेंगे.

३ इस पत्रका अग्रिमवार्षिक मूल्य सर्वत्र डांकव्यय सहित केवल १।) रु० मात्र है, अग्रिम मूल्य पाये बिना यह पत्र किसीको भी नहीं भेजा जायगा.

४ नमूना चाहनेवाले)॥ आध आनेका टिकट भेजकर मंगा सक्ते हैं-

चिट्ठी व मनीआर्डर भेजनेका प . –

गोपालदास बरैया सम्पादक.

जैनमित्र, पो० कालबादेवी बम्बई—

३ भारी: भ्रमभूरि हिय भ्रमत भयावने जातिन्ह हर लेखन सों चूरके घटावेगो । वृहत विपक्षी पक्षी, सन्मोह अन्धकार के—

चौथे भाग बहुत बखेर वाहन हेतु, घनघरो निघुघजन पाजन पठावेगो । अंधकार अविचार अबुधी, अबोध आदि,

कर्नाटक प्रिंटिंग प्रेस, फ़ोरबाड़ी, मुंबई.

प्राप्तिस्वीकार.

१ जैनमित्रका मूल्य.

१।) भाई छीतरमल हजारीलालजी. २०९
१।) ,, पीताम्बरदास मोतीचन्दजी आलंद ५३१
२॥) ,, गोमाजी चंपालालजी बड़वानी. ३९३
१।) लाला मूलचन्दजी तहसीलदार जगदलपुर. २७०
१।) लाला गिरनारी लालजी टहरी. १३
१।) पंचान मूंगावली मा. पंनालालजी बुजुर्ग ४७७
१।) भाई सखाराम लीलाचन्दजी बारामती ५३२
२) लाला हजारीप्रशादजी रईस देहली २४३
१।) लाला बारूमलजी मुरादाबाद. ४०४
१।) ,, वंशीधर झम्मनलालजी कामा ५४
१।) बाबू विश्वंभर सहाय डि. इ. देहरादून ५४
१।) लाला परसादीलाल पटवारी मझोई (मथुरा) ५४२

२ सभासदीका चंदा.

३) सेठ पानाचन्द रामचन्दजी शोलापुर. ६१
३) ,, मोतीचन्द बीरचन्दजी मैंदरगी. ११७
३) ,, नानचन्द पानाचन्दजी कुरुडवाडी १४५
१२) ,, गुलाबचन्द अमोलकचन्दजी आलंद. २२०

३ उपदेशक भंडारकी सहायता.

५) बाबू धंनालाल छगनमलजी बाकलीवाल दुर्गापुर—(बंगाल)

४ श्री सम्मेद शिखरजीकी सहायता.

२५) श्री समस्त पंचान महाराजपुर (सागर)
२५) श्री जैन पंचान बजरंगगढ़
५०) श्रीमान् सेठ गोपालसावजी बजरंगगढ़.
६३॥।) श्री समस्त पंचान जैन किणी
३५) श्री समस्त पंचान जैन वर्धा
४२॥=) श्री जैन सभा छिंदवाडा.
५) लाला मूलचन्दजी तहसीलदार जगदलपुर
१) ,, मक्खूलाल रूपचन्दजी ,,
३२॥।) श्री समस्त पंचान जैन हरदा
१२५) श्री समस्त पंचान जैन कानपुर.
४०) ,, ,, ,, जैन सवाई माधौपुर
३८॥=) ,, ,, ,, रियासत पन्ना
२२) ,, ,, ,, ,, रामपुर.
१८) ,, ,, ,, मुरादाबाद
५) श्री भिकाजी जोतीबा सेठ भिडाले, पेन
१) भाई नन्हेंलालजी जैन सुरई
१) ,, दयाचन्द प्यारेलालजी ,,
१) ,, मुन्नालालजी गुरहा ,,
१) ,, दयाचन्दजी जैन ,,
१) ,, हजारीलालजी ,,

अवश्य पढ़िये !

हमारी सभाके सहायक महाशयो! ऊपर आप देख रहे हैं. कि असोज वदी १ से इस सभाके मुख्य अंगरूप प्रबन्ध खाता और उपदेशक भंडारमें केवल २६) की प्राप्ति हुई है. यदि इसी तरह आप लोगोंकी ढील रही तो भगवानही जानें आपके इस प्रमादका क्या फल हो!

भाईयो! हम आशा करते हैं. कि आप अब की बार यह हमारी प्रार्थना पढ़कर बाकी रुपया धड़ाधड़ भेजनें लगेंगे. जिससे यह आपका नवारोपित धर्मवृक्ष अहर्निश पुष्ट होता रहै. और आपकी कीर्ति चारों ओर फैले.

निवेदक
हुम्मड़ दिगम्बर जैन प्रान्तिक सभा
बम्बई

शोलापुरमें बिम्बप्रतिष्ठा

और

दिगम्बर जैनप्रान्तिक सभा बम्बईका द्वतीय वार्षिक अधिवेशन.

बड़े भारी हर्षका विषय है कि, बम्बई प्रान्तके प्रसिद्ध धर्मधनसम्पन्न शोलापुर नगर परमप्रतिष्ठित प्रभावनांगपरायण श्रीमान् सेठ गांधी रावजी नानचन्दजीने अनंत व्रतोद्यापन व बिम्बप्र तिष्ठाका एक वृहनोत्सव करना विचारा है, जिसकी शुभ मुहूर्त माघ सुदी पंचमी नियत हो चुक है. यह उत्सव कैसे समारोहके साथ होगा. इसका अनुमान तो अभीसे नहीं हो सक्ता. परन्त साज समाजोंसे कह सक्ते हैं, कि निस्सन्देह यह मंगल कार्य अन्य मेला प्रतिष्ठाओंसे निरालीह शोभा धारणकर असाधारण आनन्ददायक होगा. उक्त सेठजी साहिबने एक कलसे चलनेवाल घोड़ोंका रथ भी खुर्जेवालोंके रथके नमूनेका बनवाया है. जो कारीगरी और शोभामें कहीं उससे भी बढ़चढ़कर बन गया है, और जिसका विशेष अनुभव पाठकोंको एक बार देखनेहीसे होगा.

दूसरा हर्ष यह है कि, हमारी बम्बई प्रांतिक सभाका द्वितीय वार्षिकोत्सव भी इसी अवसरपर होगा, इसकी अनुमानिक सूचना यद्यपि गताधिवेशनकी रिपोर्टके अन्तमें दी जा चुकी है. कि कदाचित् आगामी अधिवेशन शोलापुरके उत्सवमें होगा. परन्तु वह सन्देह सहित थी, जिसका निश्चय उक्त प्रतिष्ठाधिकारी सेठजीके आग्रहपूर्वक आमंत्रणद्वारा (जो अभी प्रान्तिक सभाके अधिवेशन होने हेतु आया है,) अब पूर्ण रूपसे हो गया है. और अब निश्चय करके अधिवेशन यहांही होगा. अधिवेशनमें क्या २ होगा, यह हमारे सभासदों तथा प्रतिष्ठित पुरुषोंसे कहनेकी आवश्यक्ता नहीं होगी तथापि इतनी सूचना करना अत्यावश्यक है, कि सम्पूर्ण सभासदों व धर्म प्रेमी पुरुषोंको चाहिये कि समयानुसार जो २ प्रस्ताव इस सभासे पास होना आवश्यक है, वह शीघ्रही तयार करके १५ दिवस पहिले हमारे पास भेज देवें. ताकि उन्हें हम छपाकर सम्मतिकेलिये प्रकाश कर देवें, और उत्सवमें अवश्यही पधारें. तथा जलसेकी शोभाको बढावें. आशा है कि हमारे प्रेमी पाठक इस अवसरके दर्शनीय उत्सवको हाथसे नहीं खोवेंगे, और हमारी प्रार्थनाको स्वीकार करेंगे.

सम्पादक.

सम्पूर्ण तीर्थक्षेत्रोंके प्रबन्धकर्ताओंको आवश्यकीय सूचना.

विदित हो कि तीर्थक्षेत्रोंके हिसाबके फार्म हम आठ दिनके बाद यहांसे सम्पूर्ण तीर्थक्षेत्रोंके प्रबन्धकर्ताओं व मुनीमोंके पास भेजेंगे. इसमें पहिलेहीसे उन्हें सूचना दी जाती है कि कार्तिक सुदी १ सं० ५७ से आसोज वदी अमावास्या सं० १९५७ तक. (कार्तिक सुदी १ सं० ५७ से कार्तिक वदी अमावस्या सं० १९५८ (मालू) तक का हिसाब साफ २ पहिलेहीसे तयार कर रक्खें; ताकि हमारे फार्म पहुंचतेही वह वापिस भरकर भेज सकें. आशा है कि संपूर्ण प्रबंधकर्तागण हमारी प्रार्थनापर देंगे. हिसाब सब व्योरेवार मयरोकड़ बाकीकी तफसीलके आना चाहिये जिससे ठीक २ समझमें आ सके. गतवर्ष कई स्थानोंके भाईयोंने जमा और खर्चही की केवल रकमें लिखी थीं. जिससे कुछ भी समझमें नहीं आ सक्ता था. ऐसा न होना चाहिये. अब की बार फार्म भी बड़े २ छपाये गये हैं. जिसमें व्योरेवार लिखनेको पूरी २ जगह है इति.

निवेदक,

शा. चुन्नीलाल झवेरचन्द
मंत्री, तीर्थक्षेत्र.

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥
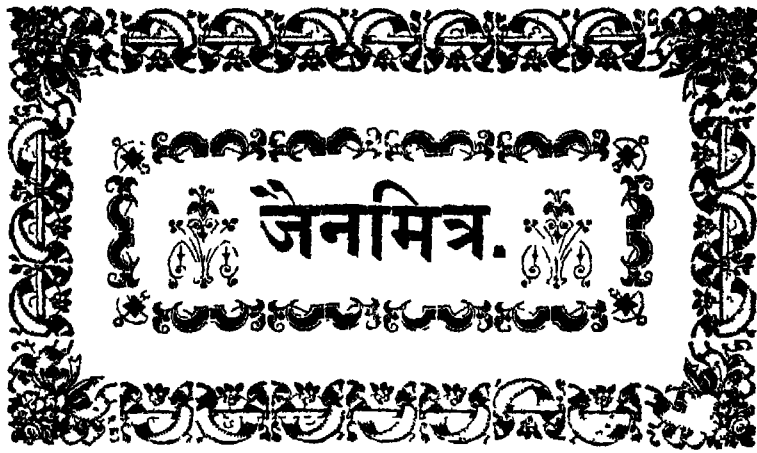
जगत जननहित करन कह, जैनमित्र वरपत्र ॥
प्रगट भयहु-प्रिय ! गहहु किन ?, परचारहु सरवत्र ! ॥ १ ॥

चतुर्थ वर्ष } कार्तिक, सम्बत् १९५९ वि. { २.

दानवीर.

भारतकी रत्नगर्भा वसुन्धरामें हजार हां दानी होगये हैं. जिनकी पुन्य संचारणी पवित्र कथा पुराण इतिहासोंमें हमारे धर्मात्मा भाई पढ़कर आश्चर्यान्वित हो वर्तमानसमयमें उनसरीखे पुरुष रत्नोंका सद्भाव स्वप्नमें भी नहीं देखते. परंन्तु आज बम्बई नगरीके सुप्रसिद्ध पारसी मिष्टर नौरोजी माणिकजी वाडिया, सी. आई. ई. की महादानलीलाको सुनकर वह अवश्यही इस कुटिल कलिकालके अन्ततक भी धर्मका प्रादुर्भाव नही होगा. इस बातको सब तरहसे स्वीकार करेंगे.

अहा ! इस पुरुष तिलकने जो दानशूरता दिखलाई है, वह निश्चयही कंजूस मनहूसोंके शरीरको झुलस देनेवाली और उदारजनोंके हुलासको अपरिमित कर देनेवाली है. यह एक या डेड़ करोड़ रुपयेके दानका साहस जिसके व्याजसे सर्व जातिके, सर्व धर्मके, सर्व देशके, बूढ़े, अपाहिज, दीन, दुखी, लोगोंका पक्षपात रहित पालन पोषण होगा; आखोंमें एकदम चकाचोंधी लगा देनेवाला है. तिसपर भी यह दान उनकी सम्पतिके किसी हिस्सेका नहीं वरन सर्वस्व है. संसारमें ऐसेही उदार जनोंका जीवतव्य सफल और सत्पुरुषोंकर प्रशंसनीय है.

हमारी प्यारी जातिके शिरोमणि धनाढ्य महाशयो ! आप भी चेतो ! और इस दानशीलका नाम हृदयमे धारण करकेही पुन्य लाभ करो.

द्वतीय जातिधर्मोद्धारक.

कलकत्ताके श्रीयुत लाभचन्द माणिकचन्दजी जोहरी स्वेताम्बर जैन हैं. यह भी हमारी जातिके धनिकजनोंके अनुकरण करने योग्य सच्चे धर्मात्मा है. इन्होंने एक नये ढङ्गका स्कूल खोला है. जिसमें जैन और हिन्दू बालकोंको अंगरेजी हिन्दी संस्कृत पढ़ानेके सिवाय हीरामोतीके जेवर

बनाने और जवाहिरात तैयार करानेकी व्यवसाय शिक्षा दी जावेगी. इससे शिक्षित विद्यार्थियोंको नौकरीका मुंह न ताककर जीविका सम्पन्न होनेमें मारे मारे न फिरना पडेगा. ऐसे ऐसे अन्य दान वीरोंके चरित्र सुनकरही कहना पड़ता है, कि, हमारी जाति जातिधर्मोद्धारक पुरुषोंसे प्रायः करकें रहित है.

तृतीय दानी.

मेरठके लाला नानकचन्दजी मरते समय अपनी सम्पूर्ण जायदाद, बीसगांव, १०३ मकान २७ हजारकी जङ्गम मिलकियत और ४४,४००, रुपया इस प्रकार दानकर गये हैं. कि, एक चतुर्थांश मध्यम स्थितिके गरीब सफेद पोशों और विधवाओंके लिये. एक चतुर्थांश सदावृतमें और आधा मेरठ शहरमें एक संस्कृत अंग्रेजी स्कूल स्थापन करनेके लिये.

धन्य! धन्य! धन्य! जन्म लेकर सबही मरते हैं. परन्तु ऐसेही दानी जीवोंका जन्म लेना सार्थक है, ऐसे सज्जनकी आत्माको सद्गति प्राप्त हो, हमारी यही इच्छा है.

विविध समाचार.

शोकजनक मृत्यु—बड़नगर जैन पाठशालाका सर्वोत्तम विद्यार्थी केशरीमल अचानक कालके गालमें जा फंसा. जिसके शोकमें वहांकी सभाका एक अधिवेशन न हो सका. उक्त विद्यार्थी अत्यन्त परिश्रमी और होनहार विद्वान था. मृत्यु समय दुर्निवार है.

मेला श्री जम्बू स्वामी—मथुराका मेला २ से नवमीतक सानन्द पूर्ण हुआ. जिसमें जैन महासभा व उसकी सहचारणी जैन सभाओंके जल्से धूमधामके साथ हुए. विशेष आनन्दकी बात यह है कि तीर्थक्षेत्र कमैटी स्थापित हो गई. जिसके सविस्तर समाचार आगामी अंकमें प्रकाशित किये जावेंगे. महासभाकी व महाविद्यालयकी नियमावलीमें हेर फेर हुआ है. वह तथा इस वर्ष जो नवीन प्रस्ताव पास हुए उन सबोंका व्योरा पाठकोंको सहयोगी जैनगजटके द्वारा विदित होगा. हम भी आगे प्रकाशित करेंगे.

दिवालीका त्योहार—बम्बईमें हिन्दुओंके अन्यनगरोंकी अपेक्षा यह त्योहार अधिक बढ़ चढ़कर होता है. कारण यथार्थमें बम्बई व्यवसायी वैश्योंकी वस्ती है. और यह पर्व भी वैश्योंका है. जिसे सब लोग स्वीकार करते हैं, परन्तु इसकी असल बुनियाद क्या है, उससे हमारे भाई वंचित न होंगे.

इस दिनसे जैनियोंका सम्वत् (वीरनिर्वाण सम्वत्) बदलता है. कारण महावीर स्वामीका मोक्ष इसी कार्तिक कृष्णा १५ के प्रात. होनेके प्रथम हुआ था. जिसका आनन्द दिगदिगन्तमें व्याप्त हो गया था. और आज लों प्रतिवर्ष सर्व जातियोंमें मनाया जाता है. यद्यपि लोगोंने इसे अपनायकर जुदी २ गढन्तें गढ़ ली हैं. परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि यह महापर्व जैनियोंका ही है.

विषयी लोगोंने इस शुभ दिनके उत्सवमें जुआ खेलनेकी कैसी बुरी प्रथा चला दी है, जो सप्त दुर्व्यसनोंका मूल कारण है. और जिसका प्रचार बड़ी तेजीके साथ नीच जातियोंके सिवाय उत्तम कुलोंमें भी बढ़ रहा है. यह बड़ा कलंक

है. हम आशा करते हैं कि हमारे जैनी भाई इस दुष्प्रथासे दूर रहेंगे.

दूसरी प्रथा आतिशबाजीकी है. जो अधिकताके कारण लोगोंको प्रत्यक्ष हानि पहुंचाती है. इसमें प्रतिवर्ष कई आदमी जलकर मरे सुने जाते हैं. परन्तु तो भी हमारे भाई इस हिंसक कार्यको नहीं छोड़ते.

अहमदाबाद कांग्रेस—इस कांग्रेसके साथ इस बार जो प्रदर्शिनी होनेवाली है, उसकी बम्बई प्रान्तके राजा लोग बहुत कुछ सहायता कर रहे हैं. प्रदर्शिनी १५ दिसम्बरको श्रीमान बड़ौदा नरेशके हाथसे खुलेगी. रेल्वे कम्पनियोंने माल भेजनेवालोंके सुभीतेके लिये भाड़ा भी कम कर दिया है. प्रदर्शिनी माल दिखलानेवालोंसे १) फीस लेगी, जिनकी कारागरी बढ़कर होगी, उन्हें इनाममें तमगे और सर्टिफिकट मिलेंगे.

विलायतके भिखारी—विलायतके धनवानोंने भिखारियोंसे तङ्ग आकर ऐसा कानून बनवा दिया है. जिससे लंडनमें कोई भीख न मांग सके, वहांकी धनाढ्य गवर्नमेंट और धनवान प्रजा भीख मांगना बन्द करसकी है. किन्तु भूखोंसे मरना उससे बन्द नहीं हुआ है, गतवर्ष केवल लंदन नगरमें ४० मनुष्य क्षुधासे मर गये हैं, जब ब्रिटिश साम्राज्यकी राजधानीमें यह दशा है, तो न मालूम भिखारी भारतमें कितने आदमी भूखसे मरते होंगे.

अमेरिकन रूईका पाक—इस साल्में एक करोड़ पन्द्रह लाखसे बीस लाख तकका होगा. ऐसी रिपोर्ट मिस्टर नील ब्रदर्सकी प्रसिद्ध हुई है.

जयकुमार देवीदास चवरे,
बी. ए. लिखित.

(जैनबोधकसे उद्धृत)

कलिकी महिमा
किंवा
कलियुगी पांडित्य.

हाय! हाय! इस कलियुगी राहुने हमारे जैनी भाइयोंको पूर्ण प्रकार ग्रस लिया है! हमारी बुद्धि उसीके प्रसादसे पूर्ण रसातलको पहुंची है! हमें अपने प्राचीन शास्त्रोंका अपमान करके कलियुगी पंडितोंके मनसोक्त वचनोंपर भले प्रकार भरोसा करना, ऐसा चारों ओरसे एकसारखा उपदेश मिलता है. व उसे हम अच्छी तरहसे सुनते हैं. यह केवल कलिकी महिमा नहीं है क्या?

उपर्युक्त उद्गार हमारे द्वारा निकलनेका कारण नीचेलिखी सविस्तर हकीगतसे वाचकजनोंके ध्यानमें आवेगा.

हमारे प्रसिद्ध जैनमित्र पत्रके अंक ८ में श्रीयुत भाई दरयावसिंहजीके किये हुए प्रश्नोंका पाठकोंको स्मरण होगा. व उस प्रश्नोंपर अंक ९ में **पंडित शिवशंकर शर्मा** (बड़नगर के दिये हुए उत्तरोंका भी ध्यान होगा; हमारे प्रसिद्ध पंडितजीने. "श्री जिनेश्वरके पंचामृताभिषेक करनेसे निगोद गति प्राप्त होती है" ऐसा मनोक्त विधान विना विचारे ठोक दिया है. उक्त महाशयका स्वतः पंडित होना ठीक है. परन्तु उनमें पांडित्य कितना है, यह उक्त विधान द्वारा व उनके आधारभूत लिखे हुए श्लोकोंके

अशुद्धपनेसे स्पष्ट व्यक्त होता है. उन्होंने पंचामृत अभिषेक नहीं करना इसके विषय दो तीन प्रमाण दिये हैं. परन्तु एक भी श्लोकमें पंचामृत अभिषेक नहीं करना व करनेसे निगोद गति प्राप्त होती है. ऐसा लिखा हुआ नहीं दिखता है. तो इससे हमारे पंडितजीका पंचामृताभिषेक अशास्त्र है, और ऐसी भूलका आशय उसमेंसे निकालकर लोगोंको फँसाके निगोद मार्ग की ओर पहुंचानेका प्रयत्न किया है, ऐसा ज्ञात होता है.

अब पंचामृतअभिषक सशास्त्र है. इसके विषय मुझे जो एक दो प्राचीन शास्त्रोक्त प्रमाण मिले हैं. वह संशय निवारणार्थ नीचे देता हूं.

प्रमाण १—भगवान उमास्वामीकृत श्रावकाचार.

प्रकरण ३ रा—(सम्वत् १०१-१८)

॥ शुद्धतोयेक्षु सर्पिर्भिर्दुग्धदध्याम्रजै रसैः ॥
सर्वौषधिभिरुच्चूर्णैर्भावात्संस्नापयेज्जिनान॥१॥

अर्थः—शुद्धजल, इक्षुरस, घृत, दुग्ध, दही, आम्ररस व चूर्णकी हुई सर्वौषधी, इन पदार्थोंमे भक्तिपूर्वक जिनेश्वरका अभिषेक करना.

प्रमाण २ रा—देवसेनकृत भावसंग्रह पूजाधिकार (देवसेन यह अर्हद्बलिके शिष्य सम्वत ३६ में हुए है)

॥ ततःकुम्भं समुद्धार्य तोयचूतेक्षु सद्रसैः ॥
॥ सद् घृतैश्च ततो दुग्धैर्दधिभिःस्नापयेज्जिनान ॥ २ ॥

अर्थः—जल, आम्ररस, इक्षुरस, इससे भरे हुए कलश पहिले ढोलकर पश्चात् उत्तम घृत, दूध व दही इसमे जिनेश्वरका अभिषेक करना.

इस प्रकार और भी बहुतसे प्रमाण हैं. परन्तु मुझ अज्ञको जितने मिले वह पाठकोंके सन्मुख सादर उपस्थित किये हैं.

२ हमारे पंडितजी ऐसा लिखते हैं कि पंचामृताभिषेककी प्रवृत्ति काष्ठासंघसे हुई है. इसपर मेरा ऐसा कहना है. कि भगवान् उमास्वामी व देवसेन यह क्या काष्ठासंघ पंथके थे? ऐसा वह यदि शास्त्रोक्त प्रमाणोंसे सिद्ध कर दिखावेंगे तो ठीक होगा.

अब हमारी अपने मुझ जैन बांधवोंसे ऐसी प्रार्थना है. कि ऊपर लिखे पंडितजीके लेखोंपर तिलमात्र विश्वास न करके प्राचीन शास्त्राधार देख किसी भी कार्यका विधिनिषेध करें; पंचामृत अभिषेकके सम्बन्धमें ऊपर पंडितजीके वचन यदि हम सत्य मानेंतो भगवान् उमास्वामी व देवसेन इन आचार्योंके वचन असत्य हैं, ऐसा कहना पड़ेगा; उमास्वामी व देवसेन यह उक्त कलियुगी पंडितोंकी अपेक्षा कितने विद्वान थे, यह पाठकोंको समझाना न पड़ेगा; इससे उन प्राचीन आचार्योंके वचनोंको अग्राह्य मान हमारे पंडितजीके वचन ग्राह्य माने. यह कौनसा बुद्धिमान मनुष्य स्वीकार करेगा?

दक्षिण प्रान्तमें पंचामृत अभिषेकका सर्वत्र प्रचार है. इससे वहांके लेकोंमें पंडितजीके मनसोक्त लेखोंसे संशय उत्पन्न होकर विनाकारणकी गड़बड़ न होवे ऐसा जान यह लेख लिखनेका मैंने प्रयत्न किया है. मैं अल्पज्ञ हूं, इससे कदाचित मेरा लिखना खोटा ठहरे. परंतु उमास्वामी ऐसे प्राचीन आचार्योंके वचन असत्य माननेका साहस मैं नहीं कर सक्ता. इस पंचामृत अभिषेक सम्बन्धमें कोई

उमास्वामी सरीखे आचार्योंके ग्रन्थोंमे यदि निषेध लिखा हुआ, किसीको ज्ञात हो. तो वह उसे अवश्यही प्रसिद्ध करावें. जिससे हम आनन्दपूर्वक स्वीकार करें व अपने लिखे हुए लेखको सफल समझ संतोषको प्राप्त होवें. केवल मनसोक्त विधान मात्रोंपर विश्वास करनेका हम साहस नहीं करते.

इसप्रकार हमारा अपने सर्व जैन बांधवोंसे अन्तमें यह कहना है कि, किसी भी विषयका कार्याकार्य विचार शास्त्रिक प्रमाणोंसे करना चाहिये. केवल कलियुगी पंडितोंके सुन्दर २ भाषणोंमें फँस प्राचीन आचार्योंके शास्त्रोंके अपमान करनेका साहस न करना. इससे अधिक विद्वानोंका अधिक लिखनेकी आवश्यक्ता नहीं है. अन्तमें तकलीफ देनेकी क्षमा मांगता हूं.

नोट—यह लेख जैनबोधक पत्रसे हिन्दीमें अनुवाद कर लिखा है, इसके आगे उक्त लेखकका लिखा हुआ **कलियुगी पांडित्याचा कलश** भी अनुवादित कर प्रकाशित किया जायगा.

बताशेमें कुनैन.

प्रिय वाचक गण! उपर्युक्त शीर्षक पढ़कर आप विस्मित तो अवश्यही होंगे. कि लेखक वैद्य बनकर यह साम्प्रत औषधि किस रुजाक्रान्त व्यक्तिको बतानें चला है, परन्तु नहीं आज ऐसाही अवसर आनके उपस्थित हुआ है. जिससे यह पाश्चिमीय भाषाका (Quinine) कीनाइन और देशीय बताशाका डाक्टरी एवं वैद्यक प्रयोग बनाकर संदेह ताप संतप्त मानवोंको पिलाना अभीष्ट समझा गया है. यद्यपि यह अति प्राचीन व समीचीन प्रयोग पूर्वाचार्योंने अपनी निर्मल बुद्धिद्वारा प्रस्तुत किया था. तथापि आधुनिक मानवगण इसपर विश्वास लाना पाप समझते हैं. आज इसीके विषयमें लेखनी कुछ लिखनेको उत्सुक हो रही है! आशा है कि इसके प्रयाससे यदि लाभ न होगा तो कुछ हानि भी नहीं होगी.

पाठको! आप लोग बालकोंके पढ़ानेके लिये और पठित विषयकी धारणा कालान्तरलों रखनेके लिये कितने प्रयत्न करते हैं. यदि रटानेमे कार्य चलता न दिखेगा तो आप उसे पाटीपर अंकित करावेंगे. (कारण पढ़नेकी अपक्षा लिखनेसे १० गुणा ध्यान जमता है.) और समय २ पर मनन करावेंगे. इसके अतिरिक्त यदि कोई गहन विषय आन पड़ेगा. जो बालककी बुद्धिमें नहीं आ सक्ता. उसे उदाहरणोंद्वारा समझावेंगे. जैसे सिंहके आकारसे अनभिज्ञ विद्यार्थीको उसका अनुभव करानेके लिये. चतर अध्यापक बिल्लीकी तुलना कर समझा देता है. औरभी इतिहासादि विषय किस्सा कहानियोंकी रीतिपर कहलाकर बालकोंको चिरस्मरणीय करानेका प्रयत्न करते हैं. ठीक इसही प्रकार कठिन विषयोंको सहजही बुद्धिमें ठँसानेको कौतुक निर्म्माण किये गये हैं. देखिये! साहित्य सृष्टिमें काव्य दो प्रकारके निर्मित किये गये हैं. १ श्रव्यकाव्य (सुनने योग्य काव्य), २ दृश्यकाव्य (देखने योग्य), जिनमेंसे दृश्यकाव्यके १० भेद हैं:—नाटक, प्रकरण, भाण, प्रहसन, डिम, व्यायोग, समवकार, वीथि, अंक,

ईहामृग आदि. इनमेंका प्रथम भेद नाटक है. जिसकी परिभाषा ऐसी है. "नाटयति पात्रानिति नाटकः" अर्थात् जो काव्य पात्रोंको नचावै, सो नाटक.

नाटक यद्यपि नवोंरस संयुक्त होता है परन्तु शास्त्राकारोंकी प्रथानुसार उसमें प्रधान रस दोही होते हैं. एक शृंगाररस, दूसरा बीररस. अर्थात् कोई नाटक तो शृंगाररसाश्रित होता है. और कोई बीराश्रित. तथा नायक, नायका, उपनायक, उपनायका, विट, विदूषक, सचिव आदि पात्र इसमें होते हैं. इसके अतिरिक्त इस विषयके बहुतसे अंग है. जो लेख बढ़ जानेके भयसे त्याज्यकर मैं अपने अभीष्टकी ओरही झुकता हूं.

"नाटक" करनेका प्रयोजन क्या है? तथा उसका फल क्या है? यह सुननेको पाठकोंका चित्त डांवाडोल होता होगा. सुनिये! एक नाटक तो पौराण इतिहासादि ग्रन्थोंके आधारसे प्रस्तुत किये जाते हैं. तथा एक अभिष्ट कल्पित विषयपरसे, और यह प्रथा अति प्राचीन ऋषियोंसे चली आती है, मतान्तरोंको छोड़ आज हम जैन नाटकोंकेही समालोचना करते हैं. जो हमारा वक्तव्य विषय है.

हमारे परम पूज्य प्राचीन प्रज्ञाचार्योंसे यह नाटकादि बनानेकी प्रथा चली आ रही है. उनके बनाये हुए. **नाटक समयसार[1], ज्ञानसूर्योदय[2] नाटक, जयकुमार[3] सुलोचना नाटक, ज्योतिप्रभाकल्याण[4] नाटक,** अंजना पवनञ्जय नाटक, मदन पराजय नाटक, आदि अलभ्य ग्रंथ हमारों वर्षोंके बनाये हुए मौजूद हैं. और उनमें ज्ञान, वैराग्यादि विषयोंके ऐसी छटा बांधी गई है कि एक बार प्रत्यक्ष देखनेही, प्राणी अपने भावोंकी शुद्धताके अनुसार खेले हुए कौतुकके फलकी ओर झुक. अनुकरण करनेमें पीछा कभी नहीं करता. क्या आप ज्ञानसूर्योदय नाटकको एक बार देखकर आत्माका स्वरूप पहिचान अपने भावोंकी शुद्धता न करेंगे? क्या आप जयकुमार सुलोचनाके विमल चरित्रको देख पुन्यकी महिमासे मुग्ध हो, पुन्य करनेके सम्मुख न होवेंगे? क्या आप, अंजनासुंदरीके पूर्वकृत कर्मोंका फल वियोग दुःख देखकर अपने किये हुए कर्मोंका प्रायश्चित न करेंगे? अथवा आगेके लिये भयभीति न होंगे? क्या आप मदन पराजय देखकर मदन (कामदेव) पराजय नहीं कर सकेंगे? नहीं नहीं. मेरी बुद्धि जहांतक पहुंचती है, कह सक्ता हूं. आप अवश्यही नाटकोंसे फल प्राप्त कर सकेंगे, और यह बात भी मैं मुग्धकंठसे कह सक्ताहूं. कि आप जिस नाटकको एकबार देखेंगे चाहे वह कैसेही कठिन विषयका क्यों नहो. एकबार देखनेपर चिरकालतक अपनी धारणाशक्तिमें धारण किये रहेंगे. और इस रंजायमान बोधयुत कौतुकके देखनेकी मूर्खसे मूर्ख चाहना करेगा. भला! कहिये तो सही आपके ज्ञानसूर्योदय नाटक सम्बंधी आत्मा, तथा रागद्वेषादि भावोंके वर्णन होते शास्त्रसभामें कौन नहीं ऊंघता (सोता)? और घंटाभर पीछे सुने हुए कथनको कौन रंचमात्र बतानेको तत्पर होता हैं? और वही विषय नाटकरूप खेले

[1] कुंदकुंदाचार्यने सम्वत् १०१ में बनाया. [2] वादिराज आ० नें १५०० में. [3] हस्तिमल्लाचार्यने १०० में. [4] इसमें आदिनाथके भवान्तरों "कल्याण" के जीवकी कथा है.

जानेसे सबके हृदय पटलपर कितने काल तक अंकित रहता तथा क्या असर करता हैं? तो पाठको! अब किंचित हमारे शीर्षककी ओर दृष्टि ले जाइये. क्यों? यही युक्ति हमारे विद्या-सागर आचार्योंने की है न! कि—अज्ञानरूप तापसे पीड़ित पुरुषोंको कौतुकरूप बताशेमें सिद्धान्तरूप क्वीनाइन रख पान कराते हैं. देखिये "बताशेमें कुनैन" यह लिखना. अब हमारा हमारा व्यर्थ तो नही जंचता.

"संसार मुकुर (आइना) के सदृश हैं. उसमें जो पुरुष जैसा होता है, अपनेको वैसाही प्रतिविम्बित देखता है." किसी बुद्धिशालीकी यह उपर्युक्त युक्ति सर्वथा सत्य जंचती हैं. ठीक इसी प्रकार संसारके नाटक ऐसे गुणसम्पन्न कौतुकको देखकर मनुष्य अपने भावोंके अनुकूलही शिक्षा प्राप्त करता है. यदि पुरुष रसिक और विषयलोलुपी है. तो वह पात्रोंके रूपलावण्य हावभाव कटाक्षादिकोंमेंही मुग्ध हो अपना अभीष्ट पोषण करेगा. विरति (वैरागी) सब देखा अनदेखा सबसुना अनसुना कर केवल एक वैराग्य सागरही नाटकको देखकर अभीष्टमें दृढ़ होगा. वीर पुरुष पात्रोंकी शूरता व साहस देखकर अपने भुजदंड फरकाकर बांकी मूछोंको मरोरके औरभी बांकी करेगा. कारुणिक (दयावान्) अंजना सुन्दरी ऐसा विलाप सुनकर नेत्रोंसे चार बूंदे टपका कर भावोंकी शुद्धता करेगा. इसही प्रकार औरभी अपने २ अभीष्टकी ओर झुककर शुद्धाशुद्ध परिणाम करेंगे. परंतु यह सबही सदा चरित्ररूप स्मरण रखनेको नही भूलेंगे. यह ऊपर सिद्ध कर चुके हैं. अब विचारना चाहिये. हमारे आचार्योंके परिणाम कैसे थे? उनका चारित्र, उनका वैराग्य, उनका ज्ञान, उनका एकाग्र ध्यान, किस सीमा पर था. और फिर उन करके उत्पन्न जो जैन नाटक वह कैसे होंगे. उनमें यह उनके अभीष्ट विषय कैसे कूट कूटकर न भरे होंगे. अवश्यही सोचनेसे चित्त प्रमुदित हो जाता है. और बार २ कहनेको उद्धत हो जाता है कि हमारे नाटकोंसे हम कभी मलिन परिणाम न करेंगे! कभी विषयपोषक न बनेंगे! कभी आत्मसुखसे वंचित न रहेंगे!

हमारे आचार्य अवश्यही बताशामें कुनन देनेकी भांति यह कौतुकमें ज्ञान कुनैन खिलानेका प्रयोग करना छोड़ गये हैं. धन्य! धन्य! धन्य!

अब किंचित आधुनिक अनभिज्ञाचार्य्योंकी ओर देखिये. वह बताशामें खासी मदोन्मत करनेवाली अफीम दे रहे हैं. तथा अपनेको इसीमें कृत्यकृत्य समझ रहे हैं. और हमारे कितने एक भाइयोंका उन्हींके ऊपर कटोर कटाक्ष है. वह कदाचित इसप्रकार हो.

आधुनिकोंकी कृपासे नाटकोंने संस्कृतसे देश भाषाका रूप धारण किया है. फिर देशभाषा भी ऐसी वैसी खिचड़ी नहीं. पूरीमिट्टी की गई है. आचार्योंके सब सुभग अभिप्राय बदलकर विषयपोषी बना दिये गये हैं. उनका वैराग्य श्रृंगार होगया है. उनका करुणारस बीभत्स होगया है. उनका वीर कायर होगया है. उनका लोकप्रिय शब्दालंकार अर्थालंकार केवल भड़ौआ संग्रह बन गया [illegible] रांश शिक्षासम्पन्न नाटक अदा दिखलानेवाला वेश्यानृत्य ऐसा दर्श होकर नाशक कहने योग्य व्यवसाय (रोजगार) बन गया है.

तो फिर बताशामें अफीमका प्रयोग कहना कदापि अनुचित नहीं हो सक्ता.

साम्प्रतमें थोड़ीसी बुद्धि पाकरही मनुष्य आकाशसे ऊपर अपना मस्तक देखने लगता है. तो फिर कविता और भाषाकी टांग तोड़ना उन्हें क्या कठिन है. वह तो नाटकको एक परस्पर संभाषण संयुक्त बालकोंका खेल समझ लेते हैं. और चट कलम चलाकर "अनौखा नाटक" "विचित्र नाटक" ऐसा नाम रख प्रेसके हवाले कर देते हैं फिर यदि हमारे भोलेभाई उसे ग्रहण करके खेलने लगे, तो उनका दोषही क्या हो सक्ता है.

अब लेखको पूर्ण करनेके प्रथम हम पाठकोंसे क्षमा मागते हैं. और विशेषकर उनसे जो ऐसे महत्कार्योंके करनेवाले हैं. कि यदि कुछ लेखमें अरोचक वाक्य लिखे गये हो. तो मुझे अपना जान उन्हे चित्तमें न लावें. तथा आगे ऐसे वृहत् कार्योंको वे समझे बूझे उठाकर उपहासास्पद न होवें. इति.

सज्जनोंका दास,

नाथूराम प्रेमी.

प्रांतिक उपदेशककी रिपोर्ट.

पूर्वांकसे आगे.

जेजन आलसमें परे, वृष न लखहिं लवलेश।
चाबुक प्रेमी चारु तिन्हें, चेतावत उपदेश ॥

९ सितंबरको मुम्बयी आकर उपस्थित हुआ. शनिवारकी प्रबन्धक सभामें अपने दौरेकी षट्माही व्यवस्था सुनाई. विचारक महाशयोंने यथा योग्य सम्मतियां प्रगट की. दशलक्षणीभर यहां ही रहा.

ता. २६ को कुरुडवाड़ी आया. सेठ माणिकचन्द लक्ष्मीचन्दजीके मकानपर टहरा. रात्रिको "आत्मज्ञान" विषयपर २० भाइयोंके सभामें व्याख्यान दिया. जाना गया कि यहांके भाइयोंपर उपदेशका असर हुआ. कारण कई स्त्रीपुरुषोंने शक्त्यनुसार वृतोपवासादिकी प्रतिज्ञा ग्रहण की.

ता. २७ को बार्सीटौनमें सेठ अनंतराज पांगुलजीके यहां उतरा. सभा मंदिरजीमें हुई. अनुमान ६० भाई कृपाकर उपस्थित हुए थे. "परमातमा स्वरूप" पर व्याख्यान दिया, पाठशाला स्थापित करनेका विचार हुआ. उक्त ग्राममें सभा होती है. मंदिर १ श्रावकोंके ९० घर हैं.

ता. २९ से १० तक शोलापुरमें स्वास्थ ठीक न रहनेके कारण रहना पड़ा. यहांसे ११ को आलंद आया. सेठ माणिकचन्द मोतीचन्दजी यहांके प्रतिष्ठित तथा योग्य पुरुष हैं. रात्रिको मंदिरजीमें शास्त्रोपदेश किया. ता. १२ को श्री मंदिरजीमें प्रथम शास्त्र हुए. जिसमें अनुमान १०० भाई उपस्थित हो गये थे. पश्चात् सेठ माणिकचन्दजी मोतिचन्दजीनें मेरे आनेका हर्ष प्रगट कर बम्बई सभाका आभार मनाया. और सभा प्रारंभ की. सेठ नानचन्द सूरचन्दजीने सभापतिका आसन ग्रहण किया. मैंने **सम्यक्त** विषयपर व्याख्यान दिया. जिसमें सप्त तत्व व देव गुरुशास्त्रका स्वरूप तथा सभा व विद्याकी आवश्यक्ता व स्वाध्यायका फल वर्णन किया पश्चात् सभापति साहिबने सभा स्थापन करनेपर अधिक जोर दिया. तिसपर सर्व भाइयोंने जयध्वनि कर अपनी अनुमति प्रगट की. व अन्तमें प्रति शुक्ल चतुर्दशीको सभा होना निश्चय हो गया. कई

भाइयोंने स्वाध्याय करनेकी प्रतिज्ञा लीन्हीं. ११ बजे सभा विसर्जन की गई.

दूसरे दिवस यहांकी पाठशालाकी परीक्षा लीन्हीं. फल संतोषदायक रहा. बालकोंकी दर्ज रजिष्टर संख्या ७९ है. जिसमें ६४ हाजिर थे. अध्यापक १ जैनी और १ ब्राह्मण ऐसे दो हैं. सेठ माणिकचन्द मोतीचन्दजी व नानचन्द सूरचन्दजीकी पाठशालापर अच्छी देखरेख रहती है. आशा है कि इस पाटशालाका प्रबन्ध यदि ठीक २ रहा तो अल्पहीं समयमें बहुतसे विद्वान बन जाना कुछ अशक्य नहीं है परीक्षाके अनन्तर सेठ माणिकचन्दकी ओरसे बालकोंको मिठाई बांटी गई.

तीसरे दिन पुनः सभामें अनुमान १०० जैनी व अन्य मतावलम्बी भाई उपस्थित हुए. सेठ देवचन्द रामचन्द्रजीके सभापतिपनेमें मैंने "सप्तव्यसन" के स्वरूपपर व्याख्यान दिया. जिसके असरसे २० जैनी भाइयोंने तथा श्रीगोविंद सीतारामजी (ब्राह्मण), श्री नबी साहिब सुल्तान साहिब (मुहम्मदी), व फकीरप्पा निद्धप्पा ढोले (तेली) इन तीन भिन्न धर्मी भाइयोंने सप्त व्यसनोंका त्याग किया. इसके लिये उन्हें विशेष धन्यवाद है.

चौथे दिन फिर भाइयोंके आग्रहसे ठहरना पड़ा. सभामें सम्यक्ज्ञानके विषयपर व्याख्यान दिया. कई पुरुष व स्त्रियोंने अष्टमूल्य गुण धारण किये. और विवाहादिमें, घृणित प्रलाप (गाली गान) बंद करनेका प्रण किया.

उक्त ग्राममें १०० घर हूमड़, सेतवाल, कासार, पंचम, चतुर्थ जैनियोंके हैं. १ मंदिर व ९ चैत्यालय हैं. भाइयोंके परिणाम धर्मरोचक हैं. यहांकी पाठशालाका कार्य ध्रौव्यद्रव्य (जो १४९११ रु.के अनुमान हैं.) के व्याज मात्रसे चलता है. पढाईका क्रम परीक्षालयके अनुसार नहीं है. यह त्रुटि है. एक कातंत्र व्याकरण पढ़ सकने योग्य पंडित अवश्य होना चाहिये.

[शेषमग्रे.]

रामलाल उपदेशक.

उत्तम क्षमा.

गाली सुन ग्लानी करें, जगजालीसों आन ॥
देनहारसों पैनहित, करहिं धन्य ! क्षमावान॥

हमारे हितैषी पूर्वाचार्योंने जीवका संसारमें एक मात्र कल्याणकारी **दशलाक्षणिक धर्म** वर्णन किया है. उसका "उत्तम क्षमा" यह प्रथम भेद है. कोई प्राणी कैसाही अपराध क्यों न करें, परन्तु अपने परिणामोंमें सरलता रखकर उसे किसी प्रकार पीड़ा पहुंचानेका प्रयत्न न करना तथा सर्व जीवोंपर समताभाव रख करुणायुक्त रहना यही क्षमा है.

क्षमा भाव न होने देनेका **क्रोध** यह एक मुख्य कारण है. कामादिक छह मनोविकारोंमेंसे क्रोध यह एक जीवका दुर्जय शत्रु है. क्रोध शांतिभाव तथा निराकुलताके नाश करनेको अग्नि सदृश है. स्वर्ग मोक्षदायक सम्यकदर्शनकी प्राप्तिमें बाधकरूप है. दीर्घकालसे संचय की हुई कीर्तिको क्षण मात्रमें नाश कर मनुष्यके सिरपर अपयशकी गठरी रखनेवाला यह एक क्रोधही है. धर्म,

---

१ इसका हिसाब सभाकी वार्षिक रिपोर्टमें प्रकाशित किया जावेगा.

अर्थ, काम, मोक्ष सम्बन्धी विचारोंको अविचारी बनानेवाला क्रोधही है.

क्रोधी मनुष्यका मन हाथमें नहीं रहता. क्रोधी चिरकालकी मैत्री क्षणिकमें नष्ट कर देता है क्रोधी निश्चयकर धर्मको नष्ट करनेवाला है. वह क्रोधके कारण अपनी आत्माका घात करनेको भी नही चूकता. उसे जगह २ पर अनादरपाना मार खाना कुछ कठिन नहीं है.

पाठको! जिस क्रोधने द्वीपायन ऐसे महतपस्वी दिगम्बरी मुनिको भी अपने प्रभावसे नरकगति पहुंचानेमें विलम्ब नहीं किया. तो इतर प्राणियोंके साथ वह कैसा व्यवहार न करेगा. यह आप विचार सक्ते हैं. सारांश क्रोधही सर्व अनर्थोंकी जड़ है.

जो प्राणी सदाशुभगति पानेके इच्छुक है. उन्हें क्षमाकी संगतिही संगत होगी. कारण त्रैलोक्यमें सार संसार समुद्रसे पार करनेमें नौका समान, नरक तिर्यञ्चगतिके घोर दुःखोंसे बचानेवाली श्रेष्ठ क्षमा मुनीश्वरोंकी अति प्यारी जननी है.

क्षमावान् प्राणीकी स्थिति.

जब दुष्ट दुर्भाषण करनेवाला क्षमी पुरुषसे तिरस्कारयुक्त भाषणकर चोर, मूर्ख, लवाड़ आदि नीच वचन कहता है, तब वह अपने मनमें ऐसा विचार करते हैं कि मैंने जब इसका कुछ अपराध कियाही नहीं है, तो मुझे इसके वचन बाण क्यों लगेंगे, इस लिये शांति रहना मेरा परमधर्म है.

दिधले दुःखपरानें उसने फेडूं नयेचि सोसावे ॥
शिक्षा देव तयाला करिल ह्मणून उगीच बैसावें।

मराठीकी इस उक्ति प्रमाणसे मनुष्य शांति पुरुषको त्रास देनेवाला नहीं है. बल्कि ऐसा समझना चाहिये. कि इसके दुष्ट भाषणके योगसे कर्मोंकी अनायास निर्जरा होनेसे उसका अत्यन्त उपकारी है. तीव्र और मंद कषायी परिणामोंमें देखिये कितना अन्तर है।

जो जीव मंद कषायी है. और उनसे किसी सज्जन जनका अचानक अपराध बन पड़े तो वह यह सोचकर कि मैंने बिना कारण पुन्यवान् पुरुषको कष्ट पहुंचाया. उससे नाना प्रकार आरज् मिन्नत कर अपने अपराधकी क्षमा मांगता है. परन्तु तीव्र कषायी उलटा घमंडमें चूर हुआ. अपनेको सर्वोपरि समझ निरन्तर उसका विपक्षी हुआ दुर्गतिमें शीघ्र पहुंचनेकी कोशिसमेंही मग्न रहता है.

प्रिय विचारशील बन्धुओ! आप मंद कषायी व तीव्र कषायी पुरुषके लक्षण अवश्यही समझ गये होंगे. और मनुष्यको यथार्थ मनुष्य कहलानेवाली एक क्षमाही है. यह भी आपकी बुद्धिसे बाहर नहीं रहा होगा. कारण पशु और मनुष्यमें क्षमा आदि गुणोंके अतिरिक्त सींग पूंछहीका हेर फेर है. तो फिर क्षमासे रहित पुरुषको यदि आप अधिक करेंगे तो बिना सींग पूंछका पुरुष कह लेंगे, परन्तु पशु कहनेमें तो तो आनाकानी होही नहीं सकेगी.

क्षमावान् पुरुष लोक परलोकमें कैसी कीर्ति और सुख सम्पदासे सम्पन्न होता है. इसके कहनेकी मुझमें शक्ति नहीं है. जैन सिद्धान्तोंमें इनके जगह २ चरित्र आये हैं. जो हमारे भाइयोंसे छुपे न होंगे. आज एक प्रमाण अन्य धर्मसे लेकर आपको सुनाना चाहता हूं.

सम्पूर्ण सुर, असुर, देव, इन्द्र, ब्राह्मण, विशिष्ठजीको देवर्षि और विश्वामित्रजीको राजर्षि कहकर उनकी आज्ञा शिरोधार्य करते थे. एक समय राजर्षिके चित्तमें किसी कारणसे वशिष्टजीपर क्रोध आया. और उनके नाश करनेका पूर्ण निश्चय कर लिया. वशिष्टजी अपनी स्त्रीके सहित एक अरण्य (जंगल) में निवास करते थे. पूर्णिमाके दिवस उज्ज्वल चंन्द्रिका (चांदनी) प्रसर रही थी. और देवर्षिके नाश करनेमें प्रयत्नशील विश्वामित्र एक बडी भारी पाषाण शिला ले. विशिष्टजीकी झोंपडीके ऊपर बैठे थे; इतनेमें ऋषिकी भार्याने कहा कि " हे प्राणनाथ, चांदणी कैसी मनोहारिणी छिटक रही है. ऐसे समयमें कुटीके बाहर चलें तो अत्यानन्द हो " इसके उत्तरमें वशिष्टजीने कहा कि " हे शुभे यह शरदऋतुकी चांदनी यथार्थमें राजर्षि विश्वामित्रके तप तेजके समान अत्यन्त प्रकाशवान है. तेरी इच्छा है तो चल! कुटीके ऊपर मारनेको बैठे हुए ऋषिने यह वार्तालाप सुनकर अपने मनमें अत्यन्त पश्चाताप किया. और विश्वामित्रजीके क्षमा ऐसे अद्वतीय गुणमें मुग्ध हो नम्रतापूर्वक क्षमा मांगी.

इसके उदाहरणसे पूर्व कालके अन्यमती लोक भी कैसे दयालु होते थे. यह स्पष्ट विदित होता है, आर्य भूमिकी क्षमावान् पुरुषोंकी चर्चाको छोड़कर यूरोप खंडमें भी क्षमा है. इसका उदाहरण वहांके प्रसिद्ध कवि शेक्सपियरके लिखे हुए लेख द्वारा जाना जावेगा.

Mercy dropped as a gentle rain from heaven upon the place beneath; and how mercy was a double blessing, it blessed him that gave and him that received it; and how it became monarchs better than their crown, being an attribute to God himself; and that earthly power came nearest to God's in proportion as mercy tempered justice.

ऊपरके लेखका सारांश यह है कि जिस प्रकार मेह आकाशसे नीचे पड़ता है, उसी तरह दया भी अंतःकरणसे उत्पन्न होती है जिसपर दया की जाती है. वह तथा जो करता है. वह दोनोंको दया आनन्दयुक्त करती है; अर्थात् दया दोनोंकी कल्याणकारी है; दयाके योगसे राजा भी शोभाको प्राप्त हो ईश्वरकी योग्यताको प्राप्त कर लेता है.

इससे दयाही परदेशमें स्वदेशमें सर्वत्र स्थित है. जो प्राणी दयालु क्षमावान नहीं है, उसका जीवन क्या? क्षमा भाव मनमेंसे गया. कि मानी पुरुष क्रोध रूप वैमनस्य उत्पन्न करनेवाले कार्यमें प्रवृत्त हो अपने शत्रुके नाश करनेकी इच्छा करता हिंसादि महा निंद्यकर्म नेत्रोंमें खिलाने लगता है. ऐसे नीच विचार प्रारंभ करते उसका धर्म कायम रहना कैसा? नहीं, कदापि नहीं.

इस पंचमकालमें एक क्षमाही शरणभूत है. यह मनुष्य जन्म उत्तम कुल आर्यक्षेत्र. सज्जन संगति, ज्ञान. बार २ प्राप्त नहीं होते, तो फिर ऐसे अवसरको छोड़ देना कितनी मूर्खता है. भाइयो, शक्त्यनुसार सत्कर्म करते, इस कामना कल्पद्रुम रूप दशधा धर्म व क्षमाका अवश्यही पालन करो, सद्गतिको पाओ.

पाठको! यह छोटासा लेख मैंने अपनी अल्प बुद्ध्यनुसार श्रीयुत राजारामजी जैन देवबन्द निवासीके विज्ञापनसे उत्सुक हो लिखा है. यह मेरा प्रथम परिश्रम है. भूल अवश्यही हुई होगी, उसकी क्षमा मांगता हुआ लेख पूर्ण करता हूं.

आपका अतिनम्र,

कुमारतात्या नेमिनाथ पांगल जैन.
स्टूडेंट इन म्याट्रिक क्लास, बारसी.

नोट—उक्त विद्यार्थीने यह लेख यद्यपि महाराष्ट्र भाषामें लिखा था. तथापि उसके उत्साह वर्धनार्थ भाषांतर कर पत्रमें स्थान दिया गया है.

संपादक.

पूजनका विषय गौण क्यों है ?

जैनमित्र अंक ७–८ में हीराचन्द उगरचन्दजी पंढरपुरका एक लेख प्रकाशित हुआ है. जिसमें वह लिखते हैं कि "पूजनका महत्व कई ग्रन्थोंमें लिखा है. फिर गौण क्यों? इत्यादि उसका समाधान इस प्रकार है.

गौणका अर्थ निषेध ऐसा नहीं है. परन्तु अन्य प्रधान क्रियाओंकी अपेक्षासे गौण कहा है. और यह बात उनके लेखसेही सिद्ध होती है. देखिये! उन्होंने लिखा है कि "चारों प्रकारके दान देनें योग्य इस अवसर्पिणी पंचमकालमें तीनो प्रकारके पात्र नहीं. व सप्त गुणसहित दाताभी नहीं. स्वाध्याय करने योग्य विद्वत्ता नहीं व पढानेवाला कोई गुरु नहीं. एक तो पढनेवाले बहुत कम है और जो पढभी सक्ते हैं वह अर्थ नहीं समझते. रहा यही एक कारण पूजन." इत्यादि. इसपरसे ऐसा सिद्ध होता है कि दान देनें योग्य पात्र नहीं, सप्तगुणयुक्त दाता नहीं, पढानेवाला नहीं इत्यादि न होनेके सबबसेही एक पूजन है. और जो दानके पात्र, दाता, विद्वत्ता, पढानेवाले इत्यादि रहते. तो फिर पूजन गौण रहता. अब देखिये! लेखकके अभिप्रायसे पात्र दान, स्वाध्याय, विद्यावृद्धि आदि क्रियाओंसे पूजन गौण रही है या नहीं?

स्वाध्याय प्रतिक्रमणादि क्रियाओंसे पूजन गौण है इसका दुसरा प्रमाणः–

स्वाध्याय प्रतिक्रमण सामायिक करनेसे संबर और निर्जरा होती है. परन्तु पूजनसे सांपरायिक आस्रव होते हैं. सांपरायिक आस्रवके भेद "इन्द्रिय कषायाव्रत क्रियाः पंचचतुः पंच पंच विंशति संख्या पूर्वस्य भेदाः" इस सूत्रमें कहे हैं. जिसमें पच्चीस क्रिया कहीं हैं, उसमें प्रथम गुरु "चैत्यगुरुप्रवचन पूजादि लक्षणासम्यक्त वार्द्धिनी क्रिया सम्यक्त क्रिया ॥ १ दूसरी" अन्यदेवता स्तवनादि रूप मिथ्या हेतुका प्रवृत्तिर्मिथ्यात्व क्रिया ॥ २ इत्यादि और तेवीस मिलके पच्चीस क्रिया सांपरायिक नाम संसार सम्बन्धी आस्रवके भेद हैं.

स्वाध्याय, प्रतिक्रमण, पात्रदान, इत्यादि क्रियाओंसे पूजन क्रिया सुलभ है. ऐसा लेखकार लिखते हैं, सो नहीं हैं. मेरी समझमें पूजन सबसे कठिन है. प्रथम तो पूजन तीर्थंकर केवलीका करते हो. या उनकी प्रतिमाका? यह समझना चाहिये. प्रतिमामें तीर्थंकर भगवानका स्थापन कौनसे मंत्रसे हुआ? उन मंत्रोंका अर्थ क्या है.? ॐन्ही ये बीजमंत्र है. इसमें क्या अभिप्राय गर्भि-

त है! "अत्रावतरावतरअत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्" इत्यादि बातें समझना बहुत कठिन हैं. बीजार्थको जाने बिना नाम मात्र मंत्र पढ़कर मैं मंत्रको जानता हूं. ऐसा कोई अभिमान करे, उसको कर्मबन्ध होता है, ऐसा जिनसेनाचार्यजी लिखते हैं.

बीजान्येतानिजानानो नाममात्राणि मंत्रवित् । मिथ्याभिमान प्रहतो बध्यते कर्मबंधनैः ॥३९॥

(आदि पुराण पर्व २१)

जितनी विद्वत्ता पूजनके पाठ करने अथवा कंठ करनेमें चाहनेकी आवश्यक्ता है. उतनी स्वाध्यायमें नहीं, पूजनके पाठ सबही पद्यमय हैं, परन्तु स्वाध्यायके पुस्तक हिंदी, मराठी, गुजराती, कनड़ी, संस्कृत आदि सबही भाषाओंमें गद्यरूप मिल सक्ते हैं. जैसे श्रावकाचार, आदिपुराण पद्मपुराण, सर्वार्थसिद्धिवचनिका आदि. पद्यसे गद्य सुलभ होता है. इस कारण साधारण भाषा पढ़ा हुआ पुरुष भली भांति स्वाध्याय कर सक्ता है.

लेखकजी "इस अवसर्पिणी पंचमकालमें तीनों प्रकारके पात्र नहीं" यह किस आधारसे कहते हैं. सो मालूम नहीं हुआ. श्री महावीर स्वामीके मोक्ष गये पीछे तीन वर्ष आठ महिनेसे पंचमकालका प्रारंभ हुआ. गौतमस्वामी, सुधर्मास्वामी और जम्बूस्वामी ऐसे तीन केवली इस पंचमकालमें हुए हैं. पांच श्रुत केवली. और श्री कुंदकुंदाचार्य, उमा स्वामी, समन्तभद्र स्वामी, जिनसेनाचार्य, वसुनंद्याचार्य, नेमिचन्द्र स्वामी इत्यादि कई आचार्य इसही पंचमकालमें हुए हैं, सो क्या यह दान देनेयोग्य पात्र नहीं थे? यह तो उत्तम पात्र कहे हैं. फिर मध्यम पात्र वृतीश्रावक और जघन्य पात्र अवृती सम्यक्ती श्रावक इनका भी अभाव भया? "वर्तमान कालमें श्रावकोंको पुन्योपार्जनके लिये यही एक कारण है" ऐसा लेखकजीने जो लिखा उसपर प्रश्न उठता है कि यदि श्रावककाही अभाव भया तो पूजन कौन करैगा. और पुन्य उपार्जन कौन करेगा?

"सप्त गुण सहित दाता भी नहीं" ऐसा लिखते हैं. सो यदि पात्रका सद्भाव साबित हुआ तो दाताका भी सद्भाव सिद्ध हो जाता है. दातामें सात गुण होवें तभी उसको दाता कहना चाहिये नहीं तो नहीं, ऐसा नियम नहीं है.

विधि द्रव्य दातृ पात्र विशेषात्तद्विशेषः ।

इस सूत्रका ऐसा अर्थ है. कि जो सात गुण सहित दाता होय तो उसको दानका फल विशेष होवे. इससे ऐसा न समझना चाहिये कि सात गुण बिना दाताका दान देनाही निरर्थक है. पूजनकी प्रतिमा करावनेवाला और प्रतिष्ठा करनेवाले कैसे होना चाहिये. सो वसुनंद्याचार्य लिखते हैं.

भागी वच्छ पहावणा खम्मा सच्चमहवोवेदा । जिण सासण गुरु भत्तो सुत्ते कारावओ भणिओ ॥ ३८८ ॥ देस कुल जाय सुद्धोणिरूवमांगोविसुद्ध सम्मतो । पढमाणुओयकुसलो पयट्ठलक्खण विहिं विदाणू ॥ ३८९ ॥ सावय गुणेववेहो उव्वासयज्झयण सत्थ थिर बुद्धी । एव गुणो पइट्ठायरिओ जिण सासणे भणिओ ॥ ३९० ॥

श्री जिन बिम्बका करानेवाला भाग्यवंत वात्सल्य अंगका धारी, प्रभावना धारी, क्षमावान,

सत्यवादी, मार्दवनाम गुणकर मंडित, जिनशासन और गुरुका भक्त. ऐसा सप्तगुणन कर संयुक्त पुरुष होय सो प्रतिमाका करानेवाला शास्त्र विषें कहा है. ॥ ३८९ ॥ प्रतिष्ठा करनेवाला देश, कुल, जाति आदि कर शुद्ध होय! रूपवान. शुद्ध सम्यक्तवान, प्रथमानुयोगके शास्त्रोंका जानकार. प्रतिमा प्रतिष्ठाकी विधिके शास्त्रोंका जानकार, श्रावकके गुणोंकर संयुक्त उपाकासकाध्ययन शास्त्रमें स्थिर बुद्धि. इन सप्त गुणोंकर संयुक्त होवे. इस प्रकार सात सात गुण दोनोंमें अवश्य होना चाहिये, इससे सिद्ध होता है कि प्रतिमाकी प्रतिष्ठा और पूजन इस समयमें बड़ी कठिन है. परन्तु स्वाध्याय करने और दान देनेमें इतनी कठिनता नहीं है.

लेखक फिर लिखते हैं कि "रविषेणाचार्य **कृत पद्मपुराणमें इस प्रकार लिखा है** कि लंकाधिपति रावणने कैलाश पर्वतपर जाकर श्री जिनेन्द्र भगवानकी पूजन अति विनय भक्तिपूर्वक अष्ट द्रव्यसे की. जिसके प्रभावसे भवनवासी इन्द्रका आसन कंपायमान हुआ. और उसने आकर विनय सहित रावणको शक्ति विद्या दीनीं." और इसीसे इस अवसर्पिणी कालके पंचम कालमें पूजनका महत्व प्रतिपादन करते हैं. और उसके पुष्टिकरणार्थ चतुर्थ कालका उदाहरण देते हैं, सो यह विषम है. तथा धरणेन्द्रका आसन कम्पायमान हुआ. और उसने रावणको शक्ति विद्या दी. सो रावणके पूजनसे संतुष्ट होके नहीं परंन्तु उस स्तवन गायनसे संतुष्ट होके दी थी. देखिये! पद्मपुराणमें क्या शब्द हैं.—

नमःसम्यक्त्व युक्तायाज्ञान एकांत नाशिने ॥
दर्शनाय नमोजस्रं सिद्धेभ्योऽ नारतम नमः ॥
पवित्राण्यक्षराण्येव लंकास्वामिनिगायति ॥
चलितंनागराजस्य विष्टरंधरणश्रुतेः ॥ ९२ ॥
जगाद रावणंसाधो साधुगीत मिदंत्वया ॥
जिनेन्द्रस्तुति संबद्धं रोमहर्षण कारणं ॥ ९३ ॥

अर्थ—केवल ज्ञानरूप, केवल दर्शनरूप, क्षायक सम्यक्तरूप इत्यादि अनंतगुणरूप सर्व सिद्धोंको निरन्तर नमस्कार होहुं. यह पवित्र अक्षर लंकाधिपतिनें गाये. जिससे धरणेन्द्रका आसन कंपायमान हुआ. × × और आकरके रावणसे कहा कि हे भव्य! तूने भगवानकी स्तुति बहुत की तथा जिन भक्तिके सुन्दर गीत गाये. जिससे हमारा शरीर आनन्दरूप भया; हे राक्षसेश्वर, तू धन्य है. जो जिनराजकी स्तुति करता है, तेरे भावकर मेरा आगमन हुआ है. मैं अति सन्तुष्ट हुआ हूं. तू वर मांग! जो मनवांछित वस्तु मागे सो मैं दूं, इत्यादि. इसमें अष्ट द्रव्यका नामभी नहीं है. और अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, अर्घ्यं ऐसे शब्दभी नहीं है. अष्ट द्रव्यसे पूजन करना, और स्तवन गायन ये क्रिया अलग हैं.

भला. रावणको शक्तिविद्याके प्राप्त होनेसे क्या लाभ हुआ? कुछ भी नहीं.! उसने वह विद्या लक्ष्मणपर चलाई. जिससे लक्ष्मण मूर्छित होगये. फिर जब सचेत हुए. तब अधिक क्रुद्धित हो रावणको मार बैठे. यदि इसके बदले रावण स्वाध्याय प्रतिक्रमणमें ध्यान लगाता, तो सीता रखनेके मूर्ख हठग्राहीपनाको छोड़. उसे जहांकी तहां भेज देता. जिससे सबही अनर्थ मिट जाता. इससे जाना गया कि स्वाध्याय प्रतिक्रमणका फल शक्तिविद्याकी प्राप्तिसे अधिक है. और फिर

इसकालमें देवका आगमन होनेका नहीं. ऐसा श्री भद्रबाहु स्वामीजीनें कहा है.

[शेषमग्रे.]

(शा. नानचन्द खेमचन्दजी, शोलापुर लिखित.)

चिठ्ठी पत्री.

प्रेरितपत्रोंके उत्तरदाता हम न होंगे.

श्री पंडित गोपालदासजी बरैया !

जयजिनेंद्र. अपरंच आपकी आज्ञानुसार श्री सिद्धक्षेत्र रेशंदीगिर (नैनागिर) का हिसाब सम्बत् ५६ के अगहन वदी ९ से अगहन वदी १ सम्बत् १९५८ तकका तयार कर शरणमें प्रेषित करता हूं. उसे अपने जैनमित्रमें स्थानदान दीजियेगा.

जमाखर्चके सिवाय जो रकम व्याजू कई महाशयोंपर है, वह भी लिख दी है. इसके निमित्त जैसे आपकी सम्मति हो, वह तो सर्वोत्तमही है. परन्तु यह लघुमतिभी प्रबन्ध यथोचित होनेके निमित्त कुछ लिखता है.

मेरी समझमें द्वेष बुद्धि बढ़नेका मुख्य कारण भंडारकी वसूली करनाही है. क्योंकि यह रकम किसी एककी न होनेके कारण, बहुधा लोग उस भाईसे ईर्षा करनेको उतारू हो जाते हैं. जो भंडारकी वसूलीकी धर्म बुद्धिसे कुछ भी बात करता है, और फिर वह वेचारा भी इस ईर्षासे भयभीत हो, मौन धारणकर बैठता है, बस! इसीसे यह भंडारकी रकमें गोलक धंधेमें पड़ गईं और पड़तीं जाती हैं. सभासद लोगोंने रकम एकत्र करनेके विचारसे कोई नवीन क्रम बनानेका विचार नहीं किया, तो वह रकम शनैः शनै सब भाइयोंके पास पहुंच गई. और फिर वह कहावत हुई की "कहै कौन किसकी, सुनें सब सबकी" सारांश व्याज वसूलीकाभी कोई तकाजा करनेवाला नहीं रहा. ऐसे समयमें यदि किसीनें कुछ वसूलीके लिये जिक्र किया कि उस गरीबकी अवसर पड़नेपर कर्मकाजों (व्याह आदि व्यवहारों) द्वारा कुचले जानेकी युक्तियां सोची गई. और आपने इस कार्यसे सम्बन्धही छोड दिया. बस इसी तरह द्वेषबुद्धि दिनों दिन बढ़ती जाती है. और वसूली कुछभी नहीं होती.

इस भंडारकी रकम कहने मात्रही जमा कहाती है. न तो कभी दिखती और न किसी कार्यहीमें लगाई जाती है. तथा यह लक्ष्मी सदाकी चंचल हैं, जो कभी सातावान भंडारी थे वही अब असाताके पंजेमें पड़ मुंहके जमाखर्च देते २ लज्जा और पापके भागी बन रहे हैं. परन्तु तौभी देनेवाले और लेनेवाले सचेत नहीं होते.

अफसोस है कि लोगोंनें भंडारके द्रव्यको मानिन्द मालगुजारीके समझ हस्व दिलख्वाह हिस्सा कर कर स्वछंदता धारण कर रक्खी है. और वर्तमान प्रबन्धकर्ताओंपर झूटे दोष आरोपन कर खाया हुआ रुपया जमा करानेको जी छुपाना सीखा है, न जानें लज्जा कहां हैं !

भंडारकी रकम द्रव्यवानोंके पास इस विचारसे रक्खी जाती है. कि वह जब चाहेंगे तब मिल सके. परन्तु अब इसके विपरीत हाल देखनेमें आता है. कि भंडारी लोग अपने दिलसे नतो रुपया देते. न किसी कार्यमें लगानेका विचार

करते हैं. बल्कि यहांतक कि तकाजा करनेवालेको उल्टीसूधी डांट लगा बैठते हैं कि तुम मांगनेवाले कौन हैं? और किस हैसियतसे मांगते हो! आदि कारणोंसे मूल व व्याज कुछ भी वसूल नहीं हो सक्ता है.

यहांके भंडारकी वसूलीके लिये अजहद्द उपाय किये गये. मगर फल कुछ भी न हुआ. जब सम्वत १९५८ के शुरू चैत्रकी सभामें अनुमान ३०० भाई जमा हुए थे. तब एक प्रस्ताव यह पास हुआ था कि "आगामी कार्तिककी यात्रा तक जो लोग रुपया वसूल न करावेंगे वह बिरादरीसे बंद किये जावेंगे" इसपर सर्व भाइयोंने अमलमें लानेके लिये अपने २ हस्ताक्षर भी किये थे. और एक २ नोटिस जिन लोगोंपर रुपया बाकी था, उनको दिया गया था. परन्तु अफसोस कि आगामी यात्राकोभी कुछ न हो सका. और लोगोंने जाति आदिसे खुलासी कर उस प्रस्तावका भय भी, मिटा दिया.

इसप्रकारकी खेचातानीसे प्रबन्ध तो कुछ भी नहीं होता. परन्तु विरोध अप्रमाण बढ़ता जाता है जिससे जातिकी दशा दिनपर दिन बिगड़ती जाती है. केवल धनी ओर गुणी महाशय इसके दूर करनेकी शक्ति रखते हैं. परन्तु शोककि वह कुछभी ध्यान नहीं देते. चाहे कोई अपनी महत्वता भंग होनेके कारण भलेही प्रगट न करें. परन्तु मेरी समझमें ऐसाही हाल सब स्थानोंका है. जैसे तीर्थराज सम्मेदशिखरजी गिरनारीजी आदि, जिससे आप भली भांति जानकार हैं. भंडारोंका रुपया इसी संकोच और आशा २ में अच्छे २ उदार पुरुषोंके पास डूब गया. जैसा कि मैंने ऊपर कहा है.

मेरी लघुमत्यानुसार तो भंडारका रुपया इस प्रथासे जमा कराना बिलकुलही अनुचित है. जिससे वैरविरोध बढ़करके द्रव्य तकके हजम कर जानेकी नौबत आती है. यदि यही द्रव्य समय २ पर उन्हीं स्थानोंके जीर्णोद्धार करानेमें लगता जावे. जिसकेलिये यथार्थमें वह द्रव्य है, तो इससे एक तो मन्दिर चैत्यालयादि दृढ तथा दर्शनीय रहेंगे. दूसरे प्रभावनांगकी वृद्धि होगी. और द्रव्य भी व्यर्थ नहीं जावेगा.

उक्त तीर्थका झगड़ा मिटानेके लिये, और आगामी प्रबंध ठीक चलानेके लिये यह वसूली जिस तिसपर जल्दी करना चाहिये. और न हो सके तो सर्व सम्मतिसे माफकर देना चाहिये. जिसमें आगेको सफाई हो जावे, आशा है कि मेरी चिट्ठीपर, इस तीर्थक्षेत्र सम्बन्धके भाई विचार करेंगे. और प्रयत्नशील हो मेरा परिश्रम सफल करेंगे.

उक्त भंडारका द्रव्य इसप्रकार महाशयोंपर बाकी है —(व्याज ।।) सैकड़ा माहवारी)

(असल द्रव्य)

४१२) श्री संघी कुंजीलालजी दलपतपुर.
३१२) श्री महेरिया गिरधारीलाल घोगरा.
२३०) श्री सेठ खुनुवन्नू बछोरी.
१०) श्री सिंघई गुलाबचन्द नैनधरा.
२५) श्री „ चन्द्रभान बकसुवा.
२५) श्री चौधरी नन्हेलाल केरवना.
३२५) सेठ बिन्द्रावनदासजी दमोह मयव्याज.

१३७९

उक्त बाकी देनेवाले महाशयोंमेंसे नम्बर १ व २ के महाशयोंसे विशेष प्रार्थना है. कारण इनका वही हाल है जिसका ऊपर उल्लेख किया है. इति.

जैनी भाइयोंका दास
तुलसीराम हैडमाष्टर,
शाला विनायका (सागर).

सूचना.

तृतीय वर्षके अंक १२ में जो श्रीसम्मेदशिखरजीकी सहायतामें २०) बीस रुपया गुम नामके जमा किये गये थे, उनका पता लग गया. वह समस्त दिगंबर जैनी पंचान बिलसी (बदायूं) के थे. सो भाइयोंको चाहिये कि वह सुधारकर पढ़ें. और उक्त पंचमंडलीको धन्यवाद दें.

सम्पादक.

निःसंशयावली निरीक्षण
तथा
कलियुगी पांडित्यका कलश!!

पाठको! पहिले अंकमें **कलिकी महिमा** शीर्षकका लेख पूर्ण किया था. परन्तु पुनः एक बार उसी विषयके सम्बन्धमें लेखनी हाथमें लेनेका प्रसङ्ग प्राप्त हुआ है. **जैनमित्र** अंक १० की **संशयावली** पाठकोंके अवलोकनमें आई होगी. व अंक १२ में **पंचामृताभिषेक निःसंशयावली** भी दृष्टि गोचर हुई होगी. वह निःसंशयावली कितनी ठीक और शास्त्र सिद्ध है. इसके विषय पूर्ण निरीक्षण किये सिवाय वह ग्रहण करने योग्य है. ऐसा मुझे दिखता नहीं है. व उसके बांचनेसे अविचारी लोगोंके मनमें निष्कारण संशय न उत्पन्न होवे. एतदर्थ आज उस निःसंशयावलीके निरीक्षण करनेका अवसर आया है.

१. पंडितजी लिखते हैं. कि अनुमान प्रमाणसे पंचामृताभिषेक नहीं करना. यही सिद्ध होता है.

केवल अनुमान प्रमाणसे अमुक सिद्ध होता है, ऐसा कहनेहीका केवल प्रयोजन नहीं है. परन्तु उस अनुमान प्रमाणमें पक्ष क्या, साध्य क्या, व सद्धेतु क्या इनका ठीक विवेचन करने सिवाय साधारण लोग "अनुमान क्या वस्तु है" इसके समझनेको बिलकुल असमर्थ हैं. इन तीनों बातोंका उत्तम विवेचन होनेसे यदि उनके चित्तमें जम जावेगा, तो इसकी चूक उनके लक्षमें आ जावेगी. अब जिस हेतुपर पंडितजीने अपनी अनुमानकी इमारत रची है, वह हेतु कहांतक निर्बाध है, सो देखिये!

२. पंडितजी लिखते हैं कि "**मुंहणयण दंत धोयण**" इत्यादि यदि मुनि लोगोंके लिये वर्ज्य कहा है, तो जिनेश्वरकी प्रतिमाके लिये भी वह वर्जित हुआ.

पाठको! यह उनकी इमारतका पाया—यह पाया कितना दृढ है. सो. पहिले सिवाय इमारतकी मजबूती कहे बिना नहीं जाना जा सकता. मेरी समझमें पंडितजी यह विधान करनेमें थोड़ेसे झगड़ेमें पड़ गये हैं. हम पीछे क्या लिखते हैं. और पहिले क्या लिख गये हैं, यह देखनेका भान उनको नहीं रहा है. ऐसा जान पड़ता है. मुनि लोगोंके लिये उन्होंने जो कार्य वर्जित कहे हैं. उनमें "**पाद धोयणं**" अर्थात् पाद प्रक्षा-

न जिनेश्वरकी प्रतिमाको वर्ज्य समझना चाहिये. पादप्रक्षालन यदि वर्जित हुआ तो स्नपन अर्थात् अभिषेक कहां रहा ? फिर पंडितजी लिखते हैं कि स्नपन अर्थात् अभिषेक करना! तो ऐसे परस्पर विरोधक वाक्योंपर कोनसा सम्यग्दृष्टि विश्वास करेगा ? उनका यह विधान शास्त्रसिद्ध नहीं. किन्तु केवल लफंगी है, ऐसा अत्यन्त शोकके साथ कहना पड़ता है. उन्होंने जिस पायेपर अपनी अनुमान प्रमाणकी इमारत खड़ी की है, वह पाया कितना पोला (कच्चा) है. यह अब पाठकोंके ध्यानमें सहजही आने योग्य है. अर्थात् पंडितजीका अनुमान प्रमाण ग्राह्य नहीं है. यह सिद्ध हुआ.

शेषमग्रे.

महाशोक!!!

हा दुर्दैव!!! तूनें बड़ा असह्य वज्राघात किया. दिगम्बर जैनप्रांतिकसभा बम्बईके स्तंभरूप परम प्रतिष्ठित धर्म धुरंधर सेठ गुरुमुखरायजीको सदैवकेलिये हम लोगोंसे विलगकर तूं निश्चयही निर्दयी कहलानेके योग्य है, हाय! उक्त परोपकारी सज्जन अभी महासभा मथुराके मेलेसे भले चंगे आये थे. कि आज कार्तिक सुदी १२ बुधवारके दिन यहां नहीं दिखाई देते. सत्यही संसारकी क्षणभंगुरता इसीसे विदित होती है, परन्तु उनके सत्कर्मोंकी जो सुयशावली है (जो आगेके अंकमें लिखेंगे) वह अवश्यही इस संसारमें रहेगी.

विज्ञापन. १

जो विद्यार्थी परस्त्रीगमन इस विषयपर अत्युत्तम लेख छापनेको भेजेगा, उसको १) एक रुपया नकद और ।।) की एक पुस्तक पारितोषकमें दी जावेगी. रुपया जैनमित्र आफिससे मिलेगा और पुस्तक मेरे पाससे मिलेगी.

गिरनारीलाल जैन-टहरी.

विज्ञापन. २

पाठकोंको याद होगा. कि द्वतीय वर्षमें जैनमित्रके केवल ८ ही अंक निकालकर नियम बदलाना पड़ा था इससे किसी भाईका हिसाब शेष रहे हुए. ४ अंकोके कारण डेबड़ा नहीं होने पाता था. और इससे हिसाब किताबमें बड़ी दिक्कत होती थी, ऐसा विचारकर हमने यह अंक प्रायः सब भाइयोंके पास तृतीय वर्षके अंत तकका हिसाब तहकर वी. पी. भेजा है आशा है कि सब भाई स्वीकार करेंगे. और इस वर्षका पेशगी मूल्य भी जिन २ भाइयोंने नहीं दिया है भेजनेकी कृपा दिखावेंगे. अबकी बार वी. पी. वापिस करनेवाले ग्राहकोंके नाम प्रकाशित किये जावेंगे. इससे अभीसे कहते हैं, कि खबरदार रहें. सभाके सभासदोंके नाम भी ३), ६), १२) का वी. पी. किया गया है. जिनसे पूर्ण आशा है, कि पोष्टमनको रुपया देनेमें वह विलम्ब न करेंगे.

निवेदक—

क्लर्क दि. जै. प्रा. सभा, बम्बई.

श्री सम्मेद शिखरजीकी सहायता.

(पीछेसे आये हुये.)

५०) श्रीभवानी प्रशादजी जयरामजी सेठ. तेंदूखेडा.

५) श्री समस्त पंचान वर्धा.

१००) श्री समस्त पंचान जैन तिजारा.

४॥~) ....(कूपनपर नाम नहीं.)

Registered No. B. 288.

४ शरथा धरापै, जैनमित्र ही बिठावैगो ॥

श्रीवीतरागायनमः

जैनमित्र.

जिसको

सर्व साधारण जनोंके हितार्थ,

दिगम्बर जैनप्रान्तिकसभा बंबईने

श्रीमान पंडित गोपालदास बरैयासे सम्पादन कराकर

प्रकाशित किया.

जगत जननहित करन कँह, जैनमित्र वरपत्र ।
प्रगट भयहु-प्रिय! गहहु किन? परचारहु सरवत्र ! ॥

चतुर्थ वर्ष} मार्गशीर्ष सं. १९५९ वि. {अंक २ रा.

नियमावली.

१ इस पत्रका उद्देश भारतवर्षीय सर्वसाधारण जनोंमें सनातन, नीति, विद्याकी, उन्नति करना है.

२ इस पत्रमें राजविरुद्ध, धर्मविरुद्ध, व परस्पर विरोध बढ़ानेवाले लेख स्थान न पाकर, उत्तमोत्तम लेख, चर्चा उपदेश, राजनीति, धर्मनीति, सामायिक रिपोर्ट, व नये २ समाचार छपा करेंगे.

३ इस पत्रका अग्रिमवार्षिक मूल्य सर्वत्र डांकव्यय सहित केवल १।) रु० मात्र है, अग्रिम मूल्य पाये बिना यह पत्र किसीको भी नहीं भेजा जायगा.

४नमूना चाहनेवाले)॥ आध आनाका टिकट भेजकर मंगा सके हैं.

चिट्ठी व मनोआर्डर भेजनेका पताः—

गोपालदास बरैया सम्पादक.

जैनमित्र, पो० कालबादेवी बम्बई—

३ भारी भ्रमभूरि हिये भ्रमत भयावनेजे निरें शूर लेखन सों स्यूके पराजैगो। बूहत विपक्षी पक्षी, सन्देह अम्बर कै—

५ चोखे चाव चतुर चकोर चाहकन हेतु, चन्दसो पियूषजैन पावन पठावैगो। अंधकार अविचार अघुधी, अन्मेल आदि,

२ आदिकें सो भायवेग भेदकै हटावैगो ॥

कर्नाटक प्रिंटिंग प्रेस, कांदेवाडी, मुंबई.

अबतकभी समझ जाइये !

प्रिय ग्राहक गण ! आप लोगोंसे जैनमित्र-का मूल्य भेजनेकेलिये प्रार्थना करते २ थक गये, परन्तु आपने आंखतकभी नहीं उघाड़ी. लाचार होकर जैनमित्रका दूसरा अंक हमको व्हेल्यूपेबिल करना पड़ा. तथा आपके विश्वासपर गांठका पैसा वी. पी. की फीसमें लगाते हुए बिलकुल भय नहीं खाया. और इतनेंपरभी आपकी मर्जीके अनुसार तृतीय वर्षके अन्ततककाही सब चार्ज लगाया. शुरूसाल यानें चौथे वर्षका पेशगी चार्ज किसीपरभी नहीं किया, परन्तु आपमेंसे कई एक भाइयोंनें

☞ व्हेल्यूपेबिल लौटा दिया

और इसबातपर बिलकुलभी ध्यान नहीं दिया कि सालभर अथवा इससेभी ज्यादा जो इस पत्रनें धर्मोपदेश सुनाया, साढ़े तीन आनें पैसे वर्षभरमें टिकटोंके लगाये, व्हेल्यूपेबिल फीसका एक आनाभी गांठसे दिया, यह हम मुफ्तमें क्यों खाये जाते हैं ? क्या जैनमित्र आफिस विना पैसेहीके चलता है ? भाइयो ! यदि वापिस करनेके पहिले आप इतना सोच लेते तो हमारे साढे चारआना व्यर्थ क्यों जाते ? यदि न देनेंहीकी इच्छा थी. तो वेल्यूपेबिल होनेंके पूर्वही सूचना पहुंचनेके साथ एक कार्ड लिख देते. ताकि हमारा यह एक आनाही बच जाता तो खेर होती. अब हम आपके इस प्रकार वर्तावसे लाचार होकर यह अन्तिम सूचना देते हैं कि आगामी अंकमें

☞ व्हेल्यूपेबिल लौटानेवालोंका नाम छापा जावेगा

इससे होशयार हो जाइये, और इस कलंकसे बचिये, न कुछ रुपया दो रुपयाके पीछे हिन्दुस्थान भरके लोग आपको **अदैनियांग्राहक** ऐसा लज्जाप्रद नाम लेकर इंगित करेंगे. अतः यदि नाम प्रकाशित नहीं कराना हैं. तो शीघ्रही जो कुछ जैनमित्र कार्यालयका आपके नाम पैसा बाकी है. मनीआर्डरद्वारा भेजकर मुख उज्वल कराइये, और आगे ग्राहक बननेकी इच्छा हो, तो सूचना दीजिये, नहीं तो आजहीसे जुहार सही, परन्तु पिछले की फिकर अवश्य कीजिये. नहीं तो यहां चौथा अंक छपनेमें देरी नहीं है.—

क्लार्क—जैनमित्र कार्यालय.

सूचना—कारणवश सेठ गुरुमुखरायजीकी फोटो (तस्वीर) छपनेमें देरी हो गई, अतः वह आगामी अंकमें पाठकोंके दृष्टिगोचर हो सकैगी.

सम्पादक.

जाहिरखबर.

जिन इंग्रेजी पढ़नेवाले विद्यार्थियोंको मुम्बई तारदेवपर स्थित सेठ हीराचन्दगुमानजी जैन बोर्डिंगस्कूलमें दाखिल होना हो. वह. तथा जिनको स्कालर्शिफ लेनेकी इच्छा हो. वह. अपने दाखिल होनेका फार्म तथा स्कालर्शिपका फार्म ता० ३१ दिसम्बर सन् १९०२ तक भेज देवें.

स्कालर्शिप फार्म तथा दाखिल होनेका फार्म हम मांगनेपर भेज सक्ते हैं.

इस बोर्डिंगमें संस्कृत पढ़नेवाले विद्यार्थी भी दाखिल करनेमें आते हैं.

ता० २१-१२-०२ तारदेव-बम्बई. } शा चुन्नीलाल जवेरचन्द ज्वाइन्ट सेक्रेटरी.

ही. गु. जै. बोर्डिंग स्कूल.

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥
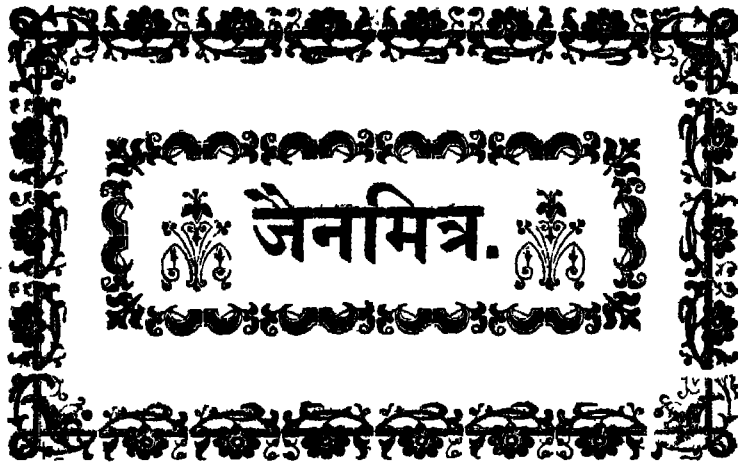
जगत जननहित करन कहँ, जैनमित्र वरपत्र ॥
प्रगट भयहु-प्रिय ! गहहु किन ?, परचारहु सरवत्र ! ॥ १ ॥

चतुर्थ वर्ष } मार्गशीर्ष, सम्बत् १९५९ वि. { ३ रा.

स्वर्गवासी सेठ गुरुमुखरायजी.

प्यारे बन्धुवो! ऊपर आप जो परम सौम्य शांति सम्पन्न मूर्ति चित्ररूपमें देख रहे हैं यह कौन हैं? यह हमारी बम्बई प्रान्तिक सभाके स्तंभस्वरूप राजा प्रजाकर सन्मानित व्यवसाय कुशल और धर्म धन सम्पन्न सेठ गुरुमुखरायजी हैं, जिनके मृत्यु शोकसे आज जैन समाजमें चारों ओर आर्त्तनाद हो रहा है. आज हम इन्हीके अनन्त उपकारोंको स्मर्ण करते हुए थोड़ासा जीवन चरित्र लिखते हैं.

यह अग्रवाल गर्ग गोत्रीय वैश्य थे. इनकी जन्मभूमि फतेहपुर शेखावाटी है, आपका जन्म सम्बत १९०१ के फाल्गुण मासमें हुआ था. प्रथम यह एक साधारण गृहस्थ थे, साधारण व्यापार शिक्षण प्राप्तकर आप योग्य अवस्थाके होतेही व्यवसायमें दत्तचित्त हो गये. और उसमें शनैः शनैः उन्नति करते हुए उत्तम धनिकगणोंकी श्रेणीमें पहुंच गये. सम्बत् १९३३ व ३४ में बम्बईमें दूकान स्थापित की. इसके अनन्तर कलकत्ता आकोला आदि स्थानोंमें भी दूकानें कायम कीं. व्यवसाय सम्बन्धी कार्योंमें ऐसी निपुणता प्राप्त की थी, कि कोई भी व्यापारी आपसे कभी अप्रसन्न नहीं हुआ. तथा घाटा आदिके दुर्घट समयोंमें धैर्य न छोड़कर अन्ततक कृतकार्यही होते रहे, इत्यादि लौकिक विषयोंको छोड़ आपकी धर्ममें भी अतिशय श्रद्धा और भक्ति थी. निरन्तर अपनी आयके अनुसार धर्मकार्योंमें सहायता देना एक स्वाभाविक गुण था. प्रत्येक धर्मकार्योंकी प्रवृत्तिमें आप अग्रगण्य रहनेमें कभी नहीं चूकते थे, परन्तु उससे विशेष प्रतिष्ठा पानेकी इच्छा नहीं रखते थे. आप स्वप्नमें भी कभी किसी सत्कार्यमें बाधक नहीं होंगे. ऐसा उनकी शांति प्रकृतिसे सदाही झलकता था. यदि पक्षपातसे कहीं सभा आदि का-

योंमें विघ्न होता दिखा, कि बस उसके सुधारक आपही होते थे. जब कि कई एक धनी सभा पाठशालादि कार्योंके निषेधक होते. आप निरन्तर उसके प्रतिपादकही रहे, परन्तु उसी शांतितासे जो प्रायः धनिक पुरुषोंमें कम देखी जाती है. सं.९३व ९६ के अकालमें आपने बड़ी सहायता की थी. बैतूलके अनाथालयमें २९०) प्रदान कर आपही अग्रसर हुए थे. फतेहपुर, अकोला इन्दौर आदि स्थानोंके मन्दिरोंमें आपने बड़ी मदद की थी. बम्बईके इस नवीन मन्दिरकी नीम जमानेवाले आपही थे. जब एक बड़े भारी कर्जको सिरपर लेकर आप सबसे अग्रगण्य हुए थे, इत्यादि बहुतसे धर्मकार्य आपके हाथसे निरंतर होते रहे हैं. जिनका विस्तृत हाल इस छोटेसे लेखमें नहीं लिखा जा सक्ता. अन्तमें ऐसे सज्जन परोपकारी, साहसी, शांति, और गंभीर पुरुषकी जिसप्रकार मृत्यु होना चाहिये थी, समाधि सहित हुई. जो प्रत्येक मनुष्यको अतीव दुर्लभ है. जब आप जम्बूस्वामीके मेलेसे हाथरस अलीगढ़ आदि नगरोंमें होते हुए आये, तो एक मामूली ज्वर होगया था. दो दिन बुखार रहा. तीसरे दिन अपनी चेष्टा बिगड़ी देख सावधान हो गये. और पांच हजार रुपया मंदिरको तथा और भी यथायोग्य दान कर अपने सुपुत्र सुखानन्दजीको समझाकर आत्मकल्याणमें तत्पर हुए. कुटुम्बी जनोंमें तथा किसीमें भी आपने मोह बिलकुल नहीं रक्खा, और नमोकार मंत्रका स्मरण, बारह अनुप्रेक्षाका चिन्तवन, भली चैतन्यतासे श्रवण करते २ पंचाणुव्रत धारणकर कार्तिक सुदी १२ बुधवारके दिन अपने दो सुपुत्र लाला निहालचन्दजी व सुखानन्दजी तथा अन्य कुटुम्बी जनों और हमारी सारी जैन समाजको शोकसागरमें डालकर परलोकवासी होगये. आपकी मृत्युसे बम्बईका मारवाड़ी बाजार शोकसे पीड़ित हो बिलकुल बन्द रहा. (यहांके व्यवसाइयोंपर उनका कितना प्रभाव व मान था, इससे साफ जाना जाता है.) आपकी इस असह्य मृत्युसे यद्यपि हमारे समाजमें एक पुरुषरत्नकी हानि हुई है, तथापि यह देखकर हमको बड़ा संतोष है कि, आपके उक्त दोनों सुपुत्र अति सुयोग्य और धर्मात्मा हैं. आशा है कि वे भी अपने सुस्वभावोंसे सबके प्यारे यशस्वी बन अपने पूज्य पिताके सुपुत्र बनकर इस जैन जातिके सच्चे सहायक बनेंगे. इति.

निःसंशयावली निरीक्षण.

(गताङ्कसे आगे)

१ पंडितजीनें पंचामृताभिषेकके निषेधमें स्नपन इस शब्दपर लक्षणा की है, वह कितनी योग्य है सो हमें देखना चाहिये.

लक्षण सम्बन्धका वाद संस्कृतज्ञोंके लक्ष्यमें आने योग्य है. इसलिये वह संस्कृतहीमें दिया जाता है.

लक्षणाशक्यसम्बन्धस्तात्पर्यानुपपत्तितः सर्वथातात्पर्यानुपपत्तिर्लक्षणाबीजं यथागङ्गायां घोषः इत्युक्ते गङ्गापद शक्य प्रवाह सम्बन्धिनितीरे गङ्गापदस्य तात्पर्यं तथा प्रस्तुतेऽपि "स्नपनार्चो" इत्यादि पदे स्नपन पदस्य मुख्यार्थस्य स्नानस्य बाधे युज्यते लक्षणा । अत्रतु सर्वथा अर्थ बाधोनास्तिचेत् कया लक्षणया अत्र भाव्यम् ।

ग्रन्थ तात्पर्यमज्ञात्वा लक्षणां कल्पतयामपलक्षणामेव बुद्धिंवदन्ति विद्वांसः ॥

अर्थात् इस स्थानपर तात्पर्यार्थकी सर्वथा अनुपपत्ति नहीं है. इससे लक्षणा होही नहीं सक्ती

४ पीछे पंडितजी लिखते हैं कि हमारे वीतराग धर्ममें पंचामृताभिषेक कहना तात्पर्यही नहीं होता है.

इस विधानके करनेमें पंडितजीने अपना अल्प ज्ञान उत्तम प्रकार प्रकट किया है. यदि उन्होने अपने धर्मके प्राचीन शास्त्र निष्पक्षपातसे खोलकर देखे होते तो यह विधान करनेका साहस कभी नहीं करते. इस वाक्यके लिखनेमें उन्होंने **शास्त्रप्रमाण, प्रत्यक्षप्रमाण** व उत्तम **अनुमानप्रमाण** यह तीनों प्रमाण मुंझलाकर (मुगारून) दे दिये हैं, ऐसा स्पष्ट जान पड़ता है. केवल अपना स्वतः किया हुआ अनुमान प्रमाण ही सत्य जानकर उन्होंने लिख मारा है. अब हम यदि उनके पोच (पोकल) ठहराये हुये अनुमानप्रमाणही सत्य मानें; तो अपने प्राचीन आचार्योंके शास्त्र व तदनुसार प्रचलित चली आई मार्ग प्रभावनाके अपमानपरभी पूर्ण लक्ष्य देना चाहिये.

५ पुनः पंडितजी लिखते हैं कि, देवादिकोंने जो अभिषेक किया वह आज्ञापूर्वक है.

यदि हम उक्त विधान सत्य मानकर चलें तो विचारसे "पंचामृताभिषेक न करो" यह बिलकुल सिद्ध नहीं होता है. उनके दिये हुये श्लोकोंमें देवोंने जलाभिषेक किया यही लिखा है, व इतने परभी पंचामृताभिषेक अशास्त्र कहना केवल भूल है. कारण हमेशा सर्व स्थानोंमें सर्व प्रतिमाओंकाही पंचामृताभिषेक नहीं होता है. अपने मंदिरोंमें प्रतिदिन पांचसात प्रतिमाओंका पंचामृताभिषेक व शेष सर्व प्रतिमाओंका जलाभिषेक होता है. कारण सर्व प्रतिमाओंका प्रतिदिन पंचामृताभिषेक करनेकी सामर्थ्य अपनेमें नहीं है. अच्छा यदि देवादिकोंने पंचामृत अभिषेक किया ऐसा प्राचीन आचार्योंका लेख है, तो पाठको ! तुम क्हीं ग्रहण करो न ?

श्री पद्मनन्दि मुनिके शिष्य श्रीशुभचन्द्र मुनिने अष्टान्हिकावृत्तकथा लिखी है. इस कथामें **नन्दीश्वर द्वीपमें** देवोंकृत पंचामृत अभिषेकके विषय ऐसा स्पष्ट वाक्य है !

इक्षुरसादिपञ्चामृतैरभिषेकंकृतवन्तः ॥

अर्थ— इक्षु रसादि पंचामृतका अभिषेक करते हुए ॥ अब तो संशयांकुर नहीं रहा ? अब फक्त देवोंने जैसा किया वैसा करनेको तयार होओ, बस हुआ. पंडितजीके प्रमाणमें दिये हुए श्लोक पंचामृत अभिषेकका निषेध बिलकुल नहीं कर सक्ते. यह अब पाठकोंको कहना नहीं होगा.

६ पंडितजी लिखते हैं कि, मूल सद्याचार्योक्तार्ष ग्रन्थोंमें जो आज्ञा है वही मान्य है. परन्तु विद्रोही लोकोंने विपरीत अर्थोंका कथन जिनमें भर दिया है. ऐसे बिगड़े हुए शास्त्रोंकी परीक्षा करके वह आज्ञा मान्य तथा अमान्य है, यह निश्चय करना चाहिये.

यह पंडितजीका विधान बहुतही उत्तम है. इसमें रञ्चमात्रभी संशय नहीं है. परन्तु इन बिगड़े हुए शास्त्रोंकी परीक्षा करनेवाले स्वतः पंडितजीही न !

उन्हें जबतक पक्षपातका कोई तृतीय नेत्र सुविचारोंसे नहींसूझा. तबतक जिन २ शास्त्रोंमें पंचामृताभिषेक लिखा हुआ मिलैगा; वह सर्व शास्त्र उन्हें विगड़े हुएही दिखेंगे. तो अब जिसके पक्षपाती नेत्र हैं, ऐसे यद्वातद्वा बकनेवाले मनुष्यके कथनपर कौनसा बुद्धिवान पुरुष विश्वास रक्खेगा? परीक्षा करनेवाला पंडित विश्वास पात्रही होना चाहिये. व विश्वास होनेके साथ पक्षपात, दुराग्रह, क्रोध व मानादि दुर्गुणोंका त्यागी होना चाहिये. तथा उसके वचनभी मधुर तथा कर्णप्रिय होना आवश्यक है.

७ पंडितजी लिखते हैं कि, स्फोटन व जिला (चमक) विगड़ना इसका समकक्षीपनाही नहीं हो सक्ता. कारण इन दोनों की क्रिया प्रथक्‌प्रथक्‌रूप है.

पंडितजीका पांडित्य अतिशय उघड़कर ऊपर आने लगता है. इसके विषय हम निरुपाय हैं. स्फोटन व जिला विगड़ना यह दोनों क्रिया प्रथग्रूप हैं....याने तिनके बीचमें समकक्षीपना है. यह दोनों क्रिया भिन्नरूप नहीं तो उनमें एककक्षीपना होता है. इसे देखकर पंडितजी नहीं समझे यह क्या आश्चर्यका विषय नहीं है? यह पंडितजी यथार्थमें पंडित नहीं. किसी एक गांवठी शालाके पंतोजी (गुरुजी) होंगे. ऊपरके विधानसे ऐसा जान कर हमको शोककेसाथ कहना पड़ता है.

८ पंडितजी लिखते हैं कि, श्री भद्रबाह्वादि मुनियोंके ग्रन्थ मान्य हैं. परन्तु उनमें धूर्तता व्यय कर धूर्तोंने जो श्लोक डाल दिये हैं, वह केवल अमान्य हैं.

जबतक पंडितजी अपना पक्षपातका नेत्र बंद नहीं करेंगे, तबतक उनके मनमें ऐसाही रहेगा. किसी भी शास्त्रमें पंचामृताभिषेककी मान्यता उन्हें दिखेगी; तो वह श्लोक किसी नवीन धूर्तने वहां घुसेड़ दिये है. ऐसा कहनेमें वह कभी पीछे रहनेवाले नहीं है. कारण वह श्लोक यदि वे मान्य करें तो फिर उनके दुराग्रहके खोये जानेकी पाली (बारी) आ जावे—परन्तु पंडितजी यह विधान करते समय यदि थोड़ा दूरतक विचार करते तो, यह विधान करनेकी कल्पना उनके मुंहमेंसे हवाकी तरह न जाने कबकी निकल गई होती, परन्तु दूरतक विचार करै कौन? पंडितजीने जो एक बार पकड़ा उसका छोड़ना बहुत कठिन है. फिर ऐसे स्थानमें विचार रहे कहां? जो ग्रंथ सर्व भारतवर्ष (हिंदुस्थान) भरमें प्राचीन समयसे फैल रहे हैं, उन सर्व ग्रन्थोंके मध्यमें एकाधा नवीन श्लोक मिला देना साध्य हो सक्ता है क्या? कदाचित्‌ एक दो ठिकानोंके ग्रन्थोंमें एक आदि श्लोक डाल देना माना जा सक्ता है. परन्तु सब जगहके ग्रन्थोंमें यदि वह श्लोक एकसे मिल सक्ते हैं, तो फिर पंडितजीके ऊपरी विधान फंसानेके है ऐसा कौन नहीं कहेगा! अच्छा, एक आदि ग्रन्थसम्बन्धमें यदि उनका मत है तो एक आदि उन्होंने अवश्यही देखा होता; परन्तु पंचामृताभिषेक तो अनेक ग्रन्थोंमें सर्व जगहोंपर लिखा है, तो अब उन सर्व ग्रन्थोंके सम्बन्धमें पंडितजीका ऐसा मत किसीको भी ग्राह्य होनेवाला नहीं है. प्राचीन कालमें मुद्रणकला (छापेकी विद्या) भी नहीं थी, तो उन प्राचीन ग्रन्थोंके विषय

ऐसी वक्रदृष्टिसे देखना बिलकुल योग्य नहीं है. यह विधान केवल अशक्य है, इतनाही नहीं बल्कि बिलकुल अशक्य है. इसमें कुछ भी संशय नहीं है. हम केवल पंडितजीके वचनोंपर विश्वास करके पंचामृताभिषेक विषयके श्लोक धूर्तोंने मिला दिये हैं; ऐसा जानें. और फिर पंडितजी अभक्ष्य भक्षण करते हैं. तथा कहें कि अभक्ष्य निषेधक श्लोक नवीन धूर्तोंने डाल दिये हैं, तो वह भी हमको जबर्दस्ती मानने पड़ेंगे. धूर्तोंके मिलाये हुए श्लोक एक स्थानके ग्रन्थोंमें मिल सक्ते हैं. सर्व स्थानोंके अलग अलग ग्रन्थोंमें एकसारखे मिलाना यह कार्य धूर्तोंसे कभी भी होनेवाला नहीं है. तो अब पंडितजीके उक्त विधान कितनी धूर्तताके हैं, यह पाठकोंको फिरसे कहनेकी आवश्यक्ता नहीं है.

९. फिर पंडितजी लिखते हैं कि, जिनमें आगम, अनुमान, व प्रत्यक्ष प्रमाणोंका मेल रहता है वही वाक्य मान्य हैं. अब पंचामृताभिषेकके निषेध सम्बन्धमें इन तीनों प्रमाणोंका मेल है क्या? देखो!

आगम प्रमाण—पंचामृताभिषेकके निषेध सम्बन्धमें आगममें (शास्त्रोंमें) प्रमाण नहीं है. यह पंडितजीही स्वीकार करते हैं. परन्तु कहते हैं कि जिसकी विधि हो, उसका निषेध होता है. इस सम्बन्धका वादमें पुनः लिखनेवाला हूं. अब उलटपक्षी (अभिषेककी विधिमें) पहिले अंकमें दिये हुए प्राचीन शास्त्र प्रमाण पंचामृताभिषेककी विधिसम्बन्धकेही हैं, तो आगमप्रमाण देखनेसे पंचामृताभिषेक करना यह सिद्ध होता है.

यहां पंचामृताभिषेकके विधिसम्बन्धमें एक अन्तिम शास्त्रोक्त प्रमाण देता हूं. जिन **वसुनंदी** आचार्यका प्रतिष्ठासार पंडितजीने प्रमाणरूप दिया है, उन्हीं आचार्यके बनाये हुए श्रावकाचारमें यह प्रमाण है. जहां काल पूजाका वर्णन लिखा है. देखिये!

गाथा.

इक्खुरस सप्पि दहि खीर गंधजल पुण्णाविविह कलसेहि। णिसि जागरंच संगीय णाटयाइहि कायव्वं ॥ ४५५ ॥ णंदीसुर अट्ठ दिवसेसुतहा अण्णेसु उचिय पव्वेसु जं किरईजिणमहिमा विण्णे या काल पूजासा ॥ ४५६ ॥

टीका—इक्षुरस घृत दधि दुग्ध सुगंध जल पूर्ण विविध कलशैः ॥ निशि जागरणं संगीत नाटकादि कर्तव्यम् ॥ ४५५ ॥ नंदीश्वराष्ट दिवसेषु तथा अन्येषु उचित पर्वसु ॥ या क्रियते जिन महिमा विज्ञेया काल पूजासा॥४५६॥

अर्थ—इक्षुरस, घृत, दही, दूध, सुगंधजल इन करके भरे हुए नाना प्रकारके कलशोंसे जिनेश्वरकी प्रतिमाका अभिषेक करना व रात्रि जागरणकर संगीत नाटक वगैरह कराना नन्दीश्वरके आठ दिवसोंमें व इसीप्रकार अन्य पर्वोंमें जो जिन महिमा प्रकट की जाती है, सो काल पूजा समझना.

अनुमान प्रमाण— अब पंडितजीका किया हुआ अनुमान प्रमाण कहांतक ग्राह्य है, यह देखिये! पंडितजी निर्मित अनुमान प्रमाण जिस पायेपर रचा गया था, वह पाया पोल ठहराया जा चुका है. अर्थात् उनका अनुमान प्रमाण

यथार्थ नहीं है. अच्छा! अनुमान प्रमाण जब है, तब वह शास्त्रोंके अनुसार होना चाहिये. पंडितजीको तो शास्त्र कबूलही नहीं है, तब उनका अनुमान प्रमाण कैसे ग्राह्य होवे? अनुमान प्रमाण यदि हुआ तो वह एकादि अल्पज्ञानी मनुष्य का किया ग्राह्य होता नहीं. पीछे पक्षपात करके निस्तेज हुए नेत्रोंमें अविचारका चश्मा लगानेवाले पंडितजीका अनुमान प्रमाण कैसे ग्राह्य होवे? अनुमान प्रमाणसे शास्त्रोक्त प्रमाण प्रथम चाहिये. केवल हमारा अनुमान प्रमाण सत्य मानों, ऐसा कहना मानों केवल अरेरावीपणा (मूर्खता) है. अनुमान प्रमाण करनेवाला पंडित सुज्ञ, विद्वान, निष्पक्षपाती व सुवचनी होना चाहिये. पंडितजीके निष्पक्षपातीपनेकी तो सबको खातिरी होगई है, व उनके मनोविरुद्ध लिखनेवालेपर व आचरण करनेवालेपर वाक्प्रहार करने हेतु उनकी लेखनी बहुतही गुंतून (गुंथ) गई है. इसपरसे पंडितजी कितने सुवचनी हैं, यह स्पष्ट दीखता है. तब ऐसे आवेशी पक्षपाती व अरेरावी मनुष्यके अनुमान प्रमाणपर भला कैसा विश्वास करना? पंडितजीके वचनोंपर हमारा विश्वास जमता नहीं है. इसकेलिये हम निरुपाय हैं. कारण पंडितजी लिखते हैं कि, नानाप्रकारकी परीक्षा करके भ्रम मिटालेना चाहिये. अब हम परीक्षा करके देखते हैं तो पंडितजीके अनुमान प्रमाण बहुतही लंपटतापणेके है, ऐसा स्पष्ट जाना जाता है. अब पंचामृताभिषेकके विधिसम्बन्धसे आगमप्रमाणके अनुसार अनुमान प्रमाण किये तो पंचामृताभिषेक करना यही सिद्ध होता है.

प्रत्यक्ष प्रमाण—अब यहां पंडितजीने पंचामृताभिषेकके निषेधके प्रत्यक्ष प्रमाण कुछ नहीं दिये है. तो विधि सम्बन्धसे प्रत्यक्ष प्रमाण देखें! प्रत्येक गांवमें प्रायः प्रतिदिन मंदिरोंमें पंचामृताभिषेक होता है. परन्तु कहीं दुर्दैवके कारण यदि दररोज नहीं भी हो सक्ता हो, तो भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशीके दिन तो सर्वत्रही होता है. यह क्या प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं हैं? अर्थात् पंडितजीके वचनोंके तन्हिों प्रमाणोंका बिल्कुल मेल न बैटनेसे वह अमान्य ठहरते हैं. पंचामृताभिषेकके विधि सम्बन्धमात्रसे तीनों प्रमाणोंका मेल बैठे तो वही मान्य है. ऐसा अब निःसंशय कहना पड़ता है.

१० पुनः पंडितजी लिखते हैं कि, धोखा देकर भ्रातृवर्गोंको सन्देह समुद्रमें डालना विद्वानोंका कर्तव्य नहीं है.

जो कर्तव्य विद्वानोंको नहीं है पंडितजी स्वतः करनेको तयार हो गये हैं, तो अब उन्हें क्या विशेषण देना, यह समझमें नहीं आता. उनके मनसोक्त अनुमान प्रमाण सर्व शास्त्रोक्त प्रमाणोंकी अपेक्षा ग्राह्य ठहराये गये या क्या? यदि पंडितजीको स्वतः किये हुए खोटे अनुमान प्रमाण अत्यंत सुंदर ज्ञात होते हैं, तो दूसरोंको शास्त्रोक्त प्रमाण उत्तम जान पड़ता है. इसके विषय पंडितजीको इतना बुरा क्यों लगता है? उनका वाक्प्रहार दूसरोंपर लागू न होता विशेष कर तो वह उनकेही योग्य लागू होता है. इसमें कुछ भी संशय नहीं है.

११ पंडितजी लिखते हैं कि **श्री महावीर स्वामी** के पांच सौ पंद्रह वर्ष बाद **लोहाचार्य**

हुए उन्होंने श्री महावीर स्वामीके निर्वाणानंतर आठ सौ दश वर्षके पीछे काष्टासंघको प्रवर्ताया.

उक्त विधानसे ऐसा स्पष्ट दीखता है कि लोहाचार्यकी आयुष्य तीन सौ वर्षसे अधिक होना चाहिये. तीन सौ वर्षकी आयु होना पंचम कालमें बहुतही कठिन है. यह प्रमाण पंडितजीकी इंद्रनंदीकृत नीतिसार में है, ऐसा कहते हैं. परन्तु वहांका श्लोक देनेमें पंडितजीको क्या कठिनता मालूम पड़ी! शुद्ध संस्कृत उनपर लिखते नहीं बनता कदाचित इसांसे नहीं दिया, अथवा उसमें कुछ (गौडबंगाल) फेरफार होगा इससे नहीं दिया है?

केवल ग्रन्थका नाम मात्र दर्शन कर लोकोंके फंसानेकी यह युक्ति पंडितजीने बहुत अच्छी साधी है. उन्होंने वहां श्लोक देनेमें क्या हानि समझी? क्या वह ग्रन्थ मिला नहीं इसलिये उसके स्थानपर अपने मनसोक्त वचन लिख मारे?

१२ पंडितजी लिखते हैं कि, मूलसंघ व काष्टासंघमें पंचामृताभिषेककाही भेद है.

यह भेद उन्होंने किस ग्रन्थके आधारसे लिखा यह स्पष्ट नहीं किया. इस विधानके करनेमें यदि वह शास्त्राधार देखते तो उनसे यह विधान कभी नहीं होता. कारण उनका लिखा हुआ भेद किसी भी ग्रंथमें आजपर्यंत नहीं निकला है. यदि श्री उमास्वामीके श्रावकाचारमें पंचामृताभिषेकके सम्बन्धकी विधि है. तो पंचामृताभिषेक काष्टासंघकी उत्पत्तिके पूर्वमें था यह सिद्ध होता है. कारण उमास्वामी यह सम्वत् १३९ में हुए थे.

यहमूलसंघसे व काष्टासंघसे आजपर्यंत चलाआया नवीन भेद पंडितजीने अपनी विलक्षण कल्पना शक्तिका उपयोग कर शोध करके निकाला है. तो वह ग्राह्य किंवा अग्राह्य है. इस विषयका विचार वाचकगण ही करें.

१३ पंडितजी लिखते हैं कि विधि हो तो उस विधिका निषेध शास्त्रोंमें रहता है. इस विधिके सम्बन्धमें पंडितजीनें अपनी दृष्टि थोडी दूर पर यदि फेंकी होती. तो यह उनकी चूक विना दृष्टिमें आये नहीं रहती. जिसवक्त स्वेताम्बर पंथ उत्पन्न हुआ उस समयके तत्कालीन अथवा उसके पश्चात हुए आचार्योंनें दिगम्बर आम्नायी लोगोंके मनमें संन्देह न उत्पन्न होवें इससे दिगम्बर व स्वेताम्बरोंका भेद स्पष्ट लिख दिया है इसी प्रकार काष्टासंघकी उत्पत्तिके अनन्तर तत्कालीन आचार्योंनें मूलसंघ व काष्टासंघके भी भेद कह दिये हैं. वहां अभिषेकका निषेध कहा हुआ होना चाहिये. कारण यह पंचामृताभिषेककी प्रवृत्ति यदि काष्टसंघसे हुई तो तत्कालीन किंवा पश्चात् हुए आचार्योंको उसका निषेध करना आवश्यक था. व यथार्थमें यदि पंचामृताभिषेककी प्रवृत्ति काष्टासंघसेही हुई होती, तो उसका निषेध तत्कालीन मूलसंघाचार्योंने किया होता. तदनंतर आचार्य हुए नहीं, ऐसा नहीं है. बहुतसे आचार्य हुए व उन्होंने ग्रंथभी बहुतसे लिखे हैं. परन्तु उनके एक ग्रन्थमेंभी पंडितजीके पंचामृताभिषकके निषेध बिषयमें प्रमाण नहीं तो क्या यह आश्चर्य नहीं है? परंतु पंचामृताभिषेककी प्रवृत्ति काष्टासंघसे बिलकुल नहीं हुई. यदि इसकी प्रवृत्ति काष्टासंघहीसे हुई होती; तो इसका निषेध अपने आर्ष ग्रन्थोंमें जगह जगह आया होता. जो विधि शा-

स्त्रोंमें है, उसीके अनुसार प्रचारभी है. व उस विधिका यदि शास्त्रोंमें निषेध नहीं किया तो विधि शास्त्र सिद्धही है. इसलिये पंडितजीका उक्त विधान बिलकुल ठीक नहीं.

१४ वाचको! पंडिजीकी निःसंशयावलीका बहुत निरीक्षण किया है. अब कोई २ छोटी मोटी बातोंका निरीक्षण करनेसे रह गया है. वह कार्य आपही कर लेवें, ऐसी मेरी सविनय प्रार्थना है. मैंने अपनी अल्प बुद्धिसे यह लेख लिखा है. मेरा ऐसा कहना नहीं है, कि यही ठीक है. मैं अज्ञ हूं. इस कारण इसमें चूक होनेकी संभावना है. अस्तु. जो परीक्षा करनेसे योग्य ठहरे वही ग्रहण करो. किसीभी विषयका योग्यायोग्य विचार करना हो तो शास्त्रोक्त प्रमाणसे करो. केवल पंडितजीके पक्षपातसे किये हुए विधानोंपर विश्वास कर मत फंसो. उससे तुह्मारा अकल्याणही होना है. इस विषय सुज्ञ जनोंको अधिक लिखनेकी आवश्यक्ता नहीं. अन्तमें कष्ट देनेके बदले क्षमा मांगता हुआ आज्ञा लेता हूं.

Yours faithfully,

JAYAKUMAR DEVIDASS CHAWBOY, B.A.

Nagpur, C. P,

नोट—पंचामृताभिषेकके खंडन मंडन सम्बन्धी लेख और लेखकोंके बीचमें किसी प्रकार हस्तक्षेप करनेकी हमारी इच्छा नहीं है. और न हम उनको एकदम प्रमाणित व अप्रमाणितही कह सक्ते हैं. परन्तु इतना अवश्य अनुरोध करते हैं कि इस प्रकार परस्पर असद्वाक्योंके तीव्र असभ्य प्रयोग करना सर्वथा बुद्धिमानीसे बाहिर वितंडावाद केतुल्य है. अतः आशा की जाती है कि इस निर्णनीय विषयके सत्यासत्य विचारपर निष्पक्षपातसे लेखनी चलानेवाले महाशय शान्तिरूपसे लोकप्रिय वचनोंही में जो कुछ लिखना चाहें लिखें. जिसमें उनकी विद्वत्ता किसीके कषायभाव उत्पन्न करनेका कारण न बनने पावे.

सम्पादक.

मित्रके मित्रत्वमें शंका.

जैनमित्रमें पंचामृताभिषेक सम्बन्धी लेखोंको प्रकाशित होते देख उक्त विषयके अनुरोधी और प्रतिपादी दोनों पक्षवालोंके चित्तमें एक व्यर्थ शंकाने स्थान पा लिया है. उसीका निवारण करना इस लेखका उद्देश है.

यह बात सबपर भली भांति प्रगट है कि, जिस प्रदेशकी सभाकी ओरसे यह मित्र प्रकाशित होता है, उसमें तेरहपंथी और वीसपंथी ऐसे दो कल्पित पंथोंसे इंगित होनेवाले जिनका कि नाम किसी शास्त्र व सिद्धान्तमें नहीं है. दिगम्बर सम्प्रदायी जैनी भाई निवास करते हैं, और इन दोनोंहीसे सभाका घनिष्ट सम्बन्ध है. दोनोंही सभासद व्यवस्थापक कार्यकर्त्ता आदि पदोंपर अपनी २ योग्यतानुसार नियुक्त हैं. और दोनोंहीकी कार्य कुशलतासे सभाका तथा इस "मित्र" का कार्य सम्पादन किया जाता है. फिर पाठको! अब क्या आप यह नहीं जान सकोगे कि, दोनों पक्षवालोंका समानही दर्जा है. और इनके द्वारा जो कार्य किया जाता होगा वह निष्पक्षपातसेही होता होगा. ऐसी अवस्थामें यदि हमारे भाइयोंको जैनमित्रके मित्रत्वके विषयमें शंका हो तो कितने आश्चर्यकी बात है? जैन-

मित्र अंक ८ में प्रथम श्रीयुत भाई दरयावसिंह-जीने पंचामृताभिषेकके निर्णय करानेकी इच्छासे पहिले २ लेखनी उठाई. पश्चात् अभिषेकके खंडनमें पं० शिवशंकर शर्म्माका लेख हमको प्रकाशित करना पड़ा. फिर जैनमित्र अंक ११ में एक निर्णिनीषु विद्वानका लेख उसके विपक्षमें प्रकाशित किया गया. पुनः उसका भी खंडन पं. शिवशंकर शर्माकृत जै० मि० अंक १२ में प्रकट हुआ फिर इसके ऊपर जयकुमार देवीदास चवरे बी. ए. का लेख प्रकाशित कर हमने दोनों पक्ष बराबर रख. कई भाइयोंके अनुरोध तथा भाइयोंमें दुराग्रह व अनैक्यता हो जानेके भयसे आगामी इस विषयको बंद रखनेका विचार निश्चय कर लिया था. कारण दोनों पक्षोंके दो २ लेख प्रश्नोत्तर रूप निकल चुकनेसे हमनें अपने ऊपर किसीके पक्षपातका दावा नहीं रक्खा था. और यद्यपि यह विषय हमारी सम्मतिसे निर्णय होना आवश्यक था. परन्तु लाचार गत अंक २ में एक सूचना छपाकर अलग प्रकाशित कर दी थी; कि आगामी इस प्रकारके लेख न छपेंगे. उसके पढनेमेंही हमारे कई एक भाइयोंको इसके मित्रत्वमें शंका आन पड़ी.

पाठको! अब किञ्चित् आपही विचारिये कि इसमें हमारा पक्ष केवल न्यायके अतिरिक्त और क्या रहा? और हमपर नाहक दोष लगाना आपको क्योंकर शोभा देता है? एक प्रकार हानि समझकरही ऐसा प्रबंध किया था. हमारा इसमें कुछ भी अपराध नहीं था. अस्तु आशा की जाती है; कि आप लोग इस शंकाका निवारण शीघ्रही करलेंगे. और यदि यह विषय निर्णयान्ततक चलानाही अभीष्ट हो; तोभी हम सहमत हैं, परन्तु इतनी प्रार्थना अवश्य करेंगे कि, आपसके लेखोंमें ऐसे अश्लील और असद्वाक्योंका व्यवहार न किया जावे. जो द्वेषाग्निको प्रज्वलित कर हानि पहुंचावें. हम यहांपर कई एक चिट्ठियोंके अभिप्रायको प्रकाशित करना आवश्यक समझते हैं. जो दोनों पक्षकी तरफसे आई हुई हैं. और जिनका आशय संक्षेपमें इतनाही है कि, "यह विषय जबतक कुछ निर्णय न हो जावे, अथवा आपकी ओरसे अन्तिम लेख प्रकाशित न हो जावे, किसी एकके आग्रहसे बन्द न किया जावे. नहीं तो इससे आप अमुक पक्षमें समझे जावेंगे. और आपका मित्र समाजमें जैनपत्रिकाके समान अनादरणीय हो जावेगा" आदि, इसप्रकार निर्मूल धमकी देकर जो पुनः लेख चलानेका हमसे अनुरोध किया है, उसका विचार हम अपने जैनमित्रके मित्रोंपरही छोड़ते हैं, ऐसी अवस्थामें जब कि एक ओर यह धमकी, और दूसरी ओर यह भयका समय आन पड़ा है. आपकी यथायोग्य सम्मति पाकरही आगामी इस विषयपर कथन चल सकेगा.

सम्पादक.

पूजनका विषय गौण क्यों है?

(गताङ्कसे आगे)

फिर लेखकार लिखते हैं कि "पूजनका पक्ष वसुनंदि श्रावकाचारमें उत्तमरीतिसे लिखा है"

वसुनंदि श्रावकाचारमें प्रथम श्रावककी ग्यारह प्रतिमाओंका वर्णन कर अन्तमें पूजनका विषय दिया है. इसपरसे अनुमान हो सक्ता है कि उन्होंने भी यह विषय मुख्य नहीं माना है. और फिर

वहांपर भी (पूजन प्रकरणमें) देशवृती यानें अणुव्रत धारण करनेवाले श्रावकको पूजन करना चाहिये, ऐसा लिखा है. देखिये.

एसा छहविहपूजा, णिश्चं धम्माणु रायरत्तेहि।
जह जोग्गं कायव्वा, सव्वेहिं देसविरएहि॥

अर्थ--ऐसी यह छह प्रकारकी पूजा धर्मानुरागमें रक्त देशावृती श्रावकको यथायोग्य प्रतिदिन करना चाहिये!! इसपरसे सिद्ध होता है. कि, प्रथम अणुव्रत धारण करना चाहिये. फिर पूजन करना चाहिये. कारण पूजनसे अणुव्रत धारण करनेमें मुख्यता सिद्ध होती है. जिनसेनाचार्यका भी ऐसाही आशय है. और उन्होंने पूजनविधि ऐसी बताई है कि, "प्रतिमाके समीप तीन अग्निके कुंड स्थापित कर उनमें अग्नि प्रज्वलित करना पश्चात् पूजन करना." वर्तमानमें कोई इन वाक्योंके अनुसार पूजन करनेवाले भी नहीं दिखते हैं. कई तो पूजन किये पीछे निर्माल्य द्रव्य अपने ग्रह लेजाकर खाते हैं. कई उपाध्याय व्यासमाली आदिको नौकरीके बदलेमें देते हैं. कई उसे बेचकर मंदिरको कांचादिसे सजाते हैं. इस प्रकार पद्धति चल रही है. जो न तो वसुनंदि श्रावकाचारमें है. और न जिनसेनाचार्यकी विधिमेंही है. स्वार्थकेलिये पूजनका नाम देते हैं. और उसीके सबबसे सैकड़ों झगड़े खड़े करते हैं. एक कहता है, मेरा हक्क है! इसलिये मैं पहिले पूजन करूंगा. दूसरा कहता है, मैं द्रव्य अधिक देता हूं, मेरीही पहिले होना चाहिये, कोई कहता है, पंचामृताभिषेक होना चाहिये, कोई कहता है नहीं! बिलकुल न होना चाहिये. कोई रात्रिको, कोई दिनको, कोई खड़े होकर, कोई बैठकर, कोई कोई केशर बिना कोई केशर लगाकरही, पूजन करना चाहिये. कहते हैं इत्यादि झगड़े पूजनमें अत्यन्त मुख्यता माननेसे ही खड़े हो गये हैं.

पूजनकी मुख्यता कोई २ जगह उपचारनयसे तथा नैगम और व्यवहारनयसे की गई है. जैसे धर्मध्यान, और शुक्लध्यान यह दोनों मोक्षके कारण हैं, ऐसा तत्वार्थके "परे मोक्ष हेतु" इस सूत्रमें कहा है. परन्तु यहां धर्मध्यानको मोक्षका हेतु गौणता कर उपचारनयसे कहा है. देखिये टीकाकारने खुलासा किया है, "तत्र धर्मध्यानं पारंपर्येण मोक्षस्य हेतुः तत गौणतया मोक्षकारणमुपचर्यते । शुक्लध्यानंतु साक्षात तद्भवे मोक्ष कारण मुपशमश्रेण्यपेक्षयातु तृतीये भवे मोक्षदायकं॥

अर्थ "धर्मध्यान और शुक्लध्यान मोक्षके कारण हैं. परन्तु उसमें धर्मध्यान परंपरा करके मोक्षका कारण है. इससे गौणता करके मोक्षका कारण उपचरित कहा है; और शुक्लध्यान साक्षात् उसही भवमें मोक्षका कारण है. वा उपशम श्रेणीकी अपेक्षासे तीसरे भवमें मोक्षका देनेवाला है" ऐसेही पूजनको भी इतर प्रधान क्रियाओंकी अपेक्षासे गौण समझना चाहिये, ऐसा स्वतः लेखकारके अभिप्रायसे सिद्ध होता है.

लेखकने लिखा है कि, "स्वाध्याय करनेको विद्वत्ता नहीं. पढानेवाला कोई गुरू नहीं. जो पढ़ भी सकते हैं, तो अर्थ नहीं समझते" इत्यादि. यह भी कथंचित् सत्य है. सर्वथा सत्य नहीं है, कारण स्वतः उन्होंने रविषेणाचार्य कृत पद्म-

पुराण, वसुनंदिश्रावकाचार, उपदेशसिद्धान्त रत्नमाला आदि ग्रन्थोंका स्वाध्याय किया है, तब ही यह लेख लिखा है. उनको स्वाध्याय करनेकी विद्वत्ता भी है, पढ़ानेवाला गुरूभी मिला है. वह पढ़ भी सक्ते हैं, और अर्थभी यहांतक समझ सक्ते हैं, कि "श्री समन्तभद्रस्वामी आचार्य थे. उनका जितना कर्तव्यथा लिखा. एक पूजनका विषय पूर्ण नहीं लिखा तो क्या, उससे उनका व पूजनका महत्व घट गया ! कभी नहीं ! यह आपकी भूल है" इत्यादिसे इस विषयका आप निर्णय भी कर देते हैं. और फिर लिखते हैं "पूजन विषयका शीघ्रही निर्णय होना" सो आपकेलिये निर्णय तो तब होना, जब आपने स्वतः न कर लिया होता. अब निर्णय करनेको अवशेषही क्या है ? आपके लेखसेही इस विषयका निर्णय हो चुका है. सो इसलेखके अनुसार पूजनके विषयको इतर प्रधान क्रिया जो सम्यक्त, स्वाध्याय, सामायक, प्रतिक्रमण, ध्यान, जप, तप, दान, संयम, देशवृत इत्यादिसे गौण है, मानना चाहिये. ऐसा माननेसे तेरहपंथ व वीसपंथके पक्ष मिट जावेंगे. और आपसके पूजनके झगडे समाधान होकर सब जैनी भाइयोंमें ऐक्यता बढ़ेगी. इति.

(सही.) नानचन्द खेमचन्द
शुक्रवारी पैठ, शोलापुर.

चिट्ठी पत्री.

प्रेरित पत्रोंके उत्तर दाता हम न होंगे.

श्रीयुत, पंडित गोपालदासजी बरैया, सम्पादक, जैनमित्र,

जयजिनेंद्र ! कृपाकर निम्न लिखित लेखको अपने पत्रमें स्थानदान दीजिये.

एक धूर्तकी धूर्त्तता.

अनुमान १ माह हुआ, श्री अतिशयक्षेत्र कुंडलपुरजीकी सहायताके लिये द्रव्य एकत्र करनेके लिये एक पुरुष जिसकी आयु १९,२० वर्षकी होगी, साथमें एक वही लिये हुए यहां आया था. और सर्व भाइयोंसे कहता फिरता था; कि वहां एक धर्मशाला व कोटका कार्य चल रहा है. उसमें अन्य भाइयोंकी तरह जिन्होंने इस वहीमें लिखे अनुसार द्रव्य दी है. आपको भी देना चाहिये. कहीं २ दो चार ग्रामानिवासी भाइयोंके दस्तखत व चंदा लिखा हुआ था. इसके सिवाय वह यह भी कहता था. कि यदि विश्वास न हो; तो अमुक पुरुषके नाम कुंडलपुरजीको मनीआर्डर कर दीजिये. और मुझे सिर्फ आगेके मुकाम तकका खर्च दे दीजिये.

उसकी इस तरहकी बातोंपर हमको कुछ संशय हुआ. तो उससे कह दिया; कि कलदिन कुछ यत्न कर देंगे. उसी रात्रिको वह पुरुष न जानें कहां छू मन्तर हो गया कि, अभीतक कुछ पताही नहीं है. इसके पीछे हमने उक्त तीर्थके प्रबन्धकर्त्ता सेठ बलदेवदासजी दमोहको यह समाचार लिखे. जिसका उत्तर मिला कि, न तो हमारे यहां कोई कार्य प्रारंभ है, न कुछ द्रव्यकी आवश्यक्ताही है. और न हमने किसीको इस अर्थ कहीं भेजा है. वह अवश्यही कोई ठग होगा.

अब हम सर्व भाइयोंको सूचित करते हैं. कि यदि उक्त धूर्त कहीं आपके यहां पहुंचे. तो

उसपर किंचित् विश्वास न करें. और न कुछ दंड दिये या निर्णय किये बिना उसको छोडें.

आपका शुभचिंतक,
घासीरामसा मंत्री.
जैनहितैषिणी सभा-खंडवा

जैन इतिहास सोसाइटीका मान

उक्त सोसाइटीके अल्प दिनके परिश्रमसे प्रथम भाग पुस्तकके रूपमें जो एक फल निकला है, वह यथार्थमें यह प्रदर्शित करता है, कि संसारमें परमार्थ बुद्धिसे किया हुआ परिश्रम अवश्यही सर्वसाधारणद्वारा श्लाघनीय होता है. तथा उसका फल व्यर्थ नहीं जाता. देखिये! यद्यपि अभी यह सोसाइटी अप्रौढावस्थामें है. और तिसपर पूर्ण विद्वानों व धनवानोंकी इसमें पूर्ण सहायता नहीं है. तौ भी इस परमादरणीय जैनधर्मके प्रभावसे वह विदेशी विद्वानोंकर माननीय हुई है. रायल एशियाटिक सोसाइटी उक्त पुस्तककी प्राप्ति स्वीकार इस भांति लिखती है, जिसका उल्था हम नीचे प्रकाशित करते हैं. और यूरोपीय विद्वानोंके निष्पक्षपात समाजको शुद्ध अंतःकरणसे धन्यवाद देते हैं. और आशा करते हैं कि, उक्त समाज हमारी इस बाल सभाके कर्तव्योंमें यथोचित सहायता करता रहेगा. अन्तमें बाबू बनारसीदासजी एम्. ए. हैडमाष्टर विक्टौरिया कालेज लश्करको धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सक्ते. जो इस जैन सोसाइटीके मुख्य कार्य कर्ता हैं तथा जिनके अमूल्य समयको व्यय कर यह प्रथम फल हमारे जैन समाजको सहजहीमें प्राप्त हुआ है.

सम्पादक.

THE ROYAL ASIATIC SOCIETY,
22, ALBEMARLE STREET.
LONDON W.
27th October, 1902.

Dear Sir,

You will have received the official acknowledgment of the receipt of No. 1 of the Jain Itihas Society.

May I add my personal congratulations to you, and express my most earnest hope that the Society will go on and prosper.

The Jain texts are of the utmost importance for the history of India and we, European scholars, shall be most thankful for any information the Jains may be pleased to collect.

You are a little hard on European scholars in your lecture. If they are ignorant, it's their wish to learn, and hitherto the Jain Community has done very little to remove misconceptions. It is good news to us that the Community is at last becoming alive to its own interests. It has had a most distinguished past in the history of India, and the present undertaking of the Itihas Society will redound to its credit.

I trust you will keep us informed of the work of the Society. I shall put a notice of the Itihas Society in the next issue of this Society's Journal, and if we can help your Society in any way in the distribution or sale of its books, we shall be very pleased to do so.

Yours faithfully,
(Sd.) T. W. Rhys Davids.

रायल एशियाटिक सोसाइटी.

२२ आल्बेमार्ले रस्ता ३१.

लंडन, वेस्ट.

१७ अक्टोबर १९०२.

प्रियवर महाशय !

आपको हमारी सोसायटीसे अपने जैन इतिहास सोसायटीके पहले अंकके पहुँचकी रसीद मिली होगी.

मैं आपको अपनी तरफसे इस विषयमें अनेक धन्यवाद देता हूं. और दृढ आशा करता हूं; कि आपकी यह सोसायटी इसी तरह चलती रहेगी. और वृद्धि पावेगी. और फले फूलेगी.

हिन्दुस्थानके इतिहासके वास्ते जैन इतिहास अत्यंत महत्वका है. और जैनी लोक इस इतिहासके विषयमें जो जो खोज करते जायगे उसवास्ते हम यूरोपीय पंडित उनके बहुतही ऋणी होवेंगे.

आपने अपने निबन्धमें यूरोपीय पंडितोंपर कुछ टेढी निगाह की है. लेकिन जोभी वेइस विषयमें मुग्ध हैं; तोभी इस विषयका ठीक २ ज्ञान हो जानेको (यदि कोई करादे) वे तयार हैं. और इस समयतक जैनलोगोंनेभी हमारे विरुद्ध ज्ञानके दूर करनेकी चेष्टा नहीं की थी.

इस समय आपकी मंडळी अपने हितके लिये तैयार हुई है. यह परम सौभाग्यका विषय है. प्राचीन समयमें हिन्दुस्थानमें जैन मंडळीनें अनेक प्रशंसनीय कृत्य किये हैं. और हालमें जो काम इतिहास सोसाइटीनें हाथमें लिया है वह उसे सन्मानपात्र करेगा.

आशा है कि आप अपनी सोसायटीका कार्य जिस प्रकार होता जायगा. उस प्रकार हमें विदित करते रहेंगे. मैं अपने अग्रिम मासिकपुस्तकमें आपकी इतिहास सोसायटीकी प्रसिद्धि करूंगा. और यदि आपको पुस्तक बांटने और बिकवानेमें हमारी मदतकी आवश्यकता हो. तो हम लोक खुशीके साथ जितनी हो सकेगी. उतनी मदद देवेंगे ॥

आपका विश्वासपात्र

टी डब्ल्यू. ह्रीसडेविड्स्.

कर्नाटक प्रदेश.

प्रांतिक उपदेशककी रिपोर्ट.

[गताङ्कसे आगे.]

ता. २२ अक्टूबरको इंडी आया. सेठ माणिकचन्द जादोंजीके मकानपर आदरपूर्वक ठहरा. दो सभा हुई. ३०—४० श्रोता उपस्थित हुए थे. कुगुरु, कुदेव, कुधर्म और शीलवृत्तके व्याख्यान हुए. ६ भाइयोंने स्वाध्यायका नियम लिया. पाठशाला स्थापन करनेका विचार आगामी सभापर जो प्रति शुक्ल चतुर्दशीको होती है, रक्खा गया. यहां ४० घर हूंमड़ व पंचम श्रावकोंके व दो श्री मंदिरजी हैं. एक मंदिर बहुत प्राचीन कालका है.

२४ को बीजापूर आकर सेठ नाथारंगजी गांधीके यहां ठहरा. तीन सभा कीन्हीं. जिनमें पंचाणुव्रतादि विषयोंपर व्याख्यान दिया. कई भाइयोंने स्वाध्यायका नियम लिया, पाठशाला स्थापन करना स्वीकार किया. सभा सर्व मंडळीके उपस्थित होनेपर प्रायः होती है. इस शहरमें २ मन्दिर और जैनियोंके १२ घर हैं.

२९ को हुबली आया. प्लेग प्रकोपसे सभा न हो सकी.

२ नवम्बरको श्रवणबेलगुल (जैनबद्री) आया. यहां भी प्लेगका जोर था. लोग शहर छोड़कर दूर जंगलमें जा बसे थे. अतः मैं भी घरचट्टे चन्द्रप्पाश्रेष्ठीके बागमें ठहरा. भिन्न २ स्थानोंमें ९ सभा कर अहिंसा, षटकर्म, जीवद्रव्य, अजीवद्रव्य सृष्टिके अकृतिमपनेपर व्याख्यान दिये. प्रायः पचाससाठ भाई सभामें आते थे ९ भाइयोंने स्वाध्याय अष्टमूल गुण धारण, ९ स्त्री १ पुरुषने सप्तव्यसन त्याग अष्टमूलगुण ग्रहण किये. इत्यादि कई भाइयोंने यथाशक्ति प्रतिज्ञा लीन्हीं. मेरे व्याख्यानके अनन्तर पंडित दौर्बलिजिनदास शास्त्री व चन्द्रप्पा श्रेष्ठीने कर्नाटक भाषामें मेरे व्याख्यानका अनुवाद (Translation) करके सुनाया. कारण यहांके कई भाई हिन्दी भाषासे अनभिज्ञ हैं. उक्त दोनों महाशयोंने मुझे बहुत कुछ सहायता दी. एक २ मीलपर मेरेसाथ नित्य सभा करने दोनों वक्त जाया करते थे, जिससे मैं उनका बड़ा आभारी हूं.

यहां पर गीर्वाणभाषोज्जीवनी जैन पाठशालाके नामसे एक पाठशाला है. जिसके प्रधानाध्यापक उक्त शास्त्रीजी हैं. पढ़ाई प्लेगके कारण अभी ठीक नहीं होती है. यहां शहर व दोनों पर्वत आदि स्थानोंमें ३४ मंदिर हैं. जिनमें बड़ी २ अवगाहनाकी अति प्राचीन प्रतिमा विराजमान हैं. एक पर्वत पर श्री गोमटेश्वर (बाहूबलि) स्वामीजीकी मूर्ति १८ धनुष प्रमाण खड्गासन अति मनोज्ञ सुशोभित हैं; इस प्रतिमाकी पूजन प्राचीन समयमें राम रावणादि किया करते थे, और इसी दंडक बनमें लोप हो गई थी, पश्चात् विक्रम सम्वत् २२९ में चामुंडरायको स्वप्न देकर प्रगट हुई है, ऐसा यहांके लोग कहा करते हैं. इस स्थानमें अनेक प्राचीन शिलालेख मिलते हैं. इन सबका खोजकर एक अंग्रेज विद्वानने इंग्लिशमें "श्रवणबेलगोला" नामकी एक बड़ी भारी इतिहासकी पुस्तक छपाई है. कमित ८) के अनुमान है. यहांके मंदिरोंके आगे बड़े २ मान स्तंभ हैं, नगरके १ मंदिरमें राजा चन्द्रगुप्तके स्वप्न तथा उनके भाव लक्षणोंकी अच्छी कारीगरी की गई है. (विशेष समाचार स्थानकी संकीर्णतासे त्याज्य किये गये हैं.)

तारीख ८ को हास्सन आया. श्रीयुत पसारी धरनप्पा सेठीके प्रबंधसे सभा कीन्हीं. अनुमान १०० भाई उपस्थित हुए. पंचपापोंपर एक व्याख्यान दिया. सभा पाठशालादिके लिये प्रेरणाकी. कर्नाटकी पंडित मिलनेपर प्रारंभ की जावेगी, ऐसा संतोषदायक उत्तर मिला. उक्तग्राममें २ मन्दिर व जैनियोंके ८० घर हैं.

तारीख ९ को हलेबिड आया. मंदिरमें शास्त्रसभा कीन्हीं. यहांपर ३ मंदिर लक्षों रुपयोंकी लागतके बड़े मनोहर हैं. पाषाणके अच्छे २ सुन्दर स्वच्छ स्तंभ है. जिनमें नानाप्रकारके चित्र दिखते हैं. ९ घर जैनी भाइयोंके है.

ता० १४ को धर्मस्थल आकर (राजा) आपचंदप्पा हिगडेके ठहरा. उक्त महाशय बड़े सज्जन हैं. अपने उदार भावसे बम्बई प्रांतिकसभाकी लाइफमेम्बरीका १००) वाला फार्म भर दिया. परन्तु कारणवश पीछेसे भेजनेको

कहा. और १ फार्म १२) का नेमनसेठीजीनें भरा. रात्रिको शास्त्रसभा कीन्हीं. यहां २ मंदिर और ४ घर जैनी भाइयोंके है.

[शेषमग्रे.]

रामलाल उपदेशक,

समाचार संग्रह.

श्री जिन बिम्बप्रतिष्ठाओंका समूह.

शोलापूर,

गताङ्कमें शोलापुरकी बिम्बप्रतिष्ठाके समाचार हम अपने पाठकोंको श्रवणकरा चुके हैं. तथा उक्त उत्सवमें हमारी दिगम्बरजैनप्रान्तिक सभाके होनेवाले द्वितीय वार्षिकोत्सवके आनन्दप्रद समाचारकी सूचना भी पाठकगण पा चुके हैं. निश्चयकर यह मंगलोत्सव दर्शनीय तथा वर्णनीय होगा. हमारे सज्जन धर्मात्मा भाई इस महोत्सवमें बिना सम्मिलित हुए न रहेंगे, ऐसी आशा की जाती है, इसका शुभ मुहूर्त माघ सुदी ९ नजदीक आता जाता है. प्रतिष्ठाकी तय्यारियां शीघ्रताके साथ हो रही हैं. कलके घोड़ोंका रथ भी बन चुका हैं. रंग वगैरहका कार्य अवशेष है.

इन्दौर.

इसी माघ सुदी ९ को इन्दौरके सुप्रसिद्ध सेठ हुकमचन्दजीके यहांभी प्रतिष्ठा होनेवाली है, मालवा प्रान्तका इन्दौर एक मुख्य स्थान है इसीसे यहांपर और स्थानोंकी अपेक्षा यात्रियोंकी भीड़ अधिक होनेकी संभावना है, कमसेकम २९ ३० हजार भाई एकत्र होंगे, ऐसा अनुमान किया जाता है प्रतिष्ठाकारक **न्याय दिवाकर पं. पन्नालालजी** जारखी जो हमारी समाजके एक शिरोरत्न हैं, नियत किये गये हैं, यह प्रतिष्ठा भी बड़े समारोहके साथ होनेवाली है, प्रान्तके अतिरिक्त दूसरे प्रान्तोंके भी अनेक साधर्मी भाई पधारेंगे, ऐसी आशा की जाती है. उक्त उत्सवकी कुंकम पत्रिका जो सब जगह पहुंची होगी. द्वारा प्रतिष्ठाकी और सब संतोषजनक तय्यारियोंसे सन्तुष्ट हो. एक विशेष समाचार सुन कर हमको क्लेशित होना पड़ता है. और जिसके शीघ्रही योग्य प्रबन्ध करनेकी सम्मति प्रतिष्ठाकारक सेठजीको दिये विना हम नहीं रह सक्ते हैं.

श्रवणगोचर हुआ है कि जहां इस प्रतिष्ठाका स्थान नियत किया गया है. वहांपर यात्रियोंके ठहरनेके लिये कुछभी प्रबन्ध नहीं किया गया है. और न उस स्थानमें इतना अवकाशही है. जिसमें एकत्र यात्रियोंकी अविरल भीड़ बिना कष्टके समा सकें. यशवंतगंज (मल्हार गंजके निकट) के मैदानमें प्रतिष्ठाका मंडप बनाया सुना है, यदि यात्री लोग स्थानकी संकीर्णताके कारण वहां न ठहर वस्तीके घरोंमें टिकेंगे. तो उन्हें अधिक कष्ट होगा इसके सिवाय प्रतिष्ठाकी शोभामेंभी हानि होगी. गत वर्ष जो कलशोत्सव वहां हुआ था. जिसमें मनुष्योंकी संख्याभी कुछ अधिक नहींथी. और यात्रीस्थानकष्टसे दुःखित हुएथे. तो फिर इस महोत्सवमें इस विषयकी शंका करना अनुचित नहीं हैं. यदि सचमुचमें यह समाचार सच्चा है, तो दर्शकोंके लिये अवश्यही भयका कारण है. क्योंकि मावके माहमें जब शीतका पूर्ण प्रसार मनुष्योंके लिये वैसेही दांत बजानेवाला होता है. और यदि उसपरभी जगहका ठीक २ बन्दोबस्त न होवे. तो कितना क्लेशकारक

होता है. इसका विचार पाठक स्वयं करलेंगे. आशा है कि, हमारे मान्यवर सेठजी इसका शीघ्रही प्रबन्ध कर हमको सूचना दे हर्षित करेंगे. ताकि आगामी अंकमें इसका पूर्ण विवरण सर्व साधारणपर विदित हो जावे. तथा स्टेशनपर यात्रियोंको उतरनेके लिये क्या प्रबन्ध किया गया है? सोभी प्रकाशित करें. क्यों कि आजकल प्लेगादिके कारण यात्रियोंको स्टेशनपर बड़ा कष्ट उठाना पडता है.

करहल (मैनपुरी.)

तृतीयविम्ब प्रतिष्ठा इसी माघ सुदी २ से ६ तक करहलमें होने वाली है. इसके कर्त्ता श्रीमान **संघी माणिकचन्द पन्नालालजी** एक प्रतिष्ठित पुरुष हैं. प्रतिष्ठाचार्य बाबा दुलीचंदजी जयपुर निवासी तथा सुप्रसिद्ध पं. भादोंलालजी करहल निवासी हैं. प्रतिष्ठाकी विधि श्री वसुविंदाचार्य (जयसेन) कृत प्रतिष्ठाके अनुसारकी जावेगी. उक्त प्रतिष्ठा पाठके विशेष समाचार हम ज्ञात होनेंपर प्रकाशित करेंगे. आज इसी सम्बन्धमें कुछ लिखनेका विचार हैं. आशा हैं. कि उक्त प्रतिष्ठाकारक तथा अन्य पंडितजन इसपर विचार कर हमारा परिश्रम सफल करेंगे.

प्रियपाठको! इस वृहत वसुंधरापर जितनें आस्तिक नास्तिक धर्म है. उन सबके अनुयायी अपनें प्राचीन सिद्धान्तोंके अनुशासनानुकूलही लौकिक पारलौकिक कार्योंमे प्रवर्तन करते है. तथा अपनी शक्तिभर उनके वचनोंको पुष्ट करनेंकाही प्रयत्न कर कृत कृत्य होते है. चाहे उनके आचार्योंकी आज्ञा समीचीन हो. या असमीचीन. उनकी आज्ञाका उल्लङ्घन करनाही एक महानपातक समझा जाता है. फिर यदि कोई अपनी इच्छानुकूल प्रवर्तनकर और उसकी परंपराय चलानेंको उद्यत होजावे. तो उसके पापका ठिकानाही क्या है? परंतु ऐसें कार्य करनेपर आरूढ़ होनेवाले प्रायः कम दृष्टिगोचर होते हैं, हां! दयानन्द ऐसे पुरुषोंकी बात दूसरी है, जो मनोऽनुकूलही एक २ स्त्रीको ग्यारह २ पति करनेका वारंट निकाल गये, परंतु तौ भी देखिये! दयानन्दके जितने अनुयायी हैं, अपने आचार्यही (दयानन्द) की आज्ञानुसार प्रवर्तन करते हैं, सारांश यह कि प्राचीन पद्धति पर चलनाही सबको इष्ट है.

स्वामी दयानन्दजीने जो मार्ग चलाया. उसका कारण केवल यही था. कि उनके धर्म ग्रन्थोंमें परस्पर विरोध पाया जाता था. जिससे उनको अपने आप्तमें दूषण लगनेका भय था. परन्तु जो धर्म पूर्वापरविरोध रहित, अमुल्लङ्घ, तत्वोपदेशी, और सर्वको हित कारी हो, उसमें यदि किसीको उक्त स्वामीजी सरीखी नूतन सिद्धांत सृष्टि बनानेकी आवश्यक्ता पड़े. तो कितनें आश्चर्यकी बात है? जिस धर्ममें आप्तके वाक्योंसे एक मात्रा मनोक्त हीनाधिक कहनेवाला महा अशुभ बंधका भागी होता है, जिस धर्मके आर्ष प्रणीत ग्रन्थोंके वर्ण मात्रका खंडन करनेको कोई भी वादी संसारमें समर्थ नहीं हुआ, जिस धर्मके सिद्धान्तोंके रहस्य अपूर्व चमत्कारोंसे भरे हुए हैं. उसी धर्मके प्रतिपालकोंमें हुआ, यदि कोई पुरुष साक्षात नूतन कपोल कल्पना कर प्रचार करानेको उद्यत हो जावे, यह कितनें आश्चर्यकी बात है! और फिर उसकी कपोल कल्पनाको भी बिना कुछ

निर्णय किये समीचीन समझ प्रचार करनेमें कोई सहायक बनें; तो सच्चे श्रद्धानियोंको वह कितना असह्य क्लेशका कारण होगा. सो पाठक जन स्वतः विचार करेंगे.

ठीक इसी प्रकारके समाचार सुनकर आज हमारा हृदय कांप उठा है. और यदि वह सत्य हो; तो निश्चयही सच्चे जैनियोंके एक वज्रपात पड़नेके बराबर दुःखका कारण होगा. त्राह भगवान! त्राह!!

अकलंक प्रतिष्ठापाठ, नेमचन्द्रसिद्धान्त चक्री प्रतिष्ठापाठ, पं. आशाधर कृत प्रतिष्ठापाठ, वसुनंदि सिद्धान्तचक्रवर्त्ति प्रतिष्ठापाठ, वसुविंद्याचार्य प्रतिष्ठापाठ, आदि प्रतिष्ठासम्बन्धी जितनें ग्रन्थ पाये जाते हैं. सबोंकी क्रिया प्रायः एकहीसी हैं तथा इनके कर्त्ता जितने आचार्य हैं. सर्वही हमारे परममाननीय हैं. कारण उनके अन्यान्य ग्रन्थोंको हम परमादरणीय मानते हैं. पठन पाठन करते हैं प्रतिष्ठाका कार्य एक बृहत तथा कठिन कार्य है. इसमें नानाप्रकारकी बाधा उपस्थित होती हैं. इस लिये इन सबही ग्रन्थोंमें अनेक मंत्र यंत्र तंत्र विधि सब विघ्नोंके निर्मूल करनें हेतु भरी है. और आज तक इस भारतवर्षमें जितनीं प्रतिष्ठा हुई हैं. सब इसी विधिसे हुई हैं. दक्षिणमें गोमटेश्वर (बाहुवली) तथा गोमट्टास्वामीकी प्रतिष्ठा जो महेन्द्र चामुण्डरायने कराई थी. अपने गुरु श्रीनेमचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्तिके हाथहीसे कराइ गई थी. तथा उन्होंने स्वतः बनाये हुए प्रतिष्ठापाठसेही वह प्रतिष्ठाकी थी. यह वार्ता हमारे सर्व पाठकगण जानते व मानते होंगे. इसको जानकरके भी यदि नवीन कल्पित ग्रन्थसे कोई प्रतिष्ठाकी जावे. तो हमारा अभाग्यही समझना चाहिये. फिर जिस विषयमें सम्पूर्ण जगतमान्य आचार्योंका एकसा मत है. और उनके मतके विरुद्ध किसी भी ग्रन्थमें एक अक्षर नहीं पाया जाता, उसको न मानकर एक नवीन शुद्ध अशुद्ध पंथोंके झगड़ेमें पड़कर किसी धूर्तराट्की नई गढ़न्तपर विश्वास कर उसके अनुयायी हो जाना, कितनी मूर्खताकी बात है. हाय! क्या न्याय अन्यायका विचार करनेवाला कोई भी नहीं रहा!

पाठको! अब जरा इस नई गढ़न्तका आदि अन्त तथा उसके कर्त्ता सज्जनके महत्वका भी अवलोकन कीजिये. जो हमको एक विश्वास पात्र सम्वाददातासे प्राप्त हुआ है. श्री वसुविंदाचार्य जिनका अपरनाम जयसेनाचार्य है. श्रीजिनसेन स्वामीके गुरु वीरसेन महाराजके गुरु थे. उनका बनाया हुआ. अन्य आचार्योंकी पद्धति लिये एक प्रतिष्ठापाठ है. इस ग्रन्थका पूर्णरुपसे प्रचार न होनेंसे तथा इसकी प्रतियोंका प्रायः सर्वत्र अभाव देखकर एक श्लाघनीयमहात्माने इस ग्रन्थको एक नवीन स्वांग (भेष) में प्रस्तुत कर डाला है. अर्थात् उसमेंकी बहुतसीं क्रिया मंत्र आव्हाननादि निकालकर इच्छानुसार नवीन २ घुसेड़कर "कहींकी ईंट कहींका रोरा, भानमतीनें कुनवा जोरा" वाली कहावत सत्य करदी है. और फिर हमारे भोले तथा पक्षपाती भाइयोंमें तेरहबीस काविरोध देखकर इस परम शुद्धाम्नायके चलानेका अच्छा अवसर पाया है, क्या हमारे सच्चे जाति धर्म रक्षक भाई इस मिथ्याकांड पर कुछभी विचार करेंगे? क्या श्री समन्त भद्रस्वामीके "नहिं मन्त्रोक्षरन्यूनो निहन्ति विषवेदनां" इस वचनपर कोई भी सम्यक्त २ पुकारनेवाले क्या लक्ष्य देंगे? क्या भेषी पाखंडियोंके नामपर चि

---

१ आदिपुराणकार.

ढूनेवाले इस साक्षात मिथ्यात्वकी प्रवृत्तिको जो आप्तवाक्योंमें सर्वथा अनाप्तता दिखलानेवाली है. चलती देख रोकनेंका प्रयत्न करेंगे? और क्या प्रतिष्ठा महोत्सव करनेवाले भाग्यशाली जो उक्त विधि करकेही पाषाण प्रतिमाको जगतपूज्य कर अनन्त जीवोंके दर्शन फलमें कुछ अंश लेनेवाले हैं. उसके बदले अपूज्य प्रतिमाके दर्शनोंका पाप लेनेके आश्रवको रोकनेकी प्रयत्न न करेंगे? आशा है कि अवश्यही करेंगे! और हमारी इस पुकारपर ध्यान दे. प्राचीन आचार्योंकी अपूर्व सम्पतिकी रक्षाकर प्रशंसा भाजन बनेंगे. और इस ग्रंथकी प्राचीन प्रतिका खोज करनेमें किसी प्रकार त्रुटि नहीं करेंगे.

छिंदवाड़ा.

चौथी प्रतिष्ठा मध्य प्रदेशके छिंदवाड़ा नगरमें श्रीयुत सेठ खमचन्द लक्ष्मीचन्दजीके प्रबन्धसे इसी मितीपर होगी. प्रतिष्ठाकारक आचार्य कौन नियत हुए हैं. तथा किस विधिसे प्रतिष्ठा होगी, इसके समाचार अभीतक हमको नहीं मिले हैं. तथापि आशाकी जाती है. कि उक्त सेठजी किसी अच्छे विद्वानक द्वाराही प्रतिष्ठाका कार्य सम्पादन करा पुन्य भंडार भरेंगे. और प्राचीन विधि तथा प्राचीन आचार्योंके गौरवकीही वृद्धि करेंगें. विशेष समाचारोंसे यदि यहांके भाई सूचित करेंगें. तो आगामी अंकमें प्रकाशित किये जावेंगे.

महोपदेशकका दौरा—शोलापूर निवासी श्रीमान श्रेष्ठिवर्य्य हीराचन्द नेमीचन्दजी आनरेरी माजिष्ट्रेटकी विद्वत्ता तथा जातिधर्म हितैषितासे हमारे सर्व पाठक प्रायः परिचित होंगे. आप दिगम्बरजैनप्रांतिकसभा बम्बई सम्बन्धी उपदेशक भंडारके मंत्री हैं, आपकी उपदेश शक्ति अति प्रशंसनीय है. वर्तमानमें सम्मेद शिखरजीकी यात्राको जाते समय नागपुरमें आप ३ दिन ठहरे. और तीनों दिन सभा करके नागपुरके भाग्यशाली भाइयोंको खूब धर्मोपदेश सुनाया. पाठशाला तथा सभाके कार्योंमें यथायोग्य उत्तेजना दी. और मध्यप्रान्तकी प्रान्तिकसभा नागपुरमें स्थापित करनेका उत्साह दिया. आपके पत्रसे हमको यहभी ज्ञात हुआ है. कि यह सभा शीघ्रही स्थापित हो जावेगी. यह सुनकर परम हर्ष होता है. आशा है कि नागपुरके प्रसिद्ध सेठ श्रीयुत गुलाबशाहजी आदि धनिक गण इस शुभ कार्यके करनेमें विलम्ब न करेंगे. उक्त महोपदेशक साहिबके इस धर्मप्रेमपर हम धन्यवाद देते हैं. और निश्चय करते हैं. कि यदि इसी प्रकार अन्य लक्ष्मीके पुत्र विद्वत्ता प्राप्त कर अपना धन पाना सफल करें. तो जातिकी सच्ची दशा सुधर सक्ती है. केवल बुद्धिमानका उपदेशही सर्व साधारणपर असर नहीं पहुंचा सक्ता.

सज्जनकी मृत्यु—सहारणपुरवासी श्रीयुत लाला जयंती प्रसादजीकी अकाल मृत्युसे हमारा हृदय अत्यन्त खिन्न हो रहा है. ऐसे २ धर्मात्मा पुरुषोंके अचानक उठ जानेसे हमारी सर्व उन्नतिकी आशायें तथा उत्साह धूलमें मिल जाते हैं. न जानें क्या भवितव्य है! आप सहारणपुरकी जैन पाठशालाके आधारभूत स्तंभ तथा अन्य विद्यालयोंके हितेच्छुक परम अग्रगण्य दाता थे. अब आपकी आत्माको सद्गति प्राप्ति हो, यही हमारी इच्छा है. तथा सहारणपुरवासी सर्व धनिक व विद्वान मंडलीसे प्रार्थना है. कि वह इस शोकसे अधैर्य्य न हो अपने लगाये हुए पाठशालाके पौधेका भली भांति पोषण करें.

Registered No. B. 288.

४ अच्छा भरापर, जैनमित्र ही बिठावणो ॥

श्रीवीतरागायनमः

जैनमित्र.

जिसको

सर्व साधारण जनोंके हितार्थ,

दिगम्बर जैनप्रान्तिकसभा बंबईने

श्रीमान् पंडित गोपालदासजी बरैयासे सम्पादन कराके

प्रकाशित किया.

अधम अमनहित करन कँह, जैनमित्र वरपत्र ।
प्रगट भयहु–प्रिय! गहहु किन? परचारहु सरवत्र ! ॥

चतुर्थ वर्ष} पौष, सं. १९५९ वि. {अंक ४ था.

नियमावली.

१ इस पत्रका उद्देश भारतवर्षीय सर्वसाधारण जनोंमें सनातन, नीति, विद्याकी, उन्नति करना है.

२ इस पत्रमें राजविरुद्ध, धर्मविरुद्ध, व परस्पर विरोध बढाने-वाले लेख स्थान न पाकर, उत्तमोत्तम लेख, चर्चा उपदेश, राजनीति, धर्मनीति, सामायिक रिपोर्ट, व नये २ समाचार छपा करेंगे.

३ इस पत्रका अग्रिमवार्षिक मूल्य सर्वत्र डांकव्यय सहित केवल १।) रु० मात्र है, अग्रिम मूल्य पाये बिना यह पत्र किसीको भी नहीं भेजा जायगा.

(नमूना चाहनेवाले)॥ आध आनाका टिकट भेजकर मंगा सके हैं.

चिट्ठी व मनीआर्डर भेजनेका पता:—

गोपालदास बरैया सम्पादक.

जैनमित्र, पो० कालबादेवी बम्बई—

॥ [illegible] ॥

कर्नाटक प्रिंटिंग प्रेस, कांदेवाडी, मुंबई.

प्राप्तिस्वीकार.

श्री सम्मेदशिखरजीकी सहायता.

१७॥)श्रीयुत तासचन्द साहिबरामजी नांदगांव
४-) श्रीयुत बुलाखीचन्द बृजलाल भरनावदा.
११) श्री समस्तपंचान मनोरथाना (कोटा.)
२५) श्रीयुत लाला चम्मनलाल पदमप्रशादजी, सहारणपुर.
१०) रा. रा. बाबाजी विनिअप्पा नलवडा अमगोंडा लालाजी गोंडा. मु० सिद्धनाथ (आकोला)
५०) मा. माणिकचन्द हेमचन्द मोडनिम्ब.
२०१) श्री सकल पंचान भोपाल.
२१) श्री सकलपंचान शेरगढ.
४०) श्री समस्त पल्लीवालपंचान अलीगढ.
१५) मार्फत माणिकचन्द हेमचन्द मोडनिम्ब.
१५) एक धर्मात्माभाईके (नाम प्रगट करनेकी मनाई लिखी.)
२००) श्री समस्त पंचान जैन शाहपुर (बेलगांव.)
७६) श्रीयुत समस्त पंचान रायपुर (छत्तीसगड.)
३१) औरवाड़ गौरवक श्रावकमंडली नरसोबाची बाडी. (बेलगांव)
१७) श्री समस्त पंचान बिजोल्या (मेवाड़.)
५) श्री शाह मुलचन्द सा कुन्पा रातोला.
९॥=)श्री बापू तवनप्पा चवलकी शाहपुर.
५०) श्री समस्त पंचान फतहपुर सीकर.

उपदेशक भंडार.

१२) रा. रा. भोजप्पभरस निमाशी हुशंगडी.
४) रा. रा. गुम्मन श्रेष्ठी अरलकोयल.
६) श्रीयुत शंकर पड्वाल मुडारू.
५) श्री लक्ष्मैय्या कारकून कारकल.
५) श्री सिरुप्पा राजप्पा सेठ शिमोगा.

सभासदोंकी फीस.

३) शा. प्रेमचन्द अनूपचन्द बम्बई.
३) सेठ जीवराज ताराचन्द शोलापुर.
६) सेठ चुन्नीलाल जवेरचन्द बम्बई.
६) बाबू उमरावसिंहजी आबूरोड.
३) लल्लूभाई लक्ष्मीचन्दजी बम्बई.
३) शा. सेवकलाल केवलदासजी आमोद.
३) शा. जयसिंहभाई गुलाबचन्दजी आमोद.
३) शा. शंकरलाल तापीदासजी आमोद.
३) श्रीयुत गुम्मपश्रेष्ठी मूडबिद्री.
३) ,, मञ्जमश्रेष्ठी ,,
१२) ,, अण्णाहिगडे मिजारा (मूडबिद्री)
३) शा. जीवनभाई गंगाराम मेंडर.
३) श्रीयुत जेठाराम रामचन्द्रजी शोलापुर.
६) शा. भगवानदास कोदरजी बम्बई.
३) श्रीयुत शांतिराज श्रेष्ठी नागपूर.
६) श्रीयुत गुम्मनश्रेष्ठी अरलकोयल.
३) श्रीयुत अप्पू यानेचन्द्रप्पा श्रेष्ठी अमरी.
१२) श्रीयुत रघुचन्द बल्लार कडेमार.
३) श्री शांतिराज अतकारी नलूर.
३) श्री शांतिराज सेठी निल्लीकार.
३) श्री सिद्धप्पा आरिग विलियूर.
३) श्री कुनारय्या हिगडे कांतावर.
३) श्री धरनप्पेन्द्र कारकल.
३) श्री नागप्पा हिगडे मरने.
६) शा. तिलकचन्द सखारामजी बम्बई.
३) श्रीयुत पदमप्रामय्या साहूकार मोदीखाने बेंगलूर.

श्री जैनमित्रका मूल्य.

११) लाला गुलजारीमल रामस्वरूप कानपूर नं. ११
११) लाला चिम्मनलालजी बड़जात्या कानपूर. १९
११) लाला फूलचन्दजी कानपूर. ९१
११) भाई घन्नाजी दुलीचन्द जावरा. ५४४
११) श्री समस्तपंचान स्योपुर रामगंज. ३७६
११) श्री बालप्पा सावंतप्पा भुसारी हुंबली. ५५१
११) बाबू गनेशदास छेदीलाल, बनारस. ६
११) ,, केवलकिशुन कानूगो हांसी. १२१
११) मुन्नलालमलजी ठेकेदार जबलपुर. ९०
११) हीरालालजी पटवारी विजोल्या. ५०३
११) होतीलालजी जैन लाहोर. ५५७
११) श्री रामचन्द किशुनचन्द परवार हुशंगाबाद. ५५

हजारीबागमें प्रतिष्ठा—पत्र छपते समय खबर लगी कि मिती माह शुदी ५ को हजारीबागमें भी पं० क० प्रतिष्ठा होगी. भाइयोंको अवश्य पधारना चाहिये.

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥
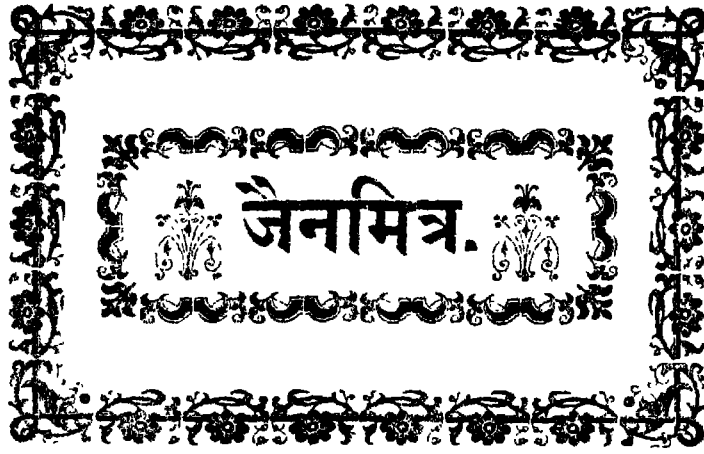
जगत जननहित करन कहँ, जैनमित्र वर पत्र ॥
प्रगट भयहु-प्रिय ! गहहु किन ?, परचारहु सरवत्र ! ॥ १ ॥

चतुर्थ वर्ष } पौष, सम्बत् १९५९ वि. { ४ था.

समाचारसंग्रह.

सेट गुरुमुखरायजीका फोटो:—गतांकमें हमारी जातिके शिरोरत्न तथा बंबईके सुप्रसिद्ध सेठ गुरुमुखरायजीका चरित्र अपने पाठकोंको सुनाया था. और उनकी फोटो उसी अंकमें प्रकाश करनेका भाव दर्शाया था. परन्तु कारणवशात् फोटो न निकल सकी थी. अतः वह अबके अंकमें भेंट की जाती है, आशा है कि सज्जनजन उनके पवित्र चरित्रको पढ़कर तथा उनकी शांतिमयी मूर्तिको अपने हृदयपटलपर अंकित कर सदा उनके गुणोंका अनुकरण करनेकी चेष्टा करेंगे.

फांसीसे रिहाई:—पुलिसके अत्याचारोंसे पाठकगण अजान न होंगे. बीजापुर पुलिसके अत्याचारकी एक हृदयविदारिणी घटना आज सुनाना है. बीजापुर ग्रामके इंडी ग्राममें बाबा धनपाल जैनका खून होगया. धनपाल किसी रमणीके प्रेममें फंसा हुआ था. जिस समय वह मंदिरमे शास्त्र श्रवणकर लौटने लगा, मार्गमेंसे उसे कृष्णाबाईसे मिलानेका धोखा देकर छः सात दुष्ट शालामहलमें ले गये, वहा जाकर उन दुष्टोंने उसे मार डाला. पुलिसनें पहिले अपने अनुसंधानमें हलसी गांवके तीन आदमियोंको फंसाकर उन्हें खूब पीटा. मारके डरसे जब उन्होंने अपराध स्वीकार कर लिया, तो उनका मेजिष्ट्रेटके यहां चालान हुआ. न्यायाधीशकी जांचसे तीनों निर्दोष प्रमाणित होकर छूट गये. तब उसने इंडी गांवके चिंतामणि विनकाशप्पा जैन, राम बिन जोतिबा मराठा, व्यंकटेश ब्राह्मण, जीवनभट्ट और बापू कुलकर्णीको फांसा. इनमेंसे आदिके तीनको सेशन जजके यहांसे फांसीका दंड दिया गया, औरोंकी बात जाने दीजिये. परन्तु चिंतामणिको फंसानेके लिये मृतकका आभूषण जो कस्तूरचन्द बेसरचन्दके

यहां गिरो रक्खे थे, उसके यहांसे किसीने निकालकर चिंतामणिके घरकी मोरीमें डलवा दिये. उसके कुटम्बियोंने बम्बईकी हाईकोर्टमें अपील की, और यहांके जैनी भाइयोंकी सहायतासे बिचारा चिंतामणि निर्दोष सिद्ध होकर छूट गया. बिचारे चिंतामणिके कुटुम्बी जब पैसेकी तंगीसे उसे बचानेमें असमर्थ होकर लौट रहे थे, बम्बईके जैनी भाईयोंने अनुमान ३००) लगाकर उसका छुटकारा कराया. जैनियोंने केवल पैसाही नहीं दिया परन्तु दोड़ धूपमें भी किसीतरहकी कसर न रक्खी. ता. २१ दिसम्बर को चौपाटीके रत्नाकर पेलेसमें सेठ माणिकचन्द पानाचन्दजीके प्रबन्धसे इस एक जीवके छूटकारे होनेकी खुशीमें सभा की गई. जिसमें श्रीयुत वकील विनायकरावजीको जिन्होंने इस मामलेमें तनमनसे कोशिस की थी धन्यवादपूर्वक एक मुद्रिका भेंट दी गई. और भाई पानाचन्द रामचन्दजीने उक्त मुकद्दमेंकी सर्व हालत आदिअंत सुनाई. इसके अनन्तर वैय्याकरणाचार्य पं. ठाकुरप्रशादजीने एक उत्तम व्याख्यानद्वारा दर्शाया कि "जो जैनी एक चिउंटीकीभी हिंसा करनेमें महापाप समझते हैं, और जिनकी दयाके प्रभावसेही अन्य धर्मोंमें दयाका अधिकांश समावेश किया गया है, वह क्या एक पंचेन्द्री मनुष्यका घात कर सक्ता है? कभी नहीं! यह जैन जातिके उपर पुलिसने बडा भारी कलंक लगाया था. मैं यहांके जैन समाज तथा न्यायशीलहाईकोर्ट को मुक्तकंठसे धन्यवाद देता हूं; जिसने अपने द्रव्यसे व न्याय दृष्टिसे एक निरापराधीको बचाकर इस महाकलंकको धोया है. मैं कहसक्ता हूं कि जैनियोंको प्राय ऐसे खूनके मुकद्दमें में दूषित होनेका अवसर आयाही न होगा. जहलखानेमें जैनियोंकी संख्या सबसे न्यून है. सोभी वह प्रायः दीवानी मालके अपराधोंकी देखी जाती है. इत्यादि बातें पुलिस महाराणीको विचारना आवश्यक था. परंतु शोक है कि, वह इस प्रकारके अन्याय करके तथा न्यायी गवर्नमेंट में कलंकतुल्य होकर भी गवर्नमेंटद्वारा संशोधित व शिक्षित नहीं होती." इसके पश्चात् पुष्पहारादिकोंसे सन्मानित हो सभा विसर्जन हुई थी. हम बम्बईके परोपकारी जैनी भाइयोंको बार २ धन्यवाद देकरभी तृप्त नहीं होते. जो अपनी द्रव्य द्वारा एक जैनबन्धुको बचाकर यशके भागी हुए.

निर्ग्रन्थमुनि—श्रीयुत पं. रामलालजी उपदेशक लिखते हैं कि, गुडबंडामें एक निर्ग्रन्थ मुनिमहाराज पधारे हैं. इनके दर्शनकर मैं बहुत हर्षित हुआ. इनकी वृत्ति पंचमकालमें मेरी बुध्यनुसार परमोत्तम है. चौथे रोज उनाहार लेते हैं. इन्द्रियोंका निग्रह किया है. संध्याको ६ बजेसे प्रातः ७ बजेतक मौनपूर्वक ध्यानधर तिष्टते हैं, निद्रा जीत ली है. इसके अतिरिक्त चर्चा वार्ता स्वाध्यायादिकमें भी बड़ी रुचि है. धन्य है ऐसे गुरुओंको! मैंने साष्टांग नमस्कारकर अपना जन्म सफल माना. आदि भाइयो! उक्त उपदेशक सा० का लिखना ऐसा उटपटांग नहीं है. इन्होंने उनके पास रहकर पूर्ण परीक्षा कर ली है. तब अपने हृदयमें भरे हुए भेषियोंके स्वांग भ्रमको भुलाकर इतनी भक्ति प्रगट कर सके हैं.

हतककी मरम्मत—वस्तुकी मरम्मत प्राचीन हो जानेपर की जाती है. परन्तु कम्बख्तीमें एक बेकाम ठहरायी हुई, तिरस्कृत की हुई, चीजकी

मी मरम्मत आदरपूर्वक करना पड़ती है. पाठको आप भूले नहीं होंगे, बात नये नगरकी प्रतिष्ठा की है! जब बाबा दुलीचन्दजी अपने शुद्धाम्नायी प्रतिष्ठापाठसे उक्त प्रतिष्ठा करानेको कमर कस चुके थे. और वह स्वर्गवासी पं. झरगदलालजी जारखा, और उपस्थितभूत पं. मोतीलालजी मेठी, पं. चिम्मनलालजी, पं. छेदालालजी, पं. प्यारेलालजी आदि विद्वान मंडलीके सन्मुख इस बातपर लाचार किये गये थे. कि जबतक इस पाठकी प्राचीन प्रति न बतलाई जावेगा, कभी यह प्रामाणिक न समझा जावेगा. अन्तमें असत् ठहराये जाकर निरस्कृत किये गये थे, वही आज करहलमें फिरसे उक्तपाठकी मरम्मत करानेको उद्यत हुए हैं अहा! समयकी बलिहारी हैं.

महासभाके वार्षिकोत्सवकी संक्षिप्तरिपोर्ट.

(मिती कार्तिक वदी ५ की प्रथमबैठक)

प्रथम पंडित पंजाबरायजीनें मंगलाचरण किया. सेठ द्वारकादासजीनें सभापतिके तथा सेठ माणिकचन्दजी जौंहरी बम्बईने उपसभापतिके आसनको सुशोभित किया.

पश्चात् बाबू बनारसीदास, एम. ए., ने सेठ दौलतरामजी डिपुटीकलेक्टर नीमच, लाला धर्मचन्दजी लखनौ, और बाबू बच्चूलालजी साहिब की हृदयविदारक मृत्युपर शोक प्रकाशित किया. और कहा कि बाबू बच्चूलालजीने जातिका बड़ा उपकार किया है. इससे उनकी फोटो सर्वसधारणके स्मरणार्थ सर्वस्थानोंमें बांटी जावे. जिससे नव युवकोंको परमोत्तम शिक्षा मिल सके. गी. इसका समर्थन पं. गोपालदासजीने एक बहुत सुन्दर वक्तृताके साथ किया. अन्तमें यह निश्चय हुआ कि, जैनगजट और जैनमित्र द्वारा उक्त बाबू साहिबका फोटो मय जीवनचरित्रके प्रकाशित किया जावे. तथा पृथक् फोटो मूल्य देकर जो महाशय मंगावे उन्हें भेजा जावे. इसके प्रबन्धके निमित्त एक कमेटी बाबू देवकुमारजी, राजा दीनदयालजी, सेठ माणिकचन्दजी, बाबू बनारसीदासजीकी कायम की गई.

इसके अनन्तर पं. जवाहिरलालजीने पुरुषार्थ विषयपर व्याख्यान दिया. तथा नेकराम और लोनपाल विद्यार्थी (महाविद्यालय) के संस्कृतमें प्रश्नोत्तर हुए.

अन्तमें लाला निहालचन्दजीने हर्ष प्रगट करते हुए सभाको विसर्जन किया.

(मिती कार्तिक वदी ६ की दुसरीबैठक)

प्रथम हकीम कल्याणरायजीने मंगलाचरण किया. लाला गुलजारीमलजी रईस कानपुरने उपसभापतिके आसनको सुशोभित किया.

पश्चात् पं. गोपालदासजीने तीर्थक्षेत्रकमेटीके स्थापित करनेका प्रस्ताव पेश किया. जिसका समर्थन बाबू देवकुमारजी, मुन्शी चंपतरायजीने और सेठ माणिकचन्दजीने किया. तब यह करार पाया कि इस कार्यके लिये हर प्रान्तके प्रतिष्ठित पुरुषोंको सभासद करनेकी आवश्यक्ता है. जिनके नाम अंतरंग सभामें ठीक कर पं. गोपालदासजी कलके अधिवेशनमें पेश करें. पश्चात् महासभाकी नियमावलीका संशोधन करनेके लिये गोपालदासजीने प्रस्ताव पेश किया; जिसपर समर्थन पूर्वक निश्चित हुआ कि यह भी पं. गोपालदास-

नी ठीक करके पेश करें. पश्चात् हर्षध्वनिसे सभा विसर्जन हुई.

(मिती कार्तिक वदी ८ की तीसरीबैठक)

कलदिन अधिक वर्षा होनेके कारण सभा न हो सकी. केवल रात्रिमें हकीम कल्याणरायजीका ईश्वर विषयमें उपदेश हुआ. जो प्रशंसा योग्य था.

आज जैनयङ्गमेनएसोसियशनके अधिवेशनके पश्चात् कुछ समयतक महासभाकी कार्रवाई होती रही, जिसमें पं० गोपालदासजीने महासभाकी गतवर्षकी रिपोर्ट संक्षेपसे सुनाई, और मुन्शी चम्पतरायजीने महासभाके गतवर्षके हिसाबका चिट्ठा पढ़कर सुनाया, तथा गतवर्षके समस्त कार्योंकी व्यवस्था संक्षेपसे वर्णन कर उपदेशक भंडारका कार्य उत्तम रीतिसे चलाने तथा तीर्थक्षेत्रोंका हिसाब मंगानेमें लाला निहालचन्दजीके परिश्रम की विशेष सराहणा की, तथा बाबू देवकुमारजी रहीसको भी धन्यवाद दिया. जिन्होंने जैनगजटके पिछलेपड़े हुए अंकोंकी पूर्तियां कर उसे टीक समय सब भाईयोंकी सेवामें पहुंचाया. और भाद्रपद मासमें चौबीस २ पेजके तीन गजट निकाले, इस प्रकार कार्य संपादन होनेसे उक्त पत्र सर्वप्रिय हो जावेगा. इसके पीछे परीक्षालयकी रिपोर्टमें पेश किया कि, पं० नरसिंहदासजी व गौरीलालजीने बहुत कुछ परिश्रम किया. परन्तु कारणवशात् परीक्षाफल प्राप्त होनेमें बहुत कुछ विलम्ब हो गया. जिसकी क्षमा सब भाइयोंसे मांगी जाती है. हर्ष है कि, इस वर्ष महाविद्यालयसे चार विद्यार्थियोंने पंडितकक्षामें परीक्षा देकर उत्तीर्णता प्राप्त की. आशा की जाती है कि, यह विद्यालय अब प्रतिवर्ष दो चार पंडितफल सर्वसाधारणके उपकारार्थ दिया करेगा. पश्चात् समय न रहनेके कारण सभा विसर्जन की गई.

(कार्तिक वदी ९ की चौथीबैठक)

हकीम कल्याणरायजीने मंगलाचरण किया. लाला निहालचन्दजीकी प्रेरणासे तीर्थक्षेत्र कमैटीके चुने हुए मेम्बरोंके नाम पं० गोपालदासजीने उक्त सभाकी आवश्यक्ता दिखला कर सुनाये. (जिनके नाम अन्यत्र मुद्रित हैं.) पश्चात् मु० चम्पतरायजीके पेश करने और बाबू देवकुमारजीके समर्थनसे इस प्रकार प्रस्ताव पास हुआ.

"महासभा प्रस्ताव करती है कि, इस कमैटीके मंत्री सेठ माणिकचन्दपानाचन्दजी बम्बई, उपमंत्री लाला रघुनाथदासजी सरनौ और सेठ चुन्नीलाल जवेरचन्दजी बंबई नियत हों. मंत्री महाशय उक्त ३९ सभासदोंसे पत्रव्यवहार कर स्वीकारता प्राप्त करें. यह कमैटी अपने नियम आप तयार करें. जो प्रबन्धकारिणीसभामें पेशकर स्वीकृत कराये जावें."

पश्चात् पं० गोपालदासजीने महासभाकी नियमावली संशोधनकर पेश की, जिसके लिये मु० चम्पतरायजीकी रायसे इसप्रकार प्रस्ताव पास पास हुआ.

"यद्यपि संशोधक कमैटीने अपना कार्य पूर्ण कर नियमावली पेश की है, परन्तु समयकी संकीर्णतासे सभासदगण इसपर विचार नहीं कर सकेंगे. अतः महासभाकी राय है कि, महामंत्री इन नियमोंको छपाकर सबके पास सम्मति लेने हेतु भेजे. और सम्मति देनेके लिये सबको दो माहकी अवधि दी जाय."

पश्चात् सेठ माणिकचन्दजी व गोपालदासजी के पेश करनेसे निम्नलिखित प्रस्ताव पास हुआ. "बंबईके सेठ माणिकचन्द पानाचन्दजी व पंडित गोपालदासजी आदिने महासभामें प्रगट किया कि **लाला गिरधरलालजी लुहाड़या देहली** निवासीने शिखरजीके मामलेके विषयमें मथुरा आकर जो कार्रवाई की, तथा एक प्रस्ताव पास करके मथुरावासी मेम्बरोंके दस्तखत कराये, वह हमारी तरफसे नहीं थी. उसपर मुन्शी मूलचन्दजी वकील व बाबू घासीरामजीने यह कहा कि, हमनें जो कार्रवाई की थी; वह यह जानकर की थी कि, यह बंबईसभाकी ओरसे कार्रवाई करते हैं, अस्तु, अब हम चाहते हैं कि, यह सब कार्रवाई नाजायज समझी जावे. क्योंकि कोई नवीन कमेटीके स्थापन करनेकी आवश्यक्ता नहीं दीखती. जिस ऐक्चारतीमें जो चंदाका रुपया जमा होवे तथा जो चंदा लिखा गया होवे वह सब बंबई दि० जै० प्रा० सभाको भेज देवें. व जिस भाईको इस मामलेमें सहायता करनी होवे, वह उक्त सभाकी सम्मति अनुसारही करें, ऐसा न करनेसे कार्यमें विघ्न पड़नेकी संभवना है."

बाबू देवकुमारजीके पेश करनेसे सर्व सभाकी सम्मतिसे यह प्रस्ताव पास हुआ कि, "जो रुपया महासभाका कोठी सेठ **मनीरामजी लखमीचन्दजी**में जमा है, और वह रुपया शीघ्रही साहिब कलक्टरबहादुर मथुरा वली व सरपरस्त सेठ द्वारकादासजी व दामोदरदासजी वापिस करनेवाले हैं. वह मुन्शी चम्पतरायजी महामंत्री वसूल करें. और महासभाके सभापति **सेठ द्वारकादासजी** उपसभापति **लाला गुलजारीमलजी** रहीस कानपुरकी सम्मतिपूर्वक किसी प्रतिष्ठित बेंक आदिमें जमा करें तथा व्याज महासभाके खर्चेवास्ते वसूल कर, महामंत्रीजी जो कार्रवाई करें वह **"महामंत्री जैनमहासभा"** के नामसे करें."

तत्पश्चात् आगामी वर्षकेलिये निम्नलिखित कार्यकर्ता चुनें गये.

मंत्री उपदेशक भं० व शाखासभा—लाला निहालचदजी रहीस नकुड़.

उपमंत्री—बाबू मुन्शीरामजी अम्बाला.

मंत्रीपरीक्षालय—पंडितगौरीलालजी देहली.

उपमंत्री—" सोधिया दरयावसिंहजी रतलाम.

मंत्रीमहाविद्यालय-गोपालदासजी बरैया.

सम्पादकजैनगजट-बाबूदेवकुमारजी रहीस आरा.

पश्चात् बम्बई सभाकी ओरसे महाविद्यालयके अध्यापकोंको, उतीर्ण विद्यार्थियोंको, वस्त्रादि दिये गये. और सेठ माणिकचन्दजीने महासभाके अधिवेशनोंसे प्रसन्न हो महामंत्री साहिब तथा सर्व सभ्यगणोंको हृदयतलसे धन्यवाद दिया और इस हर्षके बदलेमें यह प्रगट किया कि, मैं और तो किसी प्रकारसे यह आनन्द नहीं प्रगट कर सक्ता. हां, बम्बईमें जो एक गूंगे बहरोंके पढ़ानेकेलिये शाला है. यदि कोई महाशय वहां २० वर्षसे कम उमरवाले गूंगे बहिरेको भेजें, उसका भोजन खर्च मैं स्वीकार करता हूं. तथा उसके ठहरनेको ही० गु० जै० बो० स्कूलमें स्थान भी दिया जायगा. यह श्रवणकर सबने आपको बहुत धन्यवाद दिया.

अन्तमें सभापति सा० ने महासभामें पधार-

नेवाले प्रतिनिधियोंको बहुत धन्यवाद दिया, और आगामी इसीप्रकार कृपा करनेकी प्रार्थना की. पश्चात् हर्षपूर्वक सभा विसर्जन हुई.

पाठकमहाशय, आपको संक्षिप्ततासे यह महासभाकी रिपोर्ट आज सुना सके हैं. परन्तु एक अति उत्तम विषय स्थानाभावसे आपको सुनानेसे रह गया है, जो इसी महासभाके उत्सवमें भाग्यशालियोंके अवलोकनमें आया था. वह हमारे दो विद्वानोंका रसीलाशास्त्रार्थ था. आगामी अंकमें उसका आदर्श आपके सम्मुख उपस्थित करनेका प्रयत्न किया जावेगा. इति.

तीर्थक्षेत्रकमेटी

चुनेहुए सभासदोंके नाम.

१ सेठ द्वारकादासजी मथुरा, २ सेठ अमोलकचंन्दजी खुर्जा, ३ सेठ चंपालालजी नयानगर, ४ सेठ नेमीचन्दजी अजमेर, ५ सेठ चांदमलजी जयपुर, ६ खजांची सर्वसुख लक्ष्मीचन्दजी जयपुर, ७ राजा फूलचन्दजी लश्कर, ८ बाबू बनारसीदासजी, M. A. लश्कर, ९ सेठ सलेखचन्दजी नजीबाबाद, १० बाबू लालचन्द ताराचन्दजी हाथरस, ११ बाबू देवकुमारजी आरा, १२ बाबू दिलसुखराय रघुनाथदासजी सरनौ, १३ बाबू धन्नूलालजी सोलिसिटर कलकत्ता, १४ बाबू जिनवरदासजी कलकत्ता, १५ लाला गुलजारीमलजी कानपूर, १६ लाला रूपचन्दजी रहीस सहारणपुर, १७ पं० गोपालदास बरैया आगरा, १८ सेठ माणिकचन्द पानाचन्दजी बम्बई, १९ सेठ चुन्नीलाल झवेरचन्दजी बम्बई, २० सेठ हरीभाई देवकरण शोलापुर, २१ सेठ हीराचन्द नेमीचन्दजी बम्बई, २२ सेठ हजारीमल किशोरीलालजी गिरेडी, २३ सेठ लच्छीराम शिवनारायणजी हजारीबाग, २४ सेठ अमोलकचन्दजी इन्दौर, २५ सेठ पूरणशाहजी सिवनीछपारा, २६ सेठ गुलाबशाहजी नागपूर, २७ सेठ अनंतराज ऐय्या माईसुर, २८ रा. रा. अण्णापा बापूजी पाटील कोल्हापुर, २९ सेठ कालूजी गुमानजी प्रतापगढ, ३० राजा दीनदयाळजी, ३१ लाला देवीदासजी गोटेवाले लखनौ, ३२ लाला ईशरीप्रसादजी देहली. ३३ लाला पारशदासजी मेरट, ३४ श्रीमन्त सेठ मोहनलालजी खुरई, ३५ सेठ मथुरादासजी टंडय्या ललितपुर, ३६ बाबू किशोरचन्द मंत्री रावलपिंडी.

आज्ञा और प्रवृत्ति.

प्यारे पाठको! हमारे जैनियोंमें आजकल 'आज्ञा' और 'प्रवृत्ति' इन दो शब्दोंका बहुत कुछ आन्दोलन हो रहा है. इन दोनों शब्दोंका अभिप्राय यह है कि, उत्तर देशमें चिरकालसे प्राचीन आचार शास्त्रोंका प्रायः लोपसा हो रहा है. तथा अनुमान ९०० वर्षसे यहां भट्टारकोंका स्थापन हुआ. जिससे दिगम्बर सम्प्रदायी जैनियोंमें दो विभाग हो गये. इसमेंसे एक पक्षवालोंने वीसपंथी और दूसरे पक्षवालोंने तेरहपंथी यह भिन्न २ संज्ञा धारण की. यदि वास्तवमें विचारा जावे, तो इन दोनोंही संज्ञाओंका किसी भी प्राचीन शास्त्रमें उल्लेख नहीं. इस लिये इन दोनों संज्ञाओंको यदि कल्पित कहा जाय, तो कुछ अत्युक्ति नहीं होगी. इन दोनों पक्षोंकी परस्पर खेंचसे आपसमें ईर्षा और विरोधका अंकुर उत्पन्न हो

गया. और वह अंकुर यहांतक बढ़ा कि, एक पक्षवाली क्रियाका दूसरे पक्षवाले बिना बिचारे त्याग और खंडन करने लगे. इस बातका ध्यान तक न किया कि, यह क्रिया शास्त्रोक्त है अथवा नहीं. इस परस्परके झगडेका यह फल हुआ कि, बीसपंथियोंने ता प्राचीन क्रियाओंमें यत्नाचारको जलांजुलि दे दी. और तेरहपंथियोंने मूल क्रियाओंकाही परिहार कर दिया. ऐसी अवस्थामें प्राचीन शास्त्रोंका भंडार भट्टारकोंके हस्तगत हुआ. यद्यपि कुछ कालतक भट्टारकोंमें विद्याका प्रचार रहा. परन्तु पीछे वे तथा उनके अनुयायी विद्या और आचारसे शून्य होकर अनाचारमें प्रवर्त होने लगे. इधर तेरहपंथियोंमें भी विद्याका प्रचार बिलकुल कम हो गया. यहांतक कि, दो चार गिननीके पंडित रह गये. और जिन्होंने थोडेसे पुराण व उपदेशी ग्रन्थोंकी बचनिका कर दीनी. जिनकी स्वाध्याय करके तेरहपंथीगण अपनेको कृतकृत्य मानने लगे. जिस बातको इन्होंने उत्तम समझा, उसको ग्रहण किया. और जिसको अनुत्तम समझा उसका त्याग किया. तब इस प्रवृत्तिने इतनी दृढता पाई कि, आजकलके विद्वानोंने दक्षिण देशके परिचयसे जिन प्राचीन आचारशास्त्रोंकी खोज की है, उनके अभिप्रायोंको पूरे तौरसे समझे बिना आधुनिक तेरहपंथियोंकी सन्तान उन शास्त्रोंकी आज्ञाको अपनी प्रवृत्तिसे विरुद्ध देखकर एकदम अप्रमाण कहनेमें बिलकुल लज्जाको प्राप्त नहीं होती. पाठकगण स्वयं समझ सक्ते हैं कि, शास्त्रोंकी आज्ञाके सन्मुख प्रवृत्तिकी प्रमाणता कहांतक सत्य है. हमारे इन आधुनिक भोले भाइयोंका कथन है कि, जैनी परीक्षाप्रधानी है. इस कारण यदि किसी शास्त्रमें कोई बात अयुक्त पाई जाय, तो वह शास्त्र प्रमाणभूत नहीं हो सक्ता. परन्तु उन भाइयोंने "परीक्षाप्रधानी" इस शब्दका भावार्थही नहीं समझा है, यह जिनवाणीरूपी नदी स्याद्वादरूपी अमृत (जल) कर परिपूर्ण है. इसमें विविधनयभंगरूपी तरंगें निरन्तर उछला करती हैं. इस नदीके पार वही पहुंच सक्ता है; जिसने नयविशारदगुरुरूप नौकाका आश्रय लिया है. तदुक्तं,—

इति विविधभंगगहने सुदुस्तरे मार्गमूढदृष्टीनां। गुरवो भवंति शरणं प्रबुद्धनयचक्रसंचाराः॥

प्रिय पाठको! यह जिनधर्म अनेकान्तात्म है. जबतक इसके वचनोंपर अपेक्षाका विचार नहीं करोगे. तबतक टकरातेही क्यों न फिरो कहीं भी ठिकाना नहीं लगनेका. "जैनी परीक्षा प्रधानी हैं" यह बचन किस अपेक्षासे है. सो समझना चाहिये! पदार्थ दो प्रकारके हैं. एक हेतुवादसिद्ध. और दूसरे अहेतुवादसिद्ध. हेतुवाद सिद्ध उनको कहते है, जिनकी प्रमाणता अनुमानादिक प्रमाणोंसे मानी जाती है. जैसे कि, मेरुकी उंचाई, अकृत्रिम चैत्यालयोंका अस्तित्व, पूजाके बीजाक्षरोंका माहात्म्य, आचार, क्रिया इत्यादि. अर्थात् हेतुवाद सिद्ध पदार्थोंमें परीक्षाकी प्रधानता है. और अहेतुवाद सिद्ध पदार्थोंमें आज्ञाकी प्रधानता है. यहांपर यह प्रश्न उठ सक्ता है कि, यदि अहेतुवाद सिद्ध पदार्थोंकी प्रमाणता केवल आज्ञासे है, तो यदि कोई दुराचारी एक नवीन ग्रन्थ बना लेवे और उसके कर्ताके नामकी जगहँ किसी प्राचीन आचार्यका नाम रख लेवे;

तो उस ग्रन्थको प्रमाणरूप मानना या नहीं? तो इसका उत्तर इस प्रकार हो सक्ता है कि, आज्ञाप्रमाणभूत ग्रन्थ भी वह प्रमाण माना जायगा जिस ग्रन्थमें निरूपण किये हुए पदार्थोंको कोई भी प्रमाणबाधा न पहुंचा सकै. अब यहां विचारनेका स्थान है कि, आज कलके विद्वानोंने जिन प्राचीन शास्त्रोंका खोज किया है. उन द्वारा निरूपित पदार्थोंमें किसी प्रमाणसे बाधा पहुंच सक्ती है या नहीं! इन प्राचीन शास्त्रोंमें अनेक ऐसे विषय निकले हैं, जो कि **आधुनिक तेरहपंथियोंकी** प्रवृत्तिसे विरुद्ध हैं, उनका निर्णय होना अत्यन्त आवश्यक है. उनमेंसे आज हम ऐसे एक विषयका उल्लेख इस लेखमें करते हैं कि, जिसका निर्णय पहिले कर्तव्य है. वह विषय **प्रतिष्ठापाठविषयिक** है. आज कल जैनियोंमें बिम्बप्रतिष्ठाओंकी खूब धूम मच रही है जिन प्रतिष्ठापाठोंसे यह प्रतिष्ठायें कराई जाती हैं वे नीचे लिखे महाशयोंके बनाये हुए हैं.

१ भट्टाकलंकदेव, २ नेमिचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ति, ३ वसुनंदि सिद्धान्तचक्रवर्ति, ४ पंडितवर्य्य आशाधार इत्यादि.

इन समस्त प्रतिष्ठापाठोंमें यक्षादि देवोंका आव्हानन और पूजन किया है. इसी कारणसे आधुनिक तेरहपंथी महाशय इनको अप्रमाण बताते हैं. कुछ दिनोंसे **बाबादुलीचंदजीने** एक प्रतिष्ठापाठ **वसुविंदुआचार्य** कृत खोज निकाला है. जिसको कि वे **शुद्धाम्नायका प्रतिष्ठापाठ** कहते हैं. इसही प्रतिष्ठापाठसे विगत वर्ष **खुर्जेकीप्रतिष्ठा** हुई थी. तथा इस वर्ष भी इसही पाठसे **करहलकीप्रतिष्ठा** होनेवाली है. पाठको! बाबाजी इसको प्राचीन बतलाते हैं. परन्तु जब बाबाजीसे पूछा जाता है कि, इसकी प्राचीन प्रति कहां है जिसपरसे आपने प्रति कराई थी; तो उस समय बाबाजीको अन्वेषण करनेपर भी मौनके अतिरिक्त दूसरा अवलम्बनही नहीं मिलता है. तथा ऐसा भी सुननेमें आया है कि, बाबाजीने किसी पंडितद्वारा किसी प्रतिष्ठापाठमेंसे कुछ ऐसे विषय जो कि उनके पसन्द नहीं आये निकालकर यह पाठ तयार कराया है. यदि यह बात वास्तवमें सत्य है तो बाबाजीने बड़ाही अनर्थ किया है. यदि बाबाजीको इस अफवाहके असत्य करनेका कुछ भी हौसला है, तो उनको चाहिये कि इसकी प्राचीन प्रति दिखलावें.

(शेषमग्रे.)

एक जैनी.

नोट—जिस किसी भाईको इस विषयमें प्रश्न करना होय. वे अपने प्रश्न लिखकर सम्पादक **जैनमित्रके** पास भेज दें. ताकि एक विषय पहिले निर्णय हो जाय, फिर दूसरा विषय छेड़ा जावे.

एक जैनी.

प्रान्तीयउपदेशककी रिपोर्ट.

"कर्नाटक देश"

(गताङ्कसे आगे.)

ता० १७ को **वेणुर** आया. कारणवश सभा न हो सकी. यहां १६ घर जैनियोंके और ९ मन्दिरजी हैं. १ प्रतिमा गोमट्ट स्वामीकी १२ गज ऊंची है.

ता० १८ को मूडबिद्री आकर धर्मशालामें ठहरा. ९ सभा कीन्हीं. प्रत्येक सभामें अनुमान १०० के श्रोता उपस्थित होते रहे. पं. गजपतिजी उपाध्याय मेरे व्याख्यानका अनुवाद (ट्रान्सलेशन) कर्नाटक भाषामें करके अन्तमें सर्व भाइयोंको सुनाते थे. व्याख्यानोंके असरसे २४ महाशयोंने यावज्जीव स्वाध्यायका नियम लिया. १४ ने मन्दिरमें ताम्बूलादि भक्षण, १ ने निर्माल्यद्रव्य भक्षण, एकने कंदमूल भक्षणका त्याग किया. तीन भाइयोंने बारह २ रुपयेकी, तीन ने तीन २ रुपयाकी और एक विद्वानने विद्वज्जन सभाकी २) की सभासदी स्वीकार की. पं गजपतिजीने तथा चौट्टर कुंजमश्रेष्ठीनें मुझे सभाके सर्व कार्योंमे बहुत सहायता दी जिसका मैं अभारी हूं. इस चमत्कारिक क्षेत्रमें ९० घर जैनी भाइयोंके और १९ मन्दिरजी हैं. मन्दिरोंके सन्मुख मानस्तंभोंकी अपूर्व शोभा है. एक मन्दिरमें २॥ गज ऊंचा १ गज चौड़ा सहस्त्रकूटचैत्यालय वा नन्दीश्वर द्वीपका चैत्यालय धातुमयी है. जिसमें श्री चन्द्रप्रभ स्वामीकी स्वर्णमयी प्रतिमा ९ हाथ उंची है. एक स्थानमें २४ प्रतिमा, हीरा, मोती, मूंगा, पन्ना नीलम, पुखराज, गरुड़मणि, गोमेदमणि आदि बहुमूल्य रत्नोंकी अद्वतीय हैं. जिनको देखकर अच्छे २ जौहरी दंग हो जाते हैं. इनके सिवाय अन्य बहुतसी प्रतिमायें नानाप्रकारके धातु पाषाणादिकी बड़ी २ अवगाहना की है. इसी पूज्यस्थानमें हमारे अद्वतीयसिद्धान्त जयधवल, महाधवल विद्यमान हैं. जो नागरी बालबोध लिपिमें लिखे जा रहे हैं,, मन्दिरोंमें त्रिकालपूजन होती है. नित्य वादित्र बाजते हैं, प्रभावनांगकी विशेषतासे चौथाकाल वर्त रहा है. अवलोकनकर अपूर्व आनन्द होता है. परन्तु अन्याय, अभक्षादिकोंकी आधिक्यतासे उसके विरुद्ध प्रतीत होता है, और इसीसे धन और मनुष्योंकी क्षति होती जाती है, पहिले ७०० घर जैनियोंके थे. जिनमें अच्छे २ प्रभावशाली, धनाढ्य, बुद्धिमान पुरुष थे. परन्तु अब केवल ९० घर साधारण दशाके रह गये हैं. चार छह घरोंको छोड़कर शेष सब निर्माल्यद्रव्य भक्षण करनेवाले हैं. यह सब दशा अज्ञानांधकारके प्रभावसेही हो रही है. अत: पाठशालाकी स्थापना शीघ्र होना आवश्यक है. वर्तमानमें ३,४७०) का चिट्ठा एकत्र होगया है. १०,०००) दशहजार एकत्रकर उसके सूदसे चलानेका विचार हुआ है. दक्षिण कानड़ा प्रांतकी प्रान्तिकसभा स्थापित की गई. सभा पाठशालाके प्रबंधमें पं. गजपतिजी व कुंजमश्रेष्ठीजीने बड़ी सहायता दी हमारी सभाओंमें श्रीयुत चारुकीर्तिजी भट्टारक पट्टाचार्यजी सभापति रहे, कुंडे पक्षराज श्रेष्ठी, पट्टनराज श्रेष्ठी, विट्टके रिशांतिराजश्रेष्ठी, यह तीन महाशय इस तीर्थक्षेत्र व सिद्धान्त शास्त्रोंके प्रबन्धकर्ता हैं.

उक्त स्थानमें एक इतिहासिकपुस्तक कर्नाटक लिपि व भाषामें है. उसमेंका थोड़ासा लेख हम नीचे देते हैं. आशा है कि हमारी जैन इतिहाससुसाइटी इस विषयपर ध्यान देगी.

" अहमदाबादसे ३०० कोस आगराबद्री वहांसे १९० कोस मूर्तिनपुर–यहांसे ३०० कोस घोरपट्टण है. वहांसे ३९० कोस कारदा देश— से ९०० कोस पानपत नगर— से

२६ कोस पर्वतपर १९ धनुषप्रमाण गोमठ स्वामीकी मूर्ति है. वहांसे ६०० कोस एक तालावके मध्यमें १२ कोसके कोटवाला चैत्यालय है. जिसमें अजितनाथ स्वामीका प्रतिबिम्ब है. यहांसे ५० कोस कैलांगपुरमें १८ मन्दिर हैं. यहांसे ७०० कोस तलपटदेशमें जम्बूपुर पट्टन-से आगे तारातम्बोलपट्टन जिसका लोहमय कोट है. श्रीधर महाराजा जैनी है (पुस्तक लिखनेके वक्तमें)उक्त नगरमें स्वर्णमय मन्दिर और रत्नमयबिम्ब हैं. यहांसे ३०० कोस श्री जिनबंदर मालावंदर है. जहांपर धवल महा धवलसिद्धांत (१८००००, १००००० श्लोक प्रमाण) हैं. यहांसे ६५ कोस गंगानगरमें मंदिर है. यहांसे ३०० कोस आगे इकटंग नगर है जहां एक टांगवाले मनुष्य रहते हैं. ऐसा मुनिमहाराजके कहनेसे ज्ञात हुआ. वहांसे आगे नहीं गया."

पुस्तक तो बड़ी विचित्र है, और फिर उसमें के तूलसे तो पाठककोंको औरही तमाशा सा लगेगा. परंतु सोचनेसे ज्ञात होता है कि पुस्तक किसी यात्री की लिखी है. मैंने इतना आपलोगोंके सुनानेको उसमेंसे लिखलियाथा. शेष उसे पूर्ण पढ़नेसे ज्ञात हो सकेगा.

ता. २६ को मूडविद्रीसे चलकर होशंगडी, अरमनें, मिजार, कट्टेमार, अगरी, अरलकोयल गया. इन स्थानोंमेंसे मिजार, और अरलकोयलमें २५-३० महाशयोंकी सभामें व्याख्यान दिया. शेषमें शास्त्रसभा हुई. प्रायः सर्व स्त्रीपुरुषोंने इन स्थानोंमें मन्दिरमें सर्ववस्तुभक्षणत्याग, अष्टमूलगुण धारण, व स्वाध्यायका नियम लिया. कईने निर्माल्य भक्षणका भी त्याग किया. कई भाइयोंने सभासदी स्वीकार की. व उपदेशक भंडारमें सहायता दी. जिनके नाम अन्यत्र दिये हैं.

ता० २-१२ को पुनः मूडबिद्री आया, यहां मेरा स्वास्थ बहुत बिगड़ गया था. इससे भाइयोंकी प्रेरणा होनेपर भी सभा आदि कुछ न कर सका एक महाशयने ३) की सभासदी स्वीकार की.

ता० ९ को कारकल आकर भट्टारक श्री ललितकीर्ति पट्टाचार्यके मठमें आदरपूर्वक ठहरा. भट्टारकजी देशाटनमें थे. भाइयोंके आग्रहसे यहां ६ दिन ठहरना पड़ा. ३ सभा हुई जिनमें ४०, ५०, १०० के अनुमान श्रोता एकत्र हो सके थे. व्याख्यानके प्रभावसे कहो अथवा परिणामोंकी कोमलतासे कहो, ३० महाशयोंने अष्टमूल गुण धारण और मन्दिरमें सर्व पदार्थ भक्षणका त्याग किया. १३ पुरुष और १ बाईने उक्त नियम तथा स्वाध्यायका नियम लिया. २ ने शीलवृत ग्रहण किया. ३ ने मिथ्यात्व त्याग, १ ने निर्माल्य भक्षण त्याग किया. श्रीधरभट्ट, और व्यंकटेशभट्ट इन दो ब्राह्मणोंने अनछानें जलका त्याग किया. प्रथम सभामें कितने एक भाई अन्य गांवोंके भी बुलाये गये थे. यहांपर ४ नवीन सभासद और २ उपदेशक भंडारके सभासद हुए. इस स्थानमें १० घर जैनियोंके और १६ जैनमन्दिर बहुतही प्राचीन हैं. पर्वतके ऊपर १ मन्दिरमें गोमट्ट स्वामीकी १६ गज ऊंची प्रतिमा बहुतही मनोज्ञ है. साम्हनें दूसरे पर्वतपर मन्दिरमें चारोंओर तीन २ प्रतिमा खड्गासन बहुत भारी २ स्थित हैं. १ मन्दिरके आगे ३०

गज ऊंचा एक बहुतही मनोज्ञ मानस्तंभ सुंदर कारीगरका विद्यमान है. इनके अतिरिक्त और २ भी बहुतसी प्रतिमायें प्राचीन कारीगरीका स्मरण करानेवाली हैं. कोई २ मन्दिर बहुत जीर्ण हो गये हैं. मरम्मत आदि कुछ नहीं होती है. दो मंदिर तो बिल्कुल खंडहर हो गये हैं, जिनमें प्रतिमा भी नहीं रही हैं. १ मंदिर मूर्तियुक्त होनेपर भी खंडहर हो गया है, कपाट वगैरह पड़ गये हैं, पानी वगैरह आनेसे अन्दर कीचड़ हमेशा रहती है, संभाल वगैरह कोई करनेवाला नहीं है

मुडबिद्रीके भट्टारकजीके आग्रहसे नलूर निल्लीकारमें जाके २ सभा कीन्हीं. श्रोतागण ३०—४० के अनुमान उपस्थित होते रहे. नलूरकी सभामें ३० भाइयोंने रात्रिभोजन त्याग, मंदिरमें असनादिका त्याग अष्टमूल गुण धारण, स्वाध्याय करनेका नियम लिया. ५ भाइयोंने निर्म्माल्य भक्षण त्याग और १ रामसेटी भट्ट (शूद्र) ने अष्टमूल गुण धारण किये. निल्लीकारकी १ सभामें भी ऊपरकी भांति १७ भाइयोंने नियम लिये. ४ ने निर्म्माल्य भक्षण व १० स्त्रियोंने मंदिरमें खानेपीनेका त्याग कर अष्टमूल गुण धारण किये. ७ भाइयोंने दि० जै० प्रां० सभा बंबईकी सभासदी स्वीकार की. उक्त दोनों स्थानोंमें एक २ मंदिर और २४—१३ घर जैनियोंके हैं. मुझे भट्टारक श्री चारुकीर्तिजी और नेमिसागर ब्रह्मचारीजीसे बहुत कुछ सहायता मिली. उक्त भट्टारकजी बड़े सज्जन धर्मात्मा और निर्लोभी हैं. इनका सर्व द्रव्य परोपकारार्थही खर्च होता है. आपके पास ५—६ विद्यार्थीभी विद्याध्ययन करते हैं. आप कानड़ा प्रांतिक सभाके सभापति हुए हैं. आशा है कि उक्त सज्जनसे हमारी जातिधर्मोन्नतिमें बहुत सहायता मिलेगी.

(शेषमग्रे.)

रामलाल उपदेशक.

आवश्यकीय सूचना.

बड़े हर्षकी बात है कि, अब हमारी जातिके परोपकारी शुभ चिन्तकोंको यह बात भलीभांति ज्ञात होगई है कि इस परम पवित्र धर्मकी धारक जैन जातिकी अवनतिका मुख्य हेतु सत् असत्-बुद्धीका अभाव (विवेकहीनता) है; और यह विवेक, विनाज्ञानके नहीं हो सक्ता. और यह निस्संशयही है कि, विद्याध्ययन विना, ज्ञानका होना असंभव है. इसी विचारसे प्रत्येक स्थानके धार्मिक भाइयोंने अपनी गाढ़ी कमाईके द्रव्यद्वारा आगामी केवल ज्ञानरूपी अमूल्य रत्नकी प्राप्तिनिमित्त जैन पाठशालायें खोल दी हैं, जिनमें जातीय बालक धर्मविद्या पढ़ते और वे भाई समय २ पर विद्यार्थियोंकी परीक्षा आदि लेकर संभाल करते रहते हैं। परन्तु बड़े खेदके साथ कहना पड़ता है कि अबभी बहुतसी पाठशालाओंका शिक्षाक्रम ठीक २ नहीं है. वरन इतना गड़बड़ और मन गढ़न्त है कि जिसके कारण बालक कई वर्षतक पढ़नेपरभी धर्मके स्वरूपको वा उसके उद्देश्यको भलीभांति नहीं जान सक्ते.

हे परमार्थी पाठशालाध्यक्षो ! आपही इसपर तनिक लक्ष्य देकर विचारिये कि आपके धनसे यथार्थ फल न प्राप्त होनेका क्या कारण है ?

इसका कारण आप सहजहीमें समझ जांयगे कि आपकी शालामें पढाईके विषयोंका क्रम ठीक नहीं है. इसलिये आपको उचित है कि, अनेक विद्वानों द्वारा निर्णित किये हुए दि. जैन महा विद्यालय (युनीवर्सिटी) के शिक्षाक्रमको अपनी पाठशालाओंमें आरंभ कराइये, फिर देखिये कि, आपके बालकगण विद्वान होते हैं कि नहीं. सबसे पहिले तो आप बालबोध, फिर प्रवेशिकाकी पढाई कराइये. तत्पश्चात् योग्यता तथा समयानुसार पंडित, तथा शास्त्रीय परीक्षाके विषय पढानेके लिये महाविद्यालय (मथुरा) महापाठशाला (खुरजा, जयपूर, बम्बई, शोलापूर नागपूर) आदिमें अपने बालकोंको भेजिये. फिर देखिये यह जैनजाति विद्वानपंडितों द्वारा कैसी शोभायमान होती है. परन्तु इस बातका ख्याल अवश्य रखिये कि आपकी पाठशालाके विद्यार्थी परीक्षा देकर महासभाके निर्मित परीक्षालय द्वारा प्रति वर्ष सनद प्राप्त करके अपनी योग्यताका परिचय देते रहें तभी आपका परिश्रम तथा द्रव्य सफल हो सक्ता है और तभी जानना चाहिये कि ये बालक धर्म कर्मके ज्ञाता होते जाते हैं. क्योंकि बिना कसौटीपर कसे सोनेकी परीक्षा नहीं हो सक्ती. इसीप्रकार अपने बालकका नाम राजा रखलेनेसे राजा नहीं होसक्ता. इन सब कारणोंसेही सर्व पाठशालाओंके प्रबंधाध्यक्षोंसे सविनय निवेदन किया जाता है कि, आप निर्णीत शिक्षाक्रमानुसार अपनी २ पाठशालाओंमें पढाई कराके बालकोंको आगामि वैशाख मासमें परीक्षामें शामिल होनेके लिये अभीसे तय्यार कराइये. यही सब ऊपरोक्त सामग्री आपकी सुद्रव्य सफल करने निमित्त एकत्र हुई है. अन्यथा कोई लाभ नहीं हो सक्ता.

यह भी ध्यान रखिये कि आपकी पाठशाला सम्बन्धी जो २ बातें जब २ पूंछी जावें उसका उत्तर शीघ्र दिया करिये. तथा जो २ बातें इस सम्बन्धमें आप ज्ञात करना चाहें वे नीचे लिखे पतोंसे अवश्य पूंछिये.

पं गौरीलालजी दि. जैन. मालीवाडा–दिल्ली मंत्री—परीक्षालय.	दरयावसिंह सोधिया, रतलाम— मालवा) उपमंत्री—परीक्षालय.

शाखासभाओंकी रिपोर्ट.

बालज्ञानसंवर्धक जैनसभा नागपूर.

उक्त सभाका द्वितीय वार्षिकोत्सव कार्तिक शुक्ला ९ सोमवारके दिन बड़े आनन्दसे हुआ. सभापतिका आसन श्रीमान् ब्रह्मचारी रामचन्द्रजीने सुशोभित किया था. प्रथम वार्षिक रिपोर्ट सुनायी गई. इस वर्षमें सभाके २१ अधिवेशन हुए थे. पश्चात् पं रामभाऊजी उपदेशकका जो इस सभाकी ओरसे दौरा करते हैं, आनन्ददायक वर्णन (दौरकी रिपोर्ट) सुनाया गया. इसके अनन्तर अंजनगांव वासी येसूसिंगईका **सत्संगति**, शोलापूर निवासी श्रेष्ठी हीराचन्द नेमीचन्दका **धर्म**, संघी नेमलालजीका **वात्सल्य**, श्री जयकुमार देवीदासजी चवरेका **धर्मसाधन** विषयपर व्याख्यान हुआ. इस उत्सवपर कारंजा, अमरावती, अंजनगांव आदि नगरोंके महाशय पधारे थे. उन्हे हम शतशः धन्यवाद देते हैं.

सभाके दिन प्रातःकालके समय श्रीयुत श्री

रामचन्द्रजी ब्रह्मचारीने सभापर कृपालु होकर जिनवाणीके हस्तलिखित ९१ मौल्यवान् ग्रन्थ स्वाध्यायार्थ बड़े हर्षके साथ समर्पण किये. इस उपकारका वर्णन मेरी जिव्हा नहीं कर सक्ती. धन्य है, इनकी परोपकारताको. इस समय श्रेष्ठी हीराचन्दजीकी कृपासे २६ भाइयोंने स्वाध्यायका नियम किया. इस उत्सवपर अनुमान ४०० सज्जन सकत्र हुए थे. सभामंडफ आदि खूब सजाया गया था. धुजापताका उड़ाई गई थीं.

सैक्रेटरी,

रा. सं. जैनसभा, नागपूर

श्री जैनधर्महितैषिणी सभा, खंडवा.

उक्त सभाकी रिपोर्ट एक छपे फार्म पर संक्षिप्ततासे हमारे पास निरंतर आती है. जिसे हम नीचे प्रकाश करते हैं, वर्तमानमें यह सभा परिश्रमसे कार्य करती है, यह हर्षका विषय है. सभाका जो मुख्य कर्तव्य विद्योन्नति है उसपर पूर्ण लक्ष नहीं दिया जाता ऐसा जान पडता है. पाठशाला एकबार टूटकर कदाचित फिरसे स्थापित हुई है.

द्वतीय अधिवेशन— सेठ केशवलालजी सभापति हुए. "जैनधर्म" विषयपर हकीम कल्याणरायजी उपदेशक व पंडित शंकरलालजीका व्याख्यान हुआ. सभासदोंकी संख्या ९० थी. फल— पाठशालाकी स्थापना पुनर्बार होना.

चतुर्थ अ०—सभापति सेठ कपूरचंदसा. व्याख्यान दाता फूलचंदसाने तथा पं. रामनरायणजी चुन्नीलालसाने उत्तम "क्षमा"पर व्याख्यान दिया.

पंचम अ०— सभापतिसेठ भीकासा सराफ विषय उत्तममार्दव पर उपमंत्री चुन्नीलालसाने तथा रामनरायणजीने व्याख्यान दिया. प्रतिनिधि सा. ने महा सभाकी कार्रवाई सुनाई. पुस्तकाध्यक्ष ने कार्यवशात् अपनापद कस्तूरचंदसाको दिया. यात्रा करनेकी खुशीमें सेठ भीकासाजीनें २) सेठ मोतीलालजीने १०) सेठ कस्तूरचंदजीने १) इस प्रकार भाइयोंने १३) की सहायता सभाको दी.

जैनसभा अंजनगांव.

मिती आश्विन सुदी १४ गुरुवारको ज्ञानवर्धनी जैन पाठशालाका यहांपर प्रथम वार्षिकोत्सव हुआ. जिसमें पं. रामभाऊजी सभापति हुए थे. पाठशालाकी रिपोर्ट सुनानेके अनंतर येसूसिंगई विद्यार्थीका उद्योग विषयपर और श्रीयुत जयकुमार देवीदास चवरे, बी. ए., का संस्कृत विद्याकी आवश्यक्तापर उत्तम व्याख्यान हुआ. जिसका समर्थन पांडुरंगजी शास्त्रीने किया. पश्चात् जयकुमारजीको सभाकी ओरसे एक मानपत्र दिया गया. अन्तमें गीत गायनादि होकर आनन्दपूर्वक सभा विसर्जन हुई.

चिट्ठीपत्री.

प्रेरित पत्रोंके उत्तरदाता हम न होंगे.

श्रीयुत सम्पादक जैनमित्र! जयजिनेन्द्र! निम्नलिखित लेखको अपने पत्रमें स्थानदान दीजिये!

श्री सिद्धक्षेत्र मुक्तागिरिजी जो वऱ्हाड प्रान्त जिला इलचपूरकी सीमापर है, यहां प्रतिवर्षके अनुसार कार्तिक पौर्णिमाको मेला आनन्दके साथ हुआ. रात्रिको भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्तिने शास्त्रके अनन्तर "रात्रिभोजनत्याग" विषयपर एक सुललित व्याख्यान

दिया. जिससे कई भाइयोंने प्रतिज्ञायें कीं. अनन्तर मैंने व गनपतराव मा० चांदुरने जगह २ पाठशाला होनेकी आवश्यक्ता दरसाई. इस पर सेठ पासूसाने जो एक परोपकारी सज्जन हैं इलचपूरमें पाठशाला स्थापित करनेका निश्चय किया. पश्चात् जय २ कार ध्वनिसे सभा विसर्जन हुई.

अतिशयक्षेत्र भातकोलीमें जहां कार्तिक वदी ५ को मेला भरता है, दो सभा हुई. सभापतिका आसन देवेन्द्रकीर्तिजीने तथा उपसभापतिका श्री ब्रह्मचारी रामचन्द्रजीने सुशोभित कियाथा. मैंने विद्या विषयपर व्याख्यान दे कर प्रार्थना की कि, मैं भैंसदेही (बैतूल) में पाठशाला स्थापित करनेके विचार में हूं. यदि ६०) या ७०) की सहायता की जावे तो शाला एक साल चलाकर मैं आगामी रथोत्सवपर बालकोंको उपस्थित करूं, इस प्रार्थनाका समर्थन श्रीमान् सवाई सिंगई गुलाबसाहजीने व पं. रामभाऊजीने किया, और उसी समय सज्जनोंकी उदारतासे ८३॥।) का चिट्ठा हो गया. (सहायकोंके नाम स्थानाभावसे नहीं छप सके.)

इसके पीछे येसूसिंघई विद्यार्थीने जो कि एक १२ वर्षका सुशील बालक है, "सदाचार" पर व्याख्यान दिया, जिसकी प्रशंसा सेठ गुलाबशाहजीने कीन्हीं, अनंतर, अंजनगांव, कारंजा, नागपूरके विद्यार्थियोंकी परीक्षा ली गई. नागपूरके विद्यार्थी सर्वोत्तम रहे. यह उक्त पाठशालाके उत्तम प्रबन्ध व देखरेखका कारण है. आशा की जाती है कि, कुछ समयमें यहांके विद्यार्थी जयपूर आदि महा पाठशालाओंमें पढ कीर्तिके पात्र होंगे. दो प्रस्ताव इस सभामें पास हुए.

१. आगामी रथोत्सवमें नागपुर, अमरावती, कारंजा, भैंसदेही आदि पाठशालाओंके विद्यार्थियोंकी परीक्षा लीजावे. परिश्रमी पाठकको पारितोषक दिया जावे.

२. कोई भी जैनी भाई अपनी बनाई हुई कविता (श्लोक छंदादि) को सभाके सन्मुख आकर पढेगा, उसको योग्यतानुसार पारितोषक दिया जावेगा.

श्रीमान् देवेन्द्रकीर्तिजी भट्टारकको शुद्ध अंतःकरणसे धन्यवाद देता हूं. जो जगहँ २ पाठशाला स्थापन करनेका प्रयत्न करते हैं. इस उत्सवमें यहांपर बऱ्हाड प्रांतिक सभा स्थापित हो गई. जिसके निम्नलिखित ११ महाशय सभासद हुए. १ श्री देवेन्द्रकीर्ति भट्टारक, २ सेठ नत्थूसा इलचपुर, ३ मोतीसिंगई रुखब सिंगई, ४ नरसिंहसा रुखबसा कारंजा, ५ नेमासा रतनसा अमरावती, ६ बकाराम पैकाजी वर्धा, ७ सुन्दरसा गंगासा नागपूर, ८ हीरासा पद्मासा, ९ सवाई सिंगई गुलाबशाहजी, १० किशनसा धंनासा मलकापुर, ११ येसूसिंगई अंजनगांव. (उक्त सभाके विशेष नियम आगामी वर्षमें नियत होकर प्रकाशित किये जावेंगे.)

आशा की जाती है कि, आगामी भातकोलीकी सभामें अधिक आनन्द होगा. पाठकगण व शालाओंके सहायक पूर्ण परिश्रम कर प्रशंसापात्र बनेंगे. इति.

कृपाकांक्षी,

गोविन्द लाहनू मास्तर बैतूल.

श्री सम्पादक जैनमित्र! जयजिनेन्द्र!!

आपके जैनमित्रमें जो निर्माल्यद्रव्यसम्बन्धी चर्चा चलती है, उसका अभीतक कुछ निर्णय नहीं हुआ है, मेरी तुच्छ समझमें ऐसा आता है कि, पूजनमें जितनी सामग्री चढनेका नियम है. उतनेही खर्चमें ऐसा किया जावे कि, चांदी सोनेके दीप और फल अक्षतादि बनाये जावें, यह द्रव्य पूजन करके माली व्यासादिकोंको दे दी जावे. उक्त द्रव्य ऐसा भी है कि, माली व्यासोंसे लागतके अनुसार कीमत देकर वापिस ले काममें लानेसे कुछ हानि नहीं हो सक्ती. उलट प-

लटकर काममें लानेसे पूजनकी द्रव्यका अविनय न होगा. यानि नीच मनुष्योंके हाथ सस्ते मूल्यमें न आने पावेगी. और मालीको भी मालकी यथार्थ जमा मिल सकेगी. इसके अतिरिक्त बरसात आदिमें जीवोंकी विराधना भी होनेसे बचैगी. चावल, बादाम, नारियल आदिमें जीवोंका प्रवेश बहुत रहता है. उसका भी बचाव होगा, तथा लागतसे आधी कीमत जो उठती है उसका भी नुकसान न होगा.

शायद आप जीवोंके विनाश होनेपर कहेंगे कि, जब हम शोध छानबीन कर द्रव्य कार्यमें लाते हैं. तो उनमें जीवोंका विनाश क्यों कर होता है सो ठीक है. परन्तु बडे जानवर सुलसुली गिजर आदि बीनें जा सक्ते हैं. परन्तु छोटे २ जानवर जो बादाम आदिके झडाजेमें निकलते हैं. उनकी शोध किसीप्रकार नहीं हो सक्ती. विशेष आप बुद्धिवान हैं विचार करें

आपका शुभचिंतक—

ओंकारलाल माणिकचन्द,

आगरकेंम्प.

श्री तीर्थक्षेत्रकेभंडारोंकी दशा.

दानपालनयोर्मध्ये पालनस्याधिकंफलं।

दानात्स्वर्गमवाप्नोति पालनादच्युतं पदं॥

श्री सम्पादक जैनमित्र! जयजिनेन्द्र!

मैं कार्तिक मासमें श्री सम्मेदशिखरजीकी यात्राको गया था. वहां पहाडपर सबही टोंकके चरणोंके पास तपागच्छ, खडतरगच्छ आदि श्वेताम्बरीयोंके नाम हैं. जलमन्दिरमें दोनों बाजूमें दिगम्बरी प्रतिमा हैं. बीचमें श्वेताम्बरी है, पार्श्वनाथकी टोंकपर चरण हैं प्रतिमा नहीं है.

जब मैं गया उस समय आरावाले बाबू मुन्शीलालजी वहां उपस्थित थे. बीसपंथी कोठीका इंतजाम आपही करते हैं. भंडारका हिसाब एक वर्षका उन्होंने छापके प्रसिद्ध किया है. यद्यपि कुल आंकडा अभी नहीं छपवाया है, परन्तु वह तयार है. मुझे बतलाया था. थोडे दिनमें छपवावेंगे ऐसा बाबू साहिब मुझसे कहते थे. आंकडा देखनेसे ज्ञात हुआ कि भंडारमें अनुमान ७६०००) छहत्तरहजार रुपये हैं. जिसमेंसे ४००००) हजार रुपया पुरलियाकी अदालतमें पडे हैं. जिसके विषय पं. राघवजी कहते हैं कि, वह रुपया मुझको मिलना चाहिये. और आरावाले पंच कहते हैं कि राघवजी तो गुमास्ता है. जो कोठीसे मौकूफ किया जाचुका है, उसको नहीं देना चाहिये. आरावाले पंच जिनके नामसे भट्टारक राजेन्द्रभूषण पंडित हरलाल गिरेडीवाले, शेठ हजारीमलजी और राघवजीके दस्तावेज हुए हैं. इसवास्ते आरावालोंकोही मिलना चाहिये. अदालतसे अभीतक किसीकोभी पैसा नहीं दिया है. पैसा झगडेमें पडा है. दोनों तरफसे झगडेका खर्चा भंडारसे उठकर बडा नुकसान हो रहा है. मैंने राघवजीसे कहा कि यदि केवल आरेवालोंको पैसा न मिले. चार गांवके पंच मिलकर लेवें और मंदिरके काम चलावें तो कैसा? इस बातको राघवजी तथा मुन्शीलालजी दोनोंने मंजूर किया है. मेरी समझमें १ बाबू शिवनरायणजी हजारीबाग, २ बाबू गुलाबचन्दजी छपरा, ३ सेठ गुरुमुखराय सुखानंदजी कलकत्ता, ४ सेठ माणिकचन्द पानाचन्दजी बम्बई और ५ बाबू मुन्शीलालजी आरा इन पांच पंचोंके नाम रुपया मिलनेकी दरख्वास्त पुर्लिया अदालतमें राघवजी तथा आरावालोंको देना चाहिये. इस दरख्वास्तसे अदालत रुपया अवश्य दे देगी. पैसा मिल जानेपर उसके सरकारी प्रामिसरी नोट खरीद कर रख देना चाहिये. और मन्दिरजीका काम चलाना चाहिये. जैसा २ कार्य चले नोट बेचकर रुपया उठाते जाना चाहिये. इस बातको दोनों पक्षोंने स्वीकार कर लिया है. परन्तु दोनोंको मिल-

कर दरख्वास्त लिख अदालतमें पेश कराना बाकी है.

इसके अतिरिक्त भंडारके चिट्ठेमें सोलह हजार रुपया हजारीमलजी गिरेडीवालोंकी तरफबाकी है, ऐसा ज्ञात होता है लेकिन हजारीमलजी कहते हैं कि "मेरी तरफ भंडारका एक पैसाभी नहीं है, मेरा हिसाब करो और जो निकले सो इसी वक्त ले जाओ." इसलिये उनका हिसाब होना चाहिये. तथा उक्त रकमका खुलासा हो जाना चाहिये.

श्री पावापुरीके भंडारमें प्रतिवर्ष पन्द्रह सौ से दो हजार रुपये तककी आय है. परंतु खर्चेका इन्तजाम ठीक नहीं है पार्श्ववर्ती गांववाले कोई देखते नहीं है. केवल राघवजीकी इच्छानुसार खर्च होता है. राघवजीने पुरुलियाका मुकद्दमा लडनेके वास्तेही एक मुन्शी सालयाना १००) का रक्खा है इसके सिवाय ४ सिपाही, १ घोडा, २ बैल और भी रक्खे हैं इसप्रकारके अन्धाधुन्ध खर्चेमें भंडारका बहुत द्रव्य खराब होता है. और मंदिरजीके मंडपका तथा धर्मशालाका जो थोडासा काम बाकी है, जिसके लिये केवल हजार पंद्रह सौ रुपया काफी है उसके लिये कहते हैं, "पैसा नहीं है" और गांव २ मांगते हैं.

श्री सम्मेद शिखरजीके भंडारमें जो पौन लाख रुपया खराब हो रहा है उसका तो कोई बन्दोबस्त नहीं करते. जगहँ २ से शिखरजीके मुकद्दमें तथा बैडियोंके वास्ते पैसा मांगते हैं. राजग्रहीके भंडारमें दिगम्बरी तरफसे ७००) सौ और श्वेताम्बरी तरफसे ४००) सौ रुपया सालकी आमदनी है परंतु दोनों तरफके ११००) रुपया श्वेताम्बरीही खर्च करते हैं. इस अंधेरको नजीकवाले व दूरवाले दिगम्बरी कोई भी नहीं देखते हैं. इसप्रकार बहुतसे स्थानोंमें अंधेर चल रहा है. हिसाबको छपाकर प्रसिद्ध नहीं कराना यह बडी भूल है, मैंने श्री सम्मेदशिखरजी, चंपापुरी, पावापुरी, भागलपुर, गौतमस्वामी, राजग्रही, बनारस, रामटेक, वहांके भंडारवालोंसे कहा है कि, हिसाब साल २ का विगत वार छपाकर रखना, और जो यात्री आकर भंडारमें द्रव्य देवे, उसको एक नकल हिसाबकी दे देना. ऐसा करनेसे सबका विश्वास बढेगा, उनको हिसाब कितना मालूम होगा. तथा भंडारकी आय भी बढेगी. हर्ष है कि, इस सम्मतिको सबने स्वीकार किया है. परन्तु सब शहरोंसे पत्रोंद्वारा इस बातकी कोशिस होना चाहिये. हरएक यात्रीको भंडार देते वक्त हिसाबकी नकल मांगना चाहिये. तब यह हिसाब छपानेका कार्य जारी हो सक्ता है. तीर्थक्षेत्र कमेटी भी इस बातपर ध्यान देगी. ऐसी मैं आशा करता हूं.

आपका—

हीराचंद नेमचंद,

शोलापुर.

श्री सम्पादक जैनमित्र ! जयजिनेन्द्र!!

अपरंच जैनधर्मका रक्षक जालना (जूना) ग्राममें २ जैन मंदिर हैं. एक मंदिरमें बडी २ अवगाहनाकी उत्तम २ प्रतिमायें हैं, परन्तु यहांपर मूर्तिकी पूजा करना तो दूर रहा कभी झाडू भी नहीं निकाली जाती है. इसके अतिरिक्त मंदिर बिलकुल बे मरम्मत पडा है, कहीं २ से गिरने लगा है, और ऐसा ही रहा तो शीघ्रही गिर जायगा. इसमें शक नहीं है, गिरनेसे कितनी हानि है सो आप जानते हैं. ऐसे स्थानोंपर तीर्थक्षेत्र कमेटीको लक्ष्य देना चाहिये. सोनागिरजीकी भी ऐसीही अव्यवस्था है, वहांपर पंडे मंदिरमें आकर जबर्दस्ती निर्माल्य ग्रहण करते हैं और कहते हैं कि, यहां हमारा हक है. आदि.

आपका—

गुलाबचंद ताराचंद जैन,

बावडेकर.

शोलापुरकी प्रतिष्ठा बंद रखना पड़ी !

खेदके साथ लिखना पड़ता है, कि शोलापुर नगरमें जो माह सुदी ९ को प्रतिष्ठा होनेवाली थी और इसी उत्सवमें श्रीमती दिगम्बर जैनप्रान्तिक सभाका द्वतीय वार्षिकोत्सव भी होनेवाला था, दोनो वह प्लेगके जोर शोरके कारण बन्द करना पड़ा है. अतः पाठकोंको सूचना दी जाती है, जिससमय इसकी दूसरी तिथि निश्चित होगी, प्रकाश की जायगी. इस खबरके पहिले हालहीमें कुछ प्लेगकी न्यूनता देखकर भाइयोंको उत्साहित करने एक जाहिरखबर निकाली थी, परन्तु अब विशेष बढ़ती देख कार्य बन्द करना पड़ा.

१४-१-०३ } (सही) गांधी रावजी नानचन्द

विविध समाचार

इन्दौर की प्रतिष्ठापर सुप्रबन्ध—हमने गतांकमें इन्दौरकी प्रतिष्ठापर यात्रियोंको कष्ट होनेकी आशंकासे तथा प्रतिष्ठाकारककी ओरसे कोई उचित प्रबंध न होनेके समाचारोंसे इसके ऊपर कर्ता महाशयसे ध्यान देने हेतु अनुरोध किया था. हर्षका विषय है कि, हमारे लेखपर पूरा २ ध्यान दिया गया है, और उक्त प्रतिष्ठाकारक सेठ हुकुमचन्दजीने पत्रद्वारा तथा तारद्वारा योग्यतापूर्वक सूचित किया है. जो उनके गौरवका हेतु है, उनके पत्रका आशय यह है, "मैं देहली दरबारमें गया था, आज दिन वापिस आया हूं. आपके जैनमित्रमें लेख वांचा कि यात्रियोंके लिये प्रबन्ध ठीक हो जाना चाहिये, सो यथार्थ है. आपके लेखानुसार इन्तजाम प्रथम हीसे हो रहा है. आप सुनिश्चित रहें. मैंने मकान डेरे तम्बूओंका यथोचित प्रबंध किया है, तथा इंदौर स्टेशनपर कोई कारंटाइन नहीं है. बीचमें रतलामकी बीमारीके कारण हलचल हुई थी. अब वह भी कम हो गई है, तौ भी राज्यपरिचारकों द्वारा मैंने प्रबंध कराया है. यात्री लोग सर्वथा सुखसे उतरेंगे, और आनंदसे उचित स्थानोंमें विश्राम करेंगे. मैं प्रतिज्ञापूर्वक आपको सूचना देता हूं कि, "आप १ विज्ञापन द्वारा यात्रियोंको सूचना कर देवें, जिसमें उन्हें इस विषयका सन्देह न रहै" आदि" अब हम भी अपने पाठकों तथा यात्रियोंको पूर्ण उत्साह देते हुए सूचित करते हैं कि, आप खुशीसे प्रतिष्ठापर पधारकर पुन्य भंडार भरिये. परन्तु यह भी स्मर्ण रखिये कि. केवल दर्शक बनकर लाह २ करनाही आपका कर्तव्य नहीं है. वरन समयानुकूल वहांपर कुछ जातिधर्म विद्योन्नतिकी भी चिन्ता कीजिये. अन्तमें प्रतिष्ठाकारक श्रेष्ठीजीसे भी प्रार्थना है कि, वह इस महोत्सवपर कुछ विद्योन्नति आदिपर भी लक्ष्य दें. प्रतिष्ठा कराना सफल करते हुए चिरकालतक अपना नाम जाति हितेच्छुकों की श्रेणीमें अंकित करावें. केवल प्रतिष्ठातक ही प्रशंसाकी सीमा नहीं है.

छिंदवाड़ा—गतांकमें हम छिंदवाड़ेकी प्रतिष्ठाका उल्लेख कर चुके हैं. वहां कुंकुमपत्रिकाके साथ एक सूचना प्राप्त हुई है, जिससे विदित होता है कि वहां जैन इतिहाससुसाइटीका अधिवेशन तथा मध्यप्रान्तीय प्रान्तिक सभाका समारोह जमेगा. जब हम ऐसे २ स्थानोंपर सभादि कार्योंका आदर व सभाओंका आमंत्रण सुनते हैं. चित्त आनन्दसे उछलने लगता है कि अब हमारी उन्नतिके दिन निकटही हैं; जो सभायें भाइयोंके हृदयपर कुछ अधिकार जमाने योग्य हुई हैं.

प्राप्ति स्वीकार.

श्री जैनमित्रका मूल्य.

१।।।) बापूजी गणपतराव जैन पोहरा. ४०६
१।) जैनवाचनसभा माणगांव. ६६१
१।) चौधरी वंशीधर दौलतरामजी बंडा. ४२०
१।) जवाहिरलाल गोविन्दप्रशादजी लखनौ २२
१।) बाबू शीतलप्रशादजी. ,, ,, ८१
१।) लाला नेमदासजी सलेमवाले. ,, ३२३
*२।।) भीखाजी चंदूलाल बड़वानी. ३९४

सभासदोंकी फीस.

३) रा. रा. मोतीचन्द लक्ष्मीचन्दजी पंधारा.
३) रा. रा. श्री आदिराज नैनार मद्रास.
३) सेट नानचन्द जयचन्दजी गुलबर्गा.
१२) .... मद्रास.
२४) सेठ हीराचन्द नेमीचन्दजी बम्बई.

उपदेशकभंडार.

५) सेठ बालचन्द रामचन्दजी गुलबर्गा.
५) सेठ गोविन्दजी नेमचन्दजी ,,

सरस्वती भंडार.

२५) लाला अजितप्रशादजी रहीस देहरादून की गृहणी की ओरसे.

श्री पारितोषक भंडार.

२५) लाला मुन्शीलालजी रहीस करनाल की गृहणी की ओरसे.

श्री संस्कृत विद्यालय भंडार.

५) माणिकचन्द तुलजाराम माणगांव.
५१) दोसी कस्तूरचन्द हेमचन्द आकलूज.
१५) दोसी देवचन्द कुबेरचन्द नातेपूते.

* उक्त भाई सा० का मूल्य २ रे अंकमें भूलसे छपने से रह गया था.

५१) सेठ सखाराम नेमचन्दजी शोलापुर.
२) ,, राघवजी पद्मसी बेलापुर.
५१) ,, नाना बिन भीमण इंडी.
५) श्रीयुत दादापाटील आंतोडी.
२) ,, कृष्णा तुकाराम जैन आष्टी.
५१) सेट जादवजी धनजी इंडी.
५०) सवाईसिंगई भोलानाथ कस्तूरचन्दजी *
५१) श्री सेठ स्वरूपचन्द हुकमचन्दजी इन्दौर.

नोट—उक्त रुपया आसोज बदी १ से आज तक विद्यालय भंडारमें आया है. यह खेदका विषय है. विद्यालयके चिट्ठेमें अनुमान १०००) की रकम बाकी है. सहायक महाशयोंको शीघ्र भेजनेकी कृपा करना चाहिये.

इसे जरूर पढिये!

जो महाशय जैनमित्र की कापियोंका संग्रह नहीं करते हैं. तथा रद्दीमें डाल देते हैं. उनसे प्रार्थना है कि वह अपनी रद्दीमेंसे खोज कर. जैनमित्र प्रथमवर्ष अंक १, ९ व द्वितीय वर्ष अंक १ यदि निकलें तो हमारेपास शीघ्रही भेज देवें. जो महाशय भेजेंगे उनको बदलेमें हम फी कापी एक उत्तम पुस्तक भेज देवेंगे.

और इसे भी!

भाइयो! जैनमित्रके चौथे वर्षके ६ अंक निकल चुके. अर्थात् आधी वर्ष व्यतीत होगई है. आपलोगोंका रुपया तृतीय वर्षके अंततक चुक गया. अब वर्तमान वर्षका मूल्य शीघ्र भेजिये. देर न कीजिये! इस सूचनाको पढ़ते ही मनीआर्डरके फार्म भरनेका परिश्रम कीजिये!

सम्पादक.

* उक्त महाशयके ग्रामका नाम नहीं था सूचित करें।

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

जगत जननहित करन कहँ, जैनमित्र वर पत्र ॥
प्रगट भयहु-प्रिय ! गहहु किन ?, परचारहु सरवत्र ! ॥ १ ॥

चतुर्थ वर्ष | माघ, फाल्गुन, सम्वत् १९५९ वि. { ५, ६ वां.

प्रमदापञ्चक.

घनाक्षरी—पंगुकुल पङ्ग करै, लाजमों निशङ्क करै, मृषा छल छन्द आदि, दोष बङ्क सङ्ग करै । आर्त रौद्रनांव अङ्क, येवही बनांव रङ्क, चौरके कसावे लङ्क, राजदंड नङ्ग करै ॥ उज्जल मयङ्क सद्र, चारमें कलंक करै, प्रेमी कहै कौलों ऐसी, कुदशाके ढङ्ग करै । प्रमदा प्रसङ्ग पिरतक्ष धर्म भङ्ग करै, कर्म करै सङ्ग मोक्ष पंथ पावे पंगै करै ॥ १ ॥

मनहर—कुगत कपाटनके कुलफ खोलवेकी कुंजी, भवमें भ्रमावे रेल चटपट गामिनी । कपडा करम कातवेको गांठ बांधवेको, मिलें (Mills) औ मिशीन ऐसी गटपट गामिनी ॥ विषैचटशाला—चहुं ओरन अकीर्ति प्रग, टावे कँह तार ध्वनि खटपट गामिनी । प्रेमीजू सुकवि ऐसी चरित विचित्रधारी, कामिना मतङ्ग ऐसी अटपट गामिनी ॥ २ ॥

अरसात सवैया—प्रेम पसारतही प्रमदापर पीर अधीरता पीछे परै । जौलों प्रसङ्गको ढंग लगै नहिं अंग अनंगकी आग जरै ॥ चित्तकी वृत्ति विचित्र बनै कछु, लोककी लाज पै गाज दरै । प्रेमी जू बोलत डोलतमें वह, सोवत स्वप्नहु में न टरै ॥ ३ ॥

तथा—काहे कहै अवला इहिको ? जग जीतन जो अनिही सबला । काहे कहैं बुधिमान वधू ? बधै जाकर फांसमें ज्ञानीगला ॥ काहे कहै अँग-ना जिहिको ? अंग देखें मुनीनको चित्तचला । प्रेमि कहै ! यह रूढि चलीकिमि ? जाकी लखात अनूठीकला ॥ ४ ॥

द्रुमिला—वसुकर्मन काटन नाहिं समर्थ, कहैं तिहिसों अवला अवला! । शिवं पावन योग्य न

१ पंगु=लंगडा, २ कपडेकी कल.

३ परखी, ४ मोक्ष.

पावन अंग है, तासन अंगना नामचला ! ।। अम बालबंधी चिरकाल रही. वधू, तासों कहैं बुधिमान भला ? । कवि प्रेमी विचारमें रुढ़िप्रचार विरुद्ध नहीं है—अती विमला ।। ५ ।।

नाथूराम प्रेमी.

"परस्त्रीगमन"

नरकरूपी कूपका मार्ग. स्वर्गरूपी घरमें जानेसे अटकानेवाली खाई (खानिका) जो परस्त्री उसके सेवनका त्याग वृत्ती पुरुषको करके स्वदारसन्तोष व्रत धारण करना चाहिये. स्वर्ग मोक्षादि सुखोंके इच्छुक पुरुषोंको अपनीस्त्रीके अतिरिक्त समस्त स्त्रियोंको माता, बहिन, पुत्रीकी समान देखना चाहिये. परस्त्री अत्यन्त स्नेहयुक्त होनेपरभी दुखदाई है, निर्मल सुन्दर होनेपरभी पापरूपी मैलकी करनेवाली है, जड़ होनेपर भी आतापको बढ़ानेवाली अपना सर्वस्व हरनेवाली है. इस प्रकार विरुद्धाचारसे प्रवर्तनेवाली परस्त्री दूरहीसे त्यागने योग्य है. यद्यपि स्वस्त्री और परस्त्रीके सेवन करनेमें कुछभी विशेषता नहीं है. परन्तु परस्त्री सेवन करनेवाला नर्कका तथा स्वदार संतोषी स्वर्गका पात्र होता है. क्योंकि स्वस्त्रीकी अपेक्षा परस्त्री सेवनमें अनुराग अधिक होता है, और परद्रव्यमें राग करनाही दुःखका मुख्य कारण है, परस्त्रीको रमणीय देखनेमें सुख न होकर आकुलता तथा नर्कमें लेजानेवाले घोर पापोंके आश्रवके अतिरिक्त कुछभी प्राप्ति नहीं है. जिसके संसर्ग मात्रसे उभयलोक सम्बन्धी हानि हो, ऐसी परस्त्रीको स्वदार संतोष छोड़कर लोग किसकारण सेवन करते हैं? जो पुरुष कामाग्निसे संतप्त हो परस्त्रीसेवन करता है, वह नर्कमें वज्राग्निसे तप्तायमान लोहमयी पुतली (स्त्री) से चिपटाया जाता है. ऐसी परस्त्रीको कोपित यमराजकी दृष्टिके समान प्राणसंहारिणी जानकर विद्वानोंको अवश्य त्याग करना चाहिये.

परस्त्रीसेवन करनेवालेके धर्म, अर्थ, कर्म, विश्वास, विनय, शील, क्षमा, दया, सत्यता, कुलीनता आदि गुण सब नष्ट हो जाते हैं. संसारमें निन्दनीय होकर लोकका विरोधी हो जाता है. लज्जा बिलकुल नहीं रहती. जिसप्रकार ईंधनके डालनेसे अग्नि अधिक २ प्रज्वलित होती है, उसी प्रकार इसके सेवनसे काम वृद्धिको प्राप्त होता है. इस लिये चतुर विचारशील पुरुषोंको चाहिये कि, मुखसे मीठी २ बातें बनानेवाली और चित्तमें कपट क्रूरता रखनेवाली, सर्वतया नीच, परपुरुषकी अटनयुक्त परस्त्रीका सेवन कदापि न करें. जो नर परस्त्री गमन करता है, उसके वृत्तरूपी रत्नका अभाव हो जाता है, और जिस पुरुषने स्वदारसंतोषव्रत ग्रहण किया है, अथवा जिसने तीव्र कामोंके बाणोंका गर्भ नष्ट कर दिया है, वह सर्वसुखसम्पन्न स्वर्गका इन्द्र होता है.

परस्त्रीगामी पुरुष सातों व्यसनोंका सेवक हो जाता है. तृष्णाके वशीभूत हो जुआ खेलता है चोरी करता है, रतिसुखकी विशेष वांछाकर मद्य मांसादिका भी सेवन करने लग जाता है. ऐसे पुरुष छेदन, भेदन, ताड़न, तापन, रूप घोर नर्कोंका निवास पाते हैं. जहां दीर्घकाल ऐसी विषम वेदना जिसे लिखनेमें लेखनी असमर्थ है; भोगता है.

परस्त्रीसेवक पुरुष अथवा स्वस्त्रीसे तृप्त न होकर जो नीच परकी स्त्रीमें अनुरक्त होता है, उसमें और काग, कूकरोंमें क्या अन्तर है ? किसी स्त्रीने एक अवसर पर कहा है:—

मैं पियकी झूंठन भई, ग्रहण योग्य नहिं आन।
अब जो मुझको चहत है, वह कौआ के स्वान॥

ऐसा जानकर आत्महितैषी पुरुषोंको यह कालकूट विष अवश्य त्यागना चाहिये.

पुनः परस्त्री के विषय किसीकी उक्ति है !

दोहा—धर्म [illegible] नल घातनी, संतति नाशन हार। मानव [illegible] आतमा, राक्षसि देख विचार॥

कहावत है [illegible] नागनोंके तो केवल मुख- में विष [illegible] है. परन्तु इसके सारे अंगमें विषही [illegible] है. यहांतक कि इसकी दृष्टि मात्र से विष मनुष्यके शरीरमें प्रवेशकर जाता है. [illegible] तपस्वी इसकी झलक पड़नेसे तप- श्चरणसे डिग गये हैं. अध्ययनानुसार देखिये ! शंकरने अपना पवित्र योग छोड़, पार्वतीको सिर- पर धारण किया. विष्णुने गोपिकाओं करके दि- ये हुए अपने हृदयमें लक्ष्मीको स्थापन की. ब्रह्मा इसीके तीव्र बाणोंसे घायल होकर तिलोत्तमाके देखनेके लिये अपना दुर्धर तपश्चरण त्यागकर चार मुखवाला हुआ.

इस संसारमें जितनी स्त्रियां हैं, सब पुरुषोंके चित्तको हरनेवाली हैं. परन्तु जो स्वपुरुषको छोड़ परपुरुषके चित्तको हरण करती हैं वही विषकी बेल है. परपुरुषगामिनी स्त्री और वेश्यामें केवल इतना ही अन्तर है कि, वेश्या तो प्रगट पेशा करती है. और यह गुप्त प्रकारसे छल छंदोंकर कार्यसाधन करती है. यह दोनो ही महा दुःखकी खानि और नर्ककी सीढी हैं. यह अपने अपूर्व शीलरत्नसे र[illegible] हो जाती हैं तथा धर्म कर्मादिसे भी च्युत होजाती हैं, स्त्रियों- को चाहिये कि वह अपने पतिको छोड़ परपुरु- षके साथ कभी गमन न करें. देखो पूर्वकी पतिव्रता स्त्रियोंने प्राणोंकी कुछ भी पर्वाह न कर शील रत्नकी रक्षा की है और अन्तमें सोलहवें स्वर्गका सुखानुभव किया है, उनका नाम आज तक भूमंडलपर विख्यात है.

परस्त्रीसेवन दुःखदायी तथा हानिकारक है. यह केवल हम जैनीही नहीं कहते हैं किन्तु, इंग्रेज, मुसलमान, आयुर्वेदी आदि सब मतानु- यायियोंका भी यही मत है, और हमारी न्याय- वान सरकारने भी इसके रोकनेके लिये अनेक कानून बनाकर भारी २ दंड नियत किये हैं. आजकल यह विषय बहुत जोर पकड़ता जाता है, इसके कारण देशकाल भावानुसार बुद्धिमानोंने कई एक स्थिर किये हैं, परन्तु उनमें प्रायः सबसे बड़े कारण, बालविवाह तथा वृद्धविवाह हैं. और इन दोनोंकी आधिक्यता जैनियोंमें विशेष देखी जाती है. बालविवाह और वृद्धविवाह दोनोंसे दम्पतियोंमें अवस्थाकी तथा शक्तिकी असामन्यतासे प्रेमकी क्षीणता हो जाती है. और फिर दोनों योग्यताकी खोजमें उद्यत हो कुशीलसेवी हो जाते हैं. अर्थात वृद्ध तथा बालककी स्त्री तो कामके प्रचंड वेगसे अपने योग्य परपुरुषमें, और बालक योग्य अवस्था प्राप्तकर गृहमें प्रेमकी न्यूनता देख परस्त्रीरत हो जाता है. इसलिये उक्त विष- यके निवारणार्थ जातिमें प्रथम इन दोनों रस्मोंको रोकना चाहिये.

ऊपर परस्त्रियोंके बहुतसे औगुण दिखलाये हैं. पुरुषोंको चाहिये कि, सदा स्वदार संतोषव्रत धारण करें, तथा अपने मित्रवर्गोंसे इसके धारण करनेकी प्रेरणा करें. स्वस्त्रीही सुख की देनेवाली है. जो सदा तुम्हारी आज्ञामें चलती है, सेवा करती है, तुम्हारे दुखसे दुखी और सुखसे सुखी होती है, उक्तंच,

साभार्या या शुचिर्दक्षा, साभार्या या पतिव्रता। साभार्या या पतिप्रीता, साभार्या सत्यवादिनी ॥

अर्थात्—सत्यमधुर भाषैवचन, और चतुर शुचि होय। पतिप्यारी अरुपतिव्रता, तिया जानिये सोय ॥ अलम्

—सूरजमल श्रावगी विद्यार्थी,
सिवनी छपारा.

नोट—उक्त लेख स्थानकी न्यूनतासे कुछ छोटे रूपमें लाकर हमने प्रकाशित किया है. परन्तु लेखमेंकी कोई भी बात छूटी नहीं है. इस विषयमें **लाला गिरनारीलालजी टहरीनें** उत्तम लेखपर पारितोषक देनेका विज्ञापन दिया था. उनके पास इस विषयके २० लेख आये उनमेंसे प्रायः यह उत्तम समझा गया, और उक्त विद्यार्थीकोही पारितोषक दिया गया. अन्य सर्व विद्यार्थियोंके उत्साह वर्धनार्थ विज्ञापन दाताने पुस्तकें दी हैं. विद्यार्थियोंकी लेखकशक्ति बढानेका प्रयत्न अवश्य करना चाहिये.

सूचना—प्रियपाठको! गत तृतीयाङ्कमें आगामी पंचामृतादि झगडे सम्बन्धी लेखोंके प्रकाशित न होनेकी बात आप सुन चुकेथे, तथा इस सम्बन्धमें कितनें एक भाइयोंको हमारे मित्रत्वमें शङ्का उत्पन्न होनेकी बातभी प्रकाशित की गईथी, जिसका यथाशक्ति निवारण करनेका प्रयत्न कियाथा. परन्तु दोनों पक्षके कईएक भाईयोंके विशेष आग्रह से वह बात स्थिर न रहसके, और इसपर सभाके कार्याध्यक्षों द्वारा पूर्णसम्मति लेकर इस विषयको इस शर्तपर चलानेका निर्णय किया है कि, लेखकगण कटुक मर्मभेदी शब्दोंद्वारा अपनी विद्वत्ता प्रगट न करें, केवल शास्त्रीय प्रमाणों द्वारा ही अपना पक्ष पुष्ट करें. इस विषयके लेख न चलानेंके ऊपर एक गौरव सम्पन्न स्थानके महाशय बड़े बिगड़े हैं, उनका निन्दनीय साहस पाठकोंको फिर कभी सुनावेंगे.

सम्पादक.

निस्संशयावली निरीक्षक और हम.

जैनमित्र अंक ३ के **निस्संशयावली निरीक्षण** में भूल प्रगट करनाही इस लेखका मुख्योद्देश है. यद्यपि बी. ए. महाशयने अपने लेखमें निस्संशयावलीका खंडन न कर लेखकपर वाक्प्रहाररूप लेखनी चलाई है. परन्तु हम इस प्रकार न करके प्रत्येक पदार्थके निर्णयार्थ बादीके असत् पक्षका खंडन करना न्यायानुकूल समझते हैं. यह निरीक्षण कितना सुयोग्य है इसका हमारे प्रिय पाठकोंको अवश्यमेव तत्काल ही विचार होगा.

नं० १ के निरीक्षणमें अनुमान क्या है? यह यथार्थ समझमें न आने पर आप प्रश्न करते हैं "कि, अनुमानमें पक्ष क्या? सद्धेतु क्या? साध्य क्या? इनका ठीक २ प्रतिपादन न होनेसे

अनुमान क्या वस्तु है ऐसा बिलकुल समझमें नहीं आता" वही यहां बतलाते हैं.

सिद्धांतकारोने अनुमानको इस प्रकार सिद्ध किया है "साधनात् साध्यविज्ञानमनुमानं" "इहानुमानमिति लक्ष्यनिर्देशः" "साधानात् साध्यविज्ञानमिति लक्षणकथनं" "साधनात् धूमादेर्लिङ्गम्" "साध्येऽग्न्यादौ लिंगिनि यद्विज्ञानं जायेत तदनुमानम्"

अर्थ--साधनसे साध्यका विज्ञान है सो अनुमान है. यहां अनुमान ऐसा पद है. सो लक्षण है "तत्र" धूमादिक साधनरूप लिङ्गता है जिससे साध्य अग्न्यादिक लिङ्गी है, तिसके विषयज्ञानउत्पन्न होता है सो अनुमान है.

तदनुरूपजैनधर्मो मोक्षवान् । वीतरागत्वात् । इतिज्ञानमनुमिति । यत्र यत्र वीतरागः । तत्र तत्र मोक्षइति । साहचर्यनियमो व्याप्तिः । व्याप्यस्य जैनधर्मवृत्तित्वं पक्षधर्मता ।

अर्थ—जैनधर्म मोक्षवाला है । वीतरागतासे । ऐसा जो ज्ञान इसी ज्ञानका नाम अनुमिति है । अब व्याप्तिके स्वरूपको प्रगट करते हैं. जहां २ वीतराग है । तहां २ मोक्ष है । इत्याकारक जो वीतराग और मोक्षका सहचार ज्ञान है (एक अधिकरणमें दोनोंका ज्ञान है) अर्थात् दोनोंके इकट्ठे रहनेका जो ज्ञान है इसी ज्ञानका नाम व्याप्तिज्ञान है । व्याप्य नाम हेतुका है. सो हेतुका यानें वीतरागताका जैनधर्म निरूप्य वृत्तित्व ज्ञान है. अर्थात् जैनधर्ममें रहनेका जो ज्ञान है, इसी ज्ञानका नाम पक्षधर्मता है । वह पक्षता संदिग्ध साध्यवाली हो जाती है। "संदिग्ध साध्यवान पक्ष" संदिग्ध साध्यवाला जो होवे उसका नाम पक्ष है. जैसे वीतराग हेतु अर्थात् जिस अनुमितिमें वीतरागको हेतु किया, मोक्ष साध्य है, और जैनधर्म पक्ष है, वह जैनधर्म संदिग्ध साध्यवाला है. क्योंकि जैनधर्ममें प्रथम साध्यका सन्देह है. इसलिये साध्य प्राप्त्यर्थ सद्धेतु जो वीतरागता ताका अनुष्ठान करना न्याय है. क्योंकि जिन पुरुषोंको किञ्चिन्मात्रभी जिनधर्मका मूलतत्व ज्ञान है- वे भलेप्रकार जान सक्ते हैं कि, यावन्मात्र जीवोंकेलिये मुख्यसाध्य मोक्ष अर्थात् कर्मोंसे छूटना है, और उसका कारण शुद्धोपयोग अथवा वीतरागता है इसी साधनके उत्तरोत्तर साधन शुभोपयोग, गृहस्थ (श्रावक) के षट्कर्म हैं. यथा देवपूजादि. जिन भाइयोंने शुद्धोपयोग रूप निर्वृत्ति मार्गके निमित्त कारण शुभोपयोग रूप सन्मार्गके क्रमको किञ्चिन्मात्रभी जाना है, अथवा जिन्होंने श्री मोक्षमार्गप्रकाशका एकवारभी ध्यानपूर्वक अवलोकन कर शुभोपयोगको शुद्धोपयोगका साधन जान लिया है वे सहजहीं समझ सक्ते हैं कि, व्यवहार धर्म वही है जो निश्चयका साधक हो. जो व्यवहार प्रवृत्तिरूप एवं निश्चयका बाधक हो वह व्यवहार नहीं किन्तु व्यवहाराभास है. जैसा कि पंचामृताभिषेक । इससे हमारे भाइयोंको निर्विवाद स्वीकार करना पड़ेगा कि, हमारे आचार्योंका मुख्योद्देश क्रमशः आरम्भ घटानें और परिणामोंके उज्ज्वल करनेका है नाकि आरम्भ विशेषकर परिणामोंके मलीन करनेका. इसलिये स्वामी समन्तभद्राचार्य्यनें बृहत्स्वयंभू स्तोत्रमें स्पष्ट कहा है.

पूज्यं जिनं त्वार्चयतो जनस्य, सावद्यलेशो बहुपुण्यराशौ । दोषाय नालं कणिका विषस्य, न दूषिकाशीतशिवाम्बुराशौ ॥

अर्थ—जिनेन्द्रकी पूजन करनेवाले पुरुषके बहुत पुन्यराशिके विषें सावद्यलेश दूषित करनेको असमर्थ है. जैसे विषकी कणिका समुद्रके जलको विकार रूप नहीं कर सक्ती.

भावार्थ-पूजन आदि शुभोपयोगके कार्योंमें समुद्र सदृश पुण्योत्पन्न करनेवाला परिणाम और किञ्चिन्मात्र कणिका सदृश यत्नाचार पूर्वक आरम्भ होना चाहिये. उक्त वाक्यसे पाठकोंको स्पष्ट विदित हो गया होगा कि, हमारे आचार्य्योंने जो शुभोपयोगरूप षट्कर्मोंका उपदेश दिया है, उसका उद्देश परिणामोंके निर्म्मल करनें और आरम्भ घटानेका है.

नं० २ में आपने जो "मुहणयण दंत धोयण" इत्यादि मुनियोंके वास्ते वर्ज्य हैं तो जिनेश्वर प्रतिमाको होना भी न्याय है. क्योंकि "पादधोयणं" अर्थात् पादप्रक्षालन जिनेश्वरकी प्रतिमाको वर्ज्य समझना चाहिये. जब पाद प्रक्षालन वर्ज्य हुआ तो "स्नपन" अर्थात् अभिषेक कहां रहा.

प्रिय विद्वद्वरो! यदि बी. ए. महाशयके निरीक्षणमें "सुगंध द्रव्यादिभिः" यह पद आ जाता तो, उन्हें इतना लिखनेका परिश्रम न करना पड़ता. अस्तु. इतना तो प्रत्येक जैनीभाईको विचार करना चाहिये कि, यदि शुद्ध जलकोही उपरोक्त द्रव्योंमें (मुनियोंके त्याग द्रव्योंमें) वर्ज्य कर देते तो शौच, दंड, स्नानादिका होना कैसे संभवता? यदि शौच दंड स्नानादि क्रिया न होवे तो, चारित्रमें दूषण आवे. और प्रायश्चित्तके भागी हों. एतदर्थ उपरोक्त द्रव्योंमें सुगंध द्रव्य करके जलका ग्रहण करना असङ्गत है. और शुद्ध जलको कार्य मात्रमें लेनेकी आज्ञा है. तो फिर जिनेश्वर प्रतिमापरभी आगम प्रमाण अभिषेचन सिद्ध हुआ. तथा सुगंध द्रव्यान्तर्गत पंचामृत द्रव्योंका सर्वथाही त्याग हुआ. भावार्थ— जिनेश्वर पर त्रैकालिकसंसर्गावच्छिन्नपंचामृताभिषेक करना सर्वतया न्याय विरुद्ध है।

नं० ३ में आपने "स्नपनमें लक्षणाका असंभवपना प्रगट किया" उसमें भूल दिखाई जाती है.

"शक्यसम्बन्धोहिलक्षणा" शक्यके साथ सम्बन्ध होनेंका नाम लक्षणा है.। "गंगायां घोषः" गंगाके विषें घोष अर्थात् अहीरोंका ग्राम है। और शक्तिका आश्रय होवे उसको शक्य कहते हैं। "अत्रतु विचारणीयं" यहांपर विचार करना चाहिये कि, गंगा पदकी शक्ति गंगाके प्रवाहमें है परन्तु प्रवाहमें ग्रामका होना असंभव है. अतएव गंगापदकी तीरमें लक्षणा करना चाहिये. गंगापदका शक्य जो प्रवाह उसका सम्बन्ध तीरके साथ है. सो गंगाके तीरमें घोष है ऐसा बोध लक्षणा करके होता है. शक्तिकरके नहीं होता तस्मात् "लक्षणावृत्ति" पदमें शक्तिवृत्तिसे भिन्न है. और जब कि कोई भोजनको बैठा. उसने सेवकसे कहा "सैन्धवमानय" अर्थात् सैन्धवको लाओ, अब यहांपर सैन्धव नाम लवणका भी है. और घोड़ेका भी है. (औरभी कई अर्थोंका द्योतक है) एतस्मात् सैन्धवपदमें नानार्थ बोधकी शक्ति है. तब किसको लाना चाहिये? सो प्रकरण तथा आम्नायसे, यहांपर सैन्धवपदकी लवणमें ही ल-

क्षणा करनी. क्योंकि भोजनकालमें लवणकीही आवश्यक्ता है अश्वकी नहीं, और जब वस्त्रोंको धारण कर कहीं जाना चाहें तब प्रकर्णानुसार घोडेमें लक्षणा करनी. इसी प्रकार "गणपती" पदकी लक्षणा वैष्णव मतावलम्बी लम्बोदर वक्रतुंड और एकदन्तीमें. तथा जैनी गणधर (६३ ऋद्धियुक्त दिव्यध्वनी धारण करनेवाले) में करते हैं.

तैसेही इस प्रकर्णमें "स्नपन" यहां शुद्ध जलाभिषेककी लक्षणा करेंगे. न कि वैष्णवों सदृश पंचामृताभिषेककी लक्षणा करेंगे. भावार्थ—यह श्लोक आम्नाय तथा प्रकर्णानुरूप शुद्ध जलाभिषेकके वास्तेही आज्ञा करता है न कि अभिषेक भिन्न क्रियाओंके लिये.

नंबर ४ में पंचामृताभिषेकको वीतराग धर्ममें तात्पर्य बताया उसकी भूल दिखाई जाती है.

दिगम्बरजैन सिद्धान्तकारोंका तो यही अभिमत है कि, वीतरागधर्ममें सरागोत्पत्ति कारणोंको पुष्ट करना तात्पर्य नहीं है. किन्तु तद्भिन्न धर्माभासोंमें विषयपोषणार्थ नूतनाचार्योंने तात्पर्य्य कहा है, और उसको असंस्कृत वाक्योंसे पुष्ट किया है, तो फिर पाठकजन अवश्य समझ सकेंगे कि, इन वाक्योंके अनुयायी जन अल्पज्ञ हैं या प्रतिकूली. इसमें आपने जो अनुमान प्रमाणपर नाममात्र पिष्टपेषणरूप आक्रमण किया है, उसका समाधान नं० १ में स्पष्ट कर दिया है.

नम्बर ५—९ में और जैनमित्र अंक २ के "**कलियुगी पांडित्य**" में **बी. ए.** महाशयने जो भगवत् उमास्वामीकृत श्रावकाचार तथा वामदेवकृत भावसंग्रह और वसुनंदि आचार्यकृत श्रावकाचारमें पंचामृत अभिषेककी सिद्धि आगम प्रमाणसे की है, उसका असत्पना इस प्रकार है.

यदि उपरोक्त ग्रन्थोंके वचन प्रमाणीक मानें जावें तो उनके साथ निर्माल्यभक्षण, सग्रंथमुनि, जिनबिम्ब केशर लेपन, और पुष्प पूजन आदि बातोंके पुष्ट करनेवाले वाक्यभी उनमें पाये जाते हैं. क्या हमारे पाठकगण इतनेपर भी इन ग्रन्थोंको माननीय करेंगे ? देखिये ! इन्हीं भगवत् उमास्वामीकृत श्रावकाचारके परस्पर विरोधी वचन ।

श्रीचन्दनं विनानैव, पूजा कुर्यात् कदाचन ।
प्रभाते घनसारस्य, पूजा कुर्यात् विचक्षणः ॥
मध्यान्हे कुसुमैपूजा, सन्ध्यायां दीपधूपयुक् ।
वामाङ्गे धूप दाहस्स्यात् दीपपूजा च सन्मुखि॥

अर्थ—चन्दनकेविना जिनेन्द्रका पूजन कदाचित् नहीं करै, और प्रभातमें विचक्षण पुरुष घनसार (कर्पूर) से पूजा करें, और मध्यान्हमें पुष्पन कर पूजा करें; संध्यामें दीप धूप युक्त पूजन करें; और वामभागमें धूप दाह करें. और दीपपूजा सन्मुख करें.

इसमें प्रथम तो "कदाचन" और "एव" पदका चन्दनके साथ अन्वय है, इससे यह नियम ठहरा कि, कदाचित् भी चन्दन विना पूजन नहीं करै, पीछे मध्यान्हमें पुष्पनकर पूजा लिखी तहां चन्दनका नाम भी नहीं लिया. और संध्यामें दीप धूप कर पूजन लिखी तहां भी चन्दनका नाम नहीं लिखा. तातें स्ववचन बाध हुआ. ऐसी अन्य भी कई बातें उक्त आचार्यनामधारक ग्रन्थकर्ताकी स्वपर विरोधक हैं—

वामदेवकृत भावसंग्रहमें चन्दन लेपन भी

लिखा है. इसी प्रकार वसुनंदि श्रावकाचारमें भी चरणोंपर पुष्प चढ़ाना पुष्ट किया है.

यथा—मालियं वकण पाहियं पयासोऊ नियेहि।
मदरणाय चंपा मुप्पल सिन्दु वारेहि ॥१॥

इत्यादि वाक्यों करके पुष्प चढ़ाना पुष्ट किया है, और देखो भद्रबाहुसंहितामें मुनियोंको सग्रन्थ होना सिद्ध किया है, इसी प्रकार निर्म्माल्य भक्षणको भी पुष्ट किया है.

पाठको! बी. ए. महाशयने परीक्षा करके जो २ ग्रंथ छान डाले हैं, और जिनके असमीचन कहनेसे हमें पक्षपाती ठहराया है, उन्हीं ग्रन्थोंके वाक्योंका परस्पर विरोध तथा जिनमतकी आम्नायसे प्रतिकूलता दिखाई है. देखिये! जिन वसुनंदि आचार्यने मूलाचारकी टीकामें गंध जलसे साधुओंको पादप्रक्षालन करनेसे वर्जित किया है. उन्होंने अपने किये हुए श्रावकाचारमें केसरका लेप करना जिनबिम्बको सिद्ध किया है. क्या एक नामधारक आचार्यके वचनही विरोधी हैं अथवा दो आचार्योंके कहे हुए प्रथक २ वचन हैं? इसकी सत्यता असत्यताका निर्णय हम अपने पाठकोंपरही छोड़ते हैं. और द्वितीय रीत्यानुसार उनके बनाये आगम प्रमाणोंको अप्रमाण बनाते हैं

बुद्धिमान पाठको! हमारे बी. ए. महाशयजीने आगम वाक्य तो लिखे परन्तु, उनके अर्थपर दृष्टि देकर कुछ विचार नहीं किया.

आपने सिद्धतो पंचामृत करना चाहा और लिखे हुए आगम वाक्योंसे होगया सप्तामृत तथा षष्ठामृत सिद्ध, पूर्वश्लोकमें शुद्धजल, ईक्षुरस, घृत, दुग्ध, दही, आम्र, तथा सर्वौषधि इन द्रव्योंसे जिनेश्वरका अभिषेचन करना और दूसरे श्लोकमें जल, आम्ररस, इक्षुरस, घृत, दुग्ध, दही इनसे अभिषेक करना बताया.

पाठको! अब यहां विचारणीय है कि, पंचामृत यह एक द्वंद्व समाहार समास है. और इसकी सिद्धि पंचद्रव्योंसे होती है. तो फिर हमको क्या पांचही द्रव्य रखकर शेषको त्याज्य करदेना चाहिये? अथवा कुलद्रव्योंको लेलेना चाहिये! यदि पांचद्रव्योंकोही लेकर शेषको त्यागें तो आचार्यका वाक्य खंडित होता है. और यदि कुल वस्तुएँ लेली जावें तो पंचवस्तुओंका समाहार नहीं हो सक्ता. किन्तु षष्ट सप्तवस्तुओंका हो सक्ता है. अन्यथा पंचमहाव्रत, रत्नत्रय. अष्टमद, अष्टांग इत्यादिकोंमें दूषण आसक्ता है. क्योंकि अष्ट अंगमें एक अंग रहित सम्यक्तको समन्तभद्राचार्य्यजीने ऐसा कहा है:—

नाङ्गहीनमलंछेत्तुं दर्शनं जन्मसंततिम् ॥
नहिमंत्रोऽक्षरन्यूनो, निहन्ति विषवेदनाम् ॥

अर्थ—जैसे अक्षर रहित उच्चारण किया मंत्र विषवेदनाको निश्चय करके नष्ट नहीं करता है, तैसेही अंग रहित सम्यक दर्शनभी संसारकी संतति छेदनेमें समर्थ नहीं है.

अतएव आपके श्लोक पंचामृताभिषेक सिद्ध करनेको सर्वथा असमर्थही नहीं किंतु लज्जित करनेवाले हैं.

दूसरे वसनंदि श्रावकाचारका जो गाथा इसी पंचामृताभिषेकके सिद्ध करनेकेलिये प्रमाण रूप दिया है, उसमें पंच द्रव्य तो पाये गये. परन्तु पंचद्रव्योंका क्या करना इसकी क्रिया गाथा नहीं है. इसलिये इन द्रव्योंसे क्या करना य

ठीक समझमें नहीं आता, और यह भी विशेष दूषण पाया गया कि, एक आचार्यने समामृत, दूसरेने पद्मामृत और तीसरेने पंचामृत नाम मात्र दर्शित कराके क्रियाको गुप्त कर लिया. कहिये पाठको! अब यह वाक्य किसप्रकार प्रमाणीक तथा समीचीन मानें जावें? क्या महान् २ आचार्योंके वचन ऐसे निस्सत्व और बेजड़ पैरके होते है? कदापि नहीं! यह तो नामधारी महत्पुरुषोंकी क्रिया है.

नं. ६ में आपने जो पक्षपाती बतलाकर हमारी क्रिया निरर्थक ठहराई है. उसके विषय पाठक गण स्वयं विचारेंगे कि, ऐसे आगमाम्नाय-विरुद्ध शास्त्रोंको कौन स्वीकार करेगा?

नं. ७ में स्फोटन और जिला बिगड़नेके समकक्षीपनेमें सिद्ध करनेमें आपने जो महन्तता दिखाकर स्वकपर आक्रमण किया है वह अवक्तव्य है. इसमें कोई बात आपने स्पष्ट नहीं बताई कि, जिसका खंडन किया जाय. केवल इतनाही कहना बस होगा कि, चाहे गांवटी पं. तोजी (पंडितजी) हों चाहे शहरके संतोजी, पर पंडितजीका यथार्थ लक्षण तो यह है कि,—

कवित्त—पंडितकाहुकी जाति नहीं, जो मूढ़ हु जातिको गर्व धरै । पंडितकाहुको नाम नहीं जो मुरखको पंडित उचरै ॥ ज्ञानकला जिनके प्रगटी, हिय आतम तत्व विचार करै । पंडित नाथूराम कहै, तिनको जो स्वपर अघ नाश करै ॥ १ ॥

हमारे पाठकगण इसी खंडनमंडन विषयमें, जिसके आश्रित पंडितपना संभवता होगा. स्वयमेव जान जावेंगे कि, निवृत्ति रूप उपदेशक पंडित कौन है, और प्रवृत्ति रूप कौन?

दूसरी पक्ष—यदि यही कवित्त **नाथूराम** प्रेमी अपना बनाया कहने लगें तो, इसकी पहिचान कैसे और कौन करै?

नं. ८ में आपने भद्रबाहुादि मुनियोंके ग्रन्थोंकी मान्यता और उन्हीं नामधारक अन्य-कर्ताओंकी अमान्यतापर जो वक्तव्य किया है उसके सम्बन्धमें इतनाही लिखना बस होगा कि, भद्रबाहु मुनिके ग्रन्थ माननीय होनेसे, वैसेही नामधारक अन्य भट्टारकोंके (जो पीछेसे हुए हैं) वचन कैसे माननीय हो सक्ते हैं? लक्ष्मी नाम धरनेसे क्या लक्ष्मीकी समता प्राप्त हो सक्ती है? पत्रके मोतियोंकी मालामें कच्चे मोती मिलानेवाला प्रमाणीक नहीं ठहर सक्ता जैसा कि नम्बर ५ में बतला चुके हैं.

नम्बर ९ के आगमप्रमाणका खंडन तो नं. ५ में. और अनुमान प्रमाणका स्वरूप नं. १ में बता दिया है. प्रत्यक्षप्रमाण जो आपने बताया है, उसकी अप्रमाणता इसप्रकार है.

यद्यपि दक्षिणदेशमें भट्टारकोंके भ्रमसे भोलेभव्य जीव पंचामृताभिषेक करते है. तथापि सर्वस्थानों तथा सर्वकालोंमें न होनेसे यह हेतु व्यभिचारी. और उत्तर देशका अपेक्षा विरोधी, एवं प्रतिकूल होनेसे अमाननीय है. यदि दक्षिण देशमें कुदेव क्षेत्रपालादि और निर्माल्य भक्षणादि तथा भेषियों कृतग्रन्थ माने अथवा पूजे जाते हों तो क्या, हमारे बी. ए. महाशयके प्रत्यक्ष प्रमाणद्वारा यह भी प्रमाण ठहरेंगे? पाठकगणोंको विचारना चाहिये!

नं. १० में आपने जो लेखक पंडितजीको धोखेबाज बताया है, उसका उत्तर इतनाही है कि, जिनमतके उद्देशविरुद्ध सरागताको पुष्ट करनेवाली शिक्षाका देनेवाला धोखेबाज कहलावेगा, अथवा जिनमतानुकूल वीतरागताका पुष्ट करनेवाला–उपदेश देनेवाला. यह बात पाठकोंकी परीक्षाधीन है.

नम्बर ११ और १२ में जो आपने काष्ठासंघकी उत्पत्तिरूप आधार मांगा तथा लोहाचार्यकी आयुका ३००वर्षसे अधिक होना प्रगट किया, उसके विषय प्रमाणरूप उत्तर दिया जाता है.

मूलसंघ व काष्ठासंघके भेदपनेमें दर्शनसार (देवसेनकृत) नीतिसार आदि ग्रन्थोंका प्रमाण इसप्रकार है.

अप्पम सत्थ पुराणं, पायच्छित्तं अण्णहाकिंपि । विरयत्ता मिच्छत्तम, पवट्टियममूढ लोकेसु ॥ ३६ ॥ सोसवण संघवज्जो, कुमारसेणोह सेमया मिच्छतो चतुचसुमो रुद्दो कट्ठं संघं परुवेदी ॥ ३७ ॥

संस्कृत—आगम शास्त्रपुराणं, प्रायश्चितं च अन्यथा किमपि । विरिचिता मिथ्यात्वं प्रवर्तितं मूढलोकेषु ॥ ३६ ॥ सश्रमणसंघवर्जो कुमारसेन स्फुटसमय । मिथ्यात्वः त्यक्तोपमः, रौद्रः काष्ठसंघं प्ररूपितं ॥ ३७ ॥

अर्थ—आगमकोशास्त्रको पुराणको प्रायःश्चित्तको अन्यथा प्ररूपण करके मूर्ख लोगोंमें मिथ्यात्व प्रवर्ताया ॥ सो कुमारसेन प्रगट समय मिथ्यात्वी और त्याग किये हैं उपशम भाव जिसने, ऐसे रौद्रपरिणामी कुमारसेनमुनिनें संघवाहिर होते संते काष्ठासंघ प्ररूपण किया. ॥३७

इसकेसिवाय ता. १६ जुलाई सन १९०१ के जैनगजट नं. १७ में श्रीयुत पं. शिवचन्द्र शर्म्मानें अनेक शास्त्राधारोंद्वारा उपर्युक्त बात सिद्ध की है. और उसहीकी पुष्टी करनेंके लिये दर्शनसारकी साक्षी प्रगट की है. जिन महाशयोंको देखना हो जैनगजटमें साधार देख सक्ते हैं. आयुष्य तथा उत्पत्तिकाल ग्रन्थोंमें जो आचार्योंके सम्बन्धमें पाये जाते हैं वही लिखे जाते हैं. उनमें तर्क नहीं चल सक्ती. परन्तु उनकी प्रमाणता, अप्रमाणता अम्नायानुकूलता या प्रतिकूलताद्वारा प्रगट हो सक्ती है अतएव स्पष्ट हुआ कि, लोहाचार्यजी तथा उनके अम्नायी देवसेनजी आदिने इस कष्ठासंघको प्रवर्ताया और पुष्ट किया.

नं. १३ में जो आपने विधिनिषेधपनेका प्रकरण छेड़ा उसका स्पष्टीकरण इस प्रकार है.

विचारनेका विषय है कि, केवलीके केवल ज्ञानमें क्या स्वेताम्बर, काष्ठासंघादि मतोंका होना झलका नहीं था? नहीं २ अवश्य झलका था! फिर क्या कारण है कि उन्होंनें इसका निषेध नहीं किया? कारण यही है कि, जिस समय विधि न हो निषेध कैसे करे. व्यवहारमेंभी यह बात प्रगट है कि, अचौर्य पुरुष राज्यशिक्षाद्वारा चोरी करनेसे वर्जित नहीं किया जाता है. और यदि उसनें कालान्तरमें चोरी की तो निषेध होता है. वही अंक ११–१२ में शास्त्राधारसे स्पष्ट किया गया है।

नम्बर १४—हम नहीं जान सक्ते हैं कि इस अंकमें आपने अपने अकर्तव्य पुष्टिताकी क्षमा मांगनेके सिवाय कौन २ सी छोटीमोटी

बातोंका विचार पाठकोंपर छोड़ा है. हमारी समझमें तो अपनी कपोलकल्पनाके निरीक्षण करनेका भार विद्वज्जनोंपर छोड़ा है, तो उस समय यदि पाठकोंने न विचारा हो तो अब अवश्य विचारेंगे.—इत्यलम्.

पंडित शिवशंकर शर्म्मा.
बडनगर. (मालवा)

प्रांतीय उपदेशककी रिपोर्ट.

"कर्नाटक प्रदेश"

[गताङ्कसे आगे]

तारीख १७ दिसम्बरको **वरांग** आया. सभामें ३० श्रोता उपस्थित हुए. सदाचार विषयमें व्याख्यान दिया. १४ पुरुष स्त्रियोंने मन्दिरमें सर्व वस्तुओंके भक्षणका त्याग तथा अष्टमूल गुणोंका धारण किया. ८ ने स्वाध्याय-का नियम लिया. २ ने निर्म्माल्य भक्षण तथा मिथ्यात्वका त्याग किया. यहां पर ४ घर जै-नियोंके और २ प्राचीन जैनमंदिर हैं. स्वर्गवासी श्रीमान् विद्वद्वर्य्य पं० **सूरसेनशास्त्री** श्रवणबे-लगुलकी बहिन **लक्ष्मीमतीअम्बा** जिनकी उमर ७० वर्षकी है; यहांपर रहती हैं. उक्त बाई बड़ी विद्वान् हैं. हजारों श्लोक मुखपाठ हैं. चर्चादि बहुत जानती हैं, दृष्टि मंद हो जानेके कारण शास्त्राध्ययन जाता रहा है. धन्य है ऐसी स्त्रियोंको! इन्हीका जीवन सफल है.

ता० १९ को **तीर्थहल्ली** आया. यहां १ घर सिरसप्पा राजप्पा सेठीका है. इन्हींके घर साधारण धर्मोपदेश दिया. दो चार भाइयोंने स्वाध्यायका नियम तथा अष्टमूल गुणोंका धारण किया. ५) उक्त सेठजीने उपदेशक भंडारकी सहायतार्थ दिये, चैत्यालय घरहीमें १ है.

ता० २० को हुंमसमें आया. भट्टारक देवेन्द्रकीर्तिजीसे मिला. साधारण सुश्रूषा मैंने की; परन्तु पंचाङ्ग नमस्कार न करनेके कारण अत्यंत क्रोधित हो सन्मुख आया हुआ देख बोले. कौन है? कहांसे आया? इस मठमें आकर हमको नमस्कार क्यों न किया? हमको क्या श्रावक समझ लिया? हम गुरुओंके गुरु हैं! आदि लगातारके प्रश्नोंसे मैं कम्पित हो गया. परन्तु गलाको थांभ कर उत्तर भी जैसा बना दिया. महाराज! ऐसी क्रोधाग्निसे प्रज्वलित हृदयवाले. हाथी घोडे पालकी आदि महान् परि-ग्रह रखनेवाले गुरू शास्त्रमें तो नहीं कहे हैं. आप किस आधारसे गुरु बनते हैं? आपको तो शांति परिणामी होना चाहिये. इस प्रकार बहुत वादविवाद हुआ. कुछ लज्जित भी हुए. अन्तमें यही कहा कि, "जब तुम हमको नम-स्कार नहीं करते तो, हम भी तुम्हारी सभा वगैरहके लिये कुछ नहीं सुनते. आखिर अपना यहां तक का आना निष्फल समझ मैं निराश हो गया. यहां तो "यौवनधनसम्पत्ति प्रभुत्वमविवेकता। एकैक मप्यनर्थाय किम यत्र चतुष्टयम्॥" आदि वाक्य भली भांति लागू होते दृष्टिगोचर हुए. हमारे भ्रातृगण इस विषयमें कटाक्ष समझेंगे. इस कारण अधिक नहीं लिख सक्ता. इस स्था-नमें पद्मावतीदेवीका बड़ा महात्म्य है, इससे हजारों यात्री यहांपर आते हैं. तीस चालीस हजार रुपया सालकी आमदनी भी इस मंदिरमें है. ६ मंदिर औरभी यहां बड़े २ प्राचीन

जीर्ण झाड़ी जंगलोंमें हैं. जिनकी कोई मरम्मत भी नहीं कराता. धर्मकार्यमें पैसा खर्च होना आज कलके समयमें बहुत कठिन है. यहांपर उक्त महात्माजीके कारण दाल गलती न देखकर उसी दिन शिमोगा स्टेशन आकर २३ ता० को बेंगलूर आगया.

बेंगलूरमें ३० घर जैन और १ मंदिर है. यहां ४ दिन ठहरकर सभाओंमें मोह मिथ्यात्व आदि विषयोंपर व्याख्यान दिया. १९ महाशयोंने स्वाध्यायका नियम लिया. १ ने मिथ्यात्वका त्याग किया. शेष भाई भी प्रतिज्ञायें लेनें व सभाको सहायतादि देने हेतु उत्सुक थे; परन्तु १ विरोधीके कुतर्क कर बैठनेसे कुछ न हो सका. तथापि दो धर्मात्माओंने सभासदी स्वीकार की.

ता० २७ को गोरीबिदनूर आया. गुंडप्पा श्रेष्ठीके यहांपर ठहरकर दया विषयपर २९ महाशयोंकी सभामें व्याख्यान दिया. यहां ९ घर जैन व १ चैत्यालय है.

ता० २८ को गुडबंडा आया. यहांपर २ मन्दिर व ८ घर जैनियोंके हैं. सभा दो कीन्हीं. जिसमें २९-३० महाशय उपस्थित हुए. गृहस्थधर्म व संसार विषयपर व्याख्यान दिये. ११ महाशयोंने स्वाध्यायका नियम लिया. शेष भाइयोंने मुनिमहाराजके उपदेशसे यथाशक्ति प्रतिज्ञायें ग्रहणकरही रक्खी हैं. उक्त निर्ग्रंथ मुनिराज जिनका नाम चन्द्रकीर्ति है. वर्तमान कालमें परमयोग्य वृत्तिके धारक हैं. चौथे दिवस आहार ग्रहण करते हैं, ध्यान स्वाध्यायमें मग्न रहते हैं, रात्रिको मौनवृत्त रहता है. परिणाम उज्ज्वल हैं. यथार्थमें ऐसेही गुरु मानने योग्य हैं. हमस ऐसे गुरु नहीं! यहां ३ भाइयोंने सभासदी स्वीकारी.

ता० २ जनवरी सन् १९०३ के प्रारंभमें माइसूर आकर "साहूकार मोदीखाने तिमप्पा" के यहां ठहरा. ३ दिनकी कोशिससे १ सभा हुई. जिसमें २९ भाई एकत्र हुए. १० भाइयोंने स्वाध्यायका नियम लिया. सभा पाठशाला स्थापित करनेका विचार किया. १ भाई उपदेशक भंडारके सहायक हुए. तथा १ ने सभासदी स्वीकार की. यहां २० घर जैनी व २ मंदिर हैं.

ता० ९ को मंडया आकर साहूकार अमनप्पाजीके ठहरा. ३ सभाकीं. जिनमें २०।२९ के अनुमान भाई उपस्थित हुए, जिनपूजा ऐक्यता प्रभावनापर व्याख्यान दिये. १४ भाइयोंनें स्वाध्याय तथा मन्दिरमें पदार्थ भक्षण करनेके त्यागका नियम लिया. ३ ने निर्माल्यद्रव्यका त्याग किया, इस ग्राममें १० घर जैन क्षत्रियोंके व १ मन्दिर है, ६ महिनेंसे अनैक्यताके कारण मन्दिरका ताला बंद पड़ा है. लोग दर्शन पूजनसे वंचित रहते हैं. प्रेरणा करनेसे खोलनेका प्रण किया है. किसी खास कारणसे फाल्गुण मासमें खोला जावेगा. और साथही प्रतिष्ठा की जावेगी. धर्मात्मा भाइयोंने बम्बई प्रान्तिक सभाकी सभासदी स्वीकार की.

इस शहरके नजदीक शिवसमुद्र स्थानमें मैसूर महाराजने ९० लाख रुपया लगा कर ल्लिफ (पानीका यंत्र = कावेरी फ़ॉल्स) बनवाया है. जिससे अब १॥ लाख रुपया मासिक आमदनी होती है. इस यंत्रमें आगकोयलेको छोड़कर

केवल पानीहीसे मिशीन चलती है, और रोशनी पैदाकर तारद्वारा १०० मील कोलहार स्थानकी सोनेकी खानमें पहुंचाते हैं. सोनेकी खानि २७०० फुट गहरी है. वहां मिशीन द्वाराही गाड़ी जाती है. १० मीलमें नीचे १८ रास्ते हैं, १० मीलकी तमाम जगह पोली है. इन दोनों स्थानोंकी कारीगरी चतुराई व साहसकी प्रशंसा किये विना नहीं रहा जाता, व्यापारोन्नति इसीको कहते हैं. भाइयोंको इससे कुछ शिक्षा लेना चाहिये.

ता० १० को बोरंगपेठ आया यहांके भाइयोंके उपस्थित न रहनेसे कुछ लाभ न हुआ. ११ को कांचीपुर आया, एक सभा कीन्हीं व्याख्यानसे १० भाइयोंने स्वाध्यायका नियम लिया. शेष सप्तव्यसनादि दुराचारोंके सर्व भाई त्यागी हैं. यहांका आचारण उत्तम है. पाठशाला स्थापित करनेका विचार किया गया है, यहां १९ घर जैनियोंके हैं. इस स्थानको लोग जिनकांची शिवकांची आदि नामोंसे भी पुकारते हैं.

ता० १९ को मद्रास आया. इस शहरमें तीन स्थानोंमें ३ सभा कीन्हीं जो २. ३, १२ मीलके अन्तरसे थे. कितने एक भाइयोंने स्वाध्यायका नियम लिया. २ भाइयोंने सभासदी स्वीकार की. यहां १० घर जैन व १ मन्दिर प्राचीन है, यहांके अजायबघरमें दिगम्बराम्नायकी बड़ी २ भारी प्राचीन मूर्ति मौजूद हैं.

ता० २२ को रायचूर आया, ३० भाइयोंको एकत्रकर १ सभा कीन्हीं. आत्मज्ञान विषयपर व्याख्यान दिया. १९ भाइयोंने स्वाध्यायका नियम लिया. ४ भाइयोंने सभाकी सभासदी स्वीकार की. इस ग्राममें ७ घर जैन व १ मन्दिर है. यहांसे गुलबुर्गा रवाना हुआ.

(शेषमग्रे.)

कर्नाटकदेशका इतिहास.

मैं कर्नाटक देशका दौरा प्रायः पूर्ण कर चुका हूं. जिसकी रिपोर्ट पाठकगण जैनमित्रमें अवलोकन करते आये हैं. पर्यटनसे बुद्धिमान बहुत लाभ उठाते हैं, तथा बहुतसे अनुभव प्राप्त करते हैं. परन्तु उसमें स्वतंत्रता और साहसकी अधिक आवश्यकता है. मैंने भी अपनी बुद्धिके अनुसार कुछ इस प्रदेश सम्बन्धी यहांकी चालपद्धतिका अनुभव किया है. आज पाठकोंको उसीके सुनानेका प्रयत्न किया जाता है.

प्रिय पाठको! आज भारतवर्ष जिस दरिद्रावस्थाको प्राप्त हो रहा है, उससे आप अजान नहीं होंगे. यद्यपि उसी भारतवर्षके अंतर्गत यह प्रदेश है. तथापि यहांकी अवस्था और भी शोकप्रद है. पता लगानेसे ज्ञात होता है कि, यहांके जिन २ स्थानोंमें पांच पांचसौ घर बड़े २ धनाढ्य प्रभावशाली लक्षाधीश जैनियोंके थे. वहां अब १० घर भी नहीं है. जिन स्थानोंमें मन्दिर चैत्यालयोंके बनानेमें करोड़ों रुपया पानीकी तरह बहाये गये हैं, वहां भगवानकी कोई पूजन करनेवाला व मन्दिरोंकी मरम्मत करनेवाला नहीं दिखता. जिस स्थानमें वादी दिग्गजोंके मस्तक विदीर्ण करनेवाले विद्वानोंके समूह थे, वहां मिथ्यात्व व मायाचारका राज्य देखनेमें आता है. अविद्याके प्रभावसे प्रायः समस्तदेश

शिथिलाचारी हो गया है. योंतो सबही प्रदेशोंका यही हाल है. तथापि निर्माल्यभक्षणका इस देशपर बड़ा भारी कलङ्क है. प्रायः लोग इसीपर जीविका करने लगे हैं. जिसका मुख्य कारण अज्ञान और दरिद्रताही है. मैं जहां २ फिराहूं, ग्राम बहुत करके जंगल और झाडियोंके बीचहीमें देखनेमें आये है. नदीनाले बहुत समीप २ देखनेमें आते है. जो यहांकी प्राचीन उर्वराभूमिके चिन्ह हैं. यहांकी भूमि बहुत रमणीक है. मकानात प्रायः काष्टके व खपरैल नजर आते हैं. जो मील २ आध २ मीलके अन्तरपर हैं, कोई २ मकान जहाजों (नौका) के आकारके बने हैं. पहिले अनेक कोट्याधीश द्वीपान्तरोंसे व्यापार करनें समुद्र मार्गसे जाया करते थे. उन्हींके शौकसे बनवाये हुए यह जान पड़ते हैं.

यहांके लोगोंका मुख्य खाद्य चावल तथा रागी (एक प्रकारका राई सदृश अनाज) है. वस्त्रोंका शौक बहुत कम है प्रायः यहांके लोग घरमें तो १ कोपीन मात्र शरीरपर रखते हैं. बाहर जाते समय अंगरखी पहिन लेते हैं. सिर खुलेही रखते हैं. अथवा रुमालादि कुछ बांध लेते हैं. सारांश शरीर सम्बन्धी शौकोंमें बहुत कम खर्च करते हैं. और आज कलके समयमें धर्मादि कार्योंसे भी मुंह मोड़ रक्खा है. केवल पैसा एकत्र करनेकाही कार्य है. वहां अन्यदेवादिकोंकी पूजाओंमें हजारों रुपया खर्च करना बड़ी बात नहीं है. प्रायः सब सेठोंके नामसे ऐसे एक २ मन्दिर है. चोटियोंमें बड़े २ फूलोंके गुच्छे रखना पुरुष स्त्रियोंका शृंगार है. प्रायः सबही स्त्रियां कटिमें चांदीकी मेखला(करधनी) पहिनती हैं. शूद्र लोग तमालपत्रोंकी टोपी बांधते हैं. और उसीका लंगोट लगाते हैं. पाहुनेकी बड़ी खातिरदारी की जाती है. नारियलका पानी बहुत पिलाते है. तथा हुलास सुँघानेकी भरमार रहती है. पाहुनेको तेल मर्दन कराके उसको ऐसे गर्म पानीसे नहलाते हैं कि, न मालूम उस विचारेके प्राण कहां रहते हैं. जैसे गुजरात देशमें बालिकाओंको संतान वृद्धिकी आशासे दो २ तीन २ दिनके उपवास कराके कष्ट देनेका रिवाज है ऐसेही यहांकी पहुनागतका हाल है. यहां सर्व जातियोंमे मामाकी लड़की भानजेको व्याही जाती है. और देशकी पद्धति अनुसार इसमें कुछ दोष नहीं समझा जाता. तथा स्त्रीके घरही पति पहुंचता है. स्त्री पतिके घरपर नहीं जाती. अर्थात् पिताके मरनेपर भानजा सर्व जायदादका मालिक होता है. पुत्र पिताके मरतेही हाथ पकड़ निकाल दिया जाता है. सरकारी अदालतसेभी पुत्र पिताकी सम्पत्तिका अधिकारी नहीं हो सक्ता. यह बड़े अनर्थकी बात है कि, अपने वीर्यसे उत्पन्न हुआ पुत्र तो मुंह ताकता रहे, और भानजा अधिकारी हो बैठे. यहांके शूद्र लोगोंमे मेरे अनुभवके अनुसार विश्वासघात और दुष्टताका अधिक भाव है. यहांका मार्ग बहुत विषम है. नदी पर्वतोंकर वेष्टित ग्राम है, जंगल झाड़ी सिंहादि क्रूर जीवोंकर भरी हैं, बड़ी २ खाई और घाटियोंके बीचमेंसे मार्ग हैं. जहांसे यदि पैर जरा चलबिचल हो तो बस गये! इस देशमें प्रायः वैश्य ब्राह्मण क्षत्री आदि जैनियोंकी वस्ती है, जिनकी संख्या दिनपर दिन घट रही है. यहां संस्कृतविद्याका लोप हो जानेपरभी हजारहां ग्रन्थ संस्कृत भाषामें देखनेमें

आते हैं. कई स्थानोंमें विद्यार्थी संस्कृत पढ़ते हैं तौभी प्रबन्ध योग्य न होनेसे लाभ नहीं उठा सक्ते. यहां कुरीति मिथ्यात्वादिकोंका प्रचार तो अधिक है. परन्तु हर्षका विषय है कि, इन्हे उपदेशादिक निमित्त मिलनेसे आल्हाद होता है. यद्यपि यहांके भाई बहुत दिनोंसे जातिमें प्रवेश की हुई प्रथाओंको एकदम निकाल नहीं सक्ते हैं. तौभी शक्तिभर करनेको उद्यत हो जाते हैं. यहां लोग उपदेशके लिये बहुत तृषित रहते हैं. मुझसे सैंकड़ों भाईयोंने प्रार्थना की है कि, यदि इस देशका उद्धार बम्बईसभा करे तो, महापुन्य हो. हमारा देश अज्ञान ज्वरकर पीड़ित देख उसे दया कर उपदेशामृत पिलाना चाहिये. और जैसे हिन्दुस्थानके उद्धारके लिये बालबोधमें जैनमित्रादि निकालती है, हमारी भाषामें भी निकालना चाहिये. यहां सौ दोसौ ग्राहक तथा दो सौ चार सौ मेम्बर सभाके होना कुछ बड़ी बात नहीं है. दश बीस लाइफमेम्बर भी शीघ्र हो सक्ते हैं. अतः दिगम्बर जैनप्रान्तिकसभा बम्बईको एक ऐसा पत्र निकाल कर इन्हें सभा पाठशालादिकोंका निमित्त मिलाकर धन्यवाद पात्र बनना चाहिये. कई स्थानोंमें दो चार विद्यार्थी व स्त्रियां संस्कृत पढ़ी हुई नजर आती हैं. उन्हें यदि पाठशालाका सम्बंध मिले तो, बहुत लाभ हो प्रान्तिकसभा यदि एक कर्नाटक भाषाका जानकार उपदेशक यहां भेजे तो बहुत लाभ हो. मूडबिद्रीके भट्टारकजीसे योग्य उपदेशक मिल सक्ता

• इत्यलम्—

बेंगलूर
५-१२-१२ } रामलाल उपदेशक

श्री धवल जयधवल सिद्धान्तोंकी लिखाईकी रिपोर्ट.

दिगम्बर जैनप्रान्तिक सभा बम्बईकी ओरसे श्रीयुत रामलालजी उपदेशक कर्नाटक प्रदेशका दौरा कर रहे हैं. जिसकी रिपोर्ट जैनमित्रद्वारा पाठकोंको विदित होती रहती है. उन्होंने मूडबिद्री जाकर श्रीसिद्धान्त पुस्तक जयधवल महाधवलकी प्रति करानेका कार्य चलता हुआ निरीक्षण कर चिट्ठीद्वारा हमको इस प्रकार समाचार लिखे हैं.

"अपरंच सिद्धांत कार्य निम्नलिखित प्रकार हुआ है, सिद्धान्त (प्राचीन) से उध्दृत तीन प्रति हो रही हैं. खर्डा कर्नाटक प्रति लिखनेवाले देवराज स्पष्ट कर्नाटकीमें लिखनेवाले शांतिपन्द्र और बालबोध लिपिमें लिखनेवाले पंडित गजपति उपाध्याय ऐसे तीन लेखक कार्य कर रहे हैं. धवल और जयधवल यह दो ग्रन्थ हैं, श्लोक संख्या दोनोंकी साठ २ हजार है, धवल ग्रन्थ अन्तमें कुछ खंडित कहते हैं कुछ पत्र नहीं रहे हैं, धवल ग्रन्थ प्राचीन पत्र (ताडपत्र) ५९२ है, जिससे उध्दृत कर्नाटक लिपिमें दोनों प्रति (खर्डा तथा स्पष्ट) पूर्ण हो चुकी हैं. खर्डाके पत्र २०५० हुए. स्पष्ट की १३८० पत्रमें पूर्ण हुई. बालबोध लिपिमें ताडपत्र ४५९ लिखे गये हैं. जिसके नूतन पत्र ८६८ हुए. बाकी ताड़पत्र १३३ जिसके श्लोक १३,००० लिखना अवशेष हैं.

जयधवल ग्रन्थके प्राचीन ताड़पत्रके ५१८ पत्र हैं. जिससे उध्दृत कर्नाटक लिपिमें प्राचीन

पत्र २९८ लिखे गये हैं, इसके नवीन खडकि पत्र १३२९ हुए. स्पष्ट कर्नाटक प्रतिके प्राचीन पत्र २०० के नूतन कागजके पत्र ४७८ हुए, बालबोधीमें प्राचीन ताड़पत्र २७ के नवीन कागजके पत्र ६९ लिखे गये

इलोक संख्याः—जयधवल ग्रन्थके श्लोक कर्नाटक खडी प्रतिके ३४,५०० लिखे गये हैं २९,९०० लिखना बाकी हैं. स्पष्ट कर्नाटक प्रतिके श्लोक २३,००० लिखे गये और ३७,००० बाकी हैं. बालबोध लिपिमें ३०००, लिखे गये, ५७,००० बाकी हैं. धवलग्रन्थके केवल १३,००० बालबोधके लिखने बाकी हैं.

यह हिसाब मार्गशीर्ष कृष्ण ८ सं० ५९ ता. २४—११—०२ तकका है. ग्रन्थका आरम्भ फाल्गुन शुक्ल सप्तमी सं. ५३ में हुआ था. लेखक ३—३—४ घंटे नित्य काम करते हैं, चारसे ज्यादा कमी नहीं, यहांके मुखिया लोग कुछ देखरेख नहीं करते हैं. इससे कार्यमें बहुत विलम्ब हुआ है. श्लोक २९—३० ही प्रतिदिन लिखते हैं, कहते हैं कि, इससे अधिक हमसे नहीं लिखे जाते हैं. केवल गजपतिउपाध्याय तो कहते हैं कि, मैं तो १०० श्लोक रोज लिखा करूंगा. बल्कि इन दोनों लेखकोंका कार्य पूर्ण होनेपर मैं भी पूर्ण करदूंगा, तथा ऐसा भी कहते हैं कि, अगर बाकी रहे तो मैं बिना वेतन लिये पूरा करदूंगा. मैंने तीन घंटे साम्हने लिखाई भी देखी तो शांतपेन्द्रसे ४० देवराजसे ३० गजपतिजीसे ४० श्लोक लिखे गये. कार्य चित्त लगाकर नहीं करते हैं. मैंने वहांके सब मुखियाकुंबम श्रेष्ठी आदिको एकत्रकर ६ घंटा प्रतिदिन लिखनेका प्रबन्ध करा दिया है. और एक नकशा भी बनवा दिया है, जिसमें हररोजकी हाजिरी किस समयसे किस समयतक रहते हैं, कितने श्लोक लिखे आदि ब्योरेसहित लिखी जाती है. इस प्रबन्धको सबने स्वीकार किया है, और प्रतिमासकी कारवाईकी रिपोर्ट भेजना भी स्वीकार किया है. अगर यहांके लोग देखरेख करते रहें और कार्य बराबर चला तो एक वर्षमें कार्य पूर्ण होना संभव है. कदाचित गजपतिजी अधिक समय लगावेंगे, क्योंकि उनको सत्तर हजार लिखना बाकी है, इति."

सिद्धान्त पुस्तक जीर्णोद्धार फंडका हिसाब गत भाद्रपद तकका छपाकर सब भाइयोंके पास भेज दिया है. उसमें जिन २ धर्मात्माओंके रुपया जमा हुए हैं व जिन २ पर बाकी हैं, उनकी फेहरिस्त भी दी है. सो अब जिन २ भाइयोंपर द्रव्य बाकी है, शीघ्र भेजनेकी कृपा करें.

आपका शुभचिंतक,
हीराचन्द नेमिचंद
शोलापुर.

शोकदायक मृत्यु—श्रीयुत लाला बनवारी लालजी सभापति प्रांतिकसभा पंजाबकी अचानक अकाल मृत्युसे जैनसमाजमें एक परोपकारी नररत्नकी हानी हुई है. आपकी आयु अभी ३६—३७ वर्षकीही थी. गत ता० १९ जनवरीको आपने देहत्याग कर दी. जैनसभा रावलपिंडीने खास बैठक करके शोक प्रकाश किया. कालगति विचित्र है।

यह समाचार बाबू किशोरचन्दजी मंत्री द्वारा विदित हुए हैं।

तीर्थक्षेत्र (सभा) कमैटी की नियमावली.

क—सभाके उद्देश.

१ सम्पूर्ण तीर्थक्षेत्रोंकी सम्हाल रखनी.

२ प्रत्येक तीर्थक्षेत्रका हिसाब मंगाकर जांच करना तथा प्रतिवर्ष छपाकर प्रसिद्ध करना.

३ जिन २ तीर्थक्षेत्रोंके मन्दिर जीर्ण हो गये हों उनका जीर्णोद्धार कर प्रभावनांगकी वृद्धि करना.

४ किसी भी तीर्थपर किसी प्रकारका झगडा फिसाद हो तो उसका निर्णयकर सफाई रखना.

५ प्रत्येक तीर्थक्षेत्रोंपर आमदनीकी योग्य व्यवस्था करना.

ख कमैटीकी व्यवस्थाके नियम. (Constitution)

अ १ सम्पूर्ण हिन्दुस्थानके भूगोलानुसार कमैटीकी सम्मतिसे उचित विभाग करना.

२ प्रत्येक विभागका सम्पूर्ण प्रबन्ध उस विभागपर नियत किये मंत्री करेंगे. मंत्रीकी सहायताके लिये एक २ उपमंत्री रहेगा.

३ उक्त प्रकारसे नियत किये सम्पूर्ण विभागोंके मंत्रियोंके ऊपर एक महामंत्री रहेगा.

४ सम्पूर्ण हिंदुस्थानके तीर्थक्षेत्रोंकी द्रव्य सम्बन्धी व्यवस्थाके लिये एक कोषाध्यक्ष नियत हो. जिसके पास प्रत्येक विभागमेंसे रोकड़ शिल्क आवेगी, तथा खर्चका बजट पास कराके खर्चके हेतु प्रत्येक विभागसे रकम मंगावेगा.

ब. इस कमैटीमें जो महाशय सभासद चुने गये हैं, उनकी फेहरिस्त जैनमित्र अंक ४में प्रकाशित हो चुकी है. उनके अतिरिक्त निम्नलिखित महाशय औरभी चुने गये हैं.

१ बाबू नारायणदास बी. ए. एल. एल. बी. सवाई रामपुर.

२ रा. रा. भाऊ तात्या चिवटे, कुरुंदवाड.

३ शा. जयसिंगभाई गुलाबचन्द माजिष्ट्रेट. वागरा (भरोंच.)

४ शा. लल्लुभाई प्रेमानन्दजी परीख, एल. सी. ई. बोरसद.

५ लाला ईशरीप्रशादजी बेंकर एन्ड आ० माजिष्ट्रेट, गवर्नमेंट ट्रेजरर, देहली.

६ सेठ पन्नालालजी बेंकर प्रे. सभा नसीराबाद.

७ बाबू मुंशीलालजी, एम्. ए., असिस्टेंट प्रिन्सिपाल गवर्नमेंट ट्रेनिंग कालेज—लाहौर.

८ रायबहादुर बाबू सागरचन्द, बी.ए., पेन्शनर इन्स्पेक्टर आफ स्कूल्स.

९ बाबू जुगलकिशोरी, ए० अ० कमिश्नर, पंजाब.

१० राय मनोहरदास पेन्शनर जज स्मालकाज कोर्ट, देहली.

११ अण्णापा फडयापा चौगुले, बी. ए., एल. एल. बी. वकील बेलगांव.

२ इस कमैटीके नीचे लिखे अनुसार सभासद कार्याध्यक्ष चुने गये हैं:—

महामंत्री—निम्नलिखित कार्य करें.

१. सम्पूर्ण भारतवर्षके तीर्थक्षेत्रोंकी एक फेहरिस्त तयार रक्खे.

२. एक ऐसा रजिष्टर रक्खे जिसमें हरएक तीर्थक्षेत्रकी सर्व हालत मालूम हो सकै. अमुक तीर्थका प्रबन्ध किसके हाथमें है, क्षेत्र किस प्रसिद्ध ग्रामके समीप है, क्षेत्रपर आमदनी कितनी है आदि.

३. प्रत्येक तीर्थक्षेत्रकी मिलकियत (स्थावर तथा जंगम) का प्रबन्ध रक्खे. स्थावर मिलिकियतके क्षेत्रका नकशा तयार रक्खे.

४. प्रत्येक वर्षकी रिपोर्ट छापकर प्रसिद्ध करै.

५. अपने हाथ नीचेके मंत्रियोंके काम काजकी सम्पूर्ण देखरेख रक्खे.

६. कमैटीसे पास हुए प्रत्येक कार्योंके चलानेकी कार्रवाई करैं.

मंत्री—१. अपने अधिकारमें सुपुर्द किये हुए विभागके तीर्थक्षेत्रोंकी देखरेख वगैरह सर्व व्यवस्था करैं.

२. अपने उपमंत्रियोंके कार्योंकी देखरेख रक्खे.

३. प्रत्येक कार्य महामन्त्रीकी सम्मति पूर्वक करै.

४. निम्नलिखितकार्य और भी करै.

अ—अपने विभागके क्षेत्रोंकी फेहरिस्त महामंत्रीके पास भेजें.

ब—तीर्थक्षेत्रोंका एक रजिष्टर रक्खे. जिसमें प्रत्येक क्षेत्रसम्बन्धी सर्व व्यवस्था आ जावे.

स—तीर्थक्षेत्रोंके आय व्ययका हिसाब प्रतिवर्ष प्रकाशित करैं. और रोकड़ शिलक कोषाध्यक्षके पास भेजें.

ड—अपने विभागके तीर्थोंपरके मुनीम, पूजारी, आदि नौकरोंको अपनी मर्जीके माफिक, खारिज, दाखिल तथा रद बदल करैं; एकको निकालकर दूसरा नियत करनेका मंत्रीको अधिकार है.

ई—तीर्थक्षेत्र सम्बन्धी मिलिकियतका झगड़ा फिसाद हो, तथा सरकारी तकरार होवे, तो उसकी व्यवस्था महामन्त्रीकी सम्मतिसे करै.

उपमन्त्री—मंत्रीकी सम्मतिपूर्वक कार्य करै. और मंत्रीकी अनुपस्थिता (गैरहाजिरी) में उसके स्थानपर कार्य करै.

कोषाध्यक्ष—सम्पूर्ण तीर्थक्षेत्रोंकी रोकड़ शिलकका हिसाब रक्खे; तथा प्रतिवर्ष प्रसिद्ध करनेके लिये महामंत्रीके पास भेजे.

ग—कमेटीके अधिकार.

१. कमैटीके कार्य बहुमतसे चलाये जावेंगे.

२. कमैटीके सभासदोंकी संख्या न्यूनाधिक्य करनेका, अधिकार कमैटीके सभासदोंके हाथमें रहैगा.

३. किसी भी तीर्थक्षेत्रमें प्रबन्ध ठीक न हो तो, उसका प्रबन्ध अपने हाथमें जैसे बने तैसे लेनेका तथा कारोबार चलानेका अधिकार इस कमैटीको है.

४. कमैटीका अधिवेशन कमसे कम १३ सभासदोंके उपस्थित होनेपर कहा जा सकेगा.

५. प्रत्यक्ष अधिवेशनमें उपस्थितभूत सभासदोंमेंसे सभापति नियत किया जावेगा. और किसी विषयमें निषेध तथा पुष्टि—पक्षके बराबर मत होनेपर सभापतिके दो मत गिने जावेंगे, और परोक्ष अधिवेशनमें समान मत होनेपर महामंत्री अपने दो मत गिनकर बहुमतसे प्रस्ताव पास करैगा.

घ—विशेषनियम.

प्रत्येक सभासद अपने प्रान्तमें, यदि कोई दिगम्बरीजैन कोई भी कार्य करै, अर्थात् कोई भी धर्मादामें द्रव्य देवे, तो उसमेंसे

इस कमैटीके लिये कुछ भी रकमकी सहायता पहुंचानेका प्रयत्न करै. और ऐसे महान् कार्यमें शक्ति भर मदद पहुंचावै. इति.

नोट—सम्पूर्ण विद्वानों तथा धनाढ्योंकी सेवामें उक्त नियमावली यथामति बनाकर भेजी जाती है. आशा है कि, सर्व महाशय इसका अवलोकनकर कुछभी त्रुटि जान पड़नेपर न्यूनाधिक्य करनेकी सूचना शीघ्रही देवेंगे. जिसमें आगामी अंक तक इसका खुलासा हो जावे, और इस तीर्थक्षेत्रोद्धारक आवश्यक कर्तव्यके प्रारंभमें ढील न हो. गताङ्कमें जिन महाशयोंके नाम इस कमैटीके सभ्य सभासद बनानें हेतु चुने गये हैं. तथा इस अंकमें भी और जो नवीन शामिल किये गये हैं. यद्यपि आशा की जाती है कि, वह अवश्यही इस कार्यको स्वीकार कर यश लाभ लेवेंगे, तथापि पद्धतिके अनुसार हम उनसे स्वीकारपत्र चाहते हैं; और प्रार्थना करते हैं कि. १९ दिनके भीतर सर्व सभासद गण अपना स्वीकार पत्र अवश्य लिख भेजें. उक्त अवधिमें जिन महाशयोंका कुछ उत्तर प्राप्त न होगा, उनकी हम स्वीकारताही समझेंगे. अलम्.

जौहरी माणिकचन्द पानाचन्द,
मंत्री—तीर्थक्षेत्र.

महासभामथुराके मेलेपरका रसीला शास्त्रार्थ.

गत कार्तिक मासके अधिवेशनमें कृष्ण ८ को खुर्जाके सुप्रतिष्ठित सेठ पंडित मेवारामजी तथा अजमेर जैन पाठशालाके अध्यापक पंडित नरसिंहदासजीका परस्पर एक उत्तम शास्त्रार्थ हुआ था. जिसके सुनानेका हमने अपने पाठकोंसे गतांकमें प्रण किया था. आज अवसर पाकर सर्व साधारणके सुखबोधार्थ प्रश्नोत्तररूप (ज्यों का त्यों) प्रकाशित करते हैं.

कार्तिक कृष्णा ८ (दिनके ३ बजे.)

पं. मेवारामजी—आपने मुझे अजमेरसे जो १७ विषयोंके सम्बन्धमें चिट्ठियां लिखी थीं वह क्या आपकी सम्मतिके अनुकूल हैं? वह क्या आपहीनें लिखीथीं? आप उन्हें स्वीकार करते हैं?

पं. नरसिंहदासजी—वह अवश्य मैंने लिखी थी.

पं. मेवा०—उसमेंके लिखे विषय आप स्वीकार करते हैं!

पं. नर०—मेरी बुद्धीके अनुसार वह यथार्थ हैं, और जब मैं लिखना स्वीकार कर चुका तो विषयोंको स्वीकार क्यों न करूंगा.

पं. मेवा०—उन विषयोंसम्बन्धी कितनी चिट्ठियोंमें आपने यह लिखा था कि, "यह विषय अनर्थकारक हैं. इनका खंडन कीजिये" और पीछे लिखा कि "इनकी प्रवृतिका लोप हो गया है सो प्रचार कीजिये!" यह विरोधरूप वाक्य क्यों लिखे गये?

पं. नर०—प्रथम जबतक मैंने इन विषयोंका विचार नहीं किया था, आपको प्रचार रोकनेके हेतु निर्णयबुद्धिसे प्रश्नरूप लिखता रहा. पश्चात् ज्यों २ मुझे इन विषयके ग्रन्थोंके ऋषिवाक्योंद्वारा पदार्थ निश्चित होते गये, त्यों २ मेरे निश्चित श्रद्धानरूप पत्र आपकेपास पहुंचते गये. यह सब जो आपके साथ पत्रव्यवहार हुआ है

वह प्राइवेट मित्रताके ढंगसे हुआ है. इस स्थानपर उन पत्रोंमें क्या लिखा है व क्या नहीं, इससे सम्बन्ध नहीं है. जो विषय परस्पर विवादनीय है, उन्हींके निर्णय होनेकी आवश्यक्ता है.

पं० मेवा०—नहीं २ साहिब! हमको उन्हीं चिट्ठियोंसे सबपर प्रसिद्धता करनी है कि, आप प्रथम क्या लिखते थे और फिर क्या लिखने लगे. और आपको यहभी समझाया जावेगा कि, वह विषय प्रमाण बाधित क्यों है. परंतु पहिले यह बतलाइये कि, आपको किसीप्रकार पक्ष तो नहीं है?

पं० नर०—मैंने जो प्राइवेट चिट्ठी लिखी थी उन्हें स्वीकार करतां हूं. उन्हें प्राइवेट होनेंके कारण प्रकाश न करना चाहिये! फिर आपके यहां प्रगट करनेंसे क्या अभिप्राय सिद्ध होगा? मुझे किसी प्रकारका पक्षपात नहीं है!

पं० मेवा०—मैं पक्षपाती उसे कहता हूं कि, जिसका अन्तःकरण तो कुछ औरही श्रद्धाम किये हो और वचनसे कुछ औरही कहता हो, सो ऐसा पक्षपात तो आपके नहीं है?

पं०नर०—महाशय! इससे कुछ प्रयोजन नहीं है. मैंने अपने हृदयमें जो श्रद्धान कर रक्खा है, और जो शास्त्र विहित है, यदि उसको आप किसीप्रकार बाधा पहुंचाकर अप्रमाण ठहरा देंगे, तो मैं सब भांतिसे स्वीकार करूंगा.

पं०मेवा०—प्रथम यही कहना चाहिये कि आप पक्षपाती हैं या नहीं? (यहांपर पं० नरसिंहदासजीने कहा कि "कि जो मैंने वचन कहे हैं, उनका मुझे पक्ष है" तब पक्षपातकी निजकृत परिभाषा पुनः कही गयी.)

इस वाग्जालको पं०नरसिंहदासजी जब नहीं समझे तब, किसी साहिबने उन्हें समझाना चाहा. तो पं० मेवारामजीने कहा कि आप किसीको भी कुछ बोलनेका अधिकार नहीं है.

यहां इसी विषयपर बहुत वाद विवाद होता रहा. अधिक समय हुआ जान रात्रिका समय निश्चित कर शास्त्रार्थ बंद किया गया.

(द्वितीयबार रात्रिको.)

सभ्यजनोंके एकत्र होने पर प्रथम यह विचार हुआ कि, इस विषयमें जयपराजयका निश्चय बिना मध्यस्थ नियत किये नहीं हो सक्ता. अतः प्रथम मध्यस्थ चुन लेना चाहिये. आखिर १ पंडित चुन्नीलालजी मुरादाबाद २ मुंशी चम्पतरायजी महामंत्री, ३ लाला गुलजारीलालजी कानपूर यह तीन महाशय मध्यस्थ किये गये—पहिले पं० मेवारामजीनें श्राद्ध, तर्पण, आचमन, सन्ध्या, नीराजन, पंचामृताभिषेक, बलि, शासनदेवताऽराधन, मुंडन, गोमयशुद्धि, पुष्पचढ़ाना आदि १७ विषयोंके नामोच्चारण किये. और पूछा "कहिये यही विषय अकलंक प्रतिष्ठापाठमें कहे गये हैं न?"

पं०नर०—हां! अकलंक प्रतिष्ठापाठमें यही विषय कहे गये हैं और इन्हींपर मेरा शुद्ध निश्चय श्रद्धान है. यदि यह शास्त्रप्रमाण बाधित व अनुमानादिसे बाधित निश्चित हो जावेंगे. अर्थात् अकलंक प्रतिष्ठापाठ बाधित कर दिया जावेगा, तो मैं उसीसमय अपने श्रद्धानको पलट सकता हूं.

पं० मेवा०:—जो श्राद्धब्राह्मणादि मानते हैं, (अर्थात् ब्राह्मणोंको दिया हुआ दान मृतपुरु-

षाओंको परलोकमें पहुंचता है.) क्या वही आप मानते हैं?

पं० नर०—नहीं! श्रद्धापूर्वक जो दान दिया जावे, वही श्राद्ध है. नाकि अन्यमतियोंके समान!

यह सुनकर पं० मेवारामजीने कहा कि "यदि ऐसा आप मानते हैं तो, इसमें हमारा कुछ विवाद नहीं है"

पं० मेवारामजीने फिर कहा कि, आचमन करना ठीक नहीं है. कारण इससे अष्टमी चतुर्दशीका उपवास भंग हो जायगा. क्योंकि आचमन करनेसे जलबिन्दुका प्रवेश मुखमें अवश्य हो जावेगा. और उससे अपना हाथ भी झूंठा हो जायगा. इसलिये आचमन यह प्रत्यक्षमें बाधित हो जाता है. और यदि यह मन्दिरमें किया जायगा तो, वहां वेदीकेपास हाथ धोनेके लिये पनाला आदि होना चाहिये. सो कहींके मन्दिरोंमे देखे नहीं जाते.

पं० नर०—आचमनमें जो जलबिन्दु ग्रहण की जाती है, वह कंठगत कदापि नहीं होती है. जिह्वाग्रवर्ती भी नहीं की जाती है. उसका स्पर्श ओष्टमात्रसे होता है. यदि ओष्टके स्पर्शमात्रसे उपवास भंग समझा जावेगा. तो फिर जो उपवास करनेवाले स्नान करते हैं, उनका उपवास कैसे अभंग रह सकेगा. परन्तु नहीं उनका उपवास भंग नहीं होता. अतः आचमन करनेवाले को भी कोई दूषण नहीं लग सक्ता. और ओष्ट स्पर्शसे हाथभी झूठा नहीं होता, जिसके धोनेके लिये मन्दिरोंमे नाला वगैरह बनानेकी विटम्बना की जावे, और यदि अवश्यकताही हो, तो मन्दिरोंमें बर्तनोंकी कुछ कमी नहीं रहती है.

गोमयशुद्धि.

पं० मेवारामजी—अकलंक प्रतिष्ठापाठ आरतीमें गोमय रखनेकी आज्ञा देता है. सो यह गोमय साक्षात् पंचेन्द्रीका विष्टा जिसमें अनंत त्रसजीवोंकी उत्पत्ति होती है. ऐसी महा निंद्य अपावनवस्तु हमारे कोईभी भाई स्वीकार कर सक्ते हैं? नहीं! क्योंकि गौकी और अन्य पंचेन्द्रियोंकी विष्टामें कुछ अन्तर नहीं है. फिर जिसको चौकामें नहीं ले जा सक्ते. वह, आरतीमें क्यों स्वीकार की जावे? और जिस शास्त्रमें ऐसे असत् वाक्य लिखे हों वह हमारी आम्नाय में क्यों कर प्रमाण हो सक्ता है?

पं. नर०—इन्ही अकलङ्क देवनें अपने राजवार्त्तिकग्रन्थमेंभी गोमयशुद्धिका निरूपण किया है, और राजवार्तिक ग्रन्थ सर्व साधारणमें आदरणीय है. तथा आठ लौकिक शुद्धियोंको और सर्व भाईभी स्वीकार करते हैं. अतः हरएक पंचेन्द्रीके मलकी समानता नहीं होसक्ती. गोमयसे शुद्धि की हुई जमीनमें सर्व लोग बैठते हैं.

इसके उत्तरमें पंडित मेवारामजीनें सर्व भाईयोंपर सम्बोधन करके कहा कि, क्यों भाइयो! आप लोग इस साक्षात् भ्रष्टाचारको स्वीकार कर सक्ते हैं क्या! तब सर्व भाइयोंनें उत्तर दिया नहीं! नहीं!

पं० मेवा०—भाइयो! अकलंक प्रतिष्ठापाठमें केवल गोमयही नहीं है. किन्तु उसमें शुक (तोता) की बीट भी ग्रहण की है. तो अब कहिये! ऐसे कथन अकलंक प्रतिष्ठापाठमें होनेसे वह क्योंकर प्रमाणिक समझा जावे.

मुंडन.

पं० मेवारामजी—मृतपित्रादिकोंके निमित्त जो बाल मूंछादिका मंडवाना है. क्या इसीको मुंडन कहते हो?

पं. नर०—नहीं! मुंडनसे हमारा वह अभिप्राय है. जो आदिपुराणमें चौलकर्मके विषय कहा है!

इसपर पं. मेवारामजीने कहा कि "यदि ऐसा है, तो उसमें हम भलेप्रकार सहमत हैं."

देवताऽराधन.

पं. मेवारामजी—अकलंक प्रतिष्ठापाठमें जो शासन देवताका आराधन कहा है. वह अनुचित है. क्योंकि जिस स्थानमें शास्त्रकारोंने क्रियाओंका वर्णन किया है, वहां देवताऽराधनको मिथ्यात्वकरी क्रियाओंमें कहा है. प्रश्नोत्तर श्रावकाचार तथा सिद्धान्तसारमें भी अन्य देवताओंके आराधनका निषेध किया है. अतः उक्त प्रतिष्ठापाठमें ऐसा वर्णन होनेसे जो अनमिल है, वह अप्रमाणिक है. देखिये! इस प्रतिष्ठापाठमें चतुर्मुख ब्रह्माका भी आराधन कहा है.

पं. नर०—२४ यक्ष व २४ यक्षनी जिनशासनके रक्षक कहे गये हैं. और हरएक धर्मकार्यमें इनका आव्हानन करना सिद्धान्तकारोंने स्वीकार किया है. उन्ही २४ यक्षोंमें यह ब्रह्मा संज्ञक सुपार्श्वनाथ या पुष्पदन्त कोई तीर्थंकर महाराजका यक्ष है, वह चतुर्मुख नहीं है. जैसा आप कहते हैं. प्रतिष्ठादिक महोत्सवोंमें जिसप्रकार अन्य साधर्मी जन निमंत्रित कर बुलाये जाते हैं, उसप्रकार उनका भी आव्हान किया जाता है. इनका सत्कार करना यथार्थ तथा परमोचित है, कारण यह सम्यक्दृष्टी श्रद्धानी हैं. इनका आव्हानन करना मिथ्यातकरी क्रियाओंमें कदापि दाखिल नहीं हो सक्ता. श्रीअकलंकदेवकृत राजवार्तिकमें जहां द्वादशानुप्रेक्षाके प्रकरणमें अशरणानुप्रेक्षाका वर्णन है, वहां शरण दो प्रकार बतलाया है!

१ व्यवहारशरण राजा, व शासनदेवतादिकोंका २ निश्चयशरण केवल निजात्माका इस महानग्रन्थके प्रमाणसे शासन देवताओंका आराधन मिथ्यात्व नहीं कहा जा सक्ता. इसके अतिरिक्त पं० आशाधर कृत प्रतिष्ठापाठ, इंद्रनंदिसंहिता, जिनसंहिता, वसुनंदि प्रतिष्ठापाठ, नेमिचन्द्र प्रतिष्ठापाठ, पद्मनंद पंचविंशतिका, उमास्वामि श्रावकाचार, महापुराण, यशस्तिलकचम्पू नीतिसार, त्रिवर्णाचार, भगवती आराधनसार, वसुनंदि श्रावकाचार, यशोनंदि कृत पंचपरमेष्ठीपाठ आदि बड़े २ सिद्धांतोंमें इन विषयोंका पृथक २ वर्णन किया है. इस हेतु कई आचार्योंने अकलंक प्रतिष्ठापाठके विषयको स्वीकार किया है यह सिद्ध हो सक्ता है. अर्थात् उक्त प्रतिष्ठा पाठ अप्रमाण नहीं है.

उपसंहार.

इसपर पं० मेवारामजीने कहा कि, अब समय बहुत होगया है. हमारे सब भाई इसका स्वतः निर्णय करलेंगे कि, अकलंक प्रतिष्ठापाठ क्यों प्रमाण समझा जा सक्ता है. बल्कि जिन २ ग्रंथोंमें इस प्रकार की गोलमाल है, वह हम शुद्धाम्नायियोंको बिलकुल प्रमाण नहीं हो सक्ते. यद्यपि इस प्रकारके ग्रन्थोंमें इन विषयोंको छोड़कर अन्य बहुतसे अच्छे विषयोंका कथन है. परन्तु वह

हमको उसप्रकार अमाननीय हैं जिसप्रकार अन्यमतियोंके ग्रन्थ महाभारत, रामायण, कुरान, इज्जीलादि, यत्किंचित धर्म प्रतिपादक होनेपर भी अप्रमाण हैं. देखिये! श्री वसुबिंदु आचार्यकृत प्रतिष्ठापाठमें इसप्रकारकी कुछ भी गोलमाल नहीं है. वहही शुद्धाम्नायियोंके मानने योग्य है.

अन्तमें जो महाशय मध्यस्थ नियत हुए थे, उनमेंसे मुंशी चम्पतरायजीने शास्त्रार्थका फैसला इसप्रकार सुनाया, "पं० नरसिंहजीने इस सम्बन्धमें कुछ पक्ष ग्रहण नहीं किया था. यह केवल इस प्रकारके ग्रन्थ अप्रमाण दिखलानेको वाक्य विनोद किया था. यथार्थमें वह इसके पक्षपाती नहीं है. पं० मेवारामजीने असत् पक्षके निराकरणार्थ बड़ी विद्वत्ताके साथ विवेचन किया है. जो सर्व भाइयोंने श्रवण कियाही है" जयबोलो! चौबीस महराजकी जय! इति.

आज्ञा और प्रवृत्ति.

[२]

(गताङ्कसे आगे)

अब जरा प्रकृत विषयकी ओर झुकिये! इन प्रतिष्ठापाठोंमें जो यक्षादिकका आह्वानन और पूजन किया है वह योग्य है या अयोग्य. अब यहांसे आगे यह विषय पाठकोंके सुखबोधार्थ प्रश्नोत्तर रूपसे लिखा जाता है.

प्रश्न १—यक्षका पूजन योग्य है या नहीं?

उत्तर १—सबसे पहिले यह बात समझनी चाहिये कि, पूजन शब्दका अभिप्राय क्या है. और पूज्य कौन है. पूजन नाम सत्कारका है, तथा जो अपना उपकारी होता है, वही पूज्य होता है. जीवका सबसे बड़ा उपकार (कर्मका क्षय) शुद्ध परिणामोंसे होता है इस लिये शुद्ध निश्चयनयकी अपेक्षासे शुद्ध परिणामही पूज्य है. इस नयकी अपेक्षासे अर्हन् सिद्धादिक भी हेय हैं. अशुद्ध निश्चयनयकी अपेक्षा पुन्यबंधके करनेवाले शुभ परिणाम पूज्य हैं. असद्भूतव्यवहार नयकी अपेक्षा शुभ परिणामोंको कारणभूत अर्हदादिक नव देवता पूज्य हैं. उपचरिता सद्भूत व्यवहारनयकी अपेक्षा यक्षादिक, विद्यागुरु माता, पिता, राजा, रोजगार लगानेवाले इत्यादि जितने उपकारक हैं, सबमें पूज्यपना है.

प्रश्न २—यक्षोंके उपकारकपना किस प्रकार है?

उत्तर २—जब कि कोई प्रतिष्ठादिक उत्तम कार्यका आरंभ करता है, तो "**श्रेयसि बहु विघ्नानि**" इस वाक्यसे संभव है कि कोई क्षुद्र देव आकर किसी प्रकारका विघ्न करै. इस कारण यक्षादिक शासन देवोंका आह्वाहन और सत्कार किया जाता है. कि जिसके निमित्तसे कोई क्षुद्र देव किसी प्रकारका विघ्न या उपद्रव न कर सके.

प्रश्न ३—क्या जिनेश्वरकी पूजासे क्षुद्र देवोंका उपद्रव शांत नहीं हो सक्ता? जो ऐसाही है, तो, यह वाक्य क्यों कहा है कि,

"विघ्नौघाः प्रलयं यांति, शाकिनीभूतपन्नगाः
विषं निर्विषतां याति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥"

उत्तर ३—बहुत ठीक है! जब जिनेश्वरकी पूजासेही समस्त विघ्न दूर हो जाते हैं तो प्रतिष्ठादिक कार्योंमें पुलिसका प्रबन्ध किस वास्ते कराते हो? और कोतवाल तथा तहसीलदारादिकोंका सत्कार क्यों करते हो?

प्रश्न ४—यक्षादिकका सत्कार करनेमें कुछ

हरकत नहीं. परन्तु जिनेन्द्रकी पूजाकी तरह उनकी भी अष्टद्रव्यसे पूजा क्यों करते हो?

उत्तर ४–भाई साहिब! जिनधर्ममें अभिप्रायोंकी मुख्यता है, बाह्यक्रियाकी मुख्यता नहीं है. पुन्य पापका बन्ध बाह्य क्रियाके अनुकूल नहीं होता. किन्तु अभिप्रायोंके अनुकूल होता है. यह विषय एक दृष्टान्तद्वारा स्पष्ट किया जाता है.

देवदत्त और यज्ञदत्त दो मनुष्योंके गलेमें एकही स्थानपर फोड़े हुए. देवदत्तने जिनदत्त डाक्टरको और यज्ञदत्तनें इन्द्रदत्त डाक्टरको इलाजके वास्ते बुलाया. दोनों डाक्टरोंने दोनों रोगियोंके एकही समय चीरे लगाये. दैवयोगसे जिनदत्त डाक्टरका हाथ सावधान रहनें पर भी चलायमान होगया. और देवदत्त प्राणान्त होगया. इन्द्रदत्त डाक्टर की यज्ञदत्तसे कुछ भीतरी दुश्मनी थी. इससे उसने मौका पाकर यज्ञदत्तको प्राणन्त कर दिया. अब यहांपर विचारिये! कि क्रियातो दोनोंकी एकसी थी. परन्तु अभिप्रायके भेदसे एकके पुन्य और एकके पापका बंध हुआ. इसही प्रकार अष्टद्रव्यकी समानता होनें पर भी यक्षादिक पूजाका अभिप्राय क्षुद्रदेवकृत उपद्रव निवारणार्थ साधर्मित्वेन सत्कार करना है. और जिनेन्द्रका पूजन मोक्षमार्ग नेतृत्वके अभिप्रायसे है

प्रश्न ५–जो ऐसाही है तो रत्नकरंडादिक में रागद्वेषी देवताओंके पूजनको देव मूढतामें क्यों कहा है?

उत्तर ५–जो वरकी वांछा करके यक्षादिक का आराधान है. वह अवश्य देव मूढता है. शासन देवतात्व की अपेक्षासे पूजन करनेमें देव मूढताका दोष नहीं है. इसही कारण देव मूढता-के श्लोकमें श्री समन्तभद्रस्वामीने **वरोपलिप्सया** इस पदका ग्रहण किया है. और इस पदके ग्रहण करनेका प्रभाचन्द्राचार्यने संस्कृत टीकामें यही लिखा है. जोकि ऊपर दिखलाया है. तथा लौकिक प्रयोजनसे जिनेन्द्रका पूजन भी सम्यक्तमें मलोत्पादक है.

अथवा स्त्रीके अंगका स्पर्श पति भी करता है और भाई भी करता है, परन्तु उनके अभिप्रायोंमें बहुत भेद है. तथा स्त्रीके कुचोंका स्पर्श पुत्र भी करता है और पति भी करता है; परन्तु पुत्रको पतित्व नहीं हो सक्ता. और इस विषयमें वीरनन्दि, अभयनन्दि, इन्द्रनन्दि, वसुनन्दि, नेमिचन्द्र, समन्तभद्र, भट्टाकलंक, जिनसेन, गुणभद्र, देवसेन, उमास्वामि इत्यादि अनेक मूल संघाम्नायके आचार्योंका एक मत है, अथवा भट्टारकोंकी उत्पत्तिसे पूर्व प्रतिमाओंकी प्रतिष्ठामें साथ २ यक्षोंकी भी प्रतिष्ठा देखी जाती है इत्यादि शङ्का समाधानसे सिद्ध होता है कि, यक्षादिकके अव्हान तथा पूजन करनेमें किसी प्रकारका दोष नहीं है. यहांपर खेद इस बातका है कि, हमारे भोले भाइयोंने जिनमतके गूढ़ तत्वोंका अभिप्राय नहीं समझा है. यदि समझते तो, बिना पूरा निर्धार किये बड़े २ ऋषियोंके वाक्योंको अप्रमाण कहनेमें निःशंकता धारण नहीं करते. कदाचित् उन्होंने इस श्लोकको नहीं बांचा होगाः—

सूक्ष्मं जिनोदितं तत्वं, हेतुभिर्नैव हन्यते ।
आज्ञा सिद्धं तु तद्ग्रेयं, नान्यथा वादिनो जिनाः॥

जो वचन जिस अपेक्षासे कहा जाता है, उसकी अन्यथा योजना करनेसे तत्वका अतत्व

हो जाता है; इसलिये भाइयोंको नययोजनिका अवश्य जाननी चाहिये.

श्रावकोंकी अनेक पदवियां हैं इस कारण शास्त्रोंमें भी कोई कथन उंची पदवीके अनुसार है; और कोई नीची पदवीके अनुसार है. यदि नीची पदवीके कथनको उंची पदवीवालेके वास्ते और उंची पदवीवालेका कथन नीची पदवीवालेके वास्ते समझ लेवें तो, तो निस्सन्देह अर्थका अनर्थ हो जायगा. अब जरा स्वस्थ चित्त होकर विचारिये कि, यद्यपि चतुर्गुणस्थान क्षायिक सम्यग्दृष्टीजीवके सातों प्रकृतियोंका क्षय हो गया है तथापि पंचमगुण स्थानवर्ती क्षयोपसम सम्यग्दृष्टीकी सम्यक्त इससे कहीं अधिक निर्मल है, और इसी प्रकार आगे २ के गुण स्थानोंमें पूर्व २ गुण स्थानोंकी अपेक्षा अधिक निर्मलता समझना. कहनेका प्रयोजन यह है कि. यद्यपि सम्यग्दर्शनका मुख्यतया घातक दर्शनमोह कर्मही है; तथापि चारित्र मोहकर्म भी सम्यग्दर्शनका गौणतया घातक है. और इसहीसे प्रत्याख्यानावरण देशचारित्रका और संज्वलन और नोकषाय सकलचारित्रके गौणतया घातक हैं. क्योंकि जो एसा नहीं मानोगे तो देश संयमीके ग्यारहप्रतिमारूप और सकल संयमीके छठवां, सातवां, आठवां, नवां और दशवां गुणस्थानरूप विकल्पके अभावका प्रसंग आवेगा. क्योंकि देश संयमीके, अप्रत्याख्यानावरणके, और सकल संयमीके. प्रत्याख्यानावरण कर्मके उदयका अभाव है. भावार्थ कहनेका यह है कि, ज्यों २ उत्तरोत्तर गुणोंकी प्राप्ति होती जाती है, त्यों २ पूर्व २ गुणोंकी निर्मलता होती जाती है अन्यथा सम्यक्तके अवगाढ़ और परमावगाढ़ भेदोंकी अनुपपत्तिका प्रसंग आवेगा. इस सबका फलितार्थ यह है कि, अव्रतसम्यग्दृष्टिकी अपेक्षा श्रावककी सम्यक्त निर्मलतर है. जैसे कि श्रावक और मुनि दोनोंही शरीर और आत्माको भिन्न २ जानते हैं, परन्तु रोगादिकका उपद्रव होते संते श्रावक तो चिकित्सार्थ प्रवृति करता है; और मुनि पूर्वसंचित कर्मका विपाक समझकर उद्योग नहीं करता. इसही प्रकार श्रावकके पाक्षिक नैष्टिक आदि भेद हैं, उनमें पाक्षिक श्रावक तो लौकिक प्रयोजनके वास्ते यक्षादिक जिनभक्त देवोंका आराधन करता है, कुदेवोंका नहीं करता. और नैष्टिक श्रावक चाहे जैसा आपत्ति काल आवै; परन्तु लौकिक प्रयोजनके वास्ते शासन देवताओंका आराधन नहीं करता है. यह विचारता है कि, जो कुछ सुख दुःखादिककी प्राप्ति है वह कर्मानुसार है. यदि शुभकर्मका उदय है तो देव भी सहायक हो जावेंगे. और जो अशुभ कर्मका उदय है तो देव सहायक होना तो दूर रहो उलटा दुःख देने लग जाँयगे. इस कारण समभाव धारण करनाही श्रेष्ठ हैं. ऐसे भाव इसके सम्यग्दर्शनकी निर्मलताके प्रभावसे होते हैं. परन्तु रोगादिकके आनेपर इसके भी दृढता नहीं रहती. परन्तु मुनियोंके सम्यग्दर्शन इसकी अपेक्षा भी निर्मल है. इसकारण वह विचारते हैं कि, रोगादिककी प्राप्ति अशुभकर्मके उदयसे हुई है. सो जब अशुभकर्म शांत हो जायगा तो स्वयं रोगभी शांत हो जावेगा. इसलिये प्रतीकार करना व्यर्थ है. भावार्थ कहनेका यह है कि, पाक्षिक श्रावक तो शासन देवताओंका पूजादिकमें तथा लौकिक प्रयोजनके वास्ते इन दोनों का-

योंमें आराधन करता है, और नैष्ठिक श्रावक आपदाकुलित होकर तो इनका आराधन नहीं करता है, परन्तु पूजादिकमें करता है. और ऐसा करनेपर उसके सम्यग्दर्शनमें किसी प्रकारका दोष नहीं आता है. क्योंकि जैसे तुम किसी राजाको बुलाते हो तो उसके संग उसके विभवके दर्शक सेनापति आदि सेवक भी आते हैं, और तुम उन सबकी खातिर करते हो. इसी प्रकार जब तुम जिनेन्द्रदेवको आव्हान और पूजन करते हो तो उनके शासनाशक्त देवोंका सत्कार करनेमें क्या विरोध हो सक्ता है? और इसमें मिथ्यात्वका दोष किसप्रकार आ सक्ता है? मिथ्यात्वका दोष तो जब आता कि, जो इसके श्रद्धानमें अन्तर पड़ता; अर्थात् यक्षादिकको अर्हंत मानता. जो कदाचित् यह कहोगे कि उनका सत्कार करनेसेही मिथ्यात्वका दोष आगया. तो तुम रात्रि दिवस अपने साधर्मी मित्रादिकोंका सत्कार करते हो तो तुम भी मिथ्यादृष्टी हो जावोगे. समन्तभद्रस्वामीने वात्सल्य अङ्गका निरूपण करते समय कहा है कि:—

स्वयूथ्यान प्रतिसद्भाव, सनाथापेत कैतवा।
प्रतिपत्तिर्यथायोग्यं, वात्सल्यमभिलप्यते॥

अर्थात् साधर्मियोंका निष्कपटता पूर्वक सच्चे दिलसे जो यथायोग्य प्रतिपत्ति (पूजा प्रशंसादि रूप गौरव) करना है सो ही वात्सल्य है. तो फिर बताइये कि, इन यक्षादिकोंने जो कि सच्चे जिनेंद्र भक्त और सदा भगवतकी आज्ञामें तत्पर हैं, क्या अपराध किया है कि, जो साधर्मित्वेन सत्कारके पात्र भी न रहे? क्या इन्होंने देव पर्य्याय पई. इसही कारण ऐसे तिरस्कार्य होगये? धन्य आपकी बुद्धिको! जो कि वस्तुके स्वरूपसे कोसों दूर भागती है.

भाइयो! मिथ्यादृष्टी तो वह पाक्षिक श्रावक भी नहीं कहा जा सक्ता. जो कि, अपने लौकिक प्रयोजनके वास्ते शासन देवताओंका आराधन अथवा पूजन (सत्कार) करता है. जो ऐसाही है, तो पुराणोंमें जितने विद्याधर थे वे सब मिथ्यादृष्टी हो जावेंगे. सो हो नहीं सक्ता. क्योंकि, धर्मपरीक्षादिक शास्त्रोंमें मनोवेगादि विद्याधरोंको स्पष्टपनें सम्यग्दृष्टि कहा है. जो लौकिक प्रयोजनके वास्ते देवोंका सत्कार करनेसेही मिथ्यादृष्टी हो जाता है, तो तुम जो रात्रिदिन लौकिक प्रयोजनके वास्ते जज्ज कमिश्नर, कलैक्टर, पुलिस इन्स्पेक्टर, डाक्टर, सेठ, साहूकार, भाई, बान्धव, मित्रमंडलीका सत्कार कर रहे हो, क्या तुमको मिथ्यात्वका दोष नहीं आवेगा? क्या मनुष्य पर्य्यायधारीका सत्कार करनेसे मिथ्यात्व दूर भाग जाता है? और देवपर्यायधारीका सत्कार करनेसे मिथ्यात्व आकर चिपट जाता है? यदि यह कहोगे कि, जो ऐसाही है तो शास्त्रोंमें इनके आराधनको मिथ्यात्व क्यों कहा है? सो भाइयो! आपकी समझकी भूल है. किसी भी शास्त्रमें आपने यह नहीं बांचा होगा कि, शासन देवताओंके आराधनसे मिथ्यादृष्टी हो जाता है. देखिये! इस विषयमें समन्तभद्र स्वामीने कहा है कि:—

भयाशास्नेहलोभाच्च, कुदेवागम लिङ्गिनां।
प्रणामं विनयं चैव, नकुर्युःशुद्ध दृष्टयः॥

अर्थात् भय, आशा, स्नेह, लोभादिकसे शुद्ध दृष्टिजीव कुदेव, कुआगम, कुलिङ्गीको देव गुरु

शास्त्र बुद्धिसे प्रमाण तथा उनका विनयादिक नहीं करते. सो भाइयो! देवोंके तीन भेद है. १ सुदेव, २ देव, ३ कुदेव अर्हंतादिक सुदेव हैं. शासन देवता देव हैं. और मिथ्यादृष्टी भूत पिशाचादिक कुदेव हैं. सो स्वामीसमन्तभद्रने कुदेवोंका निषेध किया है. सुदेवों और देवोंका निषेध नहीं किया है. इसही प्रकार मनुष्योंमें भी साधर्मियोंके सत्कारका विनयादिकका निषेध नहीं किया है. किन्तु कुलिङ्गियोंका निषेध नहीं किया है. यहांपर फिर शंका उठ सक्ती है, कि जो लौकिक प्रयोजनके वास्ते शासन देवताओंके आराधनमें कुछ दोष नहीं है तो समन्तभद्रस्वामीनें इस श्लोकमें क्यों कहा है कि—

वरोपलिप्सयाशावान्, रागद्वेषमलीमसाः॥
देवता यदुपासीत, देवतामूढमुच्यते ॥

इसका उत्तर पहिले लिखा जा चुका है. परन्तु सुखबोधार्थ फिर लिखा जाता है,

दोष दो प्रकारके होते हैं, १ अतिचाररूप, २ अनाचाररूप. जिसमें अतिचार—वृतको मूलसे नाश नहीं करता है किन्तु, वृतमें मलिनता उत्पादन करता है. और अनाचार—वृत्तको मूलसे भंग कर देता है. सो लौकिक प्रयोजनके लिये कुदेवोंका आराधन तो अनाचार है. क्योंकि कुदेव—पूजकसे ऐसी क्रिया कराता है कि, जिससे उसका श्रद्धान भ्रष्ट हो जाता है; और लौकिक प्रयोजनके वास्ते शासन देवोंका आराधन करनेसे सम्यग्दर्शनमें अतीचार लगता है. परन्तु यह दोष इसको पाक्षिकश्रावकपदसे च्युत नहीं कर सक्ता है. नैष्ठिकश्रावकके सम्यग्दर्शनमें ऐसे अतिचार नहीं लगते. क्योंकि नैष्ठिक अवस्थामें सम्यग्दर्शन अथवा वृत प्रतिमारूप साङ्गोपाङ्ग होते हैं. परन्तु यहां इतना औरभी ध्यानमें रखना कि, जैसे नैष्ठिक श्रावक लौकिक प्रयोजनके वास्ते शासन देवताओंका आराधन नहीं कर सक्ता है, उसही प्रकार रोजगार आदिकके वास्ते साहूकारकी खुशामदभी नहीं करता है. ऐसा न समझना कि, रोजगार आदिकके लिये सेठोंकी खुशामद करते २ भी केवल लौकिक प्रयोजनार्थ शासन देवताऽराधनसे विमुख होनेहीसे नैष्ठिक पदवी मिल जायगी. और इसही प्रकार जैसे कि व्यापारार्थ सेठोंकी खुशामद करनेसे तुम पाक्षिक श्रावककी पदवीसे च्युत नहीं होते हो, उसही प्रकार लौकिक प्रयोजनार्थ शासन देवताऽराधनभी पाक्षिक पदवीसे च्युत नहीं कर सक्ता. बस! कहनेका सारांश यह है कि, जब लौकिक प्रयोजनके लिये शासन देवताऽराधनही अस्मदादि पाक्षिक श्रावकोंको स्वपदसे च्युत नहीं कर सक्ता तो, पूजादिक कार्योंमें जो शासन देवताऽराधन नैष्ठिक (प्रतिमाधारी) श्रावकोंकी पदवीसेभी अविरुद्ध है, वह पूजाविषयिक शासन देवताऽराधन अस्मदादि पाक्षिकोंको किसी प्रकार अनुचित नहीं हो सक्ता. अलंविस्तरेण।

यदि किसी भाईको इस विषयमें शङ्का हो तो सम्पादक **जैनमित्र** को लिख कर भेजें. योग्य उत्तर दिया जावैगा.

एक जैनी.

आतिशबाजी.

संकल्पात्कृतकारित, मननाद्योगेन त्रयस्यचर सत्वान्। नहिनास्तियत्तदाहुः, स्थूलवधाद्विरमणंनिपुणा ॥

मन, वचन, काय, के तीनों योगोंके संकल्प से और कृत, कारित, अनुमोदना करके त्रसजीवोंका घात नहीं करना, इसे बुद्धिमान् पुरुष "हिंसात्याग" कहते हैं. इस वचनको जानकरके भी खेद है कि, हमारे जैनबान्धव अपने पुत्रपुत्रियोंके विवाह ऐसे मङ्गलीकअवसरमें "आतिशवाजी" इस महाअनर्थकारी, अमङ्गलीक हिंसक कार्यको कराते हैं. आतिशबाजीके दिवस कीड़ी, मकौड़ी, पिपीलिका आदि हजारहां बिचारे निरपराधी जीव आपकी मौजमात्रसे क्षणभरमें भस्म हो जाते हैं. तथा इसके अतिरिक्त आपका द्रव्य भी व्यर्थ भस्म होता है. इसके बदले उक्त द्रव्य यदि किसी धर्म कार्यमें दिया जावे तो, कितना शुभबंध हो? जैनविवाहपद्धतिमें लड़का लड़की की लग्नमें एकमासपर्यंत पंचपरमेष्ठीकी पूजन करना कहा है. उसको एक ओर रखकर इस अनर्थको ग्रहण करना महालज्जाकी बात है. इस पद्धतिका दक्षिणदेशमें विशेष प्रचार होता जाता है. उसे देख दुखित होकरही इतना लिखा गया हैं. विशेष लिखनेंकी सामर्थ्य नहीं हैं, और न लेखनीही आगे चलती हैं.

आपका शुभचिंतक

हरीचन्द मोतीचन्द पंधारा

(नोट–उक्त लेखका मराठीसे उलथा किया गया है.)

स्वेताम्बरीय उपद्रव.

(१)

प्रियपाठकगण! आजकल हमारे श्वेताम्बरी भाइयोंने बहुत कुछ सिर उठा रक्खा है. उन्होंने सम्मेद शिखरजी आदि तीर्थक्षेत्रोंमें उपद्रव मचानेके सिवाय एक **मानवधर्मसंहिता** नामक ग्रन्थ छपाकर प्रसिद्ध किया है. इस पुस्तकके रचियता महाशयका नाम "**शांतिविजय**" है. ग्रन्थकारने जगह २ पर दिगम्बरोंके लिये मनमाने अपशब्द लिखकर अपनी आन्तरिक शान्तिताका पूर्ण परिचय दिया है. इस पुस्तकने उनकी विद्वत्ताका नमूना भी भले प्रकार दिखा दिया हैं. यदि उक्त ग्रन्थकी अशुद्धियोंका संग्रह किया जाय तो एक बड़ा ग्रन्थ बन जाय. परन्तु इस लेखमें शब्दविचारको गौण करके उसके आर्थिक मर्मका ही विवेचन किया जाता है.

उक्त पुस्तकमें ग्रन्थकारने अनेक विषयोंपर छेड़छाड़ की है. जो कि संक्षेपसे दो भागोंमें विभाजित किये जा सक्ते हैं. अर्थात् एक हेतुवाद विषयिक दूसरे आज्ञा विषयिक—हेतुवाद विषयिक विवादोंमें दो विवादमुख्य हैं. १ केवलीके कवलाहार है या नहीं. २ द्रव्य स्त्री मोक्षको जाती है या नहीं. आज्ञा विषयिक विवादोंका निर्णय आगमाश्रित है. तथा आगमकी प्रमाणता आप्ताश्रित है. और आप्त वही माना जायगा, जो सर्वज्ञ वीतराग होगा. और सर्वज्ञ वीतराग वही होगा, जिसके कवलाहार न होगा और सर्वज्ञ वीतरागके कवलाहार हेतुवाद विषयिक विवादोंमें अन्तर्भूत है. इसलिये कहनेका तात्पर्य्य यह है कि, उक्त ग्रन्थके समस्त विवाद

केवलीके कवलाहार, और स्त्रीके मोक्ष इन दो विषयोंके निर्णय होनेपर निर्भर हैं. सो इन दोनों विषयोंमेंसे पहिले केवलीके कवलाहार विषयपर विवेचन किया जाता है. यह विषय न्यायगर्भित है. इस लिये अन्य लेखोंकी अपेक्षा पाठकोंको ध्यानसे पढ़ना चाहिये.

जो जीवन्मुक्तावस्थामें आत्माको कवलाहार मानते हैं उनके मतमें आत्माका अनन्तचतुष्टय स्वभाव नहीं रह सक्ता. क्योंकि अनन्त सुख नहीं है. और अनन्त सुखका अभाव क्षुधाकी पीड़ासे आक्रान्त है, क्षुधाकी पीड़ा होनेसे ही सब कवलाहार ग्रहण करनेका प्रयत्न करते हैं. यह बात सर्व जन प्रसिद्ध है. कदाचित् यह कहो कि भोजनादिक तो सुखके लिये है उससे सुख की हानि क्यों मानी जाती है. अर्थात् भगवान को सुखका अभाव कैसे होगा; क्योंकि निःशक्तिक क्षुधासे पीड़ित अस्मदादिकों (हम लोगों) में भोजनके सद्भावमें सुख और वीर्यकी उत्पत्ति देख पड़ती है." सो यहभी अयुक्त है. हम लोगोंका सुख कादाचित्क (कभी २) होनेसे विषयोंसे ही उसकी उत्पत्तिका होना संभव है. और भगवानका सुखभी कादाचित् विषयोंसे माना जाय तो अनन्त चतुष्टयका व्याघात होगा. जब क्षुधासे क्षीणउदर और शक्तिरहित कवलाहार के लिये प्रवर्त होंगे. उसी समय अनन्त सुख और अनन्त वीर्यके नष्ट होनेसे उनमें अनन्तता कैसे हो सक्ती है? और रागद्वेष रहित होनेसे भी भगवानका कवलाहार ग्रहण करनेमें प्रयास नहीं हो सक्ता. इस विषयमें अनुमानप्रमाण भी है. "केवली भोजन नहीं करते, क्योंकि, रागद्वेषके अभावपूर्वक अनन्त चतुष्टयकी अन्यथा अनुपपत्ति है." कदाचित् कहो कि "शत्रुमित्रमें समान और भोजन करनेवाले साधुओंमें भी रागद्वेषके अभावका संभव है. इसलिये यह हेतु अनैकान्तिक है." तो यह शंका भी अयोग्य है. मोहनीकर्मकी सत्तामें भोजन करनेवाले प्रमत्त गुणस्थानमें रहनेवाले मुनियोंके यथार्थमें रागद्वेषका अभावसंभव नहीं है. इस वास्ते यह हेतु अनैकान्तिक नहीं है. और विरुद्ध भी नहीं है. क्योंकि विपक्षमें वृत्ति नहीं है. और कवलाहार करनेसे भगवानको सरागता हो जावेगी. इसका अनुमान ऐसा है कि, जो जो कवलाहार करते हैं, सो सो वीतराग नहीं हैं. क्योंकि उनकी भोज्यमें राग प्रवृत्ति है. यथा रथ्यापुरुष. (मार्ग चलनेवाला पुरुष) और तुम्हारा अभीष्टकेवली तो कवलहार करता है. इसलिये वीतराग नहीं हो सक्ता. क्योंकि स्मरण और अभिलाषा होनेसे कवलाहार होता है, और भोजनोपरान्त आकण्ठ तृप्ति होनेपर अरुचि पूर्वक उसका त्यागता है. तो अभिलाष और अरुचिपूर्वक आहारमें प्रवृत्ति तथा निवृत्ति होनेसे वीतरागता कैसे हो सक्ती है? और वीतरागता न होनेसे आप्तता भी नहीं हो सक्ती. आप्तताका सम्भव वीतरागहीमें है. कदाचित् कहो कि, "अभिलाषा तथा अरुचिके अभावमें भी अपने अतिशय करके आहार ग्रहण करता है." तो अनन्त गुण होनेसे गगन गमनादि अतिशयोंके समान आहारादिकके अभावका अतिशय क्यों नहीं मानते? कदाचित् यह शंका करो कि "आहारादिकके अभावमें भगवानकी देह स्थिति नहीं हो सक्ती. इस विषयमें अनुमान है कि,

"भगवानकी देहस्थिति आहारपूर्वकही हो सक्ती है. देहस्थिति होनेसे अस्मदादिकोंकी देहस्थितके समान." तो इस अनुमानसे आहार मात्र सिद्ध करते हो या कवलाहार? यदि आहार मात्र सिद्ध करते हो तो ठीकही है क्योंकि सयोग केवली आहारी हैं ऐसा सिद्ध है. कवलाहार नहीं होने पर भी जो कर्माहार नोकर्माहार है. उनके ग्रहण करनेमें विरोध नहीं है. क्योंकि:—

णोकम्म कम्महारो कवलाहारोय लिप्पमाहारो उज्जमणोविय कमसो, आहारो छव्विहोणेयो॥

अर्थात् नोकर्मआहार, कर्माहार, कवलाहार, लेपाहार, मानसिकआहार, उज्जाहार, ऐसे ६ प्रकार आहार माने हैं. और कदाचित यह कहो कि, "कवलाहारी होनेसेही आहारी हो सक्ता है" सो भी अयुक्त है. कारण एकेन्द्रिय जीव, चतुर्णिकाय देव तथा अकवलाहारी मनुष्य यह भी अनाहारी हो जावेंगे. शास्त्रमें ऐसा कहा है.—

विग्गहगईमावण्णा, केवलिनो समुहदो अजोगिया।
सिद्धाय अणाहारा सेसा आहारिणोजीवा॥

अर्थात्--विग्रह गतिमें प्राप्त जीव, केवली, अयोग केवली, समुद्घातगतजीव, और सिद्ध यह अनाहारी हैं. शेष जीव आहारी हैं. और यदि द्वितीय पक्ष अर्थात कवलाहार सिद्ध करते हो तो चतुर्णिकाय देवोंमें दोष आता है. इनके कवलाहार नहीं होनेपर भी देहस्थिति होना सम्भव है.

कदाचित् यह कहो कि "देहस्थितिके कहनेसे हम औदारिक देहस्थिति कहते हैं. (अनुमान) जो २ औदारिक शरीर स्थिति है, वह सब कवलाहारपूर्वकही है. देहस्थिति होनेसे अस्मदादिक देहस्थितिवत्. और भगवानके भी औदारिक देहस्थिति है. इस लिये देवादिकोंमें दोष नहीं है." सो यह भी कहना अयुक्त है. भगवानकी औदारिक शरीर स्थिति अस्मदादिकी औदारिक शरीरस्थितिसे विलक्षण रूप परमौदारिक शरीर स्थिति होनेसे, तथा उसमें केशादि वृद्धिके अभाववत्, कवलाहारके अभावमें भी कोई विरोध नहीं है. तथा केवलीका कवलाहार माननेवालोंके मतमें भगवानका प्रत्यक्ष ज्ञान अतीन्द्रिय भी नहीं हो सक्ता. कारण हम कह सक्ते हैं कि, भगवानका प्रत्यक्ष ज्ञान अस्मदादिकोंके प्रत्यक्षकी तरह इन्द्रियजन्य है. तथा वह बोलते हैं; इस कारण अस्मदादिकोंके समान रागद्वेषसहित हैं. स्वेच्छाकारित्वके प्रसङ्गसे यह हम नहीं कह सक्ते हैं कि, हम लोगोंमेंका दृष्टधर्म कोई उनमें नहीं है. तथा कोई केवली वीतराग नहीं है. कवलाहार किसके सिद्ध करते हो? इस प्रकार तो घटादिकोंमें रचना विशेष होनेसे बुद्धिमतपूर्वकता सिद्ध हो जावेगी. और द्विचन्द्रादि प्रत्ययके निरालम्भ उपलम्भ होनेसे सम्पूर्ण प्रत्ययके निरालम्बनत्वका प्रसङ्ग आ जावेगा. और यदि यह कहो कि "जैसे बुद्धिमत्कारणसे व्याप्त रचनादिविशेष घटादिकमें दृष्ट है, वैसा शरीरादिकमें न होनेसे उनकी बुद्धिपूर्वकता सिद्ध नहीं होती" तो यह भी कह सक्ते हैं कि, जैसी हम लोगोंकी शरीर स्थिति भोजन पूर्वक दृष्ट है वैसी भगवानकी परमौदारिक शरीर स्थिति न होनेसे उसकी भोजन पूर्वकता सिद्ध नहीं हो सक्ती. और जैसे किसीके प्रत्ययकी अविशेषतामें भी कुछका कुछ निरालम्बपना है. इसी प्रकार भगवानकी शरीरस्थितिके तत्वकी

अविशेषता होनेपर भी निराहारता और अन्य अतिशय भी अविशेषसे स्वीकार करना चाहिये. कदाचित् यह कहो कि, "अन्य प्रकारकी औदारिक स्थिति और अन्यप्रकारके पुरुष भी नहीं है" तो मीमांसक मतके अनुप्रवेश होनेसे जैसे अन्य प्रकारके पुरुष हैं वैसे अन्य प्रकारकी उनकी शरीरस्थिति भी है. यदि यह न हो तो सप्तधातुसे रहित भगवानकी शरीरस्थिति कैसे होती. सप्तधातु रहित शरीर सम्भव होनेसे उसकी स्थिति भी कवलाहारसे रहित होगी तपो महात्म्यसे चतुरास्य (चतुर्मुख) के समान उसकी अभुक्ति पूर्वकतामें भी क्या विरोध है? और ऐसा देखा भी जाता है कि, दिनमें ९ वार भोजन करनेवालेकी जैसी शरीरस्थिति है, वैसीही उसके प्रतिपक्षी भावनायुक्त तीसरे चौथे दिन भोजन करनेवालेकी भी है, तथा इसी प्रकार प्रतिदिन भोजन करनेवालेकी जैसी शरीरस्थिति है, वैसीही एक, दो, तीन आदि दिनोंके अन्तर देकर भोजन करनेवालेकी भी है. शास्त्रोंमें ऐसा सुना जाता है कि, बाहुबलि आदिकी सम्वत्सर (वर्षभर) पर्यंत नियमित आहारके अभावमें भी विशिष्ट शरीरस्थिति थी. क्योंकि शरीरस्थितिमें प्रधान कारण आयुकर्महीं है. भोजनादिक तो उसके सहाय मात्रही हैं. और उनके शरीर की वृद्धि भी लाभांतरायके विनाश होनेसे प्रति समय शरीरकी वृद्धिके कारण भूत दिव्य परमाणुओंके लाभसे घटित होती है, और छद्मस्थावस्थाके समान यदि केवली अवस्थामें भी कवलाहार मानते हो तो नेत्रके पलकोंका गिरना, नख केशकी वृद्धि, आदि भी स्वीकार करो! यदि नखकेशादिकी वृद्धिके अभावकी महिमा स्वीकार करते हो तो, विशेषताके अभावसे कवलाहारके अभावकी महिमा भी स्वीकार करो! कदाचित् यह कहो कि, "मास अथवा वर्ष पर्यन्त भोजनके अभावसे शरीर स्थिति होनेपर भी यावज्जीवन उसकी स्थिति नहीं हो सक्ती. क्योंकि फिर आहारकी प्रवृत्ति होती है" तो हम पूछते हैं कि, यावज्जीवन विना कवलाहार शरीर स्थिति केसे मानी? यदि अनुपलम्भसे कहो तो वीतराग सर्वज्ञको भी उसके अनुपलम्भसेही कवलाहारका अनुपलंभ सिद्ध हुआ. यहां तो तुम्हारी वही दशा हुई कि, "**लाभके अर्थ प्रवृत्त पुरुषका हाथसे मूल भी जाता रहा**"

दोषावरणकी हानिके अतिशयके उपलम्भ होनेसे कहीं न कहीं उनके सर्वथा नाशकी सिद्धि होती है. उनकी सिद्ध होनेपर कहीं न कहीं शरीरके कवलाहारकाभी सर्वथा अभाव सिद्ध होगा, क्योंकि दोनोंमें अविशेषता है. इस लिये भगवानकी शरीर स्थिति कवलाहारपूर्वक सिद्ध नहीं होती! अब कदाचित् यह कहो कि "वेदनीय कर्मके सद्भाव होनेसे कवलाहारकी भी सिद्धि हो जायगी. इसमें अनुमान यह है! भगवानमें स्वफलदायि कर्म होनेसे आयु कर्मके समान वेदनीय कर्म है." यह भी तुम्हारा केवल कथन मात्र है. क्योंकि इस अनुमानसे वेदनीय कर्मका फल मात्र सिद्ध हो सक्ता है. नाकि कवलाहार. कदाचित् यह कहो कि, "क्षुधादि निमित्त वेदनीयके सद्भावसे कवलाहारकी भी सिद्धि है. क्योंकि क्षुधादिकका निमित्त वेदनीय कर्म भगवानमें है यह तुमने कैसे जाना? क-

कदाचित् यह कहो कि क्षुधादिकके फलसे! तो इसमें अन्योन्याश्रय दोष है क्योंकि भगवानमें क्षुधादिके फल सद्भाव होनेपर उसके कारणभूत वेदनीय कर्मके सद्भावकी सिद्धि होती है. और वेदनीय कर्मके सिद्ध होनेपर क्षुधादि फल रूप सद्भावकी सिद्धि हो सक्ती है, अब कदाचित कहो कि, "असाता वेदनीय कर्मके उदयसे भगवानमें क्षुधादि फलकी सिद्धि हो जावेगी" सो भी नहीं कह सक्ते, क्योंकि आजकल सामर्थ्य सहितही असाता वेदनीय कर्म अपना कार्य कर सक्ता हैं. और भगवानमें मोहनीय कर्मके विनाश होनेसे असाता वेदनीय कर्मके सामर्थ्यका प्रभाव सुप्रसिद्धही है. जैसे, सेनाका नायक मरनेपर सेनाका सामर्थ्य नष्ट हो जाता है. उसी तरह मोहनीय कर्मके नाश होनेसे भगवानमें घाति कर्मका सामर्थ्य नहीं रहता. जैसे मंत्रसे विषका सामर्थ्य नष्ट होनेपर मंत्रज्ञाता यदि विषका भोजन भी करै तो उसको दाह मूर्छादिक करनेमें विषका सामर्थ्य नहीं रहता, ऐसेही असाता वेदनीय विद्यमान उदय होनेपर भी भगवानमें मोहनी कर्मके अभावसे सामर्थ्यहीन असाता वेदनीय कर्म क्षुधादिक दुःख करनेमें समर्थ नहीं है. क्यों कि सम्पूर्ण सामग्री होनेपरही कार्योत्पत्ति प्रसिद्ध है. और भगवानको तीव्रतर शुक्लध्यानरूपी अग्निसे घातकर्मरूपी ईंधनके दग्ध होनेसे मोहनीय कर्मका अभाव प्रसिद्धही है.

और यदि सामर्थ्यके अभावमें भी असाता वेदनीय कर्मके निज उदयमात्रसे कार्य कारी हो तो, परघात कर्मके उदयसे दूसरोंको दंडादिकोंसे ताड़ना करें, और स्वयं दूसरोंसे ताड़ित भी हो. और परघातका उदयतो संयतोंका अर्हदवस्थामें है ही. अब कदाचित यह कहो कि "परम कारुणिक होनेसे भगवान स्वभावसे ही न दूसरोंको ताड़ना करते हैं. और न दूसरोंसे ताड़ित होते हैं." तो अनन्तसुखवीर्य होनेसे बाधाके विरहसे असाता वेदनीयकर्मके रहनेपर भोजनादिक भी नहीं करेंगे. और करुणा मोह कार्य होनेसे मोहके क्षयसे परम कारुणिकता भी उनके कैसे हो सक्ती है. और किंच कर्मोंका उदय यदि निरपेक्ष होकर कार्यकी उत्पत्ति करे तो त्रिवेदोंको प्रमत्तादिक उदय होनेसे मैथुन और भ्रकुंशादिक भी होगा. ऐसे मनके क्षोभ होनेसे शुक्लध्यानकी प्राप्ति और क्षपक श्रेणीका आरोहण कैसे होगा तथा उसके अभावसे कर्मक्षपणता भी कसे घटित हो सक्ती है?

कदाचित् यह कहो कि "जैसे असातावेदनी कर्मका उदय सामर्थ्यहीन होनेसे अपना कार्य नहीं करता ऐसे ही नामादि कर्मोंका उदय भी अपना कार्य नहीं करेगा" सो यह कथन भी असंगत है. क्योंकि शुभप्रकृति भगवानमें अप्रतिबद्धरूपसे अपना कार्य करती है. जैसे स्वमार्गानुसार बलवान् राजाके निजबलसे (अपने बाहुबलसे) रूब्ध हुए देशमें दुष्ट लोग जीवित रहते भी अपना दुराचरण नहीं करते, तथा सज्जन अप्रतिबद्ध रूपसे अपना शुभाचार करते हैं. वैसे ही भगवानमें भी सामर्थहीन दुष्टप्रकृति अपना कार्य नहीं कर सक्ती. और शुभ प्रकृति अपना कार्य करती है. कदाचित यह कहो कि "भगवानमें अशुभ प्रकृति ही क्यों सामर्थ्यहीन है. शुभ प्रकृति क्यों नहीं?" इसका उत्तर यह है कि,

अर्हन् भगवान अशुभ प्रकृतिके ही सामर्थ्यको नष्ट करते हैं न कि शुभके. जैसे राजाका दंड गुणघाती पुरुषोंके लिये है दोष रहितोंकेलिये नहीं. ।

(शेषमग्रे.)

सम्पादक.

संसार समाचार.

प्रसिद्धदानी—अमेरिकाके प्रसिद्धदानी मिष्टर कार्नेगीके साँझी मि० फिप्सने भारतमें आकर गवर्नमेण्टको ३॥ लाख रुपया दिया है. यह रुपया विज्ञानकी उन्नतिमें व्यय होगा.

राजाओंकी उदारता—राज्याभिषेकके उपलक्षमें भारतके कई महाराजाओंने जी खोलकर दान दिया है. श्रीमान् इन्दौर नरेशने अपने ऋणसे प्रजाको बिलकुल मुक्त कर दिया है. जूनागढ़ महाराज प्रजासे तकावीका १ लाख रुपया न लेनेकी आज्ञा दे चुके हैं. कोटा महाराजने प्रजापर ५० लाख रुपया माफ किया है. तथा अभी खबर लगी है कि, बरावँ (युक्तप्रान्त) के अधीश रावमहावीरप्रशाद महोदयने राज्यके किसानोंपर (१६००) मालगुजारीके छोड़ दिये हैं. श्रीमान् जयपुर नरेशकी पत्नीने एकलक्ष रुपया अकालफंडमें दिया है, राजा महाराजाओंने सब कुछ दिया है. और दे रहे हैं. परन्तु गवर्नमेंटसे भिखारी भारतको एक कानी कौडीभी नहीं मिली.

प्रान्तीयसभाओंकी खेंचतान— जबतक महासभाद्वारा प्रत्येक प्रान्तोंकी सीमाबंधनके लिये निर्णय न किया जायगा; यह खेंचतान नहीं मिटनेकी. एक मध्यप्रान्तको देखिये! सिवनीवाले कहते हैं मध्यप्रान्तकी प्रांतिकसभा सिवनीमें होना चाहिये! खंडवावाले कहते हैं हमारे यहां होना चाहिये! छिंदवाड़ा भी इसी ताकझाँकमें उद्योग कर रहा है. नागपूरवाले विचारे सबका तमाशा ही देखते हैं. मालवा प्रान्तमें भी यही गड़बड़ मच रही है. हमारी समझमें यदि तीर्थक्षेत्रोंके सम्बन्धसे प्रांतीयसभा स्थापित हो तो, बहुत अच्छा है. ऐसा करनेसे बहुतसे लाभ होंगे (जो पाठकोंको कभी एक पृथकलेखद्वारा दिखलावेंगे.) और यह चारों ओरकी खेंचतान मिट जावेगी. चारों ओरसे खींचनेवाले महाशयोंको नागरिक (लोकल) सभायेंही स्थापितकर उन्नति दिखलाकर संतोषित करना चाहिये.

इन्दौरकी प्रतिष्ठा—आनन्दके साथ पूर्ण हुई. मालवा प्रांतिकसभाकी स्थापना होनाभी सुना है. अभिषेकादि सम्बन्धी व्याख्यान भी हुए. जिनके समाचार यथार्थ ज्ञात होनेपर आगामी अंकमें प्रकाशित किये जावेंगे. हमारे एक सम्वाददाता लिखते हैं कि, "उक्त प्रतिष्ठामें आकस्मिक उपद्रव बहुत हुए हैं. मन्दिरकी छत टूटनेसे २ आदमी बिलकुल प्राणहीन होगये. ८ घायल होकर चलाचलीकी राहमें हैं. मंडपमें अग्नि लगगई. कुशल हुई कि, वह बुझा दी गई. मंडपमें कई स्त्रियोंके गर्भपात होगये, इसका कारण प्रतिष्ठाकी विधि पूर्णरूपसे न कराई जाना ही, जान पड़ता है." जो हो! हम इस बातपर एकाएक विश्वास नहीं कर सक्ते कि, एक माननीय प्रतिष्ठाचार्यके हाथसे विधियोंमें त्रुटि हुई होगी! प्रतिष्ठामें अनुमान १५,००० की भीड़ थी.

उक्त उत्सवके समयमें श्रीमान् होलकर महाराजकी राजगद्दीकी भी बड़ी धूमधाम थी. जिससे प्रतिष्ठाका उत्सव महोत्सव होगया होगा. महाराज सयाजीरावजीनें पेन्शन लेकर अपने पुत्र तात्याजीराव (१२वर्षके बालक) को

राजसिंहासनपर सुशोभित किया है. आप वाणप्रस्थावस्था धारणकर बड़वायमें एकान्तवासी हो रहेंगे. बालक महाराजके युवा होने तक राज्यकार्य कौन्सिलके हाथसे सम्पादित होगा.

हजारीबाग—यहांकी प्रतिष्ठा भी सानन्द सकुशल पूर्ण हुई. प्रतिष्ठाविधि पं. शांतिलालजी तथा महिपालजी द्वारा यथार्थ कीगई. प्लेगके कारण जनसंख्या कुछ न्यून रही. परन्तु बंगालप्रान्तके प्रायः सर्व महाशय उपस्थित हुएथे. नृत्य सांगीतादिका अपूर्व आनन्द रहा. प्रतिष्ठाकारक सेठजीनें १२५) वार्षिक आयवाला एक ग्राम निरन्तरके लिये मन्दिरकी सहायतार्थ अर्पण कर दिया. यह बड़े हर्षका विषय है. मन्दिर बनानेवालोंका यह पहिला कर्तव्य है.

युगल अंकोंकी सूचना—अभी कितनें एक भाई कहा करते थे कि जैनमित्र माहके अन्तमें प्रकाशित होता है. यह ठीक नहीं है! इसी शंकाको मिटानेके लिये हमने अबकी बार दो अंक माघ, फाल्गुनके साथमें निकाले हैं. जिससे १ माहकी यह त्रुटि पूर्ण होकर आगे जैनमित्र सदा महीनेंके प्रारंभमें पाठकोंकेपास पहुंचा करेगा.

समालोचना—बाबू प्रभुदयालजी तहसीलदार अम्बाला एक धर्मप्रेमी सुचतुर पुरुष हैं. आपने "**जैनइतिहास**" नामक पुस्तक उर्दू भाषा व लिपिमें लिखकर प्रकाशित की है. इसके बनानेमें बाबूजीको अवश्य ही बड़ा परिश्रम हुआ होगा; जो उर्दू प्रेमियोंमें पुस्तकका आदर होनेंसे सफल हो सक्ता है. पुस्तक यदि नागरीमें लिखी जाती तो हमारी समझमें इससे अधिक लाभ होता. अब भी यदि कर्ता महाशय नागरी अनुवाद कराके प्रकाशित करें तो उत्तम हो. पुस्तकका मूल्य ज्ञात नहीं है. उर्दू पढ़े लिखे भाइयोंको उक्त महाशयसे पुस्तक मिल सक्ती है.

☞ व्ह्येल्यूपेबिल लौटानेवाले महाशय!

गताङ्कमें हमनें २० महाशयोंके नाम प्रकाशित कर सबको सचेत कियाथा. परन्तु दोचार महाशयोंको छोड़ किसीनेभी हमारी प्रार्थना नहीं सुनी है. लाचार २० नाम इस अंकमें पुन प्रगटकरके सचेत करते हैं. जिन महाशयोंके हिसाबमें कुछ गड़बड़ हो वह लिखकर दरयाफ्त करलें

१।) सेठ अमराजी मोतीजी **रतलाम**
१।।।-) मुन्नालाल टीकमचन्दजी **नागपूर.**
।।।=) मोतीलाल चंपालालजी **परतवाडा.**
१≡) रतनलालजी पल्लीवाल **अलीगढ.**
१।।-) हरदेवदास जगन्नाथजी **जसपूर.**
१।।) जैनसभा **अम्बाला.**
१।) लालहंसराजजी जैन **लाहौर.**
।।।) शिवलाल मोतीलाल **नागपूर.**
२।।=) सूरजमलजी पाटणी **सिवनीछपारा.**
।।।=) लालाचन्दकिरणदासजी **कीरतपूर.**
१।।-) शोभाराम ताराचन्दजी **उज्जैन.**
१।।।-) जवेरचन्द मलूकचन्दजी ,,
।।।≥) जसरूपलच्छीरामजी **औरंगाबाद.**
१।।।-) खूबचन्द सिपाहीलाल **अकबराबाद.**
२।।।-) स्तवनेश शांतिनाथ **महमूर.**
१।=) हरचन्द रघुनाथजी **बदनूर.**
१।।=) हुब्बलाल मोतीलाल **हरदा.**
।।।≡) मोहनलाल नन्दलाल हलवाई **हरदा.**
।।।=) बाबू बहालसिंहजी **इन्दौर.**
।।।=) बल्लूसिंह दीवानसिंहजी **बड़ौत.**

कई एक ग्राहकोंको हमनें एक २ चिट्ठी इसके विषयमें दी है. और उनके जबाबकी बाट अभीतक जोहते रहे हैं. यदि उनसे कुछ उत्तर प्राप्त न हुआ. तो अग्रिम अंकमें लाचार उनका भी नाम प्रकट करना पड़ेगा.

Registered No. B. 288.

४ अद्य धरापर जैनमित्र ही विठावैगो ॥

३ भारी भ्रमभूरि हिये भ्रमत भयावनोंजो, तिन्हें शूर लेखन सों चूरिके घटावैगो। बृहत विपक्षी पक्षी, सन्देह अम्बर के—

छेदि चोंचे चाव चतुर चकोर चाहकन हेतु, चन्द्रसो विपूर्ण जैन पावन पठावैगो। अंधकार अविचार अंशुमी, अज्ञान आदि,

श्रीवीतरागायनमः

जैनमित्र.

जिसको

सर्व साधारण जनोंके हितार्थ,

दिगम्बर जैनप्रान्तिकसभा बंबईने

श्रीमान् पंडित गोपालदासजी बरैयासे सम्पादन कराके

प्रकाशित किया.

जगत जननहित करन कँह, जैनमित्र वरपत्र ।
प्रगट भयहु-प्रिय! गहहु किन? परचारहु सरवत्र ! ॥

चतुर्थ वर्ष } चैत्र, सं. १९५९ वि. { अंक ७ वां.

नियमावली.

१ इस पत्रका उद्देश भारतवर्षीय सर्वसाधारण जनोंमें सनातन, नीति, विद्याकी, उन्नति करना है.

२ इस पत्रमें राजविरुद्ध, धर्मविरुद्ध, व परस्पर विरोध बढानेवाले लेख स्थान न पाकर, उत्तमोत्तम लेख, चर्चा, उपदेश, राजनीति, धर्मनीति, सामायिक रिपोर्ट, व नये २ समाचार छपा करेंगे.

३ इस पत्रका अग्रिमवार्षिक मूल्य सर्वत्र डांकव्यय सहित केवल १।) रु० मात्र है, अग्रिम मूल्य पाये बिना यह पत्र किसीको भी नहीं भेजा जायगा.

४ नमूना चाहनेवाले॥) आध आनाका टिकट भेजकर मंगा सक्ते हैं.

चिट्ठी व मनीआर्डर भेजनेका पता:—

गोपालदास बरैया सम्पादक.

जैनमित्र, पो० कालबादेवी बम्बई—

कर्नाटक प्रिंटिंग प्रेस चन्देवाड़ी, मुंबई.

प्राप्तिस्वीकार.

जैनमित्रका मूल्य.

१।) पं० मोहनलालजी-**महुवा** नं. ५६०

१।) लाला भंवरलालजीमंत्री-**झालरापाटण** ३६१

*१।) सूरजमल विद्यार्थी-**सिवनी** ८५

१।) जोगेश्वर नारायण चवड़े-**मांगीतुगी** ५६९

१।) लाला पन्नालाल बुलाखीचंदजी-**भोपाल** ५७१

१।) लाला नानकचन्दजी जैन-**इटावा** ५६६

*२) लोकमन हजारीलालजी-**शाहपुर** १५६

*॥।=।) मोहनलाल नंदलालजी हलवाई **हरदा** ३७३

१।) बाबू मित्रसेनजी ओवरसियर होशंगाबाद ६५

सभासदोंकी फीस.

*३) ताराचन्द मांगीलालजी बड़ौदा.

संस्कृत विद्यालय भंडार.

५) सेठ गुलाबचन्द माधवजी-**नातेपूते**.

२५) ,, मोतीचन्द मलूकचन्द कालूसकर-**लोंद**.

१०१) दोशी लक्ष्मीचन्द केवलचन्दजी-**फलटण**.

२५) सेठ गोतमचन्द नेमचन्दजी-**शोलापुर**.

श्री सम्मेदशिखरजी भंडार.

१११।)॥ श्री समस्त पंचान जैन-**झहेर**.

९९) सेठ नाथूराम छीतरमलजी सेपुरीवाले मा० श्रीचन्द गोपालदासजी नरवर.

☛ व्हेल्यूपेबिल लौटानेवाले.

(३)

गत दो अङ्कोंमें हमने क्रमसे ५० महाशयोंके नाम प्रकाशित किये हैं. और प्रार्थना भी करते आये हैं. जिसे सुनकर कितने एक महाशयोंने हमारा पिछला मूल्य भेजनेकी कृपा की है. पत्रव्यवहारसे जाना गया कि, उनकी गैरहाजिरीमें वी. पी. वापिस हो गया. अतः हम शेषके सम्पूर्ण लौटानेवाले महाशयोंके नाम प्रकाशित करनाही उचित समझते हैं. यदि भाइयोंको स्मर्ण न होगा तो हो जायगा. जिन महाशयोंको हिसाबमें कुछ शक जान पड़े तो हमसे पत्र लिखकर दरयाफ्त करलें.

१॥=) बाबू पूनमचन्द भूरामलजी **जोधपुर**.

१॥-) सेठ रामचन्द किशुनचन्दजी **होशंगाबाद**.

॥=) श्री जैनमन्दिर वैसाखलेन **कलकत्ता**.

॥=) श्री कन्हैयालालमन्नूलाल बजाज **गोरखामर**.

२) दि. जैनसभा बेगमबजार **हैदराबाद**.

१॥-) सेठ सावतराम सेवारामजी **उज्जैन**.

॥=) बाबू ऋषभदासजी **बारांबंकी**.

२=) नाथूराम मथुरादासजी **विजयगढ**.

॥=) जवाहिरलालजी सिगई **दलपतपुर**.

२=) मि. जवाहिरलालजी जैनवैद्य **जयपुर**.

॥=) रामप्रसाद मोतीलालजी **सीहोरा**.

॥=) सूरजमल मोहनलालजी चिंचपुर (बार्सी)

१=) श्री चलमलप्पा कोरी **बीजापुर**.

२=) लाला परमानन्ददासजी बरैया **कराहिया**.

२=) नाथूरामजी चौधरी **अकलतरा**.

१=) जौहरीलालजी खजांची **सहारणपुर**.

॥=) बापूजी मरोदी **यवतमहाल**.

२=) मुन्नालालजी राजकुमार **जबलपुर**.

---

* इन महाशयोंने कृपाकर अपना पिछला मूल्य भेजा है—अन्य वी. पी. वापिस करनेवाले महाशयोंको भी अनुकरण करना चाहिये-क्लार्क.

लेखकोंको सूचना.

कितने एक भाइयोंके लेख विलम्बसे आनेके कारण तथा अन्य आवश्यक समाचारोंके प्रकाश होनेसे छप नहीं सके है, उन्हें आगामी अंकतक धैर्य्य रखना चाहिये.

सम्पादक.

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

जगत जननहित करन कहँ, जैनमित्र वर पत्र ॥
प्रगट भयहु-प्रिय ! गहहु किन ?, परचारहु सरवत्र ! ॥ १ ॥

चतुर्थ वर्ष | चैत्र, सम्वत् १९५९ वि. | ७ वां.

प्रभाती-चेतावनी.

जागौरे ! जैनी भित्र, धर्मी लोग जागे ॥

गयहु अनय तिमिर चोर, सुनय सुखद भयहु भोर, सुनृप सूर उदय होत, दुक्ख दूर भागे ॥ जागौरे जैनी० ॥ १ ॥

लगि स्वतंत्र सुखसमीर, मन्द २ बहन और, वृद्धिरूप जगतमेंसु, शब्द होंन लागे । जागौरे जैनी० ॥ २ ॥

कलरव कर बहु बिहंग, कहत मनहुं दै उमङ्ग, उठहु तुम सु क्यों न ? अन्य पंथि पंथ लागे ॥ जागौरे जैनी० ॥ ३ ॥

तरुवर सब डुलत देत, साखी मनों करत चेत, पङ्कज गन कूर विकस, अवनति अनुरागे ॥ जागौरे जैनी० ॥ ४ ॥

संगि चेत गये दूर, दुफर 'प्रेमि' भये भूर, तासों सिख देत जगहु, अजहुं लों अभागे ॥ जागौरे जैनीभित्र धर्मी लोग जागे ॥५॥

दोहा—सिंहावलोकन.

बार बार सिख दै थके, कर सु हजार पुकार ।
हार न मानि अबार लों, सोवत हार गंवार ॥

वसंततिलका.

ज्यों पंथि पंथि मिलजावत पंथ माहीं ।
बोलें हंसें छिनकमें पुनि बाट जाहीं ॥
त्योंही कुटुम्ब सँग अध्रुव जान--नातें।
रे मूढ चेत चित चेत! अचेतना--तें॥२

नाथूराम प्रेमी जैन.

श्रीसम्मेदशिखरजीके मुकद्दमेकी संक्षिप्त रिपोर्ट.

आबाल वृद्ध ऐसा कोई भी जैनी नहीं होगा जो श्री सम्मेदशिखरजीके नामसे तथा वहांकी पाप नसावन पावन सुहावन भूमिकी महिमासे अपरिचित होगा. पूर्व पुरुषाओंका मत है कि, उक्त पवित्र क्षेत्रके भक्तिभावपूर्वक एकवार दर्शन मात्रसे घोर नर्क तिर्यञ्चगतिके दुःखोंसे जीव छूट जाता है. उन्ही श्रेष्ट पुरुषाओंकी संतान हम लोग श्रद्धानुसार अपनी गाढ़ी कमाई का द्रव्य व्ययकर वहांकी बंदना करके अपना जन्म सफल करते हैं. और जो कुछ बन पड़ता है तीर्थकी रक्षार्थ हमारे प्रत्येक भाई वहांके भंडारोंमें देते हैं. जिन भंडारोंमें हमलोग द्रव्य देते हैं, वह दो भागोमें विभक्त हैं: १ एक उपरैली बड़ी कोठी (बीसपंथी) जो आरा की पंचायतीके प्रबन्धसे चलती है: २ री तेरह पंथी नीचली कोठी जो कलकत्तावालोंके प्रबंधसे चलती है. इस प्रकार प्रबन्ध बहुत दिनोंसे चला आता है. इसी बीचमें कालके प्रभावसे अथवा धर्म विरोधियोंके कलहप्रिय स्वभावसे कहो, अनुमान पांचवर्षसे उक्त क्षेत्रके सम्बन्धमें श्वेतांबरियोंसे और हमसे एक बड़ा भारी झगड़ा खड़ा होगया है. प्रारम्भमें जब सम्वत् १९५४ की सालमें यात्रियोंको पर्वतपर चढ़नेका कष्ट देखकर हमलोगों (दिगम्बरियों) नें सीतानालासे भगवान कुंथनाथकी टोंक पर जानेके रास्तेमें सीढ़ियां बंधवानेका कार्य जारी किया और २००–३०० सीढ़ी तयार भी हो गईं; तो श्वेताम्बरी महाशयोंने सीढ़ियां बंधानेके लिये मना किया, और कहा कि पहाड़पर दिगम्बरियोंको सिवाय दर्शनोंके कोई भी कार्य करनेका अधिकार (हक) नहीं है. "तीर्थक्षेत्र पर उसके अनुयायी प्रत्येक यात्री जो चाहे सो धर्मकार्य कर सक्ते हैं. क्योंकि जो धर्मात्मा कार्य कराता है, वह अपनी जीविका व उदरपोषणाको नही करता है. परन्तु अपनी आन्तरिक भक्ति और धर्मकी प्रभावनार्थ करता है. और ऐसे समयमें उसे रोकना बड़ा अनर्थका कार्य है." हम नही समझ सक्ते कि, वह इसबात-से क्यों अज्ञान है.

भाइयो! बात अधिकारके निषेध करनेहीसे समाप्त नहीं हुई, तयारी करके धर्मात्मा श्वेताम्बरी भाइयों ने २०० के लगभग सीढ़ियां तोड़ भी डाली. सच है, "परहित घृत जिनके मन माखी" अथवा "परअकाज भट सहस बाहुसे" फल यह हुआ कि, अपनी ओरसे मुकद्दमा फौजदारी दायर किया गया. और उक्त महाशय कोर्टसे शिक्षित (दंडित) किये गये. पश्चात् शिक्षित भाइयों की ओरसे हायकोर्टमें अपील की गई. उससमय हम लोगोंके प्रमाद वश कोशिस न हो-सकनेके कारण वह बरी होकर छूट गये और लोअर कोर्टका (Lower Court) हुक्म जज साहिबनें फिरा दिया.

पश्चात् अपना अधिकार साबित करनेके लिये और जो नुकसान उन लोगोंकी ओरसे पहुंचाया गया था उसके विषय अपनी ओरसे हजारीबागकी कोर्टमें दीवानी मुकद्दमा चलाया गया. जिसमें जिलाके मजिस्ट्रेट जजसाहिबने दिगम्बरीय हक अच्छी तरहसे निश्चित कर

पैड़ियोंके तोड़नेके हरजेकी डिगरी भी कर दी. अब उन लोगोंने उक्त फैसलेपर कलकत्ता हाई-कोर्टमें अपील की है. जिसकी सुनाई अभीतक नहीं हुई है. परन्तु थोड़े महीनोंके भीतर होनेका संभव है. इसलिये हमारे सम्पूर्ण धर्मात्मा भाइयोंको इस समय पूर्ण रीतिसे तन मन धनसे कोशिस करना चाहिये. तीर्थकी रक्षा करना धर्मकी भी रक्षा है. तिसमें भी सम्मेद शिखरजी ऐसे परमपवित्र क्षेत्रकी जिसमें २० तीर्थंकरोंके अतिरिक्त असंख्यात मुनि मोक्ष पदको प्राप्त हुए हैं. हमको निश्चय है कि जिन भाइयोंके हृदयमें कुछ भी धर्मका अंश और अभिमान होगा वह स्वतःही अपना कर्तव्य पालन करनेको तयार हो जावेंगे. और शक्ति भर सहायता देनेमें कभी पीछे न हटेंगे.

भाइयो! अभी इस एक मामलेका तो अन्त आया नहीं था. बीचमें पार्श्वनाथ स्वामीकी टोंक पर जो नवीन मन्दिर तयार हुआ है, उसमें स्वेताम्बरी भाइयोंने अपनी मूर्ति स्थापित करनेका प्रबन्ध किया था. मुहूर्त भी निश्चित हो गया था. उस समय बहुतसे स्वेताम्बर मधुवनमें एकत्र हुए थे. परन्तु इस मोकेपर अपनी दोनों कोठियोंकी तरफसे और बम्बई तथा आरावाले भाइयोंकी ओरसे पूरी २ कोशिस होनेसे रांचीकी कोर्टसे प्रतिमा स्थापित न कर सकनेका इंजकशन मिल गया. इस कारण लाचार स्वेताम्बरी भाई वे जासा अपनी कुछ करतूत न दिखला सके. इसके पश्चात् अपने वंशपरम्पराके हकको हरकत पहुंचानेके बदले उन लोगोंपर दीवानी कोर्टमें मुकद्दमा चलाया गया. परन्तु हाकिमके विरुद्ध होनेसे कैश चलानेमें बहुत शीघ्रता की. इससे अपनी ओरसे सुबूतके कागजात कुछ दाखिल न होसके. क्योंकि सुबूतके कागजात जगह २ से मंगानेमें और लानेमें बहुत विलम्ब लगा. और हाकिमनें बहुतसी गवाही व इजहार लेनेसे इंकार भी कर दिया. इसके सिवाय गत मई मासमें स्वेताम्बरी तरफसे जब हाकिम पहाड़पर लोकल इनक्वायरी (Local Inquiry) करनेको बुलाया गया. उस वक्त भी हाकिमकी कार्रवाई इकतरफी मालूम होनेसे अपने वकील लोगोंकी राय कैश पीछा खेंचलेने और पीछेसे सब सुबूत एकत्र करनेपर दायर करनेकी हुई, तब सब भाइयोंकी भी यही सम्मति होनेपर पीछा खेंच लिया गया है. और उसको पीछा खीचे हुए आज सात आठ माह हो गये हैं. अतः अब उसको फिर दायर करनेके लिये सम्पूर्ण भाइयोंसे प्रार्थना है कि, वह नीचे लिखे सुबूतोंमेंसे जो कुछ रखते हों शीघ्र भेजनेकी कृपा करें.

१ श्वेताम्बरी मूर्ति अपने किस शास्त्रमें किस प्रकार अपूज्य कही है? शास्त्रके उस प्रकरण की नकल समेत लिखिये.

२ अपनी डिगम्बरी मूर्तिके या चरणोंके नजदीक स्वेताम्बरी मूर्ति स्थित रहनेसे अपनी मूर्तिके दर्शनादि करते समय परिणाम दुखित होते हैं या नहीं? होते हैं तो, किस शास्त्रके किस आधारसे?

३ कौन २ शास्त्रोंमें दिगम्बरीधर्म स्वेताम्बरीयोंसे प्राचीन कहा है? शास्त्रोंके नाम व प्रकरण सहित?

४ सम्मेदशिखरजीका पर्वत अपने किन २ शास्त्रोंके आधारसे पूज्य है?

५ इनके अतिरिक्त और भी प्राचीन सुबूत, कागजात, सनदों वगैरहकी नकलें भेजना चाहिये.

धर्मही संसारसे मुक्त करनेवाली वस्तु है, धर्महीसे मनुष्यको सुखकी प्राप्ति होती है. "यतो धर्मस्ततो जयः" अतः धर्मका रक्षणही सारभूत है. ऐसे सर्वोत्तम कार्यमें धनवानोंकी लक्ष्मी काम नहीं आवेगी तो फिर कब और किस सुकृतमें लगेगी? अब यह कार्य थोड़ी सहायताका नहीं है. परन्तु हजारों व लाखों रुपयेकी जरूरतका है. सो सर्वभाइयोंको सहायता अवश्य करना चाहिये. लक्ष्मीका कुछ भरोसा नहीं है. आज आकर कल चली जाती है.

आज कल श्वेताम्बरी भाई पहाड़पर अपना हक जमानेके लिये प्रतिदिन नई २ कार्रवाई करते जाते हैं. परन्तु खेद है कि, हमारे दिगम्बरी बन्धु प्रमादी हो रहे हैं. उन्हें अपनी गाढ़ निद्रासे प्रबुद्ध हो धर्मकी रक्षा करनेमें तत्पर होना चाहिये.

हजारीबाग, ६-२-०३ | निवेदक, शा. डाह्याभाई शिवलाल, जैन.

तीर्थक्षेत्रोंका द्रव्यसम्बधी अन्धेर

और प्रबन्धकी त्रुटियोंपर यात्रियोंके ध्यान देनेयोग्य विवेचन.

इस वर्ष हमने सम्पूर्ण तीर्थक्षेत्रोंका हिसाब व व्यवस्था मंगानेके लिये जगहँ २ फार्म भेजे थे. उनसे जो कुछ नतीजा निकला है, वह आज भाइयोंपर प्रगट करनेका विचार किया है. आशा है कि, हमारे भाई ध्यानसे पढ़कर हमें कृतार्थ करेंगे.

इस वर्ष १ पालीताणा, २ श्रवणबेलगुल, ३ पावागढ़, ४ गजपंथाजी, ५ सोनागिर बीसपन्थी कोठी, ६ माँगीतुंगी, ७ पावापुरी, ८ मूडबिद्री, ९ चंपापुरी तेरहपंथी कोठी, १० बेनेड़ा, ११ कारकल, १२ बाहुबलिजी, १३ बढाली, १४ बरॉगगाँव, १५ सिद्धवरकूट, १६ मुक्तागिरि, १७ सजोद, १८ रामटेक, १९ भातकोली, २० मक्सीजी, २१ कुंथलगिरि, २२ बड़वानी, २३ नालनपुर, २४ सम्मेदशिखरजी की उपरैली कोठी, २५ महुवा, २६ दहीगांव, २७ गिरनार, २८ नैनागिर, २९ तारंगाजी, ३० अन्तरीक्षपार्श्वनाथजी. ३१ चंपापुरी, बीसपंथी कोठी, ३२ द्रोणागिर, ३३ सोजित्रा, ३४ शिखरजीकी नीचलीकोठी, ३५ सोनागिर तेरहपंथी कोठी, ३६ स्तवनिधि, ३७ खंभात, ३८ हुंमस पद्मावती. आदि ३८ तीर्थक्षेत्रोंके प्रबन्धकर्ताओंके पास हिसाबके फार्म भेजे गये थे, तथा पत्रव्यवहार किया गया था जिनमेंसे प्रथमके १४ तीर्थक्षेत्रोंके फार्म हमारे पास भरकर आये हैं. जिसके बदले उन महाशयोंको कोटिशः धन्यवाद है. शेष जिन स्थानोंसे फार्म भरकर नहीं आये हैं, उनकी संक्षिप्त व्यवस्था जो कुछ हम जान सके हैं, व प्रयत्न करके खोज सके हैं, नीचे लिखते हैं.

सिद्धवरकूट—गतवर्ष यहांसे हिसाबका फार्म भरकर आया था. परंतु इस वर्ष ४ बार फार्म और पत्र भेजनेपर कुछ उत्तर नहीं आया. जाना

आता है. इसका कारण मुनीमजीका प्रमाद होगा. प्रबन्धकर्ताजीकी कुछ यह आज्ञा न होगी कि, यदि कोई हिसाब मंगावै तो उत्तरतक न देना. अतः मुनीमको सचेत होना चाहिये.

मुक्तागिरि—इसक्षेत्रके प्रबन्धकर्ता सेठ लालासा मोतीसाजी इलचपुरवाले हैं. आपकेपास चार पत्र भेजे व फार्मभी भेजा परन्तु उत्तर नहीं मिला. केवल फार्म वापिस करके भेज दिया है. ज्ञात नहिं होता कि, फार्म बिचारेका क्या अपराध था जो इतना अपमानपात्र हुआ. अस्तु. हमने पुनः पत्र व फार्म भेजा है. आशा है कि, कृपाकर अबकीबार अवश्य भेजदेंगे.

सजोद—(अंकलेश्वरके नजदीक) गतवर्ष यहांसे भी हिसाब आया था, परन्तु इसवर्ष ४—५ पत्र लिखनेपरभी कुछ उत्तर नहीं मिला सुना है, इस वर्ष कोई नवीन महाशय प्रबन्धक हुए हैं. हमको तो नयेपुरानों की सबहीकी कृपा चाहता है. आप नये हैं तो भी शीघ्र भेजिये ! धर्मके कार्यमें विलम्ब करना उचित नहीं है.

रामटेक—इस क्षेत्रका गतवर्षका हिसाब सेठ गुलाबसाव ऋषभसावजीने कृपाकर भेजा था. इसवर्ष यहांका प्रबन्ध किसी दूसरे महाशयके हाथ है. फार्म हमने भेजा है. आशा है वहभी विलम्ब न करेंगे.

भातकोली—यहांके प्रबन्धकर्ता नेमासा रतनसा अमरावतीवालोंके पास ४—५ पत्र व फार्म भेजे. परंतु कुछ उत्तर नहीं मिला, आपको चाहिये कि मिहरबानी कर शीघ्र भेजें.

कुंथलगिरि—सेठ अनंतराजजी पांगल वासी टौनवाले यहांके प्र० क० हैं. आपकेपास फार्म व पत्र भेजे गये हैं. विलम्ब होनेका कारण प्लेग जानागया है. अब रोग शांत होगया होगा. कृपाकर शीघ्र भेजें.

मक्सीपार्श्वनाथ—यहांके मुनीम गणपत हरचन्दजीने पहिले पत्र व फार्मके उत्तरमें लिखा. "मैं बीमार हूं" पश्चात् दूसरापत्र लिखनेपर जबाब दिया कि "प्रबंधकर्ताको लिखो. वह आज्ञा देंगे तो हम भेजेंगे" मुनीमका कार्य है कि वह बाहिरके पत्र तथा जरूरीकार्योंकी सूचना प्रबन्धकर्तासे करके योग्यायोग्य आज्ञा लेकर उत्तर देवे. छूंछा उत्तर देना उचित नहीं है. इसलिये मुनीम साहिबको सूचना दी जाती है कि, वह अध्यक्षसे शीघ्र आज्ञा लेकर हिसाब व पत्रोत्तर भेजें.

बडवानी—यहांके प्रबन्धकर्ता सेठ नाथूरामजी चुंनीलालजी इन्दौरवाले हैं. आपके पास फार्म भेजा था. सो पहिले तो आप आज, कल, परसों करते रहे. बाद नमालूम क्या सोच कर फार्म वापिस कर दिया. और लिखा कि, "हमको अवकाश नहीं है. और न हम भरेंगेही" इसके उत्तरमें हमने पुनः नम्रतासे पत्र लिखा है. तथा फार्मभी भेजा है. पहिले आपकेद्वारा बनेड़ाका हिसाब भर कर आगया है यह हर्षकी बात है. परन्तु खेद इस बातका होता है कि आप विनाकारण इतने क्यों खिंच गये. धर्मके कार्योंमें कहींका गुस्सा कहीं ठंडा करना ठीक नहीं है. अस्तु. हमारा कुछ अपराध हो तो सूचित करें और क्षमाभाव धारण कर हिसाब शीघ्र भेजें.

तालनपुर—चार पत्र व फार्म भेजे. उ-

तर नहीं आया. प्रबन्धकर्ता महाशयको इस ओर ध्यान देना चाहिये.

श्रीसम्मेदशिखरजी (बीसपंथी कोठी)— इसके प्रबन्धकर्ता आराकी पंचान व बाबू मुंशीलालजी हैं. इस तीर्थके हिसाबकी दशा भाइयोंको गत जैनमित्रके सेठ हीराचन्द नेमिचन्दजीके लेखसे यथार्थ ज्ञात हुई होगी. तथा जिनको कुछ सन्देह हो वह बाबू चम्पतरायजी महामंत्री (जो वहांकी यात्राको गये थे) के द्वारा ज्ञात कर सक्ते हैं.

हालमें यहांके भंडारमें अनुमान ७९,०००) का सर्माया तथा उपकरण वगैरह हैं. आजसे तीस वर्ष पहिले अध्यक्षोंकी कृपासे यहांका भंडार बिलकुल नष्टप्राय हो चुका था. इसी बीचमें मुनीमकी जगहपर पं० हरलालजी नियत हुए थे. आपकी कार्यकुशलता कैसी थी. यह बात भाइयोंसे छुपी नहीं है. वह कोठीके रुपयाको कभी किसीके हाथमें नहीं जाने देते थे. कारण वह जानतेथे कि, इसी प्रकार आगेका सब रुपया नष्ट हो चुका है. वह जो कुछ पैसा खर्च करते थे, मन्दिरोंकी मरम्मत धर्मशाला उपकरणादि करानेमें, न कि अपने ठाठ तथा लड़ाई झगड़ोंमें, वह भंडारके द्रव्यको श्रीजीका समझते थे. अपना नहीं. इस प्रकार सत्यप्रीतिसे कार्य चलाने व आवश्यक कार्योंमें यथायोग्य खर्च करनेपरभी उन्होंने ७९,०००) रुपया जमा किये थे. इसमें जो कुछ खर्च करतेथे वह गिरेडीके सेठ हजारीमलजीकी सम्मतिसे करते थे. ऐसाभी सुननेमें आया है कि, एक बार जब स्वेताम्बरी भाइयोंने पालगंजके राजाको कुछ रुपया दिया था. और उसके चुकानेमें राजाको असमर्थ देखकर स्वेताम्बरी भाइयोंने पहाड़ नीलाम करनेका सरकारसे हुक्म ले लिया था. तब पं० हरलालजीनें अपने अपूर्वसाहससे भाईयोंसे चन्दाकर तथा जमाकी द्रव्यमेंसे रुपया देकर पहाड़ नीलाम होनेंसे बचा लियाथा. इतना ही नहीं आपने जो रुपया राजाको दियाथा सब व्याजसहित वसूल कर लिया. और जिन २ भाईयोंने चन्दा दियाथा, सबका वापिसकर दिया और अपना द्रव्य ज्यों का त्यों कायम रक्खा. एक अवसरपर आपने इसी द्रव्यमेंसे ४०,०००) एक और राजाको कर्जमें दियेथे, जो उनके पीछे अब पुलियाकी कोर्टमें सड़ रहे हैं. जिसका व्योरा आपको आगे चलके ज्ञात होगा. उक्त मुनीमजी की प्रमाणता व चातुर्यता की प्रशंसा कहांतक करें, इनके हिसाबमें कोई भूल नहीं निकाल सक्ताथा. ऐसे ही सज्जन की ऐसे बड़े तीर्थपर आवश्यक्ताथी. परंतु हम लोगोंके अभाग्यसे उनका जीवन पूर्ण होगया. जिसको आज ४,९ वर्ष व्यतीत होगये. इनके परलोकके पीछे ही कोठीकी दशा शोचनीय हो रही है.

पंडितजीके मरण होनेके थोड़े अरसे पीछे आरावाले आये. और उनके शिष्य राघौजीको जो उस समय काम करता था, निकालकर चाबी वगैरह लेली, बस यहींसे विरोधकी जड़ जम गई. पं.हरलालजीकी दी हुई, ४०,०००) की रकम जो राजाके पास थी, उसके लिये आरावाले और राघौजी अपना २ कहके कोर्टमें लड़ने लगे, जिसमेंसे १३०,००) राघवजीको मिला, यह तेरह हजार राघौजीको मिलनेसे फिर मुकद्मा चल

रहा है. राघवजी अपनें तेरह हजारमेंसे और आरावाले अपनी कोठी (बीसपंथी कोठी) मेंसे मनमानें रुपया अदालतोंमें खर्च कर रहे हैं. इस प्रकार जैनियोंकी गाढ़ीकमाई फिजूल खर्च में लुट रही है.–खोज करनेसे यह भी मालूम हुआ है कि, आरावालोंने सेठ हजारीमलजीके साथ भी झगड़ा कर नोटिस दे दिया था. उसमें यह भी लिखा कि, तुम भी कोठीके नौकर हो; और भी इसी प्रकार कटु तथा मर्मभेदी वचन लिखे हैं. इसका सबब यही है कि, राघौजीको जो १३,०००) की रकम मिली, वह हजारीमलजीके पास रक्खी गई. पाठको! भला आपही कहो इसमें हजारीमलजीने क्या बुराई की थी?

इसके अनन्तर उक्त विषयमें बहुत खटपट करनेसे हजारीमलजी और राघवजी इस अभिप्राय पर आये कि, जो कोठीकी रकम है, वह पांच स्थानोंके बड़े २ मुखियाओंकी कमैटीके नाम कर देवें तो, हमको झगड़ा करनेकी कुछ आवश्यकता नहीं है. उस वक्त आरावालोंने भी इसे मंजूर किया था. इस बातको हुए अनुमान ४ मास गुजर गये. परन्तु आराके किसी भी महाशय ने इसका निकाल नहीं किया. इसके पीछे इसका खुलासा करनेके लिये सर्व स्थानोंकी पंचायतियोंसे चिट्ठी भिजवाई गई. यह सब भाइयोंपर विदित हैं. परन्तु वह कुछ भी हां! न! का उत्तर नहीं देते. और मुकद्दमेमें कोठीका रुपया मुफ्तमें बरबाद कर रहे हैं. द्रव्य दूसरे स्थानमें पड़ा है. इसलिये आज हम पुनः प्रेरणा करते हैं कि आपने जो वचन सेठ हीराचन्द्रजीके समक्ष कहे हैं, उनको अमलमें लानेका प्रयत्न कीजिये आशा है, हमारा इतना लिखना निरर्थक न होगा.

हिसाब मंगानेके लिये हमने जो फार्म भेजे थे, उसके उत्तरमें मुनीम साहिबने लिखा कि हिसाब नहीं भेजा जा सक्ता. लाचार हमें आरावालोंको पत्र लिखना पड़ा. हर्ष है कि, बाबू मुंशीलालजी ने हिसाब भेजनेकी हमको आशा दी है. कृपा कर शीघ्र भेजें.

उक्त बातोंके अतिरिक्त इस विषयमें बहुत कुछ कहनेकी आवश्यक्ता थी. परन्तु स्थानाभावसे उन्हें त्याज्य करते हैं.

महुवा—महुवाके प्रबन्धकर्ता वहांके पंच हैं गतवर्ष इनको फार्म भेजते व कागज लिखते २ थक गये थे. इस साल भी ५।७ पत्र लिख चुके परन्तु कुछ उत्तर नहीं आया. इसका कारण सुननेमें आया है कि, वहांके पंचोंमें फूट पड़ी है. जिससे मन्दिरका प्रबन्ध बिगड़ गया है. जिसके पास देहराका पैसा है, उसीके पास पड़ा है. उसकी कोई संभाल नहीं करता है. एक पंचायतीको ऐसा करना कदापि योग्य नहीं है कि, बाहरसे कोई यदि पूछे, तो उत्तर न पावैं. और सम्मति करके कुछ प्रबन्ध भी नहीं किया जावै और चुपचाप रहै, आशा है, उक्त स्थानके पंच इस ओर ध्यान देकर फार्म भरकर भेजेंगे.

दहीगांव—इस तीर्थकी प्रबन्धकर्ता १२ भाइयोंके एक कमैटी है. सैक्रेटरीके पास हमने गतवर्ष भी फार्म भेजे थे. तथा पत्र लिखकर प्रेरणा की थी. और इस वर्ष भी की, परन्तु कुछ फल न हुआ. इस पीछे कई मेम्बरोंसे मुलाकात होनेपर भी

हमने समझाया पर हुआ कुछ नहीं, कमैटीकी बुद्धि विचित्र है. वह कहती है, दि० जैन प्रांतिक सभा बम्बईको हमसे हिसाब पूंछनेका क्या अधिकार है? परन्तु हम कमैटीसे पूंछते हैं कि आपको पैसाके लिये कमैटी करनेकाही क्या काम था.? उस पैसेपर आपका अधिकार है? क्योंकि वह तो धर्मादामें अर्पण की हुई जैनी मात्रकी पूंजी है—अजीमहाराज! एक जैनीके बच्चेको हिसाब पूंछनेका अधिकार है—आपकी कमैटी ऐसा मूर्खताका जबाब देकर कमैटीके नामको कलङ्कित करती है! अन्तमें निवेदन है कि वह भूल सुधार कर फार्म भरकर भेजनेके कर्तव्य को पालन करे. शेष आगे.

शा. चुन्नीलाल झवेरचन्द-मंत्री

दिगम्बर जैनपरीक्षालयके क्रममें त्रुटि.

प्यारे पाठको! इस लेखके शीर्षकको बांचकर चोंकना नहीं. इन कार्योंके जितने प्रबन्धकर्त्ता और सभासदगण हैं वे सब छद्मस्थ हैं. इस कारण उनके किये हुए प्रबन्धमें किसी प्रकारकी त्रुटिका रह जाना असंभव नहीं है. कोई भी छद्मस्थ जन्य कार्य अपनी प्रारंभ अवस्थामें निर्दोष तथा त्रुटि रहित नहीं होता. ज्यों २ उसकार्यमें प्रबन्धकर्त्ताओंको अनुभव प्राप्त होता जाता है त्यों २ उसमेंसे दोष और त्रुटि निकलती जाती हैं. बस यही कारण है कि, प्रजा और राजाके समस्त प्रबन्धोंमें प्रतिवर्ष कुछ न कुछ संशोधन हुआही करता है. हमारा परीक्षालय भी इन्हीं कार्योंमें गर्भित है. इस लिये इसकाभी संशोधन होना कुछ आश्चर्यजनक नहीं है. आज इस लेखमें इसही विषयपरपाठकोंसे कुछ निवेदन करना है. हमारे परीक्षालयकी ओरसे वैशाख शुक्लमें परीक्षा होकर जेठमें महाविद्यालय बंद रहता है. और आषाढ़ कृष्ण द्वितीयासे नवीन वर्षकी पढाई प्रारंभ होती है. इस हिसाबसे नवीन वर्षकी पढाई प्रारंभ होनेमें अभी अनुमान तीनमास बाकी है. सो महासभाके महामंत्री तथा परीक्षालयके मंत्री उपमंत्रियोंसे प्रार्थना है कि, इस अवधि के भीतर २ निम्नालिखित विषयोंका निर्णय करके प्रसिद्ध कर दें. महासभाके अधिवेशनके वास्ते इस को न छोड़ें. क्योंकि ऐसा करनेसे एक वर्ष और भी प्रबन्धमें त्रुटि रह जावेगी तथा अधिवेशन पर इस विषयका विचार करनेको समयही नहीं मिलता है.

प्यारे पाठको! हमारा पढ़ाईका क्रम चार भागोंमें विभाजित है, १ बालबोध, २ प्रवेशिका, ३ पंडित, ४ शास्त्री. इन चारों कक्षाओंमेंसे शास्त्री कक्षाके पढ़नेवाले विद्यार्थी अभी नहीं हैं. इस कारण इस कक्षाके क्रमका उल्लेख किसी आगामी अंकमें करेंगे. पंडित कक्षाके क्रमविषयक सम्मति. जैनमित्र चतुर्थवर्ष अंक प्रथममें छप चुकी है. सो उसको निकालकर देख लेना. प्रवेशिका कक्षाके विषयमें कुछ वक्तव्य है, सो आगे लिखेंगे. और बालबोध कक्षाकी परीक्षालयकी तरफसे परीक्षाही नहीं होती है. इस लिये उस विषयमें यद्यपि विशेष वक्तव्य नहीं है. तथापि इतना कहना आवश्यक है कि, यदि सब पाठशालावाले बालबोध कक्षामें भी एकसा क्रम रक्खें तो विद्यार्थियोंको विशेषोपकारक होगा.

इस कक्षाका क्रम यद्यपि जैनमित्र अंक प्रथममें छप चुका है. परन्तु उसके चतुर्थखंडके धर्मशास्त्र विषयमें "संस्कृतारोहण" की जगह "संध्यावन्दन" और "सहस्रनाम" यह दो विषय कंठ कराना विशेषोपकारक दीखते हैं. क्योंकि प्रथम तो संस्कृतारोहण धर्मशास्त्र नहीं है. इस कारण धर्मशास्त्रके कोठेमें कोई न कोई धर्मशास्त्रही होना चाहिये. दूसरे संस्कृतारोहणका विषय संक्षेपसे इसही खंडके व्याकरण विषयमें जो 'बालबोध व्याकरण' नियत है. उसके अन्तमें संग्रह कर लिया गया है. अब प्रवेशिका कक्षाके विषय कुछ लिखना है. वर्तमानमें प्रवेशिकाका जो कुछ क्रम चल रहा है उसका नकशा इस प्रकार है.

प्रवेशिकाका क्रम.

खण्ड.	काल.	धर्मशास्त्र.	व्याकरण.	काव्य	न्याय.
१	१ वर्ष.	रत्नकरंड श्रा० सान्वयार्थ.	षड्लिंग.	अमरकोष प्र० कांड.	०
२	,,	द्रव्यसंग्रह तत्वार्थ सूत्रसान्वयार्थ.	पूर्वार्द्ध.	अमरकोष तृ० कांड.	०
३	,,	स्वामी का० प्रे० अर्द्ध सान्व०	तिङन्त.	चंद्रप्रभका० ३ सर्ग	परीक्षामुखमूल
४	,,	स्वा० का० पूर्ण सान्वयार्थ.	पूर्ण.	चन्द्रप्रभु सर्ग.	आलापपद्धति.

इस ऊपरके नकशेके देखनेसे पाठकोंको वर्तमान व्यवस्थाका अच्छी तरह अनुभव हुआ होगा. अब यहांपर विचार करनेकी बात यह है कि, प्रथमही प्रथम बालककी बुद्धि निर्बल होती है, और व्याकरणमें उसको कुछ बोध नहीं है. इस कारण संस्कृत तथा प्राकृत धर्मशास्त्रोंका अर्थ सीखनेमें उसको बड़ा परिश्रम पड़ता है. और अधिक परिश्रम करनेपर भी उसको बोध अच्छा नहीं होता है. इस कारण एक उपाय नीचे दिखाया जाता है कि, जिससे चार वर्षकी जगहँ तीन वर्ष लगेंगे. बालकोंको परिश्रम भी कम होगा. और जो २ शास्त्र वर्तमान क्रममें पढाए वह सब पूर्णरीतिसे पढाये जावेंगे, वह उपाय यह है कि, प्रवेशिकाकी जो चार खंडकी चार परिक्षा होती हैं. सो चार खंडकी जगहँ तीनवर्षके लिये तीनही खंड रक्खे जायँ. पहिले दो खंडोंकी परीक्षा न ली जावे. पहिले दोखंडोंमें सब विषय कंठ कराये जावें, केवल व्याकरण अर्थसहित पढाया जाय, और तीसरे खंडमें पहिले कंठ किये हुए शास्त्रोंका अर्थ पढाया जाय. और अन्तके खंडमें सब शास्त्रोंकी परीक्षा दिलाई जाय. इसका नकशा इस प्रकार होना चाहिये.

प्रवेशिकाका नवीन क्रम.

खंड.	काल.	धर्मशास्त्र.	व्याकरण.	काव्य.	न्याय.
१	१ वर्ष.	रत्नकरंड और द्र सं. कंठमात्र.	पूर्वार्द्ध.	अमरकोष प्रथमकांड कंठमात्र.	परीक्षामुख कंठमात्र.
२	,,	तत्वार्थसूत्र और स्वामी का. प्रे. कं०	तिङन्त	अमरकोष प्रथमकांड कंठमात्र.	आलापपद्धति कंठमात्र.
३	,,	चारोंग्रंथ अर्थ सहित	पूर्ण.	चन्द्रप्रभ ९ स. अम. को. १-३ सार्थ	दोनोंग्रंथ सार्थ.

सज्जनोंका दास,
गोपालदास बरैया
मंत्री महाविद्यालय—मथुरा.

इन्दौरकी प्रतिष्ठा.

——:o:——

प्रियपाठकगण! इन्दौर नगरीमें यद्यपि अनेक धनाढ्य और धर्मात्मा सज्जन हो चुके हैं. जिनकी कीर्ति दशों दिशाओंमें व्याप्त हो रही हैं. परन्तु इस विकराल कलिकालकी निकृष्ट अवस्थामें हमारे श्रीयुत श्रेष्टिवर्य्य हुकमचन्दजी साहिबने निजोपार्जित चंचललक्ष्मीसे एक धर्मोत्तेजक पुन्यसंवर्द्धक कार्य्य करनेमें जो अपूर्व साहसकर अचलयश प्राप्त किया है, वह अवश्यही धनाढ्य और धर्मात्माओंको चिरस्मरण रहेगा.

आपने इसही इन्दौर शहरके पूर्व शियागंज और छावणी दोनोंके बीचमें एक नवीन मन्दिर (नशीयाँ) व एक धर्मशाला बनवाई है. जिसमें सैकडों जैनी तथा अन्य उत्तमवर्णीय असहायी जन स्थान पाकर सुखी होंगे. इस ही मन्दिरकी वेदी प्रतिष्ठा व बिम्बप्रतिष्ठाका महोत्सव करके आज हमको और सर्व जैनी मात्रको तथा अन्य दर्शक भाइयोंको आपने सुखी किया है.

इस प्रतिष्ठामें धूमधामके अतिरिक्त अनेक प्रशंसनीय धर्मकार्य किये गये हैं. जो सुवर्णमें सुगन्ध होनेकी कहावतको सिद्ध करते हैं. प्रथम तो आपने स्थानस्थानके विद्यार्थियों (बालक बालिकाओं) को जिनकी संख्या कमसे कम ४२० के थी, बुलाकर परीक्षा ले पारितोषक प्रदान किया तथा उनके अध्यापक जनोंका भी पूर्ण सत्कार किया.

दूसरे प्रांतिकसभा स्थापित करनेके लिये एक सभामें प्रस्ताव पास किये गये थे. यद्यपि अभीलों उक्त सभाकी स्थापना हो नहीं सकी है, तौ भी आशा की जाती है कि, उसके प्रेरक श्रीयुत दरयावसिंहजी सोधिया व पं. शिवशंकरजी शर्म्मा सरीखे जातिहितैषी पुरुषोंके प्रयत्नसे अवश्य परिश्रम व्यर्थ नहीं जायगा. इन महाशयोंका उद्योग अति प्रशंसनीय है.

तीसरे आये हुए महाशयोंके सत्कारके अतिरिक्त शहर भरके दुखित भुखित लूले लंगडे आदि ५००० असमर्थोंको संतुष्टकर मिष्टान्न भोजन दिया गया.

चौथा सर्वोत्तम कार्य यह हुआ कि, उक्त सेठजीने मंदिरकी रक्षा निमित्त (१५,०००) भंडारमें दिये. तथा ५१) महाविद्यालय मथुरा, ५१) संस्कृतविद्यालय बम्बईकी सहायतार्थ दिया. इसके अतिरिक्त शास्त्रचर्चा, धर्मालाप, उपदेशादिक बहुतसे श्लाघनीय कार्य किये गये हैं, जिनकी प्रथक् २ समालोचना करना बुद्धिसे बाहिर है. इन सर्व कार्योंके कारण उक्त सेठजीसाहिबको सहस्र धन्यवाद हैं. जिनके धर्मप्रेमसे यह मंगलीक उत्सव देखनेका शुभावसर प्राप्त हुआ.

इसके सिवाय श्रीयुत रेजीडेंटसाहिब बहादुरको कोटिशः धन्यवाद है कि, जिनकी कृपादृष्टि और न्यायशीलताके कारण प्रत्येक कार्योंमें यथायोग्य सहायता मिलती रही. यद्यपि आप एक भिन्नधर्मी पुरुष हैं, तथापि आपकी निर्म्मल दृष्टि सर्व प्रजामात्रको एकसा देखनेवाली है. तथा श्रीमान् होलकर सरकार सयाजीराव महाराजको अमित धन्यवाद है, जिनके राज्यमें सुरक्षित हो, इस नगरीमें यह कार्य होनेका अ-

वसर मिला, और जिनकी सुराज्य नीतिज्ञतामें अमात्यवर्गादि पदोंपर सुयोग्यपुरुष नियत हुए हैं.

श्रीमान् कारभारी साहिब राय नानकचन्द-जी, सी. आई. ई. को कोटिशः धन्यवाद हैं. जिनकी न्यायपरायणताके विषय जैसे हम अपनें देश देशान्तरोंमें प्रशंसा सुनते थे उससे भी अधिक इस अवसरपर प्रत्यक्ष देखी गई. आपकी न्यायशीलता और प्रजाहितैषिताका एक उदाहरण यही है कि, आपने राज्यभरमें नागरी भाषाके प्रचार करनेकी आज्ञा जारी कर दी है. यद्यपि अभी अर्जियां आदि हिन्दी और मराठी दोनों भाषामें ली जाती हैं. तोभी शनैः शनैः इसी भाषापर दृष्टि दी जायगी. यही गुण आपके प्रजाहितके परिणामोंके आदर्श हैं, ऐसे सुयोग्य शासनकर्ताओंकी प्राप्ति भाग्यवान्प्रजाहीको हो सक्ती है. अन्यथा शासनकर्त्ताओंके महाअत्याचारोंसे कहांकी प्रजा दुखित नहीं है, यह आपहीके शासनका प्रभाव है कि, द्वेषभाव छोड़कर सर्व धर्म और सर्व जातियोंनें हमारे साथ भ्रातृ भावसे वर्ताव किया. समस्त जैन प्रजा आपकी इस बुद्धिकी प्रशंसा करती वैभव वृद्धिके निमित्त श्रीजीसे निवेदन करती है.

श्रीमान् जुडीशलमेंबर लाला प्यारेलालजी साहिब बैरिष्टर एट्लाको भी बार २ धन्यवाद है, जिन्होंने हर वक्त यथाशक्ति सहायता पहुंचाकर अपने कर्तव्यका पालनकर हमे सुखी किया.

तथा श्रीमान् फौजदार साहिब व पंडित उत्तम-नाथजी बी. ए. को अनेकानेक धन्यवाद हैं जो रात्रिको रात्रि और दिवसको दिवस न गिनकर हरप्रकारके मुखसम्बन्धी प्रबन्धोंके करनेके लिये तनमनसे उपस्थित रहे. और आपहीकी कृपासे सम्पूर्ण कर्मचारी गण आदेशानुसार सुप्रबंधमें दत्तचित्त रहे.

और भी उन सर्व कार्यकर्त्ताओंको धन्यवाद है जो प्रत्येक कार्यमें भ्रातृत्व दिखलाते रहे.

अन्तमें सम्पूर्ण विद्वज्जन व सज्जन मंडलीको धन्यवाद है. जिसने पधारकर प्रतिष्ठोत्सवको पूर्ण धर्मोत्सव बनाकर प्रजामात्रमें धर्मप्रेम बढ़ाया.

प्रथम ब्रह्मचारी श्रीयुत शिवलालजी, दौलतराम-जी, भागीरथजी जवाहिरलालजी, दूसरे न्यायदिवाकर पं. पन्नालालजी प्रतिष्ठाचार्य्य, तीसरे पं. शिवशङ्कर शर्मा बड़नगर, पासू गोपालशास्त्री शोलापुर पं. बालाबक्सजी धार, पं. बलदेवदासजी लुहाड़ा, भाई दरयावसिंहजी, कस्तूरचन्दजी बाकलीवाल, पंनालालजी गोधा, श्रीयुत सेठ नेमीचन्दजी अजमेर आदि जो अनेक विद्वान धनवान जन उपस्थित थे, उनको धन्यवाद है. जिन्होंने अपने ग्रहकार्य छोड़ मेला मंडलीको सुशोभित कर धर्म प्रभावना बढ़ाई.

लेख समाप्त करनेके अन्तमें पुनः सेठ हुकम-चन्दजीको धन्यवाद दिये बिना नहीं रह जाता. जिनके उत्तम सराहणीय प्रबन्धसे यात्रियोंको डेरा, तम्बू, बर्तन, ईंधन आदि उपयोगी पदार्थोंके समयपर मिलनेके कारण कोई कष्ट नहीं हुआ.

प्रतिष्ठाके विशेष कार्योंके समाचार यदि हो सकैगा तो पाठकोंको आगामी अंकमें सुनानेका प्रबन्ध करेंगे.—

जाति हितेच्छु.
धन्नालाल काशलीवाल इन्दौर.

पञ्चरत्न.

(नाथूरामप्रेमी दि० जैनलिखित.)

(१)

प्रिय वाचक गणो ! आप इस बातसे अजानें न होंगे कि, हमारी जैनजातिभी अन्य जातियों की देखादेखी अवनतिकी एक गव्हर गुफामेंसे निकलनेको प्रयत्नशील हुई है. जब इसके कानों की झिल्ली चहुंओरसे आई हुई " उन्नति २" की उच्चध्वनिकी प्रतिध्वनिसे भर्राने लगी है, जब कुम्भकर्णकी निद्राकोभी तोड़नेवाले करतूतोंके विकट शब्द सर्व संसारमें व्याप्त हो रहे हैं, जब नये २ ज्ञान विज्ञानोंके प्रकाशसे आंखें तिरामिराती और बुद्धि चकराती है, तब हमारी जातिमें उद्योग जीवनका सद्भाव हुआ है. जब रेल, तार, धुआंकश, आकाशयान, विद्युत आदि आश्चर्यजन्य पदार्थोंके आश्रयसे अन्य पुरुष क्षणभरमें नेत्रोंके सन्मुख नानाकौतुक दिखानेको समर्थ हुए हैं, तब हमारी जाति एक वृद्धा स्त्रीकी तरहँ एक दिनमें डेड़ कोस चलनेको एक माहमें एक कानसे दूसरे तक खबर पहुंचानेके, विज्ञान नेत्रोंके तारे खद्योतके समान चमकानेको समर्थ हुई है. प्रारंभमें जब हमने इसकी गति देखीथी. आशा की थी कि, वृद्धा बहुत वृद्धि करैगी पर वह कल्पना हमारी मिथ्याही निकली. कारण हम देखते हैं यह महाराणी अब यथार्थमार्ग तथा अपनी गतिको भूलकर "पुतरैमुर्ग" की चाल चलने लगी हैं. और यदि यही हाल रहा तो, वह शीघ्रही शिथिल हो अपने इच्छित फलको नहीं पा सकेंगी. जिस गुहामेंसे हमारी जातिने निकलनेका प्रयत्न किया है वह कैसी विषम है, इसका वर्णन कठिन है. क्योंकि बहुतेरे लोग तो इसे कल्पना मात्रही कहते हैं. जिसप्रकार नास्तिकवादी अनुमानादि प्रमाणोंको न मानकर अदृश्य होनेके कारण जीवादि तत्वोंका अभाव मानते हैं, उसी प्रकार हमारी इस गुहाकी स्थिति है. इस गुहाका मार्ग अन्य गुहाओंकी तरह आते जाते समानरूप दुर्लंघ्य नहीं है. क्योंकि जब हमारी जातिने शनैः २ अविद्या, अविचार, अनैक्यता आदि कारणोंसे इसमें प्रवेश किया था. तब प्रयास नामको नहीं उठाना पड़ा था. बल्कि कोई २ तो जानही न सके थे कि, क्यासे हो गया. परन्तु इसमेंसे निकलना सुमेरु गिरिको उखाड़ कर फेंक देने सरीखा कठिन हो गया है. इसमें आनेजानेके जो दो मार्ग हैं वह " उन्नति " और " अवनति " इन दो नामोंसे विख्यात हैं. यह दोनों घोर अज्ञान अंधकारसे व्याप्त हो रहे हैं. हमारी जाति उसी स्थानमें आलस्य प्रमादकी शय्यापर सोई हुई अविचार, अविवेकके खुर्राटे लगा रही थी; और उसी समय झिल्लीको तोड़नेवाले अन्य जातियोंके उन्नतिरूप शब्द सुनकर उद्योगमें दत्तचित्त हुई है. तथा अभी उसी गुहाके मार्गपर चल रही हैं.

जब यह वृद्धा उक्त मार्गको पूर्ण करनेमें बहुत खेदखिन्न होरहीथी. और अपने कुटम्बियोंकी दशा तथा अपनी अशक्तितापर विलाप कर रही थी. किसी महात्माने कृपालु होकर इसको एक सुन्दर सन्दूक दिया था, और कहा था कि इसमें रत्नही रत्न भरे

१ एक पक्षी होता है. जो चक्कर खाकर दौड़ता है.ऐसे मार्गसे.

हैं. यदि तू चाहेगी तो इसके आश्रयमे अपने मार्गको शीघ्र पूर्ण कर चिरसुखी हो जावेगी. वृद्धाने बाक्सको खोला तो उसके भीतर और भी कई छोटे मोटे बाक्स निकले. उन्हें वृद्धाने अपने सहायक जनोंको दे दिया. एक बाक्स उसमेंसे जो हमारे पास आया खोला गया तो, पंच रत्न निकले. वह रत्न सर्वोत्कृष्ट और अमूल्य थे. परन्तु दीर्घकालसे पड़े रहनेके कारण वह मलिन हो रहे हैं. उनमें कर्दम बहुत चढ़ रहा है. उन्हींके साफ करनेका प्रयत्न करना, इस हमारे लेखका मुख्य उद्देश है.

पाठको! आपकी बुद्धि बहुत चक्करमें पड़ गई होगी. अतः उक्त वार्ताका आशय सुन लीजिये! **दिगम्बर जैनधर्म संरक्षणी महासभा** यही हमारा उक्त बड़ाबाक्स और उसमेंसे निकले हुए अन्य छोटे २ बाक्स प्रान्तिकसभा लोकलसभा आदि है. जिसमेंसे **दिगम्बर जैनप्रान्तिकसभा बम्बईका** भी एक बाक्स है. इसमें ५ रत्न निकले हैं, और उनकी पालिश करनेकी आवश्यकता है. वह पांच रत्न कौन २ से हैं?

१ जैनमित्र, २ संस्कृतविद्यालय, ३ उपदेशकभंडार, ४ सरस्वतीभंडार, ५ तीर्थक्षेत्र यही हमारे परमोज्ज्वल सर्व मनोरथपूर्णकर परम प्रामाणिक महात्माके दिये हुए पंच रत्न हैं, और आज इन्हींकी प्रथक २ महिमा वर्णन करनेकी प्रतिज्ञाकर 'ओंनमः सिद्धेभ्यः' करते हैं.

जैनमित्र.

साम्प्रतमें संसारमें जितनी आश्चर्यजनक उन्नति हुई हैं, जितनी कलाकौशल्यमें कुशलता हुई हैं, जितनी पदार्थविज्ञानमें विशेषता हुई है जितनी आश्चर्यजनक उद्योग हुए हैं, और इन सबका प्रगट होकर प्रचार हुआ है, यह सब न्यूजपेपरोंकी महिमा है. जिस धर्ममें जिस जातिमें समाचार पत्रोंका अधिक आदर हुआ है वह जाति वह धर्म उन्नतिके शिखरपर आरूढ हो रहे हैं. उनके वशमें मनुष्य एक बार अखिल भूमंडल हो जानेकी संभावना करते हैं. और यह कहना कुछ अनुचित भी नहीं है! विलायतमें समाचार पत्रोंका इतना आदर है. कि कुली लोगभी जो मजदूरी करके उदर पोषणा करते हैं. प्रायः समाचारपत्रोंके ग्राहक हैं एक रोटीके भूखे रहकर समाचारपत्र पढ़ते हैं. और फिर उसीके जरिये अपनी रोटीभी पैदाकर सकनेका उद्योग करते हैं. परंतु शोकके साथ कहना पड़ता है कि, हमारे भारतवर्षमें और विशेषकर हमारी जैन जातिमें इनका बहुत कम आदर है. हमारे भाइयों को महिने भरमें पेपरके १६ पेज पढनेकोभी अवकाश नहीं मिल सक्ता.

"चौदह लाख जैनियोंके बस्तीमें एक भी दैनिकपत्र नहीं है. एक भी सप्ताहिकपत्र नहीं है" जब हम ऐसा अपने किसी मित्रके मुखसे सुनते हैं, अत्यन्त दुःखी होते हैं. हाय! चौदह लाख जैनियोंके बीचमें चार भी ऐसे पत्र नहीं है. जो यथार्थमे समाचारपत्र कहलाने योग्य हों. चार भी ऐसे सम्पादक नहीं है जो निकलते हुए नाम मात्रके पत्रोंको पत्र कहलानेके योग्य कर सकें, बडे खेदकी बात है. प्यारे भाइयो! आपके लिये यह बड़ी लज्जाकी बात है. आजकल

कितने पत्र निकलते हैं. गिन तो लीजिये! (हिन्दी) १ जैनपत्रिका. २ जैनगजट. ३ जैनमित्र ४ जैनहितैषी. (मराठी) ५ जैनबोधक, ६ जिनविजय, ७ जैनमार्तंड, (गुजराती) ८ जैन धर्मप्रकाश, ९ जैनहितेच्छु, १० जैनभास्करोदय—देखिये दशहोगये. जिनमेंसे नं. ८-९-१० स्वेताम्बर सम्प्रदायके होनेसे हमारी सख्याहीमें नहीं आसके. नं. ७ कमाऊपूत हैं उन्हें किसीकी उन्नति अवनतिसे गर्जही नहीं है. नं. ४ एक उत्तम पत्र होनेपर भी निद्राव्यस्त हो रहा है. नम्बर १ की लीलाही निराली है. वह विधवाविवाहको भी शास्त्र विहित बतलानेका हौसला रखते हैं, भाषाभी परमोत्तम लिखते हैं. साथ २ में अपना रोजगारभी करते हैं. अब रहे अवशेष ४ जिनमेंसे दो केवळ मराठी जाननेवाले भाइयोंको लाभ पहुंचाते हैं. एक जैनबोधक जो १२ वर्षमे निकलता है. दूसरेका उदय वर्तमानहीमें दक्षिण महाराष्ट्र जैनसभाकी ओरसे हुआ है. यह दोनों पत्र प्रायः उत्तम हैं. इन्हें श्रीजी चिरायु करें. इस प्रकार खनौनी करनेसे केवल आपके जाने हुए दो पत्र अवशेष रहे. जिनमें एक तो पाक्षिक और दूसरा मासिक है.

जिन महाशयोंको इन दोनों पत्रोंकी आन्तरिक अवस्थाका अनुभव होगा, जिन्होंने इनके वार्षिक आयव्ययका लेखा कभी पढा होगा. जिन्होंने सालके अन्तमें वी. पी. लौटानेवालोंकी संख्या व नाम पढे होंगे, वह जान सक्ते हैं कि जाति इनका कहांतक आदर करती है. और आर्थिक सहायता करती है. जैनमित्रको जाने दीजिये. एक जैनगजटकी ओर दृष्टि दीजिये. अपनी आठही वर्षकी अवस्थामें ग्राहकोंको कृपा तथा जगतके आदरसे वह कितनी कैंचुरी बदल चुका है. कितने सम्पादकोंके हाथसे सम्पादित हो चुका है. पहिले सप्ताहिक था, सुन्दर रूपमें सार गर्भित लेखोंसे सुसज्जित आता था. अब पाक्षिक निकलता है. आरासे सम्पादित हो लखनौके टाइपमें प्रकाशित होता है—सारांश यह कि वर्तमानपत्रोंकी अवस्था अच्छी नहीं है. इसका मात्र कारण ग्राहकोंका अनादर है.

शेषमग्रे.

भूलसंशोधन.

गतांकमें इन्दौरकी प्रतिष्ठाके विषयमें जो गर्भपातादि होनेके उपद्रव होनेकी खबर सुनी थी, वह तलाश करनेसे ठीक नहीं निकली. ऐसी ही गप्प उड गईथी. और इसीपरसे एक सम्वाददाताने हमको सूचना दीथी. हर्षका विषय है कि, वह झूट निकली. हां मन्दिरकी छत टूटनेसे अचानक दो आदमीयोंके प्राणघात होनेकी बात सच है. जो आदमी घायल हुए थे, श्रीजीकी कृपासे अच्छे होते जाते हैं. अतः भाइयोंको प्रथम अंकमें प्रकाशित गर्भपातादि उपद्रवोंकी बात सच न समझना चाहिये.

धूर्तोंसे सचेत रहना !

बलवन्तसिंह नामका कोई व्यक्ति देवबन्द गया. वहांके भाईयोंको प्रतिमा दिखलाई और कहा कि, हम इन्दौरकी प्रतिष्ठामें प्रतिष्ठित कराके लाये हैं. वहांके एक भाईने इन्दौरको पत्र लिखकर यह बात दरयाफ्त की तो; वह सब धूर्तता-

ही निकली. वहांसे कोई भी प्रतिष्ठा करके नहीं लाया था, सो भाईयोंको सचेत किये देते हैं कि, ऐसे धूर्तोंसे हमेशा बचते रहना. वह अवश्यही कहींकी प्रतिष्ठित प्रतिमा चुराकर लाया होगा. देवबन्दके भाईयोंको इसकी खोज करना थी. दूसरे सर्व जैनी मात्रको इस बात परभी ध्यान रखना चाहिये कि, प्रतिष्ठित प्रतिमाकी खरीदविक्री नहीं होती, ऐसा करना अयोग्य है. यह समाचार हमको पं० धन्नालालजी काशलीवाल द्वारा प्राप्त हुए हैं.

विविध समाचार.

उपदेशककी रिपोर्ट—गतांकमें पं. रामलालजी उपदेशकके दौरेके समाचार ता. २२ जनवरी तकके प्रकाशितहो चुके हैं. इसके बाद गुलबर्गामें जाकर सभाकर भाईयोंको स्वाध्यायादिकी प्रतिज्ञा लिवाई. ता. २९ को शोलापूर व मोहाल जाकर वहांसे इन्दौरकी प्रतिष्ठा करते हुए अपने ग्रह छुट्टीपर गये हैं. इन्दौरकी प्रतिष्ठाकी रिपोर्ट उन्होंने भेजी है. परन्तु उसके समाचार प्रथक प्रकाशित हो जानेसे नहीं छापी गई, दौरा आरंभ होनेपर फिर रिपोर्ट प्रकाशितकी जावेगी.

आवागमनका सुबूत—सहयोगी जैनगजटके एक संवाददातासे ज्ञात हुआ कि, मौजा शमसाबादमें हीरामन सुनारका पुत्र मथुराप्रशाद २१ वर्षकी उमरमें गंगामें स्नानकरते समय डूबकर मरगया था, उसी समय इमादपुरमें भुग्गा नामक कहारके एक पुत्र उत्पन्न हुआ. जिसकी, आयु अब पांच वर्षकी है. वह अपने पूर्वभवके सब हाल सुनाता है. मैं अमुक स्थानका रहने वाला हूं. मेरे अमुक मित्र हैं. मेरा अमुक पिता हैं आदि, पिताको स्त्रीको सन्मुख आतेही पहिचानलिया, उसके दर्वाजेपर सैंकड़ों आदमियोंकी भीड़ लगी रहती है. जिसको संदेह हो जाकर परीक्षा कर सक्ता हैं. लडका मौजूद है. क्यों भाइ नास्तिको! प्रत्यक्षके लिये भी क्या प्रमाणकी आवश्यक्ता है?

गवर्नमेन्टसे सत्कार—श्रीयुत रायसाहिब बाबू द्वारकाप्रशादजी जैनीको महाराजा सप्तम एडवर्डके राज्याभिषेकके समय सरकारकी ओरसे कोरोनेशन सर्टिफिकट दियागया है. यह सर्टिफिकट हरएक समयमें हरएकको नहीं प्राप्त होता राज्याभिषेकके समयमेंही बडे २ भारी कार्य करनेकी यादगारीमें मिलता हैं. आपको रायसाहिब का खिताब पूर्वमें मिलचुका है.-आप एक सज्जन धर्मात्मा पुरुष हैं. आपके सन्मानसे हमको बडा हर्ष हुआ हैं.

मुनपतमें बिम्बप्रतिष्ठा—मिती वैशाख वदी २ से ९ तक अर्थात् ता. १२ अप्रैलसे १७ तक पंचकल्याणक प्रतिष्ठाका उत्सव होगा नयामन्दिर जो बनवाया गया है, उसीकी प्रतिष्ठा है. धर्मात्मा भाइयोंको उक्त उत्सवमें अवश्य पधारना चाहिये, और प्रभावनांगके साथ २ विद्यावृद्धि आदि विषयोंकी चर्चाकर जातिका उपकार करना चाहिये. प्रतिष्ठाकारक सेठजीका लक्ष्य इस ओर होनेकी आवश्यक्ता है. मुनपतको जानेके लिये दिल्लीसे ।-)। रेल किरायेके लगते हैं.

रथयात्रा मेला लखनौ—चैत्र वदी १० सम्बत ५९ ता. २३ मार्चके दिन रथोत्सवका

आनन्द होगा. तथा दिगम्बर जैन प्रान्तिक सभा अवध व लोकल सभाका वार्षिक अधिवेशन ता. २४ व २५ को होगा. आशा है कि प्रान्तिक सभा अपनी कार्यकुशलतासे सबको हर्षित करैगी.

सरस्वतीभंडार— पं. पन्नालालजी वाकलीवाल बंगाल प्रदेशसे दौराको निकले हुए हैं. वह पश्चिमोत्तरदेश राजपूताना गुजरात आदिके मुख्य २ स्थानोंके सरस्वती भंडारोंकी सम्हाल करेंगे तथा उनका सूचीपत्र बनावेंगे. सो भाइयोंसे निवेदन है कि, उन्हें योग्य सहायता देवें. यद्यपि यह अपने निजीकार्यके लिये दौराको निकले हैं. तथापि दिगम्बर जैनप्रान्तिक सभा बम्बईकी आज्ञासे उन्होंने यह कार्य उपकारबुद्धिसे करनेकी प्रतिज्ञा की है.

विधवाविवाहसे परहेज— हर्ष है कि, जैनपत्रिका अब अपनी विधवा भगनियोंका विवाह करनेकी चर्चासे परहेज करने लगी है. उसने ५।६ माहसे उन बिचारियोंकी सुधिही नहीं की है. यद्यपि उसने अभीतक अपना पक्का श्रद्धान तो प्रकाशित नहीं किया है. परन्तु संभव है कि, वह इससे सचमुच हानि समझकर बैठ रही हो,— जैनपत्रिकाके ग्राहकोंको बधाई है.

दिगम्बर जैनसभा कलकत्ता— इस सभाकी नियमावली सभाके सम्पादक द्वारा हमको प्राप्त हुई है. नियमावली सुन्दर मनोहर टाइपमें प्रकाशित हुई है, सभाके कार्यकर्त्तागण उत्तम २ पुरुष ज्ञात होते हैं. जिनके द्वारा सभाकी कीर्ति चहुँ ओर फैलनेंकी आशा की जाती है. श्रीजीकी दयासे यह सभा चिरायुहोवे ऐसी हमारी कामना है. बंगाल प्रान्तमें सभा आदि कार्योंकी बड़ी अवश्यक्ता थी. उस प्रान्तका तथा हिंदुस्थानका कलकत्ताही बड़ा नगर हैं. यहां एक पूर्ण प्रभावोत्पादक कार्यकुशल सभाकी आवश्यक्ता थी. नियमावलीको देख यह त्रुटि पूर्ण होनेंकी आशा की जाती है.

छोटा माधोराजपुर—टोंकसे २२ कोस दक्षिणमें है. यहां ५६ घर जैनियोंके हैं. छगनमल राजमल सोनीजी लिखते हैं कि, यहां १ शिखरबंद मन्दिर हैं. प्रति चतुर्दशीको सभा होती है. सेठ हरमुखराय अमोलकचन्दजी बड़जात्या तहसीलदारनें ५) मासिकपर एक ब्राम्हण बालकोंके पढ़ानेको रक्खा है. ११ लड़के ५—६ लड़कियां पूजापाठ करती है. धर्मप्रेम न्यून हैं. शास्त्रसभामें कोई नहीं आता. ९—१० स्त्रियें आती हैं. महासभाकी ओरसे उपदेशक आनेंकी आवश्यकता है.

प्रार्थना.

विदित हो कि इसवर्ष दिगम्बर जैन परिक्षालयसे वैशाख शुक्ल ८ से परीक्षा होगी. सो सर्व जैनपरीक्षालय व पाठशालाओंके अध्यापकों प्रति तथा प्रबंधकर्त्ताओं प्रति निवेदन किया जाता है कि, चैत्र कृष्णा १५ तक अपनी पाठशालाओंसे परीक्षार्थ विद्यार्थियोंके नामादिक लिखकर भेज देवें. जिन महाशयोंको फार्म चाहिये तथा परीक्षालयसम्बन्धी कार्य निश्चित करना होवे; वह परीक्षालयके मंत्रीसे पत्रव्यवहार करें.

गौरीलाल मंत्री.

दि. जै. परीक्षालय देहली.

प्राचीनप्रतिमा—रियासत टोंकके किलेके मैदानमें अतिमनेज्ञ दश ग्यारह प्राचीन जैनप्रतिमा जमीन खुदवानेपर निकली हैं. टोंकके नव्वाब बहादुरका विचार उन्हें प्राचीन कारीगरीके स्मरणार्थ विचित्रसंग्रह (अजायबघर) में रखनेका है. हमारी सभाने, वहांके भाइयोंने, तथा अन्य २ स्थानोंके भाइयोंने इसके ऊपर नामदार नव्वावसे प्रार्थना की है. आशा है कि, उदार महाराज अपनी प्रजाकी पुकारको सुनेंगे—

श्री जिनसेन विद्यालय कोल्हापुर—यहांके प्रथमवर्षकी रिपोर्ट देखनेंमे इसके स्थापनकर्त्तोओंकी कार्यकुशलताकी प्रशंसा प्रगट होती है. एक वर्षमें विद्यालय स्थापनकर्ता श्री जिनसेन महासभाकी तीन बैठकें हुई हैं दूसरी बैठकमें एकदम १८,९३३) का ध्रुवद्रव्य एकत्र होगया था. तीसरी बैटकमें १६३) ध्रुवफंडमें जमा हुए. और ८९) वार्षिक सहायताकी स्वीकारता हुई. इस प्रकार आटआना सैकडा व्याजसे अनुमान १००) मासिककी आय इस विद्यालयमें होगई है. इस वर्षमें १० विद्यार्थियोंनें इसके द्वारा राज्य तथा धर्मविद्याकी शिक्षा पाई है. धन्य है! दक्षिणके भाइयोंके परिश्रमको। इस सभाके सैक्रेटरी. कल्लापादेवराव मगदुम—हैं, जो नांदणी (कोल्हापुर) में रहते हैं.

स्वेताम्वरीयसज्जन—लाला जयमल्लसिंहजी अग्रवाल स्वेताम्बरआम्नायी मेरठ जिलाके हैं. आपने गन्नौर जिला देहलीके दिगम्बरी भाइयोंको परमोत्तम उपदेशरूप व्याख्यान देकर धर्ममें तत्पर किया है. आपने वहां पूजन, प्रक्षाल, स्वाध्याय, शास्त्रसभादिकोंका पूरा २ प्रबन्ध कराया है. यह उनके निष्पक्षपातीपन तथा सच्ची उदारताका परिचय है. यदि ऐसेही सर्व भाई निष्पक्षपात हो वर्ताव करें तो, क्यों व्यर्थके झगडोंमें लाखोंरुपयोंपर पानी फेरा जावे पर खेद है. कि स्वेताम्बरी भाइयोमें इस स्वाभाविक सज्जनताका अभावसा देखा जाता है. भाइयो! "चारजनें गह चारहु कोनें, सुमेरु उठान चहें तो उठैगो" इस कहावतपर विचारकर ऐक्यता करो!

मालवाके पंचोंका प्रस्ताव—मिती माह सुदी ३ को इन्दौरकी प्रतिष्ठाके शुभावसरपर मालवाके धर्मात्मा भाइयोंनें इस प्रकार प्रस्तावपास किया—कि. "श्री सिद्धवरकूट तथा बडवानी क्षेत्रके विषय हम समस्तपंचोंनें इन्दौरकी प्रतिष्ठापर ऐसा ठहराव किया. कि जिस प्रकार बैनेडा तथा मक्षीजी की सहायताका प्रबन्ध प्रथमसे बंध रहा है. उसी प्रकार उक्त क्षेत्रों (सिद्धवरकूट—बडवानी) की सहायतार्थ मालवा प्रान्तके प्रत्येक जैनीके घर पीछे प्रत्येक क्षेत्रके लिये १), ॥) ।) चन्दा दिया जावे" उक्त प्रस्तावको सुनकर परम हर्ष होता है. इस ठहरावके ऊपर समस्त मालवा प्रान्तके मुखिया पंचोंकी सही लीगई है. जिससे उसकी दृढतामें किसी प्रकारका सन्देह नहीं किया जा सक्ता—

संस्कृत विद्याभिलाषियोंको सूचना

आवश्यकीय विज्ञापन.

हमको महाविद्यालयमथुरा के वास्ते एक ऐसे महाशयकी आवश्यक्ता है कि, जो दिगम्बर जैनधर्मके पालक हों. आयु २९ वर्षसे कमन हो, चालचलन उत्तम हो, अंग्रेजीमें कमसे कम एन्ट्रेंस पास हो. हिन्दी लिखना और पढ़ना जानते हों. काम अंग्रेजी और गणितकी अध्यापकी तथा बोर्डिंग सुपिरिन्टेडेन्टीका लिया जायगा. वेतन योग्यतानुसार २०) तक दिया जावेगा. पत्रव्यवहार नीचे लिखे पतेसे करना चाहिये.

गोपालदास बरैया.
ठि. सेठ नाथरंगजी गांधी
बेलनगंज—आगरा.

इसे जरूर पढ़िये !

जो महाशय जैनमित्रकी कापियोंका संग्रह नहीं करते हैं, तथा रद्दीमें डालदेते हैं, उनसे प्रार्थना है कि, वह अपनी रद्दीमेंसे खोजकर प्रथमवर्ष १, ९ व द्वितीय वर्षअंक १ हमारेपास शीघ्रही भेजदेवें. जो महाशय भेजेंगे हम उनको बदलेमें एक २ उत्तम पुस्तक देंगे.

जौहरी माणिकचन्द पानाचन्द.
जौहरी बाजार—बम्बई.

और इसे भी!

भाइयो! जैनमित्रके चौथे वर्षके अंक ७ निकल चुके. अर्थात आधेसे अधिक वर्ष व्यतीत होगये हैं. आप लोगोंका रुपया प्रायः तृतीय वर्षका मूल्य शीघ्र भेजिये. देर न कीजिये! इस सूचनाको पढ़ते ही मनीआर्डरका फार्म भरनेका परिश्रम कीजिये!

जिन महाशयोंको हिसाबका स्मर्ण न हो वह पत्र लिखकर दरयाफ्त करलें.

सम्पादक.

सभासदोंको सूचना.

हमारे कितने एक सभ्य सभासदोंने भी वेल्यूपेबिल वापिसकर दियेथे. परन्तु उनके नाम हमने अभीतक प्रकाशित नहीं कियेथे. और न प्रकाशितही करना चाहते हैं. अतः वह अपनी २ फीस भेजनेकी कृपा करें. जैनमित्रके लौटानेसे सभासदी अस्वीकार नहीं समझी जावेगी. अस्वीकार करनेवाले महाशयोंको इस्तीफा देना चाहिये.

विद्यालयके सहायकोंसे प्रार्थना.

संकल विद्यालयभंडार बम्बईकी सहायतार्थ जो तीन चिट्ठे हुएथे (१ आकलूज २ बम्बई रथोत्सव, ३ कुंथलागिरीमें) उनमेंसे अनुमान ५००) वसूल नहीं हुए हैं. इन रुपयोंके विषय हम सम्पूर्ण सहायकोंको तीन२ कार्ड दे चुके हैं और आज पुनः प्रार्थना करते हैं, कि उक्त धर्मकार्यके द्रव्यको शीघ्रही भेजकर कृतार्थ कीजिये. जिससे आपका द्रव्य देना सफल हो.

क्लार्क, दि० जै० प्रा० सभा,
बम्बई.

Registered No. B. 288.

४ अङ्का बराबर जैनमित्र ही मिलावैंगो ॥

१४

श्रीवीतरागायनमः

जैनमित्र.

जिसको

सर्व साधारण जनोंके हितार्थ,

दिगम्बर जैनप्रान्तिकसभा बंबईने

श्रीमान् पंडित गोपालदासजी बरैयासे सम्पादन कराके

प्रकाशित किया.

जगत जनहित करन कँह, जैनमित्र वरपत्र ।
प्रगट भयहु-प्रिय! गहहु किन? परचारहु सरवत्र ! ॥

चतुर्थ वर्ष } वैशाख, सं. १९५९ वि. { अंक ८ वां.

नियमावली.

१ इस पत्रका उद्देश भारतवर्षीय सर्वसाधारण जनोंमें सनातन, नीति, विद्याकी, उन्नति करना है.

२ इस पत्रमें राजविरुद्ध, धर्मविरुद्ध, व परस्पर विरोध बढ़ाने-वाले लेख स्थान न पाकर, उत्तमोत्तम लेख, चर्चा, उपदेश, राजनीति, धर्मनीति, सामायिक रिपोर्ट, व नये २ समाचार छपा करेंगे.

३ इस पत्रका अग्रिमवार्षिक मूल्य सर्वत्र डांकव्यय सहित केवल १।) रु० मात्र है, अग्रिम मूल्य पाये बिना यह पत्र किसीको भी नहीं भेजा जायगा.

४ नमूना चाहनेवाले॥) आध आनाका टिकट भेजकर मंगा सक्ते हैं.

चिट्ठी व मनीआर्डर भेजनेका पता:—

गोपालदास बरैया सम्पादक.

जैनमित्र, पो० कालबादेवी बम्बई—

३ भारी भ्रमभूरि हिये भ्रमत भयावनेजे, तिन्हैं शूर लेखन सों चूरकैं घटावैंगो । बृहत विपक्षी पक्षी, सन्देह अम्बर के—

☞ चोखे चाव चतुर चकोर चाहकन हेतु, चन्द्रसो पियूष चैन पावन पठावैंगो । अंधकार अविचार अबुधी, अन्मेल आदि,

॥ [illegible] ॥

कर्नाटक प्रिंटिंग प्रेस, गिरगांव, मुंबई.

श्री सम्मेद शिखरजी सबन्धी समाचार.

श्री सम्मेद शिखरजीपर सभाकी ओरसे भेजे हुए क्लर्ककी ओरसे इस प्रकार समाचार प्राप्त हुए हैं कि, "श्री शिखरजीकी उपरैली कोठी (बड़ी कोठी) का प्रबन्ध जो प्रथम ग्वालियरके श्री भट्टारकजी महाराजके अधिकारमें था आराके तेरह भाइयोंकी एक पंचायतको उन्हीं (भट्टारकजी महाराज) की मर्जीके अनुसार स्वाधीन करनेमे आया था, जिस तरह सज्जनोकी कमैटी नियत की गई थी. उनमेंसे अब केवल एकही जीवित है. और इसी कारण जैसा प्रबन्ध रहनेकी आशा थी वैसा न रहकर उसमें अब बहुत त्रुटिया दृष्टिगोचर होने लगी हैं. ऐसा सुनकर ग्वालियरकी गद्दीके वर्तमान भट्टारकजी शिखरजी आये है और अब उनका विचार है कि, उपरैली कोठीका प्रबन्ध हिंदुस्थानके सम्पूर्ण मुखिया भाइयोंकी एक कमैटी कर उसे सोंप दिया जावे. और यह विचार परमोत्तम होनेसे सर्व सुज्ञजनोंको स्वीकार है. इसलिये प्रथम जिसप्रकार ग्राम २ में कमैटी करके चिट्ठियों द्वारा आरावालोंको सूचना दीगई है. तथा जिसप्रकार आरावाले पहिले शेठ हीराचन्द नेमीचन्दजीके सन्मुख स्वीकार कर चुके हैं. इसी प्रकार अब आरावाले भाई प्रतिष्ठित ग्रहस्थोंकी एक कमैटी नियतकर अपने हाथका प्रबन्ध प्रबन्धकारिणी सभाको सोंपदेगे ऐसी आशा है" इसके उपरान्त यह भी सुननेमें आया है कि, भट्टारकजी बड़ी कोठीमें प्रवेश करनेस रोक दिये जावें इसके लिये कोठीमें हालके कार्यकर्ताओंने सरकारी पुलिससे सहायता मांगी है. यदि उक्त बात सत्य हो तो, यह कार्यकर्त्ताओंके बड़े भारी अन्याय और अयोग्यताका नमूना है. और उन्होंने सचमुच यह फिजूल पैसा बर्बाद करनेका मार्ग खोला है. आरावालोंको चाहियेकि, वह इस व्यर्थ व्ययको रोकनेके लिये, भट्टारकजी महाराजसे सुलह करके उपर्युक्त रीत्यानुसार कमैटीको कारभार सोंपनेका यह परमोत्तम अवसर हाथसे न जानें देवेंगे इति.

जातिहितैषी

चुन्नीलाल झवेरचन्द मंत्री-तीर्थक्षेत्र

अत्यंत शोकदायी मृत्यु.

न जानें हमारी जातिका क्या भवितव्य है. कि उसके उत्तम २ स्तंभभूत पुरुष इस संसारसे उठते जाते हैं. गत चैत्र सुदी १४ की रात्रिको सभापति साहिबके भतीजे तथा सरस्वतीभंडारके मंत्री जो एक सुयोग्य उदार सज्जन थे, अपनी केवल २४ वर्षकी आयुमें. अपने कुटुंबको तथा सारे जैनसमाजको शोकसागरमें डुबाकर सदाके लिये हमसे अलग होगये.

सूचना—स्थानाभावसे इस अंकमें जैनमित्रकी तथा सभाके प्रत्येक फंडोंकी प्राप्तिस्विकार प्रकाशित नहीं हो सकी, आगामी अङ्कमें सहर्ष छापी जावेगी,

क्लर्क.

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

जगत जननहित करन कहँ, जैनमित्र वर पत्र ॥
प्रगट भयहु-प्रिय! गहहु किन?, परचारहु सरवत्र! ॥ १ ॥

चतुर्थ वर्ष. } वैशाख, सम्वत् १९५९ वि. { ८ वां.

कविता—चेतावनी.

(कवित्त मनहर)

सम्वद सुराज पाय चैनकर चारों ओर,
चतुर विहङ्ग चारु चोखेबैन भाखें ये।
मत्रही धरमचार करै षट् कर्म लागे,
पंथी सब पंथ लागे आलमहि नाखें ये॥
विदेशी विज्ञानिनकी चातुरीतें चित्रितसे,
भये चित्त चहुंधा चितोओ तो प्रभाखें ये।
तम तोम नाश ज्ञान सूर आसमान आये,
अबना खुलेगीं तो खुलेगीं कब आखें ये !॥१

लम्बे लम्बे लेखनमों सूचना अलेखनसों,
त्यों पुराण पेखनसों कूप ना भरैगो ये।
सभामात्र देखनसों चाकचक्य भेखनसों,
त्रुटियां परेखनसों शोभा ना धरैगो ये॥
प्यारे जाति हेती! विना आपके कमर कसें,
विद्यालय फंड कछू, नाम ना करैगो ये॥
'प्रेमीजू' केवल धनवानोंके भरोसे अब,
बैठे ना रहियो नेकु काम ना सरैगो ये॥२

बसंततिलका.

मञ्जु[१]य स्यन्दन[२] तुरंग गजेन्द्र आदी।
आनन्द कन्द इहि इन्द्रि विषै अनादी॥
देखौ न! चंचल चितौत विलात[३] सारे।
सौदामिनी[४] सुर धनुष्वत[५] सर्व प्यारे॥ ३

'प्रेमी' हितू परिजन प्रमदा[६] पियारी।
लावण्यता सुललाम कुलानुचारी[७]॥
ग्रामाऽवनि[८] ग्रह सुगोधन आदि प्यारे।
जानो! नवाम्बुद[९] समान असार सारे॥ ४

नाथूराम प्रेमी जैन.

१ उत्तम सेवक. २ रथ. ३ लुप्त होना. ४ बिजली ५ इन्द्रधनुष. ६ स्त्री. ७ मर्यादाशाल ८ गाव. पृथ्वी, ९ नये बादल.

(नाथूराम प्रेमी दिगम्बर जैनलिखित.)

पंचरत्न.

[२]

(गताङ्कसे आगे.)

ग्राहकोंके अनादरका कारण केवल कंजूसी नहीं कही जा सक्ती. कारण सांप्रत जितनें जैनपत्र निकलते हैं किसीका भी मूल्य दो रुपयासे अधिक नहीं है. तो फिर जो जाति धनाढ्य कहलाती है उसमें अनादर होनेका कारण मूल्यके लिये मुख छिपाना ही नहीं है. परंतु इसका मुख्य कारण अविद्या तथा स्वधर्म स्वजाति प्रेमकी न्यूनता है. नहीं तो यह कभी नहींहो सक्ता कि वहारदरवेश फिसानेअजायब तथा आजकलके दूषित उपन्यासोंके मंगाने तथा पढ़ने में तो चित्त लगे; और जैनमित्रका कचरेमें आसन लगादिया जावे. टाइम्स एडवोकेट आदि पत्रोंका यदि एकही अंक न आवै. तो भोजन हजम न हो और उसीसमयपत्र लिखना पडे. परन्तु जैनगजटके दो चार अंक भी न पहुंचें तो आपको मूल्य चुकानेके वक्त तक स्मर्णही न हो, यह सब स्वधर्मप्रेमकी न्यूनता नहीं तो और क्या है? यह तो पढेलिखे समझनेवालोंकी दशा है. अनपढोंका कहनाही क्या है? एक तो वैसेंही अन्य जातियोंसे हमारी जातिमें पढ़े लिखे लोग कम हैं दूसरे प्रेमका उनमें लेश नहीं है. जो वहीखाता लिखनेतकही विद्याकी सीमा समझते हैं वह बिचारे जैनमित्र पढ़के क्या करेंगे? जिन्होंने अच्छी फारसी व इंग्रजीका अभ्यास किया है, वह जैनमित्रकी भाषा कैसे समझेंगे? अतः सिद्ध हुआ कि, जातिमें विद्याकी व जातिधर्म प्रेमकी न्यूनताही पत्रोंके अनादरका कारण हैं.

पत्रके भलिभांति चलने न चलनेका दोष केवल ग्राहकोंही पर नहीं है. परंतु इसमें सबसे मुख्य हेतुभूत सम्पादक है. सम्पादककी लेखनी तरवारसे बढ़कर कार्य करसक्ती है. सम्पादककी लेखनी प्रफुल्लित हो फूलोंकी वर्षा कर सक्ती है. सम्पादककी लेखनी क्षणभरमें हंसाकर रुला सक्ती है. अधिक क्या, सम्पादककी लेखनी देशमें भीषण संग्राम मचाकर उसकी रक्षा और उसका सर्वतः नाश कर सक्ती है. फिर जिसकी लेखनीमें इतनी शक्ति है. उस पत्रका अधिकारी एक असाधारण पुरुषही हो सक्ता है. यह समझना कुछ कठिन नहीं है. सम्पादकका कार्य केवल बाहिरसे आये हुए लेखोंका संग्रहकर छापकर प्रकाश कर देनें मात्रहीका नहीं है. बरन उसका कार्य देश, जाति, धर्म, मान, मर्यादा, राज्य, नीतिपर प्रति समय बुद्धि दौड़ती हुई रखकर अतुल परिश्रम करनेंका है. उसके ऊपर उक्त सर्व बातोंका भार है. अतः जिस पुरुषमें इतनें भार उठानेका बल है, वही सच्चा सम्पादक कहा जा सक्ता है. पाठको! जो पत्र ऐसे दूरदेशी, सर्व विद्या विभूषित सम्पादकके हाथसे प्रकाशित होता है, उसका अनादर, अपढ़ विरोधी, निरावकाशी पुरुषोंके सिवाय कौन करैगा? जिसके चित्तमें किंचित भी स्वदेश, स्वधर्म, स्वजातिका गौरव होगा. उसकी रगें योग्य सम्पादककी चार पंक्तियाँ पढ़कर फड़क उठेंगी. वह शक्तिहीन होनेपरभी उसका अनुयायी होनेको प्रस्तुत हो जावेगा, परन्तु साम्प्रत सम्पादकोंमें उक्त शक्तियां

तो दूरही रहो. वह जिस भाषामें जिस लिपिमें पत्र प्रकाश करते हैं; उसकाही पूर्ण बोध नहीं देखा जाता. और यदि कभी आपको उसके ज्ञाता बतलानेकी लिये उद्यत होते हैं, तो बेचारी संस्कृत व नागरीके गलेपर छुरी फेरते है. उन्हें ठीक २ वाक्यरचना करनाहीं नहीं आता. और यदि किसी पत्रमें ठेटहिन्दी लिखी देखते हैं तो, उसे क्लिष्ट कहकर नाक भौंह सकोड़ने लग जाते है. पाठको! यहां मेरा विचार किसी सम्पादककी तथा पत्रकी आलोचना न कर केवल सम्पादकीय योग्यता दिखलानेका है.

तात्पर्य यह है कि, सम्पादककी योग्यता अयोग्यता भी पत्रके प्रचारमें कारणभूत है. अब किंचित लेखकोंके ओर भी ध्यान दीजिये. क्योंकि यह भी पत्रके सहायभूत कहे जा सक्ते हैं इस विषयमें शोकके साथ कहना पड़ता है कि, जैनियोंमें लेखकोंकी भी बहुत न्यूनता है, और यदि थोड़े बहुत हैं भी तो, या तो पत्रोंकी दुर्दशा देखकर उनका ध्यान इस ओर नहीं फिरता, अथवा उनकी लेखनी पक्षपातसे आक्षेप रूप तथा असभ्य शब्दोंका प्रयोग कर उन्हें कुलेखक कहला रही है. शेष जिनके जो लेख साम्प्रत पत्रोंमें प्रकाशित होते हैं, वह यातो सम्पादक द्वारा अपनी काया पलटकर कुछ पढने योग्य होते हैं. या अपनेही रूपमें प्रकाश हो पत्रसे घृणा उत्पन्न कराते हैं.

(शेषमग्रे.)

कन्याविक्रय, वेश्यानृत्य और आतिशबाजी बंद करनेका सुगम उपाय.

गत फाल्गुण सुदी १९ को गांधी गंगाराम नाथूरामजी आकलूजवाले मोहोल आये थे-उससमय मन्दिरजीमें दस बारह भाइयोंकी उपर्युक्त विषयमें परस्पर चर्चा चली. कोई कहने लगे "बिरादरीसे ठहराव कर देना और उस ठहरावके बरखिलाफ जो कोई चलै उसे जातिसे बाहिर कर देना. तिसपर किसीने कहा" ऐसे ठहराव निभते नहीं है. थोड़ेही दिनोंमें टूट जाते हैं. मृत्युके समय रोने पीटनेकी मनाईका ठहराव थोड़े दिन पहिले फलटणमें हुआ था सो टूट गया. कन्याके रुपया इतनेसे अधिक नहीं लेना और पहिरामणी इतनेसे अधिक नहीं लेना, ऐसे ठहराव भी थोड़े दिन पहिले आलन्द, कुंभारी टप्पेमें हुए थे. लेकिन थोड़ेही दिनोंमें टूट गये. और ठहराव करके तोड़नेमें मुखिया लोगोंके शामिल हो जानेसे बड़ा झगड़ा चलता है. तथा बिरादरीमें तड़ें पड़ जाती हैं. सो दूसरे कोई ऐसे सीधे उपायसे कुरीतियां मिटाई जावें तो उत्तम हो." अन्तमें यह सम्मति ठहरी कि, "जो कोई अपनी कन्याका पैसा लेकर विवाह करै, उस विवाहमें बुलानेपर भी जीमनेको नहीं जाना ऐसी प्रतिज्ञा लेना. तथा जिस भाईके यहां विवाहके समय वेश्यानृत्य अथवा आतिशबाजी होवे उसमें भी शामिल नहीं होना." तब उसीसमय कोठारी

मलूकचन्द झवेरने तथा गांधी नाथूराम गंगाराम-जीने उक्त प्रतिज्ञा ग्रहण कर ली.

इसही प्रकार यदि गांव २ में वृद्ध स्त्रीपुरुष प्रतिज्ञा लेने लगैंगे तो थोड़ेही दिनोंमें यह कुरीतिया जैनियोंमेंसे बिना झगड़े निकल जावेंगी.

हीराचन्द नेमिचन्द.

तीर्थक्षेत्रोंका द्रव्यसम्बन्धी अन्धेर और प्रबन्धकी त्रुटियोंपर यात्रियोंके ध्यान देनेयोग्य विवेचन.

(पूर्वप्रकाशानन्तर.)

गिरनारजी—यह तीर्थ काटियावाड़ प्रदेशके अन्तर्गत जूनागढ़के पास है. प्रबन्धकर्ता **परतावगढ़वाले** महाशय हैं. इस क्षेत्रकी आय (आमदनी) सम्मेदशिखरजीसे कुछ न्यून दूसरे नम्बरपर है.

गतवर्ष प्रबन्धकर्तीके पास फार्म भेजकर कई पत्र लिखे थे. परन्तु प्रबन्धकर्तागण उत्तर देनेका परिश्रम नहीं करसके. पश्चात् हमने जैनमित्रमें एक सूचना भी छपवाई थी जो भाइयोंको ज्ञात होगी. उसका भी कुछ प्रतिफल न हुआ. कई दिनोंके पीछे परतावगढ़के एक महाशयका शुभागमन हुआ था. उनसे हम ५।६ भाइयोंने इस विषयकी चर्चा चलाई तो उत्तर मिला कि, तुमको हमसे हिसाब पूछनेका अधिकारही क्या है? ऐसी सुयोग्यताका उत्तर पाकर हमने अधिक बात करना ठीक नहीं समझा. और चुप हो रहे.

अब इस वर्षमें हमको नियमानुसार पुनः फार्म व पत्र भेजना पड़े. परतावगढ़वालोंने उत्तर दिया कि, गिरनारजीके मुनीमको पत्र लिखो! हमने उत्तर पाकर अहोभाग्य समझा परन्तु यहां तो मामलाही और था. मुनीमजीको पत्र लिखे परन्तु वह तो शिक्षित चेला निकले. उत्तर देनाही उन्होंने पाप समझा. क्योंकि परतावगढ़वालोंने उन्हें इनकार लिख दिया होगा कि, फार्म भरके भेजनेकी आवश्यकता नहीं है.

उक्त समाचार सुनकर हमारे भाई सब मामला समझ गये होंगे. सोचनेका विषय है कि, जब श्री सम्मेद शिखरजीकी पूंजी केवल पं० हरलालजीके जमानेमें ७१,००० की एकत्र हो गई थी. तो गिरनारजीकी पूंजी कितनी होना चाहिये?

भाइयोंको चाहिये कि, परतावगढ़वालोंसे हिसाब शीघ्रही प्रगट करवानेका प्रयत्न करें, और यह कार्य किसी सुयोग्य कमेटीको सौंपें. भंडारका द्रव्य बिना परिश्रमका नहीं है, यह द्रव्य हमारे धर्मात्मा भाई बड़े पुण्यलाभके लिये देते हैं. परन्तु शोकका विषय है कि वह पीछे यह नहीं देखते हैं कि हमारे द्रव्यका क्या उपयोग होता है. और हमने किस हेतु दिया. और इसका फल क्या होगा इसी लापरवाहीसेही क्षेत्रोंकी आय प्रबन्धकर्त्ताओंकी रियासत होती जाती है. अबतक भी हमारे भाई यदि ध्यान देंगे तो बहुत लाभ होगा.

अन्तमें गिरनारके प्रबन्धकर्ताओंको भी समझना चाहिये कि, "हम जैनियोंके मालपर आप इतना अमल क्यों करते हैं. आपके पैसेपर यदि कोई ऐसा उत्तर दे तो आपको कितना बुरा

लगेगा ?" आशा है कि, हमारा भेजा हुआ फार्म भरकर भेजनेमें अब आप विलम्ब न करेंगे.

नैनागिर—यह क्षेत्र पन्नाके राज्यमें है. यहांके प्रबन्धकर्त्ता दलपतपुरवालोंके पास कई फार्म व पत्र भेजे परन्तु कुछ उत्तर नहीं आया. सो अवश्य भेजना चाहिये.

तारंगाजी—यहांका प्रबन्ध मोतीचन्द लीलाचन्दजी ईडरवालोंके हाथमें है. गतवर्ष यहांसे हिसाब आया था. परन्तु इस वर्ष पत्र व फार्मोंकी पहुंचतक नहीं है. इसका क्या कारण है सो समझमें नहीं आता. धर्मकार्यमें इतना आलस्य व प्रमाद योग्य नहीं है. फार्म अवश्य भेजना चाहिये.

चंपापुरी (वीसपंथी कोठी)—यहांका प्रबन्ध बाबू गुलाबचन्दजी छपरावालोंके हाथ नीचे है. आपको ६—७ कागज दोनों स्थानोंपर लिखे; परन्तु न तो किसीका उत्तर मिला और न हिसाबही आया. आप एक सज्जन व प्रतिष्ठित पुरुष हैं. मुनीमके द्वारा खबर न पानेसेही आपने उत्तर न दिया होगा, ऐसा जान पडता है, अस्तु, आशा है कि अब बाबू साहिब तहकीकात करके हिसाब भेजेंगे. मुनीम साहिब यदि आलस्यमें हों तो उन्हें थोडे समयके लिये उसे छोड़कर फार्म भेजना चाहिये.

अन्तरीक्ष पार्श्वनाथ—इस क्षेत्रकी प्रबन्ध करनेवाली एक कमेटी है. जिसमें आधे दिगम्बरी व आधे श्वेताम्बरी मेम्बर हैं. इस कमेटीको हम धन्यवाद देते हैं यदि उन स्थानोंपर जहां दोनोंका अधिकार है. इसी प्रकार परस्पर मेल और सम्मतिपूर्वक कार्य चलाया जावे तो, व्यर्थके झगडे तथा मुकद्में चलानेका समयही क्यों आवे ? सेठ गुलाबशाहजी नागपुरवाले इस कमेटीके मेम्बर हैं, परन्तु पत्र व फार्म भेजने पर कुछ उत्तर नहीं आया है. इसलिये उक्त सेठजीसे प्रार्थना है कि, वह शीघ्रही फार्म भरकर भिजवावें.

द्रोणागिर (सेनपाजी)—यहांके प्रबन्धकर्ताका नाम हमको ज्ञात नहीं है. 'दिगम्बर जैन कारखाना'के नाम हमने फार्म आदि भेजे हैं. जिस किसी भाईको ज्ञात हो शीघ्र सूचित करें. यदि फार्म पहुंचा हो तो भेजना चाहिये.

सोजित्रा—यह स्थान बड़ौदाके निकट है. जैनियोंकी अच्छी वस्ती है. समय २ पर बहुतसे भाई एकत्र होते हैं. यहां एक उत्तम सभा है. यह हर्षका विषय है. ग्राममें बहुत उत्तम २ मन्दिर हैं. जिनका एक बड़ी रकमका भंडार है, यह भंडार वहांके सेठियोंके पास रहता है.

यहांका हिसाब प्रकाशित न होनेका कारण आपसकी तकरार है. हमने फार्म भेजे थे. तथा पत्र भी लिखे थे परन्तु उत्तर किसीका नहीं आया. इसका कारण बहुत करके प्लेग भी होगा परन्तु अब प्लेग शांत हुआ होगा, इसलिये प्रबन्धकर्ता सेठ भगवानदास झवेरदासजी सभासे विचार कर हिसाब शीघ्र भेजेंगे, ऐसी आशा है.

श्री सम्मेदशिखरजी (तेरहपंथी कोठी)—हालमें प्रबन्धकर्ता कलकत्तावाले सेठ फूलचन्द पदमरायजी व बाबू जिनेश्वरदासजी हैं. इनके पहिले बाबू छन्नूलालजी थे.

बीसपंथी कोठीमें ३० वर्ष पहिलेका हिसाब

नहीं है. इसके पहिलेका सब पैसा बरवाद हो चुका, केवल पिछले ३० वर्षका ७९,००० के अनुमान द्रव्य मौजूद है और खर्च होता रहा वह अलग, फिर हमारे भाई क्या इतना नहीं सोचेंगे कि, इस कोठीमें भी द्रव्य होना चाहिये या नहीं, और हिसाब प्रकाशित क्यों नहीं किया जाता?

वर्तमान प्रबन्धकर्ता महाशयके पास भी हमने फार्म भेजा. परन्तु कुछ उत्तर नहीं आया. सुननेमें आया है कि, कलकत्तावालोंका यह कहना है कि, "वीसपंथी कोठीवालोंको तो पहिले सीधा करो?"

बीसपंथी कोठीका एक वर्षका हिसाब छप चुका है, यह जान करके भी सज्जन जैनियोंको इसप्रकार आश्रय नहीं लेना चाहिये; लोकोक्ति है कि, "घर फूटें घर जाय" प्रथम ऐसा करनेसे यह दशाभोग रहे हैं. अब भी ऐसाही रक्खोगे तो सारा घर चला जावेगा, ऐसा विचार कर हिसाब भेजना चाहिये, या मुनीमको आज्ञा देकर भिजवाना चाहिये. हर्षका विषय है कि कलकत्तामें एक परमोत्तम सभाकी स्थापना हो चुकी है. हमें आशा है कि, वह हमारे इस आवश्यक कार्यमें भले प्रकार सहायता देगी.

सोनागिर (तेरहपंथी कोठी)—यहांके प्रबन्धक ग्वालियरके **राजा फूलचन्दजी** हैं. जो एक प्रतिष्ठित धर्मात्मा पुरुष हैं. यहांके भंडारकी रकम आपहीके पास है. आपने मक्सीजीके मुकद्दमेमें बड़ीभारी कोशिस की है. सो भाइयोंपर विदित होगी. सोनागिरके विषयमें हमनें आपके पास फार्म आदि भेजे हैं परन्तु कुछ उत्तर नहीं आया है. इसका कारण कुछ ज्ञात नहीं होता. कदाचित् फार्मही आपके हाथमें न पहुंचे हों.

सोनागिरजीके बहुतसे मन्दिरोंका प्रबन्ध बराबर नहीं हैं. कई मन्दिरोंमें किवाड़ नहीं है. अविनय बहुत होती है. पंडा लोग प्रयागके पंडोंसेभी बहुत जुल्म करते हैं. सेठजी साहिबको इसका प्रबन्ध अवश्य करना चाहिये और फार्मभी भिजवाना चाहिये.

स्तवनिधी—यहांकी प्रबन्धकर्ता एक प्रभावशाली "**दक्षिणमहाराष्ट्रजैनसभा**" है. जिसके सेक्रेटरी **मिष्टर हंजे** हैं. क्षेत्रकी देखरेख **रामापा मंगान**जी रखते हैं. यहांकी व्यवस्था उत्तम है खेदकी बात इतनी है कि अभीतक फार्म हिसाबका नहीं भेजा है. तथा पत्रका उत्तरभी नहीं है. वर्तमानमें सभाओंका बडा आधार गिना जाता है.

खंभात—इसको पहिलेकी "त्रम्बावती" नगरी कहते हैं. यहांके प्रबन्धकर्ता कोणेसाके फूलचन्द हरगोविंदजा हैं. खंभातमें दिगम्बर जैनियोंका एकभी घर नहीं रहा है. मन्दिरकी दशा बहुत शोचनीय है. मन्दिरकी मिलकियत ऐसी है कि, उससे भाड़ा बहुत पैदा हो सक्ता है. परन्तु इसकी कोई संभाल नहीं करता. इसलिये प्रबन्धकर्ताको सूचना दी जाती है कि मन्दिरकी मिलकियत बेचकर जहां जैनियोंकी उत्तम वस्ती हो ले जावें और मन्दिरका खर्च इसी मिलकियतसे चलाना चाहिये. जब मन्दिरका पैसा है तो खर्च करनेमें क्या हानि है? इन सब बातोंपर विचार कर गुजरातके सद्गृहस्थोंको इसका कुछ प्रबन्ध करना चाहिये. और प्रबन्धकर्ताको हमारा फार्म भर कर भेजना चाहिये.

हूंमसपद्मावती—यहांके प्रबन्धकर्ता देवेन्द्रकीर्तिजी भट्टारक हैं. इनको फार्म व पत्र भेजे हैं. परन्तु उत्तर नहीं आया. महाराजको इसपर ध्यान देना चाहिये कि, यह कोई पक्षकी बात नहीं है. यह तो उत्तम बात है कि, श्रावक लोग हिसाबकेद्वारा प्रबन्धकी उत्तम व्यवस्था देख और अधिक विश्वास करेंगे. आप तो समझदार हैं. फार्म शीघ्र भरकर भेजना चाहिये.

उपसंहार.

प्रिय भाइयो! जिस स्थानसे फार्म भरकर नहीं आये हैं वहांकी व्यवस्थाका ब्योरा जो अनुभव अथवा सुननेमें आया है, प्रकाशित किया है. परन्तु जिन स्थानोंसे फार्म भरकर आये हैं उनकी व्यवस्था फिर कभी अवसर पाकर लिखेंगे. इस समय उन्हें सहस्रों धन्यवादही देते हैं. इनके सिवाय कितने एक तीर्थक्षेत्र ऐसे हैं कि, जहां दिगम्बरियोंका एकभी घर नहीं है, उनके विषयमें खेदके सिवाय क्या करना!

विचारनेका विषय है कि, अपने दिगम्बरी—भाई कुछ पैसा देनेमें कमी नहीं करते, केवल प्रबन्धकर्ता प्रबन्धमें कमी करते हैं. पैसा जो दिया जाता है वह तीर्थक्षेत्रकी संभालको तथा पुन्यबंधके हेतु दिया जाता है. इस प्रकार प्रवृत्तिको हजारों वर्ष होगये और होते जाते हैं और वर्तमानमें जो लोग प्रबन्धकर्ता हैं वह भी चाहते हैं कि, क्षेत्रकी व्यवस्था उत्तम रहे. परन्तु कर्मके अनुसारसे तथा पंचमकालके प्रभावसे ऐसी भी कभी २ इच्छा हो जाती है कि "हाथमें उसके मुहमें." फिर यह कौन सोचता है कि, यह पैसा केवल मेरा नहीं है. सर्व जैनी भाइयोंका है. इसका उपयोग सर्वजगहों व सर्व तीर्थक्षेत्रोंपर होना चाहिये. कारण सबभाई सर्व क्षेत्रोंको एकसा समझते हैं और उन सबकी सहायतामें बराबर २ फल समझते हैं.

ऊपरके लेखसे ज्ञात होगा कि, जिसके पास भंडारका पैसा एकत्र हो और किसीसे आपसी तकरार हुई, फिर बस! भंडारके द्रव्यसे शत्रुता हो जातीहै, और जब तक झगडेका निबेड़ा न होवे अथवा भंडारका नुकसान न हो जावे तबतक कोई भाई इसकी दरकारही नहीं करता. फिर दूसरीबार यदि पैसाको बिगड़ता देख किसीको रहम आवे और उपायमें सफलता प्राप्त न होवे तो फिर उभी द्रव्यके बिगड़नेकी बारी आती है. किसीको अपने निजी पैसे खर्च करनेकी हिम्मत नही पड़ती. और फिर कहीं भंडारके द्रव्यपरही झगड़ा चल उठा तो जबतक भंडार खाली न हो जावे कोईभी पक्ष निबल नहीं होता. परन्तु पाठको! जब कभी गांठका पैसा इस तरह उडाना पड़े तब याद आवे कि पैसा क्या चीज है? यों तो पराया पैसा उड़ानेमे क्या परिश्रम पडता है. इसका एक ताजा उदाहरण आपके सन्मुखही उपस्थित है.

शिखरजीके भंडारका रुपया जो पुरालिया कोर्टमें पड़ा है उसके लिये बाबू राघवजी और आरावाले महाशय मुकद्दमा लड़ रहे हैं, हजारों रुपया दोनों तरफसे खर्च हो रहे हैं. दोतीन वर्ष हो चुके परन्तु तृप्ति किसीकोभी नहीं होती. कारण रुपया तो कोठीकाही खर्च होता है साथही गांठकी एक कौडी नहीं देना पड़ती फिर अडचन काहेकी?

इस प्रकार जहां २ भंडारोंमें रकमे होती हैं उनके स्वतंत्र अधिकारी कार्यकर्ताही कहलाते हैं. यदि वह लड़ाई झगड़ेमें रुपया व्यर्थ बरबाद करें तो दूसरे भाइयोंको रोकनेका कुछ हक नहीं समझा जाता. तथा कोई धर्मात्मा कहे कि, अमुक तीर्थक्षेत्रपर रुपयाकी अवश्यक्ता है. रुपया विना क्षेत्रकी दुर्दशा हो रही है. तो एक कौड़ी भी नहीं मिल सक्ती. चाहे तीर्थका कुछ भी हो परन्तु अपने हाथसे जो बरबाद हो उसकी कुछ ज्ञान गिनतीही नहीं है

शोकका विषय है कि, हमारे जैनीभाई एक हुंडी भी यदि लेते हैं, तो १० बार टोक बजाकर एकदमड़ी देते हैं; परन्तु इस महान पुन्यकी प्राप्तिके अर्थ जो हजारहां रुपया देते हैं, उसकी ऐसी व्यवस्था देखकर भी कुछ रीझ-बूझ नहीं करते हैं. देखिये! जब स्वेताम्बरियोंके साथ शिखरजीका मुकद्दमा चला, जिसमें कि तीर्थतकके हाथसे जानेकी जोखम थी. दोनों कोठीवालोंमेंसे किसीने भी एक पाईकी सहायता न दी, और तिसपर भी भंडारमें कुछ रुपयाकी कमी नहीं थी. सो क्या भाईयोंने पैसा इसके लिये इन भंडारोंमें दिया है, कि तीर्थ जावे तो जावे, पर पैसा सिवाय व्यर्थखर्चके कहीं मत खर्च करो? लाचार ऐसे समयमें आप सर्व सज्जनोंसे प्रार्थना करके जगह २ से चिट्ठा करा कर रुपया प्रथक एकत्र किये और जैसे तैसे मुकद्दमा संभाला.

सोजित्रा, गिरनार, महुवा, आदि अनेक तीर्थ ऐसे हैं कि, जिनमें पैसेका क्या होता है सो कुछ समझमेंही नहीं आता. हमारा इतना छोटासा फार्म भरनेमें कठिनता पड़ती है, और कहते हैं कि "हिसाब प्रकाशित करनेसे भंडारका भ्रम खुल जायगा." इनसे पैसा मांगा जावे तो इन्हें देनेमें कितनी मुश्किल पड़ेगी, सो विधाता जानें!

पाठको! आपको ऊपरके लेखसे थोड़ी बहुत तीर्थोंकी दशा विदित हुई होगी. इसलिये आपको भंडारमें पैसा देते समय उसके उपभोगकी भी चौकशी करना चाहिये. तथा इस द्रव्यसे समय पर सर्वतीर्थोंकी मदद मिल सके ऐसा प्रबन्ध करना चाहिये. जरूरत पड़नेपर इस तरह गांव २ में चंदा करनेको भटकना बुद्धिमानोंका कार्य नहीं है. हालमें जो भाई देते हैं, वह कुछ पूछपाछ नहीं करते कि, हमारे द्रव्यका क्या होगा. मुनीमजीके पाकटमें जायगा या वकील साहिबके पेटमें जायगा सो कुछ नहीं सोचते.

इन सब अप्रबन्धोंके दूर करनेके लिये इस वर्ष हमारी परमपूज्य महासभाने मथुराके मेलेपर एक बहुत उत्तम उपाय सोचा है. जो भाइयोंने जैनगजट व गत जैनमित्रोंमें पड़ा होगा; तथा उसे पसन्द भी किया होगा. इस उपायरूप "**तीर्थक्षेत्र कमेटी**" के नियम गत जैनमित्र अंक ५-६ में छप चुके हैं. इस कमेटीमें हिंदुस्थानके प्रत्येक प्रदेशके बडे २ पुरुष मेम्बर होंगे. और उनके द्वारा इसका कार्य सम्पादन किया जावेगा. कमेटीसे क्या २ लाभ होते हैं, इसके दिखानेकी यहां आवश्यक्ता नहीं है. हमारे सब भाई समझ सकेंगे, परन्तु इतना कहे बिना नहीं रहा जाता कि, यदि यह कमेटी सम्यक् चल गई, तो प्रत्येक तीर्थकी चिन्ता मिट जावेगी. और प्रबन्धकर्ताओंके सिरसे भी बडा

भारी भार उठ जावेगा. एक कमैटी सम्पूर्ण हिन्दुस्थानपर अमल कर सक्ती है. इसमें सन्देह नहीं है. देखो! एक विदेशी कमैटीने देशियोंपर कैसा अधिकार जमा कर प्रसन्न कर रक्खा है. फिर इस कमैटीके ऐसा करनेमें क्या नूतनपन है. अतः सर्व भाइयोंको इसके ऊपर लक्ष देना चाहिये. इति.

जाति हितैषी,

चुन्नीलाल झवेरचन्द मंत्री,

तीर्थक्षेत्र.

नोट — कई अंकोंसे इस कमैटीकी स्थापना के विषय भाइयोंसे सम्मति मांगी जा रही है. तथा इसकी नियमावली भी प्रकाशित की गई है. परन्तु किसी भी भाईने अभीतक कुछ हमको लिखा नहीं है. जाना जाता है कि, वह सब भाइयोंको मंजूर होंगी. अतः हम अवशीघ्रही उसके मेम्बर बनानेके लिये कार्य्यवाही प्रारंभ करके उक्त सभाका कार्य चलावेंगे.

महामंत्री.

श्रीधवल जयधवल ग्रन्थोंकी लिखाई.

श्रीयुत सम्पादक जैनमित्र! जयजिनेन्द्र!!! मूडबिद्रीसे चोट्टर कुंजम श्रेष्ठीकी एक चिट्ठी चैत्र वदी ३ को हमारे पास आई है. जिसमें वह पुस्तकोंकी लिखाईके विषय इसप्रकार लिखते हैं.

"रामलालजी उपदेशकने सिद्धान्तका कार्य देखकर आगामी यथोचित कार्य चलानेके लिये मुझे प्रबन्ध सोंप दिया था. उनके जानेपर ३ मासमें जो कुछ कार्य हुआ है उसका व्योरा इस कोष्टकसे ज्ञात कर लेना.

लेखकोंके नाम.	मास ३में हाजिरीके दिन.	कितने घंटे काम हुआ.	धवलग्रन्थके कितने श्लोक लिखे गये	विशेष.
गजपति उपाध्याय.	६३ दिन.	२६६ घं.	२६१७.	११ दिनतक आगेका शोधन किया.
शांतिचन्द्र.	५९ ,,	२२४ ,,	२६०१.	
देवराजश्रेष्ठी.	७१ ,,	३०२ ,,	१७७३.	

गजपति उपाध्याय रामलालजी उपदेशकके साथ दौरेमें तेरह दिन रहे थे, सात दिन कूंचीवाला नहीं आनेसे, और ७ दिन छुट्टीके ऐसे सत्तावीस दिन, और हाजिर दिन ६३ मिलाकर ३ मासके ९० दिनका हिसाब है.

फाल्गुन सुदी १ से प्रतिदिन बराबर ६ घंटे काम चलानेका प्रबन्ध किया है. मुझको सेटलमेंटके कार्यके कारण अवकाश न मिलनेसे कूंचीवाला वक्तपर कार्यके ऊपर नहीं आया, और उसका भी ऊपरी कार्यमें ध्यान रहनेसे बराबर कार्य नहीं हुआ है. तीन लेखकोंमेंसे देवराज, शांतिचन्द्रको कार्तिक वदी ३० तककी तनख्वाह मिली है. अगाडी तीन मासकी (मंगशिर, पौष, माघ,) चारुकीर्तिजी पट्टाचार्यके पास जमा है. गजपति मात्रकी तनख्वाह पट्टाचार्यके पास नहीं है. इत्यादि.

शुभचिंतक—**हीराचन्द नेमीचन्द.**

क्रमयुक्त पढ़ाई.

प्रियपाठकजनो! जो भारतवर्ष समस्त विद्याओंका भंडार था, जिसके विज्ञानकी विभा बड़े २ विषम वन पर्वतोंको उल्लङ्घन कर देशान्तरोंमें व्याप्त हो रही थी. वही देश आज हम ऐसी आलसी सन्तानके उत्पन्न होनेसे और सद्विद्यारत्नोंके क्रमशः लुप्त होते जानेसे अंधकारसे व्याप्त हो रही है. जिसकी प्रभासे देशान्तर प्रकाशमान थे, आज वह देशान्तरोंकी कान्तिसे कान्तिमान् होनेकी आशा करता है. जिस देशमें जैनाचार्यों द्वारा पंचमहापाप सप्तव्यसनादिकोंको कहीं स्थान नहीं मिलता था, और अहिंसामयी धर्मका डंका बजता था, आज वहींपर प्रतिकूल ध्वनि सुनाई पड़ती है.

इस लिये हमारी भारतवर्षीय दि० जै० महासभाने अपनी जातिको साक्षर और सभ्य बनानेके लिये प्रत्येक पाठशालाओंमें क्रमानुसार पढ़ाई होनेका प्रबंध किया है और तदनुरूप दि० जै० प्रान्तिक सभा बम्बई आदिके महत् पाठस्थान प्रबंधकर्त्ताओंने इसका प्रचार भी किया है. परन्तु खेद है कि, कई पाठशालाओंके प्रबन्धकोंने इसकी त्रुटि दूर नहीं की है. अतएव उन्हें अध्येषणा है कि, यदि वे इस जातिके एक शुभचिन्तक हैं तो अपने विद्यार्थियोंको क्रमसे पढ़ावें जिससे वह अल्पकालमें उच्चश्रेणीपर चढ़सकनेके अधिकारी हो सकें. क्योंकि जिन शालाओंमें पढ़नेका प्रबंध है, और पाठक योग्यताके साथ सस्नेह मनलगाकर पढ़ाते हैं, उन सर्व शालाओंके विद्यार्थी लाभ उठा सक्ते हैं, परन्तु विशेषतः लाभ क्रमानुयुत शालाहीसे उठा सक्ते हैं. क्योंकि इनमें पाठक परीक्षाकरक नियुक्त किये जाते हैं. विद्यार्थियोंको योग्यतानुसार पारितोषक दिया जाता है जिससे उनका उत्साह बढ़कर विद्यावृद्धिका कारण होता है, परीक्षक लोग समय २ दोनोंके कामोंको देखते रहते हैं. और उचित शासन करते हैं कि, सर्व अपने २ अधिकारसे सचेत रहें. यह सब बातें अक्रमयुक्त पाठशालाओंमें नहीं होतीं. उनमें एक तो पाठक लोग योग्य नहीं रहते. उनके कामोंकी देखरेख नहीं होती. उनके चित्तमें जैसा आया पढ़ाते लिखाते हैं, वे विद्यार्थियोंका अमूल्य समय केवल साधारण पठनमें व्यतीत कर देते हैं. ऐसी क्रमभंग पढ़ाईमें बालकोंको मात्रातकका ठीक बोध नहीं होता. तो कहिये! वह नमस्कार मंत्रका कैसे उच्चारण करें!

महाशयो! कहांतक लिखें आप इस महान् परिश्रमको प्रबन्धरूप खेवटियाकी बुद्धिरूप काष्ट सम्मार्जनीद्वारा कर्मभिन्न तरंगोंमें डालकर अपने मुख्यस्थानभूत विद्याश्रयको नहीं प्राप्त करने देते हैं, इस लिये प्रिय भाइयो! अपनी जातिकी उन्नति और परिश्रमका फल चाहते हो तो अपने सुकुमार बालकोंकी नूतन बुद्धिरूप आलबाल (क्यारी) में प्रबंधघटद्वारा विद्यारूप शुद्धाम्बुका सिंचन करो.

पाठको! गतांकमें श्रीयुत पं. गोपालदासजीने परीक्षाक्रममें त्रुटि प्रगट की है. वह बहुत सुयोग्य व सरल है. तथा पाठक व विद्यार्थीजनोंको बहुत फल जन्य हैं. नवीन क्रमसे ४ वर्षकी पढ़ाई ३ वर्षहीमें पूर्ण हो जाती है, क्योंकि

प्रथम व्याकरण सार्थ साधनिका सहित होनेसे शुद्ध लिखना, पढना व बोलना बालकोंका हो जाता है. तत्पश्चात् वह विद्यार्थी धर्मशास्त्रमें एवं काव्यादिकोंमें सहजही प्रवृत्त हो सक्ता है. अतएव इस पाठक्रमको रखना बालकोंको परमोपयोगी है.

पंडितजीके इस लेखपर तथा पूर्व प्रेषित लेखपर परीक्षालयके अधिकारी महाशय विचार करके इस क्रमको नियत रखनेके लिये त्वरथा सहकारी होवें, विज्ञषु किमधिकं.

प० शिवशंकर शर्म्मा.
बड़नगर (मालवा.)

लेखकोंको सूचना.

पत्रमें स्थानकी न्यूनता व अन्य विशेष आवश्यक उपयोगी लेखोंके आजानेसे तथा और कई कारणोंसे कई एक महाशयोंके लेख प्रकाशित नहीं हो सके हैं. अत: उनको निराश न होकर कुछ समय तक धैर्य्य धारण करना चाहिये. और सदाकी तरह शिक्षा, नीति, उन्नति आदि उपयोगी विषयोंके लेख भेजते रहना चाहिये.

नरसिंहपुर—यहांकी जैनहितैषिणीसभा अनुमान वर्षभरसे शिथिलताको प्राप्त हो रही थी. वह दो एक धर्मात्माओंकी प्रेरणासे पुनः चैतन्य हुई है. कार्यकर्ताओंको आगामि कार्यमें उद्यत रहना चाहिये.

दक्षिणमहाराष्ट्र जैनसभाका पांचवा जल्सा.

गत जनवरी मासकी २७—२८ तारीखको श्रीक्षेत्र 'स्तवनिधि' पर हमेशा की नाईं उक्त सभाका जल्सा हुआ था. जिसकी संक्षिप्त रिपोर्ट हम अपने भाइयोंके अवलोकनार्थ नीचे प्रकाश करते हैं, आशा है कि, हमारे पाठकवर्ग दक्षिणी भाइयोंके परिश्रमकी सराहणा कर अनुकरण करनेका उद्योग करेंगे.

चतुर्दशीकी रात्रिको पाठशालाके विद्यार्थियोंके दान, धैर्य्य, परोपकार, ऐक्यता व नीति आदि विषयोंपर अत्युत्तम व्याख्यान हुए, अनन्तर सबजैक्टकमेटी नियत होकर सभा विसर्जन हुई.

दूसरा दिवस.

भाइयोंकी सूचना और अनुमोदनाके अनंतर **श्रीमन्त पायप्पा अप्पाजीराव देसाईने** अध्यक्षस्थान स्वीकार किया. और अपनी नम्रता दिखलाकर कहा कि "हालमें अपना जैनसमाज धर्म ज्ञानविहीन होकर अज्ञानांधकारमें अत्यन्त मग्न हो रहा है. उसे धार्मिक, नैतिक, व्यवहारिक आदि सब तरहके उपयोगी शिक्षण देकर उत्तम दशामें लाना चाहिये, ऐसा बहुत दिनोंसे विचार करते थे, तब गत चैत्र मासमें 'दक्षिणमहाराष्ट्र विद्यालय' नामक धर्मशिक्षणकी पाठशाला स्थापित कर इंग्रेजी व संस्कृत सीखनेवाले तीन विद्यार्थियोंको मुफ्तमें शिक्षण देनेका प्रबन्ध किया, और ११ विद्यार्थी आज दिन इस विद्यालयमें पढते हैं. इसीप्रकार प्रतिवर्ष महत्वके प्रस्ताव पास करके लोकोंको धर्ममें जागृत किया है. तथा धर्मज्ञान, पाठशाला फंड, प्रौढविवाह,

स्त्रीशिक्षण, उपाध्यायोंकी व मन्दिरोंकी दुरुस्ती इत्यादि विषयोंकी ओर लक्ष्य देकर सुधारणा का मार्ग शोधनेमें अपना बहुतसा दक्षिणी जैन-समाज लगा हुआ है. गत पांच वर्षोंमें इस सभाने यही बडे महत्वका कार्य किया है. तैसेही आप सबोंकी सभासम्बन्धी तथा समाज सुधारणाकी उत्कंठा अवर्णनीय है." इत्यादि आशययुक्त भाषण किया. पश्चात् रा. रा. अप्पाजी बाबाजी हंजे आनरेरी जनरल सेक्रेटरीने पांचवे वर्षकी (१९०२ की) रिपोर्ट वांची. फिर निम्नलिखित प्रस्ताव पास हुए.

१ सेक्रेटरीकी रिपोर्ट मंजूर करनेके विषय.

२ श्रीमान सप्तम एडवर्ड तथा महाराणी अलेक्झेंड्राके चिरजीवी रहने तथा ब्रिटिश राज्यके स्थायी रहनेके हेतु प्रेमपूर्वक इष्ट देवसे प्रार्थना करना.

३ कोल्हापुरके छत्रपति श्री साहूमहाराज, जी. सी. एस्. आय. एल. एल. डी. का शिक्षण प्रसार करनेके बदले अभिनंदनपूर्वक आभार मानना.

४ सेठ माणिकचन्द पानाचन्दजी जौहरी मुम्बई व सेठ हीराचन्द नेमीचन्दजीका जातिमें विद्या व धर्मप्रचारके विषय अपूर्व परिश्रम करनेके बदले अभिनंदन कर आभार मानना.

५ (अ) जैनशिक्षण फंडका बहुतसा व्याज वसूल हो गया है. तथा जिनसे वसूल नहीं हुआ है, वह देनेको तयार हैं. सहायकोंकी कृपासे हालमें बीस हजार रुपयाके अनुमान फंड हो गया है. इसके विषय सर्व सहायकोंका आभार मानना.

शेषमग्रे.

श्रीपंडितसभासे प्रश्न.

१ किसी ग्राममें प्राचीन जैनमंदिर था जिसमें पाषाण धात्वादिक की २०–२५ प्राचीन प्रतिष्ठित प्रतिमा थी. मंदिरके जीर्ण हो जानेसे वहांके पंचोंने उसी स्थानपर एक नवीन मंदिर बनवाया है अब उसमें नवीन बिम्ब मंगाकर पंचकल्याणिकोत्सव पूर्वक प्रतिष्ठा करके स्थापन करनेकी इच्छा है इस कार्यके लिये ६ हजार रुपयाका इष्टमिट किया गया है. यह रुपया बिरादरीको लड्डू खिलाने और बाजे गाजेहीमें खर्च हो जावेगा. सो ऐसे छहहजार रुपया उड़ा देना ठीक है ? या नवीन मंदिरजीमें वास्तु विधान करके प्राचीन प्रतिमाही विराजमान कर देना तथा केवल गांवकी बिरादारीको एकदिन जिमाकर सिर्फ १००० रुपया खर्चकर ६००० बचा रखना? और जो रुपया बचै उसमें दो हजार मन्दिरजीके ध्रुवभंडारमें, एक हजार रुपया सरस्वती भंडारमें, एक हजार रुपया विद्यादानमें, और एक हजार जैनी भाइयोंके लिये धर्मशाला बनानेमें उसही गांवके उपयोग वास्ते इसप्रकार यह छहजार रुपया खर्चकर दिया जावे? इसमें पुन्य समान है, या न्यूनाधिक्य? सो पंडितसभा आधार पूर्वक समाधान करें.

२ किसी जैनीभाईने अनन्तव्रत ग्रहण किया था सो दस बारह वर्ष तक किया. पश्चात बीमारीके कारण व्रत छोड़ देना पड़ा. चौदह वर्ष पूर्ण नहीं हुए, इस लिये किसीसे पूछा कि मुझसे चौदह वर्ष पूर्ण नहीं हुए सो क्या करना चाहिये? किसीनें कहा की अनन्तव्रतका उद्यापन करो. तब उद्यापन

करनेका निश्चय कर उद्यापनाके साथ रथोत्सव और पंचकल्याणिक संयुक्त बिम्बप्रतिष्ठा करनेकी भी इच्छा हुई. और इसके लिये २९ हजार रुपया खर्च करनेका भी विचार कर लिया, जिसमेंसे सात हजार रुपया खर्च करके एक नवीन रथ बनवाया है. अब उत्सवमें प्लेगकी बीमारीने हरकत पहुंचाई है, प्लेग चैत्रके पश्चात् शांत होता है तब उत्साह पूर्ण होगा.

इस उत्सवमें जो सत्रह हजार व्यय करनेकी इच्छा है, उसमेंसे दस बारह हजार रुपया तो बिरादरीके पांच सात हजार आदमियोंको ९—७ दिन लड्डू खिलानेमें बरबाद हो जावेंगे. दो तीन हजार जगह किराया, नौकरोंकी तनख्वाह, हाथी, घोड़े, बाजे गाजेमें और हजार दो हजार रुपये पूजन सामग्री प्रतिष्ठाकार पंडितजीके लिये खर्च हो जावेंगे. सो इसके बदले केवल अनन्तव्रतका उद्यापन साथिया मंडल वगैरह विधान करनेमें और १ दिन गांवकी बिरादरीको जीमनवार देनेमें दो हजार रुपया खर्च करके बाकी पन्द्रह हजार रुपयोंमेंसे पांच हजार विद्यादान, पांच हजार रुपया उपदेशक भंडार, तीन हजार औ षधिदानमें, दो हजार मन्दिर भंडारमें अथवा जैनियोंके वास्ते धर्मशाळा बनानेमें खर्च कर देवें, तो हो सक्ता है या नहीं? इसमें पुन्यकी आधिक्यता है या न्यूनता? इस प्रश्नका भी समाधान होना चाहिये.

३ एक जैनीके पास छह हजार रुपया और एकके पास सात हजार रुपया धर्मकार्यमें लगानेके वास्ते मौजूद हैं. लेकिन किस धर्मकार्यमें लगाना इसका निश्चय अभीतक नहीं हुआ है. पंडित लोगोंसे सलाह पूछ रहे हैं. सो पंडितसभाद्वारा जो बहुमतसे निर्णय होगा, उस कार्यमें खर्च होगा. पंडितजन अपनी सम्मति प्रगट करें.

एक जैनी.

आवश्यकीय प्रार्थना.

सर्व सज्जनोंको ज्ञात होगा कि मुहब्बतपुर पोष्ट हमायन (अलीगढ़) में छह ग्रामोंके बीच समस्त भाइयोंकी सम्मतिसे अनुमान ३००) का चन्दा कर बड़े कष्ट उठाकर मन्दिरका जर्णोद्धार कराया है. इन छह गांवोंके भाई धर्मानुरागी हैं. परन्तु अतिशय धनहीन हैं. पहिले मन्दिरकी यहांतक दुर्दशा थी कि, उसकी समस्त दीवारें तथा छतें बिल्कुल टूटफूटकर मूलसे नाशको प्राप्त हो गई थी. श्रीजीकी वेदीका खुले मैदानमें रहनेसे अन्यमती लोगों तथा पशुपक्षियोंद्वारा बड़ा अविनय होता था. सो अब वहां १ मकान बन गया है. जिसमें माह सुदी ६ को श्रीजी विराजमान करादिये गये हैं.

अब वहां जैन ग्रन्थोंकी बड़ी भारी आवश्यक्ता है. इसलिये धर्मात्मा भाइयोंसे प्रार्थना है. कि वह प्रतिनगरके भाइयोंसे तथा भंडारसे कमसेकम एक २ प्रति शास्त्रकी भेजकर पुण्यका भंडार भरें, यहांसेभी ग्रन्थ भेजे हैं. मैं आशा करता हूं कि. इस तुच्छ विनयपर ध्यान दे. वहांके भाइयोंसे दरयाफ्त कर जो ग्रंथ वहां और कहींसे न पहुंचे हो भेजेंगे.

जोतीप्रसाद चन्द्रभान,
देवबन्द.

चिट्ठी पत्री.

प्रेरित पत्रोंके उत्तरदाता हम न होंगे.

श्रीयुत सम्पादक जैनमित्र समीपेषु,

महाशय! प्रथम तारीख रविवारकी रात्रिको हम बम्बईसे चलकर प्रातःकाल **नासिक** स्टेशनपर पहुंचे. हमारा विचार श्री गजपंथाजीकी यात्राका था. उदासीन श्रावक **दुलीचन्दजी** और लाहौर निवासी बाबू ज्ञानचन्द्रजीकी पुस्तकमें लिखा है कि, नासिकसे सिरोही ग्राम जाना, परन्तु हमको उस ग्रामका पता नहीं मिला. और ट्राम्बे गाड़ीद्वारा शहर नासिक पहुंचे, मार्गमें हमको पंडा लोगोंने बहुत दिक किया. परन्तु उनकी बातोंसे यह सिद्ध हो गया कि, श्री गजपंथजीके पास जिस ग्राममें जैनमन्दिर है, वह 'मसरूल' है. बस हम नासिकसे एकदम घोड़ा गाड़ी कर मसरूल पहुंचे. और सामान धर्मशालामें रख स्नानादि कर पर्वतपर चले गये. लौटकर भोजन किया. फिर ता० २ फरवरीको प्रातःकाल पर्वतपर पूजन किया. लौटकर वस्तीमें आके भोजन कर नासिक पहुंच रेलद्वारा रात्रिके १०बजे बम्बई पहुंच गये. निम्नलिखित बातोंपर जैनी भाइयोंको ध्यान देना चाहिये.

१. पर्वतपर जो सीढ़िया बनाई जा रही हैं, उनसे मार्ग सुगम हो जावेगा. इसमें सहायता करना परमावश्यक है.

२. जो लोग दुलीचन्दजी व ज्ञानचन्द्रजीकी पुस्तक खरीद कर यात्रा करेंगे उन्हें धोखा होगा.

३. वस्तीमें धर्मशाला उत्तम है. उसका प्रबन्ध भी ठीक है. परन्तु मन्दिरके शिखरपर जो चूनेकी मूर्तियां बनी हैं, वह ठीक नहीं. उनमें अनेक तो श्रंगार और वीररसकी पोषक हैं. तथा कोई २ तो घृणा उत्पन्न करती हैं. जैसे व्याघ्र मनुष्यका उदर विदारता है. इनसे श्रद्धा और परम्परामें बाधा आती है.

४. जब हम मसरूलसे चले मार्गमें सड़कके दक्षिण तरफ दूसरे मीलके साम्हने एक पाषाणपर चरण बने हैं. वह पत्थर श्री गजपंथजीके पर्वतसे किसी दुष्टने ला डाला हैं और अब व्यर्थ पड़ा है. जैनियोंको और विशेषकर पर्वतके प्रबन्धकर्त्तागणोंको इस पत्थरको पर्वतपर पहुंचाना उचित है.

५. नासिकमें जो दिगम्बर जैनमन्दिर है, उसका प्रबन्ध बिलकुल ठीक नहीं है. बात जैन समाजके ध्यान देनें योग्य है.

भवदीय शुभचिंतक,

ज्योतिषरत्न जियालाल और चन्द्रभानु,
फर्रुखनगर निवासी.

सम्पादक महाशय!

निम्नलिखित आवश्यक विषयको अपने जैनमित्रमें भाषांतरकर प्रगटकर दीजियेः-

कारवोऽपिमताद्वेधा, स्पर्श्यास्पर्शविकल्पनः।
तत्रास्पर्श्याःप्रजाबाह्या स्पर्श्याःस्यु कर्तकादयः

आर्य, कारु, यह, स्पर्श्य व अस्पर्श्य ऐसें भेदोंसे दो प्रकारके है. रजक (धोबी) वगैरह अस्पर्श्य और नाई वगैरह स्पर्श्य होते हैं. उक्तंच

रजकस्तक्षकश्चैव यस्कारोलोहकारका।
स्वर्णकारश्च पंचेते, भवन्त्य स्पर्श्य कारुकाः॥

धोबी, बढ़ई, तांबट, लोहार, स्वर्णकार, यह पांच कर्मकार अस्पर्श्य हैं. अर्थात् यह छूनें योग्य नहीं हैं.

शालिको मालिकश्चैव, कुंभकारस्तिलंतुदाः।
नापितश्चेति पंचामी, भवंति स्पर्श्यकारुकाः॥

धान्यकार, माली, कुंभार, तेली, और नाई यह पांच कर्मकार स्पर्श करने योग्य होते हैं. इति.

हीराचन्द मोतीचन्द.
पंधारा.

महाशय साष्टांग नमस्कार!

निम्नलिखित लेख अपनी इच्छानुकूल जैनमित्रमें प्रकाश करोगे, ऐसी आशा है.

१. श्री सम्मेदशिखरजीके प्रवास सम्बन्धी प्रसिद्ध २ स्थानों तीर्थक्षेत्रोंका सविस्तर वर्णन प्रति मास पत्रमें थोड़ा बहुत प्रकाश करना चाहिये.

२. जैनजातिका इतिहास जितनें प्राचीन समयसे मिले. अवकाशानुसार प्रकाश करना चाहिये.

३. लोकोत्तर चमत्कारिक बार्ता, चटकदार बातें, शिक्षाकारी चरित्र, उपदेशोंपर उदाहरण इत्यादि लेख उत्तमतापूर्वक प्रकाश किये जावें. तो मैं उत्साहपूर्वक कहता हूं कि, बिना परिश्रम लोगोंका चित्त आकर्षित हो, ग्राहक संख्या बढ़जावेगी. कारण लोगोंकी जो प्रवृति कादम्बरी इतिहासादि बांचनेमें बहुत है, वह सरस मनोहर लेखोंसेही बदल सक्ती है. जैनमित्र मासिकसे साप्ताहिक किया जावे, तो परमोत्तम हो, व छापनेके लिये लेखभी अधिक आवेंगे कारण बांचते २ यह शीघ्र पूर्ण हो जाता हैं और बांचनेकी इच्छा वैसीही रहती है. क्योंकि इसके लेख बांचने योग्य रहते हैं. पाठशालादि सम्बन्धी व्याख्यान छपनेसे श्रेयस्कर हो. बाहरी लोगोंका उत्साह बढ़ता है.

फलटण—'जैनजातिके १६० घरकी वस्ती है. पाठशाला नहीं है, तो धर्मशिक्षण कहांसे मिल सकै? उपदेशक देखनेमें नहीं आता. जहांपर २० घरकी वस्ती है. वहां पाठशाला है परन्तु यहां क्यों नहीं है? गुलाबचन्द खेमचन्द कालजकर, सखाराम नाथा, होचन्द मा० वकील, बीरचन्द कोदरजी, लक्ष्मीचन्द केवलचन्द, फूलचन्द नेमचन्द आदि श्रीमान् लोग होनेपर भी कुछ व्यवस्था नहीं है. यहां जैनीवाचन मन्दिर है, पांच जिन मन्दिर हैं. तिसपर भी तीन नवीन मन्दिरोंका कार्य चल रहा है. जिस प्रकारसे आप अन्य जैनसमाज सुधारते हैं, इसी प्रकार किंचित यहां भी लक्ष्य दीजिये, १६० घरोंमें २ जैनमित्र, २ जैनबोधक, १ जिनविजय इस प्रकार पत्र आते हैं, इसपरसे विद्याभिरुचि तथा धर्मप्रेमका अनुमान हो सक्ता है. हाईस्कूलमें तीन चार लड़के गुजराती पढ़ते हैं. 'वृक्ष वैसेही फल' गरीबोंमें विद्याकी अभिरुचिसे क्या जब द्रव्यही नहीं है? द्रव्य है तो खर्च करता कौन है?

अहो! श्रीयुत धर्माभिमानी जैनसमाज सुधारको! किंचित नीचे लिखे विषयपर ध्यान दीजिये. इसपर ध्यान दिये बिना आपकी जैनसमाज उच्च पदवीपर नहीं चढ़ सक्ती. यह सर्व विषयोंसे आजकल अधिक ध्यान देनेयोग्य विषय हो चला है.

बालविवाह—हाय! अत्यंत शोकका वि-

पय है कि, आठ २ दश २ वर्षकी जैनभगिनी विधवा होने लगी हैं और तिसपर प्लेगने तो बडाही अनर्थ किया है. परन्तु जैनबांधव इस ओर बिलकुलही ध्यान नहीं देते हैं, विधवा होनेका दोष बालिकापर नहीं है परन्तु सम्पूर्ण दोष पिताका है. तथा दूसरा कारण 'बालविवाह'.

श्रीमान् लोक 'अपनी लड़कीको श्रीमन्त वर मिले' इस आशासे एकादि धनवानके बालकको अपनी लड़की दे देते हैं. वह (वर) अशक्त है, रोगी है, अथवा कन्याकी अपेक्षा छोटा है, इन बातोंपर बिलकुलही ध्यान नहीं देते हैं. केवल पैसा देखकर कन्या देना यही उनका सिद्धान्त है. पश्चात् अनर्थ हो अनाचार हो, सन्तान हो वा न हो, थोड़ेही दिनोंमें उसके अशक्त होनेसे विद्याभ्यास बंद हो, इसका कुछ विचार नहीं है. परन्तु संसारसे निरुपयोगी हो जब वह मृत्युके मुखमें जा पड़ता है तब श्रीमन्त माबाप दुःखसागरमें निमग्न होने लगते हैं. इसके कारण वह स्वतःही हैं, जो एकलोता (एकही) पुत्र होनेपर विचार नहीं किया. परन्तु प्रथम विचार करै कौन? उस समय तो सुन्दर पुत्रवधू देखनेकी लालसा रहती है. निदान जिससमय वह विधवा कुकर्मोंमें प्रवृत्त होती है तथा भाग्यशाली कुलको कलंकित करनेकी चेष्टा करती है तब दैवको दोष देते हैं. परन्तु सुज्ञजनो! आप जान सके हैं कि यह उन्हीकी अदूरदर्शिताका फल है यह कई प्रमाणोंसे सिद्ध हो सक्ता है.

(शेषमग्रे.)

फलटणस्थ एक जैनी.

श्री अन्तरीक्ष पार्श्वनाथ.

उक्त क्षेत्रकी अव्यवस्थाके विषय विचार करनेके लिये खामगांवमें सेठ शामनलाल ओंकारदासजीके बंगलेमें ता. १-४-२ को सर्व दिगम्बरी स्वेताम्बरियोंकी एक सभा हुई. सभामें अनुमान २०० भाइ थे. सभामें नीचे लिखे प्रबंध किये गये.

१. एक जनरल कमैटी२६ मेम्बरोंकी नियत की गई जिसमें आधे दिगम्बरी और आधे स्वेताम्बरी हैं. कमैटीके अध्यक्ष सेठ शामलाल ओंकारदासजी, उपाध्यक्ष कल्याणचन्द लालचन्दसा यवलेवाले और सैक्रेटरी दामोदर बापूसा येवलेवाले नियत हुए.

२. म्येनेजिंग कमैटी ११ मेम्बरोंकी नियत हुई. जिसके अध्यक्ष सेठ नरसिंगसा रूखबसा कारंजा वाले हुए.

३. पोलकर (क्षेत्रके पुजारी) लोगोंने संस्थानकी जो अव्यवस्था की है उसका वर्णन नहीं हो सक्ता इसके प्रबन्धके लिये इन लोगोंपर मुकद्दमा चलाना जरूर है. ऐसा विचार हुआ और उसके खर्चेके लिये ५,००० का अनुमान किया गया.

४. खर्चेके लिये उक्त रुपयोंका सर्व भाइयोंके पाससे चन्दा करानेके लिये चार भाईयोंकी एक कमैटी चुनी गई.

५. निम्नलिखित प्रकार (१९,००) का सभामें चिट्ठा हुआ.

खामगांव—(१५१) शामलाल ओंकारदास, २५) बिभनी टीकजी, २१) जेठाभाई वर्धमान,

४१) ऋषभदास सवाईराम, २१) मुकलाल हौसीलाल, २५) धनजी कानजी, ३१) विशनजी, २५) हंसराज लद्धाभाई, २५) नवलचन्द चन्दनमल, ११) अगरचन्दजी, २१) जसरूपजी, २१) आबाजी सीताराम, ५) पीतांबर शांतिदास, ९) वंशीलाल निंबाजी, ९) रूपचन्द किशनदास, ५) अन्तदास शांतिदास, ११) आत्माराम बापूजी, ११) महादेव बापूजी, ९) पन्नालाल हीरालाल, ९) गुलाबचन्द कन्हैयालाल, ५) सुन्दरलालजी, ११) मारोती राघोबा,

नागपूर—५०१) सवाईसंघी गुलाबशाह रुखबशाह,

कारंजा—१०१) नरसिंगसा रुखबसा, ८१) देवीदास गंगासा, २५) रुखबदास नरायणदास!

येवले—३१) लालचन्द अम्बादास, २५) गोपालदास वल्लभदास, ७१) लालचन्द उम्मेदजी, २१) बापू व्रजलालजी

अमलनेर—५१) बेलचन्द वल्लभदास, ४१) मगनदास खेमचन्दसा.

तलागे—१०१) हरकचन्द गुलाबचन्दजी.

मालगांव—४५) सखाराम मोतीसा.

मिरसाले—५१) तिलोकचन्द रूपचन्दजी.

संगमनेर—२५) कस्तूरचन्द श्रीचन्द.

बालापुर—१०१) हौसीलाल पानाचन्दजी.

आसलगांव—२५) मोतीलाल बालाजी, डोनगांव—२१) रावजी नेमाजी, २५) थोडबा राघोबा, धूले—५१) सखाराम दुर्लभदास, सिरपुर—१५) सखाराम पांडोबा, ५) देव नरायणसा, २) बालकिशुन निम्बाजी.

सही—श्यामलाल ओंकारदास.

खामगांव.

वर्तमान जैन मासिकपत्रोंके वाचकोंको एक आवश्यकीय सूचना और उसपरसे लेनेयोग्य शिक्षा.

अत्यन्त खेदके साथ लिखना पड़ता है कि, आज कल जैनगजट, जैनमित्र आदि अपने दिगम्बर जैन मासिकपत्रोंमें कितने एक धार्मिक व सांसारिक विषयोंपर खंडन मंडनके लेख देकर लेखकगण अन्तमें असभ्य शब्दोंका प्रयोग कर झगड़े टंटके मार्गमें आ जाते है. परिणाम यह आता है कि, वह अपनी विद्वत्ता भूलकर परस्पर विरोधकी वृद्धि करके उस विषयका योग्य निर्णय नहीं कर सक्ते हैं. इसके साथही पत्रके ग्राहकोंमें पृथक २ विचार कल्पनामें आते हैं, कोई समझते हैं कि, ऐसे लेख देनेसे लेख छपानेवाला (सम्पादक) दोषका भागी होता है और विरोध बढ़ना है. कोई समझते हैं कि, वाचकवर्ग दूषित होते है, कोई समझते हैं कि, लेखक दोषमें पड़ते हैं, इत्यादि २ बहुतसी कल्पना खड़ी होती हैं, परन्तु पाठको! मेरा विचार इन सर्व कल्पनाओंसे बिलकुल पृथक् है, जबतक लेखकके दूषित लेखानुसार वर्त्तन नहीं होता है, तबतक कोई भी दूषित नहीं होता है. इसलिये विषयका जबतक इन्साफ नहीं हो, तबतक किसी भी पक्षके अनुगामी हो, प्रथम विचार करनाही चाहिये, फिर कितने एक ग्रहस्थोंका इस ऊपरसे ऐसा विचार होता है कि. मासिकपत्रही बन्द करना चाहिये. कई भाईयोंकी ऐसा सम्मति होती है कि, बंद नहीं करके ऐसे परस्पर विरोधी लेखही बन्द करना चाहिये. और पत्रमें छपानाही नहीं चाहिये. और कई एक तो कहते हैं कि, किसी भी विषय ऊपर कोई भी ग्रहस्थ लेख दे सक्ता है. परन्तु वह लेख अपने पत्रके नियमोंसे विरुद्ध न होना चाहिये, इस अन्तिम मतसे मैं कितने एक अंश सहमत हूं. कारण कि अपनी जातिमें भी दूसरी बहुतसी जातियोंके समान प्रत्येक विषय जो टीका (विवेचन) के लिये प्रकाश करते है उसपर दो मत हों और जबतक उस विषयपर टीका अथवा कारणसहित खुलासा प्रगट न हो तबतक उन विषयोंके विषय दोनों पक्षके विचार ज्यों की त्यों स्थितिमें रहें. और ऐसा हो तो मासिकपत्र प्रकाशित

करनेसे जातिको ... लाभ नहीं हो सके. विद्वानों की विद्वत्ताका लाभ किसी दूसरेको नहीं मिल सके, तथा मूर्खोंकी मूर्खता भी नहीं जा सके; फिर और जो सांसारिक विषयोंकी चर्चा न निकले तो समयानुसार चातुरीकी बातोंमें फेरफार करनेकी हमें कुछ खबरही न हो. तथा जो धार्मिक विषयोंपर चर्चा न चले तो धर्मके प्रसारमें बाधा पड़े, अपने धर्मकी महत्वतासे अपनी जाति अज्ञात रहै, वैसेही फिर लेखकोंकी कलम रोकनेसे लेखकोंका उत्साह भंग हो जाय जिसका भविष्यमें परिणाम बहुत बुरा निकले, केवल लेखकोंको इतनाही ध्यानमें रखना चाहिये कि, लेख अपने विषयसे बाहिर न जाने पावे और उसे हदमें रखकर अपने विषयका योग्य इन्साफ देनेको तत्पर रहना चाहिये.

इस प्रकार लेख बंद करनेमें कई नुकसान होनेसे सुज्ञ वाचकवर्गोंसे मेरी यही प्रार्थना है कि, आप सर्व मेरी सम्मतिमें सहमति होओ. जिससे सर्वसाधारणको धर्मका रहस्य ज्ञात होवे, विचारना चाहिये कि अमृतबाजारपत्रिका, गुजराती, मराठा, केशरी आदि स्वदेशाभिमानी पृथक् २ पेपरों (पत्रों) वाले जो नये पुराने समाचारोंके सिवाय अन्य दूसरे लेख अपने पत्रोंमें प्रकाशित न करते होते तो राजकीय, सांसारिक, धार्मिक और नैतिक कोई भी विषयमें हमको पेपरोंसे मिलता हुआ लाभ नहीं मिलता, और दुनियांके दूसरे भागोंसम्बन्धी ज्ञान नहीं होता, विचारोकि, एक समय कोई पेपर राज्यविरुद्ध लेख देता है. ऐसा होनेपर भी पेपरोंके छपनेके बीचमें सरकार नहीं पड़ती है, तो फिर यह तो अपना एकही जातिका एकही धर्मका प्रश्न है और जिसने अपना पूरा २ हित भरा हुआ है. ऐसे मासिकपत्रमें प्रकाशित होते लेखोंके बीचमें पड़नेका अपने योग्य नहीं है. इसलिये किसी विरुद्ध टीका बिना अपने मासिकपत्रमें लेख अवश्य आना चाहिये कि, जिससे भविष्यमें परिणाम उत्तम निकले. धर्मकी प्रभावना बढ़े, सांसारिक रीतियाँ सुधरें, नैतिक त्रुटियां दूर होकर शिक्षाका अन्य जातियोंकी समान अपनी जातिमें अधिकतासे प्रचार हो.

विशेष यह लिखना है कि, भाइयों! लेख छपानेसे सम्पादक अथवा प्रकाशित करानेवाली सभा दोषकी भागी नहीं हो सकी. मासिक पत्रोंके सम्पादकोंका तो यह हेतुही होता है कि, लोगोंकी ओरसे आये हुए लेखोंको जांचकर अपने नियमके अनुकूल होनेपर छापके प्रसिद्ध कर देना. और अपने नियमोंसे यदि विरुद्ध हो तो नहीं छापना, फिर उन लेखोंमेंसे "पानी मिश्रित दूधमेंसे हंसकी नाई दूध दूध ग्रहण करना" यह केवल वाचकवर्गोंका बुद्धिकाही कार्य है. इसलिये इस विषयमें किसीको भी दोषी नहीं ठहराना चाहिये.

इसके अतिरिक्त ऐसा भी अनुभवमें आया है कि, मेलाउत्सव अथवा बड़ी सभाओंमें केवल एकही व्यक्तिके दिये हुए **'कहनेमात्र उपयोगी'** लेखपर लेख चर्चा चलकर सभाका वक्त व्यर्थ खोया जाता है और सभाकी ओरसे मिलनेवाले लाखोंलाभोंका मार्ग बंद किया जाता है, सबसे अधिक आश्चर्यकारक यह है कि, पंडित और विद्वानवर्ग भी ऐसे झगड़ोंमें शामिल होते हैं और सभाका नियमित समय अपने झगड़ोंहीमें पूर्ण कर देते हैं, यह उनकी विद्वत्ताके योग्य नहीं है, बहुतसे प्रसङ्ग ऐसे आते हैं कि जिनमें पंडितोंके झगड़ोंसे परिणाममें सभा और धर्मको हानि पहुंचती है. परन्तु ऐसा एकभी बना हुआ उदाहरण स्मर्ण नहीं आता है कि जिसमें इन झगड़ालू पंडित वर्गोंने कोई महाभारत काम करके सम्पूर्ण कौमको अथवा धर्मको प्रकाशित किया हो. और दुनियांके दूसरे धर्मोंके आगे अपने धर्मको तेजमयी दिखा दिया हो.

भाइयो! कोईभी कार्य बिगाड़नेमें देर नहीं लगती है. परन्तु बिगड़े हुए को सुधारने और भारी कार्यके करनेमें बहुत समय लगता है और भारी श्रम उठाना पड़ता है. ऐसे पंडितोंके अभिमानको मैं धर्माभिमान नहीं परन्तु हलके वर्गकाही अभिमान कहूंगा. उनका विचार कुमार्गपर चलता हुआ कहूंगा. इसलिये ऐसे पंडितोंका ओर मेरी नम्र प्रार्थना है कि, अपनी विद्वत्ता तथा धर्माभिमानको यथार्थ मार्गमें लगा कर सम्पूर्ण जातिको लाभ और धर्म फैले ऐसा उपाय कीजिये. और वाचक वर्गोंसे यह विनय है कि "लेख सम्पादककी ओरसे व सभाकी ओरसे अथवा किसी एकही गृहस्थकी ओरसे आते हैं" ऐसी व्यर्थ शंकासे मुक्त रहकर लेखकोंकी कलमको सहायता देकर विषयका यथार्थ निर्णय करके अपनेको, अपने धर्मको, अपनी जातिको लाभ पहुंचे ऐसा उत्तम प्रबन्धकीजिये इति.

शुभचिन्तक
L. P.

Registered No. B. 288.

४ श्रद्धा धरापर जैनमित्र ही बिठावैंगो ॥

श्रीवीतरागायनमः

जैनमित्र.

जिसको

सर्व साधारण जनोंके हितार्थ

दिगम्बर जैनप्रान्तिकसभा बंबईने

श्रीमान् पंडित गोपालदासजी बरैयासे सम्पादन कराके

प्रकाशित किया.

जगत जननहित करन कहँ, जैनमित्र वरपत्र ।
प्रगट भयहु-प्रिय! गहहु किन? परचारहु सरवत्र ! ॥

चतुर्थ वर्ष } ज्येष्ठ, सं. १९६० वि. { अंक ९ वां.

नियमावली.

१ इस पत्रका उद्देश भारतवर्षीय सर्वसाधारण जनोंमें सनातन, नीति, विद्याकी, उन्नति करना है.

२ इस पत्रमें राजविरुद्ध, धर्मविरुद्ध, व परस्पर विरोध बढानेवाले लेख स्थान न पाकर, उत्तमोत्तम लेख, चर्चा, उपदेश, राजनीति, धर्मनीति, सामायिक रिपोर्ट, व नये २ समाचार छपा करेंगे.

३ इस पत्रका अग्रिमवार्षिक मूल्य सर्वत्र डाकव्यय सहित केवल रु० ०८ मात्र है, अग्रिम मूल्य पाये बिना यह पत्र किसीको भी नहीं भेजा जायगा.

४ नमूना चाहनेवाले) आध आनेका टिकट भेजकर मंगा सक्ते हैं.

चिट्ठी व मनीआर्डर भेजनेका पता:—

गोपालदास बरैया सम्पादक.

जैनमित्र, पो० कालबादेवी बम्बई—

३ सारी भ्रमभूरि हिय ... दृहत विपक्षी पक्षी, सन्देह अम्बर कै—

कौवे वाद चतुर चकोर चाहकन हेतु, कणसौ निपूत जैन पावन पठावैंगो । अंधकार अविचार अशुभी, अमेल आदि,

कर्नाटक प्रिंटिंग प्रेस, ... वाड़ी, मुंबई.

सहर्ष प्राप्ति स्वीकार.

जैनमित्रसम्बन्धी.

१।) लाला काश्मीरीलालजी, अम्बाला नं.५७२
=) लच्छूराल शोभाचन्दजी सीहौरा. २९४
१।) सूरजमल मेघराजजी सुसारी ३९९
१।) पं. खेमचन्दजी नाथनगर ५७३
३।।।) हीरालाल शिवनारायणजी देहली.१६४
१।) लाला केशरीमलजी. कानपूर ४३०
१।) शा त्रिभुवन रणछोरदास बम्बई. २८९
१।) देवासा घनश्यामसा बडवाया ५८९
१।) हजारीमल किशोरीलालजी गिरेडी. ३७९
१।) वखारिया जयसिंह मूलचन्द कलोल ४४९
१।) मोतीराम भगवानदासजी नाहन. ९९०
१।) चम्मनलाल झूमनलाल सहारणपूर. १९

पारितोषक भंडार.

६०) सेठ फूलचंन्द हरीचंदजी इंडी.

सभासदोंकी फीस.

३) तेजप्पानाथ मुन्दर महमूर
३) ए. आर. जैन. मद्रास
३) बाबू हुकमचन्दजी दारोगा सिवनी
३) सेठ रामगोपाल सवाईरामजी धाराशिव

श्री संस्कृत विद्यालय भंडार.

२१) श्रीसमस्त पंचान जैन, नागपूर
१०१) सेठ रामचन्दजी सांकलचन्दजी शोलापूर
५१) श्रीमती मैनाबाई भरतार मोतीराम माणिक-
नरखेड मा. बालचन्द कस्तूरचंदजी.
२१) रा० रा० धरनप्पा नागप्पाजी रायचूर.

श्री सम्मेद शिखरजी भंडार.

५) बाबू उमरावसिंहजी ठेकेदार आबूरोड.
१७।।) श्रीयुत समस्त पंचानजैन देवरीकलां.
५) श्रीयुत संघी मूलचन्दजी "
१३।)—श्रीयुत समस्त पंचान जैन, कामा.

दिगम्बर जैनप्रान्तिक सभा मुम्बईका द्वितीय वार्षिकोत्सव

और

शोलापुरमें रथोत्सव तथा बिम्बप्रतिष्ठा.

शोलपुरमें प्लेग बढ़नेके कारण माघ सुदी ५ वींका मुहूर्त उक्त प्रतिष्ठाका टाल दिया गयाथा. परन्तु अब हर्षके साथ प्रगट करना पड़ता है. कि शोलापुरमें प्लेग बिलकुल नहीं है. और प्रतिष्ठाका मुहूर्त ज्येष्ठ सुदी ९. निर्धारित हो गया है. यह उत्सव कैसे समारोहके साथ होगा इसके विषय हम प्रथम लिख चुके हैं इसके अतिरिक्त इसी शुभावसर पर हमारी दिगम्बर जैनप्रान्तिक सभा बम्बईका द्वितिय वार्षिकोत्सवका जलसा किया जायगा. जिसमें जातिधर्मकी उन्नतिके अनेक प्रयत्न किये जाकर विद्वज्जन मंडलीके उत्तमोत्तम व्याख्यान व शास्त्रोपदेश होंगे. जाति हितैषियों व धर्मात्मा सज्जनोंको इस अवसरपर अवश्यही पधारना चाहिये. दर्शकोंके लिये भी यह उत्सव अद्वितीय होगा. इस लिये उन्हें भी यह मौका हाथसे न जाने देना चाहिये.

सम्पूर्ण सभासदों व सज्जनोंसे प्रार्थना है कि, उनके पास जो सभामें डेलिगेटोंके लिये चिट्ठी और प्रस्तावोंकी फेहिरिस्त माघकी प्रतिष्ठाके लिये भेजी गई थी. उनका अब शीघ्रही उत्तर लिखकर भेज दें. अर्थात् अपने २ ग्रामोंसे डेलिगेट नियतकर उनके नाम भेजें.—

महामंत्री.

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

जगत जनन हित करन कहँ, जैनमित्र वर पत्र ॥
प्रगट भयहु-प्रिय! गहहु किन?, परचारहु सरवत्र! ॥ १ ॥

चतुर्थ वर्ष. } ज्येष्ट, सम्वत् १९६० वि. { ९ वां.

पञ्चमकालपञ्चक.

[लावनी (१०, १२) २२ मात्रा.]

भारत आरत तें, लख आरत बेहाला ।
दायाकर अबतो, हाहा! पंचमकाला॥ टेक ॥

चहुंखूंट चली यह, रुठके फूट बयारी ।
गये* छूट टूट उड़, जातिके बंधन भारी ॥
तम रह्यौ अविद्या, छाय घोर चहुंओरा ।
अरु तस्कर बहुव्यय, आदि लूट धन रोरा ॥
कर दीन्हों इम बेकार, सुदीन विशाला ।
दायाकर अबतो, हाहा! पंचमकाला ॥ १ ॥

हा! बालऽरुवृद्ध, विवाहने* लखहु अपारा।
विधवा बढ़ाय व्यभिचार पाप परचारा ॥
दम्पति सुखसाधन; प्रेम नेम नस डारे ।
रोगी निर्बल, संतानबान किय सारे ॥
इम बल वीरजबिन, प्रजा भई बेहाला ।
दायाकर अबतो, हाहा! पंचमकाला ॥ २ ॥

अतिवृष्टि होत कहुं, अनावृष्टि दुखदाई ।
कहुं वज्रपात कहुं, परत तुसार दिखाई ॥
दानें दानें कहँ, प्रजा फिरत तन सूखे ।
उदराग्नि ज्वाल जल, मरहिं करोड़न भूखे ॥
चहुं ऐसे* निरन्तर, परत महा दुष्काला ।
दायाकर अबतो, हाहा! पंचमकाला ॥ ३ ॥

संहारन कहँ शीतला विषम महामारी ।
गह पाणि कृपाण सु, फिरै सदा विकरारी ॥
अरु तेग—बेगसों प्लुग, रोगकी भारी ।
चहुं ओर रही चल—चकित वैद्य अपारी ॥
लक्षावधि लोग समाये* याहिके गाला ।
दायाकर अबतो, हाहा! पंचमकाला ॥ ४ ॥

इन आदि अनेकन, भांति प्रजा दुख देखे ।
चख रहे* फल अघ तरुके निश्चय हम लेखे ॥
कवि प्रेमी तातें. बार २ कह भाई ।
सद्धर्म अहिंसामयी, गहौ सुखदाई ॥
पुनि करहु प्रतिज्ञा यही वृद्ध युवा* बाला।
दायाकर अबतो, हाहा! पंचमकाला ॥ ५ ॥

नाथूराम प्रेमी जैन.

* इन वर्णोका उच्चारण ह्रस्वके समान करना चाहिये.

(नाथूराम प्रेमी दिगम्बर जैन लिखित.)

पञ्चरत्न.

(गताङ्कसे आगे.)

[३]

जातिके पत्रों, ग्राहकों, सम्पादकों व लेखकोंकी वर्तमान दशा गतांकमें हम सूक्ष्मतासे प्रगट कर चुके हैं. उन्हें पढ़कर हमारे पाठकजन सोच सकेंगे कि, पत्रोंकी ऐसी दशामें जातिका कितना उपकार हो सक्ता है और जो उन्नतिकी लम्बी २ डींगें मारकर स्वार्थसाधनामें 'दूसरेकी ओटसे बाण' मारनेकी कहावत सिद्ध करते हैं. उनके वचनों और कर्तव्योंमें कितनी सत्यता है. हमारे द्वारा उक्त विषयका उद्गार स्पर्धा तथा द्वेष वश नहीं हुआ है; परन्तु इस उद्देशसे कि, सच्चे परोपकारी अपनी त्रुटियां सुधारकर स्वाभाविक सौजन्यका परिचय अवश्यही देवेंगे.

वास्तवमें यह लेख जैनमित्र रत्नपर लिखा जाकर भी इसमें प्रसङ्गवश अन्य बातोंका समावेश हो गया है, परन्तु यह उसी प्रकार हुआ है. जैसे रत्नकी परीक्षामें अन्य रत्नोंके गुणावगुण भी समानताका प्रकरण पाकर वर्णन कर दिये जाते हैं; अतः पाठकजन विषयान्तर बताकर अरुचि न करें, अब मैं शीघ्रही अपने अभीष्टकी ओर झुकता हूं.

जैनमित्र बम्बई प्रान्तका रत्न होनेपर भी वास्तविक रत्नके समान सर्वप्रिय व परोपकारी है, परन्तु अभी इसकी वही दशा है. जो विना पालिश किये हुए रत्नकी होती है, समय पाकर अब यह गुणग्राहक जौहरी ग्राहकोंके हस्तावलम्बित हो रहा है. अब तनमनधनके परिश्रमपूर्वक इसकी पालिस करना जौहरियोंकेही हाथमें है. इसमें अनुपम चमक दमक पैदा करना इसकी ओजमयी शक्ति बढ़ाना इसे प्रेमके सुदृढ सूत्रमें गुहकर हृदयका आभूषण बनाना, इसकी कीर्ति कला चहुंओर प्रसरित करना गुणग्राहक जौहरी ग्राहकोंकेही हाथमें हैं, जिस प्रकार जिन क्रियाओंसे सच्चे जौहरी रत्नको उक्त अवस्थामें लाते हैं, उसी प्रकार उन्हीं क्रियाओंसे ग्राहकगण इस जैनमित्रको सर्व जैन जाति व्यापी कर सक्ते हैं; इसमें सन्देह नहीं है, मैं इसके थोड़ेसे साधन यहां प्रकाशित करता हूं.

पत्र वृद्धिका मुख्यसाधन ग्राहकों व सहायकोंकी आर्थिक सहायता है, आर्थिक सहायता ग्राहकोंकी संख्यापर निर्भर है, और ग्राहकोंकी संख्या पत्रके उपकारक व मनोहर लेखों और जातिहितैषियों व धनाढ्योंकी कृपा एवं परिश्रमसे सम्बन्ध रखती है, इत्यादि यह सब साधन एक दूसरेसे शृंखलाबद्धसम्बन्ध रखते हैं, और एकके पूर्ण होते संपूर्ण पूर्ण होते हैं, अन्तिम साधनके पत्रकी वाक्पटुताके विषय हम गतांकमें बहुत कुछ लिख चुके हैं, और फिर पूर्ण सहायता पानेपर उसमें स्वयंही अधिक सुधारणा की जा सक्ती है, इसके सिवाय धनाढ्योंकी कृपा और जातिहितैषियोंके परिश्रमको भी हमने ग्राहकोंकी संख्यामें कारणभूत बताया है.

इंग्लेंड जापान आदि उन्नतिशील देशोंमें कई धर्मसम्बन्धी पत्र प्रकाशित होते हैं. वहांके धनाढ्य लोग उन पढ़े लिखे पुरुषोंको जो कीमत

अधिक न दे सकनेके कारण तथा पत्रका मूल्य न्यून होनेपर भी अपनी दीनताके कारण पत्रोंके ग्राहक होनेमें अशक्य हैं. अपनी ओरसे सौ २ पचास २ निर्धनोंका मूल्य अपनी गांटसे भरकर उन्हें अपने धर्मकी ओर सन्मुख करते हैं. यदि इसीप्रकार हमारी जातिके कोड़ियों धनवानोंमेंसे ९० ही धनवान् कृपावान् बनकर जैनमित्रके दश २ ग्राहक बना देवें, तो बातकी बातमें ९०० नवीन ग्राहक प्रस्तुत हो सक्ते हैं.

उन धनाढ्य जनोंमें जो व्यवसायी स्थानोंमें रहते हैं, एस थोड़ेही होंगे जिनका सम्बन्ध सैकड़ों छोटे २ जैन व्यापारियोंसे नहीं होगा. यदि वे चाहे तो अपने व्यवसाय सम्बन्धियोंको सहजहीमें दवाकर ग्राहकीके सन्मुखकर सक्ते हैं. व्यापारीसम्बन्धी उनसे १।) के लिये इंकार नहीं कर देगा. और धनवानोंका भी इसमें अधिक परिश्रम नहीं है. इसके सिवाय यह सबही जानते हैं, कि धनाढ्योंका दबाव सबपर रहता है. और उनकी योग्य सम्मतिको प्रायः सबही शिरोधार्य करते हैं. यदि वे समय पाकर भले मनुष्योंको इस ओर झुकावें तो सहजहीमें पत्रोंकी ग्राहक संख्या इच्छित सीमाको भी उल्लङ्घनकर सक्ती है. इस प्रकार धनाढ्य सज्जनोंद्वारा उनके विना पैसा खर्च किये ही केवल उनकी कृपासे जैनमित्रकी इतनी वृद्धि होकर जातिको अप्रतिम लाभ पहुंच सक्ता है. इसी लिये हमने साधनभूत उनकी कृपाही कही है. परंतु खेद है कि, सुकुमार धनाढ्यमंडली उपकारी वचनोंके कहने में भी कंजूसी करती है.

जातिहितैषियोंकेपास धन नहीं होता इसीलिये उनका परिश्रमही साधनभूत हैं. वह अपनी वचन चातुर्य्यतासे, उपदेशादिसे लोगोंको उत्साह देकर ग्राहकोंकी संख्या बढ़ानेमें बहुत कुछ सहायता दे सक्ते हैं. पत्रोंके ग्राहकोंकी भी जातिहितैषी संज्ञा हो सक्ती है. यदि वह प्रत्येक एक २ ग्राहक बढ़ानेका प्रयत्न करें तो असाध्य न होकर ग्राहक संख्यामें द्विगुणित वृद्धि हो सक्ती है. क्या हितैषीगण इन चार पंक्तियोंपर ध्यान देंगे ?

ऊपर दिखाई हुई युक्तियोंमेंसे यदि एकही ओर धनाढ्योंका व हितैषियोंका ध्यान पहुंचकर प्रयत्न किया जावै तो सहजहीमें ग्राहकोंकी संतोषजनक संख्या होकर आर्थिक सहायताके अभावका अभाव हो सक्ता है. अधिक नहीं. यदि वर्तमान संख्यासे ग्राहकोंकी संख्या द्विगुणितही हो जावे तो, आर्थिक सहायतामें द्विगुणता हो जानेपर सहजहीमें यह जैनमित्ररत्न द्विगुणित तेजस्वी होकर द्विगुण कान्तिवान् हो सक्ता है. अर्थात् मासिकसे पाक्षिक सेवा कर सकनेकी शक्ति प्राप्त कर सक्ता है; साथही आपके इस परिश्रम पालिशसे यह अपनी कीर्ति कान्तिको बढ़ाता हुआ प्रेमसूत्रसे गुंथित हो हृदयका हार बन सक्ता है.

इस विषयको अब यहां पूर्णकर हितैषीजनोंसे फिर भी प्रार्थना करता हूं. कि यदि आप वास्तवमें उन्नतिकी शिखरपर आरूढ़ होना चाहते हैं, तो तन, मन, धनसे पत्रोंके प्रचारार्थ कटिबद्ध हो जाइये. इति. शेषमप्रे.

पंडितसभाके प्रश्नोंपर सम्मति.

पाठक महाशय! आज बडे हर्षका विषय है कि, धनवान महाशयोंने पंडितोंसे इस विषयमें सम्मति लेनेका विचार किया है कि, हम अपना धन कौनसे धर्मकार्यमें खर्च करें जिससे विशेष फलकी प्राप्ति हो.

जैनमित्र अंक ९ में **श्री पंडित सभासे प्रश्न** इस शीर्षकके लेखमें २ प्रश्न हुए हैं, उनका सारांश यही है कि, हम अपना द्रव्य विरादरीको लड्डु खिलानेमें खर्च करें या विद्यादान उपदेश भंडारादिमें? तीनो प्रश्नोंके उत्तरमें हम दानका स्वरूप शास्त्राधार पूर्वक दिखाते हैं जिससे पाठकगण स्वयं समझ जावेंगे कि, कौन कार्य दीर्घफलदायक है और कौन न्यून.

निजधन या धन—जिन पदार्थोंका नाम है उनको दूसरेके हितके वास्ते देना इसीको **दान** कहते हैं. दान चार प्रकारका है, **आहारदान, औषधिदान अभयदान, ज्ञानदान.** इनमेंसे आहारदानके ३ भेद **पात्रदान, कुपात्रदान, अपात्रदान.** पुनः पात्रदानमें भी ३ भेद हैं उत्तम, मध्यम, जघन्य. मुनिको आहार देना उत्तम पात्र दान है. श्रावक तथा अर्जिकाको दान देना मध्यम और अव्रतसम्यग्दृष्टिको देना जघन्य पात्रदानका भेद है. शेष जैनी मिथ्यादृष्टी व्रतीको देना **कुपात्रदान** है, और भेषी पाखंडियोंको देना **अपात्रदान** है.

अब ध्यान देनेका विषय है कि, जो भाई मेलेमें आते हैं वह सब सम्यग्दृष्टि तो होनेही नहीं, क्योंकि सम्यग्दर्शन उसके होता है जिसके तत्वविचार हो. तत्त्वविचार उसके होता है, जो अध्यात्मशास्त्र द्रव्यानुयोगका पाठी हो, और आजकल अविद्याके उदयसे द्रव्यानुयोगके पाठी पंडितोंमेंभी विरले हैं. क्योंकि यदि पंडित सबही द्रव्यानुयोगके पाठी होते और वे पंडित टोडरमलजीके मोक्षमार्गप्रकाशके मरमी होते तो उनके दिलोंमें यह जोश आ जाता कि, जीवका कल्यान जो कुछ है वह एक विद्याही है; और जहां २ मेला प्रतिष्ठादिकोंमें जाते तहां २ विद्यादानहीकी प्रशंसा करते, व स्वयं पाठशालायें स्थापित कराते, स्वयं अपने एक २ दो २ शिष्य बढाते. आश्चर्य है कि, वह इन बातोंपर ध्यान न दे कर धनवानोंकी रुचिके अनुकूलही कह निकलते हैं "**हां! श्री सेठजी साहिब! लड्डु जिमाना बडा धर्म है**" यह नहीं कहते कि, '**कुपात्र दान है.**' अतः सिद्ध हुआ कि मेलेमें आनेवाले भाई सम्यग्दृष्टी नहीं होते हैं.

कुपात्रदानसे बहुत गुणाफल जघन्यपात्र दानका है. जिससे बहुत गुणा मध्यमका, जिससे बहुत गुणा उत्तम पात्र मुनिके दानका. मुनिदानका फल **भोगभूमि** है. और कुपात्र दानका फल **कुमानुषोंमें उपजना** है. जिनके पशु-ओंसरीखे अङ्ग उपङ्ग होते हैं. (यह रत्नकरंड श्रावकाचारमें लिखा है.)

आहारदानके फलसे धन, ऋद्धि, सम्पदा पाता है. औषधिदानके फलसे निरोग शरीर पाता है, ज्ञानदानके फलसे केवल ज्ञानको पाता है. फिर सिद्ध पदको पाता है. जहां आवागमनसे सदाके लिये निर्वृत्त हो जाता है, राजवार्तिकमें स्वामी अकलङ्कदेवका ऐसा वचन है.

छठवें अध्यायमें दर्शन विशुद्धि इस पंक्तिकी टीकामें कहा है कि, आहार दिया हुआ तब तकही उस प्राणीको सुख देता है. जब तक फिर भूख न लगे; औषधि जब तक फिर बीमार न हो. अभयदान एक भवही प्रीतिका कारण है. परंतु ज्ञानदान जीवको जन्म-जन्ममें सुख देकर अन्तमें मोक्षसुख देनेवाला होता है.

मोक्षका मार्ग सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित्र है. बिना सम्यग्दर्शनके चारित्र (आचरण) मिथ्या चारित्रनामको पाता है. '**तत्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम्**' तत्वोंका श्रद्धान सम्यग्दर्शन है. "**प्रमाणनयैरधिगमः**" प्रमाण नय करके तिन तत्वनका व सम्यग्दर्शनादिका जानपना होता है. यह सूत्रकारका मत है. इसमें भी ज्ञानाभ्यास मुख्य है. व मोक्षमार्ग प्रकाशमें तथा द्रव्यानुयोगके ग्रंथोंमें यह भी लिखा है कि, बाह्यदान पूजन व्रतादि बिना ज्ञान कितनेभी करो सम्यग्दर्शन बिना तत्वविचारके न हो.

इसलिये! ज्ञानकी महिमा; तत्वज्ञानीके सम्यग्दर्शन बिनाव्रतादि धारण किये भी होता है. और पूर्व भवमें जिन्होंने तत्वज्ञानका अभ्यास किया है, उनके नरकगतिमें भी जातिस्मरणके होनेसे संस्कारके बलसे बिना उपदेश सम्यग्दर्शन होता है. इन उपर्युक्त हेतुओंसे ज्ञानदानही विशेष फलदायक और उत्तम प्रतीत होता है. अब प्रभावनापर विचार कीजिये, मुख्य प्रभावना क्या है? रत्नकरंडश्रावकाचारमें स्वामीसमन्तभद्राचार्यजीने कहा है,

अज्ञानतिमरव्याप्ति मपाकृत्य यथायथं।
जिनशासनमाहात्म्य प्रकाशस्यात्प्रभावना॥

अज्ञानांधकार संसारमें तथा अपने हृदयमें छा रहा है. उसको जिस किसी उपायसे नाश कर जिन शासनका माहात्म्य प्रकट करना सो प्रभावना है. पाठक महाशय! अज्ञानअन्धकारके मिटानेके यही उपाय है कि मुख्य २ शहरोंमें बृहत पाठशालायें, नगर २ ग्राम २ में शाखा पाठशालायें स्थापन करनेका प्रबन्ध करना कराना, परीक्षालयद्वारा विद्यार्थियोंको उत्साह दिलाना, शास्त्रसभाओंद्वारा तथा उपदेशकों द्वारा उपदेश देना दिलाना, आदि, सो यह कार्य हमारे धर्मात्मा भाई सभाओंद्वारा कर रहे हैं परंतु पंडित व धनवान जन सदा विमुख रहते हैं.

पुरुषार्थसिद्ध्युपाय, व राजवार्तिकजीमें प्रभावनाका यही स्वरूप कहा है. प्रथमानुयोगकी कथाओंमें भी जगह २ यही सुना है कि, पहिले अपने पुत्रपुत्रियोंको शास्त्रविद्या पढ़ाई. पीछे तरुण होनेपर विवाह कर दिया, जैसे **लवनांकुशने** क्षुल्लकके पास शास्त्र शस्त्रविद्या पढ़ी, **कैकेयी** की विद्याकी प्रशंसा पद्मपुराणमें व **मैनासुन्दरी** की श्रीपाल चरित्रमें कई जगह लिखी है.

आजकल जैनियोंमें विद्याकी बहुत कुछ कमी है. और इस विद्याहीकी न्यूनतासे **असदाचार, फिजूलखर्ची, बालविवाह, वृद्धविवाह** आदि कुरीतियां बढ़ती जाती हैं. जिसके मारे यह जैन जाति दिनपर दिन हीन अवस्थाको प्राप्त होती जाती है. इसवास्ते हमारी समझमें प्राचीन प्रतिबिम्ब नवीन मन्दिरमें वास्तुविधान करके विराजमानकर देना ठीक है, और लड्डुओंके बदले विद्यादान, उपदेशक फंडादि कार्योंमें द्रव्य व्यय करनेसे शास्त्राधारसे धर्मफल विशेष होगा.

जातिहितैषी,
रघुनाथदास जैन, सरनौ.

प्रश्नपर सम्मति.

जैनमित्र अङ्क ८ देखा उसमें 'पंडितसभासे प्रश्न' नामक लेखमें एक जैनी महाशयने छपाया है, उसके 'प्रतिष्ठा' व 'अनन्तवृत उद्यापनकी सम्मति बहुत योग्य है.' द्रव्य, क्षेत्र, काल भावके अनुसार सत्पात्रदानही सुफलका दाता है. अन्यथा मिथ्याभिमानके लिये द्रव्य व्यय करना पुण्याभ्यास है. यद्यपि ये बातें विद्वज्जनोंके निर्णयके योग्य हैं तौ भी अपनी अल्पबुद्धि अनुसार सूचित करना अयोग्य नहीं होगी. इति—

दरयावसिंह हीराचन्द जैन.

मेरी यात्रा.

२७ जनवरीको फर्रुखनगरसे चला. २९ जनवरीको बम्बई पहुंचा. दिनभर शहरकी सैर की, शामको शेठ माणिकचन्दजी पानाचन्दजी जौहरीसे मुलाकात हुई, आपकी धर्म कार्यमें प्रीति अधिक है, गृह चैत्यालय आपने ऐसा उत्तम बनाया है कि, जिसकी शोभा लिखनेको हमारी लेखनी असमर्थ है. उक्त शेठजीने हमको शोलापुरवालोंका रथ दिखलाया जो आपकी मार्फत बना है. रथ क्या है, इन्द्रका विमान है. जैन **बोर्डिंग स्कूल** और संस्कृत पाठशालापर भी शेठजीका विशेष ध्यान है. परन्तु खेद इतनाही है कि, योग्य विद्यार्थियोंकी संख्या अति न्यून है. हां अध्यापक पंडित ठाकुर प्रशादजी बड़े योग्य पुरुष हैं. शेठ चुन्नीलाल झवेरचन्दजीने हमको १ नकल फैसला—झगड़ा सम्मेदशिखरजी की दी.

३० जनवरीको सेठ खेमराज श्रीकृष्णदासजीसे दूकानपर भेंट हुई. शामको रानीका बाग (विक्टोरियागार्डन) देखा. ३१ को श्री व्येंकटेश्वर छापखाना देखा. अध्यक्ष सेठजीने हमारा उचित सन्मान किया. फिर बम्बईफोर्ट देखने चले गये.

१ फरवरीको जैनमित्रआफिसमें कुछ सज्जन महाशयोंसे वार्तालाप हुआ. रात्रिके समय बोरीबन्दर (विक्टौरियाटर्मिनस्) स्टेशनसे सवार हो नाशिक गये. (इससे आगे जैनमित्र अंक ८ देखिये.)

३ फरवरीकी रात्रिको गजपंथाजीकी यात्रा कर बम्बई लौट आये. हमारा विचार आगबोट द्वारा वीरावर बन्दर जानेका था. इस लिये ४।५।६ फरवरीको बम्बई ठहरकर टक्निकलस्कूल, मालाबार पहाड़, दाउससासन रेशमी मिल्स्, तथा स्वेताम्बरीय मन्दिर देखे. आवश्यकीय सामान खरीद ७ फरवरीको अग्निबोटमें सवार हो बीरावल रवाना हुए. पूर्वीय भारतमें हमारा अधिक समय तक अग्निबोटमें बैठना हुआ. परन्तु किसीप्रकार खेद नहीं सहा; इस समय एकही दिनमें प्रलय काल दीखने लगा. भारी कष्ट सहन किये पीछे ८ फरवरीको १० बजे दिनके वीरावलके निकट पहुंचे. नगरमें घुसनेसे पहिले पुलकी उतराई तथा चुंगीवालोंकी देख भालही में ३ घंटे लगगये. रेलके निकट धर्मशालामें ठहरकर स्नान भोजन किये. घोड़ा गाड़ी किरायाकर सोमनाथपट्टन गये. यह पट्टन वीरावलसे २॥ मील है. पक्का कोट, दरवाजा, और वस्ती अच्छी है. परन्तु दिगम्बर जैनी कोई नहीं.

सोमनाथमहादेवका मन्दिर (जिसे महमूदनें लूटा था) नगरसे पश्चिम दिशामें समुद्रके किनारे टूटा फूटा पड़ा है. इसकी बनावट देखकर बौद्ध मंन्दिरका भ्रम होता है. परन्तु नगरके उस दरवाजेके निकट जिस द्वारा हम गये थे, एक दीवारमें दो शिलालेख मिले, उनसे इस मन्दिरका प्रथम बौद्ध होना भले प्रकार सिद्ध होता है जैसे बौद्धोंपर वैदिक अत्याचारकी इतिहास गवाही देता है. ब्राह्मण क्षत्रियोंपर यवन लोगोंकी दुर्दशा करनी लिखी है. गौरीशंकर ब्राह्मण जो हमसे इसी स्थानपर मिला, कहता था. इस नगरमें अब भी शिलालेख बहुत हैं. और अनेक अंग्रेज लोग ले भी गये. हमें और लेख देखनेका अवकाश नहीं मिला, लौटकर वीरावल नगरमें गये, बस्ती रमणीक समुद्रके किनारे बसी है. पक्काकोट और राज्यप्रबंध भी अच्छा है. दिगम्बर जैन यहां कोई नहीं, स्वेताम्बर दशा श्रीमाल अधिक हैं. एक पुस्तकालय भी है. रात्रिको वीरावलमें ठहर प्रातःकाल रेलमें सवार हो ११ बजे दिनके जूनागढ़ पहुंचे, दिगम्बर जैन धर्मशालामें ठहर भोजन किया. बाजारसे सामान खरीदा. नगर हमारा पहिलेका देखा हुआ था. शामको सवारी कर गिरनार पर्वतकी तलहटीकी दिगम्बर धर्मशालामें ठहरे. यहांका प्रबन्ध **प्रतापगढ़वालोंके** आधीन है. और वह उचित ध्यान नहीं देते. इसलिये यात्री लोगोंको कुछ आराम नहीं मिलता.

१० फरवरीको हमारी प्रथम यात्रा हुई. ११ को विश्रामकर १२ को जब पर्वतको चलने लगे दरवाजा नहीं खुला और मालूम हुआ कि रात्रिको प्रतापगढ़वाले मुन्नालालजी (जो इस-धर्मशालाके प्रबन्धकर्ता हैं) यहां स्त्री सहित पधारे हैं. उनकी स्त्री जब शय्या त्याग वन्दनाके लिये उद्यमी होगी, तब दरवाजा खुलेगा. हमको महान कष्ट हुआ. खैर दरवाजा तो हमने उसी समय खुलवाया लेकिन दूसरोंके द्रव्यसे सेठ बनकर उनकोही कष्ट देना यह निरन्तर याद रहैगा. आजकी यात्रा बड़े आनन्दसे हुई. एक यात्री द्वारा मालूम हुआ कि, तीसरी और पांचवी टोंकके मध्य जो एक पर्वतकी गुमठी है, असली दिगम्बर टोंक नहीं है, परन्तु न तो उसके मार्गमें सीढ़ियां है और न कोई वहां जाता है. हम १३ फरवरीको ५ वी टोंककी वंदनाकर जोगीसे पूछने लगे यह दिगम्बर टोंक दिखती है, इसका मार्ग कहां है ? तब उसने नानाप्रकारके भय दिखला यह कह दिया कि, वहां चरण पादुका और दिगम्बर प्रतिमा अवश्य है. फिर हम कब रुकनेवाले थे, चढ़नेको उद्यमी हुए और मध्यभागमें पहुंचने पर हमको एक फकीरने सहारा दे ऊपर पहुंचाया, दर्शनकर बड़ा हर्ष हुआ. "यह टोंक खास दिगम्बर लोगोंकी है." ऐसा हमको स्वेताम्बर लोगोंके छपाये हुए गिरनारजीके नकशे द्वारा भी सिद्ध हुआ. उन्होंने इसको हूंमड़ टोंक लिखा है. फकीरको हमने चार आने इनाम दिये, पहाड़से लौट मार्गमें **मृगीकुंड, अशोकराजाके** पाली अक्षरोंके प्राचीन लेख देखते हुए जूनागढ़ आये, जब तक हम पर्वतकी तलैटीमें रहे. हमारा शास्त्र नित्यप्रति हुआ अनेक स्त्रीपुरुषोंनें व्रत नियम लिये.

१४ फरवरीको रेलद्वारा चलके शामको सोनगढ़ पहुंचे. रात्रिको **आनन्दजी कल्याणजी**

के कारखानेमें ठहर अगले दिन १९ फरवरीको शहर पालीताना पहुंचे. मन्दिरके निकट कारखानेमें ठहरे. नगरकी सैर की. अगले दिन १६ फरवरी को पहाड़की बन्दना करी, १७ फरवरी को १२ बजे बाद सोनगढ़ चले आये पालीतानामें दिगम्बर मन्दिरभी देखनेलायक है. यहांका प्रबन्ध बहुतही उत्तम सम्पूर्ण कर्मचारी सुघड़ और योग्य हैं. हमने इस मन्दिरमें ३ दिन बराबर पूजन किया. १७ फरवरीकी रात्रिको हम लोग सोनगढ़से रेलमें सवार हो १८ को ३ बजे खैरालू आये. रात्रिको अनेक स्थानोंपर गाड़ीकी अदलाबदलीमें महान कष्ट उठाया. खैरालू नगर बड़ौदा राज्यका है. स्वेताम्बर धर्मशालामें ठहरे. प्रातःकाल बैलगाड़ीमें सवार हो तारंगाजी पर्वतपर गये. पर्वत रमणीक है. परन्तु मार्ग और राज्यप्रबन्ध यहांका अच्छा नहीं. दिगम्बर मन्दिर और धर्मशालाका प्रबन्ध खराब देखनेमें आया. यहां स्वेताम्बरियोंका जोर अधिक है. उनके सम्पूर्ण कर्म्मचारी लालची हैं. हम बन्दना कर उसीदिन खैरालू आये. अगले दिन प्रातःकाल रेलमें स ार हो-महसाना होते हुए २१ फरवरीको फर्रुखनगर पहुंच गये.

इस यात्राकी विशेष घटनायें.

१ महसाना, पालनपुरकी स्टेशनोंपर पुलिसमेन लोग मादक वस्तुकी तलाशीके बहानेसे मुसाफिरोंको महान् कष्ट देते हैं. और खासकर साहूकार लोगोंको विशेष.

२ बीरावलके चुंगी कर्म्मचारी बड़े सज्जन प्राणी हैं.

३ खैरालू स्वेताम्बर धर्मशालामें ठहरनेवाले दिगम्बर यात्रीका अपमान होता है. और कुछ आराम नहीं.

४ तारंगा पर्वतपर जानेको मार्ग निर्भय नहीं और पेटार्थी प्राणी बिना किसी हुक्मके चार आना गाड़ी भोले भाइयोंसे ले लेते हैं. और सहायता कुछभी नहीं करते.

५ तारंगा दिगम्बर धर्मशालाका प्रबन्ध खराब है. फिरभी गिरनारजीसे अच्छा हैं.

६ जिस मन्दिरपर तारंगामें श्वेताम्बर घुस बैठे; वह पुराना और दिगम्बरी है. तीर्थक्षेत्र-कमेटीको ध्यान देना चाहिये.

७ अजमेरसे अहमदाबाद तक राजपूताना रेलमें तीसरे और मझोलेदर्जेका कुछ भेद नहीं. महान् कष्ट होता है.

८ वीरावल और सोमनाथ पट्टनके मध्य कबरस्तान विशेष होनेसे जाना जाता है कि, महमूदके समय भारी जंग हुआ होगा. अलम्.

ज्योतिषरत्न पंडित जियालाल
फर्रुखनगर.

अनाथरक्षा परमंहि धर्मम्.

(साहित्यभूषण मि० जैनवैद्य लिखित.)

दीन भूखे अस्थिरूपी, जैन बालक सैकड़ों।
मातु पिता बिहीन रोवें, अन्नके कणमात्रको॥१
मरत तड़फत गिद्ध आखें; आपलेहिं निकाल।
वा विधर्मी कर पड़ें, निजधर्म छांड विहाल॥२
सुनत नाहिंन कोउ जैनी, द्रव्यसे अन्धेभये।
तूल खर्च फिजूल करके, लोक दोनोंसे गये॥३
दीन पालनसे अधिक तर, पुण्य कोई है नहीं।
लाख बार उन्हें कहें धिक, देवता पुरखेसहीं॥४
भ्रातगण अज्ञानमें, अबतक पडे सोयाकरे।

हाय! लाखों जैनबालक, कालमें भूखे मरे॥५
अबतो खोलो आंख टुकभी, उन्नती कछुतो करो।
दीनप्राण बचायके आशीशले सुख बहुभरो॥६
देशडूबा है अनाथोंके हा! जलते शापसे।
जैनजाती मात्र भूमीकी दुहाई आपसे ॥ ७
लोकनाथ सदा सुखोंसे देंग भर २ आपको।
दीनोंकेहो नाथ यदि तुम मेंट दोगे तापको॥४

भारत वर्षीय जैन अनाथालय जयपुर

विदित हो कि संसार भरमें ऐसी कोई जाति इस समय विद्यमान नहीं है कि, जिसमें अनाथ तथा लावारिस नहीं, परन्तु उसके साथही ऐसी भी कोई बिरली जाति (सिवाय जैन) होगी. कि जिसने अपनी २ जातिके अनाथोंकी रक्षा के-हेतु अनाथालय स्थापित न किये हो. हमारी जातिमें अनाथालय न होनेसे धर्म्म तथा जातिको किस कदर हानि पहुंच रही है. उसके विषयके तल इतनाही कहना बस होगा कि, हमारी जातिके छोटे २ निर्दोष बालक अन्य मतमतान्तर वालोंके चुंगलमें फसकर पापी पेटके कारण अपना सत्यधर्म छोड़ उनके कपोल कल्पित धर्ममें प्रवृत्त होते चले जाते हैं. इस लिये ऐसे जैन अनाथोंके पालनपोषण तथा उनको धर्मात्मा बनानें और प्रचलित कुसंग और अशुद्धाचरणसे बचानेकी जैसी कुछ आवश्यकता है वह आप लोगोंसे छिपी हुई नहीं है.

जैनजातिकी वर्तमान दशा और विशेष कर जैन अनाथोंकी कुदशा देखकर ऐसा कौन बज्र हृदय जैनी होगा, जिसका बज्रहृदय विदीर्ण न होता हो.

ऐसे जैनअनाथोंके पालनपोषण तथा शिक्षाके अर्थ महाशय चिरञ्जीलालजी जैन भूतपूर्व रेजीडेंट माष्टर डेली (राजकुमार) कालेजकी बारंबार प्रेरणासे जयपुरमें एक भारतवर्षीय दिगम्बर जैनअनाथालय स्थापित किया गया है. जिसमें देश भरके जैनअनाथोंको रखकर सुशिक्षित धर्मात्मा बनाया जावेगा. और अन्य मतवालोंसे उनके धर्मकी रक्षाकी जावेगी.

आशा है कि हमारे उदार चित्त सज्जन देशहितैषी धर्मात्मा अपनी तनमनधनसे सहायता और परिश्रमसे सहारा देकर इस आवश्यक धर्म तथा दयाके कार्यको उन्नतिके शिखरपर पहुंचानेका उद्योगकर पुण्यका भंडार भरेंगे.

अन्तमें सम्पूर्ण स्थानोंके जैनी भाईयोंसे निवेदन है कि जहां २ दिगम्बर जैन अनाथ हों उनकी हमें सूचना देवें ताकि उनको यहां बुलवाने आदिका बन्दोबस्त किया जावे. यहांपर उनके खान, पान, वस्त्र, धार्मिक व लौकिक शिक्षा आदि समस्त प्रकारका प्रबन्ध उत्तम रीतिसे किया जावेगा. अनाथ निम्न लिखित समझे जावेंगे.

१ बालक (लड़के लड़कियां) जिनका कोई रक्षक न हो. और न कोई निर्वाहका उपाय हो.

२ वे विधवा बहिनें जो अपना निर्वाह करनेमें असमर्थ हों.

३ अपाहिज अर्थात् अन्धे, लूले, लंगड़े, अशक्त आदि भाई जो अपना निर्वाह न कर सक्तेहों.

पं. मोतीलाल सेठी. } मि. जैनवैद्य
मंत्री भारतवर्षीय दि. जै.
अनाथालय- जयपुर.

दक्षिण महाराष्ट्र जैनसभाका पांचवा जल्सा.

(गतांकसे आगे.)

(२)

(ब) अब फंड वसूल कर एकत्र हुई रकमकी व्यवस्था किस प्रकार करना इसकेलिये विचार करनेको एक कमैटी नियत करना, (उसी समय महाशयोंकी १ कमैटी नियत की गई.)

६ वां प्रस्ताव—साम्प्रत जैनसमाज धर्मज्ञानके विषयमें अत्यन्त निकृष्ट दशाको प्राप्त हुआ है. इसका कारण यह है कि, धर्मप्रसारक उपाध्याय वर्ग (जैन ब्राह्मण) अपने कर्तव्यसे पराङ्मुख हो गये हैं. उच्चावस्थाके धर्मशिक्षणतरफ उनका दुर्लक्ष्य होनेसे समाजको अत्यन्त हानि हुई है. इसलिये प्रत्येक ग्रामके श्रावक अपने ग्रामके उपाध्यायोंको उक्त सभाके प्रस्तावके अनुसार उच्चश्रेणीके धर्मशिक्षण देनेका प्रबन्ध करेंगे ऐसी आशा है.

७ वां—सम्पूर्ण जैनी भाइयोंसे सभाकी प्रार्थना है कि, अपने बालकोंको निज खर्चसे और गरीबोंके बालकोंको सभाके द्रव्यसे **दक्षिण महाराष्ट्र जैन विद्यालयमें** भेजकर उन्हें (इंग्रेजी व धर्मसम्बन्धी) विद्याभ्यास करावें. वर्तमानमें विद्यालयकी उत्तम व्यवस्था देखकर बहुत आनन्द होता है. परिषद्को ऐसी पूर्ण आशा है कि, इसकी सहायतासे हमारे समाजमें धार्मिक व लौकिक विद्या प्रसरित हो समाजका कल्याण होगा.

८ वां—किसी भी समाजमें विद्याका प्रचार होनेकेलिये स्त्रियां सुशिक्षित होना चाहिये. बालक बालिका छोटी अवस्थामें अपनी माके गुणोंको व शिक्षणको ग्रहणकर होशयार व सुशिक्षित होते हैं. इसलिये प्रत्येक जैन गृहस्थ अपने कुटुम्बकी स्त्रियोंको शक्तिभर धार्मिक व व्यवहारिक शिक्षण देवेंगे, सभाको ऐसी पूर्ण आशा है. स्त्रियां शिक्षित होनेसे संतान उत्तम सुदृढ उत्पन्न हो दीर्घायु होती हैं. तथा **बालविवाह** बन्द होकर **प्रौढविवाहका** प्रचार होगा ऐसी भी पूर्ण आशा है. वर्तमानमें बहुतसे धार्मिक श्रावकोंने सभाके प्रस्तावानुसार अपनी लडकियोंका प्रौढविवाह किया है, इसके विषय सभा उनको धन्यवाद देती है.

१० वां—विवाहसमारंभ धर्म दृष्टिसे यथोक्त व दिलपर असर करनेवाला होना इष्ट है. इस कार्यमें हमारी मूल शुद्धविधि जैसी चाहिये, वैसी है, परन्तु इधर इसमें कई नई बातें चली हैं, यह सभाको पसन्द नहीं है. इसलिये पुनः अवश्यही सुधारा करके विवाहसमारंभ अधिक योग्य करना, ऐसी सभाकी सर्व सज्जनोंप्रति विनय है. (१) रुपया देनलेनेके काममें किसीको भी बांध लेना, यह विरुद्ध होकर गुणोंकी कीमत कम करनेवाला है. (२) लग्न विधानपूर्वक अल्प खर्चसे कराना. (३) वधू और वरको विवाह मंत्र, संस्कार वगैरह उनकी मातृ भाषामें समझा देना चाहिये.

११ वां—हमारे तीर्थक्षेत्रोंकी व्यवस्था शोचनीय होनेके कारण " **दिगम्बर जैन प्रान्तिक सभा मुंबई** " सम्पूर्ण क्षेत्रोंकी सुव्यवस्था करती है, इसके विषय उक्त सभाका अभिनन्दन करके यह सभा दक्षिणमहाराष्ट्रके क्षेत्रोंकी नोंद कर

प्रसिद्ध करनेंका प्रस्ताव करती है. इसी प्रकार यहांके प्रसिद्ध क्षेत्रोंकी सुधारणा करनेको क्या २ करना आवश्यक है, यह विचार करनेको म्यानेजिंग कमैटीसे विनय करती है. "श्री स्तवनिधि क्षेत्रकी" व्यवस्था सभाकेही आधीन है. परन्तु वह अति उत्तम रखनेके लिये सभाको सदर क्षेत्रके स्थानमें धर्मादा खाता स्थापित कर दुरुस्ती करना चाहिये. इस काममें सर्वभाविक जन सभाके कार्यकर्ताओंको यथाशक्ति सहायता देवेंगे ऐशी आशा है. इसी प्रकार अवशेष क्षेत्रोंकीभी यथावकाश व्यवस्था करना है.

१२ वां—(इसमें अग्रिम वर्षके लिये कार्यकर्ता चुने गये.)

१३ वां—'**श्री जिनविजय**' मासिक पत्र जन्मसे नियमपूर्वक प्रकाशित होता रहा है. इससे सभाके हेतु प्रसिद्ध करनेके काममें व लोकोंको धर्मोपदेश देनेमें उसके प्रकाशकका समाजपर विशेष उपकार हुआ है. इसलिये जिनविजयसंबंधी खर्चेको यह सभा मंजूर करती है. व प्रकाशक महाशय सभाके हितके लिये सभाकेही खर्चसे फिर इसे चलावेंगे, ऐसी प्रार्थना करती है.

१४ वां—आजपर्यंत सभाके पृथक २ कार्यकर्ताओंनें अपने २ कार्यको उत्तम रीतिसे सम्पादन किया है. इसके विषय सभा उनकी विशेष आभारी है.

१५ वां—(इस प्रस्तावमें आगामी वर्षसम्बन्धी बजट पास किया गया.)

इस प्रकार सभामें १५ प्रस्ताव पृथक २ भाइयोंके पेश करनें व अनुमोदन करनेसे पास हुए. हमने उनका सार संक्षिप्त रीतिसे भाइयोंके अवलोकनार्थ प्रकाश किया है. हमारे भाइयोंकोभी इनके मुख्य २ प्रस्तावोंपर ध्यान देकर अमलमें लाना चाहिये. इति.

(मराठी भाषान्तर)

शोलापुर-चतुर्विधि दानशाला भंडार सम्बधी सूचना.

प्रगट करनेमें हर्ष होता है कि, अपने दिगम्बर जैन भाइयोंमें धर्मविषयका अधिक भाग लेनेंवाली शोलापुरकी शेठ मंडली है. बड़े २ तीर्थक्षेत्रों (श्री सम्मेद शिखरजी, पालीताणा, गजपंथाजी आदि) पर देखोगे तो ज्ञात होगा कि, शोलापुरवालोंने मंदिर बनवाने, प्रतिष्ठाकराने तथा मंदिरप्रतिष्ठा दोनों करवानेमें लाखों रुपया खर्च किया है. इसप्रकार धर्मप्रीति उन्होंमे पूर्वसेही चली आई देख पड़ती है.

वाचक जनोंको ज्ञात होगा कि सं० १९५७ में ऐसीही प्रीतिसे इन्हीं सर्व शेठोंने मिलकर एक बड़ाभारी फंड, ४५,०००)का एकत्र कर शोलापुरमें "**श्री जैन चतुर्विधि दानशाला**" की स्थापना की है. इतनाही नहीं परन्तु विद्यादानके लिये एक पृथकही फंड १०,०००) का कर "**श्री जैन पाठशाला**"की स्थापना भी की है. इन दोनों भंडारोंकी व्यवस्था बहुतही उत्तम है. यह प्रत्येक खातेकी वार्षिक रिपोर्ट परसे ज्ञात होता है. परन्तु प्यारे पाठको! एक विषयमें खेद उत्पन्न होता है. और वह यह है

कि, इस कार्यको ग्यारह वर्ष होने आये, परन्तु अभीतक उस फंडकी रकम एकत्र कर ट्रस्टी नहीं की है, द्रव्यकी व्यवस्थाके लिये भी कमैटी नियत नहीं हुईहै. प्रतिवर्ष व्याजकी बसूली करना पड़तीहै. और कभी २ तो व्याज एकत्र करनेमें बड़ीही मुश्किल पड़तीहै.

गृहस्थो! इस असार संसारमें इस क्षणभंगुर देहका भरोसा नहीं है, जब मनुष्यकी मति तथा वृत्ति समय २ बदलती जाती है, ऐसे वक्तमें अपनी जिन्दगीपर भरोसा रखके बैठ रहना उचित नहीं है. हाल कालके अनुसार "हाथसे किया वही हाथमें लिया" कि कहावतका अनुकरण करना ठीक है. इसलिये अपनी स्वीकारी हुई रकम अपने हाथसे देना चाहिये. आगें अपनी अनुपस्थिता (गैरहाजिरी) में यदि अपने पीछेके वारिसकी वृत्ति बदल जावे. अथवा अपनी स्थितिमें फर्क आ जावे तो फिर प्रथम स्वकार की हुई रकम देनेमें अशक्त होनेसे अपनेको महान दोषमें पड़ना पड़ता है और फंडको भी हानि पहुचती है.

उपर्युक्त कारणोंसे शेठमंडलीसे मेरी यह प्रार्थना है कि (१) स्वीकार की हुई सर्व द्रव्य एकत्रकर ट्रस्टडीडकर ट्रस्टिओंको सोंपना और मेनेजिंग कमैटी करके उसका कारभार नियमित रीतिसे चल सके ऐसा मार्ग शोधना. (२) व्याजकी जो रकम आवै उसका पृथक खातेमें खर्च करनेके लिये नियत भाग लेना, जिससे वर्षके प्रारंभमें खर्चेका बजट पास करना सरल पड़े. (३) प्रत्येक खाताकी जोखम नं. १ में बतलाई हुई कमैटीके किसी मेम्बरके ऊपर रखके प्रत्येक खातेका प्रबन्ध उत्तम और सुगमतासे चलै ऐसा उपाय करना.

शोलापुरकी शेठमंडली इस विषयमें बेदरकारीसे क्यों बैठ रही है इसका कारण यद्यपि ठीक २ ज्ञात नहीं होता है. तथापि कल्पनासे जान पड़ता है कि, कई शेठोंके मनमें ऐसा होगा कि अपने हाथमेंसे शेठाई जाती रहैगी. कई समझते होंगेकि, ऐसा करनेसे अपनी द्रव्यपरसे अपना अधिकार चला जावेगा. बल्कि एक वक्त एक गृहस्थकी तरफसे कहा गया था कि, शोलापुरमें ट्रस्ट करनेवाला नहीं मिलता, इस लिये रकम ज्यों की त्यों बिना ट्रस्ट किये पड़ी रही है. शेठ मंडली ऐसे २ वाहियात कारणोंको दूर करके उपर प्रगट की हुई मेरी सूचनाओंपर ध्यान देगी. और अन्य जनोंको अपनी धर्मप्रीतिका तथा अपने कारभारकी उत्तमताका उदाहरण देवेगी, ऐसी साविनय प्रार्थना है. वि. त्रि.

एक शुभचिन्तक.
L. P.

शोकदायी मृत्यु.

लाला निहालचन्दजीके परोपकारी नामको कौन जैनी न जानता होगा? इस अल्पवयी पुरुषरत्नके संसारसे उठ जानेके कारण आज महासभाका उपदेशक भंडार निराधार हो गया. आज पंजाब प्रान्तका एक चमकता हुआ तारा लुप्त हो गया. और सचमुचमें तो महासभाका आधार भूतस्तम उखड़ गया है, जैन समाजको इनकी मृत्युसे जो क्षति पहुची है. वह शीघ्र पूर्ण नहीं हो सक्ती. आप अपने स्वग्राम नकुड़में चैत्र सुदी १० को परलोक गत हो गये, हा! शोक!

शास्त्रसभा व पाठशालाओंकी रिपोर्ट.

अंकलेश्वर.

जैन पाठशाला—पाठशाला रात्रिमें १॥ घंटा खुलती है, दो महीनेकी रिपोर्टसे विदित होता है कि, औसत हाजिरी प्रथम मासमें ३० में १९ रही और फाल्गुणमें वही बढ़कर २३ पर पहुंच गई. इससे विद्यार्थियोंकी उत्साह वृद्धि जानी जाती है. पढाईमें धर्मोपदेशिका, तत्वार्थसूत्र, सामायिक (संस्कृत) भक्तामरस्तोत्र, जैनधर्म तत्वसंग्रह, जैनबालबोधक, उक्त पुस्तकें नियत हैं. और बहुधा यह पुस्तकें पूर्ण भी हो चुकी हैं. पाठशाला फंडकी कुल शिल्क ६२।०)६ है.

उपदेशक सभा—खेदका विषय है कि, यहांके सद्ग्रहस्थोंको महीनामें १ वार १ घंटाके लियेभी सभामें आनेका अवकाश नहीं मिलता. कहनेपर फसल वगैरहका बहानाकर दिया जाता है. इसीप्रकार इन दो माहोंमें सिवाय कार्य कर्त्ताओंके कोई श्रोता उपस्थित नहीं हुए इसकारण सभा न हो सकी. (मि. छोटालाल घेलाभाई)

खंडवा.

जैनधर्म हितैषिणी सभाकी दो अधिवेशनोंकी (सप्तम. अष्टम) रिपोर्ट हमारेपास आई थी. उसको यहां प्रकाश करते हैं. पश्चात् रिपोर्ट नहीं आई. सभा विश्रामभावमें है, ऐसा जान जाता है.

सप्तम—पंडित रामनारायणजीनें "धर्म" विषयपर चौधरी पदमशाहजीके अध्यक्षपनेमें व्याख्यान दिया. चंद भाईयोंनें स्वाध्यादिकी प्रतिज्ञा ली. सेठ धनपालसाजीनें अपनी पुत्रीके विवाहमें विमानोत्सव कराया था. आनन्दके साथ विधान पूजनादि हुईथी.

अष्टम—भाई बापूसाने "उत्तम सत्य" पर सेठ अनन्दरामजीकी अध्यक्षीमें व्याख्यान दिया—(दशरथसा मंत्री)

नोट—करमसद, इंडी, आकलूज, आलन्दा आदि स्थानोंके कार्यकर्त्ताओंनें रिपोर्ट भेजनेसे न मालूम क्यों उपेक्षा ग्रहणकर रक्खी है. सज्जन व्यवस्थापकोंको ध्यान देना चाहिये.

सम्पादक.

आवश्यकीय सूचना.

वर्तमान वर्षकेगत जैनमित्र अंक ८ में एक लेख लाला जियालालजी चौधरीकी तरफसे छपा है, जिसमें कि उन्होंने दुलीचन्दजी व ज्ञानचन्दजीकी पुस्तक खरीदनेवालोंको धोखा होनेकी सलाह दी है. वास्तवमें यह लेख क्लर्ककी भूलसे छप गया. क्योंकि ऐसे लेखोंका छापना जैनमित्रकी शैलीसी विरुद्ध है. हम अपने क्लर्ककी इस गलतीपर शोक प्रगट करते हैं. और पाठकोंसे निवेदन करते हैं कि, जैनमित्रमें ऐसे लेख आगेसे कदापि स्थान नहीं पावेंगे. बाबू ज्ञानचन्दजीके पत्रसे ज्ञात हुआ है कि, जियालालजीसे और उनसे किसीकदर प्राईवेट दिलीरंजिस है. इसी कारण जियालालजीने ऐसा लेख छपवाया है. उक्त लेखसे बाबू ज्ञानचन्दजी तथा बाबू दुलीचन्दजीके दिलको जो कुछ रंज पहुंचा होगा उसका हमको बड़ा शोक है.

सम्पादक.

जौहरी सेठ प्रेमचन्द मोतीचन्दजी-का जीवन चरित्र.

मुम्बईके सुप्रसिद्ध शेठ जौहरी माणिकचन्द पानाचन्दजीके भतीजे जौहरी प्रेमचन्दजीकी शोक दायक मृत्युके समाचार गत अंकमें पाठक सुन चुके हैं. आज उसी साहसी युवाका जीवन चरित्र लिखनेका यहां प्रयत्न किया गया है,

इस होनहार सच्चे जाति हितैषीका जन्म आसोज वदी १४ सम्वत् १९३४ को ईडरमें हुआ था. चैत्र सुदी १४ सम्वत् १८५९ के दिन केवल २५ वर्षकी अल्प वयमें अपनी १९ वर्षकी अनाथ बालविधवाको तथा सम्पूर्ण कुटुम्बको दुःखसागरमें निमग्न कर परलोकका मार्ग ग्रहण कर लिया.

९ माहकी उमरहीमें पिताकी अचानक मृत्यु हो जानेसे इन्होंने अपने काका श्री, पानाचन्दजी; माणिकचन्दजी और नवलचन्दजीके हाथ नीचे परवरिश पाई थी. योग्यवय प्राप्त कर काकाजीके आश्रयसे उत्तम शिक्षण पाया था. छोटीही उमरमें गुजराती तथा इंग्रेजी मैट्रिक तक अभ्यास कर पाठशाला छोड़ दीथी, यह साथमें संस्कृत का उत्तम ज्ञान रखकर महाराष्ट्री भाषा अच्छी तरह जानते थे. "वृतकथा संग्रह" और "महावीर चरित्र" इन दो ग्रन्थोका तर्जुमा गुजरातीमें इन्होंने बहुतही उत्तम किया है.

अपने उदार, धर्मात्मा तथा स्वदेश और स्वधर्माभिमानी काकाओंद्वारा उत्तम शिक्षण लाभ करनेसे उक्त सर्वही गुणोंने इनके हृदयमें प्रकाश करना प्रारंभ किया था. दयालुता, सहनशीलता, साहस, विद्वत्ता आदि गुण इस छोटीही उमरमें इनके हृदयवासी हो गये थे. यह भारत वर्षके प्रायः सर्वही प्रसिद्ध तीर्थोंकी यात्रा कर चुके थे, अपने स्वर्गवासी मृत दादा शेठ हीराचन्द गुमानजीकी यादगारीमें ईस्वी सन् १९०० में "शेठ हीराचन्द गुमानजी जैन बोर्डिंग स्कूल" बनवानेमें अपने काकाओंके मतमें जो सम्मति दी थी, वह इनके विद्योत्तेजक गुणको भली भांति प्रकाशित करती है. यह बोर्डिंग स्कूलकी ट्रस्टीके एक ट्रस्ट मेनेजिङ्ग कमेटीके मेम्बर और इस कमेटीकी ओरसे कोषाध्यक्ष थे, अत्यन्त जोखम भरा कोषाध्यक्षका कार्य मरणपर्यन्त इन्होंने संतोषजनक किया. इस विषय कमेटी इनकी आभारी है.

इन्होंने विद्याभ्यास छोडनेके पश्चात् अन्तिम दो तीन वर्षसे अपने काका श्री "माणिकचन्द पानाचन्द" नामसे चलती हुई बम्बईकी जवाहिरातकी बड़ी दूकानके कारभारमें दत्तचित्त हो व्यापारकी विद्या प्राप्त की थी. इतनेहीमें निर्दयी काल केशरीके पंजामें आ पड़नेसे तीन मास बीमार रहकर इस क्षणभगुर देहको छोड़ना पडी.

दिगम्बर जैन प्रांतिकसभा मुम्बई सम्बन्धी सरस्वतीभण्डारके मंत्री पदपर यह नियत थे. और उसका संतोषजनक कार्य करनेसे उक्त, सभा आपकी अकाल मृत्युसे अत्यन्त शोक प्रकाश करती है.

इनमें उदारता तथा धर्मप्रीति कितनी थी. वह नीचेके दानपत्रसे विदित होती है, जो मृत्युके समय अपने हाथसे अपनी स्त्री, माता तथा का-

काओंके सन्मुख निम्नलिखित भांति सही कर लिख दिया था.

१ "माटुंगारोडकी जमीन जो अनुमान २०,०००) की है वह, तथा अपनी जिन्दगीके वीमाके ५,०००) यह दोनों रकमें ही. गु. जै. बोर्डिंगकी कमेटीको इस शर्तपर देना कि, "प्रेमचंद मोतीचन्द स्कालरशिप खाता" खोलकर इस रकमके व्याजसे गुजराती प्रथम पुस्तकसे इंग्रेजी चौथी क्लास तक विना माबापके निराधार विद्यार्थियोंको स्कालर्शिप दी जावै."

२ "मेरी माताश्रीके 'बारह सौ चौंतिस उपवासके वृत' का उद्यापन अनुमान ५०००) के खर्चसे करना."

३ "अमनगर (ईडरके निकट) के स्टेशनपर "प्रेमचन्द मोतीचन्द धर्मशाला" के नामसे १,०००) खर्च करके एक धर्मशाला बनवाना."

४ "निम्नलिखित तीर्थोंमेंसे प्रत्येक तीर्थको इक्कावन २ रुपयाकी रकम भेजना.

१ श्री सम्मेद शिखरजी २ श्री चम्पापुरी.
३ श्री पावापुरी ४ श्री गिरनार.
५ श्री धूलेवशरियाजी. ६ श्री पावागढ़.
७ श्री गजपंथाजी. ८ श्री मांगीतुंगी.
९ श्री पालीताणा. १० श्री तारंगाजी.
११ श्री सिद्धवरकूट. १२ श्री सोनागिरजी.
१३ श्री कुंथलगिरजी. १४ श्री ईडरका मंदिर.
१५ श्री जैन चतुर्विधि दानशाला शोलापुर.

इत्यलम्.

सम्पादक.

चिट्ठी पत्री.

प्रेरितपत्रके उत्तरदाता हम न होंगे.

फलटणस्थ जैनकी चिट्ठी.

(गताङ्कसे आगे.)

विशेषकर दक्षिणी जैनबांधव "हमारा दयामयी धर्म है" ऐसा झूटा अभिमान कर अपने बालकोंहीको अपने हाथसे मृत्युकेमुखमें झोंकते हैं तथा कन्याओंको कुमार्गमें फंसाकर महा पापके भागी होते हैं, इस अज्ञानजनित पापका फल न जाने क्या होगा?

वर कन्याकी अपेक्षा छोटा होनेसे सज्जनोंके अपवादसे मनहीमन झुरने लगता है और समयपर आत्महत्या कर बैठता है. पश्चात उसकी स्त्री यदि पतिव्रता व समझदार हुई तो ठीक नहीं तो शीघ्रही कुशीलकी परिपाटी पढ़ने लग जाती है. और इस प्रकार धर्म व जातिमें लांछनित होजाती है. परन्तु यह दोप बालक बालिकाओंका नहीं है. इस अधर्मके करानेवाले उनके मातापिताही है.

श्रीमन्त लोगोंको पुत्रप्राप्तिकी उत्कट इच्छा रहती है, परन्तु वह इस ओर लक्ष्य नहीं देते कि "ईश्वर समझता है कि ऐसे लोगोंको पुत्र देनेका सिवाय इस अनर्थके और क्या परिणाम हो सक्ता है इसलिये हे धनाढ्यो! तुम्हें यदि प्रतिष्ठित व श्रीमान् स्थितिमें रहना है तो विना पुत्रही रहो!"

यह सबही जानते है कि, योग्य जोड़ा मिले विना संतानकी प्राप्ति नहीं हो सक्ती. कदाचित् योग्य वय बिनाही पुत्रकी प्राप्ति हो जावे तो वह अल्पआयु होकर शीघ्र मर जाता है और

यदि जीवित रहा तो निर्बल तथा मूर्ख होगा. फिर आप सोच सक्ते हैं, कि वह विद्याभ्यास करनेको कितना समर्थ हो सक्ता है, और फिर उससे जो संतान होगी, कहां तक बलाढ्य होगी? हे धनाढ्य भाईयो! इसका पूर्ण विचार करो कि, यदि तुम्हारी इच्छा अपने पुत्रके कल्याण करनेकी है तो, उपर्युक्त ईश्वरेच्छाको हृदयमें धारणकर कभी मत भूलो और अपनी इस प्रचलित पद्धतिका सुधार करो.

अब किंचित गरीब लोगोंकी स्थितिका विचार कीजिये. निर्धनके पीछे निरन्तर दारिद्य लगा रहता है. फिर संतानकी शिक्षाको उसके पास द्रव्य कहां? यदि भाग्यवशात् स्कालर्शिप पाकर शिक्षा पाने लगा तो उसके मातापिताओंको उदर पोषणाकी कठिनता पड़ती है. कारण एकलौता पुत्र है वह तो शिक्षाके पीछे लगा; इनकी अशक्त वृद्धावस्था, कहींसे प्राप्तिकी आशा नहीं. धनवान लोगोंसे सहायता मिल सक्ती है पर उनकी यह दशा कि, वह शिक्षणको त्रासदायक समझते हैं. गरीब मातापिताओंको अपनी संतानसे सुखकी प्राप्ति नहीं. कारण पुत्रके पद चुकनेपर पैसेकी प्राप्ति, और तब तक यहां मानवी उमर ५०—६० पर पहुंच जाती है.

बालक अधिक उमर तक यदि विद्या पढ़ता रहै तो धनी पुरुष कहने लगते हैं कि, व्यापारके लिये द्रव्य न रहनेसे वह अभीतक पढ़ता है. व इस प्रकार कहनेसे पीछे उसके विवाहकी झंझट पडती है. कारण द्रव्यहीनको अपनी लड़की कौन देवै? और इस तरह उसके सुशिक्षित होनेका कुछ भी उपयोग नहीं होता. इसी कारण जैन बंधुओंमें हजार पीछे पांच उच्च शिक्षण पाये हुए दिखते हैं. जब हमारी जातिका यह हाल है, तब अन्य ज्ञातियां अशिक्षित लक्षाधीशोंको भी गरीबकी लड़की नहीं मिलती. "मनुष्य विद्या करही श्रेष्ठ होता है" यह विचार हमारी धनिक मंडली स्वप्नमें भी नहीं करती.

निदान गरीबके बालकोंको भी कन्याके बापकेलिये हजारों रुपया देना पड़ते हैं तब विवाह सम्बन्ध हो सक्ता है. हा! शोक! नीच लोगोंकी अपेक्षा जैन जातिमें कन्याविक्रयकी निंदित प्रथा जैनी भाइयोंमें अधिक होनेपर भी जैनी अपनेको दयामयी धर्मधारी कहते हैं. तथा अपनी १०—११ वर्षकी कन्याका ६० वर्षके वृद्धके साथ विवाह कर निरपराधी कन्याको कुचाली कर सदा सन्मार्गकी दुहाई देते हैं. अब इस विषयको यहां समाप्त कर आशा करता हूं कि धनिक व सर्वसाधारण जन इन नीच प्रथाओंके निर्मूल करनेका प्रयत्न करेंगे.

आपका एक नम्र,

चरणाङ्कित—फलटणस्थ जैन.

धूर्तसे बचना.

पं० स्तवनेश पारशीवा नामक कोई धुर्त दि० जै० प्रान्तिक सभाका उपदेशक बनकर भोले भाइयोंसे पैसा ठगता फिरता है, वह केशरचन्द कस्तूरजी श्रावगी बालपुरसे धोखा दे ३) सभासदी फीसके बहाने ले गया है. भाइयोंको सूचना दी जाती है, कि वह ऐसे धूर्तोंसे बचें.

विविधसमाचार.

विलायतमें जैनी—बाढ़ (पटना) निवासी लाला बालकृष्णदासजी १ वर्ष हुआ विलायतमें बैरिस्टरी पढ़नेको गये हैं. आपने वहांकी किसी सभामें "बंधतत्वका स्वरूप" इस विषयपर व्याख्यान दिया था. व्याख्यानके प्रभावसे वहांकी धर्मसभाओंके आप उत्तम सन्मान पात्र होगये हैं आगामी ता. २९ की सभामें आपका धर्मविषयक व्याख्यान पुनः नियत हुआ है. इसीलिये आपने बहुतसे संस्कृत और प्राकृत जैनग्रन्थ यहांसे बुलवाये है. उच्चश्रेणीकी इंग्लिश जाननेवालोंमें धर्मप्रेम देखकर हर्ष होता है. उक्त बाबूसाहिबके पिता एक धनाढय जागीरदार. अग्रवाल जैनी है. विलायतमें आपका ठिकाना यह है.

B. K. DASS,
Common Room, Gray's Inn.
LONOND, W. C.

जैनमन्दिरकीअव्यवस्था—'आर्वी(वर्धा) से ९ मील दूर कुंडलपुर नामक ग्राम है, वहां एक शिखरबंद मन्दिर है, उसमें कई महीनोसे ताला पड़ा हुआ है, आर्वीमें १०, १२ घर जैनी भाईयोंके है परन्तु वह भी कुछ प्रबन्ध नहीं करते', ऐसे समाचार हमको एक कामठी निवासी सज्जनद्वारा ज्ञात होनेसे अत्यन्त खेद हुआ है, आर्वीवाले धर्मात्मा पंचोको इस ओर अवश्य ध्यान देना चाहिये, सुना गया है कि, वहांके सेठ किशोरालालजीके यहां गजरथोत्सव है इस अवसरपर सेठजी यदि चाहें तो बहुत उत्तम प्रबन्धहो सक्ता है.

कानपुरमें धर्मोत्सव—सकुशल वर्ष व्यतीत होनें और नवीन सम्बत् प्रारंभ होनेके हर्षमें कानपुरके जैनी भाइयोंने बड़े उत्साहके साथ भगवानकी पूजन तथा अभिषेक किया. आनन्द पूर्वक नृत्य किये. पं० बालावक्सजी तथा पं० दुर्गाप्रशादजी संस्कृत पाठका मिष्टध्वनिसे अर्थ समझाते थे, 'केशरीमल जैन'

भावनगरमें भयंकर आग—भावनगरमें अग्नि लगनेसे जैनधर्म प्रसारक सभाका दफ्तर, बेंचनेकी पुस्तकें, हिसाब, लिष्ट, लायब्रेरी, तथा २०,०००) के हस्तलिखित धर्मग्रंथ जलकर भस्म हो गये, और सब सामान तो खैर फिर भी प्राप्त हो सक्ता है, परन्तु हस्तलिखित ग्रंथोंमें जो अद्वितीय होंगे. वह बीस हजार तो क्या बीस लाखमें भी प्राप्त नहीं हो सक्ते, इस समाचारको सुनकर हमारा चित्त बहुतही व्यथित हुआ है. भाइयो! चेत जाओ, अद्वितीय ग्रंथोंको भंडारोंमें छिपा कर मत सड़ाओ, उनकी प्रति कराकर प्रचार करनेंके प्रयत्नमें दत्तचित्त हो रहो! आकस्मिक घटनाएँ अज्ञात अवस्थाहीमें आन पड़ती हैं, खेदकी बात है कि ऐसा जानकर ईडर आदि स्थानोंके भाई ग्रन्थोंकी सूची देनेमें भी पाप समझते हैं.

मुंबईमें बोर्डिंग हौस—बम्बईकी कच्छीदशा ओसवाल ज्ञातिने जातिके निराधार विद्यार्थियोंके लिये एक बोर्डिंग हौस बनानेका विचार किया है, एकही दिवसके उत्साहमें दशहजारका चन्दा एकत्र हो गया. और धड़ाधड़ हो रहा है. भाइयो! आपने भी इसे सुना कि नहीं?

विलायती सभ्यता—इंग्लेन्डके कई सभ्य मनुष्य एक कमरे में बैठकर अपने चित्तको प्रसन्न

करनेंके लिये मक्खियें मारनेंका खेल खेलकर अपनी बहादुरी दिखाते है. जो जितनी अधिक मक्खियां मारता है. उसकी उतनी अधिक प्रशंसा होती हैं, और वही विजयी कहलाता है, और भी कबूतर आदि मारकर वह अपनी दयाका परिचय देते हैं. इतना महा कुकर्म करनेंपर भी वह सभ्य और दयालु कहाते हैं, और जो भारतवासी "अहिंसा परमो धर्मः" मानकर प्राणजानेंपर भी जानबूझ कर एक क्षुद्रजीव नहीं मार सक्ते हैं, उन्हींको 'इङ्गिलश मेंन' दया रहित बतलाता है, कालका यही प्रभाव है!

व्याहके नोटिस—एमेरिकाके कोबकनिकेलपत्रमें दो नोटिस छपे है. एक में लिखा है कि "मैं सत्रह वर्षकी युवती हूं, मै नाचना और गाना खूब जानती हूं, मेरी चमकीली नीली आंखे और घुंघरारेबाल लोगोंको बिना मोलका दास बना लेते हैं मैं ५ फुट ४ इंचकी लम्बी और मुझमें १२० पौंड वजन है, मै किसी सुन्दर युवासे विवाह करना चाहती हूं, जिसे विवाह करनाहो मुझसे लिखा पढी करै" दूसरे मैं लिखा है कि "एक अमेरिकन रमणीका वय ३० वर्षका है उसकी उंचाई ५ फुट ६ इंच और वजन १४० पोण्ड है उसके भूरेबाल भूरी आंखे चित्ताकर्षक चेहरा है. उसे खेल बड़े प्यारे है. वह २९ से ३० वर्षतकके सुन्दर प्रतिष्ठित युवासे विवाह करना चाहती है, उसे नखरेबाजी पसन्द नहीं है जिसे विवाह करनाहो अपना फोटो भेजे। यही सुधरे हुए देशके मनुष्यत्वका नमूना है, इसपर भी जो हिन्दू इनकी नकल करनेकोही सभ्यता समझते है. उनकी अकलकी बलिहारी है!

श्री सम्मेदशिखरजी—मुम्बईसे सेठ चुन्नीलाल झवेरचन्दजी, सेठ रामचन्द नाथाजी शिखरजी सम्बन्धी झगड़ेको तह करने गये हैं, ग्वालियरके भट्टारकजीकी इच्छाके माफिक पहिलेतो आरावालोंने सहमत होकर एक ११ सज्जनोंकी कमैटीको कार्य सुपुर्दकर दिया और कमैटीके अधिकार व नियम भी तयारकर लिये सब बातसे फैसला होगया. परन्तु फिर उन्हे स्वतंत्र अधिकारके भूतने दबाया इससे इस स्वीकारताकी रजिष्ट्रीमें आनाकाना कर दी. देखें आगे क्या होता है! भाइयों! समझ जाओ, एक मत होकर कार्य करोगे. तो तुम्हारा अधिकार कोई खा नहीं जायगा.

प्रार्थना.

विदित हो कि, हम विद्यालय, उपदेशक भंडारके आश्रयदातओंसे स्वीकारकी हुई द्रव्य भेजनेके लिये तथा सभासद महाशयोंसे पिछला बकाया मंगानेके लिये जैनमित्रद्वारा और कार्डोद्वारा तीन २ बार प्रार्थना कर चुके, परन्तु खेद है कि, दशपांचको छोड़ कोई भी महाशयने हमारी प्रार्थनापर ध्यान नहीं दिया. अतः आज फिर निवेदन है कि, धर्मकार्यमें आलस्य न कर शीघ्रही द्रव्य भेजनेकी कृपा कीजिये.

द्रव्यदाताओंको एक सुभीता.

डांकद्वारा द्रव्य भेजनेमें एक तो आलस्य आता है, दूसरे महसूल मुफतमें जाता है, परन्तु शोलापुरकी प्रतिष्ठामें हमारा दफ्तर जावेगा. वहांपर जो महाशय द्रव्य जमा करा देंगे, वे इस झंझटसे बच जावेंगे, और किसी बातकी जोखम भी न रहेगी. इस लिये भाइयोंकी यह अवसर न चूकना चाहिये.

महामंत्री.

Registered No. B. 288.

४ श्रद्धा धरापर जैनमित्र ही बिठावैगो ॥

३ भारी भ्रमभूरि हिये सत भयावने जे, तिन्हें दूर देखन को दूरके मगावेंगो। बहुत विपक्षी पक्षी, सन्देह अजगर के—

चोंच, चाम चक्षु, कठोर आक्रमन हेतु, जिनको निपुन जैन पावन पठावैगो। अंधकार अविचार अशुभी, अप्रैल आदि,

श्रीवीतरागाय नमः

जैनमित्र.

जिसको

सर्व साधारण जनोंके हितार्थ,

दिगम्बरजैनप्रान्तिकसभा बंबईने

श्रीमान् पंडित गोपालदासजी बरैयासे सम्पादन कराके

प्रकाशित किया.

जग जननहित करन कँह, जैनमित्र वरपत्र।
प्रगट भयहु—प्रिय! गहहु किन? परचारहु सरवत्र! ॥

च० वर्ष } आषाढ, श्रावण सं. १९६० वि. { अं. १०-११वां.

नियमावली.

१. इस पत्रका उद्देश भारतवर्षीय सर्वसाधारण जनोंमें सनातन, नीति, विद्याकी, उन्नति करना है.

२. इस पत्रमें राजविरुद्ध, धर्मविरुद्ध, व परस्पर विरोध बढानेवाले लेख स्थान न पाकर, उत्तमोत्तम लेख, चर्चा, उपदेश, राजनीति, धर्मनीति, सामायिक रिपोर्टें, व नये २ समाचार छपा करेंगे.

३. इस पत्रका अग्रिमवार्षिक मूल्य सर्वत्र डांकव्यय सहित केवल १।) रु० मात्र है, अग्रिम मूल्य पाये बिना यह पत्र किसीको भी नहीं भेजा जायगा.

४. नमूना चाहनेवाले आध आनेका टिकट भेजकर मंगा सक्ते हैं.

चिट्ठी व मनीआर्डर भेजनेका पताः—

गोपालदास बरैया सम्पादक.

जैनमित्र, पो० मोरेना (ग्वालियर.)

कर्नाटक प्रिंटिंग प्रेस, कांदेवाडी, मुंबई.

जैनमित्रके ग्राहक महाशयोंको सावधान हो जाना चाहिये.

क्यों कि,—जैनमित्रका चौथा वर्ष पूर्ण होने आया. एक अंक बाकी है. सो सदाके नियमानुसार ११ मास तक आपकी सेवा बजाकर अब बारवें महीने अपनी हाजिरीका फल (१।) मूल्य) चाहते हैं. अर्थात् जो महाशय श्रावण महीनेके भीतर २ मूल्य नहिं भेजैंगे, उनकी सेवामे १२ वां अंक १।>) के वी. पी. द्वारा भेजा जायगा. आशा है कि हमारे ग्राहक महाशय वापिस करकें अपना नाम नादिहिंदोंकी फेहरिस्तमें न लिखावैंगे. मूल्य बम्बई न भेजकर पं० गोपालदासजी बरैयाके नामसे पोष्ट—मोरेना जि० ग्वालियरको भेजना चाहिये.

नाथूराम क्लार्क.

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

जगत जनन हित करन कहँ, जैनमित्र वर पत्र ॥
प्रगट भयहु-प्रिय ! गहहु किन ?, परचारहु सरवत्र ! ॥ १ ॥

चतुर्थ वर्ष. | अषाढ, श्रावण, सम्वत् १९६० वि. | १०, ११ वां.

श्रीवीतरागाय नमः

दिगम्बरजैनप्रान्तिकसभा बम्बईके द्वितीय वार्षिकोत्सवकी

कार्रवाई.

जो कि सं १९६० जेष्ट सुदि ६-७-८-९ के दिन शोलापुरके बिम्बप्रतिष्ठोत्सवपर हुवा था.

पहिले दिनकी कार्रवाई ता० १ जून सं० १९०३ जेष्ठ सुदी ६ सोमवारके दिनका २॥ बजे पहिली बैठक श्रीमान् श्रेष्ठिवर्य रामचंद्र ब हालचंदजीके सभापतित्वमें हुई. बैठकके वास्ते न्यूगेटकी पश्चिमतरफ सभापति साहबके बागमें खास सभाकेलिये एक ध्वजापताकादिसे सुशोभित सभामंडप बनाया गया था. बाहरके जैनी-भाई प्रायः दो हजारके हाजिर थे. सभामें जो जो महाशय पधारते थे उनको वोलन्टियरोंकी एक टुकड़ी आदरसत्कारके साथ यथायोग्य आसनपर बिठाती थी. आनेवाले गृहस्थोंमें कौन २ प्रतिनिधि (डेलिगेट) थे और कौन २ सभासद थे सो उनके कपड़ेपर लगे हुये लाल और पीले रेशमी फूलोंसे प्रगट होता था. इस सभाको अपने व्ययसे आमन्त्रण देकर बुलानेवाले स्वागत कमेटीके चेयरमेन श्रीमान् शेठ रावजी नानचन्दजी गांधी हैं इन्होंने ही अपने बिम्बप्रतिष्ठोत्सवपर सबको आमन्त्रण देकर बुलाया है.

स्वागतकमेटीके सभापतिका व्याख्यान.

प्रथम ही स्वागत कमेटीके सभापति श्रेष्ठिवर्य रावजी नानचन्दजी गांधीने कहा कि.-

प्रिय धर्मबन्धुवो ! तथा प्रतिनिधि महाशयो ! आज दिगम्बर जैनप्रान्तिक सभाके द्वितीय वार्षिकोत्सवमें आपलोग जो यहांपर आये हैं उसके लिये मैं स्वागत कमेटीकी तरफसे आपका आभार मानता हूं.

यह अधिवेशन गतवर्ष माघ महीनेमें होनेवाला था परन्तु दुष्ट प्लेगाधिक्यके कारण अब इस ज्येष्ठ मासमें करना पड़ा.

ज्येष्ठ मासमें अतिशय गर्मीके शिवाय वर्षाका भय भी इन दिनोंमें है. ऐसे दिन होते हुये भी आप सब गृहसंबंधी अनेक कार्योंको एक तरफ रखके इस धर्मकार्यकेलिये तथा अपने जातिभाईयोंकी उन्नतिके उपाय शोचनेकेलिये अनेक प्रकारकी तकलीफें उठाकर यहां पधारे हैं, इसके लिये मुझे व हमारी स्वागत कमेटीको बडा ही आनंद हुवा है.

शोलापुर शहर कुछ मुम्बई अहमदाबाद सूरत पूणे वगैरह शहरोंकी समान रमणीय नहीं है. यहांपर स्थान वगैरेहका सुभीता आप लोगोंकी इच्छानुसार हम लोगोंके प्रबंधसे कदापि नहिं हुआ होगा तथापि जो कुछ हम लोगोंकी शक्तिसे प्रबन्ध करना शक्य था. वह हम लोगोंने किया है. जिसमें अनेक प्रकारकी त्रुटियें हुई होंगी वा होयेंगी परन्तु आशा है कि, आप महाशय कृपा करके हम लोगोंपर क्षमा करैंगे.

अपनी सभामें अनेक प्रकारकी सामाजिक व धर्मसंबंधी उन्नतिके विषयोंमें चर्चा होनेवाली है तो भी इस समय हमारी जैनजातिमें विद्योन्नतिकी तरफ जैसा लक्ष्य चाहिये वैसा लक्ष्य नहीं है. इस कारण इसकी चर्चा चलाकर जिन२ उपायोंसे विद्यावृद्धि हो सके, ऐसे उपाय योजने चाहियें. इसी प्रकार धर्मोपदेश देनेका कार्य भी जैसा चाहिये वैसा नहीं चलता है. इस कारण उपदेशका कार्य अच्छी तरहसे चल सके ऐसे उपाय भी करने चाहिये. जिससे अपने जैनीभाईयोंकी नैतिक व गृहस्थितिसंबंधी उन्नति होकर वे इस लोकसंबंधी व पारमार्थिक सुखोंके भोक्ता हों.

अन्तमें इस सभाके कार्यमें तथा रथोत्सवके कार्यमें हमारे यहांके लोकप्रिय कलेक्टर मेहरबान मेकानकी साहेब बहादुरने तथा मेहरबान पुलिस सुपरिंटेंडेंट बहादुरसाहिबने वा अन्यान्य सद्गृहस्थोंने बहुत ही सहायता दी है. इसलिये मैं सबका बहुत ही आभार मानता हूं. और शेषमें इस प्रान्तिक सभाकेलिये योग्य सभापतिके नियत करनेकी प्रार्थना करता हूं.

तत्पश्चात् मुम्बई निवासी शेठ माणेकचन्द पानाचन्दजीके प्रस्ताव और पूनानिवासी शेठ दयाराम ताराचन्दजी काशलीवाल तथा आणंदवाले शेठ माणकचन्द मोतीचन्दजीके अनुमोदनसे शेठ हरीभाई देवकरणावाले शेठ बहालचन्द रामचन्दजीने करतल ध्वनिके गड़गड़ाट व बाजोंकी मधुर ध्वनिके बीचमें सभापतिके आसनपर विराजित हुये.

सभापतिसाहबका व्याख्यान.

प्यारे सहधर्मी भाईयो व प्रतिनिधि महाशयो! आज अपने दिगम्बर जैनप्रान्तिक सभाके द्वितीयाधिवेशनके उत्सवपर आप महाशयोंने मुझे सभापतित्वका मान दिया उसकेलिये मैं अतिशय आभारी हूं।

ऐसी मोटी सभाके सभापतिपणेका काम मुझ सरीखे अल्पमति मनुष्यसे भले प्रकार बजानेमें आवेगा नहीं सो मैं जानता हूं परन्तु आप महाशयोंकी आज्ञा मुझे शिरोधार्य हैं और मेरा कर्तव्य है. तथा प्रत्येकको यह काम बारी २ करना ही पड़ैगा ऐसा जान कर मुझे स्विकार करना पड़ा।

सभाका अभिप्राय मथुराकी दिगम्बर जैन धर्मसंरक्षणी महासभाके अधीनस्थ रहकर काम करनेकी आवश्यकता.

इस दिगम्बरजैन प्रान्तिक सभाके स्थापन करनेका उद्देश्य यह है कि, अपनी जैन जातिकी जिस २ विषयमें हीनावस्था देखनेमें आती है उसके कारण निश्चय करके उनके दूर करनेके सीधे उपाय प्रगट करके काममें लानेकेलिये प्रयत्न करना और अपने दिगम्बरी भाइयोंमें प्रेरणा करके अपने साधर्मी भाइयोंकी अवस्था सुधारणा तथा अपने यहांके आचार्योंके अभिप्रायानुसार अपने धर्म और साधर्मी भाइयोंकी उन्नति होवे. ऐसे उपाय करना आदि है. इस विषयपर अपने उत्तर हिन्दोस्थानके विद्वानोंका ध्यान सबसे पहिले खिंचा था और वे जब सं १९४८ की सालमें अपने यहां शोलापुरमें चतुर्विध दानशालाकी स्थापना हुई थी, उस ही सालमें मथुराके निकट श्रीजम्बूस्वामीकी निर्वाणभूमिपर श्रीमान् राजा लक्ष्मणदासजी, सी. आई. ई., के अधिपतित्वके नीचे **श्रीमती दिगम्बरजैनधर्मसंरक्षणी महासभाकी** स्थापना कियी गई थी. धर्मसंबंधी बडेसे बडे काम तो उत्तर हिंदुस्थानके जैनी भाई हजारों वर्षोंसे करते आये हैं. उसी तरहँ महासभाकी उत्पत्ति भी वहांपर होय तो उसमें कुछ आश्चर्य नहीं हैं? देखिये, अपने यहां जो चौवीस तीर्थंकर हुये हैं वे सब हिंदुस्थानमें ही अयोध्या, हस्तिनापुर, बनारस वगैरहमें उत्पन्न हुये हैं. और उनके केवल ज्ञान और निर्वाण भूमिकी जगहँ भी श्री सम्मेदशिखरजी, चम्पापुरी, पावापुरी गिरनार वगेरह उत्तर हिंदुस्थानमें ही हैं. हालमें बडे २ विद्वान् टोडरमलजी जयचंदजी, बनारसीदासजी द्यानतरायजी भूधरदासजी दौलतरामजी सदासुखजी वगेरह जिनोंने बडे २ ग्रंथोंकी बचनिकादि करके अपनी समस्त जैन जातियोंपर महान उपकार किया है, वे भी उत्तर हिन्दोस्थानमें हुए हैं. इतना ही नहीं है किन्तु वर्तमानसमयमें जो कुछ विद्वान् देखनेमें आते हैं वे पंडित बलदेवदासजी, पंडित लक्ष्मीचंदजी, न्यायदिवाकर पंडित पन्नालालजी आदि भी उत्तर हिंदुस्थानके निवासी हैं. बहुत क्या कहैं अपनी इस दिगम्बरजैनप्रान्तिकसभा मुंबईके चालक सूत्रधार महामंत्री पंडित गोपालदासजी बरैया भी उत्तर हिन्दोस्थानका ही एक चमकता हुवा तारा है. और इनके ही प्रयत्नसे इस दिगम्बरजैनप्रान्तिकसभाका जन्म हुआ है. मथुरा महासभाके पेटेमें भिन्न २ प्रांतकी प्रांतिकसभायें समस्त हिंदुस्थानमें स्थापन होकर समस्त जैनी भाईयोंको एक विचारसे सब उन्नतिके काम पूरे करने चाहिये इसी उद्देश्यमें अपनी यह मुम्बईप्रांतिकसभा भी स्थापन हुई है. इस सभाका प्रथम अधिवेशन मुम्बई शहरमें संवत १९५७ के आश्विन महीनेमें हुआ था. उस समयसे आजतक इस सभाने कितने ही उन्नतिके कार्य किये हैं, वे सब प्रशंसा करनेयोग्य हैं. मुम्बईमें जोंहरी हीराचंद गुमानजी जैन बोर्डिङ्गस्कूलकी बडी सुंदर इमारत व उसमें पढनेवाले जैनविद्यार्थी, इसी प्रकार संस्कृत जैनविद्यालयकी मुम्बईमें स्थापना होना, और उसमें न्यायदीपिका, सर्वार्थसिद्धि, राजवार्तिक, जैनेन्द्रव्याकरण, यशस्तिलक चम्पू सदृश

महान ग्रंथोंका अभ्यास करनेवाले विद्यार्थीयोंकी हाजिरी, श्रीसम्मेदशिखर, गिरनार वगेरह तीर्थोंकी संभालकेलिये जैनी भाइयोंमें चर्चा और सुरत, आकलूज, आलंद, कोल्हापुर, नागपुर सरीखे स्थानोंमें जैनपाठशालावोंकी स्थापना, धर्मोपदेश करनेकेलिये गावोंगांव विद्वान् उपदेशकोंकेद्वारा उपदेश करनेका काम, जगहँ २ शास्त्रभंडारकी प्रेरणा वगेरह बडे २ काम इस सभाने जो करके दिखाये हैं, उस परसे आशा है कि ऐसे उत्तमोत्तम उन्नतिके कार्य यह सभा आगेकेलिये भी कर सकैगी. इस कामको पार लेजानेकेलिये सभाके महामन्त्री पंडित गोपालदासजी सूत्रधार तो हैं ही परन्तु उनके विचारोंको सहायता देनेवाले और अपने घरसे रुपयोंकी बडी बडी रकमें खर्च करनेवाले मुम्बईनिवासी जवेरी शेठ माणिकचंद पानाचंदजी, आकलुजवाले गांधी नाथारंगजी, नांदणीके भट्टारक जिनसेन स्वामी, कोल्हापुरके भट्टारक श्री लक्ष्मीसेन स्वामी, बेळगांवके वकील रा. सा. अण्णापा फड्यापा चौगुले बी. ए. एल्. एल्. बी., कोल्हापुरके विद्वान् पंडित कलापा भरमापा, नागपुरके सवाई संगही गुलाबसावजी रिखबसावजी वगेरह धार्मिक महाशयोंने अपने तनमनधनसे बडी भारी मदत दी है उसीसे ही ये सब काम पार पड़े हैं. इन महाशयोंका अनुकरण अपने अन्यान्य भाई भी करने लगेंगे तो अवश्य ही यह सभा बडे बडे कार्य कर सकैगी.

अब इस सभामें अपनेको जो जो कार्य करने हैं उनपर मैं थोडेंसेमें इशारा करके उस विषयमें आप सब भाइयोंके विचारानुमार सब कार्य किये जायगे, ऐसी आशा करता हूं.

प्रथम तो अपनी जाति उच्च शिक्षामें सबसे पीछे हैं उसकेलिये उपाय करना चाहिये. अपने दिगम्बरजैनियोंमें धर्मशास्त्र जाननेवाले विद्वानोंकी बडी न्यूनता है. इस कारण इस न्यूनताको दूर करनेकेलिये उचित प्रबन्ध करने.

अपने जैनधर्मानुसार ही अपने यहां लग्न विवाह मृत्यु वगेरहकी क्रिया वगेरह होना चाहिये।

विवाहकार्योंमें उडाऊ खर्च (व्यर्थ व्यय) होय तो उसको घटाना चाहिये.

मृत्युके पीछे रोने कूटनेका खराब रिवाज जहां २ होय उसके बंद करनेके उपाय करने.

बाल्यविवाह होते हों उनको रोकना; कन्याविक्रयकी नीच रीति घटनेका उपाय करना।

जिस २ तीर्थक्षेत्रकी व्यवस्था खराब हो उसका प्रबन्ध करना.

इस प्रकार मैं अपने विचारोंको संक्षेपमें सूचित किये हैं सो यदि आप लोगोंके ध्यानमें बैठे तो उनपर चर्चा चलाकर निर्णय करना और उसकेलिये सबजक्ट कमेटी नियत करके नियमानुसार कार्य चलाकर इस अधिवेशनका कार्य पूरा किया जायगा. इतना ही कहकर मैं अपना व्याख्यान पूर्ण करता हूं.

इस प्रकार सभापतिका व्याख्यान हुये बाद सभापति साहबकी आज्ञासे सभाके महामंत्री पंडित गोपालदासजी बरैयाने सभाकी एक वर्षकी रिपोर्ट पढकर सुनायी. जिसमें प्रबन्धखाता, अनाथालय, पारितोषिकभंडार, उपदेशकभंडार, सरस्वतीभंडार, जैनमित्र, मासिकपत्रकी रिपोर्ट सुनाई. जिसमेंसे पारितोषिक भंडारकी रिपोर्टमें विशेष कहा कि, जिस कार्यमें स्वयं नहिं लगते हैं

तब तक वह काम नहिं होता. धनाढ्य गण जब अपने लड़कोंको कालेजोंमें पढाते हैं तो गरीब क्यों न पढावे! अतः समस्त धनाढ्य महाशयोंसे प्रार्थना है कि, अपने बालकोंको सबसे पहिले धर्मविद्या पढावें. फिर विवाहार्थ संग्रह किये हुये सब रुपयोंके जीमनवारकेलिये थाल खरीदनेवाले मूर्खके दृष्टांन्तसे मेले प्रतिष्ठादिक कार्योंमें द्रव्य लगानेकी अनावश्यकता सिद्ध करके विद्याकी आवश्यकता प्रगट की. तपश्चात् उपदेशकभंडारकी रिपोर्टमे पहिले उसकी उत्थानिका भी मुखजबानी सुनाई. तपश्चात् सरस्वतीभंडारकी रिपोर्ट सुनाते समय उसकी प्रस्तावनामें अनेक भंडारोंमें विना संभालके गलती सड़ती डीमक आदि कीड़ोंकी खुराक बनतीहुई जिनवाणीके जीर्णोद्धारकी आवश्यकताका उपदेश युक्तिपूर्वक उत्तम भाषामें दिया.

तत्पश्चात् पांच बज गये इस कारण शेष रिपोर्टका सुनाना दूसरे दिनकेलिये मुलतवी रक्खा गया और सभापति साहबने सबजक्ट कमेटीकेलिये ५१ मेम्बरोंके नाम सुनाकर रात्रिको शास्त्रजीके बाद मन्दिरजीमें सबजक्ट कमेटी करनेका समय सुनाकर उपस्थित सभासदोंको धन्यवादपूर्वक जयध्वनिके साथ सभा विसर्जन कियी. इस अधिवेशनके समय सभासद स्त्रीपुरुष मिलकर अनुमान ८०० के थे.

रात्रिको नियमानुसार जबजक्ट कमेटी हुई और उपस्थित सभासदोंकी सम्मतिसे इस अधिवेशनपर १८ प्रस्ताव पेश करके उनपर विचार करना निश्चित हुवा.

दूसरे दिनकी कारवाई.

जेष्ट सुदि ७ मंगलवार ता. २–६–०३ के दिनको २ बजे सभाका कार्य प्रारंभ हुआ जिसमें प्रथम ही मंगलाचरणपूर्वक पं० गोपालदासजीने पंडित सभाके कार्यसे लेकर शेष रही सब रिपोर्ट सुनाई.

तत्पश्चात् शेट हिराचंद नेमचंदजी आनरेरी मजिट्रेट शोलापुरने जैनसमाजको अंग्रेजी राज्यसे क्या क्या सुख और लाभ हुये उनको प्रत्यक्ष दिखाकर नीचे लिखा प्रस्ताव पेश किया और शेठ हरीचंद नाथाजीके अनुमोदन होनेके अनन्तर सबकी सम्मतिसे पास (स्वीकृत) हुवा.

प्रस्ताव १ ला—राजराजेश्वर श्रीमान् सप्तम एडवर्डका दिल्लीमें राज्यारोहणोत्सव हुवा उसकेलिये यह सभा हर्ष प्रदर्शित करती है.

प्रस्ताव २ रा—शेठ गुरुमुखरायजी मुम्बई, दोशी माणिकचंद हीराचंद शोलापुर, बाबु बच्चूलालजी प्रयाग, शेठ दौलतरामजी डे. कलक्टर नीमच, लाला निहालचंदजी नुकुड़, शेठ प्रेमचंद मोतीचंदजी जोंहरी मुम्बईका शोक प्रदर्शित करना.

इस प्रस्तावको इंदोरनिवासी पन्नालालजी काशलीवालने पेश करतेसमय उक्त महाशय हमारी जैनजातिके कैसे हितैषी थे और इस सभाको क्या क्या सहायता दी उन सबको यथार्थ प्रकट करके शोक प्रकाश किया और शोलापुरनिवासी रावजी पानाचंदके अनुमोदनसे उपर्युक्त प्रस्ताव पास हुवा.

प्रस्ताव ३ रा—दिगम्बरजैनविद्वज्जनसभाने अभीतक अपना कार्य प्रारंभ नहिं किय

उसका कारण जानकर आगेकेलिये उसका काम भलेप्रकार चलानेकी प्रेरणा करना.

इस प्रस्तावको पं० गोपालदासजीने आवश्यकता प्रदर्शनपूर्वक पेस किया और हिरोळीनिवासी हेमचंद दलुचंदजी तथा शोलापुरनिवासी माणेकचंद सखारामजीने अनुमोदन किया और सबकी सम्मतिसे पास हुवा.

प्रस्ताव ४ था—सर्कारी आँड मिनिस्ट्रेशन वार्षिक रिपोर्टें प्रसिद्ध होतीं हैं उनमेंसे विद्याविभागकी रिपोर्टमें, और सानिटरी कमीशनकी (आरोग्यसंबंधी) रिपोर्टमें तथा जेलखानेकी रिपोर्टमें जैनियोंका जुदा खाना नहीं है सो इनमें जुदा खाता बनानेकी सरकारको प्रार्थना करनी चाहिये.

इस प्रस्तावको मिष्टर लल्लूभाई प्रेमानंद एल्. सी. ई., मुम्बईनिवासीने पेश करते समय प्रगट किया कि—भारतवर्षकी सरकार तरफसे प्रतिवर्ष पृथक् २ खातोंका रिपोर्ट छपा करता है उनमेंसे विद्याविभाग, सेनेटरी कमीशन (आरोग्यसंबंधी) और जेलखानेकी रिपोर्टमें जैनजातिकी इस प्रान्तमें बडी भारी संख्या होते हुये भी जैनजातिकेलिये एक जुदा खाना नहिं रक्खा है. इन तीनों विभागोंका उद्देश्य सुनाकर विद्याविभागमें हिंदुस्थानकी अनेक कोमोंके विद्यार्थी पढते हैं. उनकी संख्या जाननेकेलिये सरकारने हिंदु, मूसलमान, पारसी वगेरह भिन्न २ जातियोंमेंसे जैनी विद्यार्थियोंको बौद्धोंके खानेमें लिखा है. तथा जेलखानेकी रिपोर्टसे प्रत्येक जातिकी नैतिक अवस्था (सदाचारता) प्रगट होती है सो भी सरकारने जैनजातिको बौद्धोंमें लिखा है. इस समय जेलखानेको देखेंगे तो बौद्ध व जैन औसत ७,९०० से १ बौद्ध वा जैन कैदमें है. पारसी जातिके २,९०० मनुष्योंमेंसे एक पारसी कैद है. मुसलमान ७०० मेंसे एक और हिंदु १,००० मेंसे एक कैद है. इसपरसे ज्ञात होता है कि, जैनजाति नीतिमें सबसे ऊचे दरजेपर है. तीसरे सेनीटरी (आरोग्य) खातेमें जैनियोंकी मृत्यु समस्त जातियोंसे अधिक होती है. ये सब विषय जाननेकेलिये सरकारी रिपोर्टमें जैनियोंका खाना जुदा रखनेकी प्रार्थना करनी चाहिये.

इस प्रस्तावका शोलापुरनिवासी रा. रावजी मोतीचन्द वकील तथा धाराशिवकर नेमचंद बालचंद वकीलने अनुमोदन किया और सबकी सम्मतिसे पास हुवा.

प्रस्ताव ५ वां—इस सभाकी प्रबंधकारिणी सभाके सभासदोंके नाम चुनकर सभाको ठीक करना.

इस प्रस्तावको बीजापुर निवासी सेठ राघवजी नाथाजी गांधीने पेश किया, और इंडीनिवासी शेठ माणिकचन्द जादवजीने अनुमोदन किया और सबकी सम्मतिसे प्रस्ताव पास हुवा.

प्रस्ताव ६ ठा—मुम्बई प्रान्तमें रहनेवाले जिन २ जैनी विद्यार्थियोंने ग्रेजुयेटकी पदवी हांसिल करी उनको सभाकी तरफसे धन्यवादपत्र प्रदान करना.

इस प्रस्तावको शोलापुर निवासी शेठ जीवराज गौतमचंदजीने एक सारगर्भित व्याख्यानद्वारा आवश्यकता बताकर पेश किया. और शेठ

हीराचन्द रामचन्द गांधीने अनुमोदन किया तब सबकी सम्मतिसे स्वीकृत हुवा.

प्रस्ताव ७ वां—जैन जातिमें विद्याशिक्षाका प्रचार वर्तमानमें है उससे अधिक प्रचार करनेका प्रयत्न करना.

इस प्रस्तावको शोलापुर निवासी शेठ हीराचन्द नेमचन्दजी आनरेरी माजिष्ट्रेट साहबने सार गर्भित युक्तियोंसहित व्याख्यान करके पेश किया. और करहल निवासी पंडित धर्मसहायजी और इंडीनिवासी शेठ सखाराम कस्तुरचंदके अनुमोदन किये बाद पास हुवा.

प्रस्ताव ८ वां—जैनविवाह पद्धतिसे विवाह करनेवाले भाइयोंको एक २ धन्यवादपत्र देना और भविष्यतमें इस रीतिका उत्तरोत्तर प्रचार बढानेकी प्रेरणा करना.

इस प्रस्तावको जयपुर निवासी पं० जवाहिरलाल बाकलीवाल साहित्यशास्त्रीने त्रिवर्णसंस्कारोंके जैन मतानुसार करनेकी आवश्यकता प्रदर्शित करके पेश किया. और मोहोलकर रावजी मलूकचन्द तथा इंडीकर गोवनजी बेचरने अनुमोदन किया तब सर्वानुमतिसे प्रस्ताव स्वीकृत हुवा.

तत्पश्चात् पांच बज गये तब बाकीके प्रस्तावोंपर अगले दिन विचार करनेकी आज्ञा देकर सभापतिसाहबने जयध्वनिके साथ सभा विसर्जन किया.

विशेष कार्रवाई—सातवें प्रस्तावके पास हुयेबाद इंडीनिवासी भाई सखाराम कस्तूरचन्दने (जिसकी उमर १५ वर्षकी होगी) सभापति साहबसे आज्ञा लेकर बडे हर्ष और उत्साहके साथ वेधड़क होकर प्रथम तो सभाके मुख्य प्रबन्धक महाशयोंको उत्तम रीतिसे धन्यवाद दिया. तत्पश्चात् अंग्रेजीमें वा फिर महाराष्ट्रीय प्राञ्जल भाषामें जैनियोंकी वर्तमान हीन अवस्था दिखा कर उसको सुधारनेकी तथा इस सभाकी सहायता करनेकी बहुत ही सुन्दर रीतिसे प्रार्थना किया. इसके व्याख्यानमें कहीं भी रुकावट वा हिचकना नहीं था. धाराप्रवाह प्रत्येक अक्षर सम्बन्ध लिये हुये निकलते थे. जिसको सुनकर समस्त सभासदोंने बारंबार करतलध्वनिसे हर्ष प्रगट किया और शोलापूर निवासी माणेकचंद सखारामजी इसके व्याख्यानसे प्रसन्न होकर ५) रु. पारितोषिक दिया. यह विद्यार्थी यदि इसी प्रकार प्रति सप्ताह व्याख्यान दे देकर वक्तृत्वशक्ति बढाता रहैगा तो भविष्यतमें एक उत्तम वक्ता होगा. आशा है कि वह भाई अवश्य ही उत्तम वक्ता बननेकी चेष्टा करैगा.

रात्रिकी कार्रवाई.

आज रात्रिको ७॥ बजे समस्त सभासदोंके उपस्थित होनेपर एक उपदेशकसभा हुई जिसमें प्रथम ही शेठ जीवराजजीने सभाका प्रारंभपूर्वक रा.रा. रावजी मोतीचंदजी वकीलको सभापति किया फिर पं. जवाहिरलालजी साहित्यशास्त्रीने मंगलाचरण करके उसको शास्त्रीय प्रमाणसे सार्थक सिद्ध किया—तत्पश्चात् शेठ चुनीलाल जवेरचंद मंत्री तीर्थक्षेत्र सभाने तीर्थक्षेत्रोंकी अवस्थाके विषयमें गुजराती भाषामें व्याख्यान दिया. शिखरजीकी दोनों कोठियोंका विशेष वर्णन किया. तत्पश्चात् पं० गोपालदासजीने मंगलाचरणमें जिनवाणीको नमस्कार करके सप्तभंगीका स्वरूप

समझाया. फिर जीवके विषयमें व्याख्यान देनेकी प्रतिज्ञा करके प्रथम ही नास्तिक मतको खंडन करके जीवकी नित्यता सिद्ध की. तत्पश्चात् जीवका स्थान लोक व लोकके आकारादिकका वर्णन किया. फिर जीवके सांसारी और मुक्त ऐसे दो भेद किये. इतनेमें ही उष्णताधिक्यके कारण उनकी तबियत ऐसी बिगडी कि यदि खडे रहते तो गिर पडते. सो बैठ गये. व्याख्यान देनेमें असमर्थ समझ उनको बागमें वायु सेवनार्थ ले गये. इधर सभापतिकी आज्ञासे एक भाईने ५ मिनिटतक मराठी भाषामें विद्याविषयक व्याख्यान दिया. फिर सभापति साहबने गोपालदासजीके छोडे हुये विषयमें पन्नालालजीको कहनेकी आज्ञा दियी. तब उन्होंने अपनी लघुताप्रदर्शनपूर्वक कहना प्रारंभ किया. प्रथम ही संसारी जीवके भेदमें संसारका स्वरूप और पंचपरावर्त्तनका स्वरूप कहा. फिर जीवोंके भेद करके देव नारकी मनुष्यादिकका विशेष वर्णन किया. श्रोतावोंकी गरमीकी आकुलतासे व्याख्यान संकोचकर पूर्ण कर दिया. फिर सभापति साहबने व्याख्यानकी प्रशंसादिक करके सभा विसर्जन कर दी.

तीसरे दिनकी कार्रवाई.

आज इस सभाकी तीसरी बैठक ता० ३ जून बुधवारके दिनको २॥ बजे प्रारंभ हुई. मंगलाचरणके पश्चात् नीचे लिखा प्रस्ताव पेश हुवा.

प्रस्ताव ९ वां—लग्न (विवाह) तथा मृत्युसंबंधी कार्योंमें होनेवाले व्यर्थ व्ययको कम करना.

इस प्रस्तावको धाराशिवनिवासी शेठ नानचंद बहालचंदजीने युक्तिपूर्वक व्याख्यान देकर पेश किया. और शोलापुरनिवासी दाजी दलुचंद, करमालाकर रावजी तुलजाराम तथा आळंद निवासी नानचंद सूरचन्दजीने अनुमोदन किया तब सबकी सम्मतिसे पास हुवा.

प्रस्ताव १० वां—मृत्युके पीछे छाती कूटनेका रिवाज बंद करना.

इस प्रस्तावको पेश करते समय शेठ माणकचंद पानाचंदजीने फरमाया कि,—बडे अपशोचकी बात है कि यह प्रस्ताव गये वर्षमें पास हुवा था तो भी इस वर्ष फिर भी पेश करनेमें आता है. इसका कारण यह ही है कि इस प्रस्तावको पास हुये. बाद अमलमें लानेका प्रयत्न हुवा नहीं. यह रिवाज जोधपुर मारवाड तरफसे इधर गुजरातमें आया है. ऐसा दंतकथाओंपरसे मालूम होता है. मारवाडके रजवाडोंमें जब राजगोतीका मरण होता था तो राणियें रोने व छाती कूटनेकेलिये महलोंमे बाहर नहिं होतीं थीं. वे सब अपनी दासियोंको बाहर भेजतीं थीं. वे ही रोतीं पीटतीं थीं दासियोंका इस प्रकार करनेमें उनका स्वार्थ सधता था. उनको कपडा वगेरह मिलते थे. तत्पश्चात् घरके बाहर रोने पीटनेका यह रिवाज मारवाडकी अन्यान्य जातियोंमें फैला. फिर गुजराततक इसका दौरा हुवा. अब इसका गुजरातमें बहुत ही बेढंगी निर्लज्जतारीतिसे सर्वत्र प्रचार है. जिस जातिमें यह रिवाज नहीं हैं उनकी दृष्टिमें यह बहुत हास्यजनक है. ऊंचे कुलकी पढी लिखी समझदार स्त्रियें जो कभी घरसें बाहर नहीं हुई और कभी भी परपुरुषका मुह देखना नहिं चाहतीं, बाजार वगेरह बडी सडकोंपर उघाडे मुह कभी फिरती नहीं, ऐसी कुलवान स्त्रियें भी इस रिवाजका

अवलम्बन करके प्रगट रस्तावोंपर उघडे मुह छाती कूटती है उस समय जब हम देखते हैं तो अपनेको कितना शर्मिंदा होना पडता है? सो विचार करना चाहिये. इस रिवाजको बंद करनेका उपाय यह ही एक दीखता है कि हमारे यहांकी वृद्धा स्त्रियें यदि छाती कूटने व शोकसूचक तालदार रोनेकी कशम खा जांय तो यह रिवाज शीघ्र ही बंद हो सक्ता है.

तत्पश्चात् माणेकचन्द मोतीचन्द तथा शिवलाल मलूकचन्दजीने अनुमोदन किया. तब सबकी सम्मतिसे यह प्रस्ताव स्वीकृत हुवा.

प्रस्ताव ११ वां—बाल्यविवाह, वृद्धविवाह, कन्याविक्रयका रिवाज जैनजातिको बहुत ही हानिकारक है. इस कारण इसको बंध करनेकी प्रेरणा व यत्न करना.

इस प्रस्तावको शोलापूर निवासी शेठ मोतीचंद गुलाबचंदजीने पेश किया—और रंगनाथ दामोदर मोहोलकर, दत्तात्रय अण्णा बुबणे शोलापूरकर, जीवराज गौतम नीमगांवकरने अनुमोदन किया तत्पश्चात् सबकी सम्मतिसे स्वीकृत हुवा.

प्रस्ताव १२ वां—विवाहादि शुभकार्यमें वेश्या नृत्य बंध करनेकी प्रेरणा करना.

इस प्रस्तावको पंडित रामलालजी उपदेशकने वेश्या नृत्यकी हानिप्रदर्शन पूर्वक पेश किया और कोठारी प्रेमचन्द धनजी मोहलकर तथा रामचन्द कस्तूरचन्द अकलकोटनिवासीने कवित्तादिसे वेश्या नृत्यके नुकसान दिखलाकर तथा दयाराम ताराचन्दजी काशलीवाल पूनानिवासी और फूलचन्द माणेकचन्द परंडेकरने भी अनुमोदन किया. तब यह प्रस्ताव स्वीकृत हुवा.

प्रस्ताव १३ वां-जिस २ तीर्थक्षेत्रका हिसाब आया है उनके प्रबन्धकर्त्तावोंको धन्यवाद पत्र देना. और जहां २ से हिसाब नहिं आया उनको हिसाब भेजनेकी प्रेरणा करनी और जिस जिस तीर्थक्षेत्रपर अव्यवस्था हो वहांपर योग्य बन्दोबस्त करना.

इस प्रस्तावको तीर्थक्षेत्रोंके मंत्री शेठ चुनीलाल जवरेचन्दजीने पेश किया और २२ तीर्थोंका हिसाब आया है सो प्रगट किया और शोलापुरनिवासी रावजी खेमचन्द वकील तथा धाराशिव निवासी नानचन्द बाहालचन्द वकीलने अनुमोदन किया और सबकी सम्मतिसे यह प्रस्ताव स्वीकृत हुवा.

प्रस्ताव १४ वां—जिन २ जैनी भाइयोंने श्रावकके अष्टमूलगुणधारण नहिं किये, उनको धारण करनेकी प्रार्थना करना.

इस प्रस्तावको पेशकरते समय पं. गोपालदासजीने युक्तिप्रमाणसे श्रावकोंको अवश्य ही धारण करना चाहिये ऐसा सिद्ध किया. इसके धारण किये विना '**श्रावक**' यह संज्ञा ही नहिं हो सक्ती क्यों कि यह श्रावकका पहिला दरजा है इत्यादि. इस प्रस्तावको शोलापूरनिवासी पासु गोपालशास्त्रीने अनुमोदन किया तब सबकी सम्मतिसे पास हुवा.

तत्पश्चात् सभापतिकी सूचनासे शेठ हीराचन्द नेमिचन्दजीने सुरत निवासी शेठ नवलचंद शोभागचंदका तार आया था सो सुनाया. उसमें इस सभाकी दो दिनकी कारवाई तथा योग्य स-

भापतिके चुनने बाबत अपनी तरफसे अनुमोदन व हर्ष प्रगट किया था.

तत्पश्चात्—सभाके मूल सभापति शेठ माणेकचंद पानाचंदजी जोंहरीने शोलापुरकी चतुर्विधदानशालाके वैद्यक विभागमें जो एक विद्यार्थी तीन वर्षतक देशी वैद्यकविद्या पढकर पास होगा उसको पहिले वर्ष ६) रु. महीना, दूसरे वर्ष ७) रु. महीना, तीसरे वर्ष ८) रु. महीना इस शर्तपर देना कबूल किया कि यदि इस प्रान्तमें कोई भाई जैन पवित्र औषधालय खोलैगा तो उसमें तीन वर्षतक २९) रु महीनेपर औषधालयका काम करना पड़ैगा. इस स्वीकारताको प्रगट करनेबाद वैद्यवर किसनराव गड्गोलेने वैद्यक विद्या विषयमें द्रव्य देनेवाले महाशयको धन्यवादपूर्वक वैद्यकशास्त्रका अभिप्राय प्रगट करके वैद्यकशास्त्रके शीखनेकी प्रेरणा करी.

तत्पश्चात् सभापति साहबने शोलापुरनिवासी माणिकचंद सखारामके तरफसे उस सखाराम कस्तूरचंद लड़केको ९) रुपया इनामके दिये. और उस लड़केने बहुत ही योग्यतासे व्याख्यान देकर स्वीकार किया.

तत्पश्चात् शेठ हीराचंद नेमचंदजीने इस प्रांतिक सभाको अपने व्ययसे बुलानेवाले प्रतिष्ठाकारक शेठ रावजी नानचंदजीके तरफसे सभाके समस्त खातोंमें ५०१) रु० देनेकी स्वीकारता प्रगट की. मुं० बावी जिल्हा शोलापूर निवासी शेठ रामचंद अभयचंदके निकट ५०००) की एक रकम है उसका व्याज शोलापूर चतुर्विध दानशालाके वैद्यक खातेमें एक वैद्य विद्यार्थी तयार करनेके लिये देना स्वीकार किया सो प्रगट किया. इन सब स्वीकारतावोंके प्रकाश करते समय सभासदोंकी तरफसे धन्यवाद सूचक व स्वीकारता सूचक करतल ध्वनिका बडा शोर होता था.

तत्पश्चात् अचानक वर्षा आजानेसे ४॥ बजे सभाके ४ प्रस्ताव दूसरे दिन पेश करनेकेलिये, मुलतवी रखनेपर सभा जयध्वनिके साथ विसर्जन हुई.

चौथे दिनकी कारवाई.

आज ता. ४–६–०३ के दिनको २॥ बजे चौथी बैठक प्रारंभ हुई. मंगलाचरणके पश्चात् नीचे लिखे प्रस्ताव स्वीकृत हुये ।

प्रस्ताव १५ वां—सरस्वतीभंडारके मंत्री शेठ प्रेमचन्द मोतीचन्दजीके परलोक हो जानेसे इस खातेको विद्याविभागमें मिलाकर विद्याविभागके मन्त्रीके सहायक लल्लूभाई प्रेमानन्द एल्. सी. ई. मुम्बईको नियत किया जावे.

इस प्रस्तावको आळंदनिवासी माणकचन्द मोतीचन्दजीने पेश किया और अक्कलकोटनिवासी फूलचंद देवचन्दके अनुमोदन करनेसे पास हुवा.

प्रस्ताव १६ वां—जैनजातिमें मृत्युकी संख्या अन्य जातियोंकी अपेक्षा बहुत ही जियाद है. उसके कम होनेका उपाय करने चाहिये.

इस प्रस्तावको पं. गोपालदासजी बरेयाने पेश करते समय युक्तिपूर्वक दैव और पुरुषार्थको विवेचन करके प्रगट किया कि, जैनजातिमें मृत्युसख्या अधिक होनेके दो कारण हैं. एक तो हम लोग जब बीमार पडते हैं तो दैवको (कर्मको) मुख्य समझ कर चिकित्सा करानेमें आलस्य कर जाते हैं. वा शरीरकी चेष्टा नहिं करते सो बड़ी

मूल है. दूसरे खाने पीने सोने उठने वगेरह दिनचर्यामें बेपरहेजगी भी बहुत करते हैं. सो ऐसा चाहिये नहीं. क्यों कि "शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनं" शरीर ही धर्मसाधनका मुख्य कारण है इत्यादि.

फिर धन्नालालजीके अनुमोदन करनेपर सबकी सम्मतिसे स्वीकृत हुवा.

प्रस्ताव १७ वां–लग्न कराते समय विवाह पढानेवाले गोरकेपास जाना पड़ता है. उस समय गोरको चाहिये कि लड़केलडकीके पिताको पूछकर वरकन्याकी उमर वगेरह अपनी वहींमें (रजिष्टरमें) लिखलिया करें.

इस प्रस्तावको गोवन वेचरजी इंडीवालोंने पेश किया और फलटणनिवासी नत्थु जीवनने अनुमोदन किया और यह प्रस्ताव स्वीकृत हुवा.

तपश्चात् शेठ हीराचन्दजी नेमिचन्दजीने पूनानिवासी शेठ दयाराम ताराचन्दजीकी तरफसे ५१) शिखरजीके मुकदमेके भंडारमें और २५) उपदेशक भंडारमें दान देनेकी स्वीकारता प्रगट की.

तत्पश्चात् सभापति साहबनें शेषका व्याख्यान दिया जिसमें सभाके प्रबंन्धकर्त्ता, सभासद, प्रतिनिधि मेलेमें पधारनेवाले तथा सब कार्योंमें मूलभूत शेठ रावजी नानचन्दजीके गुण व कार्योंकी प्रशंसा करके सभाकी तरफसे आभार माना और सबको धन्यवाद दिया–तथा जो प्रस्ताव पास हुये उनपर सब भाईयोंको अमल करनेकी प्रेरणा व प्रार्थना की और प्रतिवर्ष इस सभाके अधिवेशनमें इसी प्रकार कृपा करके पधारनेकी प्रेरणा की. और अधिवेशनका कार्य पूरा किया.

तपश्चात् सभापतिसाहबके द्वारा जैनविवाहपद्धतिके अनुसार अपने पुत्रपुत्रियोंके विवाह करानेवाले जैनि भाईयोंको (जो कि वहांपर उपस्थित थे उनको) छपे हुये मनोहर धन्यबाद पत्र वितरण किये गये. और यह भी प्रगट किया कि जिन २ के नाम मालूम होते जांयगे उसी प्रकार धन्यवादपत्र भेजे वा दिये जांयगे.

तपश्चात् बावीकर बालचन्द रामचन्द लड़केने लघुतापूर्वक मराठी भाषामें मृत्युविषयक प्रस्तावपर छोटासा व्याख्यान दिया.

तत्पश्चात् जीवराज गौतमचन्दने कई प्रशंसापत्र सुनाकर करसनदास जगजीवनजी गोरक्षक स्वेताम्बरी भाईका परिचय कराया–फिर उन्होने शांतिनाथ भगवान्की स्तुति करके गद्यपद्य द्वारा गोरक्षाके विषयमें व्याख्यान दिया.

तपश्चात शेठ दयाराम ताराचन्दजी पूनेकरने सभाकी तरफसे प्रगट किया कि इस सभाका अधिवेशन प्रतिवर्ष हुवा करता है. नैमित्तिक भी होता है. पहिली वर्ष आकलूज, कुंथलगिरी और बम्बईमें हुवा अबकी बार शोलापुरमें द्वितीय वार्षिकोत्सव हुवा. अगली साल कहांपर होगा सो निश्चय नहीं है. यदि कहींके भाई सभाको आमन्त्रण देना चाहें तो दो महिने पहिले प्रार्थना पत्र सभामें भेजना चाहिये.

तत्पश्चात् रा. रा. रावजी मोतीचंद वकीलने सभाके उद्देश्य सुन कर सभाकी नियमावलीमें प्रतिनिधिबाबद कुछ सुधारा करनेकी प्रार्थना किधी जिसका उत्तर शेठ हीराचंद नेमचंदजीने प्रतिनिधियोंके फारम सुनाकर दिया कि आपके कहनेके मुजब ही इस सभाकी तरफसे प्रत्येक पंचायतोंमें

फारम भेजे गये और वहां पंचोंकी बहु सम्मतिसे प्रतिनिधियोंके नाम लिखकर पंचोंके हस्ताक्षरों- सहित ही फारम पिछे आनेपर वह प्रतिनिधि समझे गये. ऐसा कहके फिर सभासद बननेकी प्रेरणा करी.

तत्पश्चात् १८ वां प्रस्ताव सभापति साहबको धन्यवाद देनेका सखाराम नेमचन्द- जीनें पेश किया. अर्थात् सभापति साहबके कार्यकी प्रशंसाकरके उपकार माना और धन्यवाद दिया. तत्पश्चात् शेठ रावजी कस्तूर- चंदजीने बडी योग्यतासे अनुमोदन करके सभाके कार्याध्यक्षोंका व सभाका हृदयमें गद्गद कंठोंसे उपकार माना तथा सभाको आशीर्वाद दिया और सभाके फंडमें ५१) रुपये देकर अपना हार्दिक सच्चा उत्साह प्रगट किया.

तत्पश्चात् माणेकचंदजी मियाचंदजी शोलापुर करने मेलेके सब यात्रियोंका तथा सभाके सभा- सदोंका आभार मानकर धन्यवाद दिया.

तत्पश्चात् शेठ हीराचंद नेमचंदजीने प्रगट किया कि, मंगसरवदि २ (दक्षणी कार्तिक वदि२) से प्रतिवर्ष रथयात्रा यहांपर हुवा करेगी.

तत्पश्चात् शेठ रावजी नानचंदजीकी तरफसे प्रगट किया कि, "जो रथ इस रथयात्राकेलिये बनाया गया है वह शोलापूरकी पंचायतीमें अर्पण करता हूं."

इसी बीचमें फिर सभाकी सहायतार्थ जो जो भाई रुपयोंकी भेट करते थे, उनके नाम प्रगट किये जोकि सबके सब अन्यत्र लिखे गये हैं.

तत्पश्चात् जवेरी माणेकचन्द पानाचन्दजीनें सभापति, चेयरमेन आदि कार्याध्यक्षोंका पुष्पहा- रादिसे सत्कार किया और बडीभारी हर्षध्वनिके (करतल ध्वनिके) साथ चारों ओरसे पुष्पवृष्टि हुई. इस वक्तका आनन्द भाइयोंके चहरेपर प्रगट था वह देखनेसे ही अनुभव होता था. लेखनीसे लिखा जाना असंभव है. फिर बारंबार जयध्वनिके साथ सभाका उत्थान (विसर्जन) हुवा. फिर सभामंडपबाहर सभाके सभा- सदोंका फोटो लिया गया. और सब भाई बडे हर्षान्वित चहरेसे सभाकी व सभाके कार्योंकी प्रशंसा करते करते ५।। बजे अपने २ डेरेपर गये.

रात्रिकी कार्रवाई.

इसीदिन अर्थात् ज्येष्ठ सुदी ९ को रात्रिके ८ बजेसे सब भाइयोंकी आज्ञासे एक सभा हुई. जिसमें प्रथम ही शेठ माणेकचंद पानाचंदजीकी प्रार्थना और शेठ दयाराम ताराचंदजी पूनाकरके अनुमोदनसे शेठ हीराचंद नेमिचंदजी आनररी माजिस्ट्रेट शोलापुरने सभापतिका आसन ग्रहण किया. तत्पश्चात् पं. गोपालदासजीने बन्धतत्त्वके विषयमें मंगलाचरणपूर्वक व्याख्यान देना प्रारंभ किया. जिसको स्थानाभावसे प्रगट नहिं कर सक्ते. बाकी यह विषय यूनियन क्लबके कई महाशयोंकी प्रेरणासे रक्खा गया था सो पंडि- तजीने शास्त्रप्रमाण युक्तियोंसे इस विषयको ऐसी उत्तम रीतिसे कहा कि अन्यमती भाइयोंको इसके सुननेसे पंडितजीकी जिनधर्मज्ञतापर बडी श्रद्धा हुई. और इसका यह फल हुवा कि दूसरे दिन मोक्ष- तत्त्वके विषयमें व्याख्यान सुननेकी इच्छा प्रगट की और यह भी प्रगट किया कि यह व्याख्यान कलदिन सबेरे अथवा रात्रिका ७ बजे सरकारी हाईस्कूलमें हो, सोई मंजूर हुवा.

फिर दूसरे दिन जेष्ठ सुदी १०मीके दिनको प्राय: २ बजेसे रथयात्रा हुई. जिसके जलूस और भाइयोंके उत्साहका कहांतक वर्णन करें. एक अपूर्व ही शोभा थी.

फिर रात्रिको ७॥ बजे यूनियन क्लबमें मोक्षतत्त्वका व्याख्यान हुवा. जिसमें उन्होंनें कर्त्ताका खंडन भी बडी युक्तिसे किया. इसमें प्राय: सब अन्यमती बडे २ गण्यमान्य ओधेदार व अंगरेजी के विद्वान थे. व्याख्यानसे बहुत खुश हुये. मन्त्री वगेरहने बहुत प्रशंसा की.

इनके शिवाय—जो श्री जिनबिम्बप्रतिष्ठाके पंच कल्याणक उत्सव थे, वे इन ही पांचों दिनोंमें सभाका समय छोडकर शेष समयोंमें बडे आनंदके साथ हुये प्रतिष्ठाकार वह ही सज्जनोत्तम सदाचारी पंडित पासू गोपालजी शास्त्री अध्यापक जैन पाठशाला शोलापुर थे. जिन्होंने शास्त्रोक्तरीतिसे समस्त क्रियाकलाप यथायोग्य करवाये. जिसमे कोई भी विघ्न मेले वा सभामें नहिं हुवा. यात्री गण रथयात्राके दूसरे दिनतक रहे. इस देशमें सबका प्रतिदिन भोजनादिकसे सत्कार करना आदि प्रतिष्ठाकारकी तरफसे होता है. सो इन्होंने भी बहुत ही उत्तम प्रबन्धके साथ सब भाईयोंको यथायोग्य भोजनादिकसे सत्कार करके सद्धर्मि वात्सल्यको बेहद प्रगट किया. और जिले भरमें प्रभावनांगका डंका बजा दिया. जिसकेलिये प्रतिष्ठाकार महाशयको जितना धन्यबाद दिया जाय उतनाही थोडा है. हमको इस मेले और सभाके अधिवेशनोंपर समस्त भाइयोंके सोत्साहपूर्वक हाजिर रहने वा सभाकेलिये बिना मांगे बिना प्रेरणा किये ही धडाधड रुपयोंकी भेट करने आदिकार्योंसे पूर्णतया दृढ निश्चय हो गया है कि यहांके धर्मात्मा धनाढ्य गण ही मुम्बई प्रान्तकी उन्नति करनेमें सर्वाग्रगण्य होंयगे उसका प्रत्यक्ष और प्रसिद्ध दृष्टांत यही है कि ५० हजार रुपये लगाकर आज १२ वर्षसे चतुर्विध दानशाला खोलकर चलाते है जिससे इस प्रान्तको कितना लाभ होता है सो इस प्रान्तवाले ही जानते हैं. हम श्रीमज्जिनेन्द्रप्रणीतधर्मके प्रभावसे यह ही चाहते हैं कि शोलापुरके धर्मात्मा उदार शेठोंकी चिरनिरोगता व चिरायु बनी रहै.

पाठक महाशय! अब एक बात द्रव्यदातावोंके नाम प्रगट करनेकी रह गई है सो प्रकट करके इस लेखको पूर्ण करता हूं.

शोलापुरकी बिम्बप्रतिष्ठाके समय दि. जैन प्रा. सभाकी भेट करनेवाले महाशयोंकी नामावली.

५०१)	श्रीमान् शेठ	रावजी नानचंदजी	शोलापूर.
५१)	श्रीमान् शेठ	रावजी कस्तूरचंदजी	,,
१०१)	,,	बहालचंद रामचंदजी	,,
५१)	,,	शेठ हीराचंद नेमचंदजी	,,
५१)	,,	रामचंद शाकलचंदजी	,,
७५)	,,	हरीचंद परमचंदजी	,,
५१)	,,	नारुबा अण्णा बुबणे	,,
२५)	,,	दोशी हरीचंद अबचल	,,
२५)	,,	माणेकचंद सखाराम	,,
११)	,,	दाजीबा दुलूचंदजी पंधाराकर	,,
५)	,,	माणीकचंदजी बालचंदजी	,,
५)	,,	तात्या शेठ	,,
४०१)	,,	शेठ अमीचंद परमचंदजी	पंढरपूर
१०१)	,,	रेवजी धनजी	गुंजोटी

१०१)	श्रीमान् शेठ गणेश गिरधर		परंडा
१०१)	„	गांधी नाथारंगजी	आकलूज
७६)	„	दयाराम ताराचंदजी	पूना
		५१) सम्मेद शिखरजीके मुकद्दमेमें	
		२५) उपदेशक भंडारमें.	
५१)	„	माणेकचन्द मोतीचंदजी	आलंद
५१)	„	हीराचंद देवचंदजी	अकलकोट
५१)	„	हेमचंद दलूचंदजी	हिरोळी
२५)	„	लक्ष्मीचंद खुशालजी	बागधरी
२५)	„	कस्तूरचंद मलूकचंदजी	अकलकोट
२५)	„	फूलचंद खेमचंदजी	भुंइयार
२५)	„	परमचंद शाकलचंद	आलंद
२५)	„	बधरापा धनपाल	इंडी
२१)	„	गिरधारी शालिग्रामजी	कलड
१५)	„	बापूजी हरीचंद	अक्कलकोट
११)	„	हीराचंद रखचंदजी	„
११)	„	रामचंद कस्तूरचंदजी	मोडनिम्ब
११)	„	रावजी हरीचंदजी	निम्बगांव
११)	„	रावजी पानाचंदजी	इंडी
१०)	„	मोतीचंद अमीचंदजी	कर्जगी
१०)	„	करशनदास पूनमचंद	सूरत
५)	„	गुलाबचंद अमीचंदजी	मोडनिम्ब
५)	„	फूलचंद हरीचंदजी	अक्कलकोट
५)	„	गुलाबचंद लालचंदजी	इंडी
५)	„	मोतीचंद वीरचंद	मेंदरगा
५)	„	बेवारा शाकळा बेलजी	कर्जगी

२१३५) रु. कुलजाड़.

पाठक महाशय! इन रुपयोंमें ५०१) रु. श्रीमान् शेठ रावजी नानचन्दजीनें देते समय प्रगट किया था कि यह रकम मैं सभाके सब खातोंमें भेट देता हूं. और इन ही महाशयकी देखादेखी श्रीमान् शेठ रावजी कस्तूरचन्दजी वगेरह द्रव्यदातावोंने भी सभाको भेटमें दिये. इसकारण जेष्ट सुदी ११ के दिन शेठ बाहालचन्द रामचन्दजीके मकानपर प्रबन्धकारिणीका एक अधिवेशन करके ७६) रु. शेठ दयाराम ताराचन्दजीके बाद देकर २१६९) रुपयोंमेंसे १०००) रु. उपदेशक भंडारमें जमा करके जैनमित्रादि खातोंके घाटेकी पूर्ती करके शेषमें जो रकम बचै उसको प्रबन्धखाते जमा कियी जाय. ऐसा प्रस्ताव पास किया गया.

जैनीभाईयोंका दास,
नाथुराम प्रेमी क्लर्क.
दि. जै. प्रां. स. बम्बई.

मथुराके रसीले शास्त्रार्थकी समालोचना.

जैनमित्र अंक ५—६ में महासभाके गत अधिवेशनवाला पंडित मेवारामजी और पंडित नरसिंहदासजीका रसीला शास्त्रार्थ छपा है. जिसको बांचकर पाठकोंने उसके आन्तरिक मर्मका अनुभव किया ही होगा. आज हमारा भी विचार उसके ही सम्बन्धमें कुछ लिखनेका है.

इस शास्त्रार्थमें मुंशी चम्पतरायजी मध्यस्थकी सम्मति बचानेसे हमको बड़ा आश्चर्य होता है. आपने शास्त्रार्थका फैसला सुनाते समय फरमाया है कि, "पंडित नरसिंहदासजीने इस सम्बन्धमें कुछ पक्ष ग्रहण नहिं किया था. यह

केवल इस प्रकारके ग्रन्थ अप्रमाण दिखलानेको वाक्यविनोद किया था. यथार्थमें वे उसके पक्षपाती नहीं हैं. पंडित मेवारामजीने असत्पक्षके निराकरणार्थ बडी विद्वत्ताके साथ विवेचन किया है जो सर्व भाइयोंने श्रवण किया ही हैं."

हम नहीं कह सक्ते कि, मुंशीजीने पंडित नरसिंहदासजीके किम शब्दमेंसे यह आशय निकाला है. नरसिंहदासजीने जो कुछ कहा है उसमे साफ जाहिर है कि—वह हरएक बात सच्चे दिलसे कह रहे हैं. जिस समय शास्त्रार्थ हुआ था, उस समय हम भी उपस्थित थे. नरसिंहदासजीका यह अभिप्राय कदापि नहीं था जो कि मुंशीजी साहिबने फरमाया है, क्या मुंशीजीके पास नरसिंहदासजीकी कोई ऐसी लिखावट मौजूद है? या कोई ऐसा साक्षी है कि, जिसके सन्मुख नरसिंहदासजीने यह कहा था? नरसिंहदासजी इस बातसे साफ इंकार करते हैं, और कहते हैं. जो कुछ मैंने कहा है वह सच्चे दिलसे कहा है. अब हमारी मुंशीजीसे प्रार्थना है कि, या तो वे इस बातको साबित कर दें कि, नरसिंहदासजीने यह शास्त्रार्थ नकली किया था. असली नहीं. और या अपनी भूल प्रगट करें. अन्यथा भोले भाई भ्रमोंधकारमें पड़कर व्यर्थ ही इधर उधर भटकते फिरेंगे.

फिर मुंशीजी साहिबका कथन है कि "पंडित मेवारामजीने असत्यपक्षके निराकरणार्थ बडा विद्वत्ताकेसाथ विवेचन किया है." सो मुंशीजीके इस कथनसे स्पष्ट प्रगट होता है कि मुंशीजी शास्त्रार्थके मर्मको ही नहीं समझे. और जो मुंशीजी शास्त्रार्थके मर्मको नहीं समझ सक्ते थे तो उनको मध्यस्थपना कदापि स्वीकार नहिं करना चाहिये था. और जो स्वीकार ही कर लिया तो बिना समझे अपनी सम्मति प्रगट नहीं करना थी. और जो कि अब उन्होंने इस विषयमें अपनी सम्मति प्रगट की है. उसको हम एक इंजीनियरद्वारा सन्निपातग्रस्त रोगीकी चिकित्सावत समझकर इस विषयको यहींपर समाप्त करके प्रकृत विषयकी ओर झुकते हैं.

इस रसीले शास्त्रार्थमें अकलङ्क प्रतिष्ठापाठादि शास्त्रविहित श्राद्धतर्पण आचमन, सन्ध्या, नीराजन, पंचामृत अभिषेक, बलि, शासनदेवताराधन, मुंडन, गोमयशुद्धि, पुष्प चढाना आदि १७ विषयोंके नाम उच्चारण किये गये थे. जिनमेंसे केवल श्राद्ध, आचमन, गोमयशुद्धि, मुंडन और शासनदेवताराधन इन पांच विषयोंपर ही इस प्रकार विवेचन किया गया था.

१. श्राद्ध विषयमें पं० नरसिंहदासजीने कहा था कि, श्रद्धापूर्वक जो दान किया जावे वही श्राद्ध है और इसको पं० मेवारामजीने निर्विवाद स्वीकार किया.

२. आचमन विषयमें पं० मेवारामजीने हाथ झूठे होने तथा उपवासके दिन उपवास भंग होनेका दोष दिया था. जिसका पं० नरसिंहदासजीने इस प्रकार उत्तर दिया कि आचमनमें जलबिन्दुका स्पर्श ओष्टमात्रसे होता है. जिससे न तो उपवास भंग होता है. और न हाथ झूठा होता है. इसके बाद इस विषयमें पंडित मेवारामजीने कुछ भी नहिं कहा.

३. गोमयशुद्धिके विषयमें पंडित मेवारामजीने अन्य पंचेन्द्रियोंकी बिष्टाकी तरह इसमें भी अपवित्रताका दूषण दिया. जिसको पंडित नरसिंह-

दासजीने इसप्रकार खंडन किया कि, सर्व साधारणमान्य राजवार्तिक ग्रन्थमें आठ लौकिक शुद्धियोंमें गोमयशुद्धिका भी निरूपण है और आठ लौकिक शुद्धियोंको सर्व भाई भी स्वीकार करते हैं. अतः हरएक पंचेन्द्रियके मलकी समानता नहीं हो सक्ती. गोमयसे शुद्ध की हुई जमीनमें सब लोग बैठते हैं. इसके बाद मेवारामजीने नरसिंहदासजीके उत्तरका कुछ भी खंडन न करके गारुडी प्रवाहानुसारी लोगोंको सम्बोधन करके कहा कि,— "क्यों भाईयो आप लोग इस साक्षात भृष्टाचारको स्वीकार कर सक्ते हो क्या ?" लोगोंने भी उनके मनोऽनुकूल मिष्टध्वनिसे कहा कि,— "नहीं! नहीं!" धन्य है ?

४. मुंडन विषयमें पं. नरसिंहदासजीके कथनको मेवारामजीने निर्विवाद स्वीकार किया.

५. देवताऽराधन विषयमें मेवारामजीनें कहा कि शास्त्रकारोंनें देवताराधनको मिथ्यात्व करी क्रियामें कहा है. अकलङ्क प्रतिष्ठापाठमें चतुर्मुख ब्रह्माका भी आराधन किया है. इसलिये अप्रमाण है. इसके उत्तरमें नरसिंहदासजीने कहा कि, ब्रह्मासंज्ञक यक्ष सुपार्श्वनाथ या पुष्पदंत स्वामीका यक्ष है. वह चतुर्मुख नहीं हैं. प्रतिष्टादिक महोत्सवोंमें अन्य साधर्मीवत् इनका भी आह्वान किया जाता है. इनका सत्कार [पूजा] करना यथार्थ तथा परमोचित है. क्योंकि ये सम्यग्दृष्टी हैं. इनका आह्वान और सत्कार करना मिथ्यात्वकरी क्रियाओंमें कदापि नहीं हो सक्ता. राजवर्तिकजीमें अशरणानुप्रेक्षाके कथनमें शासनदेवताओंको तथा राजाओंको व्यवहार शरणमें कहा है. यह कथन बडे २ आचार्योंके कथनसे मिलता हुआ है. इसलिये उक्त प्रतिष्ठापाठ अप्रमाण नहिं हो सक्ता. इसका उत्तर पं. मेवारामजीने कुछ नहीं दिया किन्तु उपसंहारमें भोले भाइयोंको सम्बोधन करके कहा भाइयो ! जिन अकलङ्क प्रतिष्ठादिक ग्रन्थोंमें ऐसे गोलमाल हैं, वह शुद्धाम्नायियोंको बिलकुल प्रमाण नहिं हो सक्ते. कुरान इञ्जीलवत् ये ग्रन्थ भी अप्रमाण हैं. वसुबिंदु आचार्यकृत प्रतिष्ठापाठमें इस प्रकारकी कुछ भी गोलमाल नहीं है. इस कारण वह हीं शुद्धाम्नायियोंके मानने योग्य हैं.

प्यारे पाठको! इस शास्त्रार्थमें एक विशेष चमत्कारिक घटना और भी हुई थी जो कि जैनमित्रमें भी प्रकाशित होनेसे रह गई. हम वहांपर मौजूद थे, इसलिये हमारा कर्त्तव्य है कि वह घटना भी पाठकोंको अवश्य सुनावें.

उस घटनाका सारांश यह है कि पं० मेवारामजीने समस्त श्रोतावोंको सम्बोधन करके कहा था कि "भाइयो! अकलंक प्रतिष्ठापाठमें केवल गोमय ही नहीं है किन्तु उसमें शुककी (तोतेकी) बींट भी ग्रहण कियी है. तो अब यह कहिये कि ऐसे कथन अकलंक प्रतिष्ठापाठमें होनेसे वह क्योंकर प्रमाणित किया जावे" ? इस परसे पं० नरसिंहदासजीने कहा था कि अकलंक प्रतिष्ठापाठमें तोतेकी बींटका कहीं भी ग्रहण नहिं किया है. यदि कहीं किया हो तो आप दिखलाइये ? इस परसे मेवारामजीने डेरेपरसे शास्त्र मगाकर दिखलानेकी चेष्टा की परंतु "नरसिंहदासजीने कहा कि यदि आपने देखा है तो ग्रन्थ मगानेकी कोई आवश्यकता नहीं है. आपके बचन ही प्रमाण हैं."

पाठक महाशय! जब हमने अकलंक प्रतिष्ठा-

पाठ निकालकर देखा तो वहांपर उपर्युक्त विषयमें यह श्लोक पाया—

अस्पृष्टभूशुद्धशुष्कगोशकृद्भस्मपिण्डकैः।
गन्धाम्बुलुलितैरुक्तमात्रैर्दुर्वादिमण्डितैः॥१॥

इस श्लोकमें नीराजन सामग्रीका वर्णन है. उस सामग्रीमें एक सामग्री भस्मपिण्ड भी है. वह भस्मपिण्ड कैसा होना चाहिये उसके ही वास्ते विशेषणका उपादान किया है अर्थात् "अस्पृष्टभूशुद्धशुष्कगोशकृद्भस्मपिण्डकैः" जिसका खुलासा यह है कि,—"जिसने पृथिवीका स्पर्श नहिं किया होय ऐसे शुद्ध और शुष्क (सूखे) गोमय (कंडे छाणे) की भस्मी (राख) का पिंड" ऐसा अर्थ होता है. जिस प्रकार शुष्कगोमयभस्मपिण्ड नीराजन सामग्रीमें ग्रहण किया है उस ही प्रकार चार पदार्थ और भी ग्रहण किये हैं. इस सूत्रस्थान प्रकरणमें नीराजनकी पांच सामग्री कहकर मन्त्रस्थान प्रकरणमें प्रत्येक सामग्रीके अवतारणार्थ एक एक मन्त्र कहा है. उस स्थलमें तोतेकी बींटका नाम भी नहीं है. इस विषयकी पर्यालोचना करनेसे ज्ञात होता है कि पंडित मेवारामजीके पास जो अकलंक प्रतिष्ठापाठकी प्रति है, उसमें लेखकके दोषसे 'शुष्क' शब्दके स्थानमें 'शुक' शब्द लिखा गया होगा, सो अब पं० मेवारामजीसे हमारी प्रार्थना है कि, वे इसप्रकरणको निकालकर एकबार फिर देखें. यदि तोतेकी बीट उन्होंने किसी दूसरे स्थलमें देखी होय तो कृपा करके हमको सूचित करें ताकि हम उस स्थलान्तरको देखकर विषयका निर्णय करें. और जो इस ही कथनसे आपने तोतेकी बींट यह अर्थ निश्चय किया है तो कृपा करके उसका युक्तिपूर्वक समर्थन करें और यदि वास्तवमें पंडितजी साहबने अशुद्ध ग्रंथको शुद्ध मानकर उसका मन्त्र स्थलसे विना मिलान किये ही ऋषिवाक्योंपर मिथ्या आक्षेप किया हो तो अपनी समझको सुधार लेना चाहिये.

उपर्युक्त शास्त्रार्थके पांच विषयोंमेंसे श्राद्ध और मुण्डन विषयको तो पं० मेवारामजीने निर्विवाद स्वीकृत किया है और आचमन, गोमयशुद्धि और शासनदेवताराधन इन तीन विषयोंमें पं० मेवारामजी बिलकुल निरुत्तर हुये हैं. शासनदेवताराधन विषयपर एक जैनी महाशयने जैनमित्र अंक ५—६ में "आज्ञा और प्रवृत्ति" इस शीर्षकका एक सारगर्भित लेख दिया है. जिसके बांचनेसे हमारे भाइयोंको इस विषयका असली मर्म ज्ञात हुवा होगा. और अन्तमें जो पं० मेवारामजीने वसुबिंदु आचार्यकृत प्रतिष्ठापाठको शुद्धाम्नायियोंके मानने योग्य बतलाया है. उसकी भी समालोचना जैनमित्रके गतांकोंमें भलेप्रकार हो चुकी है. दुलीचंद बाबाजीने अभीतक उक्त प्रतिष्ठापाठकी प्राचीन प्रति दिखलाकर अपनेको निर्दोष साबित नहिं किया है.

श्रीमान् मुन्शी चम्पतरायजीने जो फैसला सुनाया है वह सायद उनके अभिप्रायके अनुकूल होगा परन्तु शास्त्रार्थके विषयमें जो फैसला होता है वह युक्ति और प्रमाणके आश्रय होता है, जिसको कि श्रोतागण और वाचकवृन्द अपने क्षयोपशमके अनुसार स्वयं कर लेते हैं. परंतु यदि इस विषयपर विद्वज्जन अपने अपने

अभिप्राय वा लेख प्रकाशित करैंगे तो इस विषयके निर्णय होनेमें बहुत कुछ सहायता मिलैगी.

एक जैनी—

"आज्ञा और प्रवृत्ति" इस विषयके लेखऊपर शंका.

श्रीयुत संपादक जैनमित्र, जैजिनेंद्र, आपके जैनमित्र अंक ५—६ के पत्र २३ में "आज्ञा और प्रवृत्ति इस विषयमे शंका होय सो संपादक जैनमित्रको लिखकर भेजनेसे योग्य उत्तर दिया जायगा" ऐसा लिखा है. जिसपरसे शंका लिखता हूं. उत्तरसहित प्रकाशित कीजिये. 'पहिले प्रश्नके उत्तरमें आपने लिखा है कि,"पूजन नाम सत्कारका है तथा जो अपना उपकारी होता है वही पूज्य होता है. उपचरितासद्भूत व्यवहारनयकी अपेक्षा यक्षादिक, विद्यागुरु, माता, पिता, राजा, रोजगार लगानेवाले इत्यादि जितने उपकारक हैं सबमें पूज्यपना है." और प्रश्न ४—५ के उत्तरमें जिनेंद्रपूजाकी तरह यक्षादिकोंका अष्टद्रव्योंसे पूजन करना चाहिये ऐसा लिखा है. सो अपने राजा सप्तम एडवर्डका 'ॐह्रीं सप्तम एडवर्डाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा' ऐसा कहकर अष्टद्रव्यसे पूजन करना चाहिये या नहीं? अथवा अपनेको रोजगार लगानेवाला एक मुसलमान करीमभाई इब्राहिम जिसके दुकानपर अपनेको पचास रुपये माहवारीकी नौकरी मिलती है, उसका भी अष्टद्रव्यसे पूजन करना चाहिये या नहीं? अथवा अपना विद्यागुरु भट्टारक राजेंद्रकीर्ति जिसने अपनेको भक्तामर और सहस्रनाम पढाया अथवा पंडित दामोदरशास्त्रीनें अपनेको सारस्वत व्याकर्ण और रघुवंशकाव्य पढाया उनका उपरोक्त अष्टद्रव्यसे पूजन करना चाहिये या नहीं? यदि अष्टद्रव्योंसे पूजन करना चाहिये ऐसा कहोगे तो प्राचीनकालमें कौनकौनसे सम्यग्दृष्टी श्रावकोंने ऐसा पूजन किया है, जिनोंके नाम और प्रकर्ण लिख दीजिये.

आपने लिखा है कि, जिनधर्ममें बाह्यक्रियाकी मुख्यता नहीं है. अभिप्रायोंकी मुख्यता है. इसके दृष्टांतमें आपने लिखा है कि, "स्त्रीके अंगका स्पर्श पति भी करता है और भाई भी करता है. परंतु उनके अभिप्रायोंमें बहुत भेद है, इत्यादि. स्त्रीके अंगका स्पर्श करनेमें जहां अभिप्रायोंमें भेद है वहां स्पर्शादि क्रियामें भी भेद देखनेमें आता है. देखिये! स्त्रीको पति कामविकार अभिप्रायसे जिस एकांत स्थलमें जिस अवयवकूं जिस प्रकारसे स्पर्श करता है, उस मुजब उसको उसका भाई नहीं करता है. लेकिन प्रसिद्ध जगामें शीलरक्षक भयभीत क्रियासे स्पर्श करता है. इसमें जैसी अभिप्रायोंकी भिन्नता है वैसी ही स्थलकी और क्रियायोंकी भी भिन्नता देखनेमें आती है. और यदि जिनधर्ममें अभिप्रायोंकी ही मुख्यता है बाह्य क्रियायोंकी मुख्यता नहीं है तो फिर अभ्यंतर चौदह प्रकारके परिग्रहका त्याग करके बाह्य परिग्रहमें वस्त्र रखें तो क्या हरज है? और यदि जिनेंद्रसत्कार और देवतासत्कार बाह्यरूपसे समान रीतिसे होनेमें दोष नहीं, ऐसा कहोगे तो अर्हन्त भगवानको अष्टांग नमस्कार, गुरुको पंचांग नमस्कार, और श्रावक साधर्मीनको अंजुली जोड मस्तक लगाना रूप नमस्कार जुहार इत्यादि भि-

जाता रूपसे सत्कार क्यों बतलाया है? मेरी समझमें तो श्री अरहत भगवानका या पंचपरमेष्ठीका सत्कार ही सर्वोत्कृष्ट होना चाहिये. उनके समान किसी भी देवदेवताओंका अथवा यक्षादिकोंका वा राजा वा रोजगार लगानेवाले किसीका भी सत्कार न होना चाहिये. इनका सत्कार पंचपरमेष्ठीके सत्कारसे बहोत दर्जे कम होना चाहिये.

दूसरे प्रश्नके उत्तरमें आपने लिखा है कि, "कोई शूद्रदेव आकर किसी प्रकारका विघ्न करे. इस कारण यक्षादिक शासनदेवोंका आह्वान और सत्कार किया जाता है. जिसके निमित्तसे कोई शूद्रदेव किसी प्रकारका विघ्न या उपद्रव न कर सके." अब इसमें शंका यह है कि कौनसे क्षुद्रदेवने कौनसे धर्मकार्यमें किस समयमें किस प्रकारका विघ्न कियाथा? और वह विघ्न किस शासन देवताके आह्वाहन सत्कारसे दूर हुवा था? इसकी कोई कथा या प्रमाण होय तो बतलाइये. बहोतसे कथाओंमें तो ऐसा देखनेमें आता है कि धर्मात्मा पुरुषको उपसर्ग होय अथवा कोई संकट विघ्न आ जाय तो शासन देवता आह्वाहन किये बिना आप ही आकर खडा होय है और उपद्रव निवारे है. देखिये, पार्श्वनाथस्वामीको शंबर नामके जोतिषी देवने उपसर्ग किया, उस बखत धरणेंद्र आप ही बिना बुलाया पदमावतीको लेकर आया था और उपसर्ग मिटाया था. अहिंसा अणुव्रत धारण करनेवाला यमपाल चांडालकूं पानीके द्रहमें फेंक दिया उस समय उसने कोई भी शासन देवताका आह्वाहन किया नहीं था तो भी देवताने आकर उसकूं बचा लिया. सीतासती अग्निकुंडमें पडते-समय किसीभी देवताका आह्वाहन किया नहीं था लेकिन देवता आप ही आकर अग्नीका जल कर दिया. रावणने कैलास पर्वत ऊपर जिनेंद्रका स्तवन किया उससे संतुष्ट होकर धरणेंद्र वहां बिना बुलाये ही आयाथा और रावणको शक्तिविद्या देकर चला गया. रविवार व्रतकी कथामें गुणधरने जंगलसे घांसका भारा लाते समय घांस काटनेका दाँतला भूल आया. फिरकर जाके देखता है तो दाँतलेपर नाग बैठाथा. उस बखत अपने कर्मका पश्चात्ताप करने लगा और पार्श्वनाथ स्वामीका स्तवन करने लगा. उस समय पद्मावती देवी आप ही बिना बुलाई वहां आकर खडी हुई और उसको सुवर्णका दांतला और पार्श्वनाथकी प्रतिमा दिई. इत्यादि कई कथाओंमें बिना आव्हाहन किए देवता आकर उपसर्ग, संकट, विघ्न निवारण किये ऐसा देखनेमें आता है तो फिर कौनसा विघ्न मिटानेको कौन सम्यग्दृष्टि श्रावकने देवताका आव्हाहन किया और उससे क्या फायदा हुवा सो लिखिये.

पाक्षिक और नैष्ठिक श्रावकके भेद कौनसे आचार्यके ग्रंथमें है सो नाम और प्रकरण लिखिये.

प्रतिष्ठापाठके ग्रंथ इंद्रनंदि, वसुनंदि, अकलंक इत्यादि विक्रम सम्वत ९०० के बाद हुये हैं. जिनके पहले मन्दिर और बिम्बप्रतिष्ठा कौनसे पुस्तकके आधारसे होती थी?

इन शंकाओंका उत्तर मिलना चाहिये.

हिराचन्द नेमिचन्द.

श्रीः

दिगम्बर-जैनपरीक्षालय सम्बन्धी पठनक्रम.

बालबोधपरीक्षामें.

खण्ड.	काल.	धर्मशास्त्र.	व्याकरण व हिंदी साहित्य.	गणित.	अंगरेजी और इतिहास भूगोल.
१	६ मास.	ओं नमःसिद्धेभ्यः	जैनबालबोधक प्रथम भाग.	पहाड़े तीसतक.	
२	६ मास.	नमस्कारमंत्र, भाषादर्शन और वर्तमान चौवीसी	जैनबालबोधक द्वितीय भाग.	पहाड़े पूर्ण.	
३	६ मास.	दो मंगल और इष्ट-छत्तीसी.	जैनबालबोधक तृतीय भाग.	साधारण जोड़ बाकी गुणा और भाग.	लिखाई.
४	६ मास.	भक्तामर स्तोत्र पाठमात्र.	जैनबालबोध चतुर्थ भाग.	मिश्र जोड़ बाकी गुणा और भाग.	लिखाई.
५	१ वर्ष.	नित्यनियमपूजन पाठमात्र.	जैनबालबोधक पञ्चमभाग और भाषा व्याकरणसार.	त्रैराशिक और जिन्सकी फैलावट.	लिखाई.
६	१ वर्ष.	तत्वार्थसूत्र पाठमात्र.	साहित्य प्रथम भाग बालबोधव्याकरण पूर्वार्द्ध.	भिन्न और दशमलव.	अंग्रेजी प्रथम पुस्तक और भूगोल.
७	१ वर्ष.	हितोपदेश अर्थसहित.	साहित्य द्वितीय भाग. बालबोधव्याकरण पूर्ण.	महाजनी बहीखाता व्याज वगैरह.	अंग्रेजी द्वितीय पुस्तक और इतिहास.

प्रवेशिका परीक्षायाम्.

खण्ड.	काल.	धर्मशास्त्र.	व्याकरण.	काव्यकोश.	न्याय.	अंगरेजी.
१	१ वर्ष.	रत्नकरण्ड श्रावकाचार सान्वयार्थ.	लघुकौमुदी अव्ययान्त अथवा कातन्त्र स्त्री प्रत्ययान्त.	अमरकोश प्रथम काण्ड. और क्षत्रचूडामणि लम्ब १-५ तक.	०	अंगरेजी तीसरी पुस्तक.

खण्ड.	काल.	धर्मशास्त्र.	व्याकरण.	काव्यकोश.	न्याय.	अंग्रेजी.
२	१ वर्ष.	द्रव्यसंग्रह और पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय सान्वयार्थ.	लघुकौमुदी प्रक्रियान्त अथवा कातन्त्ररूपमाला सार्वधातुकांत.	अमरकोशद्वितीयकांड और क्षत्रचूडामणि लम्ब ६—११	परीक्षामुख मूलसूत्र अर्थसहित.	अंगेरजी चौथी पुस्तक
३	१ वर्ष.	तत्वार्थ सूत्र सुबोधिनी टीका.	लघुकौमुदी अथवा कातन्त्र रूपमाला पूर्ण.	अमरकोशतृतीय काण्ड और चन्द्रप्रभसर्ग १—५	आलाप पद्धति अर्थसहित.	अंगरेजी पांचवीं पुस्तक

पण्डित परीक्षायाम्

धर्मशास्त्रे.

काल.	धर्मशास्त्र.	व्याकरण.	काव्य	न्याय.
२ वर्ष.	सागारधर्मामृत सर्वार्थसिद्धि द्रव्यसग्रह संस्कृत टीका.	सिद्धान्त कौमुदी समासान्त, प्राकृत व्याकरण.	चन्द्रप्रभकाव्यपूर्ण वाग्भटालंकार	न्यायदीपिका

साहित्ये.

काल.	साहित्य,	धर्मशास्त्र.	व्याकरण.	न्याय.
२ वर्ष.	धर्मशर्माभ्युदय, वृत्तरत्नाकर काव्यानुशासन और विक्रान्त कौरवीय नाटक.	सर्वार्थसिद्धि अध्याय. ५	सिद्धान्तकौमुदी समासान्त, और प्राकृत व्याकरण.	न्यायदीपिका

व्याकरणे.

काल.	साहित्य.	धर्मशास्त्र.	व्याकरण.	न्याय.
२ वर्ष.	सिद्धान्त कौमुदीपूर्ण.	सर्वार्थसिद्धि अध्याय. ५	चन्द्रप्रभपूर्ण वाग्भट्टालंकार.	न्यायदीपिका.

काल.	न्याय.	धर्मशास्त्र.	व्याकरण.	काव्य.
वर्ष.	न्यायदीपिका, प्रमेयरत्नमाला मुक्तावली.	सर्वार्थसिद्धि अध्याय. ५	सिद्धान्तकौमुदी समासान्त और प्राकृत व्याकरण.	चन्द्रप्रभपूर्ण वाग्भटालंकार.

विशारद परीक्षायाम्

धर्मशास्त्रे.

काल.	धर्मशास्त्र.	व्याकरण.	काव्य.	न्याय.
२ वर्ष.	राजवार्तिक, चोवीस ठाणा और स्वामिकार्तिकेयानुप्रेक्षा.	सिद्धांतकौमुदी पूर्ण.	जीवन्धर चम्पू चन्द्रालोक.	प्रमेयरत्नमाला.

साहित्ये.

काल.	साहित्य.	धर्मशास्त्र.	काव्य.	न्याय.
२ वर्ष.	गद्यचिन्तामणि, साहित्य दर्पण और पार्श्वाभ्युदयकाव्य, शाकुंतल.	सर्वार्थसिद्धि पूर्ण.	सिद्धांत कौमुदीपूर्ण.	प्रमेयरत्नमाला

व्याकरणे.

काल.	व्याकरण.	धर्मशास्त्र.	काव्य.	न्याय.
२ वर्ष.	मनोरमा और शब्दरत्न अव्ययीभावांत और परिभाषेंदुशेखर.	सर्वार्थसिद्धिपूर्ण.	जीवन्धरचम्पू चन्द्रालोक.	प्रमेय रत्नमाला.

न्यायशास्त्रे.

काल.	न्याय.	धर्मशास्त्र.	व्याकरण.	काव्य.
२ वर्ष.	आप्तपरीक्षा, देवागमस्तोत्र, सप्तभङ्गीतरङ्गिणी, पंचलक्षणीमाथुरी, और सिद्धान्तलक्षण.	सर्वार्थसिद्धि पूर्ण.	सिद्धांतकौमुदी पूर्ण.	जीवन्धरचम्पू चन्द्रालोक.

आवश्यकीय सूचना.

दिगम्बर जैनपरीक्षालयके प्रबन्धकर्त्तावों तथा अन्यान्य पंडित महाशयोंसे प्रार्थना है कि उपर्युक्त पढ़ाईका क्रम अनेक पंडितोंकी सम्मतिसे बनाकर प्रकाशित किया है. इसमें हमारी सम्मति यह है कि अत्रम इसी क्रमानुसार पढ़ाईका क्रम समस्त पाठशालावोंकेलिये जारी किया जावे. और इसी क्रमानुसार परीक्षा ली जावे. यदि इसमें किसी ग्रंथका फेरफार करना हो तो १९ दिनके भीतर २ हमें लिखैं—जो सबकी सम्मतिसे ठीक करके इसके प्रचार करनेका प्रयत्न किया जावे. हमारे बम्बईके संस्कृत विद्यालयमें इसके जारी करनेकी बड़ी आवश्यकता है इसी कारण समस्त जैनी विद्वानोंकी सम्मतिकेलिये यह पठनक्रम प्रगट किया गया है.

सम्पादक.

प्रेरितपत्र.

(प्रेरितपत्रोंकेलिये सम्पादक जुम्मेवार नहीं है.)

सम्पादक जैनमित्र समीपेषु महाशय!

आपके जैनमित्रपत्रके दूसरे उद्देशमें "परस्पर वैरविरोध बढ़ानेवाले लेख स्थान न पाकर" यह साफ लिखा है फिर आपने जैनमित्र चतुर्थवर्ष संख्या २ पृष्ठ १३ में "आवश्यकीय सूचना" इस नामसे जो लेख लिखा है वह बराबर विरोध उत्पन्नका कारण है. जैनी लोगोंमें इस समय जैन यात्राकेलिये एक दूलीचंदजीकी दूसरी ज्ञानचंदकी यह दो पुस्तक हैं. जिनको बहुधा जैनयात्री अपनी साथ ले जाया करते हैं सो उक्त दोनों ही पुस्तकोंमें लिखा है कि "नाशकसे सरोही जाना, यहांसे गजपन्थका पहाड़ एक मील है." परन्तु जब हम नाशक गये तो मालूम हुवा कि उस ग्रामका नाम सरोही नहीं मसरुल है. इसपर हमने यही आपको लिखा था कि, उन पुस्तकोंमें सरोहीके बदले मसरुल लिखा जायगा तो यात्री लोग भ्रममें नहिं पड़ेंगे और वे पुस्तक भी शुद्ध हो जांयगी और यह कार्य जैनी लोगोंके लाभकेलिये था किसीके साथ द्वेष उत्पन्न करनेका नहीं था. फिर नहीं मालूम बाबु ज्ञानचंदने आपसे झूंटी सिकायत क्यों करी? हमारा उनसे किसी प्रकारका भी रंज वा तकरार नहीं है किन्तु अनेक कार्योंमें एकमत है यदि उक्त लिखा उनको अनुचित जान पड़ा था तो हमको ही लिखते. अगर हम उत्तर न देते तभी शिकायत करनी थी. खैर पुनः हम लिखते हैं कि, बाबु ज्ञानचंदजी अपनी पुस्तकमें सरोहीके स्थानपर मसरूल बनाकर पुस्तक शुद्ध बना जातिहितमें त्रुटि नहिं करेंगे. और जो उनके विचारमें सरोही लिखा रहना ही ठीक है तो हम अपनी भूल स्वीकार करके उनसे मवाफी मांगते हैं। और निवेदन करते हैं कि, ऐसे मामलेको पत्रद्वारा प्रथम हमसे ही निर्णय कर लेना अच्छा है। अलम्.

भवदीय.

ज्योतिषरत्न जीयालाल,

फर्रुखनगर.

भारतवर्षीयदिगम्बरजैन अनाथालय जयपुर.

विदित हो कि महाशय चिरंजीवलालजी जैन (नहटौर जिल्हा बिजनौरनिवासी) भूतपूर्व रेजिडण्ट माष्टर डेली (राजकुमार) कालेज इन्दौर हाल प्रेरक व उपदेशक भारतवर्षीय दिगम्बर जैनअनाथालय जयपुर उपर्युक्त अनाथालयकी सहायतार्थ द्रव्य एकत्र करने आदिके लिये शीघ्र ही सारे भारतवर्षकी यात्रा करनेवाले हैं. इस यात्रामें वो निम्न लिखित कार्य करेंगे. (१) अनाथालयकी सहायतार्थ द्रव्य जमा करना (२) जो अनाथ उनको मिले उनको अनाथालयमें भिजवाना (३) बडे २ शहरोंमें जहां दिगम्बर जैनी भाई अधिक हैं उनसे अनाथालयकी द्रव्यादिसे सहायताका प्रबन्ध कराना (४) बडे २ मंदिरोंमें गोलकका बंदोबस्त करना (५) जो दिगम्बर जैन अनाथ किसी कारणवश जयपुर आनेमें असमर्थ हों उनके निर्वाहकेलिये अनाथालयकी ओरसे प्रबन्ध करना (६) जातिसुधारके अनेक विषयोंपर उत्तमोत्तम व्याख्यान सुनाना.

यूं तो उपदेशक महाशयजी भारतवर्षके प्रायः सभी बडेबडे शहरोंका (जहां दिगम्बर जैनी भाइयोंका अधिक निवास है) दौरा करेंगे. परंतु यदि किसी स्थानके भाई उनको वास्तवपर बुलाना चाहैं तो उसके लिये मन्त्रीसे पत्रव्योहार करें. आशा है कि जहां उपदेशक महाशय पहुचेंगे वहांके भाई उनको द्रव्यके एकत्र करने आदिमें सर्व प्रकार सहायता देंगे.

(नोट) जो रुपया अनाथालयकी सहायतार्थ एकत्र हो उसको भेजने आदिका भार उक्त उपदेशकजी अपने जिम्मे नहीं लेते इसलिये इह काम वहांके पंचमहाशय करें.

पं. भोलीलाल सेठी. ऐक्टीं प्रधान,
साहित्यभूषण मिष्टर जैनवैद्य मंत्री,
भारतवर्षीय दिगम्बर जैनअनाथालय
जयपुर.

सम्मेद शिखरजीके मुकद्दमेकी सहायतार्थ.

हम बडे हर्षके साथ प्रगट करते हैं कि तीर्थराजकी रक्षार्थ नीमाड प्रान्तके नीचें लिखे समस्त भाइयोंनें इकट्ठे करके ९४९) रुपये हमारे यहां बम्बईमें भेजे हैं. जिनकी प्राप्ति स्वीकार करते हैं.

१५१) श्री मनावरके समस्त जैनी पंच
२०१) श्री धर्मपुरीके सकल जैनीपंच.
१२१) श्री आँजडके सकल जैनीपंच.
११८) श्री बांकानेरके सकल जैनीपंच.
१०१) श्री बडवाणीके सकल जैनीपंच.
५१) श्री डेरीके सकल जैनीपंच.
४१) श्री नीसरपुरके सकल जैनीपंच.
४७) श्री लुहारीके सकल जैनीपंच.
३१) श्री सुसारीके सकल जैनीपंच.
११) श्री चीपलदाके सकल जैनीपंच.
११) श्री कुकसीके सकल जैनीपंच.
११) श्री गागलीके सकल जैनीपंच.

९) श्री गदवाणीके सकल जैनीपंच.
४१) शा. सवाईरामजी हीरालालजी लुवारीवालोंका.
॥) नोट खरीदे जिसपर बट्टा मिला—

९४९) कुल.

नोट—हम निमाड़ प्रांतके उक्त पंच महाशयोंको हृदयसे कोटिशः धन्यवाद देते हैं कि, अपना परम कर्तव्य समझकर तीर्थराजकी सहायतार्थ यथाशक्ति प्रदान किया. खास करके हम मनावरके पंच भाईयोंको धन्यवाद देते हैं क्योंकि हमारे पास मनावरके भाईयोंने ही ये रुपये भेजे हैं जिससे मालूम होता है कि इन रुपयोंको संग्रह करके भेजनेमें आपका ही मुख्य प्रयत्न है. यदि इस ही प्रकार समस्त प्रान्तों और जिल्होंके भाई अग्रगण्य होकर तीर्थराजकी सहायताकेलिये अग्रगण्य हो जांय तो फिर तीर्थराजकी रक्षामें संदेह ही क्या है ? आशा है कि, सब जिलोंके भाई नीमाड़वाले धर्मात्मा भाईयोंका अनुकरण करेंगे.

भाईयोंका दास
चुनीलाल झवेरचन्द मन्त्री
तीर्थक्षेत्र बम्बई प्रान्त.

भारतवर्षीय दिगम्बरजैनविद्वज्जनसभाकी नियमावली.

१ इस सभाका नाम **दिगम्बरजैनविद्वज्जन सभा है.**

२ इस सभाका मुख्य उद्देश जैनधर्मकी समीचीनता व प्राचीनताके प्रकाशनपूर्वक सदाचारका प्रचार करना है. जिसको पूर्ण करनेके लिये निम्नलिखित उपायोंके करनेमें दत्तचित्त रहेगी.

(क) विवादापन्न विषयोंका निर्णय करना.

(ख) संस्कारादि विधियोंका उद्धार करना.

(ग) पूजनप्रभावनादि विषायेक विधियोंका निश्चय करना.

(घ) श्रावकाचारके यथार्थ मार्ग बताना.

(ङ) प्राचीन ग्रंथों व आचार्योंकी पट्टावलियोंका अन्वेषण करना, और प्राचीन इतिहासका संग्रह करना.

(च) अन्यमतके ग्रंथोंमे जिनमतकी प्राचीनता सिद्ध करना.

(छ) यदि कोई भाई प्रश्न करें तो उनके प्रश्नोंका उत्तर देना.

(ज) विद्यावृद्धिसंबंधी विचार करना.

३. यह सभा दि॰जैनप्रान्तिक सभा बम्बईके अधिकारमें रहेगी.

४. जिन महाशयोंने संस्कृत ग्रंथोंका अभ्यास किया होय और दि॰ जैन ऋषिवाक्योंपर जिनका विश्वास होवे, वे ही इस सभाके सभासद हो सकेंगे. इसके सिवाय यदि मंत्री योग्य समझेगा तो सभापतिकी सम्मतिपूर्वक किसी अन्य महाशयको भी सभासद बनायगा.

५. प्रत्येक दिगम्बरी जैनको अधिकार है कि वह अपनी शंका निवारणार्थ किसी भी विषयका प्रश्न लिखकर मंत्रीके पास भेजै.

६. मंत्रीको अधिकार है कि अपने पास आये हुये प्रश्नोंमें जो योग्य प्रश्न समझै, उसको निर्णयार्थ प्रकाश करै. तथा आये हुये प्रश्नके

उत्तर पत्रोंमें भी यदि विषयान्तर हो तो उसको निकालकर उत्तर व उत्तरके सारांशको प्रकाश करै.

७. एक विषयका विवेचन शंका समाधान-सहित प्रायः तीन बारतक प्रकाशित हो सकैगा. तत्पश्चात् मंत्री सब सभासदोंकी अन्तिम सम्मति मंगाकर सभापतिके पास भेजैगा. सभापति जो निर्णय पत्र लिखकर भेजैंगे, वह मंत्री प्रकाशित कर देगा और वही विद्वज्जनसभाका सिद्धान्त होगा.

८. अन्तिम सम्मतिके अर्थ मंत्रीके भेजे हुये पत्रके उत्तरमें इस सभाके प्रत्येक सभासदको एक मासके भीतर भीतर कुछ न कुछ सम्मति (उत्तर) अवश्य भेजनी पड़ेगी. और जो बिना किसी विशेष कारणके ३ बार तक सम्मति न भेजेंगे तो चौथी बार मन्त्री पत्रद्वारा उनको सूचित करेंगे. तिसपर भी योग्य उत्तर न मिलैगा तो वे सभासद न समझे जांयगे.

९. प्रश्नोंके उत्तर वे ही प्रकाशित किये जांयगे जो कि आगम अथवा अनुमानादिक प्रामाणिकपद्धतिके अनुसार होंगे.

१०. इस सभामें कमसे कम ११ सभासद होंगे और ७ सभासद जबतक एकत्र न होंगे तबतक इस सभाका अधिवेशन नहीं समझा जायगा.

११. इस सभाका वार्षिक अथवा नैमित्तिक प्रत्यक्ष वा परोक्ष अधिवेशन किसी नियत स्थान और समयपर होगा जिसकी सूचना समस्त सभासदोंको मंत्री सभापतिकी सम्मतिपूर्वक एक मास पहिले देगा.

१२. इस सभाके शास्त्रीय निर्णयके अतिरिक्त समस्त मन्तव्य बहुमतसे निर्णय होंगे. और समान पक्ष होनेपर सभापतिकी दो सम्मति समझी जायगी और किसी समय सभापति उपस्थित न हो तो उपस्थित सभासदोंको अधिकार होगा कि अपनेमेंसे किसी एकको सभापति नियत करले.

१३. इस सभाके दो कार्याअध्यक्ष होंगे एक सभापति और दूसरा मंत्री.

१४. इस सभाके सभासदोंकी सेवामें जैनमित्र आधेमूल्यसे प्रेषित किया जायगा.

१५. इस सभाको अधिकार है कि उचित समझै तो इस नियमावलीके किसी नियमको न्यूनाधिक करै.

समस्त जैन विद्वानोंका अनुचर,

जयपुर निवासी—जवाहिरलाल साहित्यशास्त्री

मंत्री—दिगम्बरजैनविद्वज्जनसभा.

ठिकाना—दिगम्बरजैनपाठशाला,

दूसरा भोईवाड़ा

पोष्ट कालबादेवी, मुम्बई.

तीर्थक्षेत्रसंबंधी चर्चा.

वि. वि. श्री सम्मेदशिखरजी येथील वीसपंथी वरली कोठी संबंधी व्यवस्था पाहणारी मंडळी आरेवाले पंच ह्यांनी सदर कोठीची किती अव्यवस्था चालविली आहे, व "हम करेसो कायदा" व त्या कोठींत असलेलें सर्व द्रव्य उपकरणादि वगैरे सर्व आमच्याच मालकीचें असें समजून कसे मनमानते पैसे खर्च करूं लागले आहेत व

आपल्या कारभारांत इतरांचा कोणाचा समावेश होऊं नये, सर्व सत्ता आपलेच हातीं रहावी ह्मणून त्यांनी काय काय कृष्णकारस्थानें केलीं व ग्वालिअरचे भट्टारकांकडून त्यांना १२,००७ रु० रोख व सालिना ९००) रु० प्रमाणें देण्याचें कबूल करून आपले नांवाचा कुलमुखत्यारीचा लेख कसा लिहून घेतला, आणि सदर कोर्टांची रकम आरेवाल्यांना मिळूं नये त्यांवर त्यांची एकट्याची मालकी नाहीं एकंदर जैन दिगम्बर मंडळींची आहे सबब सरकारनें आपले नाव्यांत रकम टेवावी ह्मणून मुंबईहून गेलेल्या दोघांजणांनीं दरखास्त दिली त्यामुळें ती रकम आरेवाल्यांना मिळाली नाहीं आणि सरकाराकडून चार महिन्यांची मुदत मिळाली वगैरे बद्दलची हकीकत तिर्थक्षेत्र कमीटीचे सेक्रेटरी मि० चुनीलाल अवेरचन्द तर्फे सोलापूर येथें भरलेल्या दिगम्बर जैन प्रांतिक सभेच्या दुसऱ्या बैटकीच्या वेळीं सर्वांना समजलीच असेल तेव्हां त्याबद्दल लिहिण्याचें कारण कांहीं राहिलें नाहीं.

सद्गृहस्थहो—शिखरजीचे पहाडावरील पायऱ्यासंबंधी व पहाडाच्या मालकीसंबंधीं अजून श्वेताम्बर बंधूंशीं कोर्टांत खटला चालूच आहे व त्यांत हजारों रुपये खर्च होऊन गेले व अजून किती होतील याचा नियम नाहीं. तोंच पुन्हा आपसांतला तंटा व त्यासंबंधीं कोर्ट दरबार वगैरेकडे जाण्याचा प्रसंग यावा हें खरोखर सुचिन्ह नव्हे. मी ह्मणतों कीं आमच्यांतील हा नवीन तंटा उत्पन्न करण्याला कारण आमचे गुरु ह्मणविणार ग्वालिअरचे भट्टारकच कारण होत. कारण जर त्यांनीं पैशाचा व स्वतःच्या मालकीचा लोभ धरला नसता (व गुरुला लोभ असणें हें गुरुपणाचें लक्षण नव्हें) तर खरोखर आजचा हा प्रसंगयेतांना व आपसांतील बखेडे उत्पन्न होतेना. प्रथमतः आरेवाले एक १९ जणांची कमिटी नेमून त्या कमेटीचे स्वाधीन सर्व कारभार देण्यास कबूल झाले व त्याकरितां नियमावली पण तयार केली; तों ग्वालियरचे भट्टारक छपऱ्याकडे जाण्यास रवाना झाल्याची तार मिळाली कीं आरेवाल्यांचे विचार फिरले आणि कांहीं तरी निमित्य काढून मुंबईकरांना गिरेटीस रवाना करून आह्मी मागाहून येतों असें सांगून "छपऱ्या"कडे रवाना झाले वगैरे हकीकत सेक्रेटरींनीं सांगितल्यावरून आरेवाले कमिटीला नाकबूल जाण्याला कारण आमचे गुरूच (भट्टारक) होत नाहींत काय? जर भट्टारकांनीं आरेवाल्यांना वरील प्रकारचीच सल्ला दिली असती तर आज शिखरजीची व्यवस्था चांगली नाहीं, पैशाचा दुरुपयोग होतो, "अंधळा दळतो व कुत्रा चाटतो" अशी स्थिति झाली वगैरे तऱ्हेची ओरड करण्याचा प्रसंग खचित येतांना. पण दुर्दैव आमचें कीं आमचे भट्टारकांना वरील प्रकारची सल्ला देण्याचें सुचूं नये. पण सुचेल कशी! जेथें लोभबुद्धी जागृत आहे तेथें असले विचार सुचावयाचेच नाहींत असो. आतां कदाचित भट्टारक असें ह्मणतील कीं, आह्मीं ते रुपये देवळाच्या दुरुस्तीकरतांच घेतले आहेत व त्याचाही उपयोग आह्मी धर्मकृत्याकडे करतों तर त्याचें उत्तर येवढेंच कीं समाजांत बखेडा उत्पन्न करून व तशा तऱ्हेनें पैसे मिळवून धर्मार्थ लावण्यापेक्षां चार श्रावकमंडळीना अथवा यात्रेकरु लोकांना

समजावून सांगून त्यांचे ठिकाणीं धर्मबुद्धी जागृत करून त्यांचेकडून खर्च करावयास लावणें बरें, कदाचित् तसें न झालें तरी बेहत्तर पण समाजांत बखेडे उत्पन्न करून तसे पैसे मिळवून धर्मकार्यांत खर्च करणें अत्यंत वाईट आहे. असो. कसें कां होईना पण समाजांत बखेडा उत्पन्न झाला खरा व त्या बाबतींत हजारों रुपये सरकारदरबांरात खर्च होतील ह्यांत शंका नाहीं. मी ह्मणतों अजून जरी भट्टारकांनीं मनांत आणिलें तर कदाचित हा तंटा आपसांत त्यांना मिटवितां येईल.

धर्मबंधुहो, हें तर असें झालें आणि पुढें काय काय होतें तेंहीं आपण पाहूं. पण स्वस्थ बसून न पाहतां शक्य तेवढ्या रस्त्यांनीं तंटा कमी होण्याचा उपाय शोधला पाहिजे. माझे मनें ज्या कोठीसंबंधीं पैसा बर्बात होण्याची अथवा दुरुपयोग होण्याची आपणांस शंका आहे. तेथें यापुढें व्यवस्था सुधरीपर्यंत कोणींही यात्रेकरूनें एक पैसा देखील तेथील भंडारांत देऊं नये अगर कोणी पाठवूं नये. ज्यांना पाठविणें असेल त्यांनीं दिगंबर जैन प्रांतिक सभेच्या अध्यक्षांकडे पाठवून त्यांचे हातची शिखरजीचे भंडारांत जमा झाल्याबद्दलची पावती घ्यावी, असें मला वाटतें.

क्ष

सोलापूर.

श्री शीखरजीना पैसानो गेर उपयोग.

श्री सीखरजीनी वीसपंथी कोठीनी गेर व्यवस्था विषे आ मासीक (जैनमित्र) ना पाछला बे त्रण अंकमां लखाण आव्यां हतां जेमांना छेल्ला अंकमां कांइक कोठीना सुधारा विषे इसारो थयेलो हतो. ते छेल्ला अंकमां एम जणाव्युं हतुं के आरावाळा मुंबाई वीगेरे गामना सभ्य गृहस्थोने बोलावी एक कमीटी करी कारभार सोंपवानो विचार राख्यो छे, जेथी करी हवे शीखरजीनी व्यवस्था सारा पाया उपर आवशे, एवी आशामां वांचक वर्गने राख्या हतां. बाद गया जेठ मासमां ज्यारे सोलापूर खाते आपणी दिगम्बर जैनकोन्फरन्सनुं द्वितीय अधिवेशन थयुं त्यारे शीखरजीनी उपरली कोठी विषे तीर्थक्षेत्रना आपणा उत्साही सेक्रेटरी तरफथी करवामां आवेलुं एक लंबाण भाषण आश्चर्यता साथे मारा सांभळवामां आव्युं ने तेथीज आ लखाण लखवानी उत्कंठा थइ छे. भाषणनी शरुआतमां मारी जीज्ञाशा कमीटी अने तेना नियमो सांभळवा तरफ दोडती हती पण पांच दस मिनीटना टुंका अरसामां मारी आशा निराश थई गई. बधी हकीकत गेर व्यवस्था संबंधी तथा आरावाळानी बेदरकारी विषेनी सांभळी. तेमणे जणाव्युं के उपर जणाव्या प्रमाणे आरावाळाना तारथी मुंबाइथी बे गृहस्थो तारमां जणावेला मधुपूर स्टेशने गया पण तेमना मधुपूर जना पेहलां आरावाळा ओर चाल्या गया तेथी मुंबाईवाळा ओरे गया तो त्यां एक बाजूमां मुंबाईवाळाने आरा, छपरा, गीरीडी, हजारीबाग, मुंबाई, नागपुर, सोलापुर, कानपुर वीगेरे गामोना १३ सभ्य गृहस्थोनी कमीटी करी कारभार सोंपी देवानं हा केहेता गया ने तेना नियम वीगेरे तयार करवामां त्रण चार दिवस काढी नांख्या. ते दरमीआन बीजी बाजुपर आरावाळा देव-

कुमार अने मुन्शीलाल तरफथी खानगी रीते एक कावत्रु रचातु हतुं के ग्वालियरवाला भटारकने शारन छपरामां बोलाववाने आरावालाए त्यां जई मळवुं ने तेनी साथे सलाह करी कोठीनो कारभार पोतानी पासे राखी कोठीना पैसानो प्रथमथी जेम गेर उपयोग थतो आव्योछे तेम जारी राखवो. आ गोटवणथी महाराज छपरा तरफनीकल्यानो तार आरे आव्यो के तरत आरावाला मुंबाईवाला साथेनी सरतमां फरी गयाने छपरा तरफ चाल्या गया. त्यां तेओए महाराज साथे करार कर्यो के रुपिया (१२०००) रोकडा ने रुपिया ६००) मासीआनो कोठीमांथी महाराजने आपवो बदलामां महाराज आरावाला मुनशीलाल, देवकुमार, शीखरचंद, तथा छपरावाला गलाबचंद ए चारेजणने शीखरजीनी वसिपंथी कोठीनो कुल अखतीआर सोंपे एवो दस्तावेज कराववो. आ उपरथी मुंबाईवालाए पुरलीआनी कोरटमां दरखास्त करी के पुरलीआनी कोरटमां आरावालाने रु. (१३०००) नो शीखरजीसंबंधीनो मुकदमो चाले छे ते रकम आरावालानी पुंजीनी नथी, पण हिंदुस्थाननी आखी दिगम्बर जैन कोमनी मिलकत छे. अने तेमने आखी कोम तरफथी अखतीयार आपवामां आव्यो नथी, माटे ते रकम तेमने हाल नहीं मळतां सरकारना ताबामां रेहेवी जोइए, आ भावार्थनी दरखास्त करवाथी चार मासनी मुदत सरकार तरफथी मळी छे. मुंबाईवालाए करेली दरखास्त आखी कोमना तरफथी तीर्थक्षेत्र कमीटी निमाई गइ छे तेमांना सेक्रेटरी विगेरे चार गृहस्थोना नामथी करेली छे. उपर चार मासनी मुदत दरमीआन शीखरजीना रुपिया आरावालाने न मळे ते माटे कोरटमां दावो करवानी हेलचाल चाली रही छे. अनुमानथी मालुम पडे छे के आ केशमा बंने बाजूथी धर्मादाय खातामां थी रकम खरचाय छे.

गृहस्थो, आ उपरथी मालुम पडशे के आपणा धर्मादा पैसानो केवो गेर उपयोग थायछे. सेंकडो बलके हजारो अने लाखो रुपिया खर्चाइ जशे. वकील बारीस्टरोना घरो भराशे. आज सुधीमां आरावालाना कारभार थी कोठीमां एक पाइ पण मीलीक रहेती नथी. कारणके दर वरसे भंडार विगेरेमां जात्री तरफथी भराती रकमनी आवकनो आरावाला गेर उपयोग करेछे. ए दरेक सामान्य बुद्धिवाळाने खेदकारक लागशे. विचार करो, के शिखरजी उपर आ पैसो क्यांथी आव्यो छे ? जवाब मलशे के फकत पैसादार तरफथी आवतो नथी, पण गरीबमां गरीब अने कंगालमां कंगाल दिगम्बर जैन मेहनत मजुरी करी पेट भरतां वधेला पैशा एकठा करी ओछामां ओछो एक रुपियो, शिखरजीनी जात्राना थायपण शिखरजीने मोकलवाथी थाय. रांडीरांड बिचारी डोशी पाइ पाइ करी एकठी करेली रकम शिखरजी मोकली बापडी राजी थाय. ने कंजुषमां कंजुष दिगम्बर पोताना वाहाला छोकराने एक पाई सरखी न आपतां मरण पथारी वखते जुजपण रकम शीखरजी उपर मोकलवा इच्छा करे ने ते एम धारीनेके मारी बधी जात्रा सफल थइ. आ बधु शाने माटे ? फकत पोतानी धर्मप्रत्ये लागणी नाटेज. आवीरीते खरा परशेवानो, खरी मेहनतनो,

पाइ पाइ करी एकठा करेला पैसानो केवो उपयोग थायछे तेनो सहज ख्याल थशे.

आसंबंधी मारे एक सूचना करवानी के जो हवेथी कोइपण गृहस्थ शीखरजी जात्रा जइ ते कोठीना भंडारमां कोई भरे नही ने वहीवट सारो थाय. त्यां सुधी भरवा तथा मोकलवा बंध राखी पोतानेज घेर जमे राखी मुके अथवा तो आपणी मुंबाइके बीजी प्रांतिकसभामां जमे पोताने नामे करावी मुके, के जेथी करी आपणा पैशानो गेर उपयोग थतो अटके, माटे एवी गोठवण करेता, बेशक आवक घटवाथी आपो आप कारभार सुधरशे. अग्रेशर महाशयो, मारी ए विनंति छे के जो हवे तमे विचारवंत श्रीमान पैइसावाळा गृहस्थो आ माटे कांई रस्तो नही सोधी काढो तो बीजो कोण शोधशे! शुं तमारी खानगी मिलकत माटे तमो आटला बधा बेदरकार रहो छो ? ना कदी नही; तो आवी धर्मनी बाबतमां केम चुप बेशी रहो छो, उठो, जागो, कमर बांधो, तैयार थाओ, ने आपणा तिर्थक्षेत्र कमीटीना सेक्रेटेरीने मळो, ने तेणे लीधेला परोपकारी पगलांने तन मन धनथी मदद आपो. कुंभकरणनी घोर निद्रा आज सुधी लीधी तेथी आपणा धर्मनी हानी थइ गइ, ते शुं तमारी जाणमां नथी ? जो जाणमां छे तो हवे ते घोर निद्रामांथी जागो. मारा धर्मबंधुओ ! हवे जागो, धर्मनी प्रभावना वधवाना प्रातःकाळना सुर्यनां झांखां रश्मी पडवा लाग्यां छे. तेने तेजस्वी जोवा इच्छा करो, प्रयत्न करो, अेज मारी नम्र प्रार्थना छे, अेज अरज. तारिख. ९–७–१९०३.

ली. से. परीख

बोरसद जि. खेडा (गुजरात)

एक सखी गृहस्थे जैन पाठशालाने आपेली भेट.

श्री "करमसद तालुके आणंदनी" जैन पाठशालामां "**बाई माणेकबाई ते चोकशी. माणेकचंद लाभचंदनी विधवा हसते केशरीचंद माणेकचंद चोकसी. रहेवासी मुंबई**" ना तरफथी. रुपीया २१ अंके पचीस भेट तरीके अर्पण कऱ्या छे. ते उपकार सहीत स्वीकारीये छीअे ने लाईफ मेम्बर तरीके नाम दाखल कीधुं छे. बीजा सखी गृहस्थो आ विद्या दाननो ताजो दाखलो जोई मदद करवा चुक शेज नहीं.

लि. सेक्रेटरी प्रभुदास जयसींहना तरफथी श्रीभोवन रणछोडदास शाह.

सज्जनमहज्जन वियोग.

पाठक महाशय! आज बडे शोकके साथ प्रकाशित करना पड़ता है कि, बंबईकी मारवाडी व्यापारी समाजके शिरोभूषण, अग्रवालबंशचन्द्रमा परमसज्जन लक्ष्मीवेंकटेश्वर छापखाना कल्याणके मालिक श्रीमान् श्रेष्ठिवर्य गंगाविष्णुजी अपने कुटुम्ब व मारवाडी व्यापारी समाज और विद्वत्समाजको शोकसागरमें छोड़ जेष्ठ सुदी १० मी के दिन स्वर्गवासी हो गये. आप श्रीवैष्णवमतावलम्बी थे. परन्तु आपका स्वभाव, सज्जनता, गुणज्ञता, उदारता, गुणग्राहकता, लोकोपकारिता, दयालुतादि ऐसे गुण थे कि, चाहे जिस मतका चाहे जिस दरजेका मनुष्य क्यों न हो, एकबार

उनसे वार्तालापकर लेता तो उसके चित्तमें हमेशहकेलिये आपकी श्रद्धा भक्ति जडीभूत हो जाती थी. मनुष्यको गरीबी अवस्थामें परदेशमें रहकर किस रीतिसे धनोपार्जन करकें गुणोपार्जन पूर्वक सज्जनमहज्जन बनना चाहिये इस बातकी शिक्षा लेनेकेलिये आपका जीवन चरित्र प्रत्येक मनुष्यको निरंतर अनुप्रेक्षणीय है. आपके दानकी और अपने धर्ममें लवलीनताकी प्रशंसा तो लेखनीसे होना ही असंभव है.

जिस मनुष्यको आपसे एक बार भी काम पडा है उसके हृदयमें तो आपकी व आपके गुणोंकी स्मृति यावज्जीव रहैगी परन्तु जिन २ का आपसे कभी काम नहिं पड़ा है वा हम लोगोंकी जो संतान है वे क्या जानेगे कि आप मारवाडी व्यापारी वैश्यजातिकेएक शिरोभूषण और प्रातःस्मरणीय पुरुष थे. अतएव आपके परमभक्त लघुभ्राता श्रीवेंकटेश्वर छापखानेके मालिक खेमराजजी साहबसे प्रार्थना है कि जिसप्रकार उनकी गुणज्ञता धर्मज्ञतादि गुणोंकी स्मृति प्रत्येक हिंदुस्थानीके हृदयमें अंकित रहै तथा सर्व साधारणमात्रको जिससे उपकार होता रहै, ऐसी कोईभी स्मृति बना देना आपका परमकर्तव्य है. हमारी समझमें तो आपकी स्मृतिकेलिये बम्बई नगरके मारवाड़ी बजारमें सेठ गंगाविष्णु मारवाडी पुस्तकालय इस नामका एक हिंदी संस्कृत पुस्तकोंका पुस्तकालय खोल देना ठीक है. पुस्तकोंका संग्रह तो विनाव्ययके ही हो सक्ता है. सिर्फ मकान और प्रबन्धकर्त्ता कर्मचारीके व्ययार्थ ६०) ७०) रुपये महीनेका प्रबन्धकर देना होगा. सो आपसे सज्जनधर्मात्माओंकेलिये कोई बडीबात नहीं है क्योंकि लाखोंकी सम्पत्तिके मालिक आप हैं और लाखोंकी सम्पत्ति सेठ गंगाविष्णुजी भी छोड गये हैं. तिसपर भी जैसें बडे सेठ उदार धर्मात्मा और गुणग्राहक थे. आप भी उनसे कम नहीं हैं. अतः हमको पूर्णतया आशा है कि उक्त सज्जनमहज्जनके वियोगजनित दुःखको दूर करनेकेलिये उक्त स्मारकचिह्न अवश्य ही बनाकर यशके भागी होंगे.

विविधसमाचार.

बम्बईमें जैनकांग्रेस—श्वेताम्बरी जैनी भाइयोंकी जैनकांग्रेसका द्वितीय अधिवेशन ता. १९ २०—२१ अगस्तको बम्बई शहरमें होगा. जिसकेलिये यहांके गण्यमान्य जैनीभाई कमेटी आदि करकें उसमें समस्त देशके धनवान् विद्वानोंको बुलानेका आयोजन कर रहें हैं. वास्तवमें यह कांग्रेस देखनेलायक बहुत बडा होगा. क्योंकि श्वेताम्बरी भाइयोंमें एकता धनाढ्यताके सिवाय विद्वान् यति साधु भी बहुत हैं. हमको आशा है कि इस अधिवेशनपर हमारे श्वेताम्बरी भाई तीर्थक्षेत्रोंपर दिगम्बरी भाइयोंके साथ जो व्यर्थ ही झगडा करकें हजारों रुपये दोनों तरफके बरबाद करते हैं, उनके रोकनेका प्रस्ताव भी अवश्य करेंगे.

सप्ताहिक जैन—हर्ष है कि अहमदाबादसे 'जैन' नामका सप्ताहिक गुजराती पत्र निकला है. इसमें श्वेताम्बरमतके उत्तमोत्तम लेख छपते हैं. सभा वगेरहका सब हाल इसमें छपता है. दिगम्बरी भाइयोंको भी पढने योग्य है जिनको मंगाना हो अहमदाबाद एडीटर जैनके

नामसे पत्र भेज कर मंगालें. मूल्य डांकव्ययस-हित वार्षिक १) है.

हितवार्ता—कलकत्तेसे भारतमित्र और हिंदी बंगवासी दो सप्ताहिक हिंदी पत्र निकलते हैं. ता. २१ जूनसे हितवार्ता नामका एक तीसरा हिंदी सप्ताहिक पत्र निकलने लगा. खेद है कि हमारे दि० जैनी भाइयोंमें एक भी सप्ताहिक पत्र निकालनेकी सामर्थ्य नहीं हैं.

भावी जैनपाठशाला—हर्ष है कि ईडरगढमें (जहां कि हजारों अलभ्य प्राचीन जैनग्रंथ भंडारमें विद्यमान हैं) जैनपाठशाला खोलनेका प्रबन्ध हो गया है. हमारेपास पंडित भेजनेकी अर्जी आई है. जो कोई जैनी विद्वान् उस जगहँ बालबोध कक्षाकी अध्यापकीका कार्य कर सकैं रु. १५) से २०) तक की जगहँ मौजूद है. पाठशालाका मुहूर्त श्रावण सुदीमें होगा. जिनको आना मंजूर हो, हमारेपास शीघ्र ही अपनी योग्यताका पत्र भेजैं.

इसी प्रकार छावनी अम्बालेमें तथा बीजापूरमें भी एक एक जैनी पंडित चाहिये. जिनको आना मंजूर हो हमें लिखैं.

दूसरी बार छपगया !—जैनबालबोधकप्रथभाग पहिली बारका छपा हुआ नहिं रहा था जिससे पाठशालाओंमें उसके विना पढाईका बडा हर्ज होता था. सो भाई पन्नालालजीने अबकी बार बहुत शुद्धतापूर्वक छपा दिया है. मूल्य वही है. जिन पाठशालाओंमें चाहिये—शेठ माणेकचंद पानाचंदजीके पाससे अथवा पोष्ट गिरगांव—मुंबईसे भाई पन्नालालजीसे मंगा लिया करें.

विद्यालय खुलगया—बंबईका संस्कृत जैनविद्यालय ता. १६–६–०२ को खुलगया. पाठ प्रारंभ हो गया. अबकी बार पढाईके क्रममें भी रदबदल किया गया है. विद्यार्थियोंको पढनेका सुभीता अच्छा हो गया है. पंडित कक्षामें पढनेवाले दि० जैनी विद्यार्थियोंको १०) १५) रु. तकका स्कालरशिप और रहनेकेलिये हवादार मकान दिया जाता है. जिसमें प्लेग वगैरह रोग होनेका रंच मात्र भी भय नहीं है.

दो नये स्कालरशिप—शोलापुरके अधिवेशनपर दो महाशयोंने शोलापूरकी चतुर्विधदानशालामें वैद्यक विद्या पढनेवाले दो विद्यार्थियोंको स्कालरशिप देना स्वीकृत किया है. जिनको वैद्यक विद्या पढना हो वे अपनी अर्जी शोलापुरमें श्रीमान् शेठ हीराचंद नेमचंदजी आनरेरी मजिष्ट्रेट शोलापूरकी सेवामें भेज कर अपनी संस्कृतविद्या वगैरहकी योग्यता प्रगट करें.

विलम्बका कारण—अबकी बार हमारे ग्राहकोंको जैनमित्रकी बाट बहुत दिनतक देखनी पडी. उसका कारण यह है कि १० वें अंकके प्रकाशित होनेके समय तो दिगम्बरजैनप्रान्तिकसभा मुम्बईका दफ्तर शोलापुरकी बिंबप्रतिष्ठापर चला गया था. वहांसे जेष्ट सुदी १५ के दिन दफ्तर आया. परंतु सभाका क्लार्क भाई नाथूराम (प्रेमी) अपना विवाह करनेकेलिये एक महिनेकी छुट्टीपर घर चला गया, इस कारण विलम्ब हो गया और दो अंक साथ निकालने पडे. सो अनुग्राहक ग्राहक गण इस अपराधको क्षमा करैंगे.

सम्पादक.

याद रखने लायक

सूचना.

पाठक महाशय! दिगम्बरजैनप्रान्तिकसभाके शोलापुरके अधिवेशनपर यह प्रस्ताव पास हिंदी है कि सभाके प्रत्येक विभागकी चिठ्ठीपत्री आज तक—जो गोपालदास बरैया महामंत्रीके हैं. ऱ आया जाया करती थी और सबकी तामील महामंत्रीके द्वारा ही होती थी. सो अब काम सरा. नानेके कारण प्रत्येक विभागसंबंधी पत्रव्यवहार प्रत्येक विभागके मंत्रीके नामसे होना चाहिये. उसकी तामील भी वहींसे होनी चाहिये. इस कारण सब भाईयोंसे प्रार्थना है कि इस सभाके नेत्र ५ कार्योंका पत्रव्यवहार नीचें लिखे महाशयोंसे जुदा २ ही किया करें.

१. जिनको इस सभाके सभापति साहबसे पत्रव्यवहार करना हो, वे इस पतेसे पत्र भेजैं.

जोंहरी माणेकचन्द पानाचन्द सभापति दि. जै. प्रां. स. बंबई.

नं. ३४० जोंहरी बाजार पो. कालबादेवी (बम्बई)

२. जिनको महामन्त्रीसे पत्रव्यवहार करना हो और जैनमित्रसंबंधी मूल्य, पत्र वा जैनमित्रमें छापनेकेलिये लेख भेजने हो तो—नीचें लिखे पतेसे भेजैं.

गोपालदास बरैया महामन्त्री दि. जै. प्रा. सभा अथवा सम्पादक—

जैनमित्र, पो. मोरेना जिला ग्वालियर.

३. जिनको विद्याविभागसम्बन्धी अर्थात्—जैनपाठशाला—सरस्वतीभंडार परीक्षा वा पारितोषिकभंडारसम्बन्धी पत्रव्यवहार करना हो, वे नीचे लिखे पतेसे करें.

धन्नालाल काशलीवाल मन्त्री विद्याविभाग बंबईप्रांत. तथा

परीख—ललुभाई प्रेमानन्दजी एल्. सी. ई. उपमन्त्री विद्याविभाग बम्बई प्रान्त,

ठि. दूसरा भोईवाडा घर नं. २९ पो. कालबादेवी (बम्बई.)

४. जिनको उपदेशकभंडार सम्बन्धी पत्रव्यवहार करना हो वा अपने यहां उपदेशकको बुलाना हो, तो नीचें लिखे पतेमे पत्रव्यवहार करें.

शेठ हीराचन्द नेमचन्दजी आनरेरी मजिस्ट्रेट शोलापुर.

मन्त्री—उपदेशकभंडार बम्बईप्रान्त मु०—पो० शोलापुर.

५. जिनको तीर्थक्षेत्रसम्बन्धी पत्रव्यवहार करना हो, वे नीचें लिखे पतेसे करें.

जोंहरी चुन्नीलाल झवेरचन्दजी सहायक महामन्त्री भारतवर्षीय—

दिगम्बरजैनतीर्थक्षेत्रसभा नं. ३४० जोंहरीबाजार बंबई.

६. जैनमित्रके मूल्यसिवाय अन्य किसी भी विभागके रुपये भेजने हो वा हिसाब मंगाना वा पूछना हो तो नीचें लिखे पतेसे भेजें वा लिखें.

शेठ गुरुमुखरायजी सुखानंद कोषाध्यक्ष दि. जै. प्रां. सभा बंबई.

ठि. दूसरा भोईवाड़ा घर नं. २९ पो. कालबादेवी (बम्बई.)

निवेदक—गोपालदास बरैया, महामन्त्री.

Registered No. B. 288.

४ भद्रा धरापर जैनमित्र ही बिठावैगो ॥

श्रीवीतरागाय नमः

जैनमित्र.

जिसको

सर्व साधारण जनोंके हितार्थ,

दिगम्बरजैनप्रान्तिकसभा बंबईने

श्रीमान् पंडित गोपालदासजी बरैयासे सम्पादन कराके

प्रकाशित किया.

जगतजननहित करन कँह, जैनमित्र वरपत्र ।
प्रगट भयहु–प्रिय ! गहहु किन ? परचारहु सरवत्र ॥

चतुर्थ वर्ष. } भाद्रपद. सं. १९६० वि. { अंक १२ वां.

नियमावली.

१. इस पत्रका उद्देश भारतवर्[illegible] सर्वसाधारण जनोंमें सनातन. नीति, विद्याकी. उन्नति करना है.

२. इस पत्रमें राजविरुद्ध. धर्मविरुद्ध, व परस्पर विरोध बढ़ाने-वाले लेख स्थान न पाकर, उत्तमोत्तम लेख, चर्चा, उपदेश, राजनीति, धर्मनीति, सामायिक रिपोर्ट. व नये [illegible] समाचार छपा करेंगे.

३. इस पत्रका अग्रिमवार्षिक मूल्य सर्वत्र डांकव्यय सहित केवल १।) रु० मात्र है, अग्रिम मूल्य पाये बिना यह पत्र किसीको भी न[illegible] भेजा जायगा.

४. नमूना चाहनेवाले आधे आनेका टिकट भेजकर मंगा सके हैं.

चिट्ठी व मनीआर्डर भेजनेका पता:—

गोपालदास बरैया सम्पादक.
जैनमित्र, पो० मोरेना (ग्वालियर)

कर्नाटक प्रिंटिंग प्रेस, कांदेवाड़ी, मुंबई.

चोंचें चाह चतुर चकोर चाहकन हेतु, चन्द्रसों निरूप जैन पावन पठावैगो । अंधकार अविचार अशुभ, अभक्ष आदि,

२ आदित सौ अष्टंग भेदकै हटावैगो ॥

३ भारी भ्रमभूरि हिये भ्रमत भयानक जे, निन्द हुए लेखनका चूर्ककै घटावैगो । बृहत विपक्षी पक्षी, सन्देह अम्बर के—

४ भद्रा धरापर जैनमित्र ही बिठावैगो ॥

छपी हैं. उन शंकाओंका समाधान करना ही इस लेखका उद्देश्य है. प्रथम ही आपने लिखा है कि "यक्षोंकी तरहँ राजा और विद्यागुरु आदिकोंको ॐ ह्रीं इत्यादि मंत्रोच्चारण पूर्वक अर्घ समर्पण करना चाहिये वा नहीं ?"

पाठकमहाशय ! सबसे पहिले यह बात ध्यानमें रखनी चाहिये और यह हम पहिले भी कह चुके हैं कि जिनमत अनेकान्तात्मक है इसमें कोई भी बात सर्वथा नहीं है. समस्त वाक्योंके साथ 'स्यात्' शब्द गुप्तरूपसे समझना चाहिये. हम पहिले ही कह चुके हैं कि पूजा नाम सत्कारका है. और जो उपकारक होता है वह ही पूज्य होता है. उपकारके अनेक भेद हैं तथा उपकार पूजाका कारण है. कारणके भेदसे कार्यमें भी भेद होना न्यायसंगत है. इसलिये उपकारके भेदसे पूजामें भी अनेक भेद स्वयं सिद्ध हैं. अर्थात् जैसा जिसका उपकार है उसका सत्कार भी यथायोग्य वैसा ही होना चाहिये.

यद्यपि पूजनसामान्यकी अपेक्षा सब पूजा एक ही है तथापि अन्तरंग तो मानसिक और बाह्यमें वाचनिक वा कायिक परिणामोंके अवलम्बनसे अनेक भेदरूप हैं. कहनेका अभिप्राय यह है कि जहां जैसी पूजा संभव होय वहां उस ही प्रकार यथायोग्य समझ लेना.

अब जरा प्रकृत विषयकी और झुकिये कि ॐ ह्रीं इत्यादि जो बीजाक्षर हैं वे भिन्न २ देवतावोंके वाचक हैं. इसकारण जो बीजाक्षर जिस देवताका वाचक है, वह बीजाक्षर उस ही देवताके साथ लगाया जाता है. ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ये पांच बीजाक्षर क्रमसे पंच परमेष्ठीके वाचक हैं सो उनके ही साथ लगाये जाते हैं. इस ही प्रकार आदिपुराणके ४० वें पर्वमें सुरेन्द्र तथा राजा व्रती श्रावकादिकोंके सत्कारार्थ निम्नलिखित श्लोक कहे हैं,—

"ततःषट्कर्मणे स्वाहा पदमुच्चारयेद्द्विजः ।
स्याद्ग्रामपतये स्वाहापदं तस्मादनन्तरं ॥१॥
अनादिश्रोत्रियायेति ब्रूयात्स्वाहापदं ततः ।
तद्वच्च स्नातकायेति श्रावकायेति च द्वयं ॥२॥
स्याद्देवब्राह्मणायेति स्वाहोक्त्यंतमतःपदं ।
सुब्राह्मणायस्वाहान्तः स्वाहान्तानुपमायगाः ॥
सम्यग्दृष्टिपदं चैव तथा निधिपतिं श्रुतिं ।
ब्रूयाद्वैश्रवणोक्तिं च द्विः स्वाहेति ततः परं ॥
सम्यग्दृष्टिपदं चान्ते बोध्यं तं द्विरुदाहरेत् ।
ततो भूपतिशब्दश्च नगरोपपदः पतिः ॥ ५ ॥
द्विर्वाच्यौ ताविमौ शब्दौ बोध्यं तौ मंत्रवेदिभिः
मन्त्रशेषोप्ययं तस्मादनन्तरमुदीर्यताम् ॥६॥
कालश्रवणशब्दं च द्विरुक्तामन्त्रणं ततः ।
स्वाहेति पदमुच्चार्य प्राग्वत्ताभ्यामथोद्धरेत् ॥
कल्पाधिपतये स्वाहापदं वाच्यमतः परं ।
भूयोप्यनुचरा यदि स्वाहा शब्दमुदीरयेत् ॥८
ततः परं परेन्द्राय स्वाहेत्युच्चारयेत्पदम् ।
संपठेदहमिन्द्राय स्वाहेत्येतदनन्तरम् ॥९॥

इन श्लोकों से सिद्ध होता है कि जिस प्रकार पंच परमेष्ठीका मंत्रोच्चारणपूर्वक सत्कार किया जाता है, उस ही प्रकार देव और मनुष्योंका भी सत्कार मंत्रोच्चारणपूर्वक जलादि द्रव्योंसे हो सक्ता है. तथा उपर्युक्त सेठ साहबने भी "संस्कृत पूजापाठ" नामकी एक पुस्तक छपाई है. उसकी प्रस्तावनामें (जिसके नीचें कि आपके हस्ताक्षर मौजूद हैं) आप लिखते हैं कि "यांत आलेल्या पूजेचे पाठ महाराष्ट्र देशांतील प्रचारांत असलेल्या पाठांपेक्षां भिन्न

आहेत, तथापि जो पाठ शुद्ध आणि सम्प्रदायास अनुसरून आहे, असें विद्वान लोक ह्मणतात, तोच पाठ प्रचारांत आणणें रास्त आहे. असें वाटल्यावरून तीच प्रती छापून काढिली आहे." अर्थात् सेठ साहबके कहनेका सार यह है कि इस पुस्तकमें जो पाठ आए हैं वे महाराष्ट्र देशमें प्रचलित पाठोंसे यद्यपि भिन्न हैं तथापि विद्वानोंका कथन ऐसा है कि जो पाठ शुद्ध और सम्प्रदायके अनुसार है उस ही पाठको प्रचार करना उचित है. इसकारण वही प्रति छपाकर प्रसिद्ध की है.

इस वाक्यसे सिद्ध होता है कि उक्त पुस्तकको सेठ साहब सम्प्रदायानुसार स्वीकार करते हैं. उस ही पुस्तकमें सन्ध्यावन्दन प्रकरणमें लिखा है—

पत्र ८ पांक्ति ९ मी से

ॐ ह्रीं अस्मत्पितरौ तर्पयामि । ॐ ह्रीं तत्पितरौ तर्पयामि । ॐ ह्रीं अस्मद्दीक्षागुरुं तर्पयामि । ॐ ह्रीं अस्माद्विद्यागुरुं तर्पयामि । अनन्तरं अक्षतोदकेन देवतानर्घ्याणि कुर्यात् । ॐ ह्रीं जयाद्यष्ट देवतास्तर्पयामि । ॐ ह्रीं रोहिण्यादि षोडश विद्यादेवतास्तर्पयामि । ॐ ह्रीं इन्द्रादि दश लोकपालदेवतास्तर्पयामि । ॐ ह्रीं श्री प्रभृत्यष्टदिक्कन्यकास्तर्पयामि । ॐ ह्रीं गोमुखादि चतुर्विंशति यक्षांस्तर्पयामि । ॐ ह्रीं चक्रेश्वर्यादि चतुर्विंशतिशासनदेवतास्तर्पयामि । ॐ ह्रीं असुरादिदशविधभवनवासिदेवतास्तर्पयामि । ॐ ह्रीं किन्नराद्यष्टविधव्यन्तरदेवतास्तर्पयामि । ॐ ह्रीं चंद्रादिपंचविधज्योतिष्कदेवतास्तर्पयामि । ॐ ह्रीं सौधर्मादिद्वादशविधिवैमानिकदेवतास्तर्पयामि ।

फिर उस ही पुस्तकके ३० वें पत्रमें यक्षपूजा लिखी है यथा—

यक्षं यजामो जिनमार्गरक्षादक्षं सदा भव्यजनैकपक्षं । निर्दग्धनिःशेषविपक्षकक्षं प्रतीक्ष्यमंत्यक्षमुखं विलक्षम् ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं हे यक्ष अत्रागच्छागच्छ संवौषट् । ॐ ह्रीं हे यक्ष अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ । ॐ मम सन्निहितो भव भव वषट् । यक्षाय इदमर्घ्यं, पाद्यं, जलं, गन्धं, अक्षतान्पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं ददामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यताम् स्वाहा । इत्यादि प्रमाणोंसे सिद्ध होता है कि पंचपरमेष्ठीकी तरहैं देव मनुष्योंका भी सत्कार मंत्रोच्चारण करके द्रव्य समर्पण पूर्वक होता है । तथा पद्मपुराणके आठवें पर्वमें जब रावणनें नगरमें प्रवेश किया था तब उसकी प्रजाने अर्घ्यपुष्पादिकसे उसका सत्कार किया है । तथा जब आपके घरमें कोई मित्र या रिस्तेदार आते हैं तब क्या आप उनको जल अक्षत नैवेद्य फल खिलाकर उनका सत्कार नहिं करते हैं?

फिर शेठ साहब लिखते हैं कि,—"यदि अष्ट द्रव्यसे पूजन करना चाहिये ऐसा कहोगे तो प्राचीन कालमें कौन २ से सम्यग्दृष्टि श्रावकोंने ऐसा पूजन किया है उनके नाम और ग्रन्थक प्रकरण लिख दीजिये." सो प्रथम तो इस विषयमें पद्मपुराणका प्रमाण दे चुके हैं. सिवाय इसके शास्त्रोंमें लेख दो प्रकारके होते हैं, एक तो विधिरूप दूसरे दृष्टान्तरूप. विधिरूपका भावार्थ ऐसा है कि यह क्रिया करनेकी हमको आज्ञा है और दृष्टांतरूपका अभिप्राय यह है कि अमुक पुरुषने अमुक कालमें ऐसा किया. परंतु उसका वह

कर्त्तव्य योग्य था अथवा अयोग्य था यह बात दृष्टान्तसे निर्णय नहिं होती. इस कारण विवादस्थ विषयमें विधिरूप वाक्योंकी प्रमाणता ही मानी जा सक्ती है सो उपर्युक्त आदि पुराण तथा संस्कृत पूजा पाठके वाक्योंसे भले प्रकार सिद्ध होता है।

फिर शेठ साहबके लिखनेका सारांश यह है कि,—"आज्ञा और प्रवृत्तिके लेखमें जो ऐसा लिखा है कि 'जिन धर्ममें बाह्य क्रियाकी मुख्यता नहीं है, अभिप्रायोंकी मुख्यता है, जैसें स्त्रीके अंगका स्पर्श पति भी करता है और भाई भी करता है परन्तु उनके अभिप्रायोंमें बहुत भेद है. सो स्त्रीका अंग स्पर्श करनेमें जहां अभिप्रायोंमें भेद है, वहां स्पर्शादि क्रियामें भी भेद है."

वाचकवृन्द! जरा ध्यान देकर विचारिये कि—प्रथम तो हमारा जो यह कहना कि जिनधर्ममें बाह्य क्रियाकी मुख्यता नहीं है. इसका यह ही अर्थ हो सक्ता है कि, बाह्य क्रियाकी गौणता है. उसका यह अर्थ नहिं हो सक्ता कि बाह्य क्रिया कोई चीज ही नहीं है. और क्रियाके भेद विषयमें जो आपका कहना है सो प्रत्येक पदार्थमें दो धर्म हुवा करते हैं। एक सामान्यधर्म दूसरा विशेष धर्म। यदि अन्यतरमेंसे एकका लोप हो जायगा तो इतरके अभावका प्रसंग आवेगा क्यों कि वस्तुका स्वरूप सामान्य विशेषात्मक है। सो पतिका स्पर्श और भ्राताका स्पर्श स्पर्शसामान्यकी अपेक्षा समान है न कि स्पर्शविशेषकी अपेक्षा. यदि दोय पदार्थोंको सर्वथा समान मानोगे तो उनमें दोपना ही असंभव हो जायगा. मालूम होता है कि शेठ साहेबने हमारे लिखनेका अभिप्राय समझा नहीं. हमारे लिखनेका अभिप्राय यह है कि—योगका लक्षण सर्वार्थसिद्धिमें मनवचन काय वर्गणाके अवलम्बनसे आत्मप्रदेशोंका परिस्पन्दन कहा है. उस योगके दो भेद कहे हैं एक शुभयोग दूसरा अशुभयोग. फिर वहांपर प्रश्न किया है कि योगोंमें शुभाशुभपना किस प्रकार है. तब वहांपर यह ही स्पष्ट शब्दोंमें उत्तर लिखा है कि—"**शुभपरिणामनिर्वृत्तो योगः शुभः। अशुभपरिणामनिर्वृत्तो योगोऽशुभः**" (छट्ठे अध्यायके प्रारंभमें) **अर्थ**—शुभपरिणामोंसे निष्पन्न योगको शुभयोग कहते हैं और अशुभपरिणामोंसे निष्पन्न योगको अशुभ योग कहते हैं। और सूत्रका वाक्य इस प्रकार है—"**शुभः पुण्यस्याशुभः पापस्य**" अर्थात् शुभ योगसे पुण्यका आश्रव होता है और अशुभ योगसे पापका आश्रव होता है. इस उपर्युक्त प्रमाणसे भलेप्रकार सिद्ध होता है कि जिनधर्ममें परिणामोंकी मुख्यता है, बाह्यक्रियाकी मुख्यता नहीं है. इस ही बचनको सिद्ध करनेके वास्ते अमृतचन्द्र सूरिने पुरुषार्थसिद्ध्युपायमें (जिनप्रवचनरहस्यमें) अनेक कारिकायें कहीं हैं. जिनका सारांश यह है कि-एक हिंसा करै उसका फल अनेक जन भोगें. अनेक हिंसा करैं उसका फल एक भोगै। हिंसा पीछें करे उसका फल पहिले ही भोगलेय, हिंसा करै नहीं परन्तु हिंसाका फल अवश्य भोगै इत्यादि अनेक भंग लिखकर एक कारिका लिखी है,—

इतिविविधभङ्गगहनेसुदुस्तरेमार्गमूढदृष्टीनां॥
गुरुवो भवन्तिशरणं प्रबुद्धनयचक्रसञ्चाराः॥

अब आशा है कि पाठकोंको इस विषयमें

कुछ भी संदेह नहिं रहा होगा कि जिनधर्ममें परिणामोंकी ही मुख्यता है, बाह्य क्रियाकी मुख्यता नहीं है। सिवाय इसके जो कि हमने दो रोगी और दो डाक्टरोंका दृष्टान्त दिया था उसकी तरफ शेठ साहेबने बिल्कुल लक्ष्य ही नहिं दिया दीखता है क्यों कि उस दृष्टान्तमें बाह्य क्रिया सर्वथा समान होनेपर भी अभिप्रयोंके भेदसे पुण्य पापका भेद भलेप्रकार दिखाया गया है। ऐसा होनेपर भी कहीं अनेकान्त नीतिमें खेंचाखेंच करके वस्तुके स्वरूपसे दूर न भाग जाना चाहिये. अर्थात् यह कदापि नहिं समझ लेना कि बाह्य क्रिया कोई चीज ही नहीं है। किन्तु यों समझना चाहिये कि बाह्य क्रियाके बिना कार्यकी सिद्धि ही नहिं होती. जैसें कि मोक्षमार्गमें यद्यपि सम्यग्दर्शनकी मुख्यता है तथापि चारित्र-धारण कियेबिना मोक्षकी सिद्धि नहीं है. यदि बिना चारित्रके भी मोक्षका संभव होता तो तीर्थंकर देव चारित्र क्यों धारण करते? परंतु इससे यह न समझ लेना कि मुख्यता चारित्रकी है यदि चारित्र कीही मुख्यता होती तो द्रव्यलिंगी मुनि हजारोंवर्ष बाह्यतपश्चरण धारण करके भी संसारमें ही नहिं रहते. परंतु फिर भी इस बाह्य क्रियाको सर्वथा निष्फल नहीं समझना. अन्यथा द्रव्य-लिङ्गी मुनि नव ग्रैवेयक पर्यन्त नहिं पहुंचते. बहुत कहांतक कहैं, अनेकांतकी विचित्रताको समझे विना वस्तुके स्वरूपको समझना बिल्कुल असंभव है. इन ऊपरके वाक्योंसे शेठ साहेब के इस कथनका भी उत्तर हो गया कि "जिन धर्ममें यदि अभिप्रायोंकी ही मुख्यता है तो फिर अभ्यंतर चौदह प्रकारके परिग्रहका त्याग करकें बाह्य परिग्रहमें वस्त्र रक्खैं तो क्या हर्ज है?"

फिर शेठ साहबका लिखना है कि "यदि जिनेन्द्र सत्कार और देवता सत्कार बाह्यरूपमें समान रीतिसे होनेमें दोष नहीं है. ऐसा कहोगे तो अर्हंत भगवानको अष्टांग नमस्कार गुरुकूं पंचांग नमस्कार और श्रावक साधर्मीनिकुं अंजुली जोड मस्तक लगानारूप नमस्कार जुहार इत्यादि भिन्नतारूपसे सत्कार क्यों बतलाया है?"

प्यारे पाठको! यह बात हम पहिले भी कह चुके हैं और फिर भी कहते हैं कि अभिप्रायोंकी मुख्यताका यह अर्थ नहीं है कि बाह्य क्रिया कोई पदार्थ ही नहीं है. किन्तु बाह्य क्रियाके विना कोई कार्यकी सिद्धि ही नहीं है. और जब बाह्य क्रिया है तो वे किसी कार्यमें समान भी होती हैं. और किसी कार्यमें भेदरूप भी होती हैं. यदि शेठ साहबके अभिप्रायानुकूल सब क्रिया सर्वथा भेदरूप ही होनी चाहिये तो जैसे आपने जिनेंद्र और गुरुके नमस्कारमें अष्टांग और पंचांगका भेद माना है, उसप्रकार ही जिनेंद्र और गुरुकी पूजामें अष्ट द्रव्य और पञ्च द्रव्यका भेद क्यों नहीं माना? नमस्कार विषयमें यद्यपि बाह्य क्रियामें भेद है तथापि मुख्यता अभिप्रायोंकी ही है. यदि कोई भोला जीव नमस्कारके बाह्य भेदसे अनभिज्ञ (अजान) होकर जिनेंद्र और गुरु दोनोंको अष्टांग नमस्कार करै तो वह पापी नहीं हो सक्ता. क्यों कि बाह्य क्रिया उसकी समान है सो ठीक है. परन्तु जिनेन्द्रको जिनेंद्र और गुरुको गुरु ही समझता है. यद्यपि दिगम्बर मुनिपर वस्त्र डालना आचार

शास्त्रके विरुद्ध मुनिको उपसर्ग करना मात्र है. परन्तु अभिप्रायोंकी ही मुख्यतासे दिगम्बर साधुके उपरि कम्बल डालनेवाले गोवालको शास्त्रमें पुण्यका ही भागी कहा है.

फिर शेठ साहबने लिखा है कि, "कौनसे क्षुद्र देवने कौनसे कार्यमें किस समयमें किसप्रकारका विघ्न किया था. और वह विघ्न किस शासन देवताके आह्वान सत्कारसे दूर हुवा था. इसकी कोई कथा और प्रमाण होय तो बतलाइये. बहुतसी कथावोंमें तो ऐसा देखनेमें आता है कि, धर्मात्मा पुरुषको उपसर्ग होय अथवा कोई विघ्न आ जाय तो शासन देवता आह्वान किये विना आप ही आकर उपद्रव निवारे हैं. इसके बाद शेठ साहबने बहुतसे दृष्टान्त लिखे हैं."

शेठ साहबके दृष्टान्तोंसे यह बात तो स्वयं सिद्ध है कि, क्षुद्र देव धर्मात्मावोंपर विघ्न करते हैं और शासन देवता विना बुलाये उनकी रक्षा करते हैं सो यह तो इष्टापत्ति है. हम पहिले ही लिख चुके हैं कि, जिनका सम्यग्दर्शन शुद्ध है वे अनेक आपदाकुलित होनेपर भी शासन देवतावोंका आराधन नहिं करते और जिनका सम्यग्दर्शन सदोष हैं वे करते भी हैं. और यह बात पुराणोंमें प्रसिद्ध है कि, समस्त विद्याधर लौकिक प्रयोजनार्थ विद्यादेवतावोंको सिद्ध करते हैं. अब रही किस क्षुद्र देवने कब उपद्रव किया और किस शासन देवताके आह्वान सत्कारसे शान्त हुवा सो इसका उत्तर हम पहिले ही लिख चुके हैं कि, विवादस्थ विषयोंमें विधिरूप वाक्यकी प्रमाणता मानी जाती है न कि दृष्टान्तरूपकी. सो उपर्युक्त आदिपुराणके श्लोकमें भले प्रकार यक्षादिकके आह्वान सत्कारकी विधि है. तथा अकलङ्कदेवकृत, नेमिचन्द सिद्धांतीकृत, वसुनन्दी सिद्धांतीकृत आदि प्रतिष्ठापाठोंमें यक्षोंके आह्वान और सत्कारकी आज्ञा है. यदि आप कहेंगे कि हम इन ग्रंथोंका प्रमाण नहीं मानते तो जिस ग्रन्थका आपको दृष्टान्त दिया जायगा उस ग्रन्थको भी नहिं मानेंगे. जैनके समस्त न्यायसिद्धान्तोंमें जहांपर आगमकी सिद्धि की है वहांपर यही वचन है कि,—

"सर्वत्रबाधकाभावादेववस्तुव्यवस्थितिः॥"

अर्थात् बाधकके अभावसे वस्तुकी सिद्धि होती है सो उपर्युक्त ग्रन्थोंके जो प्रमाण आपको दिये गये हैं उनमें किसी शास्त्र अथवा युक्तिसे बाधा दिखलाइये अन्यथा बाधकाभावात् हेतुसे साध्यकी सिद्धि अनिवार्य है।

फिर सेठ साहबने लिखा है कि पाक्षिक और नैष्टिक श्रावकके भेद कौनसे आचार्यके ग्रन्थमें है सो ये भेद जिनसेनाचार्य कृत आदिपुराण पर्व ३९ वें में १४९ वें श्लोकमें इसप्रकार है।

अपिचैषां विशुद्धयङ्गं पक्षश्चर्या च साधनं ।
इति त्रितयमस्त्येव तदिदानीं विवृण्महे ।
तत्र पक्षो हि जैनानां कृत्स्नहिंसाविवर्जनं ।
मैत्रीप्रमोदकारुण्यमाध्यस्थैरुपबृंहितं ॥
चर्या तु देवतार्थं वा मन्त्रसिद्ध्यर्थमेव वा ।
औषधाहारकॢप्त्यै वा न हिंस्यामीति चेष्टितं॥
तत्राकामकृते शुद्धिः प्रायश्चित्तैर्विधीयते ।
पश्चाच्चात्मान्वयं सूनौ व्यवस्थाप्य गृहोज्झनं।
चर्यैषा गृहिणां प्रोक्ता जीवितान्ते च साधनं।
देहाहारे हितत्यागाद्ध्यानशुद्ध्यात्मशोधनं॥
त्रिष्वेतेषु न संस्पर्शो वधेनार्हद्द्विजन्मनां ।
इत्यात्मपक्षनिक्षिप्तदोषाणां स्यान्निराकृतिः ॥

यहां दूसरे भेद चर्याका नामान्तर निष्ठा है निष्ठाके धारण करनेवालेको नैष्ठिक कहते हैं.

फिर सेठ साहेबने लिखा है "कि प्रतिष्ठापाठके ग्रन्थकर्त्ता इन्द्रनंदि, वसुनंदि अकलंक इत्यादि विक्रम संवत् ६०० के बाद हुये हैं जिनके पहिले मंदिर और बिम्बप्रतिष्ठा कौनसे पुस्तकके आधारसे होती थी." यद्यपि इसमे पहिले प्रतिष्ठा पाठोंका हमको नाम मालूम नहीं है और उनके खोज करनेका प्रयत्न किया जायगा परन्तु शेठ साहबका खुलासा अभिप्राय हमारे समझमें नहिं आया क्यों कि प्राचीनता और अर्वाचीनताका समीचीनतासे कोई भी सम्बन्ध नहीं है ।

सम्पादक.

प्रतिष्ठापाठ और पंडित गुलजारीलालजी.

प्रिय वाचकवृंद ! जैनगजट अष्टमवर्ष अंक १२ व १४ तारीख १ व १६ मई सन १९०३ आपकी दृष्टिगोचर हुवा होगा. उक्त अंकके १२ वें पृष्ठमें पंडित गुलजारीलालजी कलकत्तानिवासीने "प्रतिष्ठापाठोंके झगडोंपर विचार" इस शीर्षकका एक लेख दिया है. आज उसके ही सम्बन्धमें कुछ लिखनेका विचार हैं. प्रथम ही पंडितजी साहबके लिखनेका सारांश यह है कि जैनमित्र अंक ३ में लिखा है कि संसारमें सर्वमतानुयायी अपने २ आप्तोंके वाक्योंको पुष्ट करते हैं. चाहे वे समीचीन हों चाहे असमीचीन. सो इस लेखके पढनेसै लिखनेवालेकी पूर्ण विद्वत्ता समझी जाती है. जो अपनी लेखनीसे ऐसे शब्द लिखते हैं इत्यादि " हमको पडितजीके इन वाक्योंको बांचकर उनकी बुद्धिपर बड़ा आश्चर्य होता है. कृपानाथ ! जरा निष्पक्षताके साथ विचार करके देखिये कि जो संसारके मतानुयायी अपने २ समीचीन असमीचीन मतोंको पुष्ट नहीं करते तो संसारमें इतने मत ही क्यों हो जाते ? कुछ जैनमित्रने यह सम्मति नहीं दीनी हैं कि असमीचीन मतोंको पुष्ट करनेवाले अच्छे हैं, बल्कि उसने यह कहा है कि दूसरे लोग तो अपने झूंठे शास्त्रोंकी भी पक्ष नहीं छोड़ते तब जैनी लोग अपने सच्चे शास्त्रोंको छोड़ दें तो बडे आश्चर्यकी बात है । भला इसमें जैनमित्रने क्या झूठ कहा था, जिसका उपालंभ देनेमें पंडितजीने सारी विद्वत्ता खर्च कर डाली ? फिर पंडितजी साहब लिखते हैं कि, "जैनमित्र लिखता है कि प्राचीन सिद्धान्तोंको मानना चाहिये सो नही मालूम प्राचीन किसको कहते हैं और आधुनिक किसको कहते हैं यदि बहुत कालकेको प्राचीन कहोगे तो ऋषभदेवके समयके पाखंडमतोंकी भी प्रमाणता ठहरैगी. जो पदार्थ उत्पन्न होता है सो आधुनिक होता है और आधुनिककी प्रमाणाता नहीं तो कितने काल पीछे प्राचीन समजा जावै ? सो कालका नियम भी शास्त्रोक्त लिखना चाहिये. यहांपर प्राचीन वही समझा जावैगा जो आम्नायसे अविरुद्ध होय चाहे वह बहुत कालका होय चाहे हालका होय इस वसुविन्दआचार्यकृत प्रतिष्ठापाठमें कोई बात विरुद्ध नही है. इस कारण अप्रमाण नहीं हो सक्ता. वृथा ही प्राचीन आधुनिक शब्दोंका छल पकड़कर भोले भाइयोंके हृदयमें भ्रम उपजाना

महा अशुभका कारण है" अब यहांपर विचारना चाहिये कि, 'प्राचीनसिद्धान्त' इस कर्मधारय समासित पदमें दो शब्द हैं. एक 'प्राचीन' और दूसरा 'सिद्धान्त' जिसमें प्राचीन विशेषण है और सिद्धान्त विशेष्य है. आप्त वाक्यको सिद्धान्त कहते हैं. सिद्धान्तका प्राचीन विशेषण करनेका अभिप्राय यह है कि वर्तमान कालमें कोई आप्त दृष्टिगोचर नहीं है और जब आप्त ही नहीं है तो आप्तवाक्य भी नहीं हो सक्ते और जब आप्त वाक्य ही नही तो सिद्धान्त कहांसे आवै? इस कारण प्राचीन विशेषण वर्तमानकालमें सिद्धान्त रचनाके अभावका सूचक हैं. इसका फलितार्थ यही है कि जो शास्त्र आप्तवाक्य अथवा आप्तवाक्यके अनुकूल हैं वे ही मानने योग्य हैं. अब यहांपर विवादापन्न विषय यह है कि वसुविन्द आचार्यकृत प्रतिष्ठापाठ आप्तवाक्य अथवा आप्तवाक्यके अनुकूल है या नहीं शास्त्रोंमें आप्तका लक्षण सर्वज्ञ वीतराग और हितोपदेशक कहा है इस लक्षणसे साक्षात् आप्त यद्यपि अर्हन्तदेव ही है परंतु दिगंबर आचार्योंके भी एकदेश आप्तपणा माना है. अब जरा प्रकृत विषयपर विचारिये कि जिस विवादापन्न प्रतिष्ठापाठको आप वसुविन्द आचार्यकृत बताते हो, वह यदि वास्तवमें वसुविन्दआचार्यकृत है तो विवाद निःशेष है और जो वह प्रतिष्ठापाठ वास्तवमें वसुविन्द आचार्यकृत नहीं हैं तो आप अपने वाक्यसै ही झूठे ठहरोगे और फिर उसकी पक्ष करनेसे आपकी गणना पक्षपातियोंकी पंक्तिमें होगी. सबसे पहले आप यह बताइये कि वसुविन्दआचार्य कब हुए? दसबीस वर्षमें हुए? या पांचसातसो वर्ष पहिले हुए? यदि दशवीसवर्षमें हुए तो उसका प्रमाण दीजिये और जो पांचसातसो वर्ष पहले हुए तो उनकी बनाई हुई प्रति भी प्राचीन होगी तो बस हमारी आपसे इतनी ही प्रार्थना है कि जिस प्राचीन प्रतिसे आपने यह नई प्रति उतरवाई है, वह प्राचीन प्रति हमको दिखा दीजिये. इस ही प्राचीन प्रतिके दिखानेकेवास्ते हम जैनमित्रद्वारा कईबार सूचना दे चुके हैं. परंतु हमारी उस सूचनाको बांचे कोन? क्योंकि जिसकेसाथ पक्षपातका अंकुर लगा हुआ है उसकी आंखोंके सामने परदा पड़ जाता है और जब इसप्रकार पक्षपातपूर्वक आप असली प्राचीन प्रतिको दिखलानेसे टाल बताते हैं तो इससे स्पष्टतया सिद्ध होता है कि या तो आपने या आपके किसी मित्रने वसुविन्दआचार्यके नामका छल पकड़कर मनोमत नयी गढंत कियी हैं अथवा आपने वसुविन्दाचार्यके प्राचीन समीचीन पाठको पक्षपातरूपी अंधे चश्मेद्वारा अशुद्ध समझकर लेखनीरूपी वसूलेमें छीलछालकर उसकी समीचीनताकी मिथ्या घोषणा करके उसके प्रचारमें दत्तचित्त हो रहे हैं.

फिर हमारे पंडितजी साहेब लिखते हैं कि आप्तवाक्यसे अविरुद्ध हीनाधिक करनेमें दोष नहीं है. अन्यथा पुराणादि समस्त सिद्धान्त अप्रमाण ठहरैंगे तथापि मंत्रादिकमें न्यूनाधिक करना ठीक नहीं है सो इस पाठमें यदि कोई मंत्र न्यूनाधिक किया होय तो बतलाइये? सो पंडितजीका यह सब कहना केवल कपोल कल्पना है क्यों कि जो आपके पाठमें कुछ भी गड़बड़ नहीं है तो आप प्राचीन असली प्रति

दिखानेसे क्यों मुंह छुपाते हो? "सत्ये नास्ति भयं क्वचित्" की लोकोक्तिसे हटना सत्यवादीको कदापि योग्य नहीं है. फिर हमारे पंडितजी इधर उधरकी बहुतसी आल्हा गाकर आखिरको खुल पड़े हैं. आपके कहनेका सारांश यह है कि "वसुविंद आचार्यकृत प्राचीन प्रतिष्ठा पाठमें यक्ष-क्षेत्रपालादिक कुदेवोंका पूजन तथा गोमयादिक अशुद्ध सामग्री देखकर हमारे किसी मित्रमहात्माने अनुमान कर लिया कि इस पाठमें कुदेवोंका पूजनादि किसी ढूंढ़ने मिला दिया है. इसलिये उन्होंने अपनी लेखनीरूपी वसूलेसे छीलछालकर शुद्धाम्नायका शुद्ध प्रतिष्ठापाठ तैयार कर लिया तो उसमें क्या दोष है? अब इस प्रतिष्ठापाठके सिवाय आशाधर वसुनन्दी अकलंकदेव नेमिचन्द्रादिक आचार्योंके बनाये हुये प्रतिष्ठापाठ हैं, वे प्रमाणभूत नहीं हो सक्ते क्यों कि इनमें कुदेवादिकका पूजन तथा गोमयादिक अशुद्ध सामग्रीका ग्रहण किया है सो या तो इन ग्रंथोंमें पीछेसे किसी भेषीने कुदेवपूजन और गोमयादिकका पाठ मिला दिया है अथवा किसी भेषीने अकलंकादिक आचार्योंका छलपूर्वक नाम रखकर स्वयं नवीन ग्रंथोंका रचना करी है. इसलिये यह शुद्ध किया हुआ प्रतिष्ठापाठ ही प्रमाणभूत है. इसके सिवाय जिनमें कुदेवपूजन तथा गोमयादिकका ग्रहण है, वे कदापि प्रमाणभूत नहीं हो सक्ते."

इसमें कोई संदेह नहीं कि पंडितजीके कथनानुसार जैनी परीक्षाप्रधानी हैं परंतु संभव है कि भ्रमवश परीक्षक महाशय शुद्धसे अशुद्ध और अशुद्धको शुद्ध समझलेय. यहांपर हमारे पंडितजीकी भी ठीक यही गति हुई है. क्योंकि उपर्युक्त प्रतिष्ठापाठोंमें हमारे पंडितजी दो विषय देखकर उनको अप्रमाण बतलाते हैं. एक तो कुदेवपूजन और दूसरे गोमयादिकका ग्रहण. सो इन दोनो ही विषयोंकी सविस्तर चर्चा यद्यपि जैनमित्रके गत अंकोंमें प्रकाशित हो चुकी है तथापि संक्षेपसे यहां भी पुनरुल्लेख किया जाता है. पंडितजीमहाराज! जरा पक्षपात छोडकर विचारिये कि प्रतिष्ठापाठोंमें जो यक्षादिकका पूजन है, उसको आप कुदेवपूजन कैसे बताते हैं? कुदेव तो मिथ्यादृष्टि देवोंको कहते हैं. यक्षादिक तो सम्यग्दृष्टि देव हैं. कदाचित् आप यह कहो कि सम्यग्दृष्टिकेलिये रागद्वेषमलीमस देवोंके आराधनको भी समंतभद्रस्वामीने मलोत्पादक कहा है सो भी ठीक नहीं है क्यों कि वरकी वांछासे रागी द्वेषी देवोंके आराधनको दोष कहा है. शासनाशक्तत्व की अपेक्षासे उनके आराधनमें कुछ भी दोष नहीं है. कदाचित् यह कहो कि उनके आराधन और पूजनसे क्या प्रयोजन है? सो प्रतिष्ठादिक महत्कार्योंमे विघ्नशांतिके वास्ते उनका आह्वान और सत्कार किया जाता है. कदाचित् यह कहो कि क्या पंचपरमेष्ठीके पूजनसे विघ्नशांति नहीं हो सक्ती? तो जो पंचपरमेष्ठीके पूजनसे ही विघ्नकी शांति हो जाती है तो फिर प्रतिष्ठाओंमें आप पुलिसका प्रबन्ध किसवास्ते करते हो? कदाचित् यह कहो कि अष्टद्रव्यनिका अर्घ लेकर मंत्रपूर्वक स्वाहायुक्त समर्पण क्यों करते हो? यदि सत्कार करते हो तो योग्यस्थानमें योग्यकालमें करो, राजाके सन्मुख किसी नीचका सत्कार असम्भव है तो तीन लोकके नाथ-

सर्वज्ञदेव जिनेन्द्रके सन्मुख अन्य नीच क्षुद्रदेवनिका सत्कार पूजन कैसे संभवे? सो पंडितजी साहब जरा पक्षपातको छोडकर विचारिये कि किसी महाशयके घर उसका जमाई आया और उसके साथ एक नाई भी आया. उक्त महाशयने जिस भोजनसे जमाईका सत्कार किया उस ही भोजनसे नाईका भी सत्कार किया तो क्या इस प्रकार भोजनकी समानता होनेसे नाई जमाई हो सक्ता है? अथवा इस प्रकारके वर्तावसे उक्त महाशय किसी प्रकार निन्द्य ठहर सक्ते हैं? कदापि नहीं तो फिर केवल अर्घकी समानता होनेसे ही यक्षादिकका सत्कार किसप्रकार निषिद्ध हो सक्ता है? जैसे नाईको नाई और जमाईको जमाई समझकर समान भोजन देनेमें किसीप्रकारका दोष नहीं है उसही प्रकार अर्हन्को अर्हन् और यक्षको यक्ष समझकर समान अर्घसे पूजन (सत्कार) करनेमें भी किसीप्रकार मिथ्यात्वका दोष नहीं आ सक्ता.

अब जरा गोमयकी तरफ झुकिये कि यद्यपि गोमय पंचेंद्रियकी विष्टा है तथापि गुणविशेषके सद्भावसे अन्य पंचेंद्रियोंकी विष्टाके साथ उसकी तुलना कदापि नहीं हो सक्ती. क्योंकि प्रथम तो लौकिक प्रचारमें सर्व साधारण गोमयसे शुद्ध किसी हुइ भूमिमें बैठते हैं परंतु मनुष्यादिककी विष्टाको स्पर्श करनेमें भी महा अशुद्धता समझते हैं. तथा सर्वसाधारणमान्य अकलंकदेवकृत राजवार्तिक ग्रंथमें गोमयशुद्धिको अष्टलौकिक शुद्धियोंमें ग्रहण किया है अथवा जिसप्रकार पंचेंद्रियोंकी विष्टा निषिद्ध है, उस ही प्रकार अस्थि चर्म रोमादिक भी निषिद्ध हैं. फिर मुनियोंके पास मयूरपिच्छिकाका रहना आप जिस प्रकार स्वीकार कर सक्ते हो? यदि गुणविशेषके सद्भावसे मयूरपिच्छिका ग्राह्य है तो उस ही प्रकार गुणविशेषके सद्भावसे गोमयको ग्राह्य माननेमें क्यों पक्षपात करते हो? अब अंतमें पंडितजी साहबसे प्रार्थना है कि, या तो इस लेखका युक्तिपूर्वक खण्डन करके प्रकाशित करैं, नहीं तो उपर्युक्त लेखको स्वीकार करैं. अलमतिविस्तरेण विद्वद्वरेषु.

सम्पादक.

हर्ष! हर्ष!! महाहर्ष!!!

पाठकमहाशय! जैनगजट वा जैनमित्रद्वारा आपको मालूम ही हुवा होगा कि श्रीमती भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभाके गत अधिवेशनके समय भारतवर्षके समस्त तीर्थक्षेत्रोंके कुप्रबन्धको दूर करके सुप्रबन्ध करनेकेलिये एक तीर्थक्षेत्र कमेटी स्थापन करनेका प्रस्ताव पास हुवा था और उसका काम चलानेकेलिये मन्त्रीपणेका काम मेरे सुपुर्द करके मेरी सहायतार्थ चुन्नीलाल जवेरचंद व सर्नौनिवासी लाला रघुनाथदासजीको उपमंत्री नियत किये थे. इस कारण हमने पांच सात भाइयोंकी सम्मतिसे एक नियमावली बनाकर सब भाइयोंसे सम्मति लेनेकेलिये जैनमित्र नं. ५-६ में छपाई थी, उसपरसे अनेक भाइयोंकी सम्मति आई तब फिर उस नियमावलीको रदबदल करके एक स्वतन्त्र नियमावली छपाकर महासभासे नियत किये हुये महाशयोंकी सेवामें तथा और भी कईयक योग्य महाशयोंकी सेवामें भेजी गई थी और उसके नियमानुसार सभासद बननेकेलिये प्रार्थनापत्र भी

भेजे गये थे. सो आज बडे हर्षका स्थान है कि उक्त प्रार्थनापत्रके अनुसार २८ महाशयोंने सहर्ष सभासदी करना स्वीकार करके अपनी २ स्वीकारताका फारम भरकर हमारे पास भेज दिये हैं. यद्यपि नियमावलीके ८ वें नियमानुसार २१से अधिक सभासद होनेके कारण सभा तो स्थापन होगई परंतु इस कार्यका आसोज बदि १ से प्रारंभकर दिया जायगा इस अर्सेमे जिन्होंने फारम भरकर अभी तक नहिं भेजे हैं उनसे पुनः पुनः प्रार्थना है कि अपने २ फारम शीघ्र ही भरकर भेज देवें जिनके पासमे नियमावली व फारम खोगया हो तो हमसे फिर मगा लेवें.

इसके अतिरिक्त समस्त दिगम्बरी जैनी भाइयोंसे भी हमारी प्रार्थना है कि इस तीर्थक्षेत्र सभाका कार्य किस रीतिसे और किस २ प्रणालीसे चलाना चाहिये सो अपनी २ सम्मति आसोज बदी १ तक भेजेंगे तो उसपर विचार करके यथायोग्य प्रबन्ध प्रारंभ किया जायगा.

आशा है कि इस कार्यमें कोई भाई प्रमाद नहिं करके अपनी अपनी सम्मतिसे सूचित करेंगे.

आपका कृपाकांक्षी

जोहरी माणेकचंद पानाचंद मंत्री

तथा

चुन्नीलाल जवेरचंद उपमंत्री

भारतवर्षीय दि० जैन तीर्थक्षेत्र सभा

ठि० जोहरी बाजार

पो. कालबादेवी

(मुंबई)

प्रेरितपत्र.

प्रेरित पत्रोंकेलिये सम्पादक जुम्मेवार नहीं है.

जयजिनेंद्र वि. वि.

आपका जैनमित्र सर्व महाशय बहुत प्रीतिसे बाचते हैं. इसवास्ते निम्नलिखित लेख छपा देवें ऐसी आशा करता हूं.

इस निंबगांवके केतकी गांवमें श्रीमती जैन दिगम्बर मुंबई प्रांतिक सभाके उपदेशक पंडित रामलालजीके आयेसे उनको ऐसा मालूम हुवा कि यहांपर १०।१२ वर्षसे दशाहुंबड पचोंमें दो तड़ (धडे) मोजूद हैं. पंडितजीनें के दिनतक स्वाध्याय, हिताहित रागद्वेष; एकता इन विषयोंपर व्याख्यान देनेसे उभय तरफके पंचोंने ऐसा राजीनामा दिया कि सेठ सखारामनेमचन्दजी और पंडित रामलालजी ये दो पंच जो करेंगे उस ठहरावको हम सर्व भाई स्वीकार करेंगे. तब पंडितजी सोलापुर जाकर सेठ सखारामनेमचंदजीको लेकर आये. रात्रिके ८ बजे श्रीमान् धर्मोद्धारक विद्वत्व समाजभूषणनीति सदाचारनिरत लोकपूज्य श्रीयुत सेठ सखारामजी नेमचंदजी और श्रीमती जैन दिगम्बर मुंबई प्रांतिक सभाके महाशय श्रीयुत पंडित रामलालजी इन दोनो पंचोंने ठहराव बांचकर सबको सुनाया फिर उभय तडोंके पच एकट्ठे होकर सेठ गौतमचन्दजीने सर्व पंचोंके तरफसे धन्यवाद देकर सभा बरखास्त किई. यह अलभ्य और अद्वितीय उपकार स्मरण कर सेठ सखारामजीको और पंडित रामलालजीको कोटिशः धन्यवाद देता हूं और श्रीमती दिगम्बर जैनप्रांतिकसभा मुंबईको भी कोटिशः धन्यवाद देता

हूं. फिर सेठ सखारामजीको और पंडितजीको योग्य सन्मानकरके विदा किया और सर्व पंचोंके तरफसे जैन दिगम्बर मुंबई प्रांतिक सभाको ५१) रुपये दिये और सोलापुर पाठशालाको रु. ३३) दिये.

आपका हितचिंतक—
जीवराज गौतमचंद,
केतकी निंबगावस्थ

नोट—हम केतकी गामके पंचोंको हृदयमे कोटिशः धन्यवाद देते हैं कि आपने मुम्बई सभाके उपदेशककी प्रार्थनापरसे धर्मोन्नति जात्युन्नतिकी जड एकता करली—हमको आशा है कि अब इस गांवमें धर्मके अनेक कार्य होंयगें. यहांपर हम श्रीमान् श्रेष्टिवर्य सखाराम नेमचन्दजी और पंडित रामलालजीको भी हृदयसे धन्यवाद देते हैं.

सम्पादक.

छपे हुये.

धन्यवाद पत्रकी नकल.

महशय श्रीयुत पंडित रामलालजी उपदेशक.

श्री दिगम्बर जैन दसाहूंबड लिंबगांव केतकीके तरफसे धन्यवाद दिया जाता है कि आपकु श्रीमती दिगम्बर जैन प्रांतिक सभा बंबइनें सर्व हिंदुस्थानमें गामोगाम फिरके धर्मका उपदेश देनेकु मुकरर्र कियेसे आप फिरते फिरते यहां हमारे गाममे पधारके हमकु धर्मका उपदेश दिया और हमारे पंचोंमें बहोत दिनोंसे दो तड थे सो तुह्मारे उपदेशसे हमलोग शुद्ध अंतःकरणसे दोनो तड येकरूप हो गये यह अलभ्य उपकारकुं स्मरणकर हम सर्वत्र भाई ऐकतासे वा तन मनसे श्रीमती दिगम्बर जैन प्रांतिक बंबई सभाकूं कोट्यशः धन्यवाद देते हैं. भद्रं शुभं मंगलं.

तारीख १३।७।१९०३.

दोशी नथुराम मोतीचंद	हिराचंद जयचंद
रावजी रामचंद	गौतम जयचंद
रावजी हरीचंद	फुलचंद रामचंद

जयजिनेंद्र,

वि. वि. आह्मीं वाघोली मुक्कामीं लग्नास गेलों होतों त्यावेळीं वधूच्या पित्यानें आपल्या मनानें ह्मणा अगर श्रीमान् मनुष्याच्या कोत्या समजुतीनें ह्मणा, जैनपद्धतीनें लग्न लाविलें नाहीं. वराकडील लोकांच्या मनांत जैनपद्धतीनें लग्न लावण्याचें होतें परंतु अज्ञान श्रीमान् मनुष्यापुढें त्यांचा टिकाव चालला नाहीं. धनाढ्य लोकांस असें करणें शोभत नाहीं. कारण अशा सुमार्गाला जर त्यांनीं अडथळा आणला तर गरीबांचा त्यांच्यापुढें काय पाड? जरी गरीबाचे मनांतून जैनपद्धतीनें लग्न लावावयाचें असलें व त्यामध्यें श्रीमानानें अडथळा आणल्यावर त्याचा पक्ष जुलमानें बरेच स्वीकारतील. कारण तो लक्ष्मीचाच गुण आहे. याप्रमाणें वरील स्थिति झाली. हे आमचे अज्ञात श्रीमान् मनुष्य हो! जरा इकडे लक्ष द्या, आपण जर अगोदर सुमार्ग न स्वीकारला व तो स्वीकारण्यास गरीबांस उत्तेजन न द्याल तर हा जैनसमाज कधींच सुधरावयाचा नाहीं सज्जनहो! जरा सावध होऊन धर्माचा अभिमान बाळगून जैनपद्धतीनें लग्न लावण्याची चाल सुरू करा. त्यायोगानें तुमच्या चंचल लक्ष्मीस धक्का

न बसतां बुडत असलेल्या नौकेस ज्याप्रमाणें नावाडा तारतो त्याप्रमाणें श्रीमान् व धर्माभिमानी गृहस्थहो, बुडत असलेली जैनपद्धतीनें लग्न लावण्याची चाल हीच कोणी एक नौका, तिचा नावाडी होऊन जैनबांधवांच्या अज्ञान समजुती हाच कोणी महासमुद्र यांतून धर्मरूपी बुडणाऱ्या नौकेला तारून पैलतिरास पोंचवा. रा. रा. रामचंद हेमचंद ह्मसवडकर यांनी वाघोली येथें जैनपद्धतीनें लग्न लावण्याविषयीं बरेच श्रम केले परंतु अज्ञान श्रीमान् लोकांच्या कोत्या समजुतींपुढें त्यांच्या श्रमाचें फळ त्यांना मिळालें नाहीं. सज्जनहो! एवढें लक्षांत ठेवा कीं "सत्यमेवजयते"

सदर ह्मसवडकरांनी ह्मसवड येथें जैनपद्धतीनें लग्न लावण्याचा पंचामध्यें ठरावच (rule) केला आहे. त्याबद्दल आह्मीं त्यांचे फार आभार मानतों. व सर्वांनीं तेंच अनुकरण करावें अशी आमची विनंती आहे.

Note—अजून आमच्या अज्ञानबंधूचे डोळे उघडत नाहींत कीं लग्नाचे वेळीं वराचे गळ्यांत वधूनें खुद माळ घालावयाची ती अन्यधर्मी 'गोर' घालतात. केवढा अंधकार, वराचें मुख न दृष्टीस पडतां वधूनें माळ घालावयाची. अशा गोरा विधिनें लग्न लावण्यामध्यें बरेच धर्म व शास्त्रविरुद्ध प्रकार घडतात. याहीपेक्षां स्वयंवर करावा अशी उचित माझी सूचना आहे. कारण प्राचीनकाळीं आपणामध्यें स्वयंवर होत होते त्यायोगें आमच्या उदरंभरी जैनबंधूंस शुल्क ह्मणजे पैसे घेण्यास संधी न मिळतां कन्येच्या मनाप्रमाणें वर मिळेल, व त्यायोगें बालविवाह, प्रौढविवाह व दापे वगैरे घेणें सर्व बंद होईल. वंदो अथवा निंदो सूचना लिहिण्यास हरकत नाहीं. मी असें देखील सांगतों कीं माझें पक्कें मत नाहीं.

Your obedient,
Pupil.

दोशी माणिकचन्द रावजी–फलटण

श्रीयुत संपादक जैनमित्र—

जैजिनेंद्र, आपके अंक ५–६ के पृष्ट २१ मे पंडित सेठ मेवारामजी और पंडित नरसिंहदासजी कहते हैं कि, मुखमे पानी जाने मात्रमे ही और कठके नीचे नही उतरा तो भी उपोषण भंग होता है सो इसकूं प्रमाण क्या है. उपवासका लक्षण तो इस मुजब कहा है.—

चतुराहारविसर्जनमुपवासःप्रोषधःसकृत्भुक्तिः तत्प्रोषधोपवासः यदुपोष्यारंभमाचरति ॥१॥

खान, पान, स्वाद्य, लेह्य ऐसा चार प्रकारका आहार नहीं करनां सो उपवास है. मुख प्रक्षालन अथवा दंतधावन करनेमें कोई प्रकारका आहार होता नहीं है. मुखप्रक्षालन वा दंतधावन ये स्नान करनेके समान हैं. उपवासके दिन कौन कौन कृत्य वर्ज करना चाहिए सो इस मुजब—

**पंचानां पापानामलंक्रियारंभगंधपुष्पाणां ॥
स्नानांजननस्यानामुपवासे परिह्रतिंकुर्यात् ॥**

अर्थ.—पांच प्रकारके पाप, अलंकार, आरंभ, गंध, पुष्प, स्नान, अंजन, नस्य इतनी बातें उपवासके दिन वर्ज करना चाहिए.

इसमे भी मुखप्रक्षालन वा दंतधावन वर्ज नही कहा है. यदि स्नानमें ही इनको गर्भित गिनेंगे तो स्नान तो उपवासके दिवस भी श्रावक करते हैं तब मुखप्रक्षालन दंतधावनके वास्ते

मनाई क्यौं करते हैं? प्रोषधोपवासके अतिचारमे भी मुखप्रक्षालन और दंतधावन नहीं आते हैं.

ग्रहणविसर्गास्तरणान्यदृष्टमृष्टान्यनादरास्मरणे यत्प्रोषधोपवासेव्यतिलंघनपंचकं तदिदं ॥

अर्थ—विना देखे विना प्रमार्जन किये उपकरणादि लेना, रखना, विस्तरा डालना, उपवासमे अनादर करना और उपवासका भूल जाना ऐसे प्रोषधोपवासके पांच अतीचार हैं. इसमे भी मुखप्रक्षालन वा दंतधावन आया नहीं. उपवासके दिन मुखप्रक्षालन और दंतधावनका बर्जन ये श्वेतांबरोंके सहवासका फल होगा.

हीराचंद नेमचंद.

आधुनिक तेरापंथी.

जैनमित्र अंक ९ में जो आज्ञा और प्रवृत्ति नामक लेख किसी जैनी महाशयनें मुद्रित कराया था उसमें जो कुछ ल्लेख किया गया है उसके विचार करनेंसे दोही बातें विचारने योग्य है वे संक्षिप्तरीतिसे निवेदन किई जाती है.

(१) प्रश्न—प्रवृत्ति किस आधारपर होनी चाहिंये?

उत्तर—आज्ञाके आधारपर.

प्रश्न—आज्ञाकेलिये क्या आधार है?

उत्तर—शास्त्र.

प्रश्न—शास्त्र किसके आधार है?

उत्तर—आप्त वाक्यके.

प्रश्न—आप्त वाक्यका क्या लक्षण है?

उत्तर—श्लोक—आप्तोपज्ञमनुलंघ्यमदृष्टेष्टविरोधकं ॥ तत्वोपदेशकृतसार्वं शास्त्रं कापथघट्टनं ॥ १ ॥

अर्थ—जो आप्तका कहा हुवा हो, वादी प्रतिवादी करि खण्डन न हो सके, प्रत्यक्ष परोक्ष प्रमाणका अविरोधी हो, तत्वोपदेशी और सर्व हितकारी अर्थात् निवृत्तिमार्गका प्रवर्तक हो.

बस अब हमारे ज्ञाति भाइयोंको विचार करना चाहिये कि वर्तमानमें हमारी ज्ञातिके विद्वज्जनोंने जिस प्रवृत्तिका प्रचार कर रक्खा है. वह उस निवृत्तिमार्गरूप आप्त वाक्यके अनुकूल है या प्रतिकूल? अथवा वर्तमानमें जो लोक प्रवृत्तिके प्रतिकूल आप्त वाक्य बतलाकर उन्हींके अनुसार प्रवृत्तिमें परिवर्तन कराना चाहते हैं वह ठीक है या बेठीक?

इन्हीं उपरोक्त दोनों पक्षके विषयमें हम देखते हैं कि हमारी जातिकी ज्ञाति शिरोमणी धर्मधुरीण पंडित मंडली क्या निर्णय करती है? वे पंडितप्रवर अपने उपदेशामृतद्वारा इस भोलीभाली जैन जातिको सुमार्ग बताय अमर करते हैं अथवा आप ही उस अमृतको गटागट पीकर हम लोगोंको छूंछे ही रखते हैं.

(२) इसी लेखमें " आधुनिक तेरापंथी शब्दका प्रयोग देखकर हमारे बहुतेरे भाई अति दु:खी हुये होंगे, परन्तु उनको ज्ञात नहीं है कि इस पत्रके सम्पादक एक सच्चे धार्मिक पंडितजी हैं जो नयविवक्षाके पूर्ण ज्ञाता हैं. भलाँ उन्होंने क्या ऐसे वाक्योंपर लक्ष्य नहीं दिया होगा? नहीं २ अवश्य ही दिया होगा? परन्तु अभी

तक हम उसके अर्थको नहीं समझे. इसलिये वृथा ही खेदखिन्न होते हैं. यथार्थ अर्थ उस वाक्यका नीचें लिखे अनुसार है. हमे निश्चय है कि, पंडितजीने भी वैसा ही अर्थ समझकर वे वाक्य तद्वत ही मुद्रित करा दिये हैं.

भाइयो! तेरापंथ (आत्मपंथ अथवा मोक्ष मार्ग) यद्यपि अनादिकालसे हैं और अनन्त कालतक रहैगा. तथापि इसके धारण करनेवाले आधुनिक ही होते हैं. क्योंकि इसके धारण करते ही संसारका अंत आ जाता है. इसीलिये इसे सादि अनन्त कहा है और वीसपंथ (विश्वपंथ) तो अनादि अनन्त है. ये दोनों बातें प्रगटरूपपर शास्त्रोंमें बतलाई गई हैं जो कि सर्व साधारणपर प्रगट है. भलाँ फिर आप साहिब अप्रसन्नता क्यों धारण करते हो? क्या आपको किसी कविका कहा यह वाक्य स्मरण नहीं है?

दोहा--है परमानम आत्मन तेरापथ शिवदान ॥
विश्वपंथमें जे रचे भव भटके अज्ञान ॥ १ ॥

(३) इस लेखमें जो हेतुवाद और अहेतुवाद पदार्थोंका उल्लेख किया है उससे स्पष्ट नहीं होता कि, अहेतुवाद तथा हेतुवाद विषय कौन २ से हैं, और क्यों हैं. आचार क्रिया ये दोनों बातें जो आज्ञा और प्रवृत्ति दोनोंसे संबंध रखती है हेतुवाद विषयमें है या अहेतुवाद विषयमें है? प्रियपाठकों लेखक जैनी महाशयने अहेतुवाद विषयमें दृष्टांत कुछ भी नहीं दिया और नहीं मालूम क्या समझ कर मेरुकी उचाई अकृतिम चैत्यालयका अस्तित्व ये विषय हेतुवादमें ठहराये हैं और क्यों ठहराये है इस बातका स्पष्ट वर्णन उक्त महाशयको करना चाहिये और उक्त महाशयको यह भी बताना चाहिये कि जैनी किस अपेक्षा परीक्षा प्रधानी है इसमें आपने अहेतुवाद विषयक पदार्थोंको भी कोई प्रमाण-बाधा न पहुचा सके, ऐसा बतलाया हैं इसी प्रकार हेतुवादको भी अनादि प्रमाणानुकूल बनाया है. भलाँ फिर दोनोंमे क्या अंतर रहा? सो भी बतलाना चाहिये. आशा है कि उपरोक्त विषय स्पष्ट लिखे जानेपर खंडनमंडन व प्रश्नादिक करनेका अवसर प्राप्त होगा.

(४) (उ) जिनागममें पूजनका अभिप्राय केवल सत्कार मात्र ही है या और कुछ भी यदि कोई दूसरे अभिप्राय भी है तो वे यक्ष-भैरवादिककी पूजनमें सिद्ध होते हैं या नहीं? यदि होते हैं तो किस तरहँ.

(ब) यक्षादिककी अष्टप्रकारी पूजनकेलिये क्या प्रतिष्ठापाठमें आज्ञा है?

(स) यक्षादिककी पूजन और कोतवाल तहसीलदारादिके सत्कारमें क्या समकक्षीपना है?

(उ) क्या यक्षकिन्नरादिककी वर्तमान स्थापनाको नित्यप्रति अष्टद्रव्यसे पूजन करना चाहिये? क्या ऐसा प्रतिष्ठापाठोंका अभिप्राय है?

(इ) भट्टारकोंके पूर्व भैरवादिककी प्रतिष्ठा वा स्थापना होनेका जो आपने लिखा है सो क्या वर्तमानमें जैसी दक्षिणदेशादिमें इन भैरवादिकी स्थापना है वैसी ही होती थी वा अन्यप्रकार?

(क) इनकी पूजन और स्थापनासे मुख्य उद्देश्यमें कुछ अंतर आता है या नहीं?

व्यंतर देवकुदेवोंमें है या देवोंमें? यदि भूतपिशाच कुदेवोंमें है तो यक्ष क्यों नहीं.

शेषमग्रे.

आपका कृपेच्छु,

हजारीमल उदयलाल जैन

बडनगर (मालवा.)

श्रीयुत जैनमित्रकर्ते यांस:—

जयजिनेंद्र वि० वि० आपल्या जैनमित्राच्या १०-११ व्या अंकी श्रीयुत हिराचंद नेमचंद यांनी "आज्ञा और प्रवृत्ति इस विषयके लेखऊपर शंका" या शिरो लेखाखालीं एक लेख प्रसिद्ध करून पाक्षिक व नैष्ठिक श्रावकांचे भेद कोणच्या आम्नायांच्या ग्रंथांत आहेत. व त्यांची नांवें आणि प्रकरण लिहिण्यास सांगितले आहे त्याचें स्पष्टीकरण खालीं लिहिल्याप्रमाणें:—

जैनधर्मे श्रावकाणां एकादश भेदाःनिर्णीताः ॥

श्लोक—

आदौदर्शनमुन्नतंव्रतमितःसामायिकप्रोषध त्यागश्चैवसचित्तवस्तुनि दिवाभुक्तिं तथा ब्रह्म च ॥ नारंभो न परिग्रहोऽननुमतिर्नोद्दिष्टमेकादश स्थानानीति गृहिव्रंते व्यसनिता त्यागस्तदाद्यः स्मृतः ॥ १ ॥ -इति पद्मनंदी.

अर्थ—दर्शन, व्रत, सामायिक, प्रोषधोपवास, सचित्तवस्तुत्याग, दिवाभोजन, ब्रह्मचर्य, अनारंभ, अपरिग्रह, अननुमति व अनुद्दिष्ट अशा श्रावकांच्या अकरा प्रतिमा आहेत.

या अकरा प्रतिमामध्यें तीन आश्रम आहेत. ते असे-ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थ (यति) इत्याश्रमाः -इति सोमदेवनीतिः

ब्रह्मचर्यं आषोडशवर्षात् (नैष्ठिक) ततः दान पूर्वकं दारकर्म च गृहस्थः (पाक्षिकः) ॥ स उपकुर्वाणो ब्रह्मचारी यो देवमधीत्य स्नायात् ॥ स नैष्ठिको ब्रह्मचारी यस्य प्राणांतिकमदारकर्म ॥ नित्य नैमित्तिकानुष्ठानस्थो गृहस्थः (सः पाक्षिकउच्यते)

इति सोमदेवनीत्यां आन्विक्षिकी समुद्देशे.

पाक्षिकाचारसंपन्नो धीसंपत् बंधु बंधुरः ॥

इति नेमिचंद प्रतिष्ठातिलके यक्षदीक्षायां.

पहिला श्रावक—

गर्भाधारणापासून आठव्या वर्षी मुंजीबंधन क्रिया सस्कारपूर्वक आषोडसवर्षांपर्यंत ह्मणजे मुंजीबंधनापासून आठव्या वर्षापर्यंत नैष्ठिक आश्रमस्थ होतो. यास बालब्रह्मचारी ह्मणतात. मुंजीबंधन झाल्यावर तो मनुष्य मरणापर्यंत असल्यासही त्याला **नैष्ठिक ब्रह्मचारी** असें ह्मणतात.

दुसरा श्रावक—

सामायिक प्रतिमेपासून अनुमति प्रतिमेपर्यंत गृहस्थ (पाक्षिक) समजावा.

तिसरा श्रावक—

अकराव्या प्रतिमाधारी श्रावकास वानप्रस्थ (अनुद्दिष्ट) ह्मणतात.

त्रयोवर्ण ब्राह्मण एव -इति सोमदेव नीतिः

एकसंधी श्लोक:—

क्षत्रियाद्यास्त्रयोप्येषु मता वर्णोत्तमा यतः । केवलार्कोद्भवे योग्यःसंतानाःश्लाध्यवृत्तयः ॥

अकरा प्रतिमा व तीन आश्रम-ब्रह्मचारी (नैष्ठिक) गृहस्थ (पाक्षिक) वानप्रस्थ (उद्दिष्ट) हे सर्व वर लिहिल्या श्लोकाप्रमाणें ब्रह्म, क्षत्रिय, वैश्य या त्रिवर्णास लागू आहेत. उपनयनादि क्रिया संस्कारविना नैष्ठिक पाक्षिक व उद्दिष्ट हे भेद होत नाहीत. ह्मणजे उपनयनादि विधी अवश्य पाहिजेत.

एकसंधी श्लोक—

शूद्राणामुपनीत्यादीसंस्कारो नाभिसंमतः । यन्नैते जिनदीक्षार्हा विद्या शिल्पोचितानयाः ॥ अयोग्यताच तत्रेपामभूमित्वात्सुसंस्कृतेः । नीचान्वये हि संभूतिःस्वभावात् तद्विरोधेनि ॥

अर्थ सारांश—

शूद्रास उपनयनादि सर्व विधी लागू होत नाहीत. कारण जिनदीक्षेला ते योग्य नाहीत.

आम्हास जिती माहिती होती तेवढी लिहिली आहे.

जास्त माहिती असल्यास ग्रंथाधारपूर्वक प्रसिद्ध करणें ह्मणजे आह्मी आभारी होऊं.

ह्मसूर (बेळगांव) मिती श्रावण शुद्ध १३ बुधवार शके १८२५ | आपला विद्यार्थी, **जयराव भूपाल नैनार.**

श्रीयुत संपादक जैनमित्र यांसः—

इद्रनन्दि. वसुनन्दि अकलंक इत्यादि मुनी विक्रम संवत ६०० च्या इकडे झाले आहेत. असें श्रीयुत हिराचद नेमचंद यांनी लिहिलें आहे. तर त्यांनी कोणत्या ग्रंथाधारांन लिहिले आहे. तें त्यांनी कळवावें अशी विनती आहे.

शहापूर, ता. ५।८।०३ | आपला ग्राहक, **रामचंद्र सांतपा मोहिरे.**

श्रीयुत जैनमित्राचे संपादक यांसः—

श्लोक.

आव्हानं पूरकेनस्य रेचकेन विसर्जनम् ।
शेषकर्माणि योग्यानि कुंभकेन प्रयत्नतः ॥

इति श्रीकुंदकुंदाचार्य **प्रतिष्ठापाठ.**

या श्लोकाचा सान्वयार्थ व अभिप्राय व पूरक, रेचक कुंभक यांविषयी सविस्तर विवरण यथायोग्य रीतीने प्रसिद्ध करावें ह्मणजे त्यांचे आभारी होईन. कळावें ही विज्ञप्ति.

शहापूर, ता. ५।८।०३. | आपला, **भरमगौंडा पद्मगौंडा पाटील.**

ईडरगढका श्रुतभण्डार खुलगया.

आज हमको जो कुछ आनंद हुवा है वह वचन अगोचर है. लेखनी शक्तिसे बाहर है. सुननेसे हमारे पाठकोंको भी ऐसा ही आनंद होगा अतएव वह आनंदमय समाचार प्रगट करते हैं.

पाठक महाशय! आपने जैनमित्रद्वारा कई बार सुना होगा कि, ईडरगढमें एक बहुत बड़ा प्राचीन श्रुतभण्डार भाइयोंके प्रमादसे बिना संभाल नष्टभ्रष्ट हो रहा था. परन्तु आज हमको शोलापुर निवासी हीराचद रामचदजीकी [हरीभाई देव करणवालेकी] ईडरसे आई हुई चिट्ठीसे ज्ञात हुवा कि, ईडरके भाइयोंने श्रुतभण्डारको खोलकर जालीदार [हवादार] कमरेमें गत्ते पुट्ठोंसे संभाल करके यत्नसे सब ग्रन्थ विराजमान कर दिये है. कहिये पाठक महाशय! आपको आज कितना हर्ष हुवा होगा? अब आप ही बताइये कि, इस अपूर्वानंद प्रदानके बदले ईडरके भाइयोंको कहांतक धन्यवाद देवें? लाचार हम श्रीमज्जैनधर्मके प्रभावसे यही इष्ट प्रार्थना करते हैं कि, ईडरके भाइयोंकी चिर नीरोगता रहकर धर्मोन्नति जात्युन्नतिके भाव दिन दूने रात चौगुणे बढते रहें, और इसही प्रकारके आनंद समाचार सुनाते रहें.

सम्पादक.

श्रीमांगीतुंगी तीर्थपर जीर्णोद्धारनी जरूर ते ऊपर खास आपवुं जोइतुं ध्यान.

ग्रहस्थो आपणे जाणता हशो के मांगीतुंगी गिरी सिद्ध क्षेत्र छे. ते गिरी ऊपर राम तथा अनुमान तथा सुग्रीव तथा गव, गवाक्ष, नील महानील तथा नवाणु कोटि मुनि मुक्ति गया छे. ए तीर्थ पासे पग रस्ता ऊपर आवेलुं छे. एटले त्यां जात्रीनी आवक घणी थोडी छे. तेथी कराने आवक निभाव जेटली आवती नथी. एटले जीर्णोद्धार करवा सारू त्यांथी आसपास गांववालानी पचनी कागल अमारा ऊपर आव्यो छे. ते पण खास जरूर जणावे छे के आटली जगा ऊपर जीर्णोद्धार करवानी खास जरूर छे ते नीचे प्रमाणे.

१ पाहाड ऊपर चोमासामां पथरा टूटी पडवाथी पगथियां भांगी गया ते एटले लगीके रिपेर करवामां नहीं आववाथी जात्रियोने वंदना करवानी बंध थइ पडी छे ते तेनो खर्च रु. २०००) जणावे छे.

२ मंदिर तथा धर्मशालानी चो तरफ कोट करवामां नहीं आवे तो जगा आपणा ताबामां छे. ते सरकार लेवा मांगे छे थोडा दिवस ऊपर गवर्नमेंट तरफथी एक साहब आवीने किमत करी गया हता ते बाबतमां रुपया २५००) ने आशरे जोइसे.

३. मंदिरनी आसपासना पगथियांओ बनावेला हता तेमां खाडा पडी गया छे तेनी ऊपर आरस

जडाववानी जरूर छे. तेना खर्चनो आसरो रुपया २,५००) नो करयो छे.

४. जूनी धर्मशाला लाकडानी होवी थी घणी भागी तथा तूटी जाय छे ते चूनानी कराववी जोइये तेना खर्चनो आसरो रु० १,५००) नो करयो छे.

५. नगारखानानो दरवाजो तथा नगारखानो रिपेर करवा सारू रु. १,०००] नो आसरो नकी करयो छे.

ऊपर लख्या प्रमाणे कामनी जरूर छे. पण ऊपरनी पांच कलममां थी अमने अमारा ध्यान प्रमाणे पेहेलीने बिजा नंबरनी हकीकतनी खास जरुर छे ते कलम नो खास जरूर तमारी ध्यानमां आवशे, कारणके जो आ काममां आपणे काई पण तजवीज नही करिये तो सरकार पोताना ताबामां लेशे तो पछी बाकी खर्चने मेहनत करे पण आपणा हाथमां नही आवे. आपणा सर्व जैनबंधुओ जाणे छे के कोई जगा रखेवाली रखेवाली करता करता आज आटला जोरमां आव्या छे के ते दाद आपणे आपता नथी तेवी बीजी घणी छे पण अमेने लखवानी जरूर नथी ते सर्वे भाइयो जाणे छे. हवे ए काम केवी रीते थाय, ने लोकोने भारे पडे नही. तेनो रसतो मारी ध्यानमां आव्यो छे. ते जैनबंधुओने जणाऊ छु. ते सर्वेना ध्यानमां बेशशे, एवी आशा छे. ते रस्तो एज छे के आपण दिगम्बरोनी जाहेर वस्ती आठ लाख माणसनी छे. ने श्वेताम्बरनी वस्ती छः लाख माणसनी छे. एकदर चौद लाख जैन वस्ती छे. आपण आठ लाख माणसनी वस्ती प्रमाणे वर्ष दहाडे एक तीर्थ ऊपर आदमी दीठ १ आनो. आदमी दीठ दर वर्षे एक एक तीर्थनी सराम्मतमां आवे तो दश वर्षनी अदर तीर्थो एटला सुधरी जाय के लाखो रुपया खर्चे पण कोईने भारी लागे नही. केहेवत छे के, टीपे टीपे सरोवर भराय. तेवी रीते काम थाय. आपण जैनी भाइयो संसारनी विटम्बनामांथी जातरा करवा जवाना विचार करे छे. पण निकलवानो वखत आवतो नथी. वास्ते सर्वे जैन बंधुओ सारामां सारा दिवस वरसमां एक वखत भादरवा माससमां दश दिवस आवे ते ऊपर केटला संसारना काम तथा धर्मना काम मुलतवी राखवामां आवे छे. कोइ पुछे तारे कहे छे के पजुशण ऊपर करी शूं. वास्ते संसारना कामो ते दिवस ऊपर तैयार करावीने वर्ष दिवसना काम पतावे छे त्यारे अमारा सर्वे भाइयोने एज अरज छे के ते संसारना काम पतावे ते प्रमाणे आवा तीर्थनो फाळो आपी वर्ष दिवसने सारू. निरांत करवी जोइये ते पण ऊपर लख्या प्रमाणे **माणस दीठ आनो** आवे तो घणी सारी बात छे. ते भाइयोने मालूम पण नही पडे पण ते बधा भेगा करवामां आवे तो ते भाइयो एटला विचारमां पडे के आटलो पैसा भेगो थयो पण आपणे तो एक आनो आप्यो छे मांटे सर्वे भाइयो आ बात ऊपर खास ध्यान आपशो साथी के आपणा पजुशण नजीक आवे छे. आपणा भाइयो प्रतिष्ठा मेळामां लाखो रुपया खर्चे छे ते प्रमाण जोतां आ काम मात्र एक घणी करे तो मोटी वात नथी पण थोडी मेहनतमां जीर्ण उद्धार काम थाय ने तेनो लाभ सर्वे गरीब तथा समर्थ सर्वेने सरखो मळे ने कोईने भारी पडे नही. सर्वे भाइयो आ वात ऊपर ध्यान आपशो. एज अरज.

चुन्नीलाल जवेरचंद मन्त्री.
तीर्थक्षेत्र बंबई प्रांत.

दशलाक्षणिक पर्वरायका आगमन.

आहाहा आज क्या ही खुशीका अवसर प्राप्त हुआ है जो घनघोर मोर सोर रहु औरस जलजलदयुक्त पावसरायके साथमें पर्वराय जलदका आगमन हुआ है. जिसके मिलापकी खुशीमें सुखी हो हर्षके प्रकर्षमें भव्यजीवमयूर प्याहो, प्याहो करते धर्मामृत वृष्टिकीवांछा कर पुकार रहे हैं और अंगमें फूले नहीं समाते. सदैया (जो नित्यही जिनमंदिरमें आते हैं) १ भदैया (जो १० दिन भाद्रपदमें ही आते हैं) २ मरैया (जो मृतकपातकनिकालनेको ही आते हैं) ३ लरैया (जो कजिया-लड़ाई झगड़ा लेकें ही मंदिरमें आनेवाले हैं) ऐसें च्यारौ प्रकारके जैनियोंके मनराय उछलते हुये सपटझपटकें देहपुरीके

बाहर हो रहे हैं और भक्तिके भरे जिनमंदिरोंमें प्रवेशकर नानाप्रकारके उत्सव कर रहे हैं. कोई तौ दशलाक्षण रत्नत्रयादि महापूजन कर अशुभरसको घटावेंगे. कोईबेला तेला चौला कर व दशोपवासकर कर्म भर्मकी निर्जरा करेंगे. कोई अनशन उनोदर, एकाशन, कर व सचित्तका परिहार कर अहिंसाधर्मके चौरी पापास्रव मोरीको रोक पुन्याश्रवमोरीकी वाट जोवेंगे. कोई आत्मासे कषायमलको टारके समताभावधारकैं विपदाको जारके त्रियोगशुद्धिकर सामायिक करैंगे. कोई अभिज्ञ शास्त्रसभामें वक्तृत्वकलाकर भव्यजीवोंकी संकापंकाको निकाल निसंकाका डंका बजाय श्रद्धा धरापै बिठावेंगे. कोई मानमत्सरको मोरके क्रोधलोभको छोरके शर्मके चहोरी धर्मप्रेमी चकोरी सदुपदेशामृत सकोरी ले रोगको घटावेंगे. कोई उज्वल स्वेतवस्त्र धरे नाना भूषणोंसे जडे अष्टद्रव्य थाल भरे त्रिलोकी नाथकी भेट करैंगे. कोई निशाको पाय घृतका दीपक लगाय मनवचतनमें लौ लाय आरतको गारतकर श्रीजिनेंद्रदेवकी आरती उतारैंगे. कोई जिन गुणोंमें पागि मोहनिद्रासे जागि जगत धंदफंद त्यागि छुम छुम छनकारके झम झम झनकारके ठम ठम ठनकारके भगवन गुण गान करत नर्तन कीर्तनकर निशा जागरण करेंगे. कोई २ भदैया जैनी मानमें मरोरे मोह मायाके झकोरे क्रोध लोभके धकोरे मिथ्याभिमान करें कषायके गेंरें गुल छर्रे उडावेंगे. कोई २ लड़ैया जैनी, धरै उत्तम क्रोध छैनी, स्वात्मपरात्म गुणोंका घात करैंगे. मानमदके भरेले पक्षपातके धरेले मिथ्यावकबादकर मिथ्या झगडे निकाल कुसंपराक्षसको बढावेंगे. कोई २ भव्यजीव छमावनी पूजामें उत्तम क्षमाको धारण करेंगे. कोई २ दुरात्मा पापात्मा बनके उत्तम क्रोधको धारणकर परस्परमें प्रीतिभाव नाशकर कलहको वढावेंगे. इत्यादि सर्व ही जने अपने २ मनोनुकूल कार्य करेंगे परन्तु हम क्या करेंगे सो भी सुनिये. मुम्बापुरीको छोड बम्बापुरीमें बैठ विद्वज्जनोंकी सैलीमें सज्जनोंकी गैली पाय धम्मापुरीका शरण ले शम्मापुरीकी वाट हम भी हेरैंगे और जो कोई भव्यजीव हितके वांछक सदीव हमारी प्रार्थनापर भी ध्यान देवेंगे तौ उनके गुणोंका भी स्मरण करैंगे. वह प्रार्थना भी सुनियें कुछ आपको तकलीफ देनेकी नहीं है. चौकना मती.

हमारी प्रार्थना.

प्रियबंधुओ! हम लोगोंको वर्षदिनमें (३६९ दिनमें) महा घोर पापारंभ करते हुये, दिनरात चैन नहीं मिलता नाना आकुलताकर व हिंसा झूंठ चोरी आदि कार्यकर पापार्जनमें लगे रहते हैं दशादिन स्थिरताके कारण आते हैं. इन दिनोंमें धर्मात्मा भव्यजीव तन मन वचनकी शुद्धतापूर्वक अपने २ परिणामानुकूल धर्म साधनमें तत्पर हो उपर्युक्त कार्य करनेमें उद्यमी होते हैं परन्तु विचारना चाहिये कि उपवासादि कार्य विषय कषाय घटानेकेलिये किये जाते हैं न कि वढानेको. अगर कषाय न घटै तौ उपवासको शास्त्रमें लंघन कह्या है यथा-कषायविषयाहारो त्यागो यत्र विधीयते। उपवासो स विज्ञेयो शेषा लंघनकं विदुः॥ १॥ ऐसें ही पूजन सामायिकादि जो कुछ करना है उसका फल भी शुद्धभावनियुक्त कषायादि घटानेसे हैं. नहीं तो वृथा हैं. यथा भावहीनस्य पूजादि तपोदानजपादिकं

व्यर्थं दीक्षादिकं च स्यादजाकंठे स्तनाविव

अर्थात् भावनिविना जप तप वृतादिक केवल लोकरंजन करनेको बगुलाभगत बन आडंबर करना हैं। अतः प्रथम क्रोधादि कषाय परिणामनसे निकाल, परस्पर धर्मवत्सलता प्रगट करना चाहिये. प्यारे भाइयो! सालभरके कषायके गुब्बारे भरे हुये इनदिनोंमें नानाझगडे करनेकेलिये छोडने योग्य नहीं है. मिथ्या पक्षपातकर निष्प्रयोजन टंटोंको निकालके सज्जनोंसे ईर्षाभाव कर गुर्गुराना दुर्जनोंका कार्य हैं "सज्जनं दुर्जनो दृष्ट्वा श्वानवद्गुर्गुरायते" आपसमें खासगी टंटेके मिसकर तीव्रकषायके भरे मिथ्या पक्षकर नकछुरातपर आपसमें दो धडे कर डालते हैं सो महाराष्ट्र प्रांतादिके स्थानोंमें प्रायः खोला (जीमनमें सुपारी चावल, नोतेके बटाना बडा अन्याय है) किसके हाथसे देना, इत्यादि फजूल कारणोंसे दो पंचायतें हो रही हैं. आजकल कुसंपराक्षस चारों तरफ फैलकर भारतको गारत करनेकेलिये उद्यमी हो रहा हैं. सो हे भाइयो! सर्वजन आपसमें एकताकर उक्त राक्षससे बचनेका उपाय करो. ऐसा अवसर पुनः २ हाथ नहीं आता. इन दिनोंमें सर्व मंडळी एकत्र होती है. समताभावयुक्त परस्पर फैले हुये झगडोंको मिटाके संपकर जाति धर्मकी उन्नति करनेमें उद्यमी होवो. प्रत्येक जगहँ सभा स्थापन व पाठशाला स्थापन करावो. शास्त्रस्वाध्यायका प्रचार करावो. हानि लाभके कारणोंको विचारो वृथा ही वैर विरोधकर उक्त धर्म जातिकी उन्नतिके कार्योंको जलांजलि देकें पापवृक्षको मति बढावो. भाइयो! चेतो इस उत्तम क्षमाका सरण लेय मोक्षमार्गमें प्रवर्तो. प्रान जानेपर भी परम हितकारक अनेक महिमायुक्त उत्तम क्षमाको मति छोडो. देखो शास्त्रमें प्रशंसा किसप्रकार है—"क्रीडाभूः सुकृतस्य दुष्कृतरजः संहारवात्या भवोदन्वन्नौर्व्यसनाग्निमेघपटली संकेतदूतीश्रियां। निःश्रेणिस्त्रिदिवौकसां प्रियसखी मुक्तेः कुगत्यर्गला सत्वेषु क्रियतां कृपैव भवतु क्लेशैरशेषैः परैः ॥ १॥ अर्थात्—पुण्य रूपक्रीडा करनेको भूमिसमान, पापरज उडानेको पवनसदृश, संसारसमुद्र तारनेको नौका, व्यशनाग्निको शांतिकरनेवाली मेघपटली, लक्ष्मीको इंगत करनेवाली दूती, स्वर्गकी नसैनी, मुक्तिकी प्यारी सखी, कुगतिकी अर्गला ऐसी उत्तम क्षमाको समस्तप्रकारके कष्ट आनेपर भी धारणकर सब जीवोंपर कृपा ही करना चाहिये अतः आशा है कि सर्व स्थानोंके भाई अपने २ यहांसे कुसंपराक्षसको हटाके संपको बढावें के जहां २ दो तड हैं सर्व एक होकर पाठशालादि स्थापनकर प्रबंध करना चाहिये. स्वाध्यायादिका नियम लेना चाहिये. देखें इस प्रार्थनापर कोन २ ध्यान देकर एकताकी सूचना मासिकपत्रमें छपानेको भेजकर सुयशको प्राप्त करते हैं.

क्षमाखड्गं करे यस्य दुर्जनः किं करिष्यति
अतृणे पतितो वन्हिः स्वयमेवोपशाम्यति ?

जैनहितेच्छु— एक जैनी.

आगामी अधिवेशन!

पाठकमहाशय! दिगम्बर जैन प्रांतिकसभा बम्बईका तीसरा वर्ष पूरा होने आया. आगामी अधिवेशन कहांपर होगा उसका निर्णय शीघ्र ही

होनेकी जरूरत है. परंतु सबसे पहिले हमारे पाठकमहाशयोंसे भी सम्मति ले लेना अत्यावश्यकीय कार्य है. अत एव बम्बईप्रान्तके समस्त पाठकमहाशयोंसे (जैनी भाइयोंसे) सम्मति पूछी जाती है कि-पहिला वार्षिक अधिवेशन तो बंबई शहरमें ही हुआ था और दूसरा वार्षिक अधिवेशन गत ज्येष्ट महीनेमें शोलापुरकी बिंबप्रतिष्ठापर हुवा. अब तीसरा वार्षिक अधिवेशन किस समय और कौनसे शहरमें होना चाहिये सो दशलक्षणीके पर्व दिवसोंमें समस्त भाई परस्पर विचार कर शीघ्र ही अपनी २ सम्मतिसे सूचित करैं. यदि इन दिनोंमें (दो तीन महीनोंमें) कहींके मेले वा प्रतिष्ठाके समय वार्षिकोत्सव करना उचित समझा जावे तो जहां जहां मेला वा प्रतिष्ठा होनेवाली हो, वहां २ के भाई भी सभामें मेलेकी मिती व स्थानकी (सहरकी) सूचना भेजैंगें तो हम प्रबंधकारिणी सभामें यह प्रस्ताव पेश करके निश्चय करैंगे. तथा कोई खास धर्मात्मा भाई वा कहींके पंच महाशय इस सभाका अपने यहां अधिवेशन करानेका उत्साह रखते हों. तो वे भी हमको इस समय सूचना देंगे ते। प्रबंधकारिणी सभामें पेश कर दिया जायगा.

आपका-गोपालदास बरैया महामंत्री;
दिगम्बरजैनप्रांतिक सभा बम्बई.

श्री शिखरजीनी चालू व्यवस्थामा बगाडो.

---o---

मेहेरबान ! जैनमित्रना अधिपति साहेब. वि० वि० गया मासना नं. १०-११ मां अंकमां "श्रीशिखरजीना पैसानो गेर उपयोग तथा तीर्थक्षेत्र सम्बन्धी चर्चा" ए मथाळा नीचेनो एक गुजराती अने बीजो मराठी लेख मळी बंने लेख मारा वांचवामा आव्या थी श्रीशिखरजीनी बडी कोठीमां चालता वहिवटनो गोटाळो पूरीरीते समजवामां आव्यो छे. ए बंने लेखनी हकीकत सम्पूणरीते खरी छे ए मानवाने मारीपासे मजबूत कारणो छे. गया वर्षना फेब्रुवारी मासमां हुं ज्यारे शिखरजी गयो हतो त्यारे उक्त कोठीना चोपडा तथा वहिवट जोवा उपरथी त्यांनी सम्पूर्ण गेर व्यवस्था मने मालूम पडी हती. त्यांनां मुनीमने नोकरोना कहेवा थी तजवीज करतां आरावाला कारभार करता मालूम पड्या हता. बाद शिखरजीथी आरातरफ मारे जवानो थवा थी त्यां मैं बाबू मुन्शीलालजी तथा देवकुमारजी पासे शिखरजीना हिसाबनो वार्षिक रिपोर्टनी नकल मागी ते उपरथी हिसाब बाहार पड्यो नथी तथा चोखारीने राखवामां आव्यो नथीं. एम केहेवामां आव्यो. विशेष एटलु केहेवामां आव्यु के हवे थी हिसाब बाहार पाडवानो विचार छे हिसाब कोई पण अंकमां मारा वाचवामां आव्यो नथी आ उपरथी मालूम पडे छे के शिखरजीनी बडी कोठीना ज्यां ओछामां ओछी रु० १०००० नी जात्री तरफनी आवक छे. तथा ज्यां एक लाख थी पण वधू पूंजी छे तेनी पेदास तथा पूंजीनो तदन गेर उपयोग थाय छे आवी मोटी पेदाशनो गेर उपयोग नहीं थतां बीजा आबूजी जेवा जीर्ण तीर्थक्षेत्रो उपरके ज्यां आवक करतां खर्च वधू होय त्यां आ आवकमांथी पैसा जवा जोइये अने एवी रीते बधां तीर्थक्षेत्रोनो वहिवट

सुधारवो जोइए. आ प्रसंगे मारे खुसी साथे जणावुं पडे छे के आवा ऊपर बताव्या प्रमाण स्तुत्य हेतु साचवाने माटे हाल एक कोई तीर्थ कमीटी करवानी हीलचाल चाली रही छे, थोडा वखतमां नीमाई जसे वली शिखरजीना, केटलाक पैसा सम्बन्धी पुर्लियानी कोर्टमां आरावाला तरफथी रु ०३८,०००) नो जे दावो चाले छे ते सम्बन्धी मनाई हुकम मेलवी ते रुपया बाबद आरा वालाना नामे एवी फरियादी करवानी हीलचाल हाल मुंबईमां चाली रही छे ने ते सम्बन्धी फक्त धर्मनी प्रभावना घटती अटकाववाने तथा धर्मादा पैसानो गेर उपयोग थतो बंध करवाने जे प्रयास चाले छे ते ते प्रशंसा पांच छे ने ते मांटे मुम्बईवालोने हूं मारी अंःतकरणथी धन्यवाद आपू छूं. अने तेमना प्रत्ये मारी नम्र अरज छे के तमे हाल जे केस हाथमां लीधो छे. ते जारी राखवो ने जेवी रीते तन मन धन थी हाल प्रयास करे छे तै वो केस पूरो थतां सुधी करया करशो तो जरूर छेवटमां तेमनी यत्न सफल थासे. वली ते धारता हशे के बाहार गामना तरफथी अमने मदद नथी पण ते धारवुं भूल भरेलो मने लागे छे. केमके आवी रीतना धर्मना कामोमा मदद करवाने कोई पण दिगम्बर जैन पाछो हटसे नही. अने बाहारना वधा गामना लोको तेमना मददेज छे. एम समजवुं ज्यां सुधी कोई पण ग्रहस्थ आगल पडी भाग लेता नथी त्यां सुधी बीजा कोई तमारे मलता नथी. अेवुं बधाता धारे छे माटे मारा मुम्बई निवासी अग्रेसरोने मारी प्रार्थना छे के तेमणे पोतानो प्रयत्न चालू राखी काम सफल करवुं. हवे मारा बाहार गामना अग्रेसर महाशयों प्रत्ये मारी ए अरज छे के तेमणे बधाए तन मन धन थी. आपणा मानवंत धार्मिकने उत्साही तीर्थक्षेत्र कमेटीना सेक्रेटरीने मदद करवी. ग्रहस्थो आवा सर्वोत्तम अने सर्वोपरि शिखरजी जेवा पवित्र धाममां जे तमो पइसावाला हो तो तमारा पेसानो शक्तिप्रमाणे सुवार्थ नही करो ने जो तमो विद्वान हो तो तमारी विद्वत्तानो उपयोग नही करो तो तमारी पूंजी अने विद्वत्ता कोई परोपकारी काम माटे नही पण फक्त नामनीज रेहेसे. आ प्रसंगो करीने भाग्येज मलशे. दुनियामां जेनो धर्म गयो जेनुं सर्वस्व गयो समजवुं मांटे मारी एज अरज छे के सर्वोए यथाशक्ति मदत्त आपवा तत्पर रहेवुं. विशेषमां मारी एज सूचनाके गया अंकमां वताव्या प्रमाणे जे कोई पण जात्री शिखरजीना ऊपरना भंडारमां हाल एक पाईपण मोकले नही ने पोताना मोकलवाना पेशा मुम्बई सभामां जमे करावे तो हवेथी आववानी आवक तो न थाय एज अरज.

लि०—एक दिगम्बरी जैन.

अन्धेरमें फिर भी अंधेर.

लशकरके यम. एल. महाशयने जैनगजट अंक १३-१४- पृष्ठ १९ में तीर्थक्षेत्र सोनागिरजीके तेरह पंथी मंदिरके बाबतमें जैनमित्र अंक ८ की हमारी रिपोर्टपर अपशोस प्रगट किया है. वास्तवमें यदि यम. एल. महाशयका लिखना ठीक है तो हमको भी इसबातपर खेद होता है. परंतु हमको किसी प्रकार मालूम

हुआ था कि तेरह पंथी मंदिरके प्रबंधकर्त्ता राजा फूलचंदजी साहब है तब हमने उनके पास तीर्थक्षेत्रोंको व्यवस्था पूछनेके फारम तीनवार भेजे तथा प्राइवेट चिट्ठी भी भेजी परंतु बडे घरोंमें बडा अन्धेर, की लोकोक्तिके अनुसार न तो राजा साहबने फारम भरकर भेजा, और न कोई फारम पीछा ही लोटाया और न यह लिखा कि इसके प्रबन्धकर्त्ता वा खजांची कोई अन्य है. तब हमने अनुमान किया कि प्रबंधकर्त्ता वा खजांची तो येही होंगे परन्तु प्रमादसे फारम भरनेकी तकलीफ न उठाई होगी. जो ये महाशय प्रबन्धकर्त्ता नहिं होते, अन्य कोई होता तो हमारी चिठ्ठीका जबाब अवश्य ही देते, ऐसा समझकर ही जैनमित्र द्वारा सूचना देनेके अभिप्रायसे वह रिपोर्ट प्रगट की गई है किन्तु राजा साहबके चित्तको रंज पहुंचानेके अभिप्रायसे हरगिज नहिं की गई. तिसपर भी राजा साहबको यदि उस लेखसे रंज पहुचा हो तो हम उसके लिये अपनी भूल स्वीकार करते हैं परन्तु खेद है कि यम. यल. महाशयनें एक कार्ड द्वारा सूचित नहिं करकें वृथा ही आक्षेप पूर्वक जैनगजटके कालिम काले करकें अन्य पाठकोंको उभारा देकर फिर भी अंधेरके अन्धेरसे प्रबन्धकर्त्ताका नाम प्रकाशमें नहिं लाये हैं आशा है कि अब असली प्रबंधकर्त्ताका व खजांचीका नामप्रमादि अवश्य ही प्रगट करेंगे.

आपका हितचिंतक,
जोंहरी चुन्नीलाल जवेरचंद.
मंत्री-तीर्थक्षेत्र.

रिपोर्ट उपदेशक पं० रामलालजीकी

ता. १७–३–०३ को में फरिहा मेलामें गया था. वहां ४–५ दिन शास्त्रसभा व उपदेशक सभामें उन्नत्ति आदि विषयोंपर व्याख्यान किया था. मेलामें ४००० भाई एकत्र हुये थे. बहुत बडा आनंद रहा. कोटला आदि चार स्थानोंसे मंदिरजी आये थे. यहां ६० घर पदमावतिपुरवाल जैनोंके हैं. मंदिर १ हैं, चंद भाइयोंनें स्वाध्यायादिका नियम लिया.

ता. २५–३ को मरसेनामें ५५ महाशयोंकी सभामें षट्कर्म विषयमें व्याख्यान दिया १० भाइयोंने स्वाध्यायादि नियम लिया जैनमित्र मंगाना स्वीकार किया यहां १० घर, मंदिरजी १ हैं, शास्त्र रोज होता है.

ता. २१ को हिम्मतपुरमें ८० महाशयोंकी सभामें सत्संग विषयमें व्याख्यान किया. चंद भाइयोंनें स्वाध्याय रात्रि भोजनादिका नियम लिया. यहां परस्पर झगडा होनेसे २ पंचायत थी सो एक होगई. सभा स्थापन हुई मंदिरमें नित्य शास्त्र होना स्वीकार हुआ.

ता. ३०–३–०३ को अहाररा आय १०० महाशयोंकी सभामें संसार विषयमें व्याख्यान किया १३ महाशयोंनें स्वाध्यायादिका नियम लिया सभामें शास्त्र पढना स्वीकार किया. यहां २५ घर पदमावतीपोरवाल जैनके हैं मंदिर १ है.

ता. १–६–३ को शोलापुर आया यहां प्रतिष्ठा थी जिसका समाचार बम्बई सभा लिखेगी.

ता. ११को पामू गोपालशास्त्रीके साथ बार्शी आया. सेठ रामचंद्र अभयचंद्रजीके यहां ठहरा. उक्त

महाशयनें बहुत कुछ खबर किया. उक्त सेठकी पुत्रीकी सादी थी. जैनरीत्यानुसार लग्न विधियुक्त शास्त्रीके हाथसे कराई. तीन दिनमें ५०,१००, १०० महाशयोंकी सभामें चारित्र, सम्यग्दर्शन, धर्मविषय (इसके व्याख्यानदाता उक्त शास्त्रीथे) में व्याख्यान २—२॥ घंटा हुआ. उक्त सभाओंमें अध्यक्ष, सेठ माणिकचंद वालचंद धाराशिव, पासू गोपाल शास्त्री, शिवलाल मलूकचंद पंढरपुर, क्रमसे हुये व उक्त महाशयोंनें व्याख्यानका समर्थन किया. १५ महाशयोंनें स्वाध्यायका नियम व अष्टमूलगुण धारण किये. लालचंद वस्तासेंद्रीकर जैनमित्रके ग्राहक हुये (वी. पी. मगाया) और निम्न लिखित महाशयोंने शादीकी खुशीमें उपदेशक, भंडारमें १०४) रुपये प्रदान किये.

२५) सेठ रामचंद्र अभयचंद (वेटीवाला)
२५) „ मोतीचंद नेमचंद उपलाईकर (वेटेवाले)
१५) „ शिवलाल मलूकचंद पंढरपुरकर.
५) „ ताराचंद झवेरचंद शोलापुर.
२) अमीचंद फूलचंद उजनी.
२) तुलजाराम कामराज शिराल.
२) गांधी रामचंद प्रेमचंद. उपलवटे.
२) फूलचंद मलूकचंद घोटी.
२) पटवा खेमचंद जेठीराम सांघवी.
२) रामचंद नानचंद „
२) फूलचंद जयचंद कुरल.
२) मोतीराम मानिकचंद मंगलवेढे.
२) भवान मुलचंद माढे..
२) फूलचंद खेमचंद मुळार.
५) रामजी कस्तुरचंद खरडे.
३) कस्तुरचंद जयचंद बारसीटौन.
५) अमीचंद कस्तूरचंद परीते.
१) पानाचंद ताराचंद माहिसगांव.

यहांपर सेठ रामचंद्र अभयचंद्रजी बहुत धर्मज्ञ हैं. परिणाम बहुत अच्छे हैं. इन्होंनें ब्रह्मचर्यव्रत २ वर्षको कुंथलगिरिकी प्रतिष्ठापर लिया था सो निरतीचार पालन करते हैं. इन्होंनें जिसप्रकार शादीके कार्यमें मंगलीक कार्य जैनरीत्यानुसार विधि व उपदेशादि कराया और उपदेशक भंडारको द्रव्य प्रदान कर धर्म वत्सलता प्रगट की है. इसी प्रकार अन्य भाइयोंको भी अपने २ पुत्रपुत्रीकी शादीमें वेश्या नृत्यादि अमंगलीक कार्यको छोड जैनरीतिसे लगन व सभाके उपदेशद्वारा धर्म प्रभावना करनी चाहिये और यथाशक्ति बंबई सभाको सहायता देनी चाहिये. विवाहादि कार्योंमें हजारों रुपये फिजूल खर्चमें उठा देते हैं अगर उसमें से कमसे कम ५) सैंकडा भी उपदेशक भंडारमें प्रदान करें तो बहुत कुछ बंबई सभाको सहायता मिलै और उक्त भंडार चिरस्थाई रहे. आशा है कि, इस प्रार्थनापर धर्मप्रेमी परोपकारी महाशय अवश्य ध्यान देकर धन्यवादके पात्र बनेंगे. यहां १ ही घर जैनीका है. चैत्यालय भी है.

ता० १५ को मोडनिम्ब आया. सेठ हरीचंद खुशालचन्दजीके यहां आदरपूर्वक ठहर २५ महाशयोंकी सभामें, दयाधर्मके विषयमें व्याख्यान १ घंटा किया, महाशयोंने स्वाध्याय अष्टमूल गुण धारण किये. ५) उ० भं० में प्रदान किये. यहां १३ घर हूंमड जैनके व १ मंदिर हैं.

ता० १६ को आष्टी आया सेठ मोतीचंद खेमचंदके यहां सादर ठहर रात्रिको २० महा-

शयोंकी सभामें "सदाचार" विषयमें व्याख्यान किया. १० भाइयोंने स्वाध्याय आठ मूल गुण का नियम लिया. १३ घर श्रावकके १ मंदिर है.

ता० १७ को पेनुर आया. नाथूराम वस्ताके वाडेमें ठहरके ३०-३० महाशयोंकी दो सभामें "जातित्वकी सफलता, दर्शन प्रतिमा" विषयमें व्याख्यान दिया. ५ भाइयोंने स्वाध्याय अष्ट मूल गुणका नियम लिया. ४ नें मिथ्यात्वत्याग किया. १ शूद्रनें मद्यमांस छोडा और १ सभासद १ जैनमित्रका ग्राहक हुआ.

निम्नलिखित प्रकार बंबई सभामें द्रव्यप्रदान किया.

१) मोतीचन्द दुलचन्द आष्टी उ० भं०
५) फूलचन्द वस्ताचन्द पनूर विद्यालय.
१) „ „ जै. मि. ग्रा.
२) नानचन्द मूरचन्द आष्टी सभासद.
३) देवचन्द ताजी वडालाकर गतवर्षकी सभासदीके बाकी.

यहांपर फूलचंद वस्ताकी बेटीका विवाह था आष्टीसे मोतीचंद दुलचंदकी बरात आई थी। लग्नविधि मिथ्याती ब्राह्मणसे कराई. धर्मात्मा भाइयोंके समझानेपर भी दुराग्रह न छोडा अर्थात् यहांतक कहा कि ये उपदेशक जैन रीतीसे विधि करादेंगे. अब यहांपर ये स्वयं आगये हैं ! करानेवाले न होते तो मिथ्यारीतिसे होता ही एक तो जो मिथ्यातीको द्रव्य देना पडैगा सो बचैगा ये लाभ होगा और अपनी जैनाम्नायका पालन होनेसे पुन्य बंद होगा परन्तु उन्होने कहा कि हमारे कुलकी आम्नाय कैसे छोडें? उक्त महाशयोंकी (बेटी बेटेवालेकी) यहांतक धर्मसे विमुखता है कि एक दिन सभामें घडीभर बैठके व्याख्यानतक न सुना. अब विचार करनेकी बात है कि अन्य धर्मात्मा प्रेरणाकर लगन करानेको जैनी बाहरसे परिश्रमकर वा धन खर्चकर बुलाते हैं और जिनके मिथ्यांधकार छा रहा है वो स्वयंघरपर उपदेशादिका निमित्त मिलनेपर भी मिथ्या हट नही छोडते और कुदेवादि आराधन करनेवाले ब्राह्मणको पांचपचीस रुपये भी देने पडते हैं इसप्रकार नुकसान सहनेपर भी उसीसे लगन कराय दीर्घ संसारी बनते हैं और जैनी पंचपरमेष्टी वाचकमंत्र संस्कारादि पूर्वक लग्न करानेवालेको कुछ खर्च भी न करना पडे विना परिश्रम विना खर्च (लाभ होनेपर भी) मिलनेपर भी अपने आर्ष प्रणीतानुसार लग्न विधि नहीं कराते कितने बडे शोककी बात है? भाइयो ! मिथ्या हट छोडना चाहिये. यहां २० घर हुंमड श्रावकके और १ मंदिर है, परंतु पूजनविधि दिवाबत्ती आदिकी भी व्यवस्था ठीक नहीं है.

ता. २० को मोहोल आया. सेठ प्रेमचंद धनजीके मकानपर आदरपूर्वक ठहर २५-३० महाशयोंकी दो सभामें जात्युन्नति, कुत्सिताचरण त्याग विषयपर व्याख्यान १--१॥ घंटा किया. नेमिचन्द हीराचन्द व वीरचन्द तिलकचन्द सभापतिनें समर्थन किया. १२ भाइयोंने स्वाध्याय व अष्ट मूल गुणका नियम लिया. जिसमें २ सप्त व्यसनके त्यागी १ ब्रह्मचर्यव्रतके धारक हुये, और ३) रु. की सभासदी वीरचन्द तिलकचन्द गांधीने स्वीकार की. यहां हूँमड जातिमें जो दो धडे थे सो ८ दिन पहले एक होगये, यह बडा खुशीकी बात है. यहांपर सेठ बालचन्द रामचन्द शोलापुरके भी शादीके कारण सभामें उपस्थित थे. यहां २५ घर हूमड सेतवाल श्रावकके व १ मंदिरजी हैं. शेषमग्रे.

जैनमित्रका पाक्षिक होना.

पाठक महाशय! इस जैनमित्रको निकलते आज ४ वर्ष पूर्ण हुये. अब यह पांचवें वर्षमें पांव रक्खैगा. सो हमारे कितनेक हितैषी महाशय इसे एकदम सप्ताहिक कर देनेकी सम्मति देते हैं. यद्यपि वे अपनी धर्मज्ञतासे ऐसा कहते और जात्युन्नति धर्मोन्नति अधिक होने वगेरहका लोभ दिखाते हैं परन्तु वे नहीं समझते कि पाक्षिक वा सप्ताहिक अखबारोंके निकालनेमें कितना व्यय व कार्य करना पड़ता है. यहां मासिककेलिये ही क्लार्कका नाक्रोंदम हो रहा है. फिर पाक्षिक और सप्ताहिक निकालनेसे तो न मालूम कितना कार्य व खर्च बढ जायगा. अत एव हम उनसे प्रार्थना करते हैं कि सप्ताहिक होना तो बहुत ही कष्ट साध्य है. परन्तु हमारे पुराने ग्राहक यदि भादवा सुदी १५ से पहिले २ एक एक कार्ड द्वारा अपनी २ सम्मति भेजदें और पाक्षिक होनेपर २) रु. तक वार्षिक मूल्य देना स्वीकार करैं तो हम वेशक **जैनमित्रको अगले ही अंकमें पाक्षिक** कर देंगे. अन्यथा होना कष्ट साध्य है. आशा है कि हमारे समस्त ग्राहक अपनी २ सम्मतिसे सूचित करैंगे.

सम्पादक.

बेहद खुशीकी ताजा खबर.

पाठक महाशय! हम बडे हर्षके साथ प्रगट करते हैं कि ईडरगढमें श्रावण सुदी १३ के दिनसे जैनपाठशाला खुल गई है. धन्य है ईडरके भाइयोंको जो थोडे ही दिनमें पाठशाला खोलकर जैनधर्म जैनजातिकी उन्नतिका बीज बो दिया. पाठक महाशय! केवल मात्र पाठशालाहीका मुहूर्त्त किया हो सो नही है किन्तु वहांके भाइयोंने सबसे बडा भारी काम अपने यहांके प्राचीन श्रुत भंडारको खोलकर समस्त ग्रन्थोंको यथा योग्य रीतिसे रक्षा विनय करकें खुले कमरेमें विराजमानकर दिये हैं. जिसकी खबर इस पत्रमें अन्यत्र भी छपी है.

दूसरी खबर यह है कि—बंबईमें आगामी १९-२०-२१ सेप्टेम्बरको स्वेताम्बरी भाइयोंकी एक कान्फरेंस होगी परन्तु उसमें सामान्य जैन शब्द जुडनेसे हमारे अनेक दिगम्बरी भाइयोंको शंका होगई है. इसलिये सब भाइयोंको प्रगट किया जाता है कि इस कान्फरेंसमें दिगम्बरी जैनी भाइयोंका कुछ भी सम्बन्ध नही है. यह केवलमात्र स्वेताम्बरी भाइयोंकी ही सभा होगी. दिगम्बर जैनकान्फरेंस तो गत ज्येष्ठ मासमें शोलापुरमें हो चुकी है. अब तीसरा अधिवेशन होगा सो उसमें अभी बहुत देरी है.

तीसरी खबर यह है—सभाका क्लर्क बीमार है. इसकारण यह अंक नियमानुसार व्येल्यु पेबल नही भेजा गया. अगला अंक सबकेपास वि. पी भेजा जायगा सो भादवा सुदी १५ तक जो महाशय मूल्य भेज देवेंगे वा एक कार्डसे इनकार कर देंगे उनको वेल्युपेबल नही भेजा जायगा. आशा है कि हमारे अनुग्राहक ग्राहकगण अपना २ मूल्य भेजकर हमको वी. पी. के झंजटसे बचावैंगे.

सम्पादक.